Title

RAVI-VICHAAR

Translator

Dr. Vidhyadhar Johrapoorkar

Pub: Nagpur Prakashan
Nagpur.

दैव विचार माला पुष्प-१

रवि-विचार

लेखक

ज्योतिषी-कै. ह. ने. काटवे

२५ ज्योतिष-ग्रंथके कर्ता

अनुवादक :

डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर

एम्. ए. नागपूर-१२

नागपूर प्रकाशन

नागपूर प्रकाशन, मेनरोड सिताबर्डी, नागपूर-१२

आवृत्ती दुसरी :
दि. ८-१०-१९७५

किमत ५ रुपये

मुद्रक :
वि. गो. लबाटे
मॅजेस्टिक प्रिंटिंग प्रेस,
टिळक पुतळा, नागपूर-२

प्रकाशक :
वि. मा. धुमाळ
नागपूर प्रकाशन,
सीताबर्डी, नागपूर-१२

रवि-विचार

अनुक्रमणिका

निवेदन

सन् १९३१ में 'राहुविचार' प्रकाशित होने के पश्चात् उसमें जो विचारपद्धति हमने दी है उसे पढकर अनेक विद्वान् लोगों की ऐसी इच्छा प्रतीत हुई कि मैं अन्य ग्रहों के विषय में अपने विचार और अनुभव प्रकाशित करूं। किन्तु मेरे शारीरिक व मानसिक कष्टों के कारण आज तक मैं उनकी इच्छा पूरी नहीं कर सका इसके लिए मुझे अत्यन्त खेद है। सौभाग्य से इस वर्ष मुझे थोडी स्वस्थता मिली है और पुनः पाठकों की सेवा करूं इस उद्देश से आज रवि के विषय में 'रवि विचार' नामक एक छोटासा ग्रन्थ लिखकर पाठको को सादर कर रहा हूं। इसलिए मुझे आनंद होता है। मैं स्वयं इस शास्त्र का जिज्ञासु तथा अभ्यासरत विद्यार्थी-ज्योतिषी हूं, इस कारण मेरे प्रदीर्घ अभ्यास में हजारों कुंडलियों का अवलोकन करते हुए प्राचीन ग्रन्थों के कुछ नियमों का खण्डन करके मुझे नये नियम स्थिर करने पडे हैं। उदाहरण के लिए प्रभु रामचंद्र की जन्मकुण्डली इस प्रकार दी जाती है--

इस पत्रिका में राहु, बुध और चंद्र को छोड कर सब ग्रह उच्च के हैं। इन उच्च ग्रहों के क्या फल होने चाहिए यह कहना है।

मेरे मत से-(१) लग्न में उच्च गुरु चन्द्र के साथ है-इसका फल वनवास, मां को वैधव्य प्राप्त होना तथा वर्ण घननील (काला) होना है। कर्क राशि में उच्च का गुरु और चन्द्र स्वगृह का होकर भी क्या यही फल मिला?

(२) **चतुर्थ में उच्च का शनि**---पिता का मृत्युयोग जलदी होना, सौतेली मां से कष्ट।

(३) **सप्तम में उच्च का मंगल**---स्वयंवर में सीता को जीत कर लाना पडा। यह सीता कौन है? इसके माता पिता का कुछ पता नहीं चलता। राजा जनकने केवल पाल पोस कर बडा किया। (मेरे मत से

Illegitimate) इसके कुल गोत्र का पता नहीं चलता। उसको निष्कारण ही दो बार वन में जाना पडा। रावण के घर छह माह बिताने पडे और उस पर व्यभिचार का दोष आया। (सप्तम के मंगल का पूरा फल मेरे 'मंगल विचार' में देखिए) राम को अपनी पत्नी के लिए युद्ध करना पडा। पति पत्नी के वश में रहता है। रामचंद्र को इच्छा न रहते हुए भी चन्द्रसेनाके घर (परस्त्री के घर) जाना पडा—कम से कम वैसा आरोप उस पर आया।

(४) दशम स्थान में उच्च का रवि—पिता व कुल ऊंचा था किंतु पितृसौख्य कम।

रवि व शनि इन दोनों उच्च के ग्रहों में प्रतियोग—जिस दिन राज्याभिषेक होने जा रहा था उसी दिन वनवास के लिए प्रस्थान तथा पिता का मृत्युयोग ! यह योग पिता के पश्चात् भाग्योदय का है। पिता के रहते सिंहासन पर नहीं आ सके। वार्धक्य में फिर सीता का निर्वासन, अपने ही पुत्रोंसे पराभव, अन्त में विधुर अवस्था इत्यादि इन उच्च ग्रहों के अनिष्ट परिणाम दिखाई देते हैं। यहां पाठक एक शंका उपस्थित करेंगे कि इन सब ग्रहों का केंद्र में केंद्र योग हुआ है इसलिए प्रभु को ये फल भोगने पडे। किंतु मैं कहता हूं कि पहले भाव-फल और उसके साथही कारकत्व, बाद में ग्रह-फल व अंत में योग-फल देखने पडते हैं। पत्रिका में कोई एक ही ग्रह उच्च हो तो भी उसका फल बुरा मिलता है। सारांश, प्राचीन ग्रंथकारोंने उच्च ग्रहों के जो फल बतलाये हैं वे सर्वथा गलत हैं ऐसा कहना पडता है। अन्य ज्योतिषी शक १८१७–१८ में जब शनि तुला में था उस समयमें जिनका जन्म हुआ है ऐसे लोगों की परिस्थिति देखे ऐसा मेरा निवेदन है। रवि के साथ बुध और शुक्र ये ग्रह नित्य ही रहते हैं और कभी अन्य ग्रह भी रवि के साथ होते हैं इस लिए अकेले रवि का फल बतलाना और निश्चित करना कठिन होता है। इन सब बातों का खुलासा मेरे आगे प्रकाशित होनेवाले ग्रंथो में देखना चाहिए।

—लेखक

हणमंतसा नेमासा काटवे

रवि-विचार

प्रकरण पहला

सूर्य आत्मा जगतस्तथुषश्च ॥ ऋग्वेद १।८।७॥
ज्योतिषां रविरंशुमान् ॥ गीता १०–२१ ॥

पृथ्वी को सूर्य की एक परिक्रमा करने के लिए ३६५ दिन १४ घटि २० पल इतना समय लगता है ऐसा पश्चिम के लोग कहते हैं। हमारे प्राचीन सिद्धान्तकर्ता तथा करणग्रंथकर्ता ३६५ दिन १५ घटि ३१ पल ३१ विपल इतना काल लगता है ऐसा कहते हैं। आधुनिक सुधारणावादी ३६५ दिन १५ घटि २३ पल इतना समय कहते हैं। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है उसी समय सूर्य खुद की परिक्रमा करता है। उसके प्रत्येक चक्कर को २३ घंटे ५६ मिनिट ४ सेकंड इतना समय लगता है। सूर्य सब ग्रहों से करोडों मील दूर है तथापि वही सब ग्रहों का तथा पृथ्वी का पोषक है। वह बीजोत्पादक, बीजारोपक तथा बीजसंवर्धक है इसी लिए सूर्य को ज्योतिष शास्त्र में जगत्पिता ऐसा नाम दिया है।

हमारे वेदांत शास्त्र में आत्माको सूर्य ही कहा है। स्थावर जंगमात्मक पूरे चराचर जगत का आत्मा सूर्य है। वैदिक काल में आर्योंने सूर्य का महत्व समझा था। वे मानते थे कि वह ही सारे जगत् का निर्माण कर्ता–विधाता है।

सूर्य की स्थिति दो प्रकार की है। एक भासमान और दूसरी अदृश्य होकर भासमान न होनेवाली। पहली भासमान होनेवाली स्थिति यह है कि दिन भर वह अपनी आखों से दीखता है। उसके धूप का ताप जान पडता है और उसका प्रकाश भी हम देखते हैं। सूर्यसे अपने कों जो उष्णता मिलती है वह 'निगेटिव्ह' है।

सूर्य का दूसरे प्रकार का तेज भासमान न होनेवाला किन्तु सारे स्थावर जंगमात्मक चराचर वस्तुओं में समाया हुआ–सर्व–व्यापी है। यही तेज अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसी तेज का संशोधन करने के प्रयत्न आर्य लोगोंने वैदिक कालसे जारी रखे हैं। आत्मविकास के बलपर इस तेज का दर्शन करने के लिए ज्ञान योग, राज योग, भक्ति योग, हठ योग इत्यादि अनेक योग मार्ग खोजकर उनको सिद्ध करने के लिए तपश्चर्या करना चाहिए ऐसा कहा है। जिसे हम वेदांत में परब्रह्म कहते हैं वही यह तेज है। प्रत्यक्ष तेज से अप्रत्यक्ष विश्वशक्ति को प्रेरणा मिलती है।

आकाश से एक प्रकार के किरण पृथ्वी पर आते हैं। ऐसा प्रतीत होने पर पश्चिम के शास्त्रज्ञोंने इस विषय का गहराई से संशोधन किया। डॉ. हेसने १९१० में प्रकाशित किया की ये किरण सूर्य के हैं और सीधे सूर्य से ही पृथ्वी पर आते हैं। किन्तु अमरीका के श्रेष्ठ खगोलवेत्ता नोबल प्राइझ विजेता डॉ. मिलिकनने हेस के इस विधान का खण्डन करने का प्रयत्न किया। उनका कहना है कि ये किरण सूर्य से ही आते हों तो वे सिर्फ दिन में ही आने चाहिए। किन्तु वे तो रात को भी आते हैं। इस लिए उनकी उत्पत्ति सूर्य से न होकर आकाशगंगा से ही होनी चाहिए। मेरे विचार से वेदान्त का ज्ञान न होने के कारण ही डॉ. मिलिकन जैसे पाश्चात्य शास्त्रज्ञ इस प्रकार गलत दिशा को जाते हैं। अल व्हिडास नामक शास्त्रज्ञने अपने Estoric Astrology इस ग्रन्थ में सूर्य के इन अदृश्य किरणों को मान करके विशेष ऊहापोह किया है। सारांश रवि का तेज दो प्रकार का है। उत्पत्ति करना यह पहले तेज का कार्य है और लय करना यह दूसरे तेज का कार्य है। पहले तेज के कारण जीव शरीर रूप से जन्म लेकर वासना में–माया मोह में–अटकता है और दूसरे तेज के कारण वासना का क्षय होकर शांति–समाधान प्राप्त करके यही जीव आत्म स्वरूप में विलीन होता है।

अति प्राचीन काल में पांचवी सदी तक ऐसी कल्पना थी कि सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है। बाद में पांचवी सदी में बिहार प्रांत के

आर्यभट्ट नामक पंचांगशास्त्रज्ञने आर्य सिद्धान्त नामक ग्रन्थ में लिखा कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है।

पश्चिम के देशों में भी १५–१६ वीं सदी तक अर्थात् गॅलिलियो के समय तक यही मत था कि सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है। गॅलिलियो ने ही पहले बताया की सूर्य स्थिर है और पृथ्वी ही सूर्य की परिक्रमा करती है। किन्तु ग्रीस के महान् तत्ववेत्ता अफलातून और अरस्तू इस मत के प्रतिकूल थे इसलिए गॅलिलियो को प्राणांतिक विरोध हुआ। लेकिन कालान्तर मे उसी का तत्व जगत् को मानना पड़ा।

हमारे देश में गॅलिलियो के एक हजार वर्ष पूर्व ही यह तत्व आर्य सिद्धान्त कर्ता ने प्रस्थापित किया था यह हम भारतीयों के लिए अभिमान की बात है।

सूर्य स्थिर होकर भी गतिमान् है। सारी ग्रहमाला को वह एक सूत्र में नियमबद्ध गति से अपने चारों ओर घुमाता है और सारे ग्रहों को एक एक बार अपने तेज से अस्तंगत कर देता है।

———०———

प्रकरण दुसरा

रवि का उच्च-नीचत्व

उदय के समय सबको सुख देनेवाला रवि मध्यान्ह में मस्तक पर आया की अत्यंत असहनीय होने लगता है। वही बादमें अस्त के समय रम्य और सुखद होता है। अपने उदयास्त से प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल अवस्थाएं प्रति दिन निर्माण करनेवाला रवि विभिन्न राशियों में प्रवास करते हुए सृष्टि में भी गर्मी, बरसात और सर्दी ऐसी तीन अवस्थाएं निर्माण करता है। बसंत ऋतु के समाप्त होते होते गरमी शुरू होती है। इस समय चैत्र–वैशाख में रवि मीन से मेष में आता है। इस समय पृथ्वी सूर्य के निकट जाती है इसीलिए रवि इतना तापदायी होता है।

रवि मेष में–अपने उच्च से नीचे वृषभ में आते समय उदार व दयाशील बनता है। मानों जगत को ताप देने के अपराध का विचार कर

रहा हो। आगे मिथुन में अपने कृत्य का समर्थन करने लगता है। किंतु कर्क राशि में आने पर उसी को उसका पश्चाताप होता है और उसके आँखों में पानी आता है, वही बरसात है। उसी प्रकार आगे वह अपने गृह सिंह राशि में प्रवेश करता है। उसकी मनोवृत्ति में परिवर्तन होता है। वह शांत और वैराग्यशील होता है। उसकी दृष्टि समता, इन्साफ और वेदान्त इन बातों पर झुकती है। इस समय वह कन्या राशि में होता है। पृथ्वी से दूर दूर जाता है।

अब वह अपने नीच राशि में—तुला में आता है और धर्म से—न्याय से—समता बुद्धि से बरताव करने लगता है। इस समय सृष्टि भी वैभव संपन्न होकर शान से झूलती है। नई शोभासे अलंकृत दीखती है।

ऊपर के विवेचन का सारांश यह है कि रवि मेष राशि में तापदायी होता है और तुला राशि में कल्याणकारक और सुखदायी होता है। इसका तात्पर्य यह है कि रवि उच्च राशि में तापदायी और नीच राशि में हित-कारक है। और यही सिद्धांत अन्य ग्रहों के विषय में भी सत्य है ऐसा मेरा अनुभव है। उच्च राशि में कोई भी ग्रह सुखदायी, कल्याणकारी नहीं होता। उच्च पद प्राप्त हुआ कि वह स्वभावतः नीचता की ओर झुकने लगता है। अति उच्च पद पर बड़ा आदमी भी बिगड जाता है यही सत्य है।

———o———

प्रकरण तीसरा

रवि का कारकत्व

सूर्य किरणों से रोग दूर होते हैं यह अनुभव सिद्ध बात है। इसीलिए रवि आरोग्यदाता है।

चंद्र मनका कारक है और चंद्र को रवि से प्रकाश मिलता है। मन को शुद्ध करके मार्ग पर लाने का कार्य विवेक रूपी हृदयस्थ परमात्मा करता है। मन चंद्र है और रवि हृदयस्थ परमात्मा। इसीलिए रवि को 'मनःशुचिकारक' कहा है।

'पितृप्रतापारोग्यमनःशुचिरुचिज्ञानोदयकारकः रविः ।'

प्रभाव, खुदका आत्मा, पिताका पराक्रम, रोगों के प्रतिकार की शक्ति, आत्मकल्याण इत्यादि विषयों का विचार रवि पर से करना चाहिए ऐसा 'जातक पारिजात' इस ग्रंथमें कहा है ।

बाघ, सिंह, पर्वत, ऊनी कपडे, सोना, शास्त्र, विषसे शरीरका दाह, औषध, राजा, म्लेच्छ, महासागर, मोती, वन, लकडी, मंत्र इत्यादि का कारकत्व 'सारावली' कर्ता ने रवि पर कहा है । इनमें विषका कारक मंगल तथा म्लेच्छों का कारक राहु होना चाहिये। उसी प्रकार मंत्र विषय शुक्र का है ऐसा मेरा मत है

राज्य, प्रवाल, लाल वस्त्र, माणिक, आखेट के जंगल, पर्वत, क्षत्रियों के कर्म इत्यादि विषयों का कारकत्व 'बृहत्पाराशरी' कर्ता ने रवि पर बताया है ।

आत्मप्रभाव, शक्ति, पिता की चिंता इनका कारक रवि ही है ऐसा विद्यारण्य का मत है ।

पुत्र की पत्रिका से पिता के सुखदुःखों का विचार रवि शनि के शुभाशुभ योग से ही जाना जा सकता है । दूसरा नियम यह है कि पंचमेश या नवमेश ३-६-८-१२ इन स्थानों में हो तब ही यह विचार करना चाहिये ।

कालिदास—१ आत्मा २ शक्ति ३ अति दुष्ट ४ किला ५ अच्छी ताकत ६ उष्णता ७ प्रभाव ८ अग्नि ९ शिव की उपासना १० धैर्य ११ कांटेदार वृक्ष १२ राजकृपा १३ कडुआ १४ वृद्धता १५ पशु (गाय भैंस आदि) १६ दुष्टता १७ जमीन १८ पिता १९ रुचि २० आत्मप्रत्यय २१ ऊर्ध्व दृष्टी २२ जिसकी मां डरपोक हो (One born to a timid woman) २३ मृत्युलोक २४ चौकोन (Square) २५ हड्डी २६ पराक्रम २७ घास २८ कोख (The belly) २९ दीर्घ प्रयत्न ३० जंगल ३१ अयन ३२ आंख ३३ वनमें संचरण ३४ चौपाये पशु ३५ राजा ३६ प्रवास ३७

व्यवहार ३८ पित्त ३९ तपश्चर्या ४० गोलाई ४१ आंख के रोग ४२ शरीर ४३ लकडी ४४ मनकी शुद्धता ४५ सर्वाधिकारी (Dictatorship) ४६ रोगों से मुक्तता ४७ सौराष्ट्र देश का राजा ४८ अलंकार ४९ मस्तिष्क के रोग ५० मोती ५१ आकाश का अधिपती ५२ नाटा ५३ पूर्व दिशा का अधिपती ५४ तांबा ५५ रक्त ५६ राज्य ५७ लाल वस्त्र ५८ अंगूठी में लगाने के नगीने, खनिज के पत्थर ५९ लोकसेवा ६० नदीतट ६१ प्रवाल ६२ मध्यान्ह में बलवान ६३ पूर्व ६४ मुंह ६५ दीर्घकोपी ६६ शत्रुओं पर विजय ६७ सचाई ६८ केशर ६९ शत्रुता ७० मोटी रस्सी।

हारबुड— Manager, Foreman, Bosses, Rulers, Shoot, Masters, Fathers, Husbands, High Constables, Mayor Magistrates, Aristocracy, Ruling bodies like town-councils and parliaments, Kings, Royalty, Master of ceremonies, Public officers, Business-managers, Directors, State officials, Civil servants, Palaces, Town-halls, Courts, Theatres, Banqueting halls, Dancing halls, Exhibitions, Spectacular displays, Social gathering, ceremonies, Magnificent public structures, Big house with many rooms, Gold ornaments, Emblazonments, Special Occasions.

अज्ञात—पुण्य, बडे भाई का सुख, वैद्यक शास्त्र, छोटे प्रवास, बिजली, बिजली का प्रवाह, बिजली पर निर्भर धंदे, जवाहरात, सोना, सुतार, गिलट काम।

मेरा मत—नेत्रवैद्यक, राजकारण, शरीरशास्त्र, X rays, Cosmic rays, प्लेटिग्नम्, रेडियम, हेलियम् Boiler, नाविक विद्या Navigation, राज्यसत्ता, राज्य में प्रचलित राजभाषा, सेक्रेटरिएट, असेंब्ली, गवर्नर, गवर्नर जनरल, पारसी लोग ये रवि के कारकत्व में है। अबतक ये सब कारकत्व कहे गये हैं। प्राचीन ज्योतिष ग्रंथकार यह नहीं बताते कि इन कारकों का उपयोग किस स्थान पर कैसा करना चाहिए। इस विषय में बहुत दिन तक विचार करने के पश्चात् आगे दिया हुआ वर्गीकरण करके

उसका उपयोग कहां और किस प्रकार करना चाहिए यह निश्चित किया है। वह इस प्रकार हैं—

पिता, प्रताप, आरोग्य, मन की शुद्धता, रुचि, ज्ञान, धब्बे, शक्ति, आत्मप्रभाव, पिताकी चिंता, अच्छी ताकत, हृदय. पीठ, नाडी चक्र, कुंडलिनी, प्रभाव (लोगों पर रुआब), क्षेत्र कर्म, शिवकी उपासना (यूरुप में God, the holy ghost), राजकृपा, (रावसाहब, रायबहादुर आदि उपाधि प्राप्त करना) पिता की भूमि, हड्डियां, आत्मप्रत्यय, ऊर्ध्व दृष्टि, दाहिनी आँख, व्यवहार, मन, शरीर, नाटा, रक्त, लोकहित, पुण्य, पंडितों की बुद्धि-संपन्नता, शत्रुता, बडे भाई का सुख, प्रवास, बिजली, जौहरी, क्षत्रिय कर्म, श्रेयस, संघटना, व्यवस्थापक, Foreman (ज्यूरी में मुख्य), रेल्वे कारखाने में बॉयलर के इंजीनियर, धंदे में व्यवस्थापक, Cosmic rays, वृद्धता, तप, बडे सिविल अधिकारी, मेयर, मॅजिस्ट्रेट, स्कूल मास्टर बिजली द्वारा चलने वाले धंदे, गिलट काम, जवाहरात, सोना, मोती, तांबा, माणिक प्लेटिग्नम, रेडियम, हेलियम, अलंकार, प्रवाल, रेडियो, एक्स–रे द्वारा फोटो लेने का उद्योग, औषध, ऊन, ऊनी कपडे, कच्चा रेशम, केशर, पशु, घास, लकडी, धान्य, पत्थर, नेत्र वैद्यक Eye specialist, रक्तचंदन, साधा चंदन, (चंदन का व्यापार पारसी लोक करते हैं तथापि मलबार म्हैसूर और कुर्ग प्रांत से ठोक पेकबंद माल लाकर बंबई और हिंदुस्थान के विभिन्न बडे शहरों में पारसी लोगों को माल पहुँचाने के लिए बहुत से गुजराती यह व्यापार करते हैं।) मोटी रस्सी, (मोटी रस्सी तथा उसे बनाने का धंधा हिंदू लोगों में निचले वर्गो में कैकाडी, मांग, रामोशी, कातवडी, भील, कातकरी आदि करते हैं, किंतु हाल में मिलों के काम के लिए तथा नाविकों को जहाज ठहराने के लिए, नीचे से ऊपर अधिक वजन का सामान ले जाने के लिए लगनेवाला रस्सा तथा अन्य छोटी रस्सी कलकत्ता व जर्मनी में बनाये जाते हैं, और बंबई में नागदेवी स्ट्रीट पर इसके व्यापारी हैं।) दूत कर्म (पुराने जमाने में यह धंधा होता था; हाल में पोस्ट व टेलिग्राफ, टेलिफोन चालू होने से यह धंधा बंद हुआ है।) टेलिव्हिजन। ये सब कारकत्व जन्म कुंडली तथा प्रश्न कुण्डली में विचार योग्य समझने चाहिए।

मेदिनीय ज्योतिष में उपयुक्त कारकत्व

हथियार, राजा, राज्य, राजकीय जंगल, किला, सर्वाधिकारी (Dictatorship), म्लेच्छ, दुर्ग, शत्रु का स्वामित्व। पाश्चात्य ज्योतिषियोंने दिया हुआ कारकत्व—नेता, राजकीय सत्ताधिकारी, धर्मगुरु, किसान, श्रीमानों का राज्य, म्युनिसिपालिटी, जिला कौन्सिल, असेंब्ली वगैरह शासक संस्थाएं, उत्सवों के अध्यक्ष, परदेशों से व्यवहार करने वाली संस्थाएं, थिएटर, (Banquetting hall), नृत्य मंदिर (वास्तव में यह कारकत्व शुक्र का समझना चाहिये), प्रदर्शन (यह राहु के कारकत्व में चाहिये।) कायदे बनाने वाले (एम्.एल.ए. वगैरह) परदेशों के राजदूत, स्नेह सम्मेलन तथा उत्सव (यह विषय भी शुक्र के ही अमल में चाहिये), राज प्रासाद, टाऊन हाल। रवि के प्रभाव से राजा अन्यायी व एकतंत्र होता है।

शिक्षा में कारकत्व

Politics—देश की राजनीति यह विषय यूनिवर्सिटी में बी. ए. में पढाते हैं।), Optholmology नेत्र वैद्यक शास्त्र, अंग्रेजी भाषा, राष्ट्र भाषा, राज भाषा—जैसे निजाम के राज्य मे उर्दू, मैसूर में कानडी, कूचबिहार में बंगाली। इनको Court Languages कहते हैं। Anatomy शरीर शास्त्र।

कहीं भी उपयोग न होनेवाला कारकत्व

व्याल (शेर), शैल (पर्वत), अब्धि (सागर), कंतार (जंगल), कुक्षि (कौरव), सौराष्ट्र का राजा, नदी का तट, मृत्यु लोक, अयन, भीरूत्पन्न—डरपोक स्त्री से उत्पन्न हुआ ऐसा (One born to a timid woman) यह अर्थ अनुवादक पंडितभूषण व्ही. सुब्रह्मण्य शास्त्री, बी. ए. (बेंगलूर) देते है। किंतु 'भीरूत्पन्न' का अर्थ 'जिसको देखने से इससे किस तरह भाषण करें ऐसा भय उत्पन्न करने वाला' ऐसा है। तात्पर्य रवि के अमल में रहने वाले आदमी चेहरे से और बोलने से रुबाबदार होते है। आकाश का अधिपति, कांटेदार वृक्ष।

स्वभाव का कारकत्व—अति तीक्ष्ण, धैर्य, दीर्घ प्रयत्न, तपश्चर्या, दीर्घ, कोपी, शत्रुता, नियमितता, सात्त्विक :

पाश्चिमात्य ज्योतिषी—Like the sun in the solar system, the Sun–leo person likes to be in the centre of every thing as Supreme administrator.

यह स्वभाव का कारकत्व रवि के स्वभाव में प्राप्त करना होता है। अब राशि के अनुसार विभाग करके कारकत्व कहते है। अकेले रवि पर इतने विषयों का कारकत्व दिया है। वह एक ही राशि में या एक ही स्थान में देखने को नहीं मिलता। उदाहरण के लिए, पाश्चात्य ज्योतिषीने रवि का एक कारकत्व स्कूल मास्टर ऐसा दिया है। यह चाहे जिस राशि के और चाहे जिस स्थान के रवि में नही मिलता। मिथुन या धनु राशि में एवं लग्न, तृतीय, पंचम, नवम, सप्तम और ग्यारहवें स्थान में रवि हो तो ही मास्टर होता है। दूसरा उदाहरण–धनु व तुला राशिमें रवि हो तो कानून के पंडित होते है किंतु इन राशियों में वह स्थानबली हो तो ही होते है। वृश्चिक में रवि हो तो सर्जन और डॉक्टर होते है इसके लिए भी रवि स्थानबली होना चाहिए। इसलिए आगे विभाग करके लिखते है।

मेष—क्षात्रकर्म, संघटक, फोरमन, तांबा, माणिक, प्रवाल, ऊन तथा ऊनी कपडे।

वृषभ—दवाइयाँ, पशु, घास, लकडी, किसान, नृत्य एवं नाटयगृह।

मिथुन—स्कूल मास्टर, जवाहरात, कोर्ट की भाषा।

कर्क—बिजली, उस पर चलने वाले धंधे, नेत्र वैद्यक।

सिंह—जौहरी, केशर, डिक्टेटर, राजा, Autocracy।

कन्या—मैनेजर, गिलट, अनाज, सार्वजनिक कार्यालय।

तुला—सिविल ऑफिसर, प्लेटिनम, परदेशों के राजदूत।

वृश्चिक—पत्थर, रक्तचंदन, चंदन, कच्चा रेशम, शस्त्र, शरीरशास्त्र (Anatomy)

धनु—सोना, रेडियम, ज्यूरर्स, फादर्स (धर्मगुरु), Legislators कानून करने वाले।

मकर—Mayor नगराध्यक्ष, कौन्सिलर, असेंब्ली, नगरपालिका, जिला या लोकल बोर्ड, सेक्रेटरिएट, कौन्सिल ऑफ स्टेट।

कुंभ—मोटी रस्सी बनाने वाले।

मीन—एक्स-रे फोटो ग्राफर, मोती, हेलियम, प्रर्दशिनी।

एक उदाहरण—एक आदमी बैशाख महिने में–जब रवि वृषभ में है—आकर प्रश्न करता है कि क्या मैं घास, लकडी या पशुओं (गाय, भैंस, घोडे और कुत्ते) का व्यापार कर सकता हूं ? इस समय वृषभ का रवि सप्तम में है। इस लिए उसकी परिस्थिति देखकर उसके अनुकूल इन तीनों में से कोई एक धंधा बतलाना चाहिये जिसे वह कर सके। इस प्रकार कारकत्व का उपयोग करना चाहिये।

पश्चिम के ज्योतिषियों ने करीब २ सभी धंधे रवि के मान कर उनका विभाजन राशि के अनुसार किया है।

मेष में रवि–Organisers, Leaders, Architects, Designers Company-Promotors, Phrenologists, Character-Readers, Agents, Brokers, Appraisers, Auctioneers, Surveyors, Salesman, Detectives, Guides and courtiers, Travelling Companies, House and Estate agents, Inspectors, Foreman, Managers, Lecturers, Novelists, writers of short stories, Photographers, Reformers, Eloctionists.

वृषभ में रवि–Bankers, Stock-Brokers, Treasureres, Cashiers, Speculators, Mechanical and laborious pursuits, Singers, Actors, Magnetic healers, Doctors and Nurses, Agriculturists, Farmers, Fruit growers, Gardeners, Builders Billdiscounters, Financial-Agents, Book-Binders, Manufacturing Chemists, Compositors, Cressmakers, Florists,

French–Painters and Decorators, Japanners, Collectors, Insurance–Agents, Taxidermists.

मिथुन में रवि–Book-keepers, Clerks and Commercial-travellers, Literary persuits, Editors, Reporters, News-papermen, Good–accountants, Solicitors, Attendents, Post office officials, clerks, Decorative artists, School Masters, Guides, Journalists, Lecturers, Milliners, Photographers, (X Rays–Katwe) Post–man, Railway–employees, Secretaries, Translators.

कर्क में रवि–Historians, Naval Captains, Nurses, Caterers, Hotel–keepers, Barmaids, Confectioners, Actors and Actresses, Companinons, Cooks, Laundresses, Dealers in second-hand, Clothing, Second-hand-Book-sellers, Dress makers, Metrons, Midwives, Mineral Water Manufacturers, Researchers, Stewardesses.

सिंह में रवि–High Posts, Jewellers, Goldsmiths, writers of love stories or dramatic sketches, Musicians, and Poets, Trusty–Managers.

कन्या में रवि–Trade, Agents, Food Providers.

तुला में रवि–Overseers, Librarians, Secretarians. Stage-Managers and Musical directors, Decorators, Arrangers, House-keepers.

वृश्चिक में रवि–Dyers, Chemists, Businessers connected with oils, They make good surgeons and Dentists, Detectives, Butchers, Ironsmiths.

धनु में रवि–Commander, Teaching, The Ministry, Law Astronomy, Astrology, Photography, Designing, Inspectors, Equestrians. Horse–Dealers, Sports–men.

मकर में रवि–The land and Building speculations, Scientific Reserchers, Writers, Contractors, Builders, Upholsters, Designers, Decorators, Large speculations Elaborate, Enterprises.

कुंभ में रवि–Wood Artists, Designers. Musicians. Electrity. Writers. Railways.

मीन में रवि–Naval Captain. Travellers. Advance Agents Novelists. Book-keepers. Accountants. Painters. Mediums.

यह सब कारकत्व अकेले रवि का और बारहों राशियों का है ऐसा मैं नहीं मानता। वैसा मेरा अनुभव अलग है। ज्योतिषियोंने स्वतंत्रता से अपने २ अनुभव से यह निश्चित करना चाहिये। मैंने केवल एक दिशा बताई है।

——o——

प्रकरण ४ था

रवि के विषय में अधिक विवरण

(ग्रहयोनि भेदाध्याय)

हमारे प्राचीन ज्योतिर्विदोंने रवि के विषय में बहुतसा शास्त्रीय और तात्त्विक संशोधन किया है। उसकी अब थोडी चर्चा करेंगे।

आचार्य—कालात्मादिनकृत, राजा नो रविः, रक्तश्यामो भास्करो वर्णस्ताम्र देवता वन्हिः, प्रागाद्या।

अर्थ—रवि कालपुरुष का आत्मा है। रवि राजा है। तांबे के समान कालिमा लिये हुये लाल रंग का है। रवि की देवता वह्नि–अग्नि है। यह पूर्व दिशा का स्वामी पापग्रह है। चार वर्णो में इसका वर्ण क्षत्रिय है। यह सत्वगुण से युक्त है। पुरुष ग्रह है। आचार्योंने इसका कोई तत्व नहीं कहा, यह आश्चर्य की बात है। सारे विश्व में पाँच तत्त्व भरे हैं—

आकाश, तेज, जल, पृथ्वी और वायु। किंतु इस ग्रहको इनमें से कोई तत्व नहीं कहा है। मेरी समझ में रवि को तेज तत्व देना चाहिये। सत्व रज और तम इन तीन गुणों में इसको सत्वगुणी कहा है। किंतु यह पाप फल देता है। सात्विक मनुष्य का आचरण पापयुक्त कैसे होगा? पापयुक्त रहा तो वह सात्विक कैसा माना जायगा? मेरी समझ में इसे रजोगुणी मानना चाहिये।

मधुपिंगलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सविताल्पकचः ।

स्थान वेदगृह, मोटा वस्त्र, तांबा, उत्तरायण में बलवान ।

रवि की दृष्टि—शहद के समान लाल रंग—यह कडी धूप को देखकर निश्चित किया होगा। धूपको सूक्ष्म दृष्टि से देखो। वह कुछ पीले रंग की दिखती है। इस लिए जिन मनुष्यों के रवि मुख्य होता है उनकी नजर बहुत तेज होती है तथा आंखों के कोने में लाल रेखाएं अधिक होती है। शरीर की आकृति चौकोर के समान होती है। वास्तव में रवि गोल दिखाई पडता है, इसलिए शरीरका आकार गोल होना चाहिये। किंतु अनुभव दूसरा ही आता है। फलतः रवि रूखा और उष्ण होने से पित्तप्रकृति है यह स्वाभाविक ही है। शरीर पर बाल बहुत कम होते है। स्त्री राशि में हो तो बिलकुल नहीं होते परन्तु पुरुष राशि में हो तो होते है। रवि यही पूर्ण परब्रह्म है। इसलिए उसका निवासस्थान मंदिर या देवगृह कहा यह ठीक ही है। रवि के अमल में मोटा वस्त्र दिया है इसकी उपपत्ति नहीं लगती। धातु—तांबा—रवि के लिये तांबा यह धातु कही है। यह रंग पर से ही कही होगी। वास्तव में इसके अमल में सोना चाहिये। हमारे शास्त्रकारों ने रवि के लिये कोई भी ऋतु नहीं कहा है। यह एक ध्यान देने लायक बात है। रवि ही सब ऋतुओं को उत्पन्न करता है और उसके लिये एक भी ऋतु नहीं है। मेरी समझ में ग्रीष्म ऋतु पर रवि का अमल होना चाहिये। उसको यही ऋतु योग्य है। यह उत्तरायण व दक्षिणायण निर्माण करता है। उसको उत्तरायण का अधिपति कहना चाहिये। रवि उत्तरायण में बलवान होता है।

वैद्यनाथ--कालस्यात्मा भास्करः। दिनेशो राजा। भानुः श्यामलोहितः। प्रकाशको शीतकरक्षपाकरौ। **रविः पृष्ठेनोदेति सर्वदा। विहगस्वरूपो वासरेशो भवति। शैलाटविसंचारी। पंचाशर्कः**। ताम्रधातुस्वरूपः। **खुचरो अरुणो**। देवता वाह्निः। **माणिक्यं दिननायकस्य**। स्थूलाम्बरम्। प्रागादिको भानुः। क्रीडास्थानं देवगृहम्। सत्त्वप्रधानः। नराकारो भानुः। **अस्थि, कटु**, दक्षिणायनबली, स्थिर।

पिछले पृष्ठ में वर्णन आया है। उससे भिन्न शब्दों का ही विचार करना है। रवि सर्वदा पृष्ठभाग से उदय प्राप्त करता है। किसी का जन्म कैसे हुआ यह निश्चित करने के लिये यह कल्पना होगी। किंतु रवि प्रतिदिन सामने ही उदित होता है। रवि का भ्रमण प्रतिदिन आकाश में से होता है। इस लिये उसे पक्षी स्वरूप कहा है। वन और पर्वतों में संचार करनेवाला इस कल्पना का आधार समझ में नहीं आता। पंचाशर्क का अर्थ भी स्पष्ट नहीं होता। माणिक नामका रत्न रवि का कहा है क्यों कि उसका रंग लाल होता है। अस्थि-हड्डी--बहुत काल तक टिकती है और कठिन है इसलिये। कडुआ--रवि रुचि का कारक है। उसमें इसका समावेश करना ठीक होगा। स्थिर-इस विषय में पहले कहा है। यहाँ एक ही कहना है। रविप्रधान कुंडली के दो ही लग्न होते हैं एक वृश्चिक और दूसरा धनु। इसमें वृश्चिक स्थिर है तो धनु अस्थिर है। इससे प्रगट होता है कि रवि में दोनों गुण है।

अर्केण मन्द--शनि रवि के द्वारा पराजित होता है ऐसा वैद्यनाथ ने कहा है। किंतु रवि शनि के द्वारा पराजित होता है ऐसा मेरा अनुभव है। रवि कब बलवान होता है? स्वोच्चस्वकीयभवने स्वदृगां च होरावारांशकोदयगणेषु दिनस्य मध्ये। राशिप्रवेशसमये सुहृदशकादौ मेषे रणे दिनमणिर्बलवानजस्रम्॥ रवि अपनी उच्च राशि मेष में बलवान होता है। बलवान होता है किंतु फल उलटे मिलते है। स्वकीयभवने याने सिंह राशि में उतने अच्छे फल नहीं मिलते ऐसा मेरा अनुभव है। अपने द्रेष्काण और होरा में वह अति बलवान होता है। रविवार को, इस वर्णन में कोई तथ्य

नहीं है । उत्तरायण में बलवान कहा है । किंतु मेरा ऐसा अनुभव है कि रवि दक्षिणायन में ही प्रबल होता है । क्योंकि जगत् के बडे राजनीतिज्ञ, नेता, कूटनीतिज्ञ, डाक्टर, सर्जन, कानून विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, मील मालिक, कवि, उपन्यासकार, नाटककार इनका जन्म बहुतायत से दक्षिणायन में ही हुआ है । दिनस्य मध्ये–दोपहर में करीब बारह बजे वह बलवान होता है । राशिप्रवेशसमये–एक राशि से दूसरे राशि में जाते समय, मित्र ग्रह के अंशों में और दशम में होते हुए वह बलवान होता है ।

सदा शिरोरुग्ज्वरवृद्धिदीपनः क्षयातिसारादिकरोगसंकुलैः ।
नृपालदेवार्चनिदेर्विकिकरैः करोति चित्तव्यसनं दिवाकरः ॥

रवि पर इतने रोग कहे है । ये रोग किस स्थान में और किस लग्न में विशेषतासे दिखाई देते है यह शास्त्रकारों ने नहीं कहा है । मेरे अनुभव में मेष, सिंह, धनु इन लग्नों में रवि धन स्थान में हो; मिथुन, तूल, कुंभ इन लग्नों में रवि व्यय स्थान में हो; वृषभ, कन्या, मकर इन लग्नों मं रवि अष्टम में हो; कर्क, वृश्चिक, मीन इन लग्नों में रवि दशम या छठवें में हो तो ये रोग होते है । अन्य स्थानों में रवि हो तो ये अनुभव नहीं आते । दूसरी शंका यह है कि जब रवि स्वयं नीरोग है तो इन रोगों का आरोप उस पर कैसे किया यह समझ में नहीं आता ।

जयदेव कवि––प्राच्यादिशा, रविर्नरः, **अर्का ब्रुवतेऽरण्यचारिणः, मध्यान्हम्, अर्को व्योमदर्शिनो, सविता मूलम्, अर्को चतुष्पदो, अर्को पूर्ववक्त्रो**, सूर्यः क्षितीशः, अवनीशो दिनमणिः, मार्तण्ड; स्थविरो ग्रहः, अर्कः-प्रकृत्या दु.खदो नृणाम्, विनाशे क्षत्रियाणाम् सूर्य दिन ।

सूर्य का स्थान––देवस्थान । रत्न–माणिक । इनमें बहुतसा विवेचन पिछले पृष्ठों में आया है । यहां सिर्फ पांच बातोंपर विचार करेंगे ।

अर्का ब्रुवतेऽरण्यचारिणः––रवि अरण्य में संचार करता है ऐसा कहा है । रवि आत्मज्ञान का कारक है इसलिये रविप्रधान व्यक्ति परमार्थ योग

प्राप्त करने के लिये जंगल में एकांत में रहते है। इसीसे यह कल्पना निकली होगी। अर्को व्योमदर्शिनो—रवि की दृष्टि ऊपर होती है यह कहा है। इसका आधार एकही कल्पना होगी वह यह की सुबह उदय होते समय रवि के किरण पहले ऊपर आकाश में दिखते है और संध्याको अस्त होते समय भी वे ऊपर आकाश में दिखते हैं। इससे व्योमदर्शिनो ऐसा निश्चय किया होगा। सविता मूलम् इसकी उपपत्ति नहीं लगती। अर्को चतुष्पदो–रवि चौपाये पशुओं का कारक है। वैद्यनाथ कहते हैं की रवि पक्षी स्वरूप है और जयदेव कहते हैं कि वह चौपाये के स्वरूप का है। वैद्यनाथ की उपपत्ति ठीक मालूम होती है किंतु जयदेव की नहीं। अनुभव से देखना चाहिये। अर्को पूर्ववक्त्रो–सूर्य का मुख पूर्व की ओर यह कल्पना ठीक नहीं मालूम होती है। क्योंकि उदय होते ही सूर्य के किरण पश्चिम की ओर फैलते हैं। इसलिये इसका मुख पश्चिम की ओर मानना चाहिये। सूर्य अस्त होते समय भी उसके संध्या के किरण पूर्व की ओर नहीं आ सकते। इन दोनों कारणों से पश्चिम की ही मानना योग्य मालूम होता है। केवल वह पूर्व को उदित होता है और पूर्व दिशा का अधिपति है। इसलिये पूर्व मुख की कल्पना की गई है। अर्कः प्रकृत्या दुःखदो नृणाम् रवि शरीर को पीडा देता है।

मेरे मत से रवि का राशि फल

मेष–बुरा। वृषभ–सामान्य। मिथुन–एक ओर से अच्छा, दूसरी ओर से बुरा। कर्क–अच्छा। सिंह–बुरा। कन्या–सामान्य। तुला–बहुत अच्छा। वृश्चिक–अच्छे बुरे का मिश्रण फिर भी अच्छा समझ सकते हैं। धनु–अच्छा। मकर–साधारण। कुंभ–बुरा। मीन–साधारण।

रवि का मूल स्वभाव

If the sun is well dignified the disposition is noble generous. proud, magnanimous humane, and affable. friendly and generous to enemy, one of few words, and fond of luxury and magnificence. उदार हृदय का, मानी, एक खास बडप्पन

लिये हुये होता है। इन्सानियत से रहता है। आये गये अतिथियों का उचित सन्मान करता है। स्नेहभाव से बर्ताव करता है। शत्रु के साथ भी खुले दिल से रहता है। कम बोलता है। विलास प्रिय होता है। भव्य, निर्भय, पवित्र, सचाई से रहनेवाला, सबकी फिकर करनेवाला तथा संकट में आये हुये को योग्य रास्ता दिखाने वाला होता है। If illdignified pride, arrogance, want of sympathy. रवि दूषित हो तो गर्वीला, उद्धत, हमदर्दी न करने वाला, दुष्ट, गप्पें हाकने वाला, एकाकी, एकांत प्रिय, लोगो से हमेशा झगडा करने वाला होता है।

प्रकरण ५ वाँ

रवि का मूल स्वरूप

हमारे प्राचीन शास्त्रकारोंने रवि के संबंध में स्वतंत्र अर्थात् वह किसी भी राशि में नहीं है ऐसी कल्पना करके रवि का मूल स्वरूप कहा है।

आचार्य—मधुपिंगलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सवितात्पकचः।
पित्तप्रकृतिः समगात्रःप्रतापी अल्परोमवानर्कः ॥

इन शास्त्रकारों का निम्नलिखित विषयों के संबंध में एकमत है—लाल आखें, शरीर का आकार चौकोर, पित्त प्रकृति, शरीर पर बाल कम होना। **वैद्यनाथ**—प्रतापशाली और सत्त्वगुण प्रधान ये दो गुण अधिक हैं। **ढुंढिराज**—शूर, गंभीर, चतुर, अवयव सुडौल होना, ऊंचाई कम। **कल्याणवर्मा**—बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, चंचल और सुंदर आंखें, प्रचंड, स्थिर पाव, हाथ मोटे। **श्रीनिवासशर्मा**—कम बोलना।

सबके मत एक करके कहें तो—लाल आंखें-(युरोपियन अथवा चित्पावन ब्राह्मणों जैसी) यह अनुभव किस राशि में आता है यह कहा नहीं है। मेरे मत से केवल अकेले रवि से ऐसी आंखें नहीं हो सकती। उसके लिये मंगल का कोई संबंध होना चाहिये। लग्न में मेष, सिंह अथवा वृश्चिक इन राशियों में रवि हो तो यह अनुभव आता है। ऐसा न होकर सिर्फ

रवि लग्न में हो तो आंखें बारीक, काली, तेजस्वी, अति चंचल और रुआबदार होती है। वृषभ, धनु में रवि हो तो आंखें बडी, आकर्षक, हरिणी के समान शांत व निष्पाप होती है। मिथुन. तुला व कुंभ में रवि हो तो लोगों पर प्रभाव डालनेवाली तेजस्वी नजर होती है तथा आंखों की पुतली काली और उभरी हुई होती है। कर्क, कन्या, मकर और मीन राशि में रवि हो तो शांत, स्थिर और भेदक नजर तथा पुतली धंसी हुई दिखती हैं। चौकोर शरीर—सूर्य का बिंब गोल होते हुये शास्त्रकार चौकोर कहें यह बडे आश्चर्य की बात है। किंतु अनुभव ऐसा है कि राशि के १५-१५ अंशों के दो विभाग करके रवि किस विभाग में है यह देखकर निश्चित करना होता है वह निम्न प्रकार है—

चौकोर—मेष, सिंह, धनु के उत्तरार्ध में। वृषभ, कन्या, मकर के पूर्वार्ध में। मिथुन, तुला, कुंभ के उत्तरार्ध में। कर्क, वृश्चिक, मीन के पूर्वार्ध में। इनमें रवि हो तो वह मनुष्य गिड्डा और चौकोर आकार का होता है। और अन्य भाग में हो तो ऊंचा, पतले कद का, लंबे चेहरे का होता है। लग्न में भी यही अनुभव आता है। इसमें थोडा फरक होने की संभवना है। वह यह कि समाज में हमेशा एक अनुभव आता है कि कन्या के उत्तरार्ध में ऊंचा, पतला और नाक उभरी हुई होती हैं। उस समय लगता है कि इसका लग्न तुला होगा। धनु के उत्तरार्ध में जन्म हो तो चौकोर चेहरा और कंधे सुंदर होते हैं। मकर का पूर्वार्ध भी ऐसा ही होता है। इसलिये कुंडली देखने वाले को हमेशा धनु या मकर यही संशय होता है। एक ज्योतिषी को कुंडली बताई तो वह धनु बतलाता है तो दूसरा ज्योतिषी मकर बतलाता है। किंतु ऊपर का कारण मालूम न होने से विवाद का मौका आता है।

पित्तप्रकृति—रवि मूल में रूखा और उष्ण होने से शरीर रूखा और उष्ण होकर पित्त की अधिकता होना स्वाभाविक है। फिर भी यह मेष, सिंह और धनु में अधिक होता है। मिथुन, तुला, कुंभ में कम और दूसरी स्त्री राशियों में तो बिलकुल कम होता है।

कम बाल---रवि को मूल में बाल ही नहीं हैं। किंतु सिंह, धनु, मीन राशि में वह हो और लग्न में हो तो बाल घने होते हैं। दूसरी राशियों में कम होते है। स्त्रियों के रवि पुरुष राशि में हो तो बाल घने, लम्बे, काले और बहुत होते है---वेणी नितम्ब तक पहुंचती है। स्त्री राशि में हो तो छोटे, चमकदार, कम लंबे और लहरीले होते है।

सत्वगुण प्रधान---रवि को सत्वगुणी माना है। परंतु अनुभव से वह रजोगुणी सिद्ध होता है क्योंकि कुंडली के बारहों स्थानों मे उसके मारक गुणधर्म दिखाई देते है। इसलिये इसे रजोगुणी मानना चाहिये।

गंभीर---रवि के अमल वाले पुरुष में स्वाभाविक तौर पर बडप्पन की भावना और अभिमान की वृत्ति होने से वे गंभीर होते है।

चतुर---शिक्षा कम हुई तो भी बुद्धिमान और समय पर योग्य जबाब देकर वक्त निभा लेते है।

सुरूप-सुवृत्त गात्र---सुंदर, सुडौल शरीर होता है।

मेरे मत सें---रवि पुरुष राशि में हो तो वे लोग सुंदर न होकर रुखे, बलवान, सहनशील और मजबूत होते है। सुडौल नही होते। रवि स्त्री राशि में हो तो पतले, सुंदर, सुडौल होते है।

श्यामारुणांग---पुरुष राशि में अधगोरे रंग के और स्त्री राशि में गोरे और सुंदर होते है।

चल---रवि, मेष, कर्क, तुला, मकर और धनु इन राशियों में हो तो वे पुरुष हमेशा घुमते रहते है। उनको घूमना बहुत प्रिय होता है। घर में भी इधर उधर टहलते रहते है। अन्य राशियों में स्थिर होते है। रवि उदय होने से लेकर सारे आकाश में घूमकर संध्या के समय अस्त होता है। दूसरे दिन भी उसका यही क्रम होता है। इसी पर से उसे चल माना होगा। इसी प्रकार सूर्य स्थिर है और पृथ्वी घूमती है इस परसे उसको स्थिर मानने की कल्पना भी स्वाभाविक होती है। इसी कल्पना परसे रवि के अमल में मनुष्य स्थिर होते है ऐसा कहा है।

आकर्षक--सुबह का सूर्य बहुत तेजस्वी, सुंदर और मनोहर प्रतीत होता है। इसलिये सुंदर आंखों का कहा होगा। किंतु रवि कहां होना चाहिये यह नहीं बताया है। अनुभव से मालूम होता है कि दूसरे, सातवें और बारहवें स्थान में हो तो यह अनुभव अधिक आता है; अन्य स्थानों में नहीं।

प्रचंड---इसका अर्थ समझ में नहीं आता। प्रचंड शरीर से, ज्ञानसे कि पराक्रम से ? तीनों अर्थ लिये तो ऐसे विभाग होते है। धन, षष्ठ, सातवें स्थान में रवि हो तो शरीर से प्रचंड; धन, पंचम और भाग्य में हो तो ज्ञान से प्रचंड और तीसरे, दसवें और बारहवें स्थान में हो तो पराक्रमसे प्रचंड होता है।

---o---

प्रकरण ६ वां

द्वादश भाव विवेचन

प्राचीन ग्रंथकारोंने एक ही ग्रह के स्थान के अलग अलग फल दिये है। ये फल परस्पर विरोधी भी है जिससे सामान्य वाचक सारे फलज्योतिष को ही झूट समझने लगता है। और तो क्या ज्योतिषियों को भी शंका होती है प्राचीन लेखकोंने इस विरोध का स्पष्टीकरण नहीं दिया है जिससे संभ्रम पैदा होता है। इसलिये यद्यपि प्राचीन ग्रंथ ज्ञानपूर्ण और उत्तम है तथा उनके अभ्यास से निर्दोष फल बताना संभव है फिर भी सामान्य पाठक इनके अभ्यास को छोडकर पश्चिमी ग्रंथोंकी ओर झुकते है। इस अंग्रेजी वाङमय में भी जो फल दिये है वे उसी प्रकार संदिग्ध और गोल-मेल है। पाठकों का यह संकट अंशतः दूर करना मेरा प्रधान उद्देश्य है।

प्राचीन ग्रंथकारोंने दो बातों का स्पष्टीकरण नहीं किया है। एक तो यह कि हरेक ग्रह में तारक और मारक ये दोनों शक्तियां है। दूसरे, एक ही ग्रह स्त्री और पुरुष राशि के भेद से भिन्न फल देता है। पहली बात के उदाहरण के लिये–गुरु ज्ञान से भिन्न दूसरी बातों में बुरे फल देता है।

वह ज्ञान देता है किंतु संपत्ति का नाश भी कर सकता है। किंतु शास्त्र-कारोंने गुरु को संपत्ति का कारक कहा है जिससे गुरु बुरे फल देता ही नहीं ऐसी धारणा हो गई है। इसलिये शास्त्रमें इसके शुभ फल कहे हैं फिर भी अनुभव उल्टा आता है। दूसरी बात का खुलासा इस प्रकार है। रवि, मंगल, शनि और राहु ये पापग्रह स्त्री राशियों में अच्छे फल देते हैं और पुरुष राशियों में अशुभ। गुरु, शुक्र, चंद्र और बुध ये शुभ ग्रह स्त्री राशियों में अशुभ होते है और पुरुष राशियों में अच्छे फल देते है। रवि, चंद्र, गुरु और शुक्र जिस स्थान में हो उसका नाश करते है। गुरु दशम में हो तो पिता का सौख्य नहीं मिलता। वही शनि दशम में हो तो पिता का सुख पूरा देकर माता का सुख नष्ट करता है।

लग्न का रवि

वैद्यनाथ—मार्तण्डो यदि लग्नगोऽल्पतनयो जातः सुखी निर्घृणः।
स्वल्पाशी विकलेक्षणो रणतलश्लाघी सुशीलो नटः॥
ज्ञानाचाररतः सुलोचनयशः स्वातंत्रिकोच्चंगते।
मीने स्त्रीजनसेवितो हरिगते राश्र्यंधको वीर्यवान्॥

रवि लग्न में हो तो संतति कम होती है। जन्म से ही सुखी, निर्दय, कम खानेवाला, बार बार अस्वस्थता पैदा होनेवाला, युद्धमें आगे रहने वाला, शीलवान, नट, ज्ञान और आचरण में मग्न, सुहावनी आँखों का, सब कार्यो में यशस्वी और स्वतंत्रतासे ऊंची जगह पानेवाला होता है। मीन में रवि हो तो बहुतसी स्त्रियों से संबंध होता है। सिंह में हो तो रात को दिखता नहीं है। यहां लग्न स्थान को संतति दर्शक मानकर कम संतति ऐसा जो फल दिया है वह रवि पुरुष राशि में हो तो मिलता है। स्त्री राशि में हो तो संतति अच्छी संख्या में होती है। स्त्री राशि में हो तो सुखी होता है। किंतु पुरुष राशि में हो तो सदा कोई न कोई दुख पीछे लगा रहता है। या तो संतति का अभाव होता है या शारीरिक कष्ट होते है। कम खानेवाला यह फल स्त्री राशि का है। पुरुष राशि में खाने की बहुत इच्छा होती है। विकलेक्षण यह फल मेष, सिंह और धनु इन राशियों में विशेष कर मिलता है। युद्ध में अग्रसर और सुशील ये फल

भी इन्हीं राशियों में विशेष मिलते है। मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धनु, मकर, कुंभ, मीन इन राशियों में नट होना संभव है। ज्ञानाचाररत यह फल कर्क, वृश्चिक, धनु और मीन में देखा जाता है। स्त्री राशि में सुलोचन यह फल देखा गया है। मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु इनमें तो कीर्ति मिलती है, दूसरी राशियों में नहीं। स्वतंत्रता से ऊंची जगह पाना यह फल कर्क, वृश्चिक व मीन में अधिकता से, मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ इनमें साधारण तौर पर और वृषभ, कन्या तथा मकर में बहुत ही कम देखा गया है। पुरुष राशि में हो तो आरंभ से ही स्वतंत्र रहता है। स्त्री राशि में हो तो पहले नौकरी करके बाद में स्वतंत्र होता है। मीन में रवि अकेला हो तो अनेक स्त्रियों का उपभोग नहीं होता, उसके साथ शुक्र हो तो होता है। सिंह में रवि हो तो रातको नहीं दिखता यह फल समझ में नहीं आता। वस्तुतः सिंह राशि रातको ही बलवान होती है और सिंह को भी रात में ही अच्छा दिखाई देता है। मैंने जो दो उदाहरण देखे उनमें एक में व्ययस्थान में कन्या का रवि शनि से दृष्ट था और दूसरे में मीन का रवि धन स्थान में और अष्टम में चंद्र तथा पंचम में शनि था। यह अनुभव शास्त्रकारों से भिन्न है। वीर्यवान का मतलब पराक्रमी या स्त्री उपभोग की विशेष इच्छा रखनेवाला यह हो सकता है। पहला फल अपने अपने व्यवसाय के अनुसार होता है। जैसे लडाकू आदमी हो तो युद्ध में शौर्य बतलाता है। मध्यम वर्ग का हो तो निजी उद्योग में फायदा होता है। निचले वर्ग में नौकरी में तरक्की मिलती है। रवि स्वभावतः उष्ण होने से कामवासना अधिक होना स्वाभाविक है। मेष, सिंह और धनु में रवि हो तो दिनमें भी कामेच्छा होती है इतनी प्रबल वासना होती है। मिथुन, तुला, कुंभ में साधारण तथा अन्य राशियों में यह फल कम मिलता है।

आर्यग्रन्थकार—सवितरि तनुसंस्थे शैशवे व्याधियुक्तो
नयनगदसुदुःखी नीचसेवानुरक्तः।
न भवति गृहमेधी दैवयुक्तो मनुष्यो
भ्रमति विकलमूर्तिः पुत्रपौत्रैर्विहीनः॥

बाल वय में रोग होते है। आंखों के विकार होते है। नीच लोगों की नौकरी करता है। दैवयोग से स्त्रीपुत्र नहीं होते। एक जगह घर बसा कर नहीं रहता। हमेशा भटकता रहता है। इनमें शैशव में व्याधि यह फल मेष, सिंह व धनु में ठीक उतरता है। इनमें शीतला, टाइफाइड इत्यादि रोग होते है। वृषभ, कन्या और मकर में सरदी, आंख के रोग ये विकार होते है। मिथुन, तुला और कुंभ में मलेरिया, सुखी और भूत-बाधा संभव है। कर्क, वृश्चिक और मीन में प्रदर, खांसी, संग्रहणी ये विकार होते है। १८ वें वर्ष तक प्रकृति मामूली रहती है फिर कुछ सुधार होता है। नीचों की सेवा यह फल वृषभ, कन्या व मकर में मिलता है। घर गृहस्थी नहीं होना और भटकते रहना ये फल लग्न के रवि में बिलकुल नहीं होते।

हिल्लाजातककार---**लग्नजे दिनकरस्तनुपीडां वत्सरे तिथिमिते च करोति**। रवि लग्न में हो तो १५ वें वर्ष में शरीर को कष्ट होते है। इसकी उपपत्ति नहीं बैठती। १५ वां वर्ष तृतीय स्थान का है। यह स्थान संकट दूर करता है। फिर इसी का वर्ष कष्टदायक होगा यह कहना कठिन है। रवि के स्वभावतः वर्ष १ और १३ है उनमें शरीर को कष्ट होते ही है। साधारण तौर पर १८ वें वर्ष तक पीडा यह लग्नस्थ रवि का फल है।

यवनमत---अशक्त, स्त्रियोंसे दूषित, बागबगीचों का शौकीन, किंतु तुला में नीच का रवि हो तो मानहानि, अविचारी, ईर्षालु, बचपन में दुर्बल, ये फल होते है। मेरे मत से कठोर बर्ताव के कारण स्त्रियां अप्रसन्न होती है। खासकर तुला और धनु लग्न में रवि हो तो वह पुरुष स्त्री को अच्छी तरह नहीं सम्हाल सकता। बगीचों के बारे में कोई अनुभव नहीं मिला है। अविचारी और ईर्षालु ये फल तुला राशि में देखे गये है। अन्य में नहीं।

अज्ञात ग्रन्थकार---रवि लग्न में हो तो आत्मविश्वासी, दृढनिश्चयी, उदार, ऊंचा, ऊंचे विचारों का, स्वाभिमानी उदार हृदय का, हलके कामों

का तिरस्कार करनेवाला, कठोर, न्यायी और प्रामाणिक होता है। अग्नि राशि में रवि हो तो महत्वाकांक्षी, जलदी क्रुद्ध होनेवाला, सबपर अधिकार जमाने की इच्छा रखनेवाला, गंभीर और कम बोलनेवाला होता है। रवि पृथ्वी राशि में हो तो घमंडी, दुराग्रही, सनकी होता है। वायु राशि में हो तो न्यायी अच्छे दिल का, कलाकौशल और शास्त्रीय विषयों में रुचि रखनेवाला होता है। जल राशि में हो तो स्त्रियों में अधिक आसक्त होता है जिससे अपने नाश का भी विचार भूल जाता है। कर्क राशि में अपनी घरगृहस्थी में मग्न, दयालु होता है। वृश्चिक में अच्छा डॉक्टर या दवाई बनानेवाला होता है और जगत में विख्यात होता है। साधारण तौर पर लग्न का रवि प्रगति व भाग्योदय का पोषक होता है।

राफेल--इसने पृथ्वी राशि के जो फल दिये है वे मेष, सिंह और धनु में मिलते है। अग्नि राशि के फल मिथुन, तुला कुंभ में मिलते है। वायु राशि के फल उन्हीं में मिलते है। जलराशि में विषयासक्ति ऐसा फल दिया है वह पुरुष राशि में ही अनुभव में आता है। अपने से भिन्न लिंग के व्यक्ति के प्रति आकर्षण यह फल मेष, सिंह, धनु इनमें अधिक; मिथुन, तुला, कुंभ में साधारण; वृषभ, कन्या, मकर में कम और कर्क, वृश्चिक और मीन में सबसे कम मिलता है। स्त्री का स्त्रीलग्न हो तो वह पुरुषसौख्य के बारे में आसक्त होती है। और पुरुषलग्न का पुरुष स्त्री सौख्य में आसक्त होता है। पुरुष लग्न की स्त्रियां उपभोग का आनंद अच्छी तरह नहीं जानती। स्त्री लग्न के पुरुष सच्ची तौरपर स्त्री का उपभोग नहीं कर पाते है। फिर भी जगत में स्त्रीलग्न के ही पुरुषों को स्त्रिया अधिक चाहती है और वे सुखी होते है। उनमें भी वृषभ, कन्या और मकर लग्न के लोग अधिक होते है। कर्क, वृषभ और मीन के बहुत कम या नहीं ही होते है यह आश्चर्य की बात है। वृषभ का रवि लग्न में हो तो वह डॉक्टर या केमिस्ट बनता है अथवा विख्यात मेकॅनिकल इंजिनीयर, नाविक या बी. एस्‌सी, डी. एस्‌सी आदि उपाधिधारी शास्त्रज्ञ होता है। आम तौर पर पश्चिमी लोगों ने लग्न के रवि के फल अच्छे ही माने है। उनको बुरे फलों का अनुभव नहीं हुआ होगा। किंतु हमारे

प्राचीन ग्रंथों में दोनों फल दिये है जिससे साबित होता है कि पश्चिमी लोगों की अपेक्षा हमारा संशोधन अधिक प्रगत है ।

मेरा अनुभव—संक्षेप में कहा जाय तो लग्न में स्त्री राशि का रवि संसार में सुख देता है और पुरुष राशि का थोडा दु:खदायक होता है। धनु राशि में विद्वान, कायदेकानून में प्रवीण, अच्छा नट, बैरिस्टर, हायकोर्ट जज वगैरह ऊंची जगहों पर रहता है किंतु साथ में स्त्रीसुख नहीं होना, अनेक स्त्रियाँ होना, संतति नहीं होना, ऐसा कोई दु:ख होता ही है। कर्क राशि में सामान्यत: धनवान, स्त्रीसौख्य से संपन्न, संतति भी होती है किंतु जगत में मान कम होता है। अधिकार कम होता है। ऐसे दु:खी भी होते है। खास कर दक्षिणायन का याने कर्क से धनु तक का रवि मनुष्य को भाग्यशाली बनाता है। इन राशियों में वह विश्व का विकास करता है। उत्तरायण का रवि लडाई झगडे और अपना हक जमाने की प्रवृत्ति को बढाता है। दक्षिणायन में इसके विपरीत दैवी वृत्तियां बढती है। सामान्य तौर पर लग्न का रवि मनुष्य की उन्नति करता है क्यों कि वह स्वयं ऊंचे दशम स्थान की ओर बढा हुआ होता है।

धनस्थान का रवि

वैद्यनाथ–**त्यागी धातुद्रव्यवान् इष्टशत्रुर्वाग्मी वित्तस्थानगे चित्रभानौ।** रवि धनस्थान में हो तो वह मनुष्य त्यागी, मूल्यवान धातु और पैसेवाला तथा शत्रुओं को अनुकूल कर लेनेवाला होता है। इन में त्याग यह फल मेष, सिंह और धनु राशि में ठीक उतरता है। जिन का लग्न मकर, कन्या, वृषभ या वृश्चिक हो उनको रवि यदि धनस्थान का हो तो मूल्यवान धातु और नगदी पैसे प्राप्त होते है। स्त्रीलग्न हो तो इष्टशत्रु और वाग्मी यह फल अनुभव में आता है।

आर्यग्रंथकार–**धनगतदिननाथे पुत्रदारैर्विहीन: कृशतनुरतिहीनो रक्तनेत्र: कुकेश:। भवति च धनयुक्तो लोहताम्रेण सत्यं न भवति गृहमेधी मानवो दु:खभागी ॥**

इनका स्त्रीपुत्रों से हीन यह फल धनस्थान में मिथुन, धनु और मीन राशि का रवि हो तो मिलता है। शरीर कृश होना यह फल नहीं मिलता क्योंकि वह लग्न पर अवलंबित है। रतिहीन यह फल वृषभ, धनु और मिथुन (उत्तरार्ध) इन लग्नों के पुरुषों को ही मिलता है। रवि, मेष, सिंह या धनु में हो तो आखें लाल होती है। किंतु चित्पावन ब्राह्मणों की आंखें जाति से ही लाल होती है इसलिये उन्हें धनस्थान का रवि होना आवश्यक नहीं। मैंने सिर्फ दो आदमी ऐसे देखे है जिन्हें सचमुच रक्तनेत्र कहा जा सके। इनकी आंखे अग्नि जैसी लाल और पुतलियां भी लाल थीं। इनमें से एक के धनु राशि में रवि मंगल की पूरी योगयुति और क्रान्तियुति थी और साथ में मूल नक्षत्र की भी युति थी तथा लग्न में वृश्चिक राशि में शनि और राहु थे। दूसरे उदाहरण मे रवि मंगल और रोहिणी तारा की युति थी तथा लग्न में मेष के कृत्तिका नक्षत्र में राहु शनि की पूरी युति थी। इनसे कुछ नियम बनाना कठिन है। बुरे केश यह फल रवि का न होकर लग्नस्थान का है। तांबे और सोने से संपन्न यह फल पुरुष राशि में मिलता है स्त्री राशि में नहीं। यह सत्य है कि यह फल मेष सिंह और धनु लग्न हो तो मिलता है। घरगृहस्थी न होकर मनुष्य दुखी होता है यह फल वृश्चिक, धनु, मकर या कुंभ लग्न हो तो ही मिलता है।

हिल्लाजातककार—सप्तदशपरिमितेच वत्सरे यच्छति द्रविणगो धनहानिम्। धनस्थान का रवि आयु के १७ वें वर्ष में संपत्ति का नाश करता है। मेरे मत से धनस्थान का रवि १७ वें वर्ष में धन का नाश करता ही है ऐसा नहीं। २२ वें वर्ष तक पैतृक संपत्ति नष्ट होती है ऐसा अनुभव है। क्योंकि १७ वें वर्ष तक प्राय: खुदकी संपत्ति होती ही नहीं।

यवनमत—धनस्थान का रवि हो तो वह मनुष्य बुद्धिहीन, क्रोधी, कंजूस, निर्धन, क्रूर, कुरूप, रोगी और गाफ़िल रहता है। इनमें से मेरे विचार से बुद्धिहीन और कंजूस ये फल मिथुन राशि में मिलते है। मेष और धनु राशि में क्रोधी होता है। वृश्चिक व धनु राशि में निर्धन होता है। क्रूर और कुरूप ये फल किसी राशि में नहीं मिलते। रोगी यह

फल हर एक राशि में थोडा बहुत मिलता ही है। धनु लग्न हो तो गाफिल रहने का फल मिलतां है।

राफेल—धनस्थान में रवि हो तो वह मनुष्य उदार, पैसा बहुत जल्दी खर्च करनेवाला, बेफिक्र और संपत्ति खतम कर देनेवाला होता है। ये फल मेरे मत से पुरुष रशि में रवि हो तो ही मिलते है अन्यथा नहीं।

मेरा अनुभव—धनस्थान का रवि–वृषभ, कन्या या मकर राशि में हो तो आवाज कर्कश होती है और धन का संग्रह नहीं होता। इन्शुअरन्स के रूप में पैसा इकठ्ठा करना चाहे तो भी उसके प्रीमियम नहीं भर सकता जिससे पॉलिसी छोड देना पडता है। किसी का कर्ज चुकाने के लिये पैसे इकठ्ठे किये तो कोई तीसरा ही जबरन उसे ले जाता है। जब कि उनके वापस मिलने की कोई आशा नहीं होती फिर भी ऐसे समय खुद कर्जदार होकर भी दूसरे को कर्ज देना पडता है। पैतृक संपत्ति होती हीं नहीं और हुई भी तो मिलती नहीं। भाईबंद या ट्रस्टी ही गडप कर जाते है। फिर भी रही तो २८ वें वर्ष तक नष्ट होती है। तब तक उद्योग अच्छी तरह नहीं होता और यश नहीं मिलता। धंधे में नुकसान होकर कर्ज लेना पडता है। एक कर्ज चुकाने तक दूसरा तैयार हो जाता है। नौकरी सुहाती नहीं और स्वतंत्र धंधा करने की इच्छा होती है। धनेश बलवान हो याने वक्री, अस्तंगत, मंदगामी, अतिचारी या पापग्रह से युक्त न हो तो ही यह इच्छा पूरी होती है। कुटुंब के व्यक्ति इसके सामने ही मर जाते है। इसके जन्म से पिता का भाग्योदय हुआ तो आखिर तक वह पिता पर ही अवलंबित रहता है। स्वतंत्र नौकरी या धंधा नहीं कर पाता। अपनी कमाई पिता को नही देता और मन में कूढता रहता है। बाप की मृत्यु के बाद धन मिलता है या २२ वें वर्ष तक बाप की मृत्यु हो जाती है। पितापुत्र का सौमनस्य नहीं रहता। यूनिवर्सिटी की पढाई पूरी नहीं हुई तो भी बुद्धि का तेज दिखाई देता है। बोलना निर्भय और तीखा होता है जो ढोंगी समाजनेताओं को शल्क जैसा मालूम होता है। हरएक दिनके मामूली बोलचाल से गलतफहमी होती है। यह किसी की नहीं सुनता लेकिन संकट के वक्त आगे आकर सब को मदत पहुंचाता है।

वकील और डॉक्टर लोगों को यह योग अच्छा होता है। इसमें न थकते हुये श्रम कर सकता है, उकता नहीं जाता। डॉक्टर हो तो समय पर रोगियों को ध्यान से देखता है। काम पडे तो अपने पैसे से दवाई करता है। ज्योतिषी हो तो उसके बताये अशुभ फल जलदी अनुभव में आते है, शुभ फल देरी से मिलते है।

धनस्थान में मिथुन, तुला या कुंभ का रवि हो तो खुद खूब पैसा कमाता है किंतु खर्च करने में कंजूस होता है। लोगों की सहानुभूति प्राप्त नहीं करता। बुद्धि साधारण और पढाई कम होती है। दैवयोग से धन मिलता है। खुद उपभोग नहीं करते और न दूसरों को करने देते है। विज्ञान की शिक्षा अच्छी होती है, साहित्य की नहीं।

धनस्थान का रवि–कर्क, वृश्चिक और मीन राशि का हो तो अधिकारी और विद्याभ्यासी होता है। किसी फर्म में नोकरी कर अच्छा पैसा कमाता है। इसी स्थान में मेष, सिंह और धनु राशि का रवि होतो वह मनुष्य खुद की ही अधिक फिक्र करता है, खुद के लिये चाहे जितना पैसा खर्च करता है, काम से बडबड ही ज्यादा करता है और मुफ्त में बडप्पन पाना चाहता है। इसे नाम मिलाकर लाभ होने की संभावना हो तो किसी संस्था को दान देने का भी दिखावा करता है। पेपर में अपना नाम चित्र प्रकाशित करने के लिये पैसे देकर या अन्य किसी भी मार्ग से संपादक की खुशामत करता है। किंतु अपना लाभ या कीर्ति न होती हो तो अनाथ और दीनों की ओर नजर भी नहीं डालता।

अब धनस्थान के रवि के सामान्य फल बतायेंगे। इस मनुष्य को हमेशा उष्णता रहती है इससे आंख, हाथ के तलवे और पांव हमेशा गरम होते रहते है। वृद्धावस्था में आंख कमजोर हो जाती है। अन्न के बारे में विशिष्ट रुचि होती है। विशिष्ट पदार्थ ही भाते है। कपडे लत्ते अधिक न होने पर भी रहने की जगह साफ सुथरी और अच्छी चाहिये। रात को ३ के बाद काम वासना होती है। धनका संग्रह नहीं होता किंतु अन्नवस्त्र की कमी नहीं होती। वृश्चिक, धनु, मकर या कुंभ लग्न हो और धनस्थान

का अधिपति गुरु या शनि वक्री हो और वे दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें या बारहवें स्थान में हों और ऐसे योग में रवि धनस्थान में हो तो यह अत्यंत दारिद्रय सूचक योग होता है। ऐसे लोगों को आठ आठ दिन भूके रहना पडता है। अन्न के लिये तडफडाते है। घरगृहस्थी नहीं होती। समयपर अन्न मिला भी तो तबियत ठीक नहीं रहती। अन्न पचता नहीं। तकलीफ होती है। स्त्रीपुत्र भी नहीं होते। जीवन में स्थिरता नहीं होती। किसी दूसरे के घर रहे तो उसे अपना घर समझ कर रहते है। इनको अपनी इच्छा के विरुद्ध खानपान करना पडता है। धन और मकर लग्न के लोगों को यह अनुभव विशेषता से आता है क्योंकि इनका धनेश शनि और गुरु होता है और शनि ही उपजीविका का कारक है। ऐसे लोगोंने पूर्व जन्म में दूसरों को ठगा कर हीन स्थिति में पहुंचाया होता है या दूसरों की रोजी छुडाकर उनको संकट में डाला होता है।

धनेश गुरु वक्री हो तो ये फल कुछ सौम्य होते है किंतु पूरी तौर पर नष्ट नहीं होते। धनस्थान के स्वामी और धनस्थान ये अन्न के कारक है इसलिये ये फल मिलते है। हमारी खुदकी कुंडली में यह योग है। कई ज्योतिषीयोंने मेरी कुंडली का विवेचन किया किंतु अन्न न मिलने का योग किसी ने नहीं बताया। मेरी कुंडली ऐसी है--
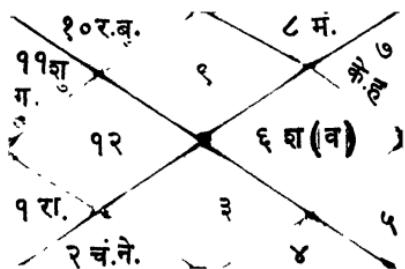
जन्म शक १८१३ माघ शुक्ल ७ सूर्योदय से इष्ट घटिका ५६ ता. ६-२-१८९२। जन्म समय ४ से ४-१० तक। धनु लग्न २५°। जन्मस्थान बेलगांव (अक्षांश १५-५० रेखांश ७४-५० पलभा ३-२४) मुझे अन्न नहीं मिलता। अन्न के लिये तडपना पडता है। घरगृहस्थी नहीं।

दूसरों के ही घर रहना पडता है। किंतु जहां रहा वहां किसी प्रकार की अपकीर्ति नहीं हुई। गुरुवर कै. नवाथेजी की कुंडली में कुंभ लग्न है और धनस्थान में स्वगृह का गुरु वक्री है। उनकी स्थिति भी मेरी जैसी ही थी। सिर्फ अन्न की कमी नहीं थी। ता. ४–८–१९३५ के भविष्यदीप पत्र में मैंने ऐसी ही एक कुंडली प्रकाशित की थी। इसमें मकर लग्न था और धनेश शनि वक्री था। वह आदमी चित्पावन ब्राह्मण था। बूढा, दाढीवाला, कुछ छोटी कद का, मुंह पर शीतलाके दाग और शरीर पर मैले कुचैले कपडे ऐसे वेष में बम्बई के फूटपाथ पर निर्णयसागर का पंचांग बेचते फिरता था। बाद में वह नर्मदा की परिक्रमा करने गया। उसकी शादी नहीं हूई थी। उसको दो दिन में एक बार खाने को मिलता था। बम्बई में रहता था तब मैं स्वयं उसे दो दिनके बाद खाने के लिये अठन्नी देता था। किंतु ऐसी स्थिती में भी उसकी वृत्ति अभिमानी थी। भीख मांगू लेकिन आजाद रहूं ऐसी वृत्ति थी किंतु दैव सीधा नहीं था। ऐसे लोग बोलने में तीखे और सत्य के लिये चाहे जितने भी कष्ट झेलनेवाले होते है।

तृतीय स्थान का रवि

वैद्यनाथ—शूरो दुर्जनसेवितोऽतिधनवान् त्यागी तृतीये रवौ। पराक्रमी, दुर्जनों से सेवा ग्रहण करनेवाला, धनवान और त्यागी होता है।

आर्यग्रंथकार—सहजभुवनसंस्थे भास्करे भ्रातृनाशः प्रियजनहितकारी पुत्रदाराभियुक्तः भवतिच धनयुक्तो धैर्ययुक्तः सहिष्णुः विपुलधनविहारी नागरी प्रीतिकारी ॥ बंधुओं का नाशक, प्रियजनों का हित करनेवाला, स्त्रीपुत्रों से सपन्न, धनवान, धैर्यवान, दूसरों का उत्कर्ष सहनेवाला, बहुत पैसा खर्च करनेवाला होता है।

हिल्लाजातककार—वत्सरे नखमिते तृतीयकः स्थानगो दिनकरोर्थ-लाभदः। यह रवि आयु के २० वें वर्ष में धनलाभ करता है।

बृहत्पाराशरीकार—अग्रे जातं रविर्हन्ति। यह रवि बडे भाई का नाश करता है।

यवनमत—यह पदवीधर, ख्यातनाम, नीरोग, मीठा बोलनेवाला, सुंदर, स्त्रियों का भोक्ता, बिलासी, चैनी, घोडे की सवारी में कुशल, निश्चयी, धनवान और शांत होता है। वृत्ति बहूत गंभीर होती है। भाई-बंधुओं का सौख्य इसको नहीं मिलता किंतु यह सबको सुख देने का प्रयत्न करता है।

राफेल—स्थिर और निश्चयी, विज्ञान और कला का प्रेमी, निवास-स्थान क्वचित ही बदलनेवाला। जल या चर राशि में बहुत से छोटे प्रवास हो सकते है।

सब शास्त्रकारों के मत से यह रवि शुभ फल ही देता है। बुद्धिवान, धनवान, धैर्यवान, पराक्रमी, वाहनसंपन्न, पुत्रोंसे युक्त, ख्यातिप्राप्त, राज-सन्मानित, युद्ध में शत्रु का नाशक, भाईबहिन को सुख न देनेवाला, भाई भाई एक जगह रहते हों तो कष्ट देनेवाला, ऐसे फल सबने एक मतसे बताये है। इनमें संतति, संपत्ति, वाहन और त्याग ये फल स्त्री राशियों में मिलते है। शेष फल पुरुष राशियों में (मेष छोडकर) मिलते है। हिल्लाजातककार का २० वें वर्ष में धनलाभ का फल स्त्री राशि में और निचले वर्ग के लोगों में देखा जाता है। उच्च वर्ग में नहीं। क्योंकि हाल में ३६ वें वर्ष तक धनलाभ नहीं होता।

बृहत्पाराशरीकार का फल पुरुष राशि का है।

यवनमत में धनवान और शांत वृत्ति ये फल स्त्री राशि के है। शेष पुरुष राशि के है।

राफेल द्वारा दिये हुये फल पुरुष राशि के ही है।

मेरा अनुभव—तृतीय स्थान में मेष राशि का रवि हो तो दुर्बल बिचारों का, आलसी, शरीर को कष्ट न देनेवाला, बाते बनानेवाला, बडे भाई को मारक, निरुद्यमी और उपद्रवकारी होता है। अन्य पुरुष राशियों में हो तो शांत, विचारशील, बुद्धिमान, सामाजिक और शिक्षासंबंधी तथा

राजकीय कार्य में भाग लेनेवाला, नेता, स्थानिक स्वराज्य संस्था जैसे लोकल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्युनिसिपालिटी तथा असेंब्ली, कौन्सिल आदि में चुनाव, अध्यक्ष या उपाध्यक्ष का पद, बडी कंपनियों के डायरेक्टर इस प्रकार किसी भी जगह अपनी सत्ता रखनेवाले होते है। जबान में अधिकार होता है। नीचे के लोग प्रेम से काम करते है। मिथुन, तुला या धनु में रवि हों तो लेखक, प्रकाशक, प्रोफेसर, वकील इन व्यवसायों में आगे आते है।

पंजाब के लाला गंगाराम ने अपनी सब इस्टेट विधवा स्त्रियों की उन्नत्ति के लिये दे दी। इनकी कुंडली में कन्या का रवि था। नागपुर विश्वविद्यालय को जिनने एकमुश्त चालीस लाख का दान दिया उन राव-बहादुर डी. लक्ष्मीनारायण की कुंडली में मकर का रवि तृतीय स्थान में था। अन्नमलाई यूनिवर्सिटी के संस्थापक और लाखों रुपयों के दाता मद्रास के राजा अन्नमलाई की पत्रिका में वृषभ का रवि था। इस प्रकार स्त्री राशि के रवि के फल संपत्ति की दृष्टि से अच्छे मिलते है धनवाहन से संपन्न होता है।

पुरुष राशि का रवि बडे भाई को मारक होता है। या तो २२ वें वर्ष तक उसकी मृत्यु होती है या वह विभक्त होता है। विभाजन के समय झगडा फिसाद नहीं करता। एक जगह ही रहें तो बडे भाई का धंधा ठीक नहीं चलता। बच्चे ज्यादा दिन नहीं जीते। और भी तकलीफ होती है। स्त्रीराशि का रवि हो तो विभाजन के समय कोर्ट में झगडे चलते है। अलग नहीं हुये तो घर का काम खुद चलाना पडता है। कर्ता का मान मिलता है। जिसके तृतीय में रवि हो उसने भाई के पास नहीं रहना चाहिये क्योंकि इससे एक दूसरे के भाग्योदय में विघ्न उपस्थित होता है। तृतीयस्थान में पुरुष राशि का रवि हो तो पिता को वह अकेला ही बच्चा होता है। भाई रहे भी तो उनसे मदत नहीं होती। सबसे छोटा हो तो भाई बहिनों से अच्छा बर्ताव नहीं रखता। या तो यह सबसे बडा होता है या सबसे छोटा। स्त्रीराशि का रवि हो तो भाईबहिन हो सकते है।

चतुर्थ स्थान का रवि

वैद्यनाथ—हृद्रोगी धनधान्यबुद्धिरहितः क्रूरः सुखस्थे रवौ। हृदय का विकार होता है, धनधान्य और बुद्धि नहीं होती, क्रूर होता है।

आर्यग्रन्थकार—विविधजनविहारी बन्धुसंस्थो दिनेशो भवति च मृदुवेत्ता गीतवाद्यानुरक्तः। समशिरसि युद्धे नास्ति भंगः कदाचित् प्रचुरधनकलत्री पार्थिवानां प्रियश्च ॥

हिल्लाजातककार—तुर्यंग कलहो दिननाथो वत्सरेऽपि चतुर्दशे स्यात्। यह रवि आयु के १४ वें वर्ष में घर में झगडा उत्पन्न करता है।

यवनमत—यह सुख नही देता। संशयी, मुरझाये चेहरे का वेश्यासेवी और शत्रुयुक्त होता है। पागल जैसी मंद बुद्धि होती है।

राफेल—रवि बलवान या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो अच्छी स्थिति प्राप्त होती है। आयुके अंतिम भाग में यश की प्राप्ति होती है। पिता को भी सुख देता है।

मेरे विचार—आर्यग्रंथकार के सिवा अन्य सब प्राचीन ग्रंथकारोंने इसके फल बुरे बताये है। सुख नहीं, हृदय को पीडा, वाहनों का सुख नहीं, भाईबंदोंका सुख नहीं, पिता का, घर का और धनका नाश, बुद्धिहीन, क्रूर, युद्धसे भागनेवाला, बहुत पत्नियां होनेवाला, पिता का वैरी, घर में झगडा करनेवाला, दुष्टों के कारण मानसिक चिंता का शिकार होनेवाला, चंचल विचारों का. लोगों पर प्रभाव न डालनेवाला ये सब फल यदि रवि, वृषभ, सिंह, वृश्चिक या कुंभ में हो तो ही मिलते है। मेष और कर्क में हो तो संशयी, म्लान चेहरे का और वेश्यासेवी ये फल मिलते है।

हिल्लाजातककार का मत—बच्चेकी पत्रिका में चौथे स्थान में रवि हो तो वह १४ वें वर्ष घर में कलह पैदा करता है यह फल समझ में नहीं आता। इस छोटे वय में वह खुद इस्टेट के लिये झगडे यह संभव मालूम नहीं होता। इसके पिता और चाचा में झगडा हो सकता है किंतु इसको चाचा ही नहीं हो तो वह फल कैसे मिलेगा? इसलिये इस फल का

विचार नहीं कर सकते। आर्यग्रंथकार के फल मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर और मीन में रवि हो तो मिलते है। यहां एक बात ध्यान में रखनी चाहिये कि रवि के ये सब फल एक ही व्यक्ति को एक ही जगह मिलें ऐसा नियम नहीं है। उदाहरण के लिये, किसी का चतुर्थ का रवि मेष में है। इसका पिता ५ वें वर्ष में ही मरा। आगे कुछ दुःख नहीं रहा। बचपन में दूसरों के यहां रहा। २३ वें वर्ष में पदवीधर हुआ। २४ वें वर्ष मे मा मर गई। उसके बाद उद्योग में लगा। अब संतति, संपत्ति, स्त्री, नौकर चाकर आदि से संपन्न है। इसकी पैतृक संपत्ति पहले ही नष्ट हो चुकी थी। इसके पैसे का उपभोग मां बाप नहीं कर सके।

मेरा अनुभव--पीछे एक जगह कहा है कि रवि जिस स्थान में होता है उसका फल नष्ट करता है। इसके अनुसार चौथे स्थान में रवि हो तो बचपन में माता या पिता का मृत्यु होता है। घरगृहस्थी उजड जाती है। बचपन बहुत तकलीफ का होता है। किंतु २८ वें वर्ष से ५० वें वर्ष तक बहुत अच्छी स्थिति रहती है। इस समय खुद के पैसों से घर और इस्टेट होती है। स्त्री एक ही और सतति भी अधिक नहीं होती। नौकरी करता है। आयु के मझले भाग में वाहन सौख्य अच्छा मिलता है। किंतु उत्तरार्ध में फिर दुख होता है। घर में कोई मानता नहीं। सब विरोध में हो जाते है। यह लोगों की झंझटों से बिलकुल दूर रहता है। मरण शांति से और जलदी होता है। यह अत्यंत व्यावहारिक होता है। वेदान्त इसको प्रिय नहीं होता। व्यापारी वर्ग जैसें गुजराती, मारवाडी, वैश्य, जैन आदि के लोग २२ वें वर्ष से धंधा शुरू करते है। उसमें अच्छी प्रगति करते है। आयु के ४८ से ५२ वें वर्ष तक स्त्री की मृत्यु होती है। प्राचीन शास्त्रकारोंने जो फल दिये है वे अकेले रवि के नहीं है। उसके साथ मंगल, शनि, राहु इन पाप ग्रहों का संबंध हो तो वे मिलते है। ऐसा नहीं हो तो कम मिलते है।

राफेल का मत--सिर्फ तुला के रवि में अनुभव में आता है। सामान्य तौरपर यह रवि पूर्व आयुष्य में दुःखदायक, मध्यभाग मे सुखकारी और वृद्धावस्था में दुःखदायक होता है ऐसा प्रतीत होता है।

पंचम स्थान का रवि

वैद्यनाथ— राजप्रियश्चंचलबुद्धियुक्त प्रवासशील: सुतगे दिनेशे । चंचल बुद्धि का, अधिकारियों को प्रिय और प्रवास करनेवाला होता है ।

हिल्लाजातककार—पंचमो दिनपतिः पितृमृत्युर्वत्सरे नवमके : यह रवि ९ वें वर्ष में पिता का मृत्यु कराता है ।

आर्यग्रंथकार—तनयगतदिनेशे शैशवे दुःखभागी न भवति धनभागी यौवने व्याधियुक्त: जनयति सुतमेकं चान्यगेहश्च शुरश्चपलमति विलासी क्रूरकर्मा कुचेता ।। बचपन में दुख देता है । पैतृक संपत्ति का नाश करता है । जवानी में रोग होते है । एक ही पुत्र होता है । दूसरे के घर में रहना पडता है । शूर, तीक्ष्ण बुद्धि का, विलासी होता है । बुरे कर्म करता है और बुरी सलाह देता है ।

यवनमत—मानहीन, संतति कम, मूर्ख, क्रोधी, नास्तिक और धार्मिक कार्यों में विघ्न करनेवाला होता है ।

राफेल—जलराशि से भिन्न राशियों में हो तो संतति नहीं होती । जलराशि में हो तो बच्चे कमजोर और बीमार होते है । चंद्र, गुरु या शुक्र वहां साथ में न हों या रवि पर उनकी दृष्टि न हो तो मर भी जाते है । विलास और स्त्रीसंग में खुश रहता है । पैसे बहुत खर्च करता है ।

मेरे विचार—बहुतसे शास्त्रकारोंने अल्प संतति, संतति न होना या होकर मरना ये फल बताये है । ये फल रवि पुरुषराशि में हो तो मिलते है । संपत्ति का फल भी कुछ पुरुष राशियों में ही मिलता है । शारीरिक कष्ट और दुख यह फल कर्क, वृश्चिक और मीन इन राशियों में मिलता है । बुरी बुद्धि, बुरे कर्म, क्रोधी, कुरूप, कुशील, कुसंगति इत्यादि फल वृषभ, कन्या, मकर इन राशियों में मिलते है । हिल्लाजातककार का मत कैसा है इसका अनुभव पाठक देख सकते है । यवनमत मिथुन, तुला और कुंभ राशि के रवि में ठीक उतरता है ।

मेरा अनुभव—पंचम स्थान में मेष, सिंह, धनु इन राशियों में रवि हो तो शिक्षण सामान्यतया पूर्ण होता है । मेष में हो तो संतति बिलकुल

नहीं होती। सिंह में हो तो संतति होती है लेकिन जलदी मर जाती है। रही भी तो उसका फायदा मां बाप को नहीं मिलता। मां बाप के बाद भाग्योदय होता है। शिक्षा कम किंतु व्यवहार में कुशल और ज्ञानवान होता है। रवि धनु में हो तो शिक्षा होती है। वकील, या सलाहकार, विलासी, चैनी, सुखी होता है। इन तीन राशियों में मुख्य फल तानाशाही है। वृषभ, कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक और मीन इन में स्वार्थपर, बहुत कंजूस, दूसरों के सुखदुख की ओर न देखनेवाला होता है। व्यापार में आगे बढते है। संतति होती है और रहती भी है। पैसा भी मिलता है। मिथुन, तुला और कुंभ में विद्याप्रेमी, लेखक, प्रकाशक, जज, बैरिष्टर, वकील ऐसे व्यवसाय होते है। इस स्थान का रवि किसी भी राशि में हो तो प्रसिद्धि देता है। शायद दो पत्नियां होती है। अधिकार की वृत्ति होती है। दूसरों के लिये कष्ट करता है। इसको संतति नहीं होती। पत्नी को संतति-प्रतिबंधक रोग—जैसे मासिक धर्म बंद होना या उस वक्त वेदना होना आदि—होता है। पूर्वजोंके शाप से संतति नष्ट होती है या होती ही नहीं। इसलिये ऐसे लोगोंने रवि की उपासना करना चाहिये। तीन साल कठोर साधना से संतति होकर बढती भी है। रवि पंचम में किसी भी राशि का हो तो पुत्र कम और कन्या ज्यादा यह फल मिलता है।

षष्ठ स्थान का रवि

आर्यग्रंथकार—अरिगृहगतभानौ योगशीलो मतिस्थो निजजनहितकारी ज्ञातिवर्गप्रमोदी। कृशननुगृहमेधी चारुमूर्तिर्विलासी भवति च रिपुजेता कर्मपूज्यो दृढाङ्गः॥ यह योगाभ्यास करता है। अपने लोगों का कल्याण करता है। जाति के लोगों को सुख देता है। पतले कद का और घरगृहस्थी सम्हालनेवाला होता है। दिखने में सुंदर, विलासी, शत्रुओं पर विजय पानेवाला, कार्य में मग्न और शरीर से मजबूत होता है।

कल्याणवर्मा—प्रबलमदनोदराग्निर्बलवान् षष्ठं समाश्रिते भानौ। श्रीमान् विख्यातगुणो नृपतिर्वा दण्डनेता वा॥ कामवासना और भूख बहुत अधिक होती है। बलवान, श्रीमान और प्रसिद्ध राजा या सेना का अधिकारी होता है।

हिल्लाजातककार—आयु के ९ वें वर्ष में पिता का मृत्यु होता है। २३ वें वर्ष में खुद मरने का भय होता है।

यवनमत—यह धनवान, सुंदर, निरोग, शत्रुओं पर विजय पानेवाला और मामा का सुख पानेवाला होता है।

राफेल—तबियत अच्छी नहीं रहती। रवि दूषित हो तो बहुत और लंबी बीमारियां होती है। स्थिर राशियों में हो तो गलरोग–जैसे क्विन्सी, डिफ्थेरिया, ब्रांकाइटिस, अस्थमा—होते है। हृदय के रोग, पीठ और कोंख निर्बल होना, मूत्ररोग ये फल भी होते है। साधारण राशियों में और खास कर कन्या और मीन में क्षय का डर होता है। फेंफडों में बाधा पहुंचतीं है। चर राशियो में यकृत के रोग, निरुत्साह, छाती दुर्बल होना, पेट के रोग, संधिवात, कोई बडी जख्म, इनकी संभावना है।

मेरे विचार—इन शास्त्रकारोंने बलवान्, श्रीमान, अपने लोगों को हितकर, जाति को हितकर, हमेशा सुख देनेवाला, उद्यमी, वाहन संपन्न, रोगयुक्त और प्रवास में क्लेश सहनेवाला ये फल बताये है। हरिवंश के श्लोक के अनुसार—सुखी, पवित्र और प्रेमी ये फल रवि यदि इस स्थान में स्त्रीराशि में हो तो मिलते है। शत्रुओं का नाशक, शूर, मामा का सौख्य कम मिलनेवाला, सरकार द्वारा सम्मानित—(पुराने समय में) रायबहादुर आदि उपाधियाँ प्राप्त करनेवाला, स्त्रियों को अप्रिय, कामी, तेज भूखवाला, अधिकारी, योगाभ्यासी ये सब फल पुरुष राशियों में मिलते है। राफेल के कहे हुये रोगफल स्त्री राशियों में मिलते है।

मेरा अनुभव—यह रवि पुरुष राशि में हो तो कामी, अभिमानी, क्रोधी, अत्यधिक खानेवाला, पूर्व आयुष्य में उपदंश, प्रमेह आदि रोग होकर उत्तर आयुष्य में तकलीफ पानेवाला होता है। मामा का पक्ष नाश को प्राप्त होता है। मौसी विधवा होती है या उसको पुत्रसंतति नहीं होती। शत्रु का नाश करता है। शिक्षा में स्मृति की शक्ति कम होती है। स्मरण नहीं रहता। दूसरों की बुरी बातों का स्मरण रखता है, उनका अपमान करता है। इसके नौकर भी मिजासखोर और बेपर्वा होते है। यह

नौकरी करे तो अधिकारियों से झगडे कर बैठता है। यही रवि स्त्री राशि में हो तो किसी से तोडकर नहीं बोलता। मीठा बोलकर काम बना लेता है। इन राशियों में सब शुभ फल मिलते है। ये लोग रसोई अच्छी बनाते है। घर की व्यवस्था, रोगी की सेवा अच्छी करते है। अत्यधिक खाने से बद्धकोष्ठ और कृमि विकार होते है ये लोग स्त्रियों को प्रिय होते है। पत्नी की मर्जी के अनुरूप रह कर उसे खुश करते है। मामा, मौसी बहुत होते है।

सप्तम स्थान का रवि

वैद्यनाथ—स्त्रीद्वेषी मदनस्थिते दिनकरेऽतीव प्रकोपी खलः। स्त्रियों का तिरस्कार करनेवाला, बहुत क्रोधी, दुष्ट होता है।

आर्यग्रन्थकार—युवतिभुवनसंस्थे भास्करे स्त्रीविलासी न भवति सुखभागी चंचलः पापशीलः। उदरसमशरीरो नातिदीर्घो न ह्रस्वः कपिलनयनरूपः पिङ्गकेशः कुमूर्तिः॥ स्त्री भोक्ता, सुख न पानेवाला, एक जगह न रहनेवाला, पापी, सम शरीरका, न बहुत लंबा न बहुत छोटा, आंखों की पुतलियां काली, केश ललाई को लिये हुये, बेढंगा शरीर, ऐसा होता है।

हिल्लाजातककार—रामदोपरिमिते च वत्सरे सर्वसंपदमवाप्नुयात् सप्तमः। सप्तम का रवि २४ वें वर्ष में सब प्रकारकी संपत्ति का लाभ कराता है।

यवनमत—चिन्ता से ग्रस्त, कामासक्त, दुर्बल, बहुत बोलनेवाला और संग्राम में जय पानेवाला होता है। इसकी स्त्री दुर्बल होती है।

राफेल—अभिमानी, पति या पत्नी, उच्च और भव्य आचरण के साथ उदारता, उद्योग और साझेदारी में यशप्राप्ति ये फल है। किन्तु बहुतसा रवि की राशि पर और अन्य ग्रहों की दृष्टि पर निर्भर है।

मेरे विचार—हमारे प्राचीन शास्त्रकारोंने इस स्थान के रवि के सब फल बुरे कहे है। इनका विचार करते हुये मेष, सिंह, मकर इन राशियों में ही वे मिलते है। अस्त के समय रवि निस्तेज और प्रकाशहीन होता

है उस पर से बुरे फल की कल्पना की गई होगी। हमारे ग्रन्थकारोंने एक भी अच्छा फल नहीं दिखाया। पाश्चात्य ग्रंथकारोंको सब अच्छे ही फल नजर आये है।

मेरे अनुभव—यह रवि मिथुन, तुला और कुंभ में हो तो विषयी, शिक्षा विभाग में प्रगति करता है। पोस्ट या तार विभाग में जाता है। अधिकारी या कानून विशेषज्ञ होता है। संगीत, नाटय, रेडियो इनमें भी प्रगति कर सकता है। संतति एक दो या बिल्कुल ही नहीं होती। मेष, सिंह और धनु इन राशियों में यह रवि हो तो दो विवाह होते है। एक ही विवाह हो तो अधिक आयु में होता है। स्वतंत्र उद्योग करता है। नौकरी नहीं चाहता। इन छः राशियों में साधारण फल ऐसे होते है व्यवहार का ज्ञान नहीं होता। उदार और लोगों पर भरोसा रखनेवाला है। इससे लोग इसको ठगाते है। अधिकार की भावना तीव्र होने से अपने मातहत लोगों पर ख्याल कम रहता है। बेफ़िकर होता है। बहुत पैसा मिलता है और खर्च भी हो जाता है। बडे बडे काम करता है। मान-सन्मान प्राप्त होता है। पौरुष पूर्ण बर्ताव होता है। दयालु वृत्ति रहती है। स्त्री राशियों में खासकर वृषभ, कन्या और मकर इनमें यह रवि हो तो व्यापार अच्छा करता है। म्युनिसिपालिटी, जनपद या विधान सभा में चुनकर आता है। सीधा बर्ताव करता है। कर्क, वृश्चिक और मीन में यह रवि हो तो डॉक्टर या विज्ञान का पदवीधर होता है। नहर या नल के अधिकारी होते है। सोडावाटर या औषधों के कारखाने चलाता है। सप्तम के रवि का सब राशियों में सामान्य फल इस प्रकार है। स्त्री अधिक प्रभावी होती है। वृत्ति और बर्ताव से वह अच्छी शीलवान होती है। वह श्रीमान घराने की किन्तु आपत्ति के समय पति को ही साथ देनेवाली होती है। संसार में कुशल और उदार होती है। अतिथियों से उकताती नहीं। उनका उचित सत्कार करती है और उसीमें सात्विक गौरव अनुभव करती है। गरीबों के लिये दयालु और नौकरों पर रौब जमाकर काम करा लेनेवाली होती है। इन सब गुणोंके बावजूद वह पतिपर प्रभुत्व जमाने का अथक प्रयास करती है। तिजोरी की चाभी उसके पास हो तो संतुष्ट रहती है। बर्ताव में प्रौढ, देखने में सुंदर, केश लम्बे और घने,

वर्ण कुछ ललाई लिये हुये गौरवर्ण ऐसा उसका रूप होता है। अभी पिछले पचास वर्षो से परिस्थिति के बदलने से लडके लडकियां विवाह के समय अधिक आयुके और सुशिक्षित होते है और स्वयं ही प्रीतिविवाह करते है। इस परिस्थिति में इस रवि के फलादेश में नयी वृद्धि करनी पडेगी। इसका स्वरूप यों है। दोनों में चिकित्सा बुद्धि होती है। मनचाही स्त्री मिले तो ही शादी करूंगा ऐसे विचार से ३६ वें वर्ष तक कुंआरा ही रहता है। प्रीति नष्ट होने से कानून की इजाजत हो तो घटस्फोट भी लेता है। मेरा अनुभव ऐसा है कि मेष, सिंह धनु और मीन का रवि प्रीति का नाश करवा कर किसी दूसरी लडकी से शादी कराता है और पश्चात् झगडा करा कर तलाक़ दिलाता है। इस रवि का एक बुरा फल और है। वह यह कि आपत्ति के समय ससुर की शरण लेनी पडती है। अपमान के साथ उनके यहां रहना पडता है। ससुर का वास्तविक प्रेम कम होता है। वृषभ, कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक और मीन इनके रवि में आयु के ५० वें वर्ष तक धंधा या नौकरी अच्छी चलती है पश्चात् एकदम बंद हो जाती है। पुरुष राशि के रवि में परिस्थिति में हमेशा उतारचढाव होते रहते है। स्त्री की मृत्यु ५०-५२ में होती है। इस समय घर में अडचन होते हूये भी दूसरी शादी करना संभव नही होता। पुरुष राशि में संतति कम और स्त्री राशि में अधिक होती है। ५० वें वर्ष के बाद प्रगति कम होती है।

अष्टम स्थान का रवि

वैद्यनाथ—मनोभिरामः कलहप्रवीणः पराभवस्थे च रवौ न तृप्तः। सुंदर, झगडे करने में प्रवीण, सदा असंतुष्ट होता है।

आर्यग्रंथकार—निधनगतदिनेशे चंचलस्त्यागशीलः किल बुधगणसेवी सर्वदा रोगयुक्तः। विकलबहुलभाषी भाग्यहीनो विशालो रतिविहित-कुचैलो नीचसेवी प्रवासी॥ चंचल, त्यागी, विद्वानों का सेवक, सदा रोगी, विकल, बकबक करनेवाला, अभागा, बडे शरीर का, व्यभिचारी नीचों का सेवक, मैले कुचैले वस्त्र पहननेवाला, प्रवास करनेवाला होता है।

हिल्लाजातककार—चतुस्त्रिंशन्मिते वर्षे स्त्रीनाशमष्टमो रविः । आयु के ३४ वें वर्ष में स्त्री की मृत्यु कराता है ।

यवनमत—परदेश में भूख प्यास से मारे मारे फिरना पडता है । बहुत भटकता है और दुखी होता है ।

राफेल –पति या पत्नी बहुत खर्चीले होते है । मंगल की युति या पूरी दृष्टि हो तो आकस्मिक मृत्यु की संभावना होती है ।

मेरे विचार—अष्टम स्थान को मूलतः नाश स्थान माना है इसलिये इसके फल बुरे ही मिलते है ऐसी प्राचीन शास्त्रकारोंने कल्पना की है । ये फल मेष, सिंह और धनु में ही मिलते है । मिथुन, तुला और कुंभ में कम मिलते है । स्त्री राशियों में साधारणतः अच्छे फल मिलते है। हिल्लाजातककार का मत अनुभव में नहीं आता । कुछ काल वियोग अवश्य होता रहता है ।

मेरा अनुभव—मिथुन, कर्क, धनु और मीन इन राशियों में सावधान अवस्था में मृत्यु होती है । मेष, सिंह में झटके से मृत्यु हो जाती है । अन्य राशियों में दीर्घकालीन बीमारी से तकलीफ होकर मृत्यु होती है । पुरुष राशि में रवि हो तो घर की गुप्त बातें जो दूसरे न जाने ऐसी इच्छा होती है, परन्तु नौकर या स्त्री के द्वारा दूसरे जान लेते है । स्त्री खर्चीली होती है । उसके सिर और शरीर में तकलीफ होती है । पुरुष राशि के रवि में स्त्री पैसे के लिये, पति को बढती दिलाने के लिये या अपना काम बनाने के लिये परपुरुषगमन करती है ऐसा मेरा मत है । अष्टम का रवि स्त्री के पहले मृत्यु कराता है जब कि धनस्थान का रवि स्त्री के बाद मृत्यु कराता है । इस रवि से वृद्धावस्था में दरिद्रता होती है । रवि के ही समान इसके भाग्य का भी अस्त होता है । यह स्थिति ५० वें वर्ष के पश्चात की है । स्त्री राशि के रवि में संतति बहुत होती है । पुरुष राशि में बिलकुल कम होती है । पूर्व आयु में शारीरिक कष्ट अधिक होते है । पैतृक संपत्ति नष्ट होती है । ससुर गरीब होता है । इस रवि के कारण खुद पाप नहीं करता, दूसरों का पाप सहन नहीं करता और व्यसन में नहीं डूबता ।

नवम स्थान का रवि

वैद्यनाथ—आदित्ये नवमस्थिते पितृगुरुद्वेषी विधर्माश्रितः। पिता और गुरुजनोंका द्वेष करनेवाला और धर्मान्तर करनेवाला होता है।

आर्यग्रन्थकार—ग्रहगतदिननाथे सत्यवादी सुकेशी कुलजनहितकारी देवविप्रानुरक्तः। प्रथमवयसि रोगी यौवने स्थैर्ययुक्तो बहुतरधनयुक्तो दीर्घजीवी सुमूर्तिः॥ सत्य बोलनेवाला, केश अच्छे, कुल और संबंधियों का हित करनेवाला, ईश्वर और साधुओं का भक्त, बचपन में रोगी, जवानी में मजबूत, बहुत धनी, दीर्घायु वाला और सुंदर होता है।

हिल्लाजातककार—आयु के १० वें वर्ष में तीर्थयात्रा और धर्म कृत्य कराता है।

यवनमत—विख्यात, सुखी, देवभक्त, मामा का सुख पाने वाला होता है।

राफेल—स्थिर, सन्माननीय, न्यायी, ईश्वरभक्त, बर्ताव में अच्छा, जलराशि में हो तो सागरपर्यटन (परदेशगमन) करनेवाला होता है।

मेरा अनुभव—यह रवि मिथुन, तुला और कुंभ का हो तो छोटा भाई नहीं रहता। २२ वें वर्ष तक उसकी मृत्यु हो जाती है शायद सभी राशियों में यह होगा। मृत्यु नहीं हुई तो दोनों में पटता नहीं। समझौता करके अलग हो जाते है। एक जगह रहे तो दोनों में किसी एक का ही उदय होता है। संसार का भार जलदी उठाना पडता है। पिताको अकेला ही पुत्र होता है। इसको पुत्र संतति कम होती है। ग्रंथकार की तो ग्रंथही संतति होती है। धर्म याने क्रियाकांड में रुचि नहीं होती। संस्कृति के बारे में प्रेम रहता है। स्वभावतः इस स्थान से स्त्री के धर्म या जाति का पता चल सकता है। आज कल विवाह में जाति और धर्म के बंधन बहुत कम हो रहे है। इसलिये इस रवि पर से स्त्री दूसरी जाति की या आयु में अधिक होने से रजिस्टर विवाह होगा। इस बारे में ज्योतिषी लोगों को सोचना चाहिये, इसकी पितासे बनती नहीं। लोगों में मिलनसार स्वभाव नहीं होता। अभिमानी किंतु समय पर दूसरों को खुद मदत करने

वाला होता है। अधिक शिक्षा न होने पर सुशिक्षित जैसा मालूम पडता है। आयु के ४२ से ५४ तक भाग्योदय होता है। बाद में हानि होती है। पूर्व आयु में तकलीफ, बीच में सुख, उत्तर आयु में दुख ऐसा इस रविका फल है। मिथुन, तुला व कुंभ में यदि रवि हो तो प्रोफेसर, लेखक या प्रकाशक होता है। कर्क, वृश्चिक और मीन में हो तो रसायन विद्या का संशोधन, कवि या नाटककार होता है। वृषभ, कन्या और मकर में हो तो खेती, व्यापार या किसी लॉज का चालक बनता है। मेष, सिंह और धनु में हो तो सेना में या इंजीनियर होकर काम करता है। इस स्थान का रवि कुछ न कुछ ख्याति देता है।

दशम स्थान का रवि

वैद्यनाथ--मानस्थिते दिनकरे पितृवित्तशीलविद्यायशोबलयुतोवनिपालतुल्यः। पैतृक संपत्ति का उपभोक्ता, विद्यासंपन्न, कीर्तिमान, बलवान, राजा जैसा ऐश्वर्यशाली होता है।

आर्यग्रंथकार--**दशमभुवनसंस्थे तीव्रभानौ मनुष्यो गुणगणसुखभागी दानशीलोभिमानी। मृदुलशुचियुक्तो नृत्यगीतानुरागी नरपतिरतिपूज्यः। शेषकाले च रोगी**॥ गुणवान, सुखी, दानी, अभिमानी, कोमल, पवित्र नाच गानों का शौकीन, राजा जैसा संपन्न, पूज्य और उत्तर वय में रोगी होता है।

हिल्लाजातककार--**एकोनविंशद्दशमे वियोगः**। दशम के रवि से १९ वें वर्ष में वियोग होता है।

यवनमत--धनवान, शीलवान, मानी, खुश मिज़ाज़, वाहन संपन्न, विख्यात और धूर्त होता है।

मेरा अनुभव--इस स्थान का रवि मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु इन राशियों में हो तो रेव्हेन्यू, पुलिस, सेना या अबकारी विभाग में या खुफ़िया पुलिस में काम करता है। किंतु शस्त्र के स्थान पर कलम से काम लेना पडता है, मतलब यह कि ऑफिस का ही काम करना होता है। वृषभ, कन्या, मकर, मीन, मिथुन इन राशियों में रवि हो तो राज्यपाल

या राष्ट्रपति के मंत्रियों में और संसद या विधान सभा में स्थान मिलता है। व्यापारी भी हो सकता है। तुला में हो तो जज, सॉलिसिटर, बैरिस्टर, आदि सम्मान के पद मिलते है। वृश्चिक में हो तो डॉक्टर भी हो सकता है। खुद के श्रम से ही तरक्की होती है। अपने विभाग में तों प्रसिद्ध होता ही है। पिताका सुख कम होता है। उसकी मृत्यु नहीं हुई तो झगडे होते है। स्वभाव से उदार किंतु घमंडी, झगडालू और विषयासक्त होता है। मैं दशम के रवि को दुर्भाग्य दर्शक मानता हूं क्योंकि इससे अंतिम समय अच्छा नहीं जाता। ये लोग जिस तरह जल्दी तरक्की पाते है उसी तरह भाग्य शिखर से नीचे भी गिरते है। जिस तरह सिर पर का रवि खूब तेजस्वी किंतु नीचे की ओर जाता है उसी तरह इनका भी भाग्य अवनति को प्राप्त होकर नष्ट होता है और वृद्धावस्था में भयानक शरीर कष्ट, दरिद्रता, झगडे ये फल मिलते है। तुला के रवि से पेन्शन सुख से मिलता है। वही मेष के रवि से गैरकानूनी होता है। इससे बचपन में तकलीफ, मझली आयु में सुख और लोक प्रियता प्राप्त होती है। लोगों को हितकर किंतु धन की दृष्टि से हालत नीची ऊंचीं होती रहती है। आयु के २२ वें वर्ष से उद्योग करता है। हिल्लाजातककार ने १९ वें वर्ष में वियोग ऐसा संदिग्ध फल कहा है। किसी ग्रंथकर्ताने इसका अर्थ परदेश की सैर किया है जो गलत है। इस वर्ष में पिता की मृत्यु देखने में आई है। इससे मालूम होता है कि इसकी कमाई और दौलत का उपभोग पिता नहीं कर सकता। २८ वें वर्ष तक माता का भी वियोग होता है। ३२ से ४८ वें वर्ष तक धंधे में मजबूती किंतु बाद में वह नहीं रहती। आयु के अंतिम भाग में पत्नी मर जाती है।

एकादश स्थान का रवि

वैद्यनाथ—भानौ लाभगते तु वित्तविपुलस्त्री पुत्र दासान्वितः। धनवान स्त्री पुत्रों से संपन्न और नोकरों की सेवा लेनेवाला होता है।

कल्याणवर्मा—संचयनिरतो बलवान् द्वेष्यः प्रेष्यो दिवेश भृत्यश्च। एकादशे दिनेशः प्रियरहित सिद्धकर्मा च ॥ धन संचय करनेवाला, बलवान, द्वेषी, नौकरी करनेवाला, लोगों को अप्रिय, अपने काम बनानेवाला होता है।

हिल्लाजातककार—एकादशस्थः खलु पुत्रलाभं कुर्याच्चतुर्विंशति-संमितेच । यह रवि २४ वें वर्ष में पुत्र लाभ कराता है ।

यवनमत—धनवान, नौकरों से संपन्न, सुंदर स्त्री का पति, अच्छी इमारत का मालिक, अच्छे पदार्थ खानेवाला, गाने बजाने का शौकीन, गुप्त विचार करनेवाला, अच्छी आंखोंवाला होता है ।

राफेल—स्थिर और विश्वासयोग्य मित्र होते है । रवि बलवान हो तो वे इसको मदद करते है किंतु वह दूषित या निर्बल हो तो मदद के स्थान पर बोझ बन जाते है ।

मेरे विचार—प्राचीन शास्त्रकारोंने इस रवि के फल अच्छे ही दिये है । किंतु वे किस राशि में मिलते है यह नहीं बताया । मेरा अनुभव ऐसा है कि इस रवि से कोई एक दुःख पीछे लगा रहता है । संपत्ति हो तो संतति नहीं होती । संतति हो तो संपत्ति नहीं होती । हां इसके साथ अन्य पाप ग्रह शुभ योग करते हों तो दोनों सुख मिलते है । यह स्थान जनपद, कौन्सिल, सभा, क्लब, बडा भाई इत्यादि का विचारक है इसलिये इनके भी फल इस रवि में देखने चाहिये । पश्चिमी ज्योतिषी इस स्थान में भिन्न भिन्न परिवार के सुख और मित्रों की मदद ये फल बताते है । हमारे ग्रन्थकारोंने मित्र का विचार चौथे स्थान से किया है । इस स्थान का रवि बडे भाई को मारक होता है । इच्छाएं उदार और लोगों का हित करने की होती है । चौथी संतति नष्ट होती है । पिता का स्वभाव खर्चीला होता है ।

मेरा अनुभव-यह रवि मेष में हो संतति नहीं होती । हुई तो रहती नहीं । सिर्फ पैसा मिलता है । शिक्षा कठिनाई से पूरी होती है । बडी आकांक्षाएं होती है किंतु सफल नहीं होती । विद्वानों में अपमान होता है । मिथुन में हो तो दो या तीन पुत्र मर जाते है । पैसा खूब और बिना कष्ट से मिलता है । दुष्ट स्वभाव होता है । लोगों के झगडों में नहीं पडता । बेकार ही घमंड होता है । मिलनसार स्वभाव नहीं होता । अपने लिये विलासी होता है । यह सिंह का हो तो दरिद्रता होती है । लडकियां

अधिक होती हैं । तुला मे हो तो पैसा, सन्मान, कीर्ति मिलती है । कानून का विद्वान होता है । संतति नहीं होती या रहती नहीं । सार्वजनिक कामों में पडते है । जनपद आदि के कार्यकर्ता होते है । नेता लोगों का रवि अक्सर तुला में होता है । धनु का रवि कानून विशेषज्ञ बनाता है । पैसा हो तो संतति नहीं होती । सतति हो तो पैसा नहीं होता । कुंभ के रवि में दरिद्री होता है । किसी भी धंदे में लाभ नहीं होता । सभी पुरुष राशियों के रवि में बडा भाई नहीं रहता । रहा भी तो २२ वें वर्ष तक मर जाता है । नहीं मरा तो झगडे होकर अलग होता है । स्त्री राशि के रवि से संतति, संपत्ति मिलती है । शिक्षा नहीं होती । ये लोग बडे बडे काम दूसरों से करवाते है । अपने कष्ट से दूसरों का काम करवा देते है । पुरुष राशि के रवि में संपत्ति मेहनत से मिलती है । स्त्री राशि के रवि में अचानक मिल जाती है । हिल्लाजातककार का मत उच्च वर्ग के लोगों में नहीं मिलता क्योंकि विवाह का वय बढता ही जा रहा है । नीचे के वर्ग में अनुभव आता है ।

द्वादश स्थान का रवि

वैद्यनाथ--व्ययस्थिते पूषणि पुत्रशाली व्यंगः सुधीरः पतितोटनः स्यात् । पुत्रयुक्त, व्यंगयुक्त, धैर्यशाली, धर्मभ्रष्ट, भडकनेवाला होता है ।

आर्यग्रंथकार--नरपति धनयुक्तो द्वादशस्थे दिनेशे कथकजन विरोधी जंघरोगी कृशांगः । राजा, धनी, लोगों का विरोध करनेवाला, जंघाओं में रोगी, पतले कद का होता है ।

हिल्लाजातककार--व्ययस्थिते वृक्त्रिमितेच हानिम् । इस से ३२ वें वर्ष में हानि होती है ।

यवनमत--यह रवि चंद्र से युक्त न हो तो अंतिम आयु में विजयी और भाग्यवान होता है । ये लोग अजब ही होते है । बडे मेहनती और धूर्त होते है किंतु सफलता कम मिलती है ।

राफेल--जीवन में सफलता किंतु यदि यह दूषित हो तो कारावास होता है ।

मेरे विचार—आर्यग्रंथकार को छोडकर अन्य प्राचीन शास्त्रकारोंने इसके फल सब बुरे बताये है। व्ययस्थान बुरे ही फल का है ऐसी ही कल्पना से अच्छे फल दिख ही कैसे सकते है। आर्यग्रंथकारने जरूर अच्छे फल बताये है। इस स्थान में बाल अवस्था को छोडकर कुमार में प्रवेश होता है। कुमार अवस्था में उद्धत वृत्ति, किसी की न सुनना, बढता जोश, जवानी में अपने मन की करना ये बाते होती है। अपने हितकी जानकारी न होने से लडाई झगडे करना, लडकियों के पीछे लगना ये बातें भी होती है। कभी जोश में अच्छे भी काम हो जाते है। इसलिये इसके फल बुरे ही मिलते है ऐसा नहीं। अच्छे भी फल मिलते है।

मेरा अनुभव—इस स्थान का रवि कर्क, वृश्चिक, मीन इन राशियों में हो तो खर्चीला, बेफिक्र, राजनैतिक कारावास पानेवाला, लोगों को उपकारी, युद्ध में पराक्रमी होता है। वृषभ, कन्या, मकर इन में ध्येयवादी, उसमें आनेवाले सब संकट शांत वृत्ति से सहनेवाला, अच्छे कामों में ख्याति पानेवाला, स्वतंत्र, धनप्राप्ति का इच्छुक और मन में कुढनेवाला, कोई भी कार्य विचारपूर्वक करनेवाला होता है। मेष, सिंह, धनु इनमें कजूस, अविचारी, घमंडी, खुद को ही विद्वान समझनेवाला, बुरे कामों में दंड पानेवाला होता है। मिथुन, तुला, कुंभ इनमें खर्चीला और विख्यात कम से कम अपने समाज में विख्यात होता ही है। नागपुरके डॉ. हरिसिंग गौर ग्रंथकार और कीर्तिमान थे। इनके व्ययस्थान में रवि था।

प्रकरण ७ वाँ

महादशा-विवेचन

प्राचीन शास्त्रकारोंने महादशा के फल सामान्य तौर पर दिये हैं। महादशा दो प्रकार की है—अष्टोत्तरी और विंशोत्तरी। महाराष्ट्र में दोनों प्रचलित हैं। अष्टोत्तरी १०८ वर्ष की और विंशोत्तरी १२० वर्ष की होती है। इनमें बहुत फर्क है। इनमें अष्टोत्तरी की उपपत्ति किस दृष्टि से दी होगी इसका पता नहीं चलता। विंशोत्तरी नवपंचम राशि के हिसाबसे ली गई है। उदाहरण के तौर पर अश्विनी (मेष), मघा (सिंह), मूल (धनु) इस प्रकार है। दोनों दशाओं की वर्ष संख्या का प्रमाण भी भिन्न है।

भारतवर्ष में सैकडों वर्षो से जो पद्धति प्रचलित है उसकी काल-गणना का प्रमाण निम्न प्रकार है—६० घटिका का एक दिन, ३० दिन का एक महिना, १२ महिनों का एक वर्ष। यह पद्धति वैदिक काल से चली आई है। ऋग्वेद में यही ३६० दिन का वर्षमान है। इसी प्रमाण से विशोत्तरी पद्धति में अंतर्दशा का प्रमाण दिया है। उदाहरणार्थ, रवि की विशोत्तरी महादशा ६ वर्ष की है। अंतर्दशा इस प्रकार है—

ग्रह	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
महिने	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	५७
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	९०

उपर्युक्त गणित के अनुसार ही इसका जोड ६ वर्ष होता है। इस वर्षमान को सावन मान कहते है।

महादशा का अनुभव यह एक बडा जटिल प्रश्न है। हर एक ने अपने अनुभव से ही इसका निश्चय करना चाहिये। सबको सब जगह मेरे जैसा अनुभव आयेगाही यह कहना कठिन है। महादशा का विस्तृत फलादेश सर्वार्थचिंतामणि, मानसागरी, जातकपारिजात, बृहत्पाराशरी इन ग्रंथों में मिलता है। किंतु मैं जिस पद्धति से विवेचन करता हूं उसे ही यहां संक्षेप से दिया है। विशोत्तरी पद्धति के आरंभ में यही महादशा है। इसलिये कृत्तिका नक्षत्र के व्यक्तियों को बचपन से ही ७ वें वर्ष तक ही आती है। इसमें बीमारी बहुत होती हैं। आमांश, अतिसार, देवी, ज्वर, बालग्रह, सूखा, नजर लगना इत्यादि रोगों में से कोई रोग होता हैं। मां बाप को आर्थिक और मानसिक तकलीफ होती है। बाप की मृत्यु भी हो सकती है। भरणी नक्षत्र को यह दशा २१ वे वर्ष से आरंभ होती है। इस समय शिक्षा पूरीं होकर पैसा मिलाने की इच्छा, विवाह, संतान की प्राप्ति ये योग होते हैं। इसमें भी पिता की मृत्यु हो सकती है। आजकल विवाह की वयोमर्यादा और धनार्जन के आरंभ का काल देर से आता है इसलिये इस फलादेश में कुछ फरक हो सकता है।

अश्विनी नक्षत्र की यह दशा २७ वें वर्ष से आरंभ होती है। इस समय इसके फल शिक्षा पूरी होना, नौकरी के लिये प्रयत्न करना, पिता को पेन्शन मिलना, मां की मत्यु ऐसे होते है। रेवती नक्षत्र की ४४ वें वर्ष से यह दशा आरंभ होती है। इस समय ख्याति लाभ, नौकरी में बढती, कीर्ति, संतान और संपत्ति की प्राप्ति ये फल मिलते है किन्तु ४० से ५० तक पत्नी का मृत्यु होने की संभावना होती है। उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र को ६४ वें वर्ष से यह दशा आरंभ होती है। यह समय सब तरह से निवृत्त होने का है।

द्वादश भावों में रवि के जो फल दिये है वे ही दशा के समय मिलते हैं। किंतु कई नक्षत्रों को सारी आयु में यह दशा आती ही नहीं। जैसे— रोहिणी, मृग, हस्त, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में चंद्र हो तो रवि महादशा आती ही नहीं। फिर इसके फल किस तरह मिलेंगे? भावों के बुरे फल कहे हैं वे रवि की साढेसाती में और शनि, राहु, मंगल इनकी अंतर्दशा में मिलते हैं। अच्छे फल कहे हैं वे शुक्र, चंद्र, गुरु इन शुभ ग्रहों की अंतर्दशा में मिलते है।

सूचना—दशा के फल देखते हुये–रवि के साथ कोई दूसरा पापग्रह हो या गुरु भी हो तो बुरे फल मिलते है। पत्रिका में सिंह राशि में लग्न में रवि के साथ गुरु हो और चंद्र भरणी नक्षत्र में १० घटि, १७ पल रह चुका है—पूरा नक्षत्र ६६ घटी है—ऐसी हालत में पहले १६ वर्ष शुक्र महादशा होती है। १७ वें वर्ष से रवि की महादशा प्रारंभ होगी। इस दशा में पहले ही पिता का मृत्युयोग बताना पडेगा। याने यहां गुरु नाश-कारक ग्रह हुआ। ऐसा ग्रह रवि के साथ युति करता हो तो रवि के महत्त्वपूर्ण कारकों का नाश होता है। महादशा का फल खुद किस तरह देखें इसका उदाहरण इस प्रकार हैं। रवि मेष लग्न के पहिले अंश में है और चंद्र सिंह राशि के पहिले अंश में है। यहां रवि पंचमेश हुआ। इस लिये पंचम स्थान और लग्न का फल मिलेगा। यह दशा आयु के २७ वें वर्ष से आरंभ होती है। शिक्षा पूरी होगी, विवाह होगा, संतति होगी, शायद परदेशगमन का भी योग है। नौकरी या धंधे में प्रगति होगी।

किंतु इस ही को यदि शनि का वेध होगा तो मां बाप की मृत्यु, बच्चों का वियोग, बाप की इस्टेट का नाश ऐसे फल मिलेंगे। एक खास सूचना यह कि महादशा और अंतर्दशा के फल प्राचीन ग्रंथकारोंने अपने अपने काल की और प्रदेश की परिस्थिति के अनुसार दिये हैं। किंतु इस समय उन्हीं पर बल न देकर अपनी बुद्धिका भी उपयोग करना चाहिये। मेरा ऐसा मत है कि रवि की दशा मूलतः बुरी होती है। किंतु लग्न, पंचम, दशम, व्यय इन चार स्थानों में रवि की दशा उत्तम होती है। बाकी स्थानों में बुरी होती है। इस महादशा में शनि, मंगल और चंद्र ये तीन अंतर्दशाये बुरी होती है। अन्य ग्रहों की दशाएं शुभ होती है। मेष राशि को बहुत बुरा, सिंह को मामूली और धनु को अच्छा फल मिलता है। वृषभ, कन्या और मकर को मामूली फल मिलता है। मिथुन, तुला, कुंभ को अच्छे ही फल मिलते है। कर्क, वृश्चिक, मीन को मामूली मिलते है। ये फल देखते हुये रवि चंद्र योग की ओर ध्यान देना चाहिये।

पश्चिमी ज्योतिषी एलन लिओ ने Astrology for All नामक ग्रंथ में १८ वें अध्याय के ७१ वें पृष्ठ पर Polarities शीर्षक से रवि चंद्र के योगों के फल दिये है। ये ही फल दशा के लिये कहे जा सकते है। पाठकों ने अनुभव देखना चाहिये।

प्रकरण ८ वाँ

रवि-कुंडली

ऐसा कई बार देखने में आता हैं कि लड़के की पत्रिका मिलती है किंतु मां बाप की पत्रिकाये उपलब्ध नहीं होतीं। अब इन माता पिताको अपना भविष्य जानने की इच्छा होती हैं। ऐसे समय क्या करें ? उत्तर यह हैं कि लड़के की कुण्डली से मां बापका मृत्यु तक भविष्य बताया जा सकता है। उदाहरण के लिये निम्न कुण्डली देखिये। 'क्ष' ता. २५ अप्रैल १९३७ दोपहर को ११-४५ को जन्म, अक्षांश २१.९ रेखांश ७९।

पिताका कारक ग्रह रवि है इसलिये पिताका भविष्य जानने के लिये रवि-कुण्डली बनानी होगी। वह इस प्रकार होती है—

जन्म कुण्डली   रवि–कुण्डली
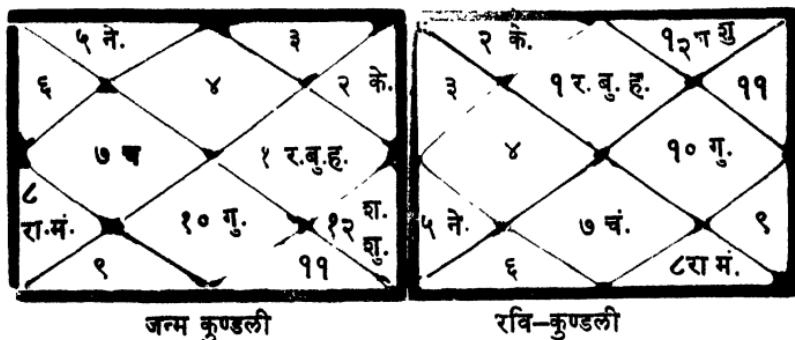
इस रवि–कुण्डली का विवेचन

मेष लग्न में उच्च का रवि है और साथ में बुध और हर्षल है। शरीर का ढांचा मामूली होगा। सदा अर्श से तकलीफ होगी। स्वभाव कुछ हठ्ठी, दुराग्रही किंतु शांत है। बुध हर्षल योग से बुद्धिमान है। किंतु बुद्धि का प्रभाव हाल में दिखाई नहीं देता।

धनस्थान––इस स्थान का अधिपति शुक्र शनि के साथ है। शनि स्थावर इस्टेट का कारक है। इस नियम के अनुसार पैतृक संपत्ति नगद के रूप में न होकर स्थावर संपत्ति मिलना चाहिये। इस योग से थोडा कजूसपना दिखाई देता है और धनसंग्रह भी अच्छे प्रकार होता है। धनका संग्रह बागबगीचे, खेतीवाडी इनमें होता हैं उद्योग में यश मिलता हैं।

तृतीय स्थान––इसका अधिपति बुध रविसे युक्त है इसलिये कोई बडा भाई नहीं रहेगा।

चतुर्थ स्थान—इसका अधिपति चंद्र सप्तम में है। मां का स्वभाव अति शांत, व्यवहार में दक्ष, स्नेहशील, दयालु होता है किन्तु संसारमें चाहिये उतना सुख नहीं मिलता। क्योंकि चंद्रके सामने उच्च रवि है। माता का सूख पूरा है। इसीं योगसे उम्रके ३६ से ४२ वें वर्ष तक स्थावर इस्टेट मिलेगी। आयु के उत्तरार्ध में सब प्रकार का सुख मिलेगा।

पंचम स्थान—इसका अधिपति रवि उच्च हैं और हर्षल से युक्त लग्न में हैं। इस स्थान में नेपच्यून हैं। पश्चिमी ज्योतिषी कहते है कि

इसके फल इष्कबाज़, शौकीन और इष्कसे किसी मुसीबत में फंसनेवाले होते हैं। इस ग्रहसे संतान बहुत होती है। पहले लडकियाँ अधिक होती है।

षष्ठ स्थान—इसका अधिपति बुध लग्न में है। इससे घरके लोगों से ही विरोध होता है।

सप्तम स्थान—इसका अधिपति शुक्र व्ययस्थान में शनि से युक्त है। इससे पत्नी का वय खुद के वय से अधिक होता है या विधवा से पुर्नविवाह होता है या विजातीय स्त्री से विवाह होता है अथवा रजिस्टर पद्धति से होता है। अंग्रेजी ग्रंथों में ऐसी स्त्री का स्वभाव अच्छा दिया है। वह खर्चीली, अभिमानी, झगडालू, प्रपंच में आसक्त, मिलजुलकर न रहनेवाली, बुद्धिमान और पतिको अपने प्रभाव में रखने का प्रयत्न करने वाली होती है। उसकी शिक्षा अनेक बाधाओं के पश्चात् पूरी होती है। माँ का सुख पूरा होता है।

अष्टम स्थान—यहां राहु और मंगल साथ है और मंगल स्वगृह में है। पत्नी की वृत्ति स्वतत्रता से धन कमाने की ओर प्रयत्न करने की रहेगी। इसलिये पति से हमेशा झगडे करके स्वतंत्रता प्रकट करेगी। ४२ वें वर्ष में कोई बडा आर्थिक लाभ होना ही चाहिये। मरण आकस्मिक होगा। ६८ वें वर्ष में मृत्यु की संभावना है। शायद पत्नीको पीछे छोड़कर मृत्यु हो।

नवम स्थान—इसका अधिपति गुरु दशम में मकर राशि में है। ३६ वें वर्ष से भाग्योदय आरंभ होगा। तबतक कोशिश ही करनी पडेगी। कीर्ति अच्छी मिलेगी। धंधे के लिये या उसकी शिक्षा के लिये विदेशों में प्रवास होगा। इस योग में एक ही छोटी बहन होगी।

दशम स्थान—इसका अधिपति शनि व्ययस्थान में शुक्र के साथ है। इस स्थान में गुरु है। दशम में गुरु होना भाग्य का लक्षण है। किंतु इस गुरु में कुछ दोष है। पिता की मृत्यु १२, २४, ३६ या ४८ वें वर्ष में होती है। यदि १२ या २४ वें वर्ष में पिता की मृत्यु नहीं हुई तो ३६ वें वर्ष में नहीं होती ऐसा मेरा स्पष्ट मत है। इसी तरह इस गुरु से बाप बेटे में

मनमुटाव रहता है। बाप बेटे दोनों एक साथ नहीं कमा सकते। किसी एक का हाथ चलता है। जब बाप कमाता है तब बेटा काम नहीं कर पाता और बेटा कमाने लगता है तब बाप का काम बंद होता है। यह कुंडली जिसकी हैं उसका बाप कमा रहा हैं तो यह खुद काम नहीं कर रहे हैं और आगे भी ऐसे ही रहेंगे। पिता के बाद ही पूरा भाग्योदय होता है। वह आखिर तक रहता है। पत्नी भी कमाती है। उसका भाग्योदय होता है। लेकिन वह स्वतंत्र रूप से होता हैं। पत्नी मास्टर या प्रोफेसर के व्यवसाय में आती है। पति पत्नी दोनों योग्यता प्राप्त करते है किंतु और एक डेढ साल आर्थिक, शारीरिक और मानसिक तकलीफ होगी। ३३ वें वर्ष से कुछ इच्छा के अनुरूप काम बनता जाएगा। पिता का सुख अच्छा होगा।

लाभ स्थान—इसका अधिपति शनि व्ययस्थान में है। इसको पैसे के सिवाय दूसरी कोई इच्छा या वासना नहीं है। खूब पैसा कमा कमा कर एक बंगला बांधकर आराम से खेतीवाडी करते रहें यही वासना है। यह पूरी होने के लिये ४८ वां वर्ष लगना चाहिये। मृत्यू के समय स्त्री और पैसे की ही चाह रहेगी।

व्यय स्थान—इसका अधिपति गुरु दशम स्थान में है। यहाँ दशमेश शनि और शुक्र है। दशम और व्यय स्थान के ग्रहों का यह अन्योन्य संबंध है। इससे बाप कर्ज करता है और बेटा उसे लौटाता है। व्ययस्थान के शनि के विषय में पश्चिमी ज्योतिषी कहते हैं कि 'The Saturn in this house is rising and therefore you are promised much improvemet in worldly affairs as your life advances.' यह शनि कीर्ति देता है। किंतु यहाँ धनेश और सप्तमेश शुक्र मारक और मारकेश हैं। ऐसे मारक ग्रह के साथ शनि का योग हुआ है। इसके फल Alon Leo ने ऐसे दिये है—You may meet the would-be wife who will affect your life seriously under rather peculiar circumstances. जीवन में भावी पत्नी से संबंध ऐसी अजब परिस्थिति में आता है कि उसका परिणाम जीवन पर उलटा ही होता है। इससे पत्नी

का संबंध होते ही कीर्ति या यशस्विता नष्ट होकर जीवन का ढाचा ही बदल जाता है। संशोधक की हैसियत से सारे जगत में कीर्ति होनी थी किंतु अब अपनी गली से बाहर कोई नहीं जानता। अपने संसार में भाग्योदय होते रहता है। व्ययस्थान में शनि शुक्र हों तो पति पत्नी में दिन भर झगडे होते है, शाम को बंद हो जाते हैं। अब थोडा आगे का भविष्य कहते हैं। ता. २७–२–४२ तक रवि पर से और लग्न में से शनि का भ्रमण हो रहा है। इस काल में आम तौर पर आर्थिक, शारीरिक और मानसिक तकलीफ होगी। हाथ में लिये हुये कार्यो पर रुकावटें या सहव्यवसायी लोगों का विरोध होगा। पत्नी के कार्य में प्रगति होगी किंतु चाहिये वैसी नहीं। १९४२ में संतति योग है। अपनी कुंडली में शनि राहु और गुरु के भ्रमण से फल बताते हैं। उसी प्रकार बेटे की कुंडली में ग्रहों के भ्रमण से फल देखा जाता है किंतु स्थानों की गिनती रवि से करनी पडती है। उदाहरण के लिये रवि से सातवें स्थान में शनि का भ्रमण हो रहा है तो पिता को कर्ज होगा, दिवाला निकलेगा, धंधा ठप हो जायगा। शायद मा की मृत्यु होगी या एखादा भाई या बहन की मृत्यू होगी। रवि के पंचम से गुरु जा रहा हो तो संतति योग होता है।

———o———

निवेदन

अब तक मैंने प्राचीन और अर्वाचीन ग्रंथकारों के मत से रवि के फल और उस पर मेरे विचार देकर मेरा अनुभव भी लिख दिया है। सिर्फ अकेले रवि से फल पूरे बराबर बताना ठीक नहीं है क्योंकि रवि के साथ शुक्र और बुध हमेशा रहते है। इसलिये उनके भी फल उसमें मिले होते है। कई बार और दूसरे ग्रह भी रवि के साथ होते हैं। इसलिये सिर्फ रवि पर बल नहीं देना चाहिये। देश, काल, कुल, जाति इत्यादि ध्यान में रखते हुये निर्देश करना उचित है।

स मा प्त

• • •

आमचे लोकप्रिय ज्योतिषग्रंथ

ले.—ज्योतिषी कै. ह. ने. काटवे

रवि विचार	३ री आवृत्ती	मराठी	६—००
चंद्र विचार	"	"	६—००
मंगळ विचार	"	"	६—००
बुध विचार	"	"	६—००
गुरु विचार	"	"	६—००
शुक्र विचार	"	"	६—००
शनि—विचार	"	"	६—००
राहू—केतू—ग्रहण विचार	२ री आ.	"	६—००
भाव विचार	"	"	३—००
भावेश विचार	"	"	३—५०
गोचर विचार	"	"	३—००
शुभाशुभ ग्रहनिर्णय विचार	"	"	६—००
योग—विचार	भाग १ ते ७	"	२२—००
रवि विचार		हिंदी	४—००
चंद्र विचार		"	४—००
मंगल विचार		"	४—००
बुध विचार		"	४—००
गुरु विचार		"	४—००
शुक्र विचार		"	४—००
शनि विचार		"	४—००
राहू—केतू—ग्रहण विचार		"	६—००
शुभाशुभ ग्रहनिर्णय विचार		"	५—००
भाव विचार		"	४—५०
भावेश विचार		"	५—००
गोचर विचार		"	४—५०
अध्यात्म—ज्योतिष—विचार		"	१५—००
योग—विचार, भाग १ ते ७		"	२०—५०

चंद्र-विचार

अनुक्रमणिका

चन्द्र-विचार

प्रकरण पहला

चन्द्र का स्वभाव

चन्द्र प्रधानतः स्त्रीस्वभाव ग्रह है। स्त्री के अच्छे और बुरे दोनो गुणधर्म चन्द्र में भी है।

हॅवेलॉक एलिस के अनुसार स्त्री वंशों की जननी (Racial Mother) है। श्रीमती बेसी लिओ के अनुसार स्त्री विश्व की माता (Universal Mother) है। हमारे पुराणों में भी आदिशक्ति, आदिमाता, आदिमाया इन शब्दों से स्त्री का वर्णन किया गया है। ज्ञानी पंडितों का कहना है कि स्त्री एक अजीब पहेली है। विधाता ने इसे क्यों निर्माण किया यह समझना कठिन है। स्त्री के ही कारण इतिहास काल में पूरे राष्ट्रों का विनाश हुआ। आज भी कई व्यक्ति और कुटुम्ब स्त्री के ही कारण नष्ट होते हैं। यह सब होते हुए भी स्त्रीजाति का गुणगान सर्वत्र और सर्वदा होता है। यह ठीक भी है। विश्व की परम्परा अखंडित रखने का महान कार्य ईश्वर ने स्त्री जाति को सौंपा है। विश्व में जो कुछ सुंदर, मंगल और पवित्र है वह सब स्त्री में समाया है। स्त्री ही राष्ट्र का रक्षण करती है और उसे शिक्षा देती है। वही भावी प्रजा की निर्मात्री है और उसका पालन पोषण करती है। समाज की प्रगति या परागति स्त्री पर ही निर्भर है।

जन्मकुण्डली में चन्द्र जब अकेला होता है अथवा शुभ ग्रहों से संबंधित होता है तब उस में स्त्री के स्वाभाविक गुण पाए जाते है। ये गुण मानव जाति की आदिकालीन अवस्था में विशेष रूप से दृष्टिगोचर होते थे। उस समय स्त्री और पुरुष नग्न रहते थे। संसार और घर-गृहस्थी की व्यवस्था नहीं थी। वे लोग समूहों में रहते थे, कंदमूल खाते

थे और गुहाओं में रहते थे। बुद्धि और भावना का विकास नही हुआ था। मन में मलिनता या कठिनता नहीं थी। इस समय की स्त्री के स्वाभाविक गुणधर्म इस प्रकार थे—

१. आनन्द—उस समय संसार की झंझटे नहीं थीं। मृत्यु के सिवाय कोई गंभीर दुख नहीं था। कोई चिन्ता नहीं थी। खा पीकर पुरुष के साथ आनन्द से रहना यही स्त्री की इच्छा थी। इस लिए उसका स्वभाव आनन्दमय था।

२. निर्व्याज प्रेम—अपना और पराया इस भेद का अभाव था इसलिए स्वार्थ का भी अभाव था। निसर्ग से ही अकृत्रिम प्रेम के पाठ मिलते थे। माता का स्वाभाविक प्रेम (Motherly instinct) पशुपक्षियों में भी पाया जाता है। वही स्त्री के हृदय में प्रधान था।

३. निर्लोभ वृत्ति—सगे संबंधियों की चिन्ता न होने से संपत्ति का लोभ नहीं था।

४. लज्जा—लज्जा यही स्त्री का अलंकार है। वही उसका स्वभाव है।

५. स्थिरता—यह भी स्त्री का स्वाभाविक गुण है। घर संसार, गर्भधारणा, प्रसूति, संतान का संगोपन इन सब कार्यों से स्त्री में स्वभावतः यह गुण निर्माण होता है। इसी के कारण वह बन्धन में रहती है।

६. त्याग वृत्ति—उपभोग का त्याग करने की वृत्ति स्त्री में विशेषतः होती है। पुरुष में इसकी मात्र कमी होती है।

७. सेवा:—दूसरों के सुख में ही अपना सुख मानना और सेवा को ही धर्म मानना यही स्त्रीत्व का सार है।

मानवजाति की इस आदिम अवस्था में धीरे धीरे सुधार हुआ। वस्त्र धारण करने की और घर बसाने की पद्धति शुरू हुई। खेती करना और गांव में रहना प्रारंभ हुआ। समाज की धारना के लिए नितिनियम बनाए गए। विवाह संस्था स्थापित हुई। अधिकारों की कल्पना निर्माण हुई। सगे संबंधियों और पडोसियों के कारण स्त्री के हृदय में भी परिवर्तन

हुआ। उसके नैसर्गिक गुणों की जगह कुछ दुर्गुण भी आए। 'अनृतं साहसं माया' इन शब्दों से उसका वर्णन होने लगा। प्रतिदिन के व्यवहारों से ही ये सब गुण उसमें पैदा हुए। अपने सुख और इज्जत के लिए कोमल स्त्री को भी निष्ठुर होना पड़ा।

चन्द्र यदि अशुभ ग्रहों से संबंधित हो तो उस में भी स्त्री के ये सब दुर्गुण दिखाई देते है।

प्रकरण दूसरा

चन्द्र का कार्य

काव्य में प्रियकर अपनी प्रिया को चन्द्रिका की उपमा देते है। भर्तृहरि के अनुसार भी स्त्री की दृष्टि और विलासों में पुरुष को आकर्षित करने का विलक्षण सामर्थ्य होता है। पहले स्त्री को देखने की इच्छा होती है। दर्शन होने पर संभाषण करने की उत्सुकता होती है। वह भी हुआ तो उपभोग की इच्छा होती है। इस कारण पुरुष के विचार और विकारों पर अर्थात मन पर स्त्री का स्वामित्व सहज ही स्थापित हो सकता है।

जगत में चन्द्र भी इसी प्रकार अपना प्रभाव बतलाता है। उसी के कारण पौर्णिमा को समुद्र को ज्वार आता है। पागलों का पागलपन भी बढता है। मन पर चन्द्र का स्वामित्व है। इसी लिए शास्त्रों में 'मनस्तु हिमगुः' ऐसा कहा है।

चन्द्र में स्त्री के समान ही लोहचुम्बक जैसी आकर्षण शक्ति (Magnetic force) है। पृथ्वी के चारों ओर कोई दो मील की दूरी पर एक चुम्बकीय वलय (Magnetic range) है। इसी की शक्ति से पृथ्वी का सन्तुलन बना रहता है और वह अपने अक्षपर घूमती रहती है। चन्द्र का परिणाम इस वलय पर होता है। चन्द्र के कारण यह वलय पृथ्वी के चारों ओर घूमता है और उसकी आकर्षण शक्ति बनी रहती है। इस वलय की एक प्रदक्षिणा ११ या ११॥ वर्षों में होती है। इस विषय में

श्रीमती बेसी लिओ ने कहा है—' चन्द्र ही ज्वार भाटे का नियमन करता है और वनस्पतियों पर भी उसका परिणाम होता हैं। जगत के विभिन्न स्तरों में जो चुम्बकीय शक्तियां है उनमें उतार-चढाव होते रहता है। चन्द्र की वृद्धि और क्षय इसी का प्रतीक हैं। चन्द्र की चुम्बकीय शक्ति से जीवन का—मानसिक और शारीरिक, दोनों दृष्टियों से—निर्माण होता है, रक्षण होता है और विनाश भी होता है।' सृष्टि के समान प्राणियों पर भी चन्द्र के अनुकूल व प्रतिकूल परिणाम होते है। इन्ही का अब शास्त्रानुसार विवेचन करेंगे।

———०———

प्रकरण तिसरा

चन्द्र का कारकत्व

बृहत्पाराशरी— मातृ-मनः-पुष्टि-गन्ध-रस-इक्षु गोधूम-क्षारक-बीज+शक्ति+कार्य-सस्य-रजतादिकारकश्चन्द्रः ॥

मातृ—चन्द्र को पृथ्वी की माता माना गया है। माता के समान चन्द्र पृथ्वी का पालनपोषण करता है और उसकी जीवनशक्ति का विकास करता है इसलिये चन्द्र को माता का कारकत्व दिया गया है। मनः— चन्द्र के समान मन की स्थिति होती है और मानव का सुखदु.ख मन पर ही अवलम्बित होता है इसलिये मन का कारकत्व भी चन्द्र को दिया है। पुष्टि--शरीर की पुष्टि कैसी है इसका विचार चन्द्र की स्थिति से किया जाना चाहिये क्यों कि चन्द्र के समान शरीर की भी स्थिति में क्षय और वृद्धि होती है। किन्तु इस विषय का विचार रवि और मंगल की स्थिति से अधिक सम्बधित है। गन्ध—सृष्टि में निसर्गतः एक अद्भुत सुगन्ध व्याप्त होता है। फूलों के अथवा इत्र के सुगन्ध से सर्वथा भिन्न ऐसा यह गुप्त सुगन्ध है। योगशास्त्र के अभ्यास से ही इसका ज्ञान हो सकता है। जिन्हें यह ज्ञान हो जाता है वे संसार का त्याग कर वनमें निवास करने लगते है। स्वामी विवेकानन्द ने 'राजयोग' में इसका कुछ वर्णन किया है। यह सुगन्ध चन्द्र से ही पृथ्वीपर आता है। फूलों का अथवा इत्र का

गन्ध भी चन्द्र पर अवलम्बित कहा है। वस्तुतः इस बाह्य सुगन्ध का विचार शुक्र पर से करना चाहिए। रस—द्रव पदार्थ यह कारकत्व चन्द्र पर दिया है क्योंकि चन्द्र भी द्रव स्वरूप है। रस शब्द का एक अर्थ पारा यह भी है। इक्षु-गोधूम—ईख तथा गेहूं यह कारकत्व चन्द्र को कैसे दिया यह समझ में नही आता। क्षारक—क्षार पदार्थो पर चन्द्र का स्वामित्व है यह स्पष्ट है। समुद्र क्षारों से परिपूर्ण है और इसे पौर्णिमा के दिन चन्द्र के ही कारण ज्वार आता है। यह परिणाम सादे पाणी के तालाब पर नहीं होता। इस से स्पष्ट होता है कि क्षारों पर चन्द्र का स्वामित्व है। बीजशक्तिकार्य—स्त्री में गर्भधारण की शक्ति है या नहीं इसका विचार चन्द्र की स्थिति से होता है। स्त्री पर चन्द्र का स्वामित्व है। देहातियों में ऐसी एक धारणा है कि खेत जोतते वक्त बीज बोने का काम पुरुषोंने ही करना चाहिये। यदि बीज बोने का काम स्त्रियों ने किया तो फसल नहीं आती। बीज बोये जाने पर उसके संवर्धन का काम कुछ काल तक स्त्री को करना होता है। किसी ग्रन्थकार ने लिखा है कि स्त्रियों की गर्भधारण करने की शक्ति का तथा पुरुषों के वीर्य की गर्भोत्पादन शक्ति का विचार चन्द्र की स्थिति से होता है। किन्तु हमारे मतसे इस मत का दूसरा अंश बिलकुल गलत है। पुरुष के वीर्य की गर्भोत्पादन शक्ति का विचार रवि की स्थिति से करना चाहिये। सस्य—मुख्य फसल के बाद उगने वाली फसल (पश्चात् धान्य) पर चन्द्र का स्वामित्व होता है। इसलिये चन्द्र पर यह कारकत्व दिया हैं। रजत—चांदी सफेद होती है इसलिये चन्द्र पर यह कारकत्व दिया है किन्तु मेरे विचार से इस धातु का विचार शुक्र की स्थिति से करना चाहिये।

सर्वार्थचिन्तामणि—धवल–चामर–यशो–दया–आमोद–कान्ति–मुख–लावण्य–मातृ–मनःप्रसादकारकश्चन्द्रः ॥

धवल—सफेद रंग की योजना चन्द्र के साथ की है यह स्वाभाविक ही है। चामर—राजा अथवा महान साधुसन्तों के सिर पर ढुलने के लिये चामर का उपयोग किया जाता है। इस का कारकत्व यह पर देना

चाहिये । यश---कार्य में सफलता प्राप्त होना यह शनि और राहू का कारकत्व है । इसी ग्रन्थकार ने राहू पर यह कारकत्व कहा भी है । यश प्राप्त करने के लिये मन में जो स्थिरता और सातत्य की जरूरी होती है उसका विचार चन्द्र से करना चाहिये । दया-आमोद---दया और आनन्द ये चन्द्र के स्वाभाविक गुण है अतः ये कारकत्व ठीक है । कान्ति---चन्द्र तेजस्वी है इसलिये कान्ति अर्थात तेज का विचार चन्द्र से होता है । मुखलावण्य---मुख का सौन्दर्य यह कारकत्व भी योग्य है । चन्द्र का स्वामित्व जिन पर होता है वे बहुत मोहक होते है और उनका मुख विशेष रूप से तेजस्वी होता है । हमारे कवियों ने बहुत सुन्दर प्रकारों से चन्द्र की स्त्रियों के मुखों से तुलना की है । कविकुलगुरु कालिदास के लघुकाव्य ऋतुसंहार में ऐसे वर्णन बहुत अच्छे है । इस प्रकार मुख की सुन्दरता यह चन्द्र का कारकत्व कहा है वह योग्य ही है ।

वैद्यनाथ---चेतो-बुद्धि नृप-प्रसाद-जननीसंपत्करश्चन्द्रमाः ।।

बुद्धि---बुद्धि का कारक चन्द्र माना है इसका स्पष्टीकरण नही होता । चन्द्र मन का कारक है । मन और बुद्धि अलग अलग है । उनको एक ही मानना विचार-संगत नही होगा । बुद्धि का कारक बुध मानना चाहिये ।

नृपप्रसाद---राजा की कृपा का कारक चन्द्र है । किसी संस्थान या देशी रियासत में यदि रानी की कृपा किसी सेवक पर होती तो राजा भी उस पर प्रसन्न होता था । चन्द्र को रानी का स्थान दिया है । इसलिये उसे राजकृपा का कारक माना है । संपत्ति---यह कारकत्व चन्द्र पर कैसे दिया इसका स्पष्टीकरण नहीं होता । चन्द्र को संपत्ति का कारक मानना गलत है ।

विद्यारण्य---मनोबुद्धिप्रसादं च मातृचिन्तां च चन्द्रमाः ।।

मातृचिन्ता---रविविचार में जिस प्रकार पितृचिन्ता का विचार किया उसी प्रकार यहां मातृचिन्ता का करना चाहिये ।

कल्याणवर्मा --- कवि-कुसुम-भोज्य-मणि-रजत-शंख-लवणोदकेकु वस्माणाम् । भूषण-नारी-घृत-कुज-तैल-निद्रा-प्रभुश्चन्द्रः ।।

कवि--यह कारक अन्य सभी शास्त्रकारोंने शुक्र का कहा है। कवि यह शुक्र का एक नाम ही हैं। किन्तु मेरे विचार से कल्याणवर्माने चन्द्र पर यह कारकत्व विचारपूर्वक ही दिया है। संसार में कवि, ज्योतिषी, गायक, योगी और संशोधक ये पांच प्रकार के लोग ऐसे होते है जो अपने कार्य में मग्न होने पर सारे बाह्य जगत को भूल जाते है। मन इतना एकाग्र और तन्मय हो जाता है कि वे अपने शरीर की सुध भी भूल जाते है। किसी कवि के हृदय से जब काव्य की निर्मिति होती है तब उसे बाह्य जगत की पूरी विस्मृति हो जाती है। ऐसा नहीं हुआ तो नितान्त रमणीय और मनोहर काव्य ही निर्माण नही होता। इस तरह तल्लीनता की मनोवृत्ति चन्द्र पर अवलम्बित है। इसलिये इन पांचों लोगों का कारकत्व मेरे विचार से चन्द्र को ही देना चाहिये। कुसुम--फूल सुंदर और सुगन्धित होते है इसलिये यह कारकत्व चन्द्र का कहा है। भोज्य--रसोई बनाना स्त्रियों का कार्य है और चन्द्र को गृहिणी का स्थान दिया गया है इसलिये खाद्य अन्न का कारकत्व चन्द्र पर दिया। मणि--स्त्रियों को प्रिय होते है इसलिये यह चन्द्र का कारकत्व कहा। शंख-लवणोदक--खारा पाणी यह कारकत्व चन्द्र का है क्योंकि समुद्र पर चन्द्र का स्वामित्व है। शंख मुख्यतः समुद्र में पैदा होते हैं। इसलिये उनका भी कारक चन्द्र ही कहा है।

वस्त्र--चन्द्र स्त्री सदृश ग्रह है। स्त्रियों को विविध वस्त्र बहुत प्रिय होते है। इसलिये वस्त्रों का कारक चन्द्र माना है। भूषण--अलंकार भी स्त्रियों को बहुत प्रिय होते है इसलिये इनका कारक चन्द्र माना है। घृत और तैल--ये द्रव पदार्थ है इसलिये इनका कारकत्व चन्द्र पर दिया। निद्रा--नींद का कारक वस्तुतः शनि होना चाहिये क्योंकि नींद प्रतिदिन प्राप्त होने वाली मृत्यु ही है। मृत्युपर शनि का स्वामित्व है। अतः यह कारकत्व गलत है।

जीवनाथ दैवज्ञ--धवल--चामर--कीर्ति--दया-मती-मुख-कला--जननी--मनसामपि। विधुबलाबलयोगविमर्शतः कुशिकलानिपुणः सुखमादिशेत्॥

कीर्ति---यही मानव को प्राप्त होने वाली सच्ची संपत्ति है। किन्तु इसका विचार शनि और राहू से करना होता है। चन्द्र पर यह कारकत्व देना गलत है। कृति---यह कारकत्व सही है क्योंकि कृति का आरंभ मन से होता है। कलानिपुण---कसीदा और झिग का काम, लकडी अथवा धातु का नक्शी काम, चित्रकला इत्यादि के लिये जो मनोवृत्ति और ज्ञान जरूरी होता है उस का विचार चन्द्र से होता है। किन्तु इन कलाओं का साक्षात् विचार शुक्र की स्थिति से होगा।

कालिदास--- बुद्धिः पुष्प-सुगन्ध-दुर्ग-गमन-व्याधि-द्विजालस्यक-श्लेष्मापस्मृति-गुल्म-भाव-हृदय-स्त्री-सौम्य-पापाम्लकाः। निद्रा-सौख्य-जल-स्वरूप-रजत-स्थुलेक्षु-शीतज्वराः यात्रा-कूप-तटाक-मातृ-समदृग्-मध्यान्ह-मुक्ता-क्षयाः ॥ १ ॥ धावल्यं कटिसूत्र-कांस्य-लवण-ह्रस्वा मनःशक्तयो वापी-वज्र-शरन्मुहूर्त-मुख-कान्ति-श्वेतवर्णोदराः। गौरी-भक्ति-मधु-प्रसाद-परिहासाः पुष्टि-गोधूमकामोहाः कान्तिमुखे मनो-जव-दधि-प्रीतिस्तपस्वी यशः ॥२॥ लावण्यं निशिवीर्य-पश्चिममुखे विट्-क्षार-कार्याप्तयः प्रत्यग् दिक्-प्रिय-मध्यलोक नवरत्नानीह मध्यं वयः। जीवो भोजन-दूरदेशगमने लग्नंच दोर्व्याधयः छत्राद्यंचित-राजचिन्ह-सुफले सद्रक्तधातुस्तथा ॥३॥ मीनाद्या जलजाः सरीसृपदुकूले सद्विकास-स्फुरत्-शुद्धस्तत् स्फटिकास्ततो मृदुलकं वस्त्रं त्वमी स्युर्विधोः ॥

दुर्ग---किला यह मंगल के अधिकार का विषय है अतः यह कारकत्व गलत है। गमन-आना जाना यह कारकत्व सम्भवतः चन्द्र की सतत गति को देखकर कहा गया है। व्याधि-विकार का विचार करते हुये यह कारकत्व ठीक होता है। किन्तु विशिष्ट रोगों के लिये अन्य ग्रहों का भी विचार आवश्यक होता है। द्विज-ब्राह्मण किन्तु हमारे विचार से यहां वैश्य अर्थात व्यापारी यह कारकत्व मानना चाहिये। आलस्य-यह गुणधर्म चन्द्र में नही, शनि में है। अतः यह कारकत्व गलत है। श्लेष्मा-यह रोग शनि के अधिकार में है। अपस्मृति-इसके दो अर्थ हो सकते है-स्मृति नष्ट होना अथवा अपस्मार होना ये दोनों राहू के अधिकार में हैं। गुल्म-उदर का वायुरोग यह गुरु के अधिकार में है।

हृदय—इस पर चन्द्र का स्वामित्व हैं। सौम्य—चन्द्र शान्त है अतः यह कारकत्व दिया। पाप—चन्द्र की स्थिति कुछ पापमूलक है अतः यह कारकत्व दिया। स्थूल—यह कारकत्व योग्य नहीं है क्योंकि चन्द्र के स्वामित्व के लोग पतले कद के होते है। शीतज्वर—चन्द्र का एक कारकत्व शीत यह कहा है उसी पर से यह कारकत्व कहा। यात्रा—देवस्थानों का दर्शन यह कारकत्व कैसे दिया यह स्पष्ट नहीं होता। कूपतटाक—कुंए और तालाब यह कारकत्व चन्द्र को दिया क्योंकि पानी पर उसी का स्वामित्व है। समवृक्—सीधी और सम दृष्टि यह कारकत्व चन्द्र का माना क्योंकि चन्द्र के किरण इसी प्रकार पृथ्वीपर आते है। मुक्ता—मोती का रंग चन्द्र के समान है और आकार भी गोल है अतः यह कारकत्व सही है। क्षय—वध प्रतिपदा से अमावास्या तक चन्द्र क्षीण होता है अतः क्षयरोग का वह कारक कहा किन्तु अकेले चन्द्र से यह रोग होता है ऐसा नहीं मानना चाहिये। कटिसूत्र—करधनी यह कारकत्व कैसे कहा यह स्पष्ट नही होता। ह्रस्व—छोटा-इसके शरीर की ऊंचाई कम मानी है। मनःशक्तयः—मन की शक्तियां इसका कुछ विवेचन रवि—विचार में किया है। वज्र—यह इन्द्र के शस्त्र का नाम है उसका यहां कोई सम्बन्ध नही है। किन्तु वज्र यह नाम शुभ्र वर्ण के तेजस्वी हीरे का भी है। उस अर्थ में यह कारकत्व योग्य है। शरद्—यह ऋतु चन्द्र के अधिकार में कहा क्योंकि चन्द्र का धान्य पर स्वामित्व हैं और धान्य शरद ऋतु में ही तैयार होता है।

मुहूर्त—साडेतीन घटिका अथवा किसी कार्य के लिये नियोजित समय। यह कारकत्व सही है। मुखकान्ति—पुरुष के मुख पर जो एक नैसर्गिक तेज होता हैं उस पर चन्द्र का स्वामित्व है। उदर—यह कारकत्व कैसे दिया यह स्पष्ट नही होता। गौरीभक्ति—रवि को शंकर का और चन्द्र को पार्वती का प्रतिनिधि माना है अतः पार्वती की भक्ति का कारकत्व चन्द्र को दिया।

मधु—मीठा यह कारकत्व अनुभव में नही आता। परिहास—हंसी-मजाक यह चन्द्र का गुणधर्म नही है अतः यह कारकत्व गलत है। आमोद—आनन्द यह स्वभाव का कारकत्व सही है। मनोजव—मन की गति यह

कारकत्व किस लिए कहा यह स्पष्ट नही होता । मन की गति कैसी और कितनी है इसका विचार जन्मकाल के चन्द्र की गति से हो सकता है। गति अधिक हो तो चंचलता अधिक होगी और कम हो तो चंचलता भी कम होगी । दधि–दही सफेद रंग का क्षार से होनेवाला और द्रव पदार्थ है अतः यह कारकत्व योग्य है । प्रेम–यह चन्द्र का गुणधर्म है। तपस्वी–यह कारकत्व गलत है । चन्द्र के स्वामित्व के व्यक्ति तपस्वी कभी नहीं हुए है । निशिवीर्य–चन्द्र के स्वामित्व के व्यक्ति रात्रि में बलवान होते है । पश्चिममुख––चन्द्र के उदयास्त अच्छी तरह देखने पर प्रतीत होगा कि वह पश्चिम से पूर्व की ओर जाता है । शुक्ल पक्ष में पश्चिम में ही उसका उदय होता है और उसी ओर की बाजू अधिक तेजस्वी होती हैं । फिर एक एक कला बढती है । विट––हंसोड और स्त्रियों के विक्रय में मदद करने वाला यह कारकत्व बिलकुल गलत है । आप्त–सम्बन्धी लोग सम्बन्धित स्त्रियों के विषय में इस कारकत्व का उपयोग हो सकता है । प्रत्यक् दिक्प्रिय–जिसे पश्चिम दिशा प्रिय है, क्षार, लावण्य, श्वेतवर्ण, वापी–कुंआ, लवण–नमक, धावल्य–शुभ्रता, इन कारकत्वों का वर्णन पहले हो चुका है । कालिदास ने निरर्थक कारकत्व बहुत कहा है । विलियम लिली–रानियां, सरदारों की पत्नियां, कुलीन गृहिणी, स्त्रियां, सामान्य जनता, प्रवासी, यात्री, खलासी, मछुए, प्रकाशक, पत्रवाहक, तांगेवाले, शिकारी, दूत, ग्वाले, पियक्कड, रास्तों पर चीजें बेचनेवाली स्त्रियां, नर्स, पानी ढोनेवाले, मांत्रिक स्त्रियां, शराब बनानेवाले और बेचनेवाले इन व्यक्तियों का विचार चन्द्र से होता है । टॉलेमी–चन्द्र को सूर्य से प्रकाश प्राप्त होता है इसलिए उष्णता के निर्माण में भी उसका कुछ अंश है ।

हमारे मत से चन्द्रका कारकत्व––विद्युत् प्रवाह, चुंबकीय प्रवाह, माता का दूध (सन्तान को किस प्रकार और कितना मिलेगा) स्त्रियों का रजोदर्शन (मासिक धर्म किस प्रकार और प्रमाण में होगा), रेल्वे अधिकारी, जहाजों के कारखाने, दवाई के दूकानदार, लोककर्मविभाग, कांच के कारखाने, वेधशाला, पश्चिमीय द्रव औषध, पेटेंट दवाइयां, बजाज के दूकान, किराना सामान, सिंचाई विभाग, म्युनिसिपालिटी का पानी विभाग,

नमक बनाने के कारखाने, आयात निर्यात कर विभाग, जहाज खलासी, टंकसाल, नोट छपाने के स्थान, दूध की डेअरी, वनस्पतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, जंतुशास्त्र, सूक्ष्मजीवशास्त्र, समता कानून, विमान, चांवल, कपास, सफेद वस्त्र ।

जन्मकुण्डली में उपयोगी कारकत्व—माता, मन, बीजशक्ति, यश, पुष्टि, बुद्धि, नृपप्रसाद, संपत्ति, मातृचिन्ता, कवि, भक्ष्य, वस्त्र, नींद, कीर्ति, कलानिपुण, व्याधि, मां का दूध, स्त्री का रजोदर्शन, पश्चिमीय द्रव औषध, पेटंट दवाइयां, अनाज की दूकाने, किराना माल की दूकाने, सिंचाई विभाग, पानी विभाग, नमक के कारखाने, आयात निर्यात कर, समुद्री विभाग, टंकसाल, कांच के कारखाने, वेधशाला, रेलवे, जहाज, दवाई की दूकाने, लोककर्म विभाग, डेअरी, रेलवे पोस्ट विभाग, जहाजों के कारखाने, नोट छपाने के छापखाने ।

जन्मकुण्डली से शिक्षण के विषय में चन्द्र का कारकत्व—नर्स, मिडवाईफ, लोककर्म विभाग, पानी विभाग, इंजीनियरिंग, वनस्पतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, समताकानून, जंतुशास्त्र, सूक्ष्म जीवशास्त्र ।

स्वभाव का कारकत्व—दया, मोह, आलस्य, मजाक. मन की गति, प्रीति ।

मेदिनीय ज्योतिष में उपयोगी कारकत्व—रानी, सरदार की पत्नी, उच्चकुलीन स्त्री सामान्य जनता, प्रकाशक, किले, चांदी, यात्रा, गन्ध, रस, ईख, गेहूं, चामर, फूल, रत्न, शंख, खारा पानी, अलंकार, घी, तेल । विलियम लिली ने जो उपयोग में न आने योग्य कारकत्व दिया है वह सभी व्यवसायों के लिए है । इस विषय में मेरा अनुभव इस प्रकार है—

मेष—सार्वजनिक उपकार कार्य, जंगल विभाग, । **वृषभ**—अस्पताल के कर्मचारी, रसोई बनानेवाले, पानी ढोनेवाले, तरकारी बेचनेवाले, अनाज और किराना माल की दूकाने । **मिथुन**—वैद्य, प्रवचनकार, पुराणवाचक । **कर्क**—सोना चांदी गलाना, । **सिंह**—बड़े अधिकार पद की नौकरी । **कन्या**—

रेलवे, डाक तार विभाग, रेकार्डिंग। तुला—गायन शिक्षक, रेडियो के अधिकारी। वृश्चिक—डाक्टर, हाफकिन्स इन्स्टिटयूट जैसी वैद्यकीय संस्थाओं के कर्मचारी। धनु—इंजीनियर। मकर—बिल्डिंग कॉन्ट्रॅक्टर। कुंभ—शास्त्रीय कार्यो के लिए नौकरी। मीन—लेखक, सन्मानयुक्त सरकारी नौकरी।

व्यवसाय के कारकत्व के विषय में एक उदाहरण देखिए। एक 'क्ष' व्यक्ति की कुण्डली ऐसी थी—
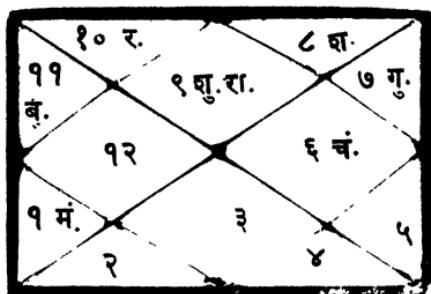
इसने अपने जीवन में कई व्यसाय किये किन्तु वे सब असफल रहे। एक दिन हमने विचार किया कि कन्या में चन्द्र का कारकत्व फूल का है। तदनुसार उसे फूलों का व्यापार करने की सलाह दी। इस में उसे सफलता मिली और धन भी प्राप्त हुआ।

प्रकरण चौथा

चन्द्र का अधिक वर्णन-ग्रहयोनि भेद

वैद्यनाथ—चित्तमिन्दुः। चन्द्र मानव के चित्त का स्वामी ऐसा कहा है। किन्तु चन्द्र का स्वामित्व मन पर है। चित्त और मन एकही नही है। वेदान्त के अनुसार परब्रह्म और माया इन दोनों से ही सारी सृष्टि की उत्पत्ति होती है। इन में माया के कारण ही जीव और उसका मन उत्पन्न होते है। इस सम्बन्ध में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार इस चतुष्टय का वेदान्त में वर्णन आता है। मेरे विचार से मन पर चन्द्र का, बुद्धि पर

बुध का, चित्त पर गुरु का, शुद्ध सात्विक अहंकार पर शनि का, झूठे अभिमान पर मंगल का, ज्ञान पर शुक्र का और मोक्ष पर राहु का अधिकार है। इस लिए चन्द्र का जीव के मन पर स्वामित्व मानना चाहिए। राजाना--प्राचीन ग्रंथकारों ने चन्द्र को राजा माना है। स्व. गुरुवर्य नवाथेजी के मत से यह प्रजा का कारक है। किन्तु मेरे मत से सूर्य राजा और चन्द्र रानी यही विभाजन अच्छा है। चन्द्रः सितांगो युवा-- यह शुभ्र वर्ण का और युवक है। प्रकाशकः शीतकरः--यह प्रकाश देता है।

शुभःशशी--यह शुभ ग्रह है ऐसा माना गया है। किन्तु यह पाप फल भी बहुत देता है और अपने स्थान का फल नष्ट करता है। क्षीण चन्द्र के पाप फल का वर्णन इस श्लोक मे मिलता है--शुक्लादिकानि दशकेऽह्नि मध्यवीर्यशालीं द्वितीय दशकेऽतिशुभप्रदोऽसौ। चन्द्रस्तृतीय दशके बलवर्जितस्तु सौम्येक्षणादिसहितो यदि शोभनः स्यात्॥ अर्थात् शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक चन्द्र मध्यम बलवान होता है। इस के बाद के दस दिन तक अतिबलवान होता है इस लिए शुभ फल देता हैं। अन्तिम दस दिनों में चन्द्र बलहीन होता है। बलहीन चन्द्र शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो उस के फल अच्छे मिलते है। पहले दस दिनों में कुमार अवस्था होती है इस लिए कोई विशेष कार्य नही हो सकता। बीच के दस दिनों में तारुण्य और प्रौढता होती है इस लिए उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य किये जाते है। अन्तिम दस दिनों में वृद्धता और मृत्यु की स्थिति होती है इस लिये कोई कार्य नही हो पाता। इस प्रकार दिनमान से चन्द्र के फल कहे है।

शिरसा चन्द्रः व्रजेत्--इस का उदय सिर की और से होता है। इस कल्पना का स्पष्टीकरण करना कठिन है। क्यों कि संसार में ९६ फी सदी मानवो का जन्म सिर की ही ओर से होता है इस लिये इस फलनिर्देश में कोई महत्त्व नही रहता। कुंडली में लग्न में चन्द्र हो और लग्न की राशि का उदय शिरोभाग से हो रहा हो तो शायद इस फलादेश का कोई विशेष अनुभव मिल सकेगा।

सरीसृपाकारयुत: शशांक:—जिन्हें पांव नही होते जो जमीन पर घसरते हुये ही चलते है–ऐसे सांप आदि प्राणियों पर राहु का स्वामित्व है। इन्हें चन्द्र के अधिकार में मानना गलत है। चन्द्र को द्विपाद ही मानना चाहिये।

जलाशय: चन्द्र:—चन्द्र जलस्वरूप है इस लिये कुंए, तालाव, समुद्र आदि जलाशयों पर इस का स्वामित्व होता है।

विधुरब्दसप्तति:—चन्द्र की आयु सत्तर वर्ष की है। यह मत ठीक प्रतीत नही होता। ७० वें वर्ष तक वृद्धता के कारण मन की शक्ति नष्ट होती है उस समय कोई विशेष कार्य नही हो सकता। उस वर्ष पर शनि का स्वामित्व मानना योग्य होगा। चन्द्र का अधिकार तारुण्य और प्रौढा-वस्था पर है। आचार्य ने २४ से २६ वें वर्ष का काल कहा है।

चन्द्र: सित:—यह शुभ्र वर्ण का है। प्रश्न कुण्डली से नष्ट हुई वस्तुओं के बारे में विचार करते समय इस वर्णन का उपयोग करना चाहिये।

चन्द्र: मणि:—बच्चों के कंठ में नजर लगने से बचने के लिये एक मणि बांधा जाता है इसे चन्द्रमणि कहते है।

देवता अम्बु:—यह जल स्वरूप है इसलिये चन्द्र की देवता भी पानी ही कही है। रत्नों में मोती, और नये वस्त्र इन का विचार कारक प्रकरण में किया है।

दिशा वायव्या—वायव्य दिशा की देवताओं के अधिकार में जलाशय होते है इसलिये प्रश्नविचार में और नाडीग्रंथों में चन्द्र की वायव्य दिशा कही है। चन्द्र यदि जन्मकुण्डली में प्रबल हो तो वायव्य दिशा में उस व्यक्ति का भाग्योदय होता है। कोई बच्चा भाग गया हो अथवा कोई जानवर राह भूल गया हो अथवा चोरी हुई हो उस समय यदि लग्न में चन्द्र हो तो वायव्य दिशा में उन का पता चलता है। वास्तव में दिशा के इस फल की उपपत्ति बतलाना सम्भव नही है। ये फल तो पुरातन

आचार्यों ने अतींद्रिय दिव्य ज्ञान से ही बतलाये है । उपपत्ति की दृष्टि से पूर्व या पश्चिम ये चन्द्र की दिशाएं हो सकती है क्यों कि उस का उदय इन्हीं दिशाओं में होता है ।

ऋतु—जातकपारिजात में चन्द्र का वर्षा ऋतु कहा है यह ठीक हैं । कालिदास ने यहां शरद ऋतु कहा है वह ठीक प्रतीत नही होता ।

क्रीडास्थान—नदी, तालाव अथवा समुद्र के तीर पर के क्रीडास्थानों पर चन्द्र का स्वामित्व होता है ।

चन्द्र के प्रदेश—कल्याणवर्मा ने वनदेश शब्द से इस का वर्णन किया है । मेरे मत से बंगाल प्रदेश चन्द्र के स्वामित्व में है । जातकपारिजात में कहे हुये प्रदेशों का और ग्रहों का सम्बध ठीक नही है । आचार्य ने बृहत्संहिता में दिया हुआ वर्णन उचित है ।

वर्ण—चन्द्र का वैश्य वर्ण कहा है ।

गुण—शीतकिरणः सत्त्वप्रधानो ग्रहः । इस में सत्त्व गुण प्रधान होता है इस का विवरण पहले हो चुका है ।

तत्त्व—चन्द्र के अधिकार में किसी भी तत्त्व का वर्णन नही मिलता यह आश्चर्यजनक है । मेरे खयाल से जल तत्त्व पर चन्द्र का अधिकार है। शास्त्रों में यह तत्त्व शुक्र के अधीन कहा है वह ठीक नही प्रतीत होता ।

रुधिर—खून पर चन्द्र का स्वामित्व है । इसे कुछ विद्वान ज्योतिषियों ने गलत माना है । किन्तु मेरे मत से खून से चन्द्र का विशेष सम्बन्ध है । कुन्डली में चन्द्र यदि मंगलद्वारा दूषित हो तो उस व्यक्ति का रक्त नियम से दूषित होता है । कुण्डली मे चन्द्र क्षीण हो तो रक्ताभिसरण ठीक नही होता । रक्त की निर्मिति पर अवश्य मंगल का स्वामित्व है । किन्तु निर्माण हो जाने के बाद रक्त की अवस्थाएं चन्द्रकी ही स्थिति के अनुसार होती है ।

रस—लवण अर्थात नमकीन पर चन्द्र का अधिकार है। नमक का उत्पत्तिस्थान जो समुद्र वह भी चन्द्र के ही अधिकार में है।

काल—चन्द्र बहुत चंचल है–कभी एक जगह स्थिर नही रहता–इस लिये क्षण यह इसका काल कहा है।

दृष्टि—सम दृष्टि यह चन्द्र का विशेष है। नैसर्गिक कुण्डली में चतुर्थस्थान मे कर्क राशि होती है जो चन्द्र का स्वगृह है। यहीं यह सम दृष्टि बलवान होती है।

निशीन्दुः—चन्द्र रात के समय बलवान होता है इस का वर्णन पहले हुआ है।

गुरुणा निशाकरः—गुरु के द्वारा चन्द्र पराजित होता है। गुरु के संयोग से चन्द्र के शुभ फल नष्ट होकर अशुभ फल मिलते है।

चन्द्र के बलवान होने का वर्णन अगले श्लोक में मिलता है।—

चन्द्रःकर्किणि गोपतौ निजजनद्रेष्काणहोरांशके
राश्यंते शुभवीक्षणे निशिसुखे याम्यायने वीर्यवान्।
इन्दुःसर्वकलाधरो यदि बली सर्वत्र सन्धि विना
सर्वव्योमचरेक्षितस्तु कुरुते भूपालयोगं नृणाम्॥

कर्क और वृषभ राशि में, सोमवार को, द्रेष्काण और होरा कुण्डली में स्वगृह में हो तो, राशि के अन्तिम भाग मे, शुभ ग्रहों की दृष्टि में, रात मे, चतुर्थ स्थान में तथा दक्षिणायन में सन्धि छोडकर अन्यत्र चन्द्र बलवान होता है। चन्द्र पर यदि सब ग्रहों की दृष्टि हो तो वह राजयोग होता है।

आचार्य ने बृहत्संहिता में चन्द्र किस समय कल्याणकारी होता है इसका वर्णन अगले श्लोकों द्वारा किया है।

प्रालेयकुंदकुमुदस्फटिकावदातो। यत्नादिवाद्रिसुतया परिमृज्यचन्द्रः। उच्चैकृतो निशि भविष्यति मे शिवाय। यो दृश्यते स भविता जगतः शिवाय॥ यदि कुमुदमृणालहारगौरः तिथिनियमात् क्षयमेति वर्धते वा। अविकृतगतिमंडलांशुयोगी भवति नृणां विजयाय शीतरश्मिः॥

अर्थात् बर्फ, कुंदपुष्प अथवा कुमुद या स्फटिक के समान शुभ्र चन्द्र जगत को आनंद देता है। तिथियों के नियमानुसार इस की क्षयवृद्धि हो तथा बीच में कोई विकार न हो तो वह सब का कल्याण करता है। पहले श्लोक में राशि के अन्तिम भाग में चन्द्र बलवान कहा है किन्तु कभी कभी वह राशि के अन्य भागों में भी फल देता है। जैसे लेखक की ही कुण्डली में वृषभ राशि के दूसरे अंश में चन्द्र है फिर भी चारुबेल का फलादेश पूरी तरह मिला है–इस अंश में उत्पन्न हुआ व्यक्ति एकाकी, असंतुष्ठ और एकान्त प्रिय होता है।

रोग—पांडुदोषजलदोष कामिला–पीनसादिरमणीकृतामयैः। कालिका-सुरसुवासिनीगणैराकुलं च कुरुते तु चन्द्रमा ॥ पाण्डुरोग, पानी से उत्पन्न हुए रोग, कामिला, पीनस, स्त्रियों के सम्बन्ध से होनेवाले रोग, तथा कालिका आदि देवियों से होनेवाली पीडा ये बाधाएं चन्द्र के कारण होती हैं। इस फलादेश में चन्द्र कों स्वतन्त्र मानकर वर्णन किया है। इस में अन्य ग्रहों के योग भी देखने चाहिये।

जयदेव ने प्राय: बृहज्जातक का ही अनुकरण किया है। इस में वैद्यनाथ के कहे हुये फलों का वर्णन पहले हो ही चुका है। अधिक इतना ही है कि यहां चन्द्र अपराण्ह के समय बलवान कहा है। यह ठीक भी है क्यों कि सायंकाल का समय रात के निकट ही होता है।

तपस्वी—इस विषय में पहले वर्णन हो चुका है।

मध्यमो वय:—वैद्यनाथ ने चन्द्र की आयु ७० वर्ष कही है किन्तु जयदेव के मत से यह मध्यम वय का है। मेरे मत से २१ से ४८ वें वर्ष तक की आयु पर चन्द्र का अधिकार होता है।

विलीयम लिली—यह एक स्त्रीस्वभाव ग्रह है। यह शीत, आर्द्र और श्लेष्मयुक्त है।

—०—

प्रकरण पांचवा

चन्द्र का मूल स्वरूप

कल्याणवर्मा—सौम्य: कान्तविलोचनो मधुरवाग् गौर: कृशांगोयुवा प्रांशु:सूक्ष्मनिकुंचितासितकच: प्राज्ञो मृदु: सात्त्विक:। वारुवातकफात्मक: प्रियसखो रक्तैकसारो घृणी वृद्धस्त्रीषु रतश्चलोऽतिसुभग: शुभ्राम्बरश्चन्द्रमा: ॥ यह शान्त होता है। आंखें सुंदर होती है। वाणी मधुर होती है। वर्ण गोरा होता है। शरीर कृश तथा सदा तरुण प्रतीत होता है। ऊंचा होता है। इसके केश बारीक, घुंघराले तथा काले होते है। यह ज्ञानी, कोमल तथा सात्त्विक होता है। वात अथवा कफ प्रकृति होती है। इसे प्रिय मित्र प्राप्त होते है। इसके शरीर में रक्त अच्छा होता है। दूसरों के विषय में कुछ तिरस्कार होता है। वृद्ध स्त्रियों के साथ रममाण होता है। चंचल, सुन्दर तथा शुभ्र वस्त्र पहननेवाला होता है।

इस का स्वभाव शांत कहा है किन्तु यह दूसरों को उत्तेजित करता है। आंखे सुंदर, निष्पाप, बडी, और हिरन जैसी तेजस्वी होती है। यह फल पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में विशेष दिखाई देता है। इसकी वाणी मधुर–स्त्रियों के समान होती है। इसका शरीर कृश कहा है। किन्तु अनुभव से चन्द्र के स्वामित्व के व्यक्ति कृश और स्थूल दोनों प्रकार के होते है। ऐसा प्रतीत होता है। वर्ण गौर है—कभी कभी लग्न में चन्द्र होकर भी वर्ण बहुत काला देखने में आया है। किन्तु साधारण तौर पर ये व्यक्ति गोरे होते है। ये लोग सदा तरुण दिखाई देते है ४० वर्ष का प्रौढ भी २५ वर्षीय युवक जैसा प्रतीत होता है। ये ज्ञानी होते हैं। मेरे विचार से इनमें व्यवहारज्ञान कम ही होता है किन्तु किसी एक विषय में इन्हें कुशलता प्राप्त होती है। इनका शरीर कोमल होता है यह फल देखने योग्य है। वात अथवा कफ प्रकृति के होते है। चन्द्र स्वभावत: शीत है इसलिये कफ के रोग होना स्वाभाविक है किन्तु वात रोगों का विचार मेरे मत से गुरु की स्थिति से करना चाहिये क्यों कि उष्णता गुरुपर ही अवलम्बित है। यह सुन्दर, सात्त्विक और प्रिय मित्रों से युक्त होता है।

वैद्यनाथ—संचारशीलो मृदुवाग् विवेकी शुभेक्षणश्चारुतर: स्थिरांग: सदैव धीमांस्तनुवृत्तकाय: कफानिलात्माच सुधाकर:स्यात् ।।

यह प्रवासी, मधुरवाणी से युक्त, विवेकशील, सुंदर आंखों से युक्त, सुन्दर और सुदृढ शरीर का, बुद्धिमान, कुछ गोल आकार का तथा वात अथवा कफ प्रकृति का होता है ।

जयदेव—निशापतिर्वृत्ततनु: सुनेत्र: कफानिलात्मा किल गौरवर्ण: । प्राज्ञोऽतिलोलो मृदुवाग् घृणीच प्रियप्रियोऽसौ खलु शोणितौजा: ।

इस का शरीर वर्तुलाकार होता है, आंखें सुन्दर होती है, प्रकृति कफ अथवा वात की होती हैं और वर्ण गोरा होता है । यह बुद्धिमान, बहुत चंचल, मित्रों को प्रिय, कुछ अहंकारी और बोलनेवाला होता है । इस का रक्त अच्छा होता है ।

सर्वार्थचिन्तामणि—चन्द्र: सितांग: समगात्रयष्टिर्वाग्मी परिच्यंगविवेक-युक्त: । क्वचित् कृश: शीतलवाक्ययुक्त: सत्त्वाश्रयो वातकफानिलात्मा ।।

पूर्वोक्त विवरण से इस में एक ही विशेषण अधिक है–इस का शरीर सम होता है । अवयवों में विषमता नही होती । यह फल विशेषत: देखने में आया है ।

अन्य वर्णन—सोमश्च विद् वैश्यकुलप्रसूतौ । चन्द्र वैश्य वर्ण का है । चन्द्रस्य रक्तम् । रक्त पर चन्द्र का अधिकार है । वस्त्रकाठिन्यम् । यह मोटे वस्त्र पहिनता है । नरपालमुख्यौ । यह राजा के समान मुख्य होता है । धातु: । धातुओं पर इस का स्वामित्व होता है । इस में पहले दो वर्णन ठीक है । वस्त्र मोटे होना यह फल योग्य नही है–चन्द्र के स्वामित्व में महीन वस्त्र ही योग्य है । राजा के समान मुख्य-यह फल भी योग्य नही क्यों कि चन्द्र को ग्रहमाला में रानी का स्थान दिया जाता है । धातुओं का स्वामित्व चन्द्र को कैसे मिला यह स्पष्ट नही होता ।

कार्पोरेचर—इस की कद अच्छी और वर्ण गौर होता है । मुख वर्तुलाकार और आंखें काली होती है । सिर पर, मुख पर तथा शरीर के

अन्य भागों पर भी केश विपुल होते है। सामान्यतः एक आंख दूसरी से कुछ बडी होती है। हाथ छोटे किन्तु मांसल होते है। शरीर भी स्थूल और चौकोर आकार का होता है। इस फल वर्णन में केश विपुल कहे है किन्तु चन्द्र का केशों से कोई सम्बन्ध नही है। एक आंख बडी होना यह फल यदि चन्द्र मिथुन राशि में हो तो ही मिलता है—अन्य राशियों में नही मिलता।

विलियम लिली—यह चौकोर आकार का होता है। यह फल योग्य नही है। इस का शरीर कृश किन्तु गठीला होता है।

डा. सिमोनाइट—चन्द्र यदि शुभ हो तो वह व्यक्ति व्यवहार में कुशल, शास्त्रीय विषयों में रुचि रखनेवाला, होता है। नई नई चीजों में आनन्द लेने की तथा उन का संशोधन करने की प्रवृत्ति होती है। निवास-स्थान बदलने की स्वाभाविक इच्छा होती है। चंचल और सिर्फ वर्तमान की ही चिन्ता करनेवाला होता है। डरपोक और खर्चीला होता है। शान्तिप्रिय और संसार की चिन्ताओं से मुक्त होना चाहता है। चन्द्र यदि अशुभ हो तो वह व्यक्ति बदमाश, आलसी, काम करने का द्वेष करने-वाला, मदिरापान में रत, भिखारी जैसी रहनसहन में आनन्दित होनेवाला, असंतुष्ट, और भविष्य की कोई चिन्ता न करनेवाला होता है।

मेरे विचार—भारतीय आचार्यो ने जो स्वभाव वर्णन किया है वह प्रायः ठीक है। सिर्फ वृद्ध स्त्री के साथ रममाण होना वह एक फल अनुभव में नही आता। चन्द्र का पूरा स्वभाव चौथे प्रकरण में विस्तार से स्पष्ट किया है। विशेष इतना है कि चन्द्र के स्वामित्व के लोग घरबार में मग्न होते है। पैसे के बारे में बहुत चिकित्सा करते है। आगे कोई बडी विपत्ति आई तो जरूरत होगी इस विचार से सदा हीं पैसे का संग्रह करने की प्रवृत्ति होती है। इस विषय में ये सदा ही चिन्ता करते रहते है। कम मेहनत कर के ज्यादा धन प्राप्त करने की विशेष इच्छा होती है। ये स्वभाव से आनन्दी, ललित साहित्य की रुचि होनेवाले, लोगों से कम मिलते जुलते, बहुत बोलनेवाले होते है। इन्हीं में काव्य, नाटक,

उपन्यासों के लेखक भी हो सकते है। कुछ स्वार्थी और दूसरों के सुखदुख के बारे में उदासीन होते है।

मेष, तुला, वृश्चिक और मीन इन राशियों में चन्द्र के फल अच्छे मिलते है। मिथुन, सिंह, धनु इन राशियो में साधारण फल मिलते है। वृषभ, कर्क, कन्या, मकर और कुंभ इन राशियों में अशुभ फल मिलते है। वृषभ के फल अत्यंत अशुभ और वृश्चिक के अत्यंत उत्तम होते है। पुरुष राशियों में चन्द्र के लिये कुम्भ अच्छी नही है। स्त्री राशियों में मीन के फल अच्छे मिलते है।

———०———

प्रकरण छटवां

द्वादश भाव विवेचन

प्रथम स्थान का चन्द्र

गर्गाचार्य—पूर्णे शीतकरे लग्ने सुरूपो धनवान् मृदुः। असंपूर्णे तु मलिनो मंदवीर्यो भवेत् सदा ॥ गोमेषकर्कटे लग्ने चन्द्रस्थे रूपवान् धनी। जडता व्याधिदारिद्र्यं शेषर्क्षे कुरुते शशी ॥ श्वासः कासो हि जातस्य तनौ वातंभ्रमो भवेत्। अश्वादिपशुघातश्च हृदये राजचौरतः ॥

लग्न में पूर्ण (पौणिमा का) चन्द्र हो तो वह पुरुष सुन्दर, धनवान तथा कोमल होता है। वही चन्द्र कृष्ण पक्ष का अथवा शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से अष्टमी तक का हो तो वह पुरुष मलिन और दुर्बल होता है। लग्न में मेष, वृषभ और कर्क राशि में चन्द्र हो तो वह पुरुष धनवान और सुन्दर होता है। अन्य राशियों में वही चन्द्र हो तो आलसी, रोगी और दरिद्री होता है। उसे खांसी, श्वास वात और भ्रम ये रोग होते है। अश्व आदि पशुओं से अपघात की संभावना होती है। राजा और चोरों से त्रास होता है।

काशीनाथ—लग्ने चन्द्रे जडः शुद्धः प्रसन्नो धनपूरितः। स्त्रीवल्लभो धार्मिकश्च कृतघ्नश्च नरो भवेत् ॥

लग्न में चन्द्र हो तो वह पुरुष आलसी, पवित्र, आनन्दी, धनवान, धार्मिक और कृतघ्न होता है। उसे स्त्रियां बहुत प्रिय होती है।

कल्याणवर्मा—दाक्षिण्यरूपधनभोगगुणैः प्रधानः चन्द्रे कुलीरवृषभाजगते विलग्ने। उन्मत्तनीचबधिरो विकलश्च मूकः शेषे नरो भवति कृष्णतनुर्विशेषात् ॥

मेष, वृषभ और कर्क इन राशियों में लग्न में चन्द्र हो तो वह पुरुष चतुर, सुन्दर, धनवान, गुणवान, और भाग्यशाली–राजसत्ताधारी होता है। अन्य राशियो में वही चन्द्र हो तो गर्वीला, नीच, बहरा, गूंगा, विकल और विशेषतः काला होता है।

हिल्लाजातक—लग्नगश्च विधू रोगं सप्तविंशतिवत्सरे ॥ चन्द्र लग्न में हो तो सत्ताईसवें वर्ष में रोग होते है।

यवनमत—लग्न में बलवान चन्द्र हो तो वह पुरुष बहुत चतुर और धूर्त होता है। इसे स्त्रीवियोग सहना होता है। स्त्रियों द्वारा सन्मान प्राप्त होता है। यह पराक्रमी और राजवैभव पानेवाला होता है।

पाश्चात्य मत—चन्द्र लग्न में हो तो वह पुरुष घूमने फिरने का शौकीन होता है। चन्द्र चर राशि में अथवा द्विस्वभाव राशि में हो तो यह फल विशेष रूप से मिलता है। ऐसे लोग प्रवासी, अस्थिर बुद्धि के, विलासी, शान्त, दयालु, मिलनसार स्वभाव के, मोहक, डरपोक, उदार और सज्जन होते है। ये स्त्री के वश में और मित्रों के प्रिय होते हैं। इन लोगों को सामाजिक कार्य की रुचि होती है और बहुजन समाज में, खास कर नीच जाति के लोगों में, इन्हें सन्मान भी अच्छा प्राप्त होता है। लग्न का चन्द्र यदि अग्नि राशि में हो तो उस पुरुष का स्वभाव साहसी और महत्वाकांक्षी होता है। यही चन्द्र मेष राशि का हो तो स्वभाव उतावला और अस्थिर होता है। यदि इस का हर्शल से दृष्टियोग हो तब तो ये लोग कभी एक स्थान में स्थिर नही रह सकते। सर्वदा किसी न किसी झंझट में फंसे रहते है। चन्द्र यदि मकर अथवा वृश्चिक राशि में हो तो

फल अच्छे नही मिलते। ये लोग व्यसनी, नीच लोगों के सहवास में रहनेवाले, बदमाश, गन्दे, बीभत्स शब्द बोलनेवाले, और पियक्कड होते हैं। इस चन्द्र के साथ अन्य अशुभ ग्रहों का योग हो तो ये फल विशेष रूप से मिलते है। किन्तु शुभ ग्रहों का सम्बन्ध हो तो इन फलों की तीव्रता बहुत कुछ कम होती है। मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ इन राशियों में चन्द्र हो तो वह व्यक्ति अभ्यासशील, विद्वान, शास्त्रीय विषयों में रुचि रखनेवाला, वाचनप्रिय, फल ज्योतिष का ज्ञाता, भाषाओं का ज्ञान अच्छा होनेवाला, लेखक और वक्ता होता है। यह चन्द्र मीन अथवा कर्क राशि का हो तो उस पुरुष का स्वभाव वात्सल्ययुक्त, सात्त्विक, धार्मिक, लोकप्रिय, और पूज्य होता है। इसे घर, कुटुंब, खेतीबाडी इन में रुचि होती है। यह चन्द्र वृषभ राशि में हो तो वह पुरुष स्थिर, गंभीर, प्रत्येक कार्य लगन से पूरा करनेवाला, उद्यमी, धीरोदात्त, भाग्यशाली और वैभवयुक्त होता है। लग्न के चन्द्र का सामान्य फल प्रेम, शान्ति, सत्यप्रियता, सत्त्वशीलता, कलह की रुचि न होना–इस प्रकार प्राप्त होता है। जो लोग नींद में चलते है, बोलते हैं अथवा ऐसे ही कार्य करते है उन की कुण्डली में प्राय: लग्न में चन्द्र का उदय पाया जाता है।

ॲलन लिओ––लग्न में चन्द्र हो तो ग्रहणशक्ति अच्छी होती है। समझदारी और दूसरों पर प्रभाव डालने की शक्ति होतीं है। मित्र और परिचितों से सावधान रहना होता है नहीं तो उन्हीं के कहने में आने का डर होता है। किसी भी घटना का मन पर बहुत जलदी परिणाम होता है।

मेरे विचार––गर्गाचार्य के मत में पौर्णिमा का चन्द्र लग्न में हो तो रवि सप्तम में होता है इस लिये प्रथम चन्द्र और सप्तम स्थानमें रवि इन दोनो का इकठ्ठा फल मिलता है। पाश्चात्य ज्योतिषियों ने प्रतियोग अशुभ माना है। सिर्फ ॲलन लिओ इसे शुभ मानता है। पुरुष राशि में पूर्ण स्थिती में हो तो वह व्यक्ति रूपवान और मृदु होती है। किन्तु धनवान होना यह फल योग्य नही है। क्यों कि चन्द्र धन का कारक नहीं है। यह फल सिर्फ

वैद्यनाथ---ने ही कहा है। गंदा और मंदवीर्य ये फल मेरे खयाल से शनि के है, चन्द्र के नही है। अन्य अशुभ फल कहे है वे स्त्री राशियों के है। घोडे से भय यह फल कुछ अजीब ही है। राजा के घर चोरी करना इस फल का भी कुछ अनुभव नही आता।

काशीनाथ---ने जो फल कहे है उन में आलसी और कृतघ्न होना ये स्त्री राशि के और अन्य पुरुष राशि के है।

कल्याणवर्मा---ने मेष, वृषभ और कर्क इन राशियों में चन्द्र के फल अच्छे कहे है। अन्य राशियों में जो बुरे फल बतलाए है उन में बहरा, गूंगा, अंगहीन इन फलों का अनुभव नही आता। वर्ण काला होना इस फल का अनुभव मेष, मकर और कुंभ राशियों में आता है।

हिल्लाजातक---ने २७ वें वर्ष में रोग होना यह फल कहा है। यह स्त्री राशि में योग्य है। इस वर्ष की उपपत्ति अच्छी मिलती है क्यों कि महाभ्रमण पद्धति से चन्द्र को फिर लग्न में आने के लिये २७ वर्ष लगते है। इस का अनुभव देखना चाहिये।

यवनमत---के अनुसार स्त्री का वियोग सहना पडता है। यह फल विचार करने योग्य है। वृषभ लग्न में इसका अनुभव अधिक आता है। अन्य लग्नों में कम आता है।

पाश्चात्य---मत में वृश्चिक लग्न के चन्द्र के फल बहुत अशुभ कहे है किन्तु वे वैसे नही मिलते। अकेले चन्द्र से निद्राभ्रम भी नही होता। निद्राभ्रम के उदाहरण स्वरूप एक कुण्डली देखिये।

जन्म तारीख २९-१०-१८९० इष्ट घटी २९-४२ अक्षांश २१॥ रेखांश ७८

इस व्यक्ति का विवाह नही हुआ। एक फर्म मे नौकरी है। बचपन से ही इसे नींद में बोलने, चलने और काम करने की आदत है। ग्रंथकर्ता के पास यह रहता था उस समय इस का अनुभव आया। सुबह से ले कर
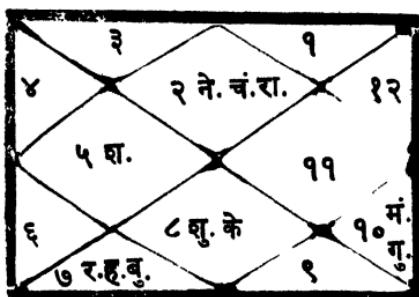
जो कुछ भी किया हो और वह कितना भी गोपनीय हो, यह नींद में सब बोल देता था। इस की नींद में चलने की आदत प्रयत्न से छुडाई किन्तु बोलने की आदत नही छूटी क्यों कि लग्न में चन्द्र के साथ नेपच्यून भी भ्रम निर्माण करनेवाला ग्रह है।

ॲलनलिओ ने जो फल कहा वह पुरुष राशियों में योग्य है।

मेरा अनुभव—मेरे अनुभव का विशेष भाग पाश्चात्य मत के फल-वर्णन में आ ही गया है। यह चन्द्र मेष, सिंह और धनु में हो तो वे व्यक्ति स्थिर, कम बोलनेवाले, और कार्यकर्ता होते है। इन्हें कामेच्छा तीव्र होती है। इन्हे अधिक हलचल पसंद नही होती। प्रकृति क्षीण होती है। क्रोधी और पैसे के विषय में बेफिक्र होते है। धनु राशि में यह चन्द्र हो तो संसार सुख कम मिलता है। यह चन्द्र वृषभ, कन्या अथवा मकर में हो तो वे लोग खुद को बहुत विद्वान और होशियार समझते और बतलाते है किन्तु इन्हें समय पर चार लोगों के बीच आगे आने का साहस नही होता। वृषभ लग्न के चन्द्र के फलस्वरूप संसार सुख कम मिलता है। विवाह नही होता और हुआ तो भी संसार सुख बहुत समय तक नही मिलता। मध्यम आयु में पत्नी की मृत्यु होती है। ये स्वभाव से दुष्ट और परस्त्रियों में आसक्त होते हैं किन्तु ये गुण प्रगट नही होते। यह चन्द्र मिथुन, तुला अथवा कुम्भ में हो तो वे नेता होने के लिये कोशिश करते है। किसी भी कार्य में आमंत्रण मिलना चाहिये ऐसी इच्छा होती है। अपना फायदा न होते हुए भी ये दूसरों का नुकसान करना चाहते है और स्वार्थी होते है। यह चन्द्र कर्क, वृश्चिक अथवा मीन में हो तो वे

अपने ही व्यवहार में संतुष्ट होते है। दूसरों के व्यवहार में हांथ नही डालते। ये स्वार्थी और दूसरों में कलह लगानेवाले होते है। सामान्यतः लग्न के चन्द्र के फलस्वरूप कुछ झूठ बोलने की इच्छां होती है। व्यवहार-ज्ञान नही होतां। अनिश्चित और अविश्वसनीय बर्ताव होता है। इनपर अधिक अवलम्बित रहना अच्छा नही होता क्यों कि इनके वर्तन में समय समय पर बहुत परिवर्तन होता है। एक को वे कहेंगे कि वे पूर्व की ओर जा रहे है। दूसरे को पश्चिम व तीसरे को दक्षिण दिशा बताएगे और खुद उत्तर की ओर जाएंगे। इस प्रकार अनिश्चित वर्तन होता है। यह अनिश्चितता किसी आन्तरिक हेतु के कारण नही होती, स्वाभाविक ही होती हैं। लग्न के चन्द्र से स्वभाव सनकी होता है।

धनस्थान में चन्द्र

जयदेव—सुतसौख्यान्नसुकुटुम्बयुतः शशिनि प्रपूर्णवपुषि द्रविणे। लघु-जठराग्निधनबुद्धियुतो विकले कलावति वदति बुधाः। इस स्थान में चन्द्र पूर्ण हो तो पुत्रसुख, अन्नसुख और कुटुम्ब अच्छा मिलता है। यही चन्द्र क्षीण हो तो अग्निमांद्य होता है तथा बुद्धि और धन भी कम होता है।

विद्यारण्य—चन्द्रोऽपि धनस्थाने क्षीणोऽपि शुभवीक्षितः सदा कुरुते। पूर्णार्जितार्थनाशं निरोधमपि धान्यवित्तस्य॥ इस स्थान में चन्द्र क्षीण हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो भी पैतृक सम्पत्ति का नाश होता है और नई सम्पत्ति प्राप्त होने में रुकावट आती है।

जातकरत्न—धने चन्द्रे धनी लोके दृष्टिभिर्वा विलोकिते। भगिन्या-स्तस्य कन्याया द्रव्यनाशोऽपि जायते॥ इस स्थान में चन्द्र हो अथवा उस की दृष्टि हों तो वह व्यक्ति धनी होता है। उस की बहिन अथवा कन्या से धन का नाश होता है।

हिल्लाजातक—तस्मिन्नेव करोतीन्दुः द्वितीयश्च न संशयः। धनस्थान के चन्द्र से २७ वें वर्ष में धनलाभ होता है।

यवनमत—इस चन्द्र के फलस्वरूप वह व्यक्ति धनवान, मिष्टभाषी, लोक प्रिय, विजयी और बलवान होता है यह मित्रगृह में, उच्च अथवा स्वक्षेत्र में हो तो इस का फल बहुत ही उत्तम मिलता है।

पाश्चात्य मत—यह चन्द्र बलवान और शुभ सम्बन्धित हो तो सम्पत्ति सुख अच्छा मिलता है। ऐसे व्यक्ति को विविध वस्तुओं के संग्रह का बहुत शौक होता है। वह विजयी और धन संग्रह करनेवाला होता है। यह चन्द्र उच्च गृह में हो तो विपुल धन मिलता हैं। स्त्रियों से अच्छी मदद मिलती है। सार्वजनिक कार्यो में भाग ले कर विजयी होता है। यह चन्द्र वृश्चिक या मकर में हो तो बहुत बुरे फल मिलते है। इस से सम्पत्तिसुख में व्यत्यय आता है। निस्तेज होते है। स्वभाव खर्चीला होता है। हानि के मौके बार बार आतें है। रिश्तेदारों से बहुत तकलीफ उठानो पडती है। प्रवास में अपयश मिलता है। वृश्चिक के चन्द्र से अपने ही हाथ से अपना नुकसान होता है। यह चन्द्र यदि अमावस्या का हो तो कितनी भी सम्पत्ति हो. आयु में किसी न किसी समय धन के विषय में तकलीफ अवश्य होती है। विदेश में प्रवास करने से भाग्योदय हो सकता है। सार्वजनिक संस्थाओं के सम्बध से भाग्योदय होता है। साम्पत्तिक स्थिति में समुद्र के ज्वारभाटे के समान बहुत स्थित्यन्तर होते रहते है। इसी लिए सार्वजनिक हित के कार्यो में अथवा जनसमाज को उपयोगी ऐसी वस्तुओं के व्यवहार में लाभ होता है। धनस्थान के चन्द्र से विशेषत: विवाहित स्त्रियों से होनेवाले लाभ और हानि का बोध होता है।

मेरे विचार—धनस्थान से धन अर्थात सम्पत्ति के विषय में विचार किया जाता है। धन शब्द से नगद रुपये, जेवर, शेअर आदि का ही बोध होता है कि उस में स्थावर इस्टेट भी शामिल करनी चाहिये यह एक प्रश्न है। विलीयम लिली ने इस विषय में अपना मत इन शब्दों में दिया है। इस स्थान से व्यक्ति की इस्टेट अथवा धन का विचार होता है। उस की सम्पत्ति, मालमिलकियत, जंगम इस्टेट लोगों को दिया हुआ कर्ज, कानूनी व्यवहार में फायदा, नफा, नुकसान अथवा खराबी, इन सब बातों का द्वितीय स्थान से विचार होता है (इन्ट्रोडक्शन टु एस्ट्राॅलजी पृ. २९)

इसलिये स्थावर इस्टेट का और पैतृक सम्पत्ति का विचार मेरे मतसे द्वितीय स्थान से ही करना चाहिये। इसका विचार कोई लोग चतुर्थ स्थान से भी करते हैं। इस के विपरीत उदाहरण के लिये निम्न कुण्डली देखिये। जन्म शके १८०७ पौष वद्य ५ रविवार रात्रि को २-४०। वृश्चिक लग्न, जन्म तारीख २५-१-१८८६।
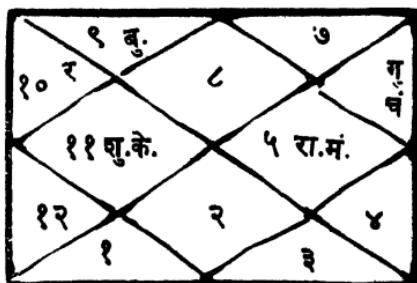
यह गरीब घर में उत्पन्न होकर कोटधाधीश के द्वारा गोद लिये गये। पिता का सुख अच्छा नही मिला। माता को वैधव्य प्राप्त हुआ। इस ने तीन विवाह किये। किन्तु सन्तान प्राप्त नही हुई। एक पत्नी कुछ पागल सी हुई है। स्थावर इस्टेट कोई पौन करोड की मिली किन्तु सब नष्ट हुई। अब फिर गरीब है। इस कुण्डली में धनेश गुरु वक्री है और लाभ-स्थान में चन्द्र के साथ है। धनस्थान में रवि अथवा मंगल हो तो स्थावर इस्टेट बिलकुल नही रहती, फिर चतुर्थ स्थान में कितने ही शुभ ग्रह बलवान हों। इस पर से भी प्रतीत होता है कि स्थावर इस्टेट का विचार धनस्थान से ही करना चाहिये।

जयदेव—ने इस स्थान में पुत्रसौख्य का फल किस प्रकार कहा है यह समझ में नहीं आता। शायद पंचम स्थान से यह स्थान दसवां है इस विचार से ये फल कहे हों। अन्नसौख्य और कुटुम्ब सौख्य का विचार ठीक है। किन्तु कुटुम्ब में यहां पत्नी और सन्तान को छोड कर अन्य कुटुम्बीयों का विचार करना चाहिये। क्षीण चन्द्र के फल में अग्निमांद्य होना, धन और बुद्धि कम होना ये फल कहे है। ये क्षीण चन्द्र के फल स्त्री राशि में और पूर्ण चन्द्र के फल पुरुष राशि में मिलते है।

विद्यारण्य— का कहा हुआ फल धनस्थान में चन्द्र क्षीण हो और वह स्त्री राशि में हो तो मिलता है। इस के उदाहरणस्वरूप एक कुण्डली देखिये। जन्म ता. १८–३–१९०५ इष्ट घटी १३–१६ मुंबई। मिथुन लग्न अंश ३–२५।
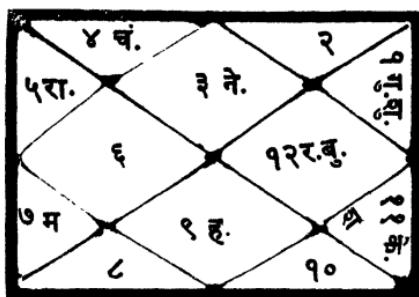
इस व्यक्ति के पिता ने कोई डेंढ लाख की इस्टेट प्राप्त की थी। इन ने उस में वृद्धि तो की ही नही, उलटे सब समाप्त कर दिया। धन स्थान में पूर्ण चन्द्र हो कर भी सब इस्टेट नष्ट हुई।

जातकरत्न—के मत का अनुभव देखना चाहिये। मुझे ऐसा कोई अनुभव देखने को नही मिला।

हिल्लाजातक—का फल पुरुष राशि में मिलता है। वह भी उच्च वर्गो में नही मिलेगा। क्यों कि इन दिनों में उच्च वर्ग के लोगों में धनार्जन का आरम्भ कम आयु में नही होता। हीन वर्गो में यह फल मिलता है।

यवनजातक—के सब फल पुरुष राशियों के है।

पाश्चात्य मत—में बहुत सा भाग योग्य प्रतीत नही होता अनुभव देखना चाहियें।

मेरा अनुभव—इस विषय में एक प्रधान तत्त्व पहले ही स्पष्ट करना जरूरी है कि चन्द्र स्थान फल का नाश करता है। इस लिये धनस्थान में किसी भी राशि का चन्द्र हो, पूर्वार्जित सम्पत्ति का नाश अवश्य होता है

और खुद के श्रम से प्राप्त सम्पत्ति से ही निर्वाह करना पडता है। सरकारी ऑफिस अथवा प्राइवेट कंपनियों के नोकर, रेलवे, म्युनिसिपालिटी आदि के कर्मचारी इत्यादि मामूली दर्जे के लोगों की कुण्डलियों में धनस्थान का चन्द्र देखा है। इस के कोई दुष्परिणाम नही हुये। इन्हें सुख से पेनशन मिलती है अन्नवस्त्र की कमी नही होती। किसी दूसरे के कुटुम्ब की व्यवस्था की जिम्मेदारी निभानी पडती है। धनस्थान के चन्द्र से दूसरे लोगों के कार्य अच्छें होते है। यह चन्द्र वृषभ अथवा कर्क में हो तो धनप्राप्ति में बहुत कठिनाई होती है। स्थिरता जलदी प्राप्त नही होती। मकर और कुम्भ में यह चन्द्र हो तो तकलीफ कम होती है। कन्या व वृश्चिक में उस से भी कम तकलीफ होती है अन्य राशियों में शुभ फल मिलते है। इस चन्द्र से बडे उद्योगों की ओर प्रवृत्ति होती है। बुद्धि का प्रभाव अच्छा पडता है। जैसे कि कल्याण वर्मा ने कहा है—यह मधुर किन्तु कम बोलता है। (नरोऽल्पप्रलापकार:।) इस गुण का वकीलों को बहुत उपयोग होता हैं। न्यायाधीश को मधुर किन्तु अधिकारयुक्त वाणी से अपना मत समझा देने की कुशलता इस से प्राप्त होती है। इस चन्द्र का फल डाक्टरों को भी अच्छा मिलता है। चन्द्र जिन रोगों का कारक है उन का इलाज ये अच्छी तरह कर सकते है। इस से अच्छी कीर्ति मिलती है। चन्द्र की हानि वृद्धि होती है किन्तु नियमित रूप से होती है। इसी प्रकार रहनसहन और खानपान नियमित होता है और व्यवसाय अच्छा चलता है और यश प्राप्त होता है।

तीसरे स्थान में चन्द्र

जातकरत्न—भ्रातृस्थानगते चन्द्रे भ्रातृसौख्यं समादिशेत्। निरोगी भ्रातरौ द्वौच भगिनीत्रयमेव च॥ तीसरे स्थान में चन्द्र हो तो भाई बहनों का सुख अच्छा मिलता है। दो भाई और तीन बहनें होती है। सब नीरोग होते है।

वागेश्वर—यदा विक्रमे चन्द्रमा विक्रमेश: सुशील: सुलीलो भवेत् कुण्डलक्ष्म्या। तपस्वी समो धर्मधीरो दयालुस्तथा स्त्री कुधर्मा ध्रुवं पूर्ण-

बिम्बे ।। तृतीय में पूर्ण चन्द्र हो तो वह पुरुष पराक्रमी, शीलवान, थोडे ही लाभ से प्रसन्न होनेवाला, तपस्वी, समदृष्टि, धार्मिक, धैर्यवान, दयालु और धार्मिक स्त्री का पति होता है।

हिल्लाजातक---तृतीय: पंचमे वर्षे बंधुलाभकर: शशी । तृतीय स्थान में चन्द्र हो तो पांचवें वर्ष में बन्धु प्राप्त होता है।

यवनमत---यह पुरुष बलवान, संतोषी और सदाचारी होता है।

महेश---हिंस्र: सगर्व: कृपणोऽल्पबुद्धिर्भवेज्जनो बन्धुजनाश्रयश्च । दयाभयाभ्यां परिवर्जितश्च द्विजाधिराजे सहजे प्रसूतौ ।। तृतीय स्थान में चंद्र हो तो वह पुरुष हिंसक, गर्वीला, कंजूस, बुद्धिहीन, आप्तसम्बंधियों के आश्रय से रहनेवाला, निर्दय और निर्भय होता है।

पाश्चात्य मत---प्रवास की रुचि होंती है। छोटे प्रवास बहुत होते है। शास्त्रीय और गहन विषयों की रुचि होती है। व्यवसाय में बारबार परिवर्तन होता है। अजीब तरह की रुचि होती है। अनिश्चयी स्वभाव होता है। यह चन्द्र बलवान हो तो भाईबहनों का सुख अच्छा मिलता है। पडोसियों से सम्बन्ध अच्छे रहते है और उनसे लाभ होता है। २८ वें वर्ष के करीब बहुत प्रवास करना होता है। कीर्ति और प्रसिद्धि का आरम्भ होता है और सत्कृत्य किये जाते है।

मेरे विचार---उपर्युक्त मतों में जातकरत्न का मत पुरुष राशि के लिये उपयुक्त है। महेश का मत स्त्री राशि के लिये ठीक है। हिल्लाजातक का मत योग्य है। चन्द्र महाभ्रमण में पांचवें स्थान से गुजरता है उस समय अर्थात पांचवें वर्ष भाई या बहन का जन्म होना स्वाभाविक ही है।

पाश्चात्य मत---में व्यवसाय बदलना, अजीब रुचि, और अनिश्चयी स्वभाव यह फल कहा वह कुम्भ राशि में उपयुक्त है। अन्य फल स्त्री राशि के है।

मेरा अनुभव—तृतीय स्थान के चन्द्र का विशेष अनुभव मेरे देखने में नही आया। एक ही विशेष अनुभव है कि इस चन्द्र के फल स्वरूप भाई नही होते। हुये भी तो बचपन में ही उनकी मृत्यु होती है और मृत्यु नही हुई तो उन से अच्छे सम्बध नही रहते। बहनों से अवश्य सुख मिलता है। ये लोग कम बोलनेवाले होते है। मिलनसार स्वभाव नही होता। दूसरों की झंझट में पडना नही चाहते। प्रवास और माता का सुख कम मिलता है। स्त्रीसुख में नित्य ही बाधा आती है। इस तृतीय स्थान में रवि हो तो बहने विधवा होती है अथवा उन्हें संसार सुख नही मिलता अथवा मृत्यु होती है अथवा वंध्यापन होता है। इस के फल से भाई अथवा बहन की संतति की मृत्यु होती है।

चतुर्थ स्थान में चन्द्र

महेश—जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धि कृष्यंगनावाहनसूनुसौख्यम्। प्रसूतिकाले कुरुते कलावान् पातालसंस्थो द्विजदेवभक्तिम्॥ चतुर्थ स्थान में चन्द्र हो तो पानी से सम्बन्धित पदार्थो से धनप्राप्ति होती है तथा खेती, स्त्री, वाहन, संतान इन का सुख अच्छा मिलता है। देव और ब्राह्मणों की भक्ति भी होती है।

वैद्यनाथ—विद्याशीलसुखान्वितः परवधूलोलश्चतुर्थे विधौ॥ ज्ञानी, शीलवान, सुखी किन्तु परस्त्रीलोलुप होता है।

नारायणभट्ट—वयस्यादिमे तादृशं नैव सौख्यम्। प्रारम्भिक आयु में बहुत सुख नही मिलता।

सारावली—बन्धुपरिच्छेदबान्धवविरोधी। बन्धुओं से वियोग अथवा विरोध होता है।

बागेश्वर—संपूर्ण घर प्राप्त होता है।

यवनमत—नये घर की प्राप्ति होती है।

हिल्लाजातक—चतुर्थग: पुत्रलाभं द्वाविंशे वत्सरे ध्रुवम् । चतुर्थ के चन्द्र के फलस्वरूप २२ वें वर्ष पुत्रलाभ होता है ।

यवनमत—यह पुण्यवान, उदार, सत्ताधीश, मलिनचित्त, विद्वान, पंडित और भाग्यवान होता हैं ।

पाश्चात्य मत—इस चन्द्र से घर, जमीन, खेती इन विषयों में सुख प्राप्त होता है । यह चर राशि में हो तो बारबार घर बदलना पडता हैं । इस व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन बहुत होते है । माता से विरासत में सम्पत्ति मिलने का योग होता है । माता के कारण भाग्योदय होता है । और उस पर भक्ति भी होती है । इस व्यक्ति के जीवन का उत्तरार्ध बहुत सुख पूर्ण होता हैं । इसे चौपाये वाहनों का सौख्य अच्छा मिलता है । इसे सुख की अभिलाषा बहुत होती है और वह अपने शरीर को हृष्टपुष्ट करना चाहता है । खानों से इसे अच्छी आय होती है । यह चन्द्र बलवान हो तो विवाह से धन प्राप्ति, भाग्योदय और इस्टेट मिलने का योग होता है ।

मेरे विचार—महेश ने पानी से धनप्राप्ति होना यह फल कहा वह कर्क, वृश्चिक और मीन राशि में मिलता है । अन्य फल पुरुष राशि के है ।

सारावली—के अनुसार बन्धु का वियोग होना यह फल हैं वह वृषभ और मकर राशि में मिलता है । वैद्यनाथ ने शीलवान होना और परस्त्री-लोलुप होना ऐसे परस्पर विरोधी फल बतलाये ये दोनों एक ही राशि में नही मिल सकते ।

नारायण भट्ट—का फलवर्णन योग्य है । जीवन के पूर्वार्ध में कष्ट और उत्तरार्ध में सुख यह फल खास कर मेष, सिंह, धनु वृषभ, कन्या, मकर इन राशियों में मिलता है एक उदाहरण देखिये । 'क्ष'—जन्म ८–१२–१८७८ माध्यान्ह, स्थान अक्षांश १६-४१ रेखांश ७४-४८ ।
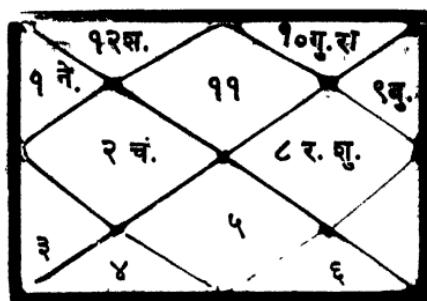
इन्हें बचपन से ही मातापिता का सुख नही मिला। जन्मभूमि में घरबार और कुछ खेतीबाडी थी। पहला विवाह बचपन में ही हुआ। चौवीसवें वर्ष एम्. ए. की उपाधि प्राप्त की और कुछ समय तक शिक्षक रहे। पहली पत्नी की मृत्यु २८ वें वर्ष हुई। उसे एक दो सन्तान भी हुई थी। दूसरे विवाह के बाद जीवन में एकदम परिवर्तन हुआ। शिक्षाक्षेत्र का सम्बन्ध छूटकर अधिकार पद प्राप्त हुआ। कुछ काल उस का अनुभव लेने के बाद वह पद छोडना पडा। फिर शहर में अभ्यास कर के वकील हुए। इस व्यवसाय में काफी धन मिला किन्तु अब तक जीवन में स्थिरता नही थी। फिर कुछ समय के बाद एकदम बडा अधिकार प्राप्त हुआ किन्तु इस का भी थोडी ही देर से त्याग करना पडा। अब स्वस्थ है। वृषभ के चन्द्र के फलस्वरूप इन्हें जीवन के पूर्वार्ध में बहुत मानसिक कष्ट हुये और उत्तरार्ध में स्वस्थता मिली।

जागेश्वर—के मत में 'सम्पूर्ण घर' का क्या अर्थ है यह स्पष्ट नही होता। यवनमत में नया घर प्राप्त होना यह फल कहा है। इस के दो अर्थ हो सकते है। एक तो नए नए घरों में रहने का योग और दूसरे नए घर बनवाने का योग होना। मेरे विचार से नया घर बनवाना यही फल यहां योग्य होगा। यह योग पुरुष राशि में अधिक मिलता है।

हिल्लाजातक—के मत का अनुभव नही आता।

यवनमत—में चतुर्थ के चन्द्र के इतने अच्छे फल बतलाए है वे योग्य प्रतीत नही होते। इस में उदार चित्त और मलिनचित्त दोनों विशेषण

दिये है वे एकही राशि में मिलना सम्भव नही है। इन में जो अच्छे फल है वे पुरुष राशि के है।

पाश्चात्य मत---के कई फलो का अनुभव नही आता। खानों के व्यवहार में फायदा यह फल चतुर्थ में चन्द्र किसी भी राशि में हो तो भी नही मिलता। मध्यप्रदेश, बिहार, मैसूर, गोआ, हैदराबाद इन प्रदेशों में खानो का व्यवसाय होता है। किन्तु वहां के लोगों के चतुर्थ में चन्द्र हो भी तो उन का इस व्यवसाय की ओर ध्यान नही जाता। चतुर्थ में शनि बलवान हो तो अवश्य खानों से फायदा होता है। खेती से फायदा होना यह फल वृषभ, कन्या, मकर इन राशियों में मिलता है। माता के कारण भाग्योदय होना इस फल का अनुभव वर्तमान परिस्थिति में आ सकता है क्यों कि इन दिनों स्त्रियां भी सुशिक्षित होकर धनार्जन करने लगी है। माता से अच्छे सम्बन्ध रहना तथा विवाह के बाद भाग्योदय होना यह फल पुरुष राशियों में मिलता है।

मेरा अनुभव---यह चन्द्र मेष, सिंह अथवा धनु में हो तो पूर्वार्जित इस्टेट का त्याग करना पडता है। माता जीवित रहती है। किन्तु उस के प्रति मन साफ नही रहता। वृषभ, कन्या, मकर, वृश्चिक इन राशियों में यह चन्द्र हो तो न तो पूर्वार्जित इस्टेट मिलती है, न खुद की हो सकती है। मिथुन अथवा कुम्भ में यह चन्द्र हो तो अपने कष्ट से इस्टेट मिलती है किन्तु कायम नही रहती। कर्क, तुला, मीन इन राशियों में यह चन्द्र हो तो इस्टेट मिलती हैं और उस की वृद्धि भी होती है। इस स्थान के चन्द्र का सर्व साधारण फल यह है कि बचपन में ही माता अथवा पिता की मृत्यु होती है और उन से सुख नही मिलता। वे जीवित रहे तो उन से मनमुटाव होता है। इन व्यक्तियों को ३२ वें वर्ष तक स्थैर्य प्राप्त नही होता। उस के बाद भाग्योदय होता है। विवाह के बाद कुछ स्थिरता प्राप्त होती है। इन्हें पेटेंट दवाइयां, इत्र, तेल, पाउडर आदि वस्तुओं के निर्माण अथवा व्यापार में अच्छा फायदा होता है।

पंचम स्थान में चन्द्र

गर्ग—पंचमे रजनीनाथः कन्यापत्यमपुत्रकम् । क्षीणः पापयुतो वापि जनयेच्चंचलां सुताम् ।। पंचम में चन्द्र हो तो कन्याएं होती हैं, पुत्र नही होते । यह चन्द्र क्षीण अथवा पापग्रह से युक्त हो तो यह कन्या चंचल होती है ।

काशीनाथ—सुते चन्द्रे सुताढयश्च रोगी कामी भयानकः । कृत्रिमैः पौरुषैर्युक्तो विनयी च भवेन्नरः ।। पंचम में चन्द्र हो तो पुत्रप्राप्त होते है, रोग होते है, कामेच्छा अधिक होती है और वह व्यक्ति भयानक होता है । यह कृत्रिम पौरुष से युक्त और विनयशील होता है ।

हरिवंश—सुधीरः सुशीलः सुवित्तः सुचित्रः सुदेहः सुगेहः सुनीतिः सुगीतिः । सुबुद्धिः सुवृद्धिः सुपुत्रो नरः पुत्रगेहेऽत्रिपुत्रे ।। पंचम में चन्द्र हो तो धैर्य, शील, धन, चित्र, शरीर, घरबार, नीति, संगीतादिकला, बुद्धि, वृद्धि और पुत्र ये सब अच्छे होते है ।

हिल्लाजातक—पंचमे शत्रुवर्षे च वह्निना पीडितो भवेत् पंचम में चन्द्र हो तो छठवें वर्ष अग्नि की बाधा होती है ।

यवनमत—यह व्यक्ति रूपवान, तेजस्वी, वाहनयुक्त, सावधान और सुशील होता है । इसे राजनैतिक कार्यों में अच्छी सफलता प्राप्त होती है ।

पाश्चात्य मत—इस चन्द्र से व्यक्ति चैनबाज और खुशदिल होता है । इसे स्त्री और बच्चे बहुत प्यारे होते है । इस के बच्चे सुन्दर होते है । वह वैभव और आनंद से युक्त होता है । यह चन्द्र बलवान हो तो सट्टा और जुंआ इन में बहुत लाभ होता है । यह द्विस्वभाव राशि में हो तो जुडवा संताने होती है । पंचम स्थान यह स्त्री स्थान का लाभस्थान है इस लिए यहां चन्द्र हो तो विवाहित स्त्री से लाभ और भाग्योदय होता है । यह चन्द्र दूषित हो तो अनिष्ट फल देता है । ऐसा व्यक्ति मलिन चित्त का और कष्टयुक्त होता है । इसी से असफलता, निराशा और मन

की अस्थिरता ये फल मिलते है। इस चन्द्र पर शनि की दृष्टि हो तो वह व्यक्ति हंसमुख किन्तु ठगानेवाला होता है। बोलने की चतुरता से आप्तों को ठग कर वह धन प्राप्त करता है। यह चन्द्र प्रसव राशि में हो तो काफी सन्तति होती है। यह मंगल से युक्त हो तो साहस की ओर प्रवृत्ति होती है। यह बलवान हो तो सन्तान भाग्यशाली होती है।

मेरे विचार—गर्गाचार्य के मत से कन्याए अधिक होना यह फल है वह वृषभ, कन्या, मकर इन राशियों में मिलता है। पुत्रसंतति नही होती ऐसा कहा है वह ठीक नही है। ऐसे योग में एक तो भी पुत्र अवश्य होता है किन्तु बहुत देरी से होता है। ४२ वें वर्ष के आगे पुत्र होने का योग होता है। यह चन्द्र मिथुन, तुला अथवा कुम्भ में हो तो पुत्र सन्तति होना मुश्किल ही होता है। प्रायः कन्याएं ही होती है, पुत्र नही होता। कर्क, वृश्चिक, मीन तथा मेष, सिंह, धनु इन राशियों में यह चन्द्र हो तो पहले पुत्र, फिर कन्याए, बाद में फिर पुत्र इस प्रकार सन्तति होती है। **काशीनाथ** के मत में कृत्रिम पौरुष यह फल कहा उसका अर्थ स्पष्ट नही होता। यह चन्द्र मिथुन, तुला या कुम्भ में हो तो नपुंसकत्व की सम्भावना होती है। यही कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो क्रियाशीलता अथवा सामर्थ्य न होते हुए ही सिर्फ डींग हांकने का स्वभाव होता है।

हरिवंश—में सब अच्छे फल बतलाए है ये पुरुष राशि में मिलते है। तीन पुत्र होना यह फल कर्क, वृश्चिक और मीन राशि में मिल सकता है।

हिल्लाजातक—में अग्नि बाधा का फल बतलाया वह प्राप्त होने के लिये चन्द्र मेष, सिंह और धनु में से कोई राशि में होना चाहिये और उस पर मंगल की दृष्टि चाहिये।

यवनमत—का अनुभव पुरुष राशियों में आता है।

पाश्चात्य मत—में जो शुभ फल कहे है वे पुरुष राशि के है और जो अशुभ फल कहे है वे स्त्री राशि के है।

मेरा अनुभव––यह चन्द्र मेष, सिंह अथवा धनु में हो तो शिक्षा कम होती है। इन में एकाध ही ग्रेजुएट अथवा वकील होता है। वृषभ, कन्या अथवा मकर में यह चन्द्र हो तो भी शिक्षा अच्छी नही होती। इंटर-मीजिएट के बाद रुकावट होती है। कदाचित यह रुकावट दूर हुई तो बी. एस्सी. अथवा एम्. एस्सी तक शिक्षा प्राप्त होती है। ये लोग म्युनिसि-पालिटी, बैंक, रेलवे और डाकतार विभाग में बहुतायत से होते है। पंचम के चन्द्र से जनता में आगे आना सम्भव नही होता। अपनी नौकरी और घरबार में ही सन्तोष होता है। कर्क, वृश्चिक, मीन इन में यह चन्द्र हो तो वकील, डाक्टर जैसा अच्छा पद प्राप्त होता है। इन्हें लोकप्रिय होने की बहुत इच्छा होती है किन्तु वह सफल नही होती। डाक्टरों को इस में अच्छा यश मिलता है। यह चन्द्र मिथुन, तुला, कुम्भ में हो तो कम बोल कर काम अधिक करना, धन का लोभ, यह फल मिलता है। इन व्यक्तियों को धन के लिये स्त्री सौख्य का नाश हुआ तो भी उस की परवाह नही होती। इस स्थान से सन्तति का विचार करते समय पति की कुण्डली के साथ साथ पत्नी की कुण्डली भी देखना जरूरी है। सिर्फ पति की कुण्डली से कहे हुए सन्तान विषयक फल का अनुभव कई बार नही आता। पंचम का चन्द्र उच्च, नीच अथवा दूषित हो तो एक कन्या के संसार सुख का नाश होता है वह या तो विधवा होती है अथवा व्यभि-चारी होती है। उस में कोई शारीरिक व्यंग भी हो सकता है जिस से उस का विवाह ही नही होता।

छठवें स्थान में चन्द्र

गर्गाचार्य––लग्नात् षष्ठस्थिते चन्द्रे मृदुकायः स्मरामलः। अनेकारि-र्भवेत् तीक्ष्णारिष्टः स्यात्मृत्युरेव च ॥ लग्न से छठवें स्थान में चन्द्र हो तो शरीर बहुत कोमल होता है, कामेच्छा तीव्र होती है, शत्रु बहुत होते हैं और मृत्यु के समान घोर पीडा होती है।

काशीनाथ––षष्ठे चन्द्रे वित्तहीनो मृदुकायोऽतिलालसः। मन्दाग्नी-स्तीक्ष्णदृष्टिश्च पापबुद्धिर्भवेन्नरः। यह निर्धन और लोभी होता है। इस की भूख मन्द, दृष्टि तीक्ष्ण और बुद्धि पापी होती है।

आचार्य---रिपुगेऽरियुक्तरतीक्ष्णोऽलसो मृदुरतिर्मृदुरिद्धवह्निः ।। स्त्री उपभोग के समय यह मृदु होता है और इस की भूख प्रदीप्त होती है ।

जीवनाथ---सुखं मातुः स्वल्पं प्रभवति गदानामविरतिः ।। माता का सुख बहुत कम मिलता है ।

जयदेव---अल्पात्मजवान् रिपुस्थे ।। इसे पुत्र कम होते है ।

वसिष्ठ---चन्द्रः करोति विकलं विफलं प्रयत्नम् ।। इस के सारे प्रयत्न अधूरे होते है और विफल होते है ।

जातकमुक्तावली---यदा सोमे क्रूरदृष्टौ न सुखं मातुलस्य च । तस्य वंशोद्भवः कोपि गतोऽदेशान्तरे मृतः ।। इस चन्द्र पर पापग्रह की दृष्टि हो तो मामा का सुख प्राप्त नही होता । उस के वंश का कोई पुरुष विदेश मे मरता है ।

शम्भुहोराप्रकाश---षष्ठे चन्द्रे पापवीक्षिते कन्यापत्योऽथ मातुलः । मातृष्वसा मृतापत्या रंडा देशान्तरे गता ।। इस पर पापग्रह की दृष्टि हो तो मामा को कन्याएं ही होती हैं । इस की मौसी के सन्तान की मृत्यु होती है अथवा वह विधवा होती है अथवा उसे विदेश में जाना पड़ता है ।

नारायणभट्ट---मातृशीलो न तद्वत् ।। यह मातृभक्त नही होता ।

वैद्यनाथ---अल्पायुः स्यात् क्षीणचन्द्रेऽरिसंस्थे । पूर्णे जातोऽतीव भोगी चिरायुः ।। यह चन्द्र क्षीण हो तो वह अल्पायुषी होता है । यह पूर्ण चन्द्र हो तो दीर्घायुषी और भोगवान होता है ।

हिल्लाजातक---षष्ठे च प्रमिते वर्षे चांगपीडा च मृत्युवत् ।। छठवें वर्ष में मृत्यु के समान पीडा होती है ।

ज्योतिषकल्पतरु---वातश्लेष्मादिके चन्द्रे विद्वेषो बान्धवैः सह । नृपचौरोद्भवाः पीडाः षष्ठं रोगभयंकरम् ।। इस चन्द्र से बन्धुओं के साथ झगडा होता है । राजा और चोरों से तकलीफ होती है । भयंकर रोग होते है ।

यवनमत—यह हमेशा परेशान, रोगी, कुरूप, अशक्त किन्तु कामातुर होता है। इस चन्द्र के फलसे निर्दयता, क्रोध और निष्ठुरता प्राप्त होती है।

पाश्चात्य मत—इस चन्द्र से शरीर सौख्य अच्छा नही मिलता। इस से रोग बढते है। स्त्रियों से दुख पहुंचता है। यह चन्द्र यदि शुभ हो तो छोटे मोटे फायदे होते है। यह वृश्चिक में हो तो वह पियक्कड होता है। इस का धन बेंकार खर्च होता है। व्यवसाय में मुश्किलें बहुत आती है। शत्रु बहुत होते है। कानूनी मामले में हर बार अपयश आता है। इस स्थान के शुभ चन्द्र के फल बहुत कम मिलते है। इसे नौकरी में सफलता मिलती है। कुछ अधिकारपद मिलने का भी योग होता है यह चन्द्र वृषभ राशि में हो तो यह योग होता है। यह चन्द्र द्विस्वभाव राशि में हों तो फेफडों के रोग, कफ, क्षय आदि होते है। यह स्थिर राशि में हो तो अर्श, भगंदर और मूत्रकृच्छ इन में से कोई विकार होता है। वृषभ का चन्द्र यहां हो तो कण्ठ का रोग, खांसी, श्वास नलिका में दाह होना ये विकार होते है। यह चन्द्र चर राशि में खासकर कर्क में हो तो पेट के और जठर के रोग–पचनक्रिया में गडबडी होना आदि–पैदा होते है। खास कर बचपन में प्रकृति बहुत अस्वस्थ होती है। इस चन्द्र के फलस्वरूप नौकरों से बहुत तकलीफ होती है–वे कायम नही रह सकते।

मेरे विचार—इन शास्त्रकारों के फल प्रायः समान है। इन में जो अशुभ फल है वे स्त्री राशि में प्राप्त होते है और अच्छे फल पुरुष राशि में मिलते है।

मेरा अनुभव—इस स्थान का चन्द्र स्त्री राशि का हो तो कफ, सांस ये रोग होते है और रक्त दूषित होता है। यह वृषभ, कन्या या मकर राशि में हो तो रक्त दूषित होकर गरमी, परमा जैसे रोग होते है। इसे दिन में एक ही नथुनी से सांस लेना पडता है। रात को भोजन के बाद सांस बंद हो जाती है। नथुनी भर आती है। इसे किसी भी कार्य में प्रयत्न कर के थक जाने पर जब वह निराश हो जाता है तब कहीं सफलता मिलती है। इस योग की स्त्रियां दाइन का काम अच्छा करती है और

रोगी की सेवाशुश्रूषा भी सहज रूप से करती है। यह चन्द्र मेष, सिंह या धनु में हो तो ये गुणधर्म मिलते है। डाक्टरों की कुण्डली में यह योग बहुत उत्तम होता है। ये गरीब रोगियों के लिए बहुत दयालु होते है। अपने पैसे खर्च कर के भी रोगियों के प्राण बचाना चाहते है। रोगियों के प्राण बचाना यही अपना कर्तव्य समझते है और इस में पैसे न भी मिलें तो उन्हें उस का खेद नही होता। इस चन्द्र से स्वयंपाक में प्रवीणता प्राप्त होती है। हरेक की अलग रुचि होती है। इस चन्द्र का एक गुण कुछ विलक्षण है। कोई इस व्यक्ति का अकारणही नुकसान करे तो भी ये उसे शासन करने के लिए प्रयत्न नही करते। किन्तु इन के आत्मा की शक्ति इतनी अधिक होती है कि ये जिस का बुरा चाहें उसे तुरंत वैसा फल मिलता है। इस चन्द्र से शरीर में किसी भी रोग का प्रवेश होने पर वह बहुत देर तक रहता है। मेष, सिंह, धनु इस राशियों में यह चन्द्र हो तो प्रकृति कुछ सुदृढ होती है। वृषभ, कन्या अथवा मकर में हो तो तापदायक होती है क्यों कि वृषभ में हो तो यह अष्टमेश होता है, कन्या में हो तो चतुर्थेश होता है और मकर में हो तो व्ययेश होता है। यह वृश्चिक में हो तो धनेश होता है और मीन में हो तो दशमेश होता है इस लिए यह योग भी अनिष्ट ही होता है ऐसे योग से शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कष्ट होते है, अपमान, शत्रुत्व और बेइज्जत होती है। आम तौर पर षष्ठ के चन्द्र के फल अच्छे नही होते। पुरुष राशियों मे सिर्फ कुछ अच्छे फल होते है।

सातवें स्थान में चन्द्र

काशीनाथ—चन्द्रे च सप्तमे जातो दुःखी कष्टी च वंचकः। कृपणो बहुवैरी च जायते पारदारिकः॥ चन्द्र सातवें स्थान में हो तो वह दुःखी, कष्टी, ठग, कंजूस, परस्त्रियों में आसक्त और बहुत शत्रुओं से युक्त होता है।

जयदेव—ईर्ष्युः सदम्भो मदनातुरोऽस्वो नयांगहीनोऽस्तगते सुधांशौ॥ यह ईर्ष्यालु, दाम्भिक, कामातुर, निर्धन, अधर्मी और किसी अवयव से हीन होता है।

बृहद्यवन—नरो भवेत् क्षीणकलेवरश्च धनेन हीनो विनयेन चन्द्रे ॥ इसका शरीर क्षीण होता है। यह निर्धन और उद्धत होता है।

नारायणभट्ट—धनित्वं भवेदध्ववाणिज्यतोऽपि मिष्टभुक् लुब्धचेताः। इसे रास्तों में व्यापार करनेसे धन प्राप्त होता है। यह मीठे पकवान खानेवाला और लोभी होता है।

जोगेश्वर—क्रये विक्रये वर्धतेऽसौ विशेषात्। यह खरीदना और बेचना इस व्यवहार में अर्थात व्यापार में समृद्ध होता है।

जीवनाथ—यदा कान्तागारं गतवति मृगांके अनिवताम्। कराक्रान्तेऽकस्माद् धनमपि निजस्त्रीजनकुलात् ॥ अनंगप्राबल्यं वरनगर नारीरतिकला। प्रवीणत्वं धीरध्वनि मतिरतीव प्रभवति ॥ इसे अपनी पत्नी के सम्बन्धियों से अकस्मात धन प्राप्त होता है। वेश्याओं को प्रसन्न करने की कला होती है। धैर्य और प्रवीणता प्राप्त होती हैं।

शुक्रजातक—जामित्रे चन्द्रशुक्रौ च बहुपत्न्यो भवन्ति हि ॥ सप्तम में चन्द्र और शुक्र हों तो बहुभार्यायोग होता है।

हिल्लाजातक—सप्तमे मातृनाशं च वर्षे तिथिमिते ध्रुवम् ॥ पन्द्रहवें वर्ष माता की मृत्यु होती है।

यवनमत—यह नीरोग, धनवान, रूपवान, कीर्तिमान, यशस्वी और विख्यात होता है।

बृहद्यवनजातक—स्त्री नाशकृद् युगगुणे रविरिन्दुरेव मृत्यं च ॥ इसे पन्द्रहवें वर्ष मृत्यु के समान पीडा होती है।

पाश्चात्य मत—इस व्यक्ति को विवाह से और वारस की हैसियत से अच्छा धनलाभ होता है। इस चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो अथवा यह मित्रगृह में, स्वगृह में या उच्च का हो तो अच्छा लाभ होता है। जलपर्यटन, व्यापार, सट्टा, पानी से उत्पन्न होनेवाले पदार्थ—इनसे इसे

फायदा होता है। इस व्यक्ति का विवाह २४ से २८ वें वर्ष तक होता है। इसका प्रेम अस्थिर होता है। इसे साझीदारी के व्यापार में बहुत फायदा होता हैं। इस चन्द्र पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री के सम्बन्ध से कष्ट होते है।

मेरे विचार—उपर्युक्त मतों में काशीनाथ, जयदेव, बृहद्यवन जातक, शुक्रजातक और हिल्लाजातक इनका वर्णन स्त्री राशि में तथा नारायण-भट्ट, जागेश्वर, जीवनाथ, यवन और पाश्चात्य इनका वर्णन पुरुष राशि में ठीक मालूम होता है।

मेरा अनुभव--यह चन्द्र वृषभ राशि में हो तो दो विवाह होने की विशेष सम्भावना होती है। ऐसी स्थिति में चन्द्र भाग्येश होता है इसलिए विवाह होते ही भाग्योदय शुरू होता है और पत्नी जीवित होती है तबतक उन्नति होती है। उसकी मृत्यु होते ही एकदम अवनति होती है। व्यवसाय में स्थिरता नही रहती। नौकरी भी स्थिरता से नही होती। कई व्यवसाय और कई नौकरियां करनी पडती है। अन्य स्त्री राशियों में यह चन्द्र हो तो पत्नी कुछ सांवले रंग की, अशक्त, दुबली पतली किन्तु प्रभावी होती है। उसके केश महीन, लहरीले और छोटे होते है। वह स्वभाव से हठीली किन्तु संसार में दक्ष होती है। वह मेहमानों का आदरातिथ्य अच्छी तरह करती है। उसे संसार में कष्ट बहुत होते है। सन्तान नही होती, हुई तो उसकी मृत्यु होती है, गर्भपात होता है अथवा कन्याएं ही होती है। सन्तान विषयक कोई कष्ट नही हुआ तो शारीरिक पीडा होती है। पति की कुण्डली में भी स्त्री राशि में लग्न में अथवा सप्तम में चन्द्र हो तो वह स्त्री अपने किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए व्यभिचार को प्रवृत्त होती है। यह चन्द्र पुरुष राशि में हो तो ३६ वें वर्ष तक स्थिरता प्राप्त नही होती। कई व्यवसाय करने पडते है और घूमना फिरना बहुत होता है। लोगों में मिलना जुलना और सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना इसे प्रिय होता है। पत्नी गौर वर्ण की होती है और उसके केश विपुल और लम्बे होते है। यहां मेष, मिथुन अथवा तुला राशि हो तो उसका चेहरा कुछ लम्बाई लिए हुए और प्रभावी होता है। सिंह और धनु में चेहरा गोल,

हसमुख और बहुत सुन्दर न होने पर भी प्रभावी होता है। कुम्भ में चेहरा साधारण होता है, आकर्षक नही होता। इसका स्वभाव खिलाडी जैसा आनन्दी होता है। पति के अनुकूल, लोगों में मिल जुल कर रहने-वाली, उदार, खर्चीली, विलासी और अच्छे वस्त्रों को चाहनेवाली होती है। इस स्थान के चन्द्र से किराना, दूध, दवाइयां, मसाले, अनाज, इन चीजों का व्यापार सफल होता है। होटल, बेकरी, कमीशन एजन्ट, इन्शुरन्स एजन्ट, म्युनिसिपालिटी की नौकरी, बाजारों में चिल्लर चीजें बेचना—ये भी व्यवसाय अच्छे चल सकते है। यह चन्द्र स्त्री राशि में हो तो व्यभिचार की प्रवृत्ति होती है और पुरुष राशि में हो तो पत्नी के विषय में ही अत्यधिक आसक्ति होती है। शास्त्रकारों ने सभी राशियों में व्यभिचार यह फल कहा है। अनुभव देखना चाहिए।

आठवें स्थान में चन्द्र

काशीनाथ—अष्टमे तारकानाथो दीनोऽल्पायु: सकष्टक: प्रगल्भश्च कृशांगश्च पापबुद्धिर्भवेन्नर: ।। चन्द्र अष्टम स्थान में हो तो वह पुरुष दीन, अल्पायुषी, कष्टी, बुद्धिमान, कृश और पापी होता है।

जयदेव—सोद्विग्नचिन्तामयकार्श्यनि:स्वो भूपालचौराप्तभयोऽष्टमेऽब्जे यह उद्विग्न, चिन्तातुर, दरिद्री, कृश तथा राजा और चोरों से भय होने-वाला होता है।

उदयभास्कर—ध्रुवं नेत्ररोगी तथा शीतपीडा तथा वायुरोगा: शरीरे भवेयु:। क्षणं नीयते तस्य मूर्च्छा क्षण स्याद्यदा मृत्युगश्चन्द्रमा वै जनानाम्। नेत्ररोग, शीत की पीडा, वायुरोग और क्षण क्षण में मूर्छा ये अष्टम के चन्द्र के फल है।

आर्यग्रन्थकर्ता—कृष्णपक्षे दिवा जात: शुक्लपक्षे यदा निशि। तदा षष्ठाष्टमश्चन्द्रो मातृवत् परिपालक: ।। कृष्णपक्ष में दिन को जन्म हुआ हो अथवा शुक्ल पक्ष में रात को जन्म हुआ हो और चन्द्र छठवें या आठवें स्थान में हों तो वह माता के समान परिपालन करता है।

वैद्यनाथ---रणोत्सुकस्त्यागविनोदविद्याशील: शशांके सति रन्ध्रयाते ।। यह कलह के लिए उत्सुक, उदार, विनोदी तथा विद्याव्यासंगी होता है ।

हिल्लाजातक---अष्टमो दिवसे वर्षे तन्मिते हायने मृतिः । अष्टम में चन्द्र हो तो आठवें मास में अथवा आठवें वर्ष में मृत्यु होता है ।

बृहद्यवनजातक---हिमगुः षडब्दे नाशम् । इस चन्द्र से छठवें वर्ष में नाश होता है ।

यवनजातक---यह सदा रोगी, दु:खी, क्रोधी, दुराग्रही, निर्दय और दुर्जनों द्वारा पीडित होता है । इसे देश त्याग करना पडता है । यह चन्द्र पापगृह में अथवा पापग्रह से युक्त हो तब तो ये अशुभ फल निश्चय से मिलते है ।

पाश्चात्य मत---इस चन्द्र के फल स्वरूप मृत्युपत्र द्वारा अथवा वारिस के अधिकार से अथवा विवाह के द्वारा विशेष लाभ होता है । चन्द्र उच्च का अथवा स्वगृह में हो तो ये लाभ होते है । वह पापग्रह से युक्त हो तो ये लाभ नही मिलते ।

मेरे विचार---काशीनाथ और जयदेव इनने प्रगल्भ बुद्धि यह एक ही अच्छा फल कहा है---बाकी सब अशुभ फल दिए है । प्रगल्भ बुद्धि और पापबुद्धि ये दोनों फल एक राशि में नही मिल सकते । इसलिए प्रगल्भ बुद्धि यह फल पुरुष राशि में और बाकी अशुभ फल स्त्री राशि में मिलते है ऐसा मानना चाहिए । जयदेव के कहे हुए सब फल स्त्री राशि के ही है । जयदेव ने और बृहद्यवनजातककर्ता ने राजा से अथवा चोरों से भय ऐसा फल दिया है । दरिद्री पुरुष को चोरों का भय नही हो सकता । इस लिए अनुमान होता है कि अष्टम के चन्द्र के फल स्वरूप धनलाभ अवश्य होता है । तभी राजा अथवा चोरों का भय हो सकेगा । अथवा किसी रियासत में दरिद्री पुरुष की पत्नी सुंदर हो तो उसे भी राजा का भय हो सकता है । उदयभास्करकर्ता के कहे हुए फल स्त्री राशि

में मिलते है । अब आर्यग्रन्थकार का मत देखिए । अष्टम में चन्द्र होते हुए कृष्ण पक्ष में दिन को जन्म हुआ हो तो सूर्य नवम से लेकर लग्न तक के किसी स्थान में हो सकता है । यही जन्म शुक्ल पक्ष में रात को हुआ हो तो रवि धनस्थान से सप्तमस्थान तक किसी स्थान में होगा । यह योग दीर्घायु देता है, अल्पायु नहीं । वैद्यनाथ के दिए हुए फल पुरुष राशि के है । हिल्लाजातक और बृहद्यवनजातक के फल--अर्थात अल्पायु होना— चन्द्र अमावस्या में हो अथवा रवि के निकट हो तो मिलते है ।

मेरा अनुभव--इस स्थान में मेष, सिंह, धनु इन राशियों में चन्द्र हो तो किसी न किसी मार्ग से धन मिलता है । उद्योग में स्थिरता और यश मिलता है । अपना फायदा होता हो तो यह उदारता भी बतलाता है । स्वास्थ्य साधारण होता है । वृद्ध होने पर पुत्रों से कष्ट होता है । यह चन्द्र मिथुन, तुला या कुंभ में हो तो पत्नी अच्छी मिलती है । इन छहों राशियों में एक फल विशेष रूप से मिलता है । पत्नी कुछ कलहशील होती है । आपत्तियों में वह स्थिर रहती है, गुप्त बातें गुप्त ही रखती है, बेकार बोलना उसे प्रिय नही होता, पति को योग्य सलाह देती है और बहुत अभिमानी होती है । पति के सिवाय दूसरे किसी पर उसका विश्वास नही होता । कर्क, वृश्चिक, धनु या मीन लग्न होकर अष्टम में चन्द्र हो तो वे लोग योगाभ्यासी; उपासक, वेदान्ती होते है । आपत्ति आने पर भी ये कर्ज नही लेते । यह चन्द्र स्त्री राशि में हो तो नौकरों द्वारा घर की सारी बातें दूसरों को मालूम हो जाती है । स्वास्थ्य अच्छा नही रहता । आयु के ४४ वें वर्ष इस्टेट का नाश होता है । इस स्थान में चन्द्र किसी भी राशि में हो, वह व्यक्ति पापकर्म से डरता है और दीर्घायु होता है ।

नवम स्थान में चन्द्र

गर्ग—मध्यभाग्यं भवेद् धर्मे पितृपक्षपरायणः । धर्मे पूर्णनिशानाथे क्षीणे सर्वं विनाशयेत् ।।

नवम स्थान में पूर्ण चन्द्र हो तो मध्यम वय में भाग्योदय होता है । किन्तु यह चन्द्र क्षीण हो तो सर्वनाश होता है ।

होरादीप—कान्ताभोगी शशांकेन । यह अनेक स्त्रियों का पति होता है ।

जयदेव—जनप्रियः सात्मजबन्धुधीरः सुधर्मवीर्द्रव्यसुतत्रिकोणे ।

यह लोकप्रिय होता है । पुत्रों और बन्धुओं से युक्त, धर्मशाली । धार्मिक, बुद्धिमान और धनवान होता है ।

हिल्लाजातक—नवमस्तीर्थयात्रां च विंशद्वर्षे च निश्चितम् । नवम के चन्द्र से २० वें वर्ष तीर्थ यात्रा होती है ।

बृहद्यवनजातक—चन्द्रे चतुर्विंशतिः फलमिदं लाभोदये संस्मृतम् । इस चन्द्र के फलस्वरूप २४ वर्ष में लाभ होता है ।

यवनमत—यह व्यक्ति तेजस्वी, धनवान, ईश्वरभक्त और प्रवासी होता है ।

पाश्चात्य मत—यह जलमार्ग से प्रवास करता हैं । धर्म और शास्त्रों का प्रेमी, अध्यात्मज्ञानी, योगी, कल्पना शक्ति से युक्त, स्थिरचित्त और अभिमानी होता है ।

पत्नी के सम्बन्धियों से और अपने आप्तजनों से इसे अच्छा साहाय्य मिलता है । किन्तु यह चन्द्र बलवान और शुभ संस्कारों से युक्त होना चाहिए । इस पुरुष को कानून, हिस्सेदारी, शास्त्रीय ज्ञान और जल पर्यटन से अच्छा लाभ होता है ।

ऊपर जो मत दिये है इनमें गर्ग और जयदेव के मत पुरुष राशियों में, खास कर मेष, सिंह और धनु में अच्छे मिलते है । मिथुन, तुला और कुंभ में अनुभव कुछ कम आता है । होरा दीप और हिल्लाजातक के मत स्त्री राशियों में अनुभव में आते हैं । बृहद्यवन जातक और पाश्चात्य मतों का अनुभव पुरुष राशियों में आता है ।

हमारा अनुभव—इस स्थान में पुरुष राशि में चन्द्र हो तो उस व्यक्ति को एक, दो या बहुत छोटे भाई होते है किन्तु बडा भाई नही होता। हुआ तो वह पृथक रहता है। इसे छोटी बहिन नही होती। स्त्री राशि के चन्द्र का फल इसके विपरीत होता है। इसे बडी बहिन नही होती और छोटे भाई नही होते। छोटी बहिनें होती है। इस स्थान का चन्द्र दूषित हो अथवा स्त्री राशि में हो तो पुत्र संतान बहुत देर से—४८ वें वर्ष के करीब होती है। कदाचित पुत्र होते ही नही। इस स्थान में सिंह राशि का चन्द्र हो तो मृत्यु के समय भाग्योदयकी स्थिति होती है। धनु राशि का चन्द्र हो तो कुल की कीर्ति बढती है। मेष राशिका चन्द्र हो तो भाग्योदय होने में मुश्किलें आती है। ये लोग सार्वजनिक कार्य में भाग लेते है और लोकप्रिय भी होते है। किन्तु इन्हें अधिकारपद प्राप्त नही होता। अधिकार प्राप्त करने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। कर्क, वृश्चिक, मीन और मेष, सिंह तथा धनु का चन्द्र हो तो वे लोग लेखक, प्रकाशक अथवा मुद्रक होते है। इन्हें पूरी शिक्षा प्राप्त होती है। समाज-शास्त्र और तत्त्वज्ञान इन विषयों के अध्यापक का पद मिल सकता है। वृषभ, कन्या और मकर का चन्द्र हो तो शिक्षा अधूरी रहती है। मिथुन, तुला और कुम्भ के चन्द्र से शिक्षा काफी रुकावटों के बाद पूरी होती है।

दशम स्थान में चन्द्र

जीवनाथ—पूर्वापत्ये प्रभवति सुखं नैव सततं। प्रथम संतान का सुख कायम नही रहता।

जयदेव—लक्ष्मी सुकीर्तिः कृतकार्यसिद्धिर्भूपेष्टता शौर्यमिहास्त्रि खेन्दौ ॥ लक्ष्मी. कीर्ति, अंगीकृत कार्य मे सफलता, राजमान्यता और शौर्य प्राप्त होता है।

जागेश्वर—सचन्द्रे च वैश्यस्य वृत्तिः प्रकल्प्या। इस स्थान में चन्द्र हो तो वैश्य वृत्ति से व्यापार में धन प्राप्त होता है।

नारायणभट्ट—पुराजातके सौख्यमल्पं करोति। पहली सन्तान का सौख्य कम मिलता है।

बृहद्यवनजातक—चंचललक्ष्मीः। इससे सम्पत्ति में चढाव उतार होते है—स्थिरता नही रहती।

हिल्लाजातक—दशमो लाभदश्चन्द्रो वर्षे रामाधिकेपि च। इस चन्द्र से २४ वर्ष में लाभ होता है।

बृहद्यवनजातक—चन्द्रस्त्रिवेदधनकृत्। इस चन्द्र से ४३ वें वर्ष में धन प्राप्त होता है।

यवनमत—यह पितृभक्त और कुटुंबवत्सल होता है। यह धनवान, विद्वान, चतुर, संतोषी और शान्त होता है।

पाश्चात्य मत—इसे विजय और संपत्ति प्राप्त होती है। ऊंचे स्त्रियों से लाभ होता हैं। लोकोपयोगी वस्तुओं के व्यापार से लाभ होता है। लोकप्रियता मिलती है। किन्तु यदि यह चन्द्र नीच राशि में हो तो अपमान और अपकीर्ति होती है। यह चन्द्र स्थिर राशि में हो तो दृढ स्वभाव होता है। वही द्विस्वभाव राशि में हो तो अल्प भाग्य का होता है। चर राशि में यह चन्द्र हो तो व्यापार में अस्थिरता होती है। इसके साथ मंगल हो तो बडा नुकसान होता है और शनि हो तो व्यवसाय में कठिनाइयां आती है।

मेरे विचार—जीवनाथ ने जो फल कहा है वह संभव नही क्यों कि दशमस्थान संतति का स्थान नही है। पंचम स्थान से यह छठवां स्थान है अतः पिता और पुत्र के संबंध अच्छे नही होते यह फल कहा जा सकेगा। पंचम से आठवां स्थान व्ययस्थान होता है। चन्द्र यदी इस व्ययस्थान का अधिपति हो और दशम में हो तो प्रथम पुत्र की मृत्यु होती है ऐसा फल कहना होगा।

जयदेव—का मत पुरुष राशियों के लिए योग्य है। चन्द्र वैश्य माना है। अनुभव से भी यही प्रतीत होता है। इस स्थान में चन्द्र हो तो व्यापारी वृत्ति होती है।

नारायणभट्ट—का मत योग्य नही है।

हिल्लाजातक—का मत योग्य है क्यों कि २४ वां वर्ष चन्द्र का स्वाभाविक वर्ष है।

बृहद्यवनजातक—के वर्षो का अनुभव देखना चाहिए।

यवनमत—का अनुभव पुरुषराशियों में आता है। स्त्री राशियों में कम अनुभव आता है।

पाश्चिमात्य मत—में नीच राशिके चन्द्र का फल अपमान और अपकीर्ति कहा है यह योग्य प्रतीत नही होता। दशम में वृश्चिक राशि में चन्द्र रहते हुए कुछ लोग उत्तम डाक्टर हुए है। डाक्टर के व्यवसायको छोडकर अन्य व्यवसायों में अवश्य मुश्किलें आई है। यह चन्द्र चर राशि में हो तो व्यापार में अस्थिरता होती है यह फल योग्य है। पाश्चिमात्यों के अन्य फल पुरुष राशियों के है।

मेरा अनुभव—इस स्थान में मेष, कर्क, तुला अथवा मकर राशि का चन्द्र हो तो बचपन में ही माता अथवा पिता का वियोग होता है। ग्रामपंचायत, म्युनिसिपालिटी आदि सार्वजनिक संस्थाओं का कारक यही स्थान है। अतः इसमें चन्द्र हो तो चुनाव में यश मिलता है और नेतृत्व प्राप्त होता है। चन्द्र से सम्बद्ध व्यवसाय सप्तम स्थान के विवरण में दिए है। उन्हीं का यहां भी विचार करना चाहिए। इस स्थान में वृषभ, कन्या अथवा वृश्चिक में चन्द्र हो तो पिता का किया हुआ कर्ज चुकाना होता है। आयु के २८ वें वर्ष से कुछ स्थिरता प्राप्त होती है। यही चन्द्र मेष, कर्क अथवा मकर में हो तो आयुभर स्थिरता बहुत कम रहती है। कई व्यवसायो में कोई कारण न होते हुए अपयश प्राप्त होता है। नौकरी में हमेशा परिवर्तन होते रहता है। इस स्थान में वृश्चिक को छोडकर अन्य किसी भी राशि में चन्द्र हो तो माता अथवा पिता का सुख नष्ट होता है और इन दोनों में जो भी रहते है उन से भी अच्छे सम्बन्ध नही रह सकते।

एकादश स्थान चन्द्र

काशीनाथाचार्य---लाभे चन्द्रे लाभयुतः ।। इस स्थान के चन्द्र से बहुत लाभ होता है। बुद्धि का विकास होता है। ऐश्वर्य, सन्मार्ग पर चलना, विनय, प्रताप और भाग्य प्राप्त होता है।

जागेश्वर---भवेन्मानयुक्तो धनैर्वाहनैर्वा तथा वस्त्ररूप्यादि कन्या प्रजा स्यात्। दृढा तस्य कीतिर्भवेद् रोगयोगो यदा चन्द्रमा लाभभावं प्रयातः ।। इसे धन, वाहन और मान, उसी प्रकार वस्त्र और चांदी ये प्राप्त होते है। इसे कन्याएं अधिक होती है, कीर्ति स्थिर रहती है और कोई रोग होता है।

गर्ग---विख्यातो गुणवान् प्राज्ञो भोगलक्ष्मीसमन्वितः। लाभ स्थानगते चन्द्रे गौरो मानववत्सलः ।। यह विख्यात, गुणवान, बुद्धिमान, लक्ष्मी और भोगोपभोगों से सम्पन्न, गौर वर्ण का और वत्सल स्वभाव का होता है।

जयदेव---मित्रार्थयुक् कीर्तिगुणरूपेतो भोगी सुयानो भवभावगेन्दो ।। यह मित्र, धन, कीर्ति, गुण भोगोपभोग और वाहनों से सम्पन्न होता है।

हिल्लाजातक---एकादशे सप्तविंशे राजमान्यं चतुष्पदे ।। इसे २७ वें वर्ष में राजमान्यता प्राप्त होती है तथा जानवरों से लाभ होता है।

नारायणभट्ट---प्रतिष्ठाधिकाराम्बराणि ।। इसे लोगों में मान, ऊंचे वस्त्र और अधिकारपद प्राप्त होते है।

बृहद्यवनजातक---अमितलाभमिन्दौ भूपात् ।। आयु के १६ वें वर्ष में राजा से बहुत धन प्राप्त होता है।

यवनमत---यह धनवान, रूपवान, उदारचित्त, निर्दोष और मधुर बोलनेवाला होता है।

पाश्चिमात्य--इसे मित्र बहुत प्राप्त होते है। लोकप्रिय होता है। संसार सुख अच्छा मिलता है। सार्वजनिक संस्था में यह नेता होता है।

मेरे विचार---सभी शास्त्रकारों ने लाभस्थान के चन्द्र के फल अच्छे ही कहे है। किन्तु ये सब फल प्रायः पुरुष राशियों में मिलते है। सिर्फ जागेश्वर नें रोगबाधा यह फल दिया है वह स्त्री राशि का है।

महात्मा गांधी और डॉ. कुर्तकोटी की कुण्डली में यह चन्द्र पुरुष राशि में है। इस चन्द्र का एक अच्छा उदाहरण मध्यप्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मंत्री डॉ. एन. बी. खरे की कुण्डली में मिलता है। इनके लाभ स्थान में मकर राशि का चन्द्र है।

जन्म ता. १६-३-१८८२ सूर्योदय के समय, बम्बई। ये पहले सरकारी डाक्टर थे। फिर वह नौकरी छोडकर नागपुर में स्वतंत्र प्रैक्टिस शुरू की। कांग्रेस के मंत्रिमंडल के ये मुख्य मंत्री हुए। लोकप्रिय और दयालु नेता के रूप में प्रख्यात हुए। व्यवसाय में हजारों रुपयों का लाभ होते हुए भी सार्वजनिक कार्य में भाग लेकर ये प्रसिद्ध हुए। नागपुर और केन्द्र की असेंब्ली में लोकनियुक्त प्रतिनिधि का स्थान इन्हें प्राप्त हुआ। इस प्रकार इस चन्द्र का बहुत ही अच्छा फल इन्हें मिला।
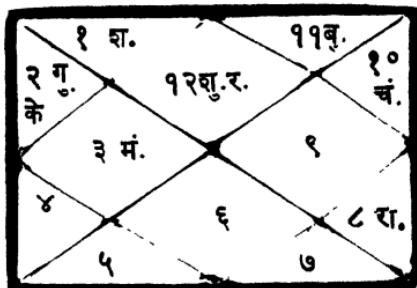
मेरा अनुभव--चन्द्र एकादश में होते हुए दिन को जन्म हुआ तो वह व्यक्ति धनवान, कीर्तिमान, लोकप्रिय, सार्वजनिक कार्य में कुशल होता है। स्त्री राशि में यह चन्द्र हो तो सार्वजनिक कार्य करते हुए भी पहला व्यवसाय बना रहता है। पुरुष राशि में यह चन्द्र हो तो व्यवसाय छोडकर सार्वजनिक कार्य होता है। इस चन्द्र का विशेष यही है कि ये व्यक्ति कितने भी श्रीमान हुए तो भी जरूरत के समय सारे ऐश्वर्य का त्याग करने की इनकी प्रबल इच्छाशक्ति होती है। इन्हें असेंब्ली आदि में स्थान प्राप्त होकर लोकोपयोगी कार्य करने का मौका मिलता है। इस स्थान के चन्द्र के फलस्वरुप पुत्र, भाई अथवा बहिन इनमें से कोई एक त्रासदायी, दुराचरणी अथवा निरुपयोगी होता है अथवा उसे शारीरिक व्यंग के

कारण सारा जीवन घर में ही बिताना पडता है। इस चन्द्र से सन्तति अथवा भाई बहिनें अधिक नही होती। बहुत हुआ तो चार पांच तक ही उनकी संख्या होती है।

बारहवें स्थान में चन्द्र

कल्याण वर्मा—द्वेष्य: पतित: क्षुद्रो नयनरुगार्तोऽलसो भवेद् विकल:। चन्द्रे तथान्यजातो द्वादशगे नित्यपरिभूत:॥ लोग इस का द्वेष करते हैं। यह पतित, क्षुद्र, आलसी, दुर्बल और पर पुरुष से उत्पन्न हुआ होता है। इसे नेत्र रोग होते है। इसका सर्वदा अपमान होता है।

जागेश्वर—वियोगी सदा चारुशीलो न मित्रैर्भवेद् वैकलो नेत्र रोगी कृशांग:। स्वयंक्षीणवीर्य: सदा क्षीणचन्द्रे भवेद् रिष्फगे पूर्णता चेत् सुशीला:॥ इस स्थान में चन्द्र हो तो पति पत्नी में अकारण ही कई बार वियोग होता है। इसका शील अच्छा होता है। बहुत मित्र नही होते। शरीर दुर्बल होता है और नेत्र रोग होतें है। यहां चन्द्र क्षीण हो तो उस व्यक्ति का वीर्य कमजोर होता है। चन्द्र पूर्ण हो तो आचरण अच्छा होता है।

नारायण भट्ट—सदा सद्व्ययो मंगले ना पितृव्यादिमात्रादितोऽन्त-र्विषादो न चाप्नोति कामं प्रियाल्पं प्रियत्वम्॥

यह सत्कार्यों में द्रव्य खर्च करता है। माता, पिता और सम्बन्धियों से मनमुटाव होता है। कामोपभोग कम प्राप्त होता है। स्वजनों पर प्रेम कम होता है।

गर्ग—व्यये शशिनि कार्पण्यमविश्वास: पदे पदे॥ इस चन्द्र के फल स्वरूप वह व्यक्ति कृपण और अविश्वासी होता है।

काशीनाथ—व्यये चन्द्रे पापबुद्धिर्बहुभक्षी पराजित:। कुलाधमो मद्यपो च विकारी जातको भवेत्॥ यह पापी बहुत खानेवाला, पराजय पानेवाला, कुल कलंकित करनेवाला, पियक्कड और रोगी होता है।

बादरायण---काणं शशी। इस चन्द्र के फलस्वरूप एक आंख कानी होती है।

वैद्यनाथ---चन्द्रे विदेशवासी। परदेश में निवास होता है।

जयदेव---हिंस्त्रोऽगहीनः सरिपुः सुहृत्सु वैषम्यकृत् स्वल्पदृगिन्दुरिःफे॥ हिंसक, किसी अवयव की कमी होनेवाला, बहुत शत्रुओं से युक्त, मित्रों से बुरा बर्ताव करनेवाला और आंखों की शक्ति मन्द होनेवाला होता है।

ज्योतिषकल्पतरु---द्रव्यक्षयं क्षुधाल्पत्वं नेत्ररुक् कलहो गृहे। इस चन्द्र से द्रव्य की हानि, भूख कम होना, नेत्ररोग और घर के झगडे ये फल प्राप्त होते है।

हिल्लाजातक---द्वादशे हानिपीडा च तृतीये वत्सरे ध्रुवम्। आयु के तीसरे वर्ष में नुकसान और दुख होता है।

बृहद्यवनजातक---चन्द्रो जलपीडनं पंचवेदम्। इससे ४५ वें वर्ष में पानी से अपघात होता है।

यवनजातक---इसे नेत्ररोग होते है। यह विरोधप्रिय, बहुत खर्चीला, दुष्ट स्वभाव का और कीर्तिहीन होता है।

पाश्चिमात्य मत---यह चन्द्र वृश्चिक अथवा मकर राशि में हो तो वह व्यक्ति बदमाश होता है। दूसरी राशियों में हो तो विजयी, सुखी और धनवान होता है। इस चन्द्र के सम्बन्ध अच्छे हो तो प्रवास से लाभ होता है। दवाइयों की दूकानों और जेल में काम करना होता है। यह चन्द्र मेष में हो तो चंचल वृत्ति का, घुमक्कड, रूपवान व बुद्धिमान होता है। वही वृश्चिक और मकर में हो तो धनहीन होता है। अन्य राशियों में धनवान और विद्वान होता है। इस स्थान में चन्द्र बलवान हो तो जमीन और खेती से लाभ होता है तथा आयु के अन्ततक सुख प्राप्त होता है। कर्क और मीन राशि में यह चन्द्र हो तो बहुत पुत्र होते है और उन पर प्रेम भी होता है। सट्टा और साहस में रुचि होती है। राजयोगी, ज्ञानी, मान्त्रिक, या शास्त्रज्ञ हो सकता है। स्त्रियों का उपभोग अच्छा मिलता है।

मेरे विचार---जागेश्वर को छोड कर अन्य सभी शास्त्रकारों ने इस स्थान के चन्द्र के फल प्राय: अशुभ ही कहे है। ये फल स्त्री राशियों के है। पुरुष राशियों में शुभ फल प्राप्त होते है। पाश्चात्य मत में वृश्चिक राशि के चन्द्र का फल बदमाश होना कहा है। इस का बिलकुल अनुभव नही आता।

मेरा अनुभव---इस स्थान के चन्द्र के कोई विशेष फल मेरे देखने में नही आए। इस से पत्नी सांवले रंग की होती है। पत्नी के ही अनुसार पति को रहना पडता है। किन्तु पत्नी का स्वभाव अच्छा होता है और दोनों बडे सुख से रहते है। इनका खर्च कम ही होता है। पत्नी आकर्षक और प्रभावी होती है। यह चन्द्र वृषभ राशि में हो तो किसी चाचा का निर्वंश होकर उसकी इस्टेट मिलने की संभावना होती है। द्विभार्यायोग होता है अथवा पत्नी से सम्बन्ध अच्छे नही रहते अथवा यह स्वयं प्रपंच नही कर सकता। इसके फल स्वरूप किसी फूफा का संसार नष्ट होता है। बह वंध्या, विधवा अथवा दरिद्री होती है। स्त्री राशि में और षष्ठ स्थान में चन्द्र हो तो मृत्यु के समय कर्ज का भार रहता है। षष्ठ के चन्द्र में चोरी की कला अच्छी तरह ज्ञात होती है। इसलिए ये लोग अच्छे डिटेक्टिव हो सकते है। द्वादश का चन्द्र कन्या राशि में हो तो पिता का किया हुआ कर्ज चुकाया जाता है। यह चन्द्र मकर मे हो तो धन बहुत मिलता है किन्तु बहुत कंजूसी होती है। कर्क, वृश्चिक और मीन में यह चन्द्र हो और उस व्यक्ति को सरकारी नौकरी मिली हो तो उसे पेन्शन बहुत दिन तक नही मिलती। यह चन्द्र मिथुन, तुला और कुम्भ में हो तो बर्ताव व्यवस्थित होता है। ये पैसे का उपयोग समझबूझकर करते है। ये विद्वान होते है किन्तु लोगों पर इनकी विद्वत्ता का प्रभाव नही पडता।

प्रकरण सातवां

महादशा विवेचन

महादशा का फल कैसें देखा जाय इसका विस्तृत विवेचन हमारे 'रवि-विचार में किया है। वही रीति चंद्रमहादशा के विषय में भी समझनी चाहिए।

जिन का जन्म नक्षत्र अश्विनी, मघा अथवा मूल है उन्हें आयु के ३४ वें वर्ष में चन्द्रमहादशा का आरम्भ होता है। भरणी, पूर्वा तथा पूर्वाषाढा इनमें से कोई जन्म नक्षत्र हो तो आयु के २७ वें वर्ष में यह दशा शुरू होती है। कृत्तिका, उत्तरा अथवा उत्तराषाढा जन्मनक्षत्र हो तो जन्म से १० वें वर्ष तक चन्द्र की महादशा होती है। मृग, चित्रा, धनिष्ठा, आर्द्रा, स्वाति, और शततारका ये जन्मनक्षत्र हो तो प्राय: चन्द्रमहादशा आयुभर आती ही नही। पुनर्वसु, विशाखा तथा पूर्वाभाद्रपदा इन जन्म नक्षत्रों में आयु के ७९ वें वर्ष इस दशा का आरम्भ होता है। पुष्य, अनुराधा तथा उत्तराभाद्रपदा ये जन्मनक्षत्र हो तो आयु के ६९ वें वर्ष यह दशा शुरू होती है। आश्लेषा, ज्येष्ठा तथा रेवती इन नक्षत्रों में जन्म हो तो आयु के ५० वें वर्ष चन्द्र, महादशा शुरू होती है।

३४ वें वर्ष शुरू होनेवाली चन्द्रमहादशा साधारणत: अच्छी होती है। भरणी, पूर्वा, पूर्वाषाढा इन नक्षत्रों की चन्द्रमहादशा उत्तम होती है। आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती इन नक्षत्रों में भी यह दशा अच्छी होती है। रोहिणी, हस्त, श्रवण इन नक्षत्रों में चन्द्रमहादशा का फल अशुभ होता है। चन्द्र ६, ८ अथवा १२ वें स्थान में होतो कृत्तिका उत्तरा, उत्तराषाढा इन नक्षत्रों में चन्द्रमहादशा मध्यम होती है। आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती इन नक्षत्रों की चन्द्रमहादशा का फल जन्मकुण्डली में चन्द्र जैसा हो उस प्रकार शुभ अथवा अशुभ होता है।

चन्द्र की महादशा का विचार करते समय शनि के साथ उस के सम्बन्ध का विचार मुख्य रूप से करना चाहिए। शनि के साथ चन्द्र का केन्द्र, प्रतियोग नवपंचमयोग अथवा साढेसाती जैसा कोई योग हो तो उसकी महादशा के फल अशुभ होते है। (शनि और चन्द्र का नवपंचम योग शुभ माना जाता है किन्तु मेरे विचार से यह योग अशुभ ही है। इस का स्पष्टीकरण मेरे 'योग–विचार' में देखना चाहिए।) इसी प्रकार राहु के योग का भी विचार करना जरूरी है।

उच्च के चन्द्र की दशा के फलों के उदाहरण स्वरूप दो व्यक्तियों की कुण्डलियां देखिये। एक 'क्ष'–जन्म ता. १२ दिसंबर १८९५ रात को ९ बजे। जन्म स्थल–अक्षांश २२–५६, रेखांश ७९–१५।

जन्म लग्न कुण्डली

लग्न ७ वें अंश में।
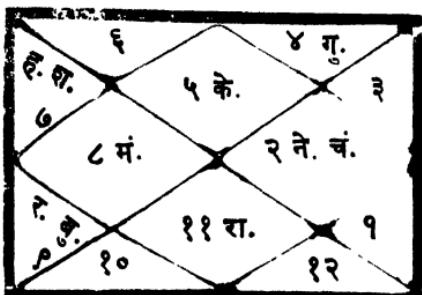
इस व्यक्ति के जन्म के बाद छठवें महीने में मां की मृत्यु हुई। छठवें वर्ष पिता की मृत्यु हुई। बारहवें वर्ष इस्टेट नष्ट हुई। अठारहवें वर्ष विवाह हुआ। २४ वें वर्ष पहली पत्नी की मृत्यु हुई और दूसरा विवाह हुआ। तीसवें वर्ष पहली संतान की मृत्यु हुई। अब हालत कुछ अच्छी है।

दूसरा उदाहरण एक लडके का है। जन्म ता. १९-१२-१९३४, मार्गशीर्ष शु. १३ मंगलवार, शक १८५६, जन्म इष्ट घटिका ५५।१२। (बुधवार के सूर्योदय के कुछ ही पूर्व)। जन्म स्थान अक्षांश १९-१२ रेखांश ७२-५०। इस कुण्डली में वृश्चिक लग्न था। बुध लग्न में, रवि और शुक्र धनस्थान में, शनि और राहु तृतीय में, हर्शल पंचम में, चन्द्र सप्तम में नेपच्यून दशम में, मंगल एकादश में तथा गुरु तुला राशि में व्यय स्थान में था। इसे जन्म से ही उच्च के चन्द्र की महादशा थी। इस लडके के जन्म के पहले ही उस के पिता की मृत्यु हो गई थी (यह Posthumus था)।

तीसरा उदाहरण किसी 'क्ष' का है, जन्म ता. १७-८-१९०२, श्रावण शु० १३, रविवार, शक १८२४, इष्ट घटिका ७।३७। जन्म स्थान अक्षांश २१-५, रेखांश ७२-५७। कन्या लग्न, धनस्थान में राहु, चतुर्थ में वक्री शनि, पंचम में चन्द्र तथा वक्री गुरु दशम में मंगल, एकादश में शुक्र तथा व्यय स्थान में रवि और बुध ऐसी इस की कुण्डली हैं। इस का जन्म संपन्न घर में हुआ। पहले ही वर्ष पिता की मृत्यु हुई। छठवें वर्ष मां की मृत्यु हुई। नौवें वर्ष विवाह हुआ। तेरहवें वर्ष एक कन्या हुई। चौदहवें वर्ष पति की मृत्यु हुई। तब से जीवन श्रीमान अवस्था में बीता। बारह लाख की इस्टेट थी।

इन उदाहरणों में पहले दो उच्च के चन्द्र के फलों के लिए दिये। तीसरे उदाहरण में गुरु के साथ चन्द्र हो तो कैसे अशुभ फल मिलते है यह बताया।

चन्द्रदशा की फलप्राप्ति का वर्णन पुराने ग्रन्थों में इस प्रकार किया है। 'आदौ भावफलं मध्ये राशिस्थानफलं बिदुः। पाकावसानसमये चांगजं दृष्टिजं फलम्॥' चन्द्र की दशा के आरम्भ में भावों के फल मिलते है। मध्यभाग में राशि के फल मिलते है। अन्तिम भाग में दृष्टि के तथा चन्द्र जिस राशि में हो उस राशि द्वारा बोधित अवयव के विषय में फल मिलते है।

सामान्य तौर पर लग्न, पंचम, नवम, दशम, एकादश इन स्थानों का चन्द्र शुभ फल देता है। द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ तथा व्यय इन स्थानों के चन्द्र के फल मध्यम होते है। इन व्यक्तियों को परस्त्री (अथवा परपुरुष) प्राप्त करने में धनव्यय करना होता है। चन्द्र अष्टम में हो तो उसकी महादशा में मां तथा पत्नी की मृत्यु, धनहानि, नौकरी छूटना आदि अशुभ फल मिलते है।

दशा के फलों के विवरण बृहत् पाराशरी, जातक. पारिजात, सारावली, सर्वार्थचिन्तामणि, मानसागरी आदि ग्रन्थों में मिलते है। यहां संक्षेप से ही वर्णन किया है। इनमे बृहत्पाराशरी और सर्वार्थचिन्तामणि का फलादेश अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है पाठकों ने अनुभव देखना चाहिये।

प्रकरण आठवां

चन्द्र कुण्डली

रवि विचार में पुत्र की कुण्डली पर से पिता का भविष्य कैसे देखा जा सकता है इस विषय में कुछ विवेचन किया है। ऐसा करने के लिये रवि कुण्डली लिखनी होती है। इसी प्रकार पुत्र की कुण्डली से माता का भविष्य भी देखा जा सकता है। ऐसा करने के लिये चन्द्र कुण्डली लिखनी होती हैं। एक उदाहरण जन्म ता. २४–४–१९३७ सुबह ११–४५ बजे। जन्म स्थान अक्षांश २१–९, रेखांश ७९–९।

लग्न कुण्डली—कर्कलग्न, धनस्थान में नेपच्यून, चतुर्थ में चन्द्र, पंचम में राहु और मंगल, सप्तम में गुरु, नवम में शनि और शुक्र, दशम में रवि बुध और हर्शल।

चन्द्र कुण्डली—तुला लग्न में चन्द्र, धनस्थान में राहु और मंगल, चतुर्थ में गुरु, षष्ठ में शनि और शुक्र, सप्तम में रवि, बुध और हर्शल, एकादश में नेपच्युन।

इस कुण्डली का विवेचन—इस लग्न में तुला राशि है और इसका स्वामी शुक्र शनि से युक्त हैं। साथ ही इस स्थान में चन्द्र है। अतः इस व्यक्ति का कद बहुत ऊंचा नही, न बहुत बौना है। मंझले कद की किन्तु आकर्षक है। आंखें तेजस्वी और दृष्टि पैनी है। वर्ण अधगोरा है। नाक सीधी है। केश लंबे है। बोलते वक्त हंसने की आदत है। क्रियाशील किन्तु शान्त व्यक्तित्त्व है। इच्छाशक्ति सुदृढ है अतः ऊपर से क्रियाशील, स्वतंत्र वृत्ति की और कभी कभी आक्रमक वृत्ति की प्रतीत होती है। किन्तु हृदय से शान्त, समझदार तथा स्नेहयुक्त है। परिवर्तन इसे प्रिय है। नई कल्पनाएं आसानी से समझती है। तुला राशि के कारण स्वभाव मधुर और कोमल है। अदब, प्रामाणिकता और न्यायप्रियता के कारण इस की सारी क्रियाएं दया, करुणा और स्नेह से ओत प्रोत होती है। स्वभाव सरल और स्पष्ट है। कभी आशावादी होती है कभी हताश भी हो जाती है। क्रोध बहुत जलदी आता है। किन्तु शान्त भी जलदी ही होती है। ऐसे लोगों की सलाह बहुत योग्य और अच्छी होती है। कानुनी व्यवसाय अथवा बीचबचाव के लिये ये योग्य होते है। क्यों कि इन के निर्णय पक्षपातरहित तथा सावधानी से लिये हुये होते है। बुद्धिमान, सारासार बिचार करनेवाली कुछ खर्चीली तथा कीडा प्रिय ऐसी इन की प्रवृत्ति होती है।

धनस्थान—इस स्थान में राहु और मंगल है अतः पैतृक संपत्ति प्राप्त नही होगी। अपने विलासों के लिये धन का संग्रह करने की दृष्टि नही होगीं। बोलना कुछ तीखा और कुटुम्बियों के साथ व्यवहार कुछ रूखासा होगा। स्वयं धन प्राप्त करने का भी यह योगी है।

तृतीय—इस स्थान का अधिपति गुरु चतुर्थ स्थान में मकर राशि में है। इस लिये भाई या बहिनें अधिक नही है।

चतुर्थ—इस स्थान का अधिपति शनि षष्ठ स्थान में है। इस स्थान में गुरु है। इस गुरु के कारण आयु के १२ वें वर्ष माता का वियोग हुआ। अपने ऐसी कोई इस्टेट नही। किन्तु अपने धन से घरबार प्राप्त करने की बहुत इच्छा है। यह इच्छा आयु के ४८ वर्ष के बाद पूरी हो सकती है। मृत्यु के समय हालत अच्छी रहेगी।

पंचम—इस स्थान का अधिपति शनि षष्ट स्थान में लग्न के स्वामी से युक्त है। अतः शारीरिक कठिनाइयों के कारण शिक्षा जलदी पूरी नही होगी। धीरे धीरे होगी। पुत्र कम होंगे, कन्याएं अधिक होंगी।

षष्ठ—इस स्थान का अधिपति गुरु चतुर्थ में है। इस स्थान में शनि और शुक्र ये दो ग्रह है। यह व्यक्ति संसार में प्रगत होती है किन्तु उस के पहले शारीरिक, आर्थिक और मानसिक कठिनाइयों का सामना करना होता है। घर के लोगों का विरोध सहते सहते ही यश मिलता है। आयु के ३६ वें वर्ष के बाद मधुमेह होने की संभावना हैं।

सप्तम—इस स्थान का अधिपति मंगल धनस्थान में स्वगृह में है। इस स्थान में उच्च रवि और बुध है। इस के दो विवाह हुये। बचपन में ही विवाह होकर एक बार विधवा हुई। फिर २४ वें वर्ष अपनी जाति के एक युवक से पुनर्विवाह किया। दूसरा विवाह रजिस्टर पद्धति से हुआ। सुप्रसिद्ध ज्योतिषी ॲलन लिओ के मत से रवि चंद्र के इस प्रतियोग के फल स्वरुप विसंवादी (inharmonious) विवाह होता है। एक प्राचीन आचार्यंने 'होराप्रदीप' इस ग्रन्थ में कहा है। सप्तमस्थौ गुरुशुक्रौ सवर्णा बहुवल्लभा। रवि भौमशनिराहू विवाहो न्यूनजातिकः॥ शेषग्रहे सप्तमस्थे मध्यजातेश्च कामिनी॥ अर्थात सप्तम में गुरु अथवा शुक्र हो तो अपनी ही जाति में विवाह होता है और पति पत्नी बहुत प्रेम से रहते है। रवि, मंगल, शनि अथवा राहु सप्तम में हो तो हीन जाति की कन्या से विवाह होता है। बुध अथवा चन्द्र सप्तम में हो तो अपने वर्ग से हीन किन्तु मध्यम वर्ग की वधू प्राप्त होती है। प्राचीन हिंदू

समाज में अनुलोम विवाह का प्रचार होने से ऐसा वर्णन किया है। किन्तु आज के युग के तरुण रजिस्टर पद्धति से विवाह कर सकते है। अनुलोम विवाह पद्धति में तलाक की व्यवस्था नही है। रजिस्टर पद्धति में व्यवस्था है। अतः अनुलोम विवाह हो सकने पर भी कई जगह रजिस्टर विवाह करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। अपने समाज में जबतक रजिस्टर पद्धति सर्व दूर प्रचलित नही होती तब तक यह फलादेश बतलाना योग्य होगा। पश्चिमी देशों में किसी को तुम्हारा विवाह रजिस्टर पद्धति से होगा ऐसा फल बतलाना हास्यास्पद होगा क्यों कि वहां सभी विवाह रजिस्टर पद्धति से होतें है। हमारे देश में इस का प्रचलन कम है इस लिये फल वर्णन कर सकते है। इंग्लैन्ड में सन १२६० से लेकर सन १८०३ तक ५४३ वर्ष तक बाल विवाह का कानून था। वधू वय ७ साल ही होना जरूरी था। उस वक्त प्रौढ विवाह का फल बतलाना अयोग्य था। सन १८१२ के बाद बाल विवाह का कानून द्वारा निषेध किया गया। इस लिये वर्तमान समय में बाल विवाह का फल बतलाना अयोग्य है। व्यवहार, काल, कानून, समाज की प्रवृत्ति इन सब परिस्थितियों को देखते हुये विवाह विषयक फल बतलाये जाते है। अतः वर्तमान समय में यदि सप्तमस्थान में पाप-ग्रह हो अथवा सप्तम का स्वामी पापग्रह से युक्त हो तो रजिस्टर पद्धति से विवाह होगा ऐसा फल बतलाना चाहिये।

सप्तम स्थान के इस फलादेश के बारे में अब कुछ और उदाहरण देते है। मध्यप्रदेश के विख्यात कानून विशेषज्ञ डाक्टर सर हरिसिंग गौर का जन्म ता. २६–११–१८६६ को सुबह ८ के समय हुआ।

जन्म कुण्डली
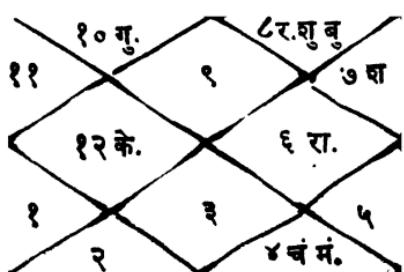
जन्मलग्न–धनु (२०अंश)

इस कुण्डली में सप्तमेश बुध और नवमेश रवि दोनों स्त्रीकारक शुक्र के साथ है तथा इन के पीछे उच्च शनि है। अतः गौर महोदय ने ख्रिश्चन स्त्री से विवाह किया।

दूसरे उदाहरण के पति पत्नियों की कुण्डलियां इस प्रकार है।

पति	पत्नी
जन्म शक १८३१ आश्विन कृ. ४	जन्म शक १८३९ आषाढ
सुबह ५–२१ (मध्य प्रदेश)	जन्मेष्टघटी ५–३२
	ता. ४–७–१९१६
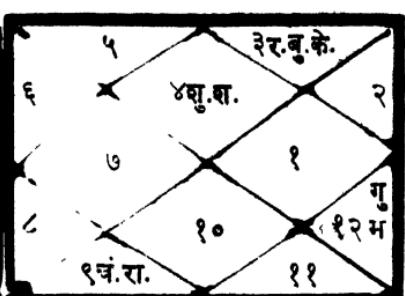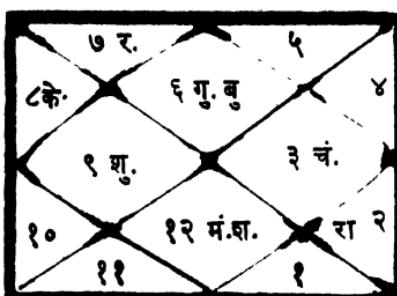
ये दोनों एकही जाति के थे। पत्नी पति से कम आयु की और कुमारी थी। अर्थात वैदिक विवाह में कोई बाधा नही थी। किन्तु इन ने रजिष्टर विवाह किया।

तीसरा उदाहरण उन पति पत्नी का है जिन की कन्या की कुण्डली से रवि विचार में रवि कुण्डली का और इस पुस्तक में चन्द्रकुण्डली का पिता और माता के फलादेश के लिये वर्णन किया है।

पति	पत्नी
जन्म शक १८३१ चैत्र कृ. ६	जन्म शक १८३५ भाद्रपद कृ. १४
जन्मेष्टघटी १६–३८ स्थान	जन्मेष्टघटी ३–२५ स्थान
अक्षांश २१–२१ रेखांश ७९–९	अक्षांश १७–२० रेखांश ७८–३०
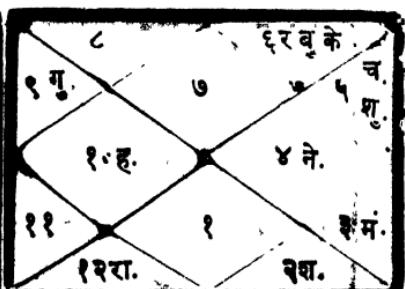
इस लडकी का विवाह सन १९२८ में हुआ किन्तु वह पहला पति जलदी ही मरने से विवाह सुख नही मिल सका। फिर इस की शिक्षा शुरू हुई। उसी के दौरान में उस की जिस दूसरे युवक से पहचान हुई उसी की यहां कुण्डली दी है। कालान्तर से इन दोनों का प्रेम बढता गया और अन्त में समाज के और घर के लोगों के विरोध को सह कर इन्हें विवाह करना पडा। यदि यह विवाह न होता तो इस लडकी का जीवनही बर्बाद हो जाता। इन में पति कीं कुण्डली में सप्तम में मंगल है तथा सप्तमेश शनि नवम में है और उस के साथ रवि तथा शुक्र है। पत्नी की कुण्डली में सप्तमेश मंगल नवम में है और उस के पीछे शनि है। इस लिये इन दोनों का इस प्रकार विवाह हुआ।

अब प्रतिलोम विवाह का उदाहरण देखिये।

पति	पत्नी
जन्मशक १८१४ आश्विन शु. २	जन्म ता. ७–९–१८९०
इष्ट घटी ५०–४० स्थान	इष्ट घटी ५–४१ स्थान
अक्षांश १८–५५ रेखांश ७२–५४	अक्षांश २२-१६ रेखांश ७३-२०
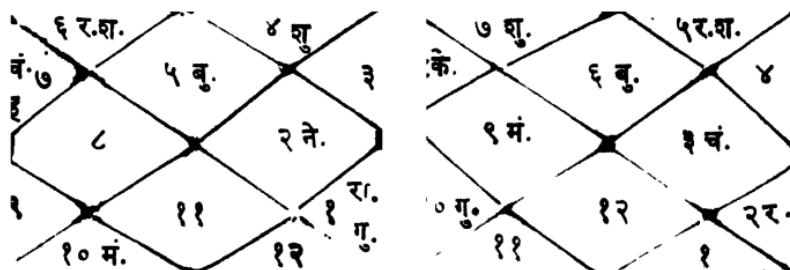
पत्नीं ब्राह्मण जाति की और पति से दो वर्ष से बडी है। पति मध्यम वर्ग का है। पत्नी की कुण्डली में सप्तमेश गुरु पंचम में नीच राशि का है और पतिकारक ग्रह रवि के साथ शनि है। इन दोनों योगों के फल स्वरूप पति हीन वर्ग का मिला। पति की कुण्डली में सप्तमेश शनि के साथ रवि है और भाग्य स्थान में गुरु है अतः पत्नी उच्च वर्ग की मिली। इन का रजिस्टर पद्धति से विवाह हुआ।

पांचवें उदाहरण की कुण्डलियां इस प्रकार है ।

पति	पत्नी
जन्म शक १८२३ आषाढ कृ. ११ ता. १३-७-१९०१ इष्टघटी ५४-४५ स्थान रत्नागिरी	जन्म शक १८३१ कार्तिक कृ. १ ता. २९-११-१९०९ इष्टघटी ५५ स्थान नासिक

पति:
३र.बु.ने, १के., ४शु., २चं., १२, ५, ११, ६मं, ८ह., १०, ७ रा., ९श.गु.

पत्नी:
८बु.र.के, ६ गु., ९, ७, ५, १० शु., ४, ११, १, ३ चं., १२श.म., २ रा
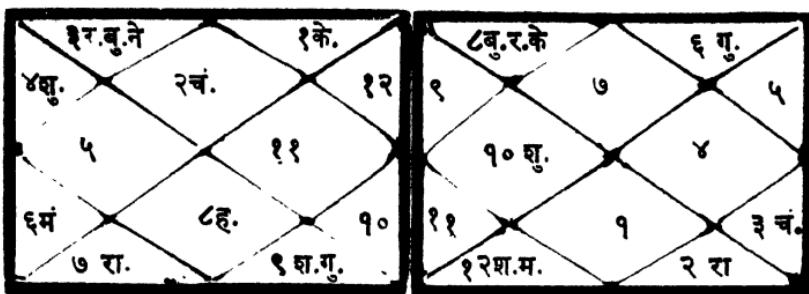
यह स्त्री चित्पावन ब्राह्मण जाति की और सुशिक्षित है । पति हीन वर्ग का और अशिक्षित है । पत्नी की कुण्डली में सप्तमेश मंगल के साथ शनि है। पति की कुण्डली में शुक्र तृतीय में है तथा भाग्येश शनि के साथ गुरु है । अतः पत्नी उच्च वर्ग की प्राप्त होने का योग है । इस लिये यह प्रतिलोम विवाह हुआ और रजिस्टर पद्धति से हुआ ।

इस प्रकार संतान की कुण्डली से मातापिता के भविष्य कथन कां वर्णन किया । विद्यार्थी इस का पूरा अभ्यास करें और अपना अनुभव बढाएं ।

यह पुस्तक जिस जगन्नियंता परमेश्वर की कृपा से पूरा हूआ उसे हम प्रणाम करते है ।

मंगल-विचार

विषयानुक्रम

प्रकरण

नागपूर प्रकाशन
[illegible]

प्रथमावृत्ती : १९५९
द्वितीयावृत्ती : १९७७

मुद्रक :
म. पां. बनहट्टी
नारायण मुद्रणालय
धंतोली, नागपूर-१२

प्रकाशक :
दि. मा. धुमाळ
नागपूर प्रकाशन,
सीताबर्डी, नागपूर-१२

मंगल-विचार

प्रकरण पहिला

प्रास्ताविक

हजारों वर्षों के इतिहास का अनुभव है कि किसी भी राष्ट्र, समाज या व्यक्ति के लिए रक्षक के रूप में एक वर्ग की जरूरत होती है। यदि यह वर्ग नही हो तो राष्ट्र या समाज के जीवन में और व्यक्तियों में अव्यवस्था फैलती है। खून, डकैत और गुंडागर्दी शुरू हो जाती है और सब जगह गडबड का वातावरण पैदा होता है। ऐसी अव्यवस्था न हो और समाज व्यवस्थित और सुखी रहे तथा अपराध करने की प्रवृत्ति समाज में न फैले इसी लिए दंडविधान (क्रिमिनल प्रोसीजर कोड) का निर्माण होता है। इसी दंडविधान के पालन के लिए पुलिस की नियुक्ति होती है। पुलिस का वह छोटासा डंडा और उसकी काली पोशाक यह सरकार की दंडशक्ति का एक प्रतीक है।

मनुष्य के शरीर का निर्माण हुआ—उसे चैतन्य प्राप्त हुआ कि उसकी सुरक्षा के लिए और वृद्धि के लिए शक्ति की जरूरत होती है। इसी प्रकार राज्य और प्रजा का गठन होकर जब राष्ट्र निर्माण होता है तब उसमें भी वृद्धि और सुरक्षा के लिए शक्ति की जरूरत होती है। मनुष्य में शक्ति न हो तो वह मृतवत् होता है, उसका कोई उपयोग नही होता। इसी प्रकार राष्ट्र में सामर्थ्य न हो तो वह राष्ट्र के रूप में अधिक समय तक नही टिक सकता। इसी लिए पुलिस और सेना का गठन करके राष्ट्र की शक्ति संगठित की जाती है।

ग्रहों के समूह में भी प्राय: ऐसी ही व्यवस्था है। सूर्य यह शरीर और आत्मा का प्रतिनिधि है और चन्द्र मन या जीव का। इसका संयोग

होने पर उन्हें जिस शक्ति की जरूरत होती है उसी शक्ति का प्रतिनिधि मंगल है। सामर्थ्य कितना भी प्राप्त हो, हाथी जैसी शक्ति क्यों न हो, उसके प्रयोग के लिए बुद्धि की जरूरत है। बुद्धि का ही प्रतिनिधि बुध है। यह बुद्धि अपक्व होती हैं। यही जब प्रगट होती है तब ज्ञान का रूप धारण करती है जिससे वह अपने स्वयं शक्ति से बहुत कार्य कर सकती है। इसी ज्ञान का प्रतिनिधि गुरु है। काम करके थक जाने पर आनंद और समाधान प्राप्त करना जरूरी होता है। थकावट दूर कर के कलाओं द्वारा आनंद देने का यह कार्य शुक्र करता है। इस प्रकार सुख से जीवन बिताने पर अन्तिम समय आता है। जीवनसमाप्ति के इस कार्य का प्रतिनिधि शनि है।

ग्रहों की इस व्यवस्था में शक्ति का प्रतिनिधि जो मंगल है उसी का इस पुस्तक में विचार करना है।

-o-----

प्रकरण दूसरा

मंगल का स्वरूप

मंगल को पृथ्वी का पुत्र कहा गया है। ग्रहों के कुटुम्ब में रवि पृथ्वी के पिता के स्थान में हैं और चन्द्र माता के स्थान में है। इस लिए मंगल में रवि और चन्द्र दोनों के गुणों का कुछ कुछ मिश्रण पाया जाता है। अब इसके विषय में शास्त्रकारों के मतों का परिचय देते है।

आचार्य---शरीरलक्षण-वक्रः नात्युच्चो रक्तगौरः। यह बहुत ऊंचा नही होता। वर्ण कुछ लाल और गौर होता है। सूर्य का लाल वर्ण और चन्द्र का गौर वर्ण इन दोनों का यह मिश्रण हुआ। सत्वं कुजः-सत्व यह इसका गुण है। क्षितिसुतो नेता-यह सेनापति है। अतिरक्तः-बहुत लाल होता है। समज्जा भौमः-मज्जा धातुपर अर्थात मस्तिष्क पर इसका अधिकार है। स्थान-अग्नि, वस्त्र-जला हुआ, धातु-सुवर्ण, ऋतु-ग्रीष्म, रुचि-कडवी इस प्रकार इसके अन्य विशेष है।

कल्याणवर्मा—चेत: सत्वं धराज:, कुमार: सेनापति:, दिशा—दक्षिण, पाप, देवता–अरुण तथा कार्तिकेय, पुरुष, वर्ण–क्षत्रिय, रुचि–कडवी, स्थान–अग्नि, वस्त्र–दृढ, धातु–सोना, दिन, ऋतु–ग्रीष्म, वेद–सामवेद, लोक–तिर्यक् लोक, इस प्रकार मंगल का स्वरूप है।

वैद्यनाथ—सत्वं भौम:, कुजो नेता, संरक्तगौर:, ताराग्रहो धरासुत:। यह ग्रह तारात्मक है। मंगल: पाप:–यह पाप फल देता है। आर:पृष्ठेनोदेति सर्वदा यह नित्य ही पिछले भागसे उदय होता है। क्ष्माजो चतुष्पदी–यह चौपाया है। कुजो भवति शैलाटविसंचरन्त:–पर्वत और जंगलों पर इसका अधिकार है। बालो धराज:–यह बाल है। आर:शाखाधिप:–यह शाखाओं का स्वामी है। वर्ण–आरक्त, द्रव्य–सुवर्ण, देवता–कार्तिकेय, रत्न–प्रवाल, वस्त्र–जला हुआ, दिशा–दक्षिण, ऋतु–ग्रीष्म, स्थान–अग्नि, प्रदेश–लंका से कृष्णा नदी तक, वर्ण–क्षत्रिय, गुण–तम, पुरुष, तत्त्व–तेज, धातु–मज्जा, रुचि–कडवी, दिन। अथोर्ध्वदृष्टिभौम:–इस की दृष्टि ऊपर होती है। शनिना महीसुत:–यह शनि के द्वारा पराजित होता है।

मंगल के बलवान होने के स्थान इस प्रकार है—आर: स्ववारनगभागदृगाणवर्गे मीनालिकुंभमृगतुंबरयामिनीषु। वक्री च याम्यदिशि राशिमुखे बलाढ्यो मीने कुलीरभवने च सुखं ददाति ॥ मंगलवार को, नवांश तथा द्रेष्काण कुण्डली में स्वगृह में हो तब, मीन, वृश्चिक, कुंभ, मकर तथा मेष इन राशियों में, रात्रि में, वक्री हो तब, दक्षिण दिशा में तथा राशि के प्रारंभ में मंगल बलवान होता है। यह मीन तथा कर्क राशियों में सुख देता है।

मंगल के अधिकार के रोग इस प्रकार है—

पीनबीजकफशस्त्रपावकग्रंथिरुग्व्रणदरिद्रजामयै:।
वीरशैवगणभैरवादिभिर्भीतिमाशु कुरुते धरासुत: ॥

अंडवृद्धि, कफ, शस्त्र तथा अग्नि द्वारा पीडा, फोडे फुन्सी आदि गांठों के रोग, व्रण, दारिद्र्य के कारण उत्पन्न हुए रोग तथा शिव के गण–भैरव आदि देवताओं द्वारा पीडा ये फल मंगल से प्राप्त होते है।

पराशर——सत्वं कुजः, नेता ज्ञेयो धरात्मजः, अत्युच्चांगो रक्तभौमो भौमः, देवता–षडाननः, भौमो नरः, भौमः अग्निः, कुजः क्षत्रियः, आरः तमः, भौमः मज्जा, भौमवारः, भौमः तिक्तः, भौमः दक्षिणे, कुजः निशायां बली, भौमः कृष्णे च बली, क्रूरः। स्वदिवससमहोरामासपर्वकालवीर्यक्रमात् श–कु–बु–गु–शु–चराद्या वृद्धितो वीर्यवत्तराः॥ स्थूलान् जनयति सूर्यो दुर्भगान् सूर्यपुत्रकः। क्षीरोपेतान् तथा चंद्रः कटुकाद्यान् धरासुतः॥ वस्त्रम् रक्तचित्रं कुजस्य। कुजः ग्रीष्मः।

गुणाकर——सत्वं भौमः, नेता भौमः, भौमः शोणः, भौमः दक्षिणः, रग्रहः कुजः, भौमः क्षत्रियः, साम्नां महीजः, भौमः नरः, भौमः सहोत्थः, भौमः स्कन्दः, वस्त्रम्–अग्निदग्धम्, भौमः कांचनम्, भौमः अग्निशाला, भौमः तिक्तम्, भौमः दिनम्, भौमः अग्निः भौमः तमः।

सर्वार्थचिंतामणि–भौमो नरपालमुख्यः, भौमः अतिरक्तः भौम–अग्नि, भौम–दक्षिण, भूसूनुः पापः, कुजात् नरेज्या, भौम–मज्जाभेद, देवस्थान, अग्नि, वस्त्र–कुजस्याग्निहतं क्लिष्टं, हिरण्यं तु धरासुतः, रक्तं चित्रं कुजस्य, ऋतु–ग्रीष्म, भूमिसुतस्य तिक्तं, दिनं कुजस्य, भौम–धातु ग्रह, ऊर्ध्वदृष्टि, सेनापतिः, कुजः, सत्वं कुजः।

जयदेव——आर–दक्षिण, कुज–सत्वं, भौम–नरः, क्षितिजं ब्रुवतेऽरण्यधारिणम्, मध्यान्हं भूमिजः, भौमः व्योमदर्शी, भौम–धातु, भौम–चतुष्पद, भौम–शेष, दक्षिणमुखः, नेता–भौमः, मंगलः–स्वामी, स्वर्णकारः क्षितेः पुत्रः, युवा कुजः, भौमः प्रकृत्या दुःखदो नृणाम्, आरः क्षत्राणां, नक्तं कालः, कुजश्च बली, देवस्थान, अग्नि, वस्त्र–वन्हिहृत, धातु–मणि, भौम–विद्रुम।

मंत्रेश्वर——चौरम्लेच्छकृशानुयुद्धभुवि दिग् याम्या कुजस्योदिता। चोर तथा नीच लोगों के स्थान, अग्नि के स्थान, युद्धभूमि, दक्षिण दिशा, ये मंगल के स्थान है। भौमो महानसगतायुधभृत्सुवर्णकाराजकुक्कुटशिवाकपिगृध्रचौराः। रसोइये, शस्त्रधारी, सुनार, बकरा, मुरगा, सियार, बन्दर, गीध तथा चोर इन पर मंगल का अधिकार है। देवता–गुह, अग्नि,

प्रदेश–अवन्ति, रत्न–विद्रुम, वस्त्र–अग्निदग्धं कुजस्य, रस–भूमिसुतस्य तिक्तम्, चिन्ह–क्षितिभुवः स्याद् दक्षिणे लांछनम्–शरीर के दाहिने भाग पर कुछ विशेष चिन्ह होता है। कंटकनगो भौमार्कजो–कांटेदार वृक्षों पर मंगल का अधिकार है। इसकी आयु सोलह वर्ष की है।

पुंजराज—देवता–गुह, सत्वं भौमः, सैन्यनेता भौमः, वर्ण–रक्ततर, भूमि अधिपति, दिशा–दक्षिण, वेद–सामवेद, स्वभाव–क्रूर, वर्ण–क्षत्रिय, नरः कुजः, कटुको कुजार्कौ–कडवी रुचि, काल–वासर (दिन), पुंलोकेशौ कुजादित्यौ–यह मृत्युलोक का स्वामी है। (एक अन्य मत–तिर्यग्लोकस्य सूर्यारौ–यह पाताल लोक का स्वामी है।)

विलियम लिली–अनुक्रम में मंगल का स्थान गुरु के बाद है। इसका आकार छोटा है और यह अग्नि जैसे चमकीले वर्ण का दिखता है। यह ६८६ दिन तथा २२ घंटों में राशिचक्र की परिक्रमा पूरी करता है। इसका उत्तर की ओर अधिकतम शर ४–३१ होता है और दक्षिण की ओर ६–४७ होता है। यह ८० दिन वक्री होता है तथा २ या ३ दिन स्थिर होता है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन इन तीन जलराशियों पर इसका पूर्ण अधिकार है। यह पुरुष प्रकृति का, रात्रि के समय का, उष्ण, रूखा, अग्नि जैसा ग्रह है। यह झगडे, कलह तथा विरोध का प्रेरक है।

अब इन शास्त्रकारों के मतों का विवेचन करेंगे।

सत्व—इस ग्रह में शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार का सामर्थ्य है। मल्ल, पुलिस, सैनिक, इंजीनियर, ड्राइवर आदि लोगों में जो शारीरिक सामर्थ्य जरूरी होता है उस पर मंगल का अधिकार है। दूसरा मानसिक सामर्थ्य उन लोगों में होता है जो राष्ट्र के उदयकाल में बडे बडे नेता होते है। उन पर भी मंगल का अधिकार होता है। ये नेता क्रान्ति चाहते है और उसकी सफलता के लिए प्राणों तक की बाजी लगा देते है। विपत्ति से सामना करने वाले, हठी तथा आग्रही स्वभाव के इन लोगों का मानसिक सामर्थ्य बहुत अधिक होता है। भारत में १९०८ से जो क्रान्तिकारी हुए उन पर प्रायः मंगल का ही अधिकार था।

नैसर्ग—(सेनापति)—सभी शास्त्रकारों ने इस ग्रह के जो वर्णन दिए हैं उनके अनुकूल ही यह सेनापति पद है।

धातु—प्रायः सभी शास्त्रकारों ने इस ग्रह के अधिकार में मज्जा धातु कही है। मेरे विचार से मज्जा धातु मस्तिष्क में होने के कारण इस पर बुध का अधिकार होना चाहिए। चरबी पर गुरु का स्वामित्व और मांस पर मंगल का स्वामित्व मानना उचित है। इस मत के अनुकूल वर्णन सिर्फ मंत्रेश्वर ने किया है—इस ग्रह का मांस और अस्थियों पर स्वामित्व है।

स्थान—मंगल का स्थान अग्नि कहा है। सिर्फ आंखों से देखा जाय तो यह ग्रह अग्नि के समान ही लाल दिखता है इसी पर आधारित यह कल्पना है। मंगल पर से ही किसी व्यक्ति के रसोईघर का विचार किया जा सकेगा। चोर और नीच लोगों के स्थान यह जो वर्णन है यह गलत मालूम होता है। इन लोगों के स्थानों पर शनि का अधिकार होना चाहिए। युद्ध का स्थान यह वर्णन ठीक है। युद्धभूमि पर मंगल का निवास होता है। जिस पक्ष की ओर मंगल प्रबल होगा उसी का युद्ध में जय होता है।

वस्त्र—कल्याणवर्माने दृढ तथा पराशर ने लाल रंग के रंगबिरंगे वस्त्र ऐसा वर्णन दिया है। अन्य शास्त्रकारों ने जला हुआ वस्त्र कहा है। लोगों में भी कहावत प्रचलित है कि सोमवार का वस्त्र फटता है, मंगलवार का जलता है और गुरुवार तथा बुधवार का अच्छा होता है। इसी लिए मंगलवार को नया वस्त्र नहीं पहनना चाहिए ऐसा माना जाता है। मेरे विचार से जले हुए वस्त्र के बारे में यह मत ठीक नहीं है। यहां कल्याणवर्मा का ही मत योग्य प्रतीत होता है। पुलिस, सैनिक आदि जिन लोगों पर मंगल का स्वामित्व है उनके वस्त्र मोटे और बहुत समय तक टिकनेवाले ही होते है।

धातु—सुवर्ण—मंगल और सोना दोनों का रंग कुछ लाल और गोरा है यह देखकर इस धातु पर मंगल का अधिकार माना है। किन्तु यह मत योग्य नहीं है। सोने को आजकल के राष्ट्रीय तथा राजकीय व्यवहार में

बहुत महत्त्व का स्थान प्राप्त हुआ है तथा राजकीय व्यवहारों पर रवि का अधिकार है। अतः सुवर्ण पर भी रवि का ही स्वामित्व मानना चाहिए। युद्ध के समय लोहे को महत्त्व प्राप्त होता है। तोपें आदि सभी शस्त्र लोहे के ही बनते है। युद्ध और शस्त्रों पर मंगल का अधिकार है। अतः मंगल के अधिकार में लोहधातु ही योग्य है।

ऋतु--ग्रीष्म-बरसात के दिनों से पहले इस ऋतु में गरमी की बहुत तकलीफ होती हैं अतः इस पर मंगल का अधिकार मानना ठीक है।

दिशा--दक्षिण-पुराणों में यम को दक्षिण दिशा का स्वामी माना है। यम के समान ही मंगल भी जीवहानि कराता है इस लिए यह दिशा वर्णन ठीक है।

शुभाशुभ--इसे पापग्रह माना है। यह स्वभावतः दाहकारक है इस लिये इसे पाप फल देनेवाला माना गया। यह एक पक्ष है। इसके शुभ फल भी मिलते है इसका अच्छी तरह विचार नही किया गया है।

देवता--गुह, कार्तिकेय, स्कन्द अथवा षडानन ये शिवजी के पुत्र के नाम है। पुराणों में कहा है कि ये देवताओं के सेनापति थे तथा इन्होंने तारकासुर का वध किया था। इनके समान मंगल को भी सेनापति कहा गया है इसलिये ये इस ग्रह के देवता हुए।

लिंग--यह पुरुष ग्रह है।

वर्ण--क्षत्रिय-यह युद्ध का कारक है अतः इसे क्षत्रिय माना गया।

रुचि--आचार्य और पुंजराज ने इस ग्रह के अधिकार में कडवी रुचि मानी है किन्तु यह ठीक प्रतीत नही होता। अन्य शास्त्रों में तीखी रुचि मानी है वह योग्य है। मिर्च का वर्ण भी मंगल के समान ही लाल होता है। अतः तीखी रुचि पर ही उसका स्वामित्व मानना उचित होगा।

काल--यह दिन का अधिपति है।

वेद--चार वेदों में इसे सामवेद का अधिकारी कहा है। किन्तु सामवेद गायन का वेद है उससे इस ग्रह का सम्बन्ध स्पष्ट नही होता।

मंगल का स्वर या ध्वनि पर अधिकार होता है–गायन पर नही। वस्तुतः इसे अथर्ववेद का कारक मानना चाहिए।

लोक–कुछ शास्त्रकारों ने इसे तिर्यक लोक अर्थात पाताल का स्वामी माना है। इसे यमलोकका स्वामी मानना उचित है। कुछ शास्त्रकारों ने मृत्युलोक कहा है वह साधारणतः ठीक है क्यों कि मृत्युलोक के समान ही मंगल भी भौतिक तत्त्वों का (मटीरियलिस्टिक) ग्रह है।

उदय—इसका उदय पृष्ठ अर्थात् पिछले भाग से होता है।

वर्ग—चतुष्पाद–यह क्रूर ग्रह है अतः कुत्ता, सियार, भेड़िया, बिल्ली, चीता, शेर, लाल मुंह के बन्दर आदि क्रूर जानवरों पर इसका अधिकार है। इसी लिए इसे चतुष्पाद कहा है।

संचारस्थान—कुछ शास्त्रकारोंने पर्वत, अरण्य यह स्थान कहा है तो दूसरों ने इसे आकाशगामी माना है। इनमें पहला मत अधिक योग्य है क्यों कि मंगल के अधिकार के उक्त क्रूर जानवर पहाडों तथा जंगलों में ही रहते है।

अवस्था—इस ग्रह का मानव की बाल्यावस्था पर स्वामित्व है। इसी अवस्था में रक्त दूषित होने की सम्भावना अधिक होती है इसलिये विषमज्वर, खुजली, फोडे फुन्सी, माता आदि रोग होतें है। रक्त के इस सम्बन्ध से ही मंगल का बाल्यावस्था पर अधिकार माना होगा। २६ से ३२ वें वर्ष तक अर्थात तरुण अवस्था में भी इस ग्रह का प्रभाव प्रतीत होता है।

अधिप—शाखाधिप इस वर्णन का स्पष्टीकरण नही होता।

रत्न—प्रवाल–इस रत्न का मंगल से क्या सम्बन्ध है यह स्पष्ट नही है। इस विषय में एक अनुभव नोट करने योग्य है। एक छोटा लड़का स्वभाव से बहुत क्रोधी और अति तामसी था। यह हमेशा कही से गिर पडता जिससे खून बहकर उसे तकलीफ होती थी। इसे बार बार ज्वर आता था। कई प्रयत्न किए गए किन्तु इसे कोई लाभ नही हुआ। एक बार एक ईरानी ने एक उत्तम प्रवाल इस लडके के लिए दिया। वह

उसके गले में बांधते ही उसकी स्थिति में सुधार हुआ। स्वभाव बदल कर वह अच्छी तरह रहने लगा तथा गिरना, ज्वर आना, खून बहना, जलना आदि प्रकार भी बन्द हुए।

तत्त्व–तेज–इस तत्त्व पर वस्तुतः रवि का स्वामित्व है किन्तु मन्त्रेश्वर ने यह मंगल का तत्त्व माना है। पुंजराजके मत से यह भूमि का अधिपति है तो अन्य शास्त्रकार इसका सम्बन्ध अग्नि से कहते है। इन में पुंजराज का मत ठीक है। भूमि के साथ अग्नि का भी इस ग्रह से सम्बन्ध हो सकता है।

दृष्टि—ऊर्ध्वदृष्टि यह वर्णन योग्य है। इसका अनुभव सेना, पुलिस आदि की परेड में देखना चाहिए। इन्हें हमेशा दृष्टि सीधी रखनी पडती है। पैरों के नीचे कुछ भी हो उसका विचार करना उन्हें सम्भव नही होता। अतः यह वर्णन ठीक है।

पराजय—शनि के द्वारा इस ग्रह का पराजय होना कहा गया है। किन्तु अनुभव उलटा आता है। मंगल द्वारा ही शनि का पराजय देखा गया है।

बलवान काल–मंगल किस समय बलवान होता है यह पहले कहा ही है। पराशर के मत से कृष्ण पक्ष मे तथा संध्या समय यह बलवान होता है। जयदेव ने रात्रि का समय कहा है। जयदेव का मत योग्य है। इसने मध्यान्ह काल भी कहा है। जीवन में तरुण अवस्था यही मध्यान्ह है जब मनुष्य पराक्रम करता है, धन तथा कीर्ति प्राप्त करता है और संसार में मग्न होता है। इस काल में मंगल को बलवान मानना योग्य ही हैं।

आप्त—बन्धुओं का विचार मंगल से करना चाहिए ऐसा कहा है। कारक प्रकरण में इसका विवेचन करेंगे।

जाति—सामान्यतः इसे क्षत्रिय माना है। जयदेव ने इसकी जाति सुनार कही है। शनि महात्म्य ग्रन्थ में भी इसे सुनार ही कहा है। वास्तव में सुनार जाति पर मंगल का ही अधिकार है क्यों कि सोने के अलंकार बनाते समय इन्हें अग्नि से ही काम लेना पडता है।

लांछन—यह दो प्रकार का होता है। तिल, व्रण आदि शारीरिक लांछन है। दुर्वर्तन द्वारा लोगों में अपकीर्ति होना यह दूसरे प्रकार का लांछन है। इन दोनों पर मंगल का अधिकार है।

मुख—इसका मुख दक्षिण की ओर माना है इसकी उपपत्ति स्पष्ट नही है।

धान्य–मसूर की दाल पर मंगल का अधिकार है। मंगल की शान्ति के लिए इसी के दान का विधान हैं।

विलियम लिली का वर्णन—इसे रात्रि का ग्रह कहा है क्यों कि इसके कार्य रात के समय ही जलदी होते है। यह अग्नि के स्वरूप का है अतः इसे उष्ण और रूक्ष माना है।

———०———

प्रकरण तीसरा

मंगल का मूल स्वरूप

आचार्य—क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदारः पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः। इसकी दृष्टि क्रूर अर्थात् उग्र होती है। आकार युवक जैसा होता है। यह उदार, पित्त प्रकृति का और चपल होता है। इसका मध्यभाग (कमर) पतला होता है। इसके अतिरिक्त यह ऊंचा नही होता और इसका वर्ण गौर होता है यह पहले कहा जा चुका है।

कल्याणवर्मा–ह्रस्वः पिंगललोचनो दृढवपुर्दीप्ताग्निकान्तिश्चलो मज्जावानरुणाम्बरः पटुतरः शूरश्च निष्पन्नवाक्। ह्रस्वाकुंचितकेशदीप्ततरुणः पित्तात्मकस्तामसः चंडः साहसिको विघातकुशलः संरक्तगौरः कुजः॥ यह नाटा, लाल आंखों वाला, मजबूत शरीर का तथा अग्नि जैसा तेजस्वी होता है। यह चंचल, लाल वस्त्र पहननेवाला, कुशल, वीर तथा बोलने में प्रवीण होता है। इसकी मज्जा धातु अच्छें परिमाण में होती है, केश छोटे और लहरीले होते हैं तथा प्रकृति पित्त की होती है। यह तेजस्वी, तरुण, क्रूर, तामसी स्वभाव का, साहसी तथा किसी भी कार्य का विघात करने की प्रवृत्ति का होता है। इसका रंग कुछ लाल और गोरा होता है।

वैद्यनाथ—क्रूरेक्षणस्तरुणमूर्तिरुदारशील: पित्तात्मक: सुचपल: कृश-मध्यदेश: । संरक्तगौररुचिरावयव: प्रतापी कामी तमोगुणरतस्तु: धरा-कुमार: ॥ यह क्रूर दृष्टि का, तरुण आकार का, उदार स्वभाव का, पित्त प्रकृति का, चपल, पतली कमरवाला, कुछ लाल गोरे वर्ण का, सुंदर अवयवोंवाला, पराक्रमी, कामुक तथा तामसी होता है ।

पराशर—क्रूरो रक्तारुणो भौमश्चपलोदारमूर्तिक: । पित्तप्रकृतिक: क्रोधी कृशमध्यतनुर्द्विज: ॥ यह क्रूर, लाल वर्ण का, चपल, उदार, पित्त प्रकृति का, क्रोधी और पतली कमरवाला होता है ।

गुणाकार—हिंस्त्रो ह्रस्वो दीप्तकायोऽग्निवर्ण: शूरस्त्यागी पैत्तिक-स्तामसश्च । मज्जासारो रक्तगौरो युवा स्यात् शश्वच्चंड: पिंगलाक्षो महीज: ॥ यह घातक, नाटे कद का, अग्नि जैसा तेजस्वी, शूर, उदार, पित्त प्रकृति का, तामसी, अच्छी मज्जावाला, कुछ लाल गोरा, तरुण, क्रोधी और लाल आंखोंवाला होता है ।

सर्वार्थचिन्तामणि—कोपग्निनेत्र: सितरक्तगात्र: पित्तात्मकश्चंचल-बुद्धियुक्त: । कृशांगयुक्तामसबुद्धियुक्तो भौम: प्रतापी रतिकेलिलोल: ॥ इसकी आंखें अग्नि जैसी लाल, वर्ण कुछ गोरा, प्रकृति पित्त की, बुद्धि चंचल, अवयव कृश तथा वृत्ति तामसी होती है । यह पराक्रमी और कामुक होता है ।

जयदेव—आरोऽप्युदारोऽपि च पीतनेत्र: क्रूरेक्षणोऽसौ तरुणात्मकश्च । संरक्तगौरश्चपलोऽतिहिंस्त्र: पित्तौष्मवान् मज्जिकयासुसार: ॥ यह उदार, पीले रंग की आंखोंवाला, क्रूर दृष्टि का, तरुण, कुछ लाल गोरा, चपल, बहुत घातक, पित्त और उष्ण प्रकृति का होता है । इसकी मज्जा धातु अच्छी होती है ।

मन्त्रेश्वर—मध्येकृश: कुंचितदीप्तकेश: क्रूरेक्षण: पैत्तिक उग्रबुद्धि: । रक्ताम्बरो रक्ततनुर्महीज: चंडोप्युदारस्तरुणोतिमज्ज: ॥ इसकी कमर पतली होती है, केश लहरीले और चमकदार होते है, दृष्टि क्रूर होती है तथा प्रकृति पित्त की होती है । इसकी बुद्धि उग्र, वस्त्र लाल, शरीर लाल और मज्जाधातु अधिक होती है । यह क्रूर किन्तु उदार और तरुण होता है ।

पुंजराज—हिंस्रो युवापैत्तिकरक्तगौरः पिंगेक्षणो वन्हिनिभः प्रचंडः। शूरोप्युदारः सतमास्त्रिकोणो मज्जाधिको भूतनयः सगर्वः ॥ यह हिंसक, तरुण, पित्त प्रकृति का, कुछ लाल गोरे वर्ण का, लाल आंखोंवाला, अग्नि जैसा उग्र, शूर, उदार, तामसी स्वभाव का और गर्वीला होता है। इस का आकार त्रिकोण जैसा और मज्जा अधिक होती है।

महादेव—दुष्टदृक् तरुणः कृशमध्यो रक्तसितांगः पैत्तिकश्चंचलधीरुदारः प्रताप्यारः ॥ इस की दृष्टि दूषित होती है। यह तरुण, कुछ लाल गोरे वर्ण का, पित्त प्रकृति का, चंचल बुद्धि का, उदार, शूर और पतली कमरवाला होता है।

विलियम लिली—मंगल प्रधान व्यक्ति मझले कद के होते है। शरीर मजबूत होता है। हड्डियां बडी होती है। ये स्थूल नही होते, कृश ही होते है। वर्ण कुछ लाल होता है। केश लाल वर्ण के, रेत जैसे और कई बार लहरीले होते है। दृष्टि तीक्ष्ण और भेदक होती है। आकृति आत्मविश्वासयुक्त और धैर्यशाली प्रतीत होती है। ये क्रियाशील और निर्भय होते है। यह मंगल पूर्व की ओर हो तो वे व्यक्ति पराक्रमी और गौर वर्ण के तथा ऊंचे होते है। इन के शरीर पर केश बहुत होते है। यह यदि पश्चिम की ओर हो तो वर्ण गहरा लाल होता है, कद नाटा होता है। मस्तिष्क छोटा होता है, शरीर चिकना होता है और केश कम होते है। इन के केश पीले होते है और स्वभाव प्रायः रूखा होता है।

सिमोनाईट—प्रमाणबद्ध किन्तु नाटा कद, कृश शरीर, मजबूत स्नायु, लाल वर्ण, तीक्ष्ण दृष्टि, वक्र नाक, लाल और चमकदार केश, अग्नि जैसी आकृति, अच्छा मस्तिष्क, संघर्षप्रिय होना, बडे और नीरोग अवयव तथा स्वभाव उग्र होना ये मंगल के लक्षण है।

कुण्डली में मंगल की स्थिति अच्छी हो तों उस का फल क्या होता है इस विषयम में विलियम लिली कहते है—साहसी और धैर्यशाली, दूसरों को तुच्छ समझनेवाला, तर्क की ओर ध्यान न देनेवाला, आत्मविश्वासी,

दृढ, पराक्रमी, युद्धप्रिय, किसी भी संकट में खुद को फंसानेवाला, किसी के आगे न झुकनेवाला, अपनी ही प्रशंसा करनेवाला, अपने विजय के आगे सब कुछ तुच्छ माननेवाला किन्तु अपने व्यवहारों में व्यवस्थित ऐसा यह व्यक्ति होता है। यदि कुण्डली में मंगल दूषित हो तो—वह व्यक्ति बकबक करनेवाला, उद्धत, अप्रामाणिक, झगडालू, हिंसक, चोर, खूनी, व्यभिचारी और दुराचारी होता है। यह वायु के समान चंचल, देशद्रोही, डाकू, साहसी, अमानुषिक प्रकृति का और ईश्वरसे भी न डरनेवाला होता है। यह किसी की परवाह नही करता। यह कृतघ्न, विश्वासघातक, लुटेरा, भयंकर और उग्र होता हैं।

मंगल जब अच्छा फल देता है तब आकाश में उस की स्थिति कैसी होती है इस का वर्णन आचार्य ने बृहत् संहिता में इस प्रकार किया है।
विपुलविमलमूर्तिः किंशुकाशोकवर्णः स्फुटरुचिरमयूखस्तप्तताम्रप्रभाभः।
विचरति यदि मार्गे चोत्तरं मेदिनीजः शुभकृदवनिपानां हार्दिदश्च प्रजानाम्॥
अर्थात–इस का आकार बडा होता है, वर्ण अशोक अथवा किंशुक के फूलों जैसा लाल होता है, किरण स्वच्छ और मनोहर होते है, कान्ति तपे हुए तांबे के समान होती है और यह उत्तर मार्ग से चलता है तब राजा और प्रजा के लिए कल्याणकारी होता है। ग्रह उत्तर या दक्षिण क्रान्ति में कब चलते है इस का वर्णन हमारे पंचांगों में नही होता। इस के लिए राफेल के अंग्रेजी पंचांग का ही अवलोकन करना पडता हैं जिस में ग्रह की दैनिक क्रान्ति और शर का विवरण दिया जाता है।

पूर्वोक्त स्वरूप का विवेचन—अब तक जो मंगल का स्वरूप कहा वह ऋषियों के अंतर्ज्ञान पर आधारित वर्णन है क्यों कि उस प्राचीन समय में दूरबीन आदि द्वारा वेध लेने की पद्धति नही थी। तथापि यह वर्णन प्रत्यक्ष स्थिति से बहुत अधिक मिलता है।

तरुण—दूरबीन से देखने पर मंगल अग्नि जैसा तेजस्वी व कान्तिमान प्रतीत होता है इसी लिए इसे तरुण कहा है। मंगल प्रधान व्यक्ति आयु के ४० वें वर्ष भी २५ वर्ष के समान तरुण प्रतीत होते है ऐसा अनुभव भी आता है।

क्रूरदृक्—अग्नि की ओर देखा नही जाता उसी प्रकार इस व्यक्ति से नजर मिलाना मुश्किल होता है। इस की दृष्टि भेदक और पूरे बदमाश के समान होती है।

उदार—जब से अग्नि का पता चला है संसार के लोगों ने उस से अनगिनत लाभ उठाए है। दूसरों के लिए खुद को कष्ट देते है इस लिए मंगल प्रधान व्यक्तियों को उदार कहा है।

पैत्तिक—अग्नि के समान उष्ण होने से उष्णता का विकार जो पित्त वही इस व्यक्ति की प्रकृति होती है।

चपल—पित्त प्रकृति के व्यक्ति चपल होतें ही है। काम करने का उत्साह इन में बहुत होता है।

कृशमध्य—कमर पतली होना इस स्वरूप का प्रत्यय सैनिक, पुलिस, ड्राइवर, इंजीनियर इन वर्गों में आता है।

ऊंचाई—सैनिक आदि वर्गो के मंगल प्रधान व्यक्ति बहुत ऊंचे होते है। किन्तु वैद्य, औषधि विक्रेता, कसाई, दर्जी, सुनार, लुहार, चमार, नाई, रंगारी, रसोइये, बढई, राजनीतिज्ञ, शस्त्रास्त्रों के संशोधक, शस्त्रों के निर्माता, मिलमजदूर आदि वर्गो में जो मंगल प्रधान व्यक्ति होते है वे प्रायः नाटे कद के होते हैं।

संरक्तगौर—खुली आंखों से भी मंगल का स्वरूप लाल दीखता है इस लिए इस का वर्ण कुछ लाल गोरा कहा है।

पिंगल लोचन—आंखें पीली लाल होती है ऐसा वर्णन है। अनुभव ऐसा है कि आंख की तारका (बीच का भाग) बहुत काली होती है और उसके चारों ओर सफेद भाग में लाल रंग की नसें अधिक मात्रा में होती है। दृष्टि बाज जैसी तीक्ष्ण होती है। कुछ उदाहरणों में तारका के चारों ओर का भाग बहुत सफेद होता है और दृष्टि सियार जैसी मालुम होती है। आंखें छोटी और चंचल होती है। ये दूसरे प्रकार की आंखें नाटे कद के व्यक्तियों में पाई जाती है।

प्रचंड–रुचिरावयव–दृढवपु—ऊपर मंगल के स्वामित्व में दो प्रकार के वर्गों के लोग बतलाए है । इन में सैनिक आदि पहले वर्गों के लोगों में शरीर मजबूत होना दृढवपु–यह फल मिलता है । दूसरे वर्ग में रुचिरावयव अवयव मनोहर होना– यह फल मिलता है ।

दीप्ताग्निकान्ति—प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी–यह फल विशेषतः पहलवान, पुलिस आदि लोगों में देखा जाता हैं । इनका शरीर बहुत तेजस्वी होता है ।

मज्जावान—मज्जाधातु अधिक होना–यहां वास्तव में मस्तिष्क बलवान होंना ऐसा फल कहना चाहिए । बुद्धि से काम लेनेवाले लोगों–जैसे गणितज्ञ, कवि, नाटककार, लेखक, संशोधक–के मस्तिष्क बहुत बलवान होते है । इस बल का विचार मंगळ की स्थिति से करना चाहिए ।

रक्तांबर—मंगल का वर्ण लाल है इस लिए वस्त्र भी लाल कहा । मंगल की शान्ति के लिए लाल वस्त्र दान दिया जाता है ।

शूर—उपर्युक्त दो वर्गो मे पहले वर्ग के लिए ही यह वर्णन ठीक है । दूसरे वर्ग में यह फल नही मिलता ।

ह्रस्वाकुंचितदीप्तकेश—केश छोटे, लहरीले और चमकदार होना यह फल पुरुषों के लिए ठीक है । किन्तु स्त्रियों के विषय में अनुभव उलटा है । इनके केश लंबे, घने, काले, चमकदार और मोहक होते हैं ।

तामस—लाल वर्ण क्रोध और सामर्थ्य का प्रतीक है इस लिए मंगल को तामसी प्रकृति का कहा । (दया और प्रेम का वर्ण सफेद है, लज्जा का गुलाबी है, शर्म का हरा है तथा द्वेष और मत्सर का काला है ऐसा इन वर्णो का और मानव की भावनाओं का सम्बन्ध कहा जाता है ।

साहसिक—धैर्य से साहसी कृत्य करनेवाला, संकट के स्थान में भी न डरते जानेवाला ऐसा यह व्यक्ति होता है ।

विघात कुशल—किसी भी अच्छे कार्य में विघ्न लाकर उस का नाश करने की इसकी प्रवृत्ति होती है । अग्नि जहां भी जाता है जलाने का ही

काम करता है। ऐसी ही इस की भी प्रवृत्ति होती है। इस को काबू में रख कर अच्छा उपयोग करना मानव पर अवलम्बित है।

रतिकेलिलोल——कामुक–उष्ण प्रकृति के लोगों में कामवासना अधिक होती है। ये लोग शृंगारशास्त्रज्ञ हो सकते हैं।

हिंस्र——हिंसा करनेवाला–इसे लडाई में और किसी का खून करने में हिचकिचाहट नही होती।

त्यागी——उदारता यह गुण भी इसमें है यह विशेषता है।

उग्रबुद्धि——बुद्धि तीक्ष्ण होती है। कोई भी बात बहुत जल्दी समझ सकता है।

त्रिकोण——पुंजराज ने इसका शरीर त्रिकोणाकृति कहा है किन्तु यह मत ठीक नही क्यों कि यह कुछ लंबे गोल आकार का दिखाई देता हैं।

सगर्व——गर्वीला होना–यह अनुभव पूरी तरह आता है।

विलियम लिली– ने इसका चेहरा गोल कहा हैं। धैर्यशाली, आत्मविश्वासयुक्त होता है। कद मंझला होता है। यह पूर्व की ओर हो तो ऊंचे कद का होता है और शरीर पर केश बहुत होते है। पश्चिम की ओर हो तो शरीर दुबला पतला, सिर छोटा, नाजुक, किन्तु स्वभाव रूखा होता हैं।

सिमोनाईट ने इसका नाक कुछ वक्र कहा है। गोल चेहरा–यह फल दूसरे वर्ग के लोगों में मिलता है। निर्भय और आत्मविश्वासयुक्त मुद्रा यह इन लोगों की विशेषता है। इस से समाज में ये बहुत जलदी पहचाने जा सकते है। यह पूर्व या पश्चिम की ओर न हो तो कद मंझला होता हे। पूर्व और पश्चिम की ओर हो तो विलियम लिली के अनुसार फल समझना चाहिए।

राशियों की दृष्टि से——मंगल के फल कर्क राशि में बहुत अच्छे मिलते है, वृश्चिक, धनु में साधारण होते है, सिंह में कुछ बुरे होते है, मेष में बुरे होते है, वृषभ, कन्या, मकर में बहुत बुरे फल मिलते है और मिथुन, तुला, कुम्भ में साधारण अच्छे मिलते है।

प्रकरण चौथा

कारकत्व विचार

कल्याणवर्मा — रक्तोत्पलताम्रसुवर्णरुधिरपारदमनःशिलाद्यानाम् । क्षितिनृपतिपतनमूर्च्छापैत्तिकचोरप्रभुर्भौमः ॥ लाल कमल, तांबा, सोना, रक्त, पारा, मनःशिला, भूमि, राजा, गिरना, मूर्छा, पित्त तथा चोर इन का कारक मंगल है ।

वैद्यनाथ—सत्त्वं रोगगुणानुजावनिरिपुज्ञातीन् धरासूनुना ॥ सामर्थ्य, रोग, गुण, छोटे भाईबहिन, शत्रु, जाति इनका कारक मंगल है ।

गुणाकर—सहोत्थ–भाई ।

पराशर—सत्त्व–सद्म-भूमि-पुत्र-शील-चौर्य-रोग-ब्रह्मःभ्रातृ-पराक्रम–अग्नि–साहस–राजपुत्रकारकः कुजः ॥ सामर्थ्य, घर, जमीन, पुत्र, स्वभाव, चोरी, रोग, ब्राह्मण, भाई, पराक्रम, आग, साहस, राजपुत्र ।

सर्वार्थचिन्तामणि—पराक्रम–विजय–विख्याति–संग्राम–साहस–सैनापत्य–दण्डनेतृत्व–खंक–परशवध–कुन्त–कुठार–शतघ्नी–भिन्दिपाल-धनुर्बाण-नैपुण्य–धृति–कान्ति–गाम्भीर्य–काम–क्रोध–शत्रुवृद्धि–आग्रहावग्रह –परापवाद–स्वतंत्र–धातृ–भूकारकः कुजः ॥

पराक्रम, विजय, कीर्ति, युद्ध, साहस, सेनापतिपद, परशु, कुठार इत्यादि शस्त्रों में निपुणता, धैर्य, कान्ति, गम्भीरता, कामवासना, क्रोध, शत्रुओं में वृद्धि, आग्रह, निश्चय, दूसरों की निन्दा, स्वतन्त्रता, आंवले का वृक्ष, जमीन इन पर मंगल का अधिकार है ।

मन्त्रेश्वर—सत्त्वं भूफलितं सहोदरगुणं क्रैर्यं रणं साहसं विद्वेषं च महानसाग्निकनकज्ञात्यस्त्रचोरान् रिपून् ॥ उत्साहं परकामिनीरतिमसत्योक्तिं महीजाद् वदेद् । वीर्यं चित्तसमुन्नतं च कलुषं सैनाधिपत्यं क्षतम् ॥ पराक्रम, जमीन, भाई, क्रूरता, युद्ध, साहस, द्वेष, रसोईघर, अग्नि, सोना, जाति, अस्त्र, चोर, शत्रु, उत्साह, परस्त्रियों में आसक्ति, झूठ बोलना, वीरता, चित्त का विकास, पाप, सेनापतिपद, जखम, इन का विचार मंगल से

करना चाहिए। इस लेखक ने रोगों के विषय में विशेष कारकत्व कहा है—तृष्णासृक्कोपपित्तज्वरमनलविषास्त्रार्तिकुष्ठाक्षिरोगान्। गुल्मापस्मारमज्जाविहतिपरुषतापामिकादेहभंगान् ॥ भूपारिस्नेहपीडां सहजसुतसुहृद्वैरियुद्धं विधत्ते। रक्षोगन्धर्वघोरग्रहभयमवनीसूनुरूर्ध्वांगरोगम् ॥ बहुत प्यास होना, खून, गिरना, पित्त ज्वर, अग्नि, विष या शस्त्रों से भय, कोढ, आंखों के रोग, गुल्म (अपेंडिसाइटिस), अपस्मार, मस्तिष्क के रोग, खुजली, अवयव कम होना, राजा का कोप, शत्रु और चोरों से तकलीफ, भाई, पुत्र और मित्रों से झगडा तथा भूतपिशाच, राक्षस और गन्धर्वों से पीडा, शरीर के ऊपर के भाग के रोग ये फल मंगल दूषित होने से प्राप्त होते हैं।

विद्यारण्य—भ्रातृसत्त्वगुणान् भूमिं भौमेन तु विचिन्तयेत् ॥ भाई, सामर्थ्य, जमीन इन का विचार मंगल की स्थिति से करना चाहिए।

कालिदास—शौर्यं भूर्बलशस्त्रधारणजनाधीशत्ववीर्यक्षयाः। चोरो युद्धविरोधशत्रव उदारा रक्तवस्तुप्रियः ॥ आरामाधिपतित्वतूर्यखननप्रीती चतुष्पान्नृपाः। मूर्खः कोपविदेशयानधृतयो धात्रग्निवाग्वादताः ॥ १ ॥ पित्तोष्णव्रणराजसेवनदिनव्योमेक्षणह्रस्वदृग्। विख्यातित्रपुखड्गकुन्तसचिवा श्वांगस्फुटत्वं मणिः ॥ सुब्रह्मण्यजपे युवा कटु नृपस्थाने कुजोऽवग्रहो। मांसाशी परदूषणं रिपुजयस्तिक्तं निशान्ते बलम् ॥ २ ॥ हेमग्रीष्मपराक्रमा रिपुबलं गाम्भीर्यशौर्ये पुमान्। शीलब्रह्मपरश्च यौवनपरो ग्रामाधिनाथत्वता ॥ राजालोकनमूत्रकृच्छ्चतुरस्त्रस्वर्णकाराः खलो। मुग्धस्थानसुभोजने कृशतनुर्विप्रत्ववीर्यत्वते ॥ ३ ॥ रक्तं ताम्रविचित्रवस्त्रयमदिग्वक्त्रे च तद्दिक्प्रियः। कामक्रोधपरापवादगृहसैन्येशाः शतघ्नीकुजः ॥ सामभ्रातृकुठारदुष्टमृगनेतृत्वस्वतन्त्रा ग्रहाः। क्षेत्रं दण्डपतित्वनागभुवने वाक्चित्तचांचल्यता ॥ ४ ॥ वाहारोहणरक्तदर्शनमसृक्संशोषणान्येवमन्येचानेकसुसंज्ञका बुधवरैर्भौमस्यतूक्ता अलम् ॥

कालिदास ने ग्रहयोनिभेदाध्याय और कारक विचार का एक ही जगह मिश्रण कर दिया है। यह किसी अच्छे ज्योतिषी को शोभा नहीं देता। किन्तु मैसूर, मलबार तथा मद्रास प्रदेश में यह बहुत प्रसिद्ध हुआ है। इसके मत से मंगल के कारकत्व में निम्न विषय आते हैं— १ पराक्रम,

२ जमीन ३ बल ४ शस्त्र धारण ५ लोगों पर अधिकार चलाना ६ वीर्य का क्षय होना ७ चोर ८ युद्ध ९ विरोध १० शत्रु ११ उदार १२ लाल वस्तुओं की रुचि १३ बगीचों का मालिक होना १४ बाद्य बजाना १५ प्रेम १६ चौपाये पशु १७ राजा १८ मूर्ख १९ क्रोध २० विदेश यात्रा २१ धैर्य २२ आंवले का पेड २३ आग २४ वादविवाद २५ पित्त २६ उष्णता २७ जखम २८सरकारी नौकरी २९ दिन ३० ऊपर दृष्टि होना ३१ नाटा कद ३२ रोग ३३ कीर्ति ३४ सीसा ३५ तलवार ३६ भाला ३७ मंत्री ३८ स्पष्ट अवयव होना ३९ मणि ४० देवों का सेनापति कार्तिकेय स्कन्द (इसे आंध्र और मद्रास में सुब्रह्मण्य कहते है तथा वहां इसके कई देवालय है) ४१ तरुण ४२ रुचि–कडवी ४३ राजाओं के स्थान ४४ अपमान ४५ मांसाहारी ४६ दूसरों की निन्दा ४७ शत्रुओं पर विजय ४८ तीखा स्वाद ४९ रात्रि के अन्त में बलवान होना ५० सोना (धातु) ५१ ऋतु–ग्रीष्म ५२ पराक्रम ५३ शत्रु का बल ५४ गम्भीरता ५५ शौर्य ५६ पुरुष ५७ शील ५८ ब्रह्म ५९ कुल्हाडी ६० वनचर ६१ गांव में मुखिया होंना ६२ राजा का दर्शन ६३ मूत्रकृच्छ्र रोग ६४ चौकोर आकार ६५ सुनार ६६ दुष्ट ६७ जली हुई जगह ६८ भोजन में अच्छे रुचिकर पदार्थो कां शौकीन ६९ कृश–दुबलापतला ७० धनुष्य बाण के प्रयोग में निपुण ७१ रक्त ७२ तांबा ७३ विचित्र वस्त्र ७४ दक्षिण दिशा ७५ दक्षिण दिशा प्रिय होना होना ७६ काम बासना ७७ क्रोध ७८ दूसरों कीं निंदा ७९ घर ८० सेनापति ८१ शतघ्नी (यह प्राचीन समय का एक शस्त्र था) ८२ सामवेद ८३ भाई ८४ कुल्हाडी ८५ जंगल के क्रूर पशु ८६ नेतृत्व ८७ स्वतंत्रता ८८ खेती ८९ सेनापति पद ९० सर्पो के बिल ९१ वाणी और चित्त चंचल होना ९२ घोडों कीं सवारी ९३ रजोदर्शन ९४ खून सूखना।

पश्चिमी ज्योतिषियों के मत से कारकत्व—उष्ण, रूखा, दाहक, उद्योगी, वंध्या, पुरुषप्रकृति, साहसी, उबलनेवाले पदार्थ, दाहजनक तेल, तीव्र औषध, आम्ल पदार्थ, उष्ण पदार्थ, दाहकारक रुचि, लोहा, फौलाद, हथियार, चाकू, कैंची, झगडे चोरी, डकैत, अपघात, लडाई, लडाई में सम्मान प्राप्त होना, महत्त्वाकांक्षा, पौरुष, काम, क्रोध, ज्ञान, आदि ,मनो-

विकार, आग, बुखार, उन्माद, भयंकरता, द्रोह, निद्रा, पुलिस, थोडे समय के लिए कारावास, मौत, पुरुषसंबंधी, डाक्टर, सर्जन, रसायनशास्त्र, वैज्ञानिक, गोलंदाज, शस्त्र बनानेवाले, लोहे के काम करनेवाले (मेकॅनिक, इंजीनियर, टर्नर, फिटर, लेथवर्क करनेवाले, किर्लोस्कर, टाटा आदि कारखानों में काम करनेवाले), तांबे के बर्तन बनानेवाले, लुहार, कंगन बेचनेवाले, दंतवैद्य, बिस्कुट बनानेवाले, चाकू कैंची बनानेवाले, कसाई, बेलिफ, जल्लाद, घडीवाले, दर्जी, नाई, रंगारी, चमार, जुंआरी, मस्तक, नाक, जननेंद्रिय, पित्त, पित्ताशय, मूत्राशय, स्नायु, मांसरज्जु, चेचक, गोबर, खून बहना, कटना जलना, आग लगी हुई जगह, भट्टी (सुनार की लुहार की, होटल की, कांच कारखाने की, लोहे, तांबे या पीतल के बर्तनों के लिए, चूना बनाने की, शस्त्रों के लिए) रसायनशाला, युद्धभूमि, सेना के कैंप, तोपखाना, बारूद के संग्रह, शस्त्रों के कारखाने, अपघात स्थल, लडाकू प्रदेश, विषैले जंतुओं के स्थान, कसाईखाना, भाईबहिनें, सुखदु:ख, चचेरे भाई, सौतेले संबंधी, अद्‌भुत बुद्धिमत्ता के काम।

हमारे मत से मंगल का कारकत्व---लोककर्म विभाग, (P.W.D.) भूमिति, इतिहास, अपराधविषयक कानुन, प्राणिशास्त्र, अस्थिशास्त्र, पुलिस इन्स्पेक्टर, ओवरसियर, उन की शिक्षासंस्था, जंगल, कृषि विद्यालय, सर्वे विभाग, बायलर अॅक्ट, तंत्रविद्या की (मेकॅनिकल) शिक्षा, इंजीनियरिंग कॉलेज, बीडी सिगरेट के कारखाने, मिल मजदूर, शराब की भट्टियां तथा दूकाने, अबकारी इन्स्पेक्टर, सिपाही, पहलवान, मोटर और उसके पुर्जे बेचनेवाले, साइकिल या मोटर रिपेयर करनेवाले, टैंक, युद्धनौका (क्रूझर) पनडुब्बी (टारपेडो), बॉंबर, विमान, पेट्रोल, स्पिरिट, रॉकेल तेल, फास्फरस, आइडिन, बिजली की आर्क के लिए उपयोगी कार्बन (जो सिनेमागृह की मशीन में उपयोग किया जाता है) के कारखाने, माचिस के कारखाने, कपास का सट्टा, रेस, घोडे, जौकी, ट्रेनर, फायरब्रिगेड, बडे आपरेशन, अपेंडिसाइटिस, मूत्रकृच्छ, गंडमाला, टान्सिल, मम, खून खराब करनेवाले व्यसन, इंग्लैंड, फ्रान्स, ग्रीस, इटाली, जर्मनी, जपान, पंजाब, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, नाइट्रिक एसिड,

एसेटिक एसिड, हाइड्रोसीनिक एसिड, आर्सेनिक, सोमल, गंधक, विष पचाने की शक्ति (शनि के कारकत्व में विष प्रयोग करना शामिल होता है किन्तु विष पचाना मंगल का कारकत्व है, सांपों पर राहु का अधिकार है किन्तु उनका शत्रु न्योला मंगल के अधिकार में है।) मुर्गी, गीध, बाज, चील, बकरा, कबूतर, चिडिया, बिल्ली, ख्रिश्चन, एंग्लोइंडियन, यूरोपियन, सिख, मराठा, रजपूत, जैन, लिंगायत, गुजरात और सौराष्ट्र का सामान्य वर्ग।

ग्रहों के स्वाभाविक गुणधर्म, रूप, रंग तथा नैसर्गिक कुंडली में उनका स्थान एवं भावकारक ग्रहों पर से कारकत्व का निश्चय किया जाता है। इस दृष्टि से अब कुछ विवेचन करेंगे।

नैसर्गिक कुण्डली

२ शु. (शु)
१२ श. (गु)
३ मं. (बु)
१ र. (मं)
११ शु. (श)
४ चं. बु. (चं)
१० र. गु. बु. श. (श)
५ गु. (र)
७ शु. (शु)
९ र. गु. (गु)
६ श. मं. (बु)
८ श. (मं)
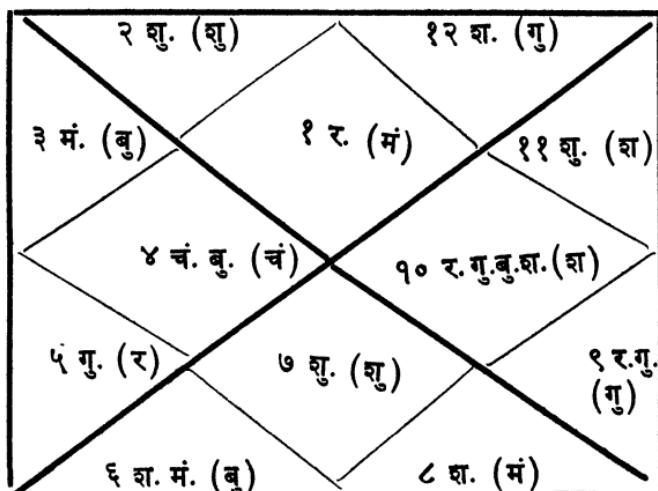
रक्तोत्पल—लाल कमल, तांबा तथा सोना ये लाल रंग के पदार्थ है इसलिए मंगल के अधिकार में है।

पारा—इस पर वस्तुतः रवि का अधिकार है।

मन:शिला—गेरू भी लाल रंग का है।

यान—वाहन, जैसे मोटर आदि, इन्हें लोहा और पेट्रोल की जरूरत होती हैं अतः मंगल के स्वामित्व में इनकी गणना की।

क्षिति—जमीन, मंगल भूमि का पुत्र माना गया है।

नृपति—राजा। यह कारकत्व गलत है। इसका विचार रवि की स्थिति से होता है।

पतन—बुरे बर्ताव से मानव की हालत गिरती जाती है यह मुख्यतः अशुभ मंगल का फल हैं।

मूर्छा—उष्णता से उत्पन्न होती है अतः मंगल के कारकत्व में शामिल होती हैं।

पित्त—इस का भी विचार मूर्छा के समान ही करें।

चोर—मंगल के साथ शनि का कुछ अनिष्ट संबंध हो तो यह कारकत्व ठीक होगा। मूलतः मंगल संरक्षक ग्रह है अतः चोरी इसका कार्य नही हैं।

सत्व-सामर्थ्य। आज के युग मे अग्नि की शक्ति से ही बडे बडे कार्य किये जाते है तथा मंगल अग्निस्वरूप ही है। अतः यह वर्णन ठीक है।

रोग—उष्णता से बहुत रोग उत्पन्न होते है। कौन कौन से रोग होते है इस का विचार सिर्फ मन्त्रेश्वर ने किया हैं।

गुण—कौनसे गुणों का यहां मतलब हैं यह स्पष्ट नही।

अनुज—छोटे भाई। मंगल का अधिकार इन पर कहा। किन्तु अनुभव में मंगल भाइयों के लिए घातक ही प्रतीत होता है।तृतीय या नवम में मंगल हो तो भाई जीवित नही रहते।

रिपु—शत्रु। पुलिस विभाग से इस का संबंध है। अतः शत्रुओं से नित्य ही संबंध आता है।

जाति—मंगल जाति से क्षत्रिय माना गया है। किन्तु ब्राह्मण या शूद्र की कुण्डली में मंगल से किस जाति का विचार करना चाहिए। इस पर से प्रतीत होता है कि अपनी जाति का त्याग कर दूसरी जाति का स्वीकार

करने की प्रवृत्ति का विचार मंगल से करना होगा। इस विषय का एक प्राचीन श्लोक ऐसा है—लग्ने चैव यदा भौमः अष्टमे च रविर्बुधः। ब्रह्म-पुत्रो यदा जातः स गच्छेन्म्लेच्छमंदिरम् ।। अर्थात् लग्न में मंगल हो तथा अष्टम में रवि या बुध हो तो वह ब्राह्मण म्लेच्छों के मुसलमान, ईसाई आदि के–घरों में जाता है। मंगल के प्रभाव से धर्म या जाति का बंधन शिथिल होता हैं।

सद्म—घर। यह विषय जमीन से संबंधित हो हैं।

पुत्र—यह कारकत्व सिर्फ पराशर ने कहा है। किन्तु यह ठीक प्रतीत नही होता। पंचम और एकादश के मंगल से ही पुत्रों के बारे में विचार होता हैं। अन्य स्थानों में इस का सम्बन्ध नही।

शील—यह कारकत्व योग्य हैं।

ब्रह्म—इस का सम्बन्ध स्पष्ट नही होता।

अग्नि—मंगल का वर्ण अग्नि जैसा ही है अतः यह वर्णन ठीक है।

साहस—इस गुण का वर्ण भी लाल माना है।

राजशत्रु—जो पुरुष अधिकारी होता है उस के कनिष्ठ अधिकारी उस का भला नही चाहतें। अतः अधिकारी के शत्रु यह मंगल का कारकत्व कहा।

पराक्रम—इस का विचार साहस के समान करना चाहिए।

विजय—यह कारकत्व ठीक नही है। विजय प्राप्ति पर शनि का अधिकार है। उदाहरणार्थ—इंग्लैंड के लोग मंगल के स्वामित्व में है। किन्तु वहां की परिस्थिति—लोहा और कोयले की खाने, व्यापार, मजदूर वर्ग आदि—शनि के स्वामित्व की है अतः उन्हें विजय मिलता है। सतत प्रयत्न यह शनि की विशेषता है अतः यश भी उस के ही अधिकार में है। मंगल का अधिकार पराक्रम पर है और शनि का विजय पर है।

विख्याति—सिपाही जान हथेली पर लेकर लडते है। तभी सेनापति को कीर्ति प्राप्त होती है। अतः कीर्ति पर मंगल का स्वामित्व योग्य है।

संग्राम–यह राष्ट्रीय कारकत्व है। किसी देश में युद्ध चल रहा हो तो वह कितने समय तक चलेगा और किसे फायदा या नुकसान होगा इस का विचार मंगल कीं स्थिति से और उस देश की राशि से करना चाहिए। इसी प्रकार व्यक्ति के जीवन में जो अदालती झगडे होते है उन का विचार भी मंगल से होता है।

दंड–सैन्य–यह भी राष्ट्रीय कारकत्व हैं। किसी देश की सेना कितनी है, उसकी व्यवस्था कैसी हैं आदि विषयों का विचार मंगल से होता हैं।

नेतृत्व–यह कारकत्व राजकीय नेतृत्व की दृष्टि से ठीक हैं, सामाजिक नेतृत्व की दृष्टि से नही।

आयुध–शस्त्र–यह कारकत्व ठीक है।

धृति–धारणाशक्ति–विषय समझ कर स्मरण रखने की शक्ति बुध के अधिकार में है अतः यह कारकत्व गलत है।

कान्ति, तेज–दृष्टि से मंगल तेजस्वी प्रतीत होता है इस लिए यह कारकत्व कहा।

गाम्भीर्य–इस ग्रह में अल्हडपन और गम्भीरता दोनो गुण पाये जाते है ऐसा अनुभव है।

शत्रुवृद्धि–शत्रु बढ़ना–मंगल छठवें, सातवें या बारहवें स्थान में हो तो इस का अनुभव आता है, अन्यत्र नही।

आग्रहावग्रह–राजदरबार में मानसन्मान या अपमान होना मंगल पर अवलंबित है। यह शुभ हो तो मानसन्मान होता है। शनि से दूषित हो तो अपमान होता है।

परापवाद–दूसरों द्वारा निंदा होना–पांचवें, सातवें या बारहवें स्थान में यह ग्रह हो तो फल मिलता है, अन्यत्र नही।

स्वतन्त्र–मंगल के अधिकार के लोग स्वतन्त्र वृत्ति से उपजीविका करते है। बहुतेरे लोग नोकरी भी करते है किन्तु यह उनकी इच्छा के प्रतिकूल होता है।

धातृ–आंवले का पेड–इस कारकत्व का उपयोग समझ में नही आता।

क्रौर्य–क्रूरता–निर्दयता–अग्नि की दाहक शक्ति को देख कर यह कारकत्व कहा किन्तु किसी पापग्रह का वेध हो तो ही यह फल अनुभव मे आता है इसलिए इसका उपयोग विचार कर करना चाहिए।

विद्वेष–यह गुण मंगल में नही पाया जाता।

महान–महानता यह कारकत्व ठीक है।

उत्साह–मंगल के अधिकार के व्यक्तियों का यह विशेष गुण हैं।

परकामिनीरति–दूसरों की स्त्रियों से सम्बन्ध–इस ग्रह से उष्णता अधिक होती है अतः कामवासना भी तीव्र होती है। इसका शारीरिक सामर्थ्य भी अच्छा होता है अतः परस्त्रियां खुद होकर इसे चाहती है।

वीर्य–जननेन्द्रियों पर मंगल का स्वामित्व है अतः यह वर्णन ठीक है। नैसर्गिक कुण्डली में अष्टम में वृश्चिक राशि है जिस पर मंगल का ही स्वामित्व है।

असत्य–झुठ बोलना–मंगल दूषित हो तो ही इसका अनुभव आता है।

चित्तसमुन्नति–ऊपरी तौर से देखें तो यह कारकत्व ठीक प्रतीत नही होता। किन्तु राष्ट्र में महान व्यक्तियों का जन्म होना, बौद्धिक प्रगति होना और इस तरह जगत की स्थिति में सुधार होना यह मंगल का ही कारकत्व है। द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, द्वादश इन स्थानों में शुभ मंगल हो तो उन व्यक्तियों का मन और बुद्धि अच्छी तरह विकसित होती है। लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम, दशम, एकादश इन स्थानों में मंगल हो तो युनिव्हर्सिटी की डिग्रियां मिलने पर भी मन की अवस्था अविकसित ही रहती है।

कलुष–व्ही. सुब्रह्मण्य शास्त्री, बंगलोर, ने इसका अर्थ पाप माना है। हमारे मत से दूसरों की निन्दा करना यह इस कारकत्व का अर्थ है।

क्षत–जखम, फोडें फुन्सी–यह कारकत्व ठीक है।

विदेशयान–विदेशों में जाना–इसका अनुभव देखना चाहिए।

वाग्वाद—सभाओं में या व्यक्तियों में होनेवाले वादविवाद—कुंडली में मंगल प्रबल हो तो इन वादविवादों में उस व्यक्ति को विजय प्राप्त होता है। अदालतों के वादविवाद यह अर्थ भी ठीक हो सकता है।

मांसाशी—मंगल रक्त व मांस का स्वामी है अतः यह कारकत्व कहा। लिंगायत, जैन, सनातनी, ब्राह्मण आदि जातियों में मांसाहार निषिद्ध हैं। अतः इनके विषय में मिर्च बहुत खानेवाले ऐसा फल कहना चाहिए। आज कल पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से इन जातियों में भी कुछ लोक मांसाहार करते है। अतः धनस्थान या षष्ठ में अग्निराशि में मंगल हो तो उसे मांसाहार और मद्यपान का फल बतलाना होगा।

सुभोजन—मंगल के अधिकार के व्यक्तियों को भोजन अच्छा सुस्वादु चाहिए। कदान्न खाने को वे तैयार नही होते। अच्छा भोजन न मिला तो दूध पर ही रहते है।

चित्तचंचलता—मंगल की गति बहुत चंचल है—वह बहुत बार वक्री और मार्गी होता है अतः चित्त चंचल होना यह इसका कारकत्व कहा। इसका अनुभव लग्न, सप्तम और दशम में ही विशेष आता है।

नागभवन—सर्पों का शत्रु न्योला मंगल के अधिकार में है अतः यह कारकत्व कहा।

वाहारोहण—घोडों पर सवांरी करना।

असृक्संशोषण—खून सूखना।

चतुरस्र—चौकोर आकार का—यह वर्णन कालिदास के मत से है। पुंजराज के मत से त्रिकोण आकृति होती है। ये दोनों मत ठीक प्रतीत नही होते। मंगल के अधिकार के सैनिक आदि वर्गो के लोग ऊचे कद के, लंबे चेहरे के और सुदृढ होते है। सुनार आदि वर्गों के लोग गोल चेहरे के, नाटे कद के और प्रमाणबद्ध अवयवों के होते है।

पश्चिमीय—ज्योतिर्विदों ने जो कारकत्व कहा उसका अलग विवेचन करने की जरूरत नही। वह ठीक है।

कारकत्व का वर्गीकरण

जन्म कुण्डली में उपयोगी कारकत्व—बडे ऑपरेशन, गंडमाला, अपेंडिसाइटिस, कैन्सर, प्लूरसी, मूत्रकृच्छ, टान्सिल, विषमज्वर, उद्योग, साहस, वंध्या, वैर, झगडे, चोरी, डकैत, अपघात, युद्ध में कीर्ति, काम, क्रोध, अभिमान, बुखार, उन्माद, तीव्र वेदना, द्रोह, निंदा, परापवाद, मृत्यु, पुरुष सम्बन्धी, मस्तक, नाक, जननेन्द्रिय, पित्त, पित्ताशय, मूत्राशय, स्नायु, मांस, हड्डियां, शरीर पर लाल धब्बे पडना, चेचक, खून बहना, कटना, जलना, छोटे भाईबहिन, अद्भुत बुद्धिमत्ता के कार्य, सुखदुःख, चचेरे भाई, सौतेला घर, मन, मूर्छा, चोर, सत्व, रोग, जमीन, शत्रु, जाति, पुत्र, शील, राजशत्रु, यश, नेतृत्व, धारणा, कान्ति, गम्भीरता, शत्रुवृद्धि, राजकृपा तथा अवकृपा, स्वतन्त्रता, क्रूरता, महानता, उत्साह, परस्त्रियों से सम्बन्ध, झूठ बोलना, चित्त का विकास, पाप, व्रण, मूर्खता, विदेश-यात्रा, वादविवाद, मांसाहार, दुष्टता, अच्छा भोजन, चित्त चंचल होना, छोटी मुदत के कारावास, रुक्ष, उष्ण, दाहकारक ।

व्यवसाय का कारकत्व—लोककर्म विभाग (P. W. D.) पुलिस, इन्स्पेक्टर, ओवरसियर, रेंजर, पाइलट (विमानवाहक), कृषिशास्त्रज्ञ, इंजीनियर, मेकॅनिक, बीडी सिगरेट के कारखाने, मिलमजदूर, पान बेचने-वाले, शराब बेचनेवाले, अबकारी इन्स्पेक्टर, पहलवान, मोटर या उसके स्पेअर पार्ट के विक्रेता, साइकिल बेचनेवाले तथा रिपेअर करनेवाले, शस्त्रो के निर्माता (जैसे तोप, बंदूक, टैंक, युद्धनौका, पनडुब्बी, बम गिरानेवाले विमान) पेट्रोल, स्पिरिट और रॉकेल के विक्रेता, सिनेमा में उपयोगी कार्बन स्टिक के निर्माता, आपरेशन के साधनों का कारखाना, माचिस का कारखाना, कपास का सट्टा, रेस, घोडे, जॉकी, ट्रेनर, फायरब्रिगेड, तेज दवाइयां, एसिड, लोहा, फौलाद, चाकू कैंची, सर्जन, रसायनशास्त्र, तोप दागनेवाले, टर्नर, फिटर, लेथवर्क करनेवाले, दंतवैद्य, कसाई, सुनार, लुहार, सब प्रकार की भट्टियां (सुनार, लुहार, होटल, पावबिस्किट, कांच, लोहा, चूना आदि की), लोहे के कारखाने (टाटा, किर्लोस्कर, भद्रावती, कुलटी, कूपर के कारखाने तथा लोहे के पदार्थों--हल, पाइप, कुर्सी, डिब्बे,

आदि–के कारखाने), पीतल के कारखाने, रसायनशाला, सेना, तोपखाना, बेलिफ, हंटर मारनेवाला, बिस्किट बनानेवाला, घडी रिपेअर करनेवाला, दर्जी, चाकू कैंची को धार लगानेवाले, तागडी बनानेनाले, निब के कारखाने, नाई, रंगारी, बढई, चमार, जुआरी, तांबा, सोना, पत्थर, दाहक तेल.

मेदिनीय ज्योतिष का कारकत्व—युद्ध, अग्निप्रलय, सेनापति, तोप दागनेवाले, युद्धभूमि, सेना के स्थान, तोपखाना, बारूद के भंडार, शस्त्रों के कारखाने, युद्धप्रिय देश, सेना की हालत, इंग्लैंड, फ्रान्स, ग्रीस, इटली, जर्मनी, जपान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान.

शिक्षा का कारकत्व—भूमिति, इतिहास, फौजदारी कानून, पुलिस, ट्रेनिंग, ओवरसियर ट्रेनिंग, फॉरेस्टरी, सर्वे विभाग, बाइलर ॲक्ट, इंजीनियरिंग, वायुयान शिक्षा, सर्जरी, रेजिमेंटल क्लास, मोटर ड्राईव्हिंग, रेल्वे ड्राईव्हिंग. दर्जी काम, रंग काम, टेक्नालजी, मिल एप्रेंटिस.

अनुपयोगी कारकत्व—उबलते हुए पदार्थ, उग्र गंध के पदार्थ, दाहक रुचि, दुर्घटनास्थान, खून के स्थान, लडाई झगडे के स्थान, पारा, गिरना, गुण, आंवला, वाद्य, सांपों के बिल, फास्फरस, आइडिन, नाइट्रिक एसिड, अन्य एसिड, हींग का अर्क, सोमल, मन:शिला, गंधक, शेर, कुत्ता, भेडिया, सियार, बिल्ली, न्योला, मुर्गा, गीध, चील, बाज, लाल मुंह के बंदर, बकरा, कबूतर, चिडिया।

जाति—ख्रिश्चन, एंग्लोइन्डियन, यूरोपियन, सिख, मराठा, पठान, रजपूत, जैन और लिंगायत (कर्नाटक में) गुजरात के हीन जाति के लोग।

कुण्डली में शुभ मंगल के फल—साहसी, चिडचिडे स्वभाव का, हठी, मौके पर न डरनेवाला, दीर्घोद्योगी, खर्चीला, नाना युक्तियों से काम बनानेवाला, लोगों का अकल्याण न हो इस लिए प्रयत्नशील, निष्कपट, उदार, प्रेमी, बेफिक्र, सुदृढ, धैर्यवान, नवमतवादी, दूसरों के प्रभाव में न आनेवाला, व्यवहार में सरल, सत्यशील तथा प्रामाणिक, भाषण और कृति में नियमों का बारीकी से पालन करनेवाला, परस्त्रियों से दूर रहनेवाला,

अनाथ दीन स्त्रियों का रक्षक, लोककल्याण में प्रयत्नशील, क्रान्तिकार्य करने के लिए उत्सुक, सुखासक्त, धर्मश्रद्धा होते हुए भी कर्मठता न होने वाला, अपनी पत्नी के आधीन, सद्य:स्थिति में मग्न, आगे की फिक्र न करने वाला, वादविवाद में हार माननेवाला , लोगों पर उद्योग के कारण प्रभाव डालनेवाला, लोकमत अच्छी दिशा में प्रेरित करनेवाला । जिस व्यक्ति की कुण्डली में मंगल विकसित हो वही स्त्रियों की इज्जत की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा सकता है और लोककल्याण के लिए अपनी सारी इस्टेट खर्च कर राजसत्ता के खिलाफ लडते हुए प्राणार्पण भी कर सकता है ।

कुण्डली में दूषित मंगल के फल—कुण्डली में चन्द्र या शुक्र के सम्बन्ध से मंगल दूषित होता है । इन ग्रहों से मंगल के बुरे गुणधर्म प्रभावी और स्पष्ट होते हैं । परस्त्रियों को कुमार्ग पर प्रेरित करनेवाला, किसी भी जाति के स्त्री से सम्बन्ध रखनेवाला, अति कामुक, कामपूर्ति के लिए चाहे उस मार्ग का स्वीकार करनेवाला, क्रोधी, तामसी, लडाई झगडे तथा खून तक करनेवाला, कृपण लोगों के पैसे लुटा कर मौज उडानेवाला, स्त्री को कष्ट देनेवाला, दूसरों की निन्दा करनेवाला, दूसरों को बुरा भला कह कर खुद कुछ भीं न करनेवाला, आलसी, झगडालू, स्वार्थी, दूसरों को निरुत्साही बनानेवाला, बीभत्स शब्द बोलनेवाला, जंगली, ऊधम मचानेवाला, एकान्तप्रिय, विक्षिप्त मनोवृत्ति, अस्थिरता ।

प्रकरण पांचवाँ

द्वादशभाव विवेचन

प्रथम स्थान

गर्ग—गुदरोगी श्लथं नाभौ कंडूकुष्ठादिनांकित: । मध्यदेशे भवेत् व्यंग। सवाच्यो लग्नगे कुजे ।। तनुस्थानस्थिते भौमे दृष्टिभिर्वा विलोकिते । लोहाश्मादिकृता पीडा क्रोधोऽत्यन्तस्तनौ भवेत् । रक्तपीडा शिशुत्वे च

वातरक्तं च जायते । मस्तके कण्ठमध्ये च गुह्ये वापि व्रणं भवेत् ॥ गुद रोग, नाभि में खुजली या कोढ, मध्यभाग में (कमर में) व्यंग (मंगल के साथ बुध हो तो), लोहा, पत्थर आदि से तकलीफ, बहुत क्रोध, बचपन में खून के विकार, वातरोग, मस्तक में या गुह्य भाग में व्रण होना, ये प्रथम स्थान के मंगल के फल हैं ।

काशीनाथ—भौमे लग्ने कुरूपश्च रोगी बन्धुविवर्जितः । असत्यवादी निर्द्रव्यो जायते पारदारिकः ॥ कुरूप, रोगी, बन्धुहीन, झूठ बोलनेवाला, धनहीन, परस्त्रियों में आसक्त ।

नारायणभट्ट—तपेन्मानसं—कलत्रादिघात: शिरोनेत्रपीडा । विपाके फलानां सदैवोपसर्गः । मानसिक दुःख, स्त्रीनाश, मस्तक और आंखों के रोग, अच्छे फल मिलते समय हमेशा विघ्न आना ।

जीवनाथ—प्रतापस्तस्यापि प्रभवति मृगेन्द्रेण च समः । सिंह के समान पराक्रमी ।

पुंजराज—स क्रोधी जायते नूनं व्यसनी कटुकप्रियः । वन्हिना स विदग्धः स्यात् तथा पित्तेन बाध्यते ॥ क्रोधी, व्यसनी, तीखे पदार्थ प्रिय होना, आग से जलना, पित्त रोग ।

रामदयाल—सदम्भः । पाखंडी ।

मन्त्रेश्वर—अतिक्रूरोल्पायुः । बहुत क्रूर, अल्पायुषी ।

बृहद्यवनजातक—अतिमति भ्रमतां गमनागमनानिच । बहुत बुद्धिमत्ता, भ्रमण, व्यभिचारी, स्त्रियों के विषय में गम्यागम्य विचार न करनेवाला ।

जागेश्वर—यदा मंगलो लग्नगो मानवानां वपुः पुष्टितुष्टं सरक्तं च कुर्यात् । शरीर हट्टाकट्टा और खून बहुत होता है ।

वैद्यनाथ—साहसिकोऽठनोऽतिचपलः । साहसी, भ्रमण करनेवाला, बहुत चपल ।

गुणाकार—लग्ने क्षतांगः । शरीर व्रणयुक्त होता हैं ।

आयग्रन्थकार—उदरदशनरोगी शैशवे लग्नभौमे पिशुनमतिकृशांगः पापवित् कृष्णरूपः। भवति चपलचित्तो नीचसेवी कुचेली सकलसुखविहीनः सर्वदा पापशीलः ॥ बचपन में पेट के तथा दांतों के विकार, दुष्ट बुद्धि, कृश शरीर, पापी, कृष्ण वर्ण, चंचल चित्त, नीचों की सेवा, मैले वस्त्र, सुखहीन।

कल्याणवर्मा—स्तब्धः स्वमानशौर्ययुतः सुशरीरः। स्तब्ध, स्वाभिमानी पराक्रमी, सुंदर।

महेश—उग्रताप—स्वभाव बहुत उग्र होता है।

जयदेव—भ्रान्तधीः। बुद्धि भ्रमयुक्त होती है। मेषे वा वृश्चिके वापि मकरे वा धरासुतः। मूर्तौ केन्द्रत्रिकोणेषु तदारिष्टं न जायते ॥ मेष, वृश्चिक अथवा मकर राशि का मंगल लग्न में, केन्द्र में अथवा त्रिकोण में हो तो उस व्यक्ति का अनिष्ट नही होता।

घोलप—दुष्ट अन्तःकरण, रक्त और पित्त के विकार, गुल्म, प्लीहा रोग, गर्वीला, विचारशून्य।

गोपाल रत्नाकर—सुदृढ शरीर, चोरी करने की प्रवृत्ति, कुछ लाल गोरा वर्ण, बचपन में पिता को तकलीफ, उत्तर आयुष्य में राजसन्मान।

हिल्लाजातक—पंचमेऽब्दे लग्नगतो भौमोऽरिष्टं करोति वै ॥ पांचवें वर्ष संकट आता है। (यही मत वृहद्यवनजातक में भी है।)

यवनमत—शत्रुओं से और अपने धर्म के लोगों से भी खूब झगडता है। क्रोधी और विरोधप्रिय, कृश, स्त्रीहीन, पुत्रहीन, बहुत घुमनेवाला।

पाश्चात्य मत—धैर्यवान, निरंकुश, साहसी, दुराग्रही, उत्कर्ष के लिए अति इच्छुक, लोभी, वितंडवादी, उदार, क्रोधी, अति अभिमानी। मेष, सिंह तथा धनु में—बहुत क्रूर, साहसी। मिथुन, तुला तथा कुम्भ में—प्रवासी, भाग्यहीन। वृषभ, कन्या तथा मकर में—लोभी, स्वार्थी, दीर्घद्वेषी, स्त्रीप्रिय, झगडालू, शराबी। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में—नाविक, पियक्कड, चैनी, व्यभिचारी।

अज्ञात–देहे व्रणं भवति । दृढगात्रः चोरः बुभुक्षितः बृहन्नाभिः रक्त-पाणिः शूरो बलवान् समानशौर्यः धनवान् नेत्ररोगी दुर्जनः । स्वोच्चे स्वक्षेत्रे आरोग्यम् राजसन्मानकीर्तिः । पापशत्रुयुते अल्पायुः स्वल्पपुत्रवान् वातशूलादिरोगः दुर्मुखः । स्वोच्चे लग्नर्क्षे विद्यावान् नेत्रविलासवान् । तत्र पापयुते पापक्षेत्रे पापदृष्टियुते नेत्ररोगः बहुचिन्ता उद्वेगः शिरोक्षिमुख-पीडनम् । बाल्येऽपि रोगी । मलिनः दरिद्री अलसश्च ।। शरीर पर व्रण होते है । मजबूत अवयव, चोर, भूख बहुत होना, विशाल नाभि, आरक्त हाथ, शूर, बलवान, मूर्ख, क्रोधी, धनवान, दुष्ट, आंखों के रोग, ये लग्न के मंगल के फल है । यह स्वगृह में या उच्च का हो तो आरोग्य, राज-सन्मान, कीर्ति ये फल होते है । पापग्रह अथवा शत्रुग्रह उसी स्थान में हो तो पुत्र थोडे होते है, वात तथा शूल रोग होते है, नित्य ही उदासीन मुख होता है । लग्न में मंगल हो तो विद्याप्राप्ति और आंखें अच्छी होना ये फल मिलते है । पाप ग्रह की राशि में, पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो आंखो के रोग, अति चिन्ता, उद्वेग, सिर तथा मुख में पीडा, बचपन में रोग, मलिनता, दारिद्र्य, तीव्र कामवासना और आलसीपन ये फल मिलते है ।

उपर्युक्त फलों का विवेचन——मंगल मूलतः रुक्ष, उष्ण तथा दाहक है । बच्चों को गर्भस्थ अवस्था से ही उष्णता सहनी पडती है । अतः उन्हें चेचक, फोडे फुन्सी, सूखी, दांत गिर कर दूसरे दांत निकलना आदि की तकलीफ होती है । अतः उष्णता के साथ साथ बचपन की अवस्था पर भी मंगल का अधिकार है । जिस की कुण्डली में मंगल प्रबल हो उसे ये रोग बहुत जलदी होतें है और जिन का मंगल दुर्बल हो उन्हें इन से विशेष तकलीफ नही होती । लग्न में मंगल के होने न होने से इस में खास हेरफेर नही होता । अतः गर्ग ने इस विषय में जो कहा उस में बहुत तथ्य नही है । सिर में दर्द और रक्तपीडा ये फल ठीक प्रतीत होते है । उन का अनुभव मेष, सिंह, धनु में आता है । मिथुन, तुला, कुंभ में यह अनुभव कुछ कम आता है । किन्तु अन्य राशियों में यह फल नही मिलता । **काशीनाथ के मत का विवेचन भी इसी तरह करना चाहिये ।** इन के कहे हुए फल भी

पुरुष राशि के ही है । **नारायणभट्ट** ने स्त्रीघात फल कहा उस का अनुभव कर्क, सिंह, मीन इन को छोड कर अन्य राशियों में आता है । अच्छा फल मिलने के समय विघ्न उपस्थित होना यह फल मिथुन, तुला, कुम्भ इन राशियों में मिलता है । **जीवनाथ** ने सिंह के समान पराक्रम यह फल कहा उसका अनुभव मेष, सिंह तथा धनु, कर्क और वृश्चिक में मिलता है । **पुंजराज** का फल पुरुष राशियों का हैं । **रामदयाल** ने धर्म पर श्रद्धा न होना, सुधारक मतों के पक्षपाती होना यह फल कहा उस का अनुभव मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक एवं मीन में आता हैं । **महेश** का मत मेष, सिंह एवं धनु में ठीक प्रतीत होता है । **मन्त्रेश्वर**–पुरुष राशि में मंगल के साथ रवि और चन्द्र हो तो इस के मत का अनुभव आता है । **बृहद्यवन** में बुद्धिमान किन्तु भ्रमणशील ऐसा फल कहा इस का अनुभव मेष, सिंह, धनु तथा मिथुन, तुला, कुम्भ में आता है । अगम्य गमन यह लग्न के मंगल का विशेष फल नही है । व्यभिचारी होने की अथवा रखैल से सम्बन्धित होने की सम्भावना होती है । **जागेश्वर** के मत का अनुभव मेष, सिंह धनु में तथा कुछ कम प्रमाण में वृषभ, कन्या, मकर में आता है । अन्य राशियों में यह अनुभव नही आता । **वैद्यनाथ** और **गुणाकर** के मत पुरुष राशियों के लिए ठीक है । **आर्यग्रन्थ** के मतों में बचपन में पेट एवं दांत के रोग होना यह फल पुरुष राशियों का है । अन्य फल स्त्री राशियों के है । **कल्याण वर्मा** का मत स्त्री राशियों में तथा **जयदेव** का मत सभी राशियों में ठीक प्रतीत होता है । **घोलप** के मतों में दुष्ट तथा विचारशून्य होना यह फल वृषभ, कन्या, मकर में, गर्वीला एवं रक्त पित्तविकार से युक्त होना यह फल मेष, सिंह, धनु में एवं गुल्म तथा प्लीहा रोग होना यह फल कर्क, वृश्चिक, मीन में ठीक प्रतीत होते है । **गोपाल रत्नाकर** के मतों में गौर वर्ण, मजबूत शरीर यह फल मेष, सिंह, धनु में तथा राजसन्मान यह फल मेष, कर्क, सिंह, मीन में ठीक प्रतीत होता है । **हिल्लाजातक** के मत का विचार विद्वान करें । मेरे विचार से यह फल आठवें वर्ष में मिलता है । **यवनमत** के शत्रु तथा स्वधर्म से कलह एवं स्त्रीपुत्रवियोग यह फल मेष, धनु, मिथुन, तुला, कुंभ में ठीक प्रतीत होते है । दुष्ट, विरोधप्रिय, कृश ये फल स्त्री राशियों के है । **पाश्चात्य मत** का अनुभव सब से अधिक आता है ।

हमारा अनुभव—प्रथम स्थान में मंगल हो तो उस व्यक्ति को सभी व्यवसायों के प्रति आकर्षण प्रतीत होता है। किन्तु वे किसी एक व्यवसाय को अच्छी तरह न कर सभी को एकसाथ करना चाहते है। यह स्थिति ३६ वें वर्ष तक रहती है। फिर किसी एक उद्योग में स्थिर होते है। इन्हें ऐसा प्रबल अभिमान होता है कि व्यवसाय में बहुत कुशल है और दूसरे निरे मूर्ख है। योग्यता न होने पर भी ये रौब डालने का प्रयत्न करते है। सिनेमा के क्षेत्र में ये खलनायक हो सकते है। डाक्टरों की कुण्डली में लग्नस्थ मंगल हो तो शिक्षा के समय सर्जरी की प्रधानता मिलती है किन्तु व्यवसाय शुरू होने पर ऑपरेशन के मौके बहुत कम आते है। यह योग इनके लिए अच्छा नही होता। वकीलोंके लिए भी यह बहुत अच्छा योग नही है। इसमें इन्हें फौजदारी मामलों में कुछ काम मिलता है किन्तु धनप्राप्ति विशेष नही होती। अदालत में प्रभाव जरूर बढता है। मोटर वायुयान, रेल्वे इंजिन के ड्राइवरों के लिए यह योग अच्छा होता है। इन की दृष्टि बहुत अच्छी होती हैं। लुहार, बढई, सुनार, मेकॅनिक, इंजीनियर, टर्नर, फिटर इन लोगों के लिये यह योग बहुत अच्छा होता है। वृषभ, कन्या या मकर में मंगल लग्नस्थ हो तो उत्तम फल मिलते है। इस योग में जमीन सर्व्हे करने का काम मिलता है। मकर के मंगल से पिता को बहुत तकलीफ होती है और शारीरिक व्याधियों से पीडा होती है। इस योग के किसानों को जमीन का ज्ञान अच्छा होता है। मेष, सिंह, कर्क, वृश्चिक, धनु इन राशियों का लग्नस्थ मंगल पुलिस इन्स्पेक्टरों के लिये अच्छा होता है। इस योग के अफसर रिश्वत खाते है किन्तु पकडे नही जाते (इस के लिये शनि के साथ शुभ योग होना जरूरी है)। बरताव में किसी की पर्वाह नही करते।

लग्नस्थ मंगल के प्रधानत: दो प्रकार है। कर्क राशि में हो तो उस व्यक्ति को अपने परिश्रम से उन्नति और धन प्राप्त होते है। सिंह राशि में हो तो वह दैवयोग से हीं उन्नति और धन प्राप्त करता है। इन दोनों योगों के व्यक्ति उदार होते है। अतिथियों का सत्कार अच्छी तरह करते है। घर में कितने लोग भोजन करके जाते है इस का इन्हें पता भी नही

होता। यही मंगल, वृषभ, कन्या या मकर में हो तो वे लोग बहुत कंजूस होते है। एक भी व्यक्ति को अधिक भोजन देना पडे तो इन्हें दुख होता है। ये लोगों को ठगाते है। मिथुन और तुला में मिलनसार स्वभाव होता है, मित्रों के लिये थोडा बहुत खर्च करते है किन्तु लोगों को ठगाते नही। कर्क, वृश्चिक, कुम्भ तथा मीन में यह मंगल हो तो वे लोग किसी से जलदी मित्रता नही करते किन्तु एक बार करने पर उसे कभी भूलते नही। ये पैसे के लोभी और स्वार्थी होते है, अच्छे बुरे उपायों का विचार नही करते।

मंगल के सामान्य फल इस प्रकार है। व्यभिचारी, कामलोलुप, लोगों की बुराइयां ढूंढना, ताने देकर बोलना, गालियां देना, झगडा लगाने में कुशलता। स्त्री राशियों में--दूसरों को किसी भी काम में आगे कर के खुद पीछे रहना। इन की दृष्टि बहुत उग्र तथा क्रूर होती है अतः बच्चों को इन की दृष्टि बाधक होती है। बचपन में तालु न भरना आदि रोग होते है। वृषभ, कन्या, मकर, कुम्भ में-कुछ कुछ चोरी करने की प्रवृत्ति होती है।

द्वितीय स्थान

आचार्य---धनगे कदन्नः। अन्न निकृष्ट मिलता है।

गुणाकार---इस ने उपर्युक्त फल ही कहा है।

वैद्यनाथ---धातुर्वादकृषिक्रियाटनपरः कोपी कुजे वित्तगे॥ धातु, वादविवाद, खेती, नित्य प्रवास, क्रोधी ये द्वितीय स्थान के मंगल के फल है। धन के विषय में इस मंगल से कोई लाभ नही होता।

कल्याणवर्मा---अधनः कदशनतुष्टः पुरुषो विकृताननो धनस्थाने। कुजनाश्रयश्च रुधिरे भवति नरो विद्यया रहितः॥ निर्धन, निकृष्ट अन्न पर ही सन्तुष्ट रहना, चेहरा विकृत होना, दुष्ट लोगों को आश्रय देना तथा अशिक्षित होना ये इस मंगल के फल है।

बृहद्यवनजातक—अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयातिविहीनतां। तनुभृतां विदधाति विरोधतां धननिकेतनगोऽवनिनन्दनः ॥ निर्धन, दुर्जनों का आश्रय, बुद्धिहीन, निर्दय, बहुत विरोध ये इस मंगल के फ़ल है।

गर्ग—कृषिको विक्रयी भोगी प्रवास्यरुणवित्तवान्। धातुवादी मतेर्नाशो द्यूतकारः कुजे धने॥ धने भौमे धनहानिः प्रजायते। पीडा देहे च नेत्रे च भार्याबन्धुजनैः कलिः॥ खेती, विक्रय में कुशल, प्रवासी, अरुण वर्ण, धनवान, धातु का काम, बुद्धिहीन, जुआरी, शरीर को पीडा, आंखों के रोग, स्त्री तथा सम्बधियों से विरोध ये इस मंगल के फल है।

नारायणभट्ट—पुनः संमुखं को भवेत् वादभग्नः। इस के साथ वाद करने पर हार कर कोई इस के सन्मुख फिर नही आता।

मन्त्रेश्वर—वचसि विमुखः। इसे बोलना पसन्द नही होता।

आर्यग्रन्थ—विक्रमे मग्नचित्तः कृशतनुसुखभागी। नित्य ही पराक्रम में रुचि होना, कृश शरीर, सुखी।

जयदेव—निर्दय।

जीवनाथ—प्रलब्धे वित्तेपि स्वजनजनतः किं फलमलम्। धन का संरक्षण होता है। (इस का ठीक अर्थ स्पष्ट नही होता—अ.)

काशीनाथ—क्रियाहीनश्च जायते। दीर्घसूत्री, सत्यवादी पुत्रवानपि॥ क्रियाकाण्ड में रुचि नही होती, दीर्घसूत्री, सच बोलनेवाला, पुत्रों से युक्त॥

जागेश्वर—धने क्रूरखेटा मुखे वाथ नेत्रे तथा दक्षिणांसे तथा कर्णके वा। भवेद् घातपातोऽथवा वै व्रणं स्याद् यदा सौम्यदृष्टं न युक्तं धनं चेत्॥ धनस्थान में क्रूर ग्रह हो तथा सौम्य ग्रह की उस पर दृष्टि न हो तो उसे मुख, आंख, दाहिना कंधा अथवा कान इन भागों को जख्म होती है।

पराशर—स्वे धननाशम्। धनहानि होती है।

हिल्लाजातक—धनहानिर्द्वादशेब्दे धनस्थश्च महीसुतः। इस मंगल से बारहवें वर्ष धनहानि होती है।

बृहद्यवनजातक---प्रपीडितमसृग् नवाब्दे स्वनाशम् । नौवें वर्ष में रक्तविकार से मृत्यु के समान पीडा होती है ।

गोपाल रत्नाकर---कठोर वाणी, अकारण खर्च, बहुत क्रोध, पैतृक इस्टेट होना (अन्तिम फल कर्क तथा सिंह लग्न के लिये समझना चाहिये ।)

यवनमत---पुत्र, स्त्री, धन इन से रहित, युद्ध में शूर, चिन्तातुर, कुरूप, निर्दय, नित्य ही ऋणग्रस्त ।

घोलप---गाय, घोडे, भेडें, गाडियां आदि के व्यापार में धनहानि, पुत्रहीन, विकल अवयव, बहुत रोग होना ये इस मंगल के फल है ।

पाश्चात्य मत---बिल्डिंग के काम, मशीनों की सामग्री, पशुओं का व्यापार, खेती, लकडी तथा कोयले का व्यापार, आरोग्यविषयक काम (वैद्यक), नाविक, इन व्यवसायों में धनप्राप्ति होती है । इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो अथवा यह बलवान हो तो अच्छा धनलाभ होता है । नीच गृह मे, अथवा अशुभ सम्बन्ध में हो तो भयंकर धनहानि, मन को दुःख और रोगों से पीडा ये फल मिलते है ।

अज्ञात---विद्याहीनः लाभवान् । षष्ठाधिपेन युतः तिष्ठति चेत् नेत्रवैपरीत्यं भवति । शुभदृष्टे परिहारः । स्वोच्चे स्वक्षेत्रे विद्यावान् नेत्रविलासी । तत्र पापयुतक्षेत्रे पापदृष्टे नेत्रे रोगः । कुदन्तः । नृपवन्हिचोरात् भयम् । विभवक्षयः कामिनीकष्टं भवति । तत्र पापयुते पापक्षेत्रे पापदृष्टे कामिनीहीनः ।। इसे विद्याप्राप्ति नही होती, धन मिलता है । इस के साथ षष्ठ स्थान का स्वामी हो तो दृष्टि सदोष होती हैं । किन्तु इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यह फल नही मिलता । यह मकर या वृश्चिक में हो तो विद्या प्राप्त होती है तथा आंखें अच्छी होती है । पापग्रह से युक्त, अथवा दृष्ट हो तो आंखों के रोग, दातों के रोग, राजा, अग्नि तथा चोरों से भय, धनहानि, स्त्री को कष्ट ये फल मिलते हैं । इसी योग में द्वितीय स्थान का स्वामी भी यदि पापग्रह हो तो स्त्री प्राप्त नही होती ।

हमारे विचार---आचार्य, गुणाकार तथा कल्याणवर्मा के अनुसार निकृष्ट भोजनपर सन्तुष्ट होना यह इस मंगल का फल है । यह पुरुष

राशियों के लिए ठीक है। वैद्यनाथ तथा गर्ग का फल भी प्रायः पुरुष राशियों का ही है। गर्ग ने भोगी, प्रवासी, धनवान ये फल कहे है वे स्त्री राशियों के है। आर्यग्रंथ, जीवनाथ, काशीनाथ, जागेश्वर, हिल्लाजातक, यवनमत, बृहद्यवनजातक, घोलप इन के कहे हुए फल स्त्री राशियों में मिलते है। पुत्रवान यह फल पुरुष राशि का है तथा पुत्रहीन स्त्री राशि का। पाश्चात मत में खेती, पशु तथा बिल्डिंग के कामों से लाभ ये फल मिथुन, तुला, कुम्भ के है। मशीनरी, लकडी, कोयला, नाविक व्यवसाय इन में लाभ होना यह फल मेष, सिंह, धनु राशि का है। आरोग्य, वैद्यक से लाभ यह फल कर्क, वृश्चिक मीन का है।

हमारा अनुभव—द्वितीय स्थान में मेष, सिंह, धनु में मंगल हो तो एकदम धन प्राप्त करने की तीव्र इच्छा होती हैं इस लिए सट्टा, लाटरी, रेस, जुआ आदि के मोह में फंसे हुए होते है। परस्त्रियों से इन्हें धनलाभ होता हं किन्तु वह धन उसी व्यसन में खर्च भी हो जाता है। इन्हे खर्च करने का मौका पहले आता है—धन प्राप्ति बाद में होती है। मेष, कर्क, सिंह या मीन लग्न हो और यह वक्री हो तो मिली हुई सब जायदाद नष्ट होती है, नई प्राप्त नही होती। इतना ही नही, प्रपंच के लिए आवश्यक धन भी नही मिलता। धन के लिए बहुत कष्ट होता है, किसी की सहायता नही मिलती। अयोग्य व्यक्तियों के पास भी याचना करनी पडती है, हमेशा अपमान सहना होता है। मुंह के पीछें लोग बहुत निन्दा करते हैं। इस योग में यह वक्री न हो तो थोडा बहुत धन किसी तरह मिल जाता है। इस ग्रह की यह विशेषता है कि या तो एकदम बहुत धन प्राप्त होता है या फिर प्राप्त ही नही होता। स्वभाव उदार होता है। प्रपंच की फिक्र नही होती। थोडे पैसों के लिए तो बहुत विचार करते है किन्तु एकदम बहुत धन व्यय करते समय कुछ विचार नहीं करते। यह स्वराशि में या अग्नि राशि में हो तो पत्नी की मृत्यु होती है। वह भी प्रौढ अवस्था में होती है जब लडकों को सौतेली मा अच्छी नही लगती। किन्तु घरगृहस्थी चलाने के लिए दूसरा ब्याह करना पडता है। इस द्विभार्या योग के उदाहरणस्वरूप दो कुण्डलियां देखिए श्री. ज. वा. जोशी, ज्योतिष ग्रंथों के लेखक, जन्म गुहागर के समीप. ता. १०-१२-१८८४

मार्गशीर्ष कृ. ८ शक १८०६ सूर्योदय । लग्न ७-२२, ४८-५१ । इन के ४ थे वर्ष दादा की, १० वें वर्ष पिता की मृत्यु हुई । १५ वें वर्ष प्रवास तथा ज्योतिष शिक्षा का आरंभ हुआ । १९०३ में पहला ब्याह हुआ, १९०५ में पत्नी की मृत्यु हुई तथा १९१३ में दूसरा ब्याह हुआ । इन ने कई नाटक तथा फिल्म कंपनियों में काम किया तथा कुछ समय निर्णय-सागर प्रेस एवं टिकमदास मिल में भी नौकरी की । नष्टजातक, त्रिरेखा-वेला प्रबोध, ज्योतिष अभ्यासक्रम आदि पुस्तकें इन ने लिखी । धनस्थान के मंगल के फलस्वरूप इन की पूर्वार्जित जायदाद नष्ट हुई तथा दो विवाह हुए (इन की कुण्डली मे लग्न २३ वे अंश में है । इस विषय मे चारुवेल का फलादेश देखिए—इस समय आकाश स्वच्छ नीला तथा तारों से भरा होता है ऐसे व्यक्ति कई गुणों और कलाओं से संपन्न होते है । ये लोग एक जगह अधिक समय नही रहते । प्रवासी, संशोधक, ज्योतिषी, वैज्ञानिक होते है ।) श्री. जोशी के बतलाए फलों में अशुभ फलों का अनुभव जलदी आता था तथा शुभ फल बहुत देर से मिलते थे ।

यह मंगल, वृषभ, कन्या या मकर में हो तो स्त्री की मृत्यु नही होती किन्तु अकारण ही कुछ समय तक विभक्त रहना पडता है । पति पत्नि में प्रेम होता है । दोनों कामुक होते है । कीर्ति मिलती है किन्तु प्राप्ति से अधिक धन खर्च होता है । यह मिथुन, तुला या कुम्भ में हो तो वे लोग पैसा खर्च नही करते, बैंक में इकठ्ठा करके जायदाद खरीदते रहते है । कर्क, वृश्चिक, मीन में धनप्राप्ति होती है और संचय भी होता है । ये लोग संसार में आसक्त नही होते और आगे की फिक्र नहीं करते । इनके कुटुम्ब में अपघात से किसी की मृत्यु होती है । ब्याह देर से होता है, धन प्राप्ति भी देर से होती है । शॉर्ट साइट के कारण इन्हें ऐनक लगानी पडती है । मस्तिष्क गरम रहता है । तीखे पदार्थों की रुचि होती है । ये बहुत खाते है और कामुक होते हैं । स्त्री का सहवास न हो तो इनसे कोई काम ठीक तरह नही होता । लोगों पर इनका प्रभाव जलदी पडता है । व्यवहार साफ होता है । किन्तु दूसरों के पैसे निधि के रूप में रखने से इन पर अनेक आपत्तियां आ सकती हैं । इन्हें बहुत कष्ट और तकलीफ के बाद मुसीबतों का सामना करके ही प्रगति करनी पडती है । किसी का कर्ज

लेकर या उधार माल लाकर निर्वाह करने की प्रवृत्ति इन लोगों ने बिलकुल नही रखनी चाहिए क्यों कि वैसा करने से इन्हें बहुत अपमान सहना पडता है। इनका बोलना तीखा होता है। ये किसी का भी वर्चस्व सहन नही करते। आवाज भर्राया सा होता है। अपने शब्द से ये हमेशा पीछे हटते है। वकीलों के लिए यह योग अच्छा है। अदालत मे इनका प्रभाव पडता है। डॉक्टरों के लिए भी यह योग अच्छा है। इन्हें अच्छा धन मिलता है। इनका निदान जलदी में किया हुआ होकर भी सही होता है। ज्योतिषियों को यह योग बिलकुल अच्छा नही है। इनके कहे हुए बुरे फलों-जैसे मृत्युयोग, दीवालियेपन का योग--का अनुभव जलदी आता है। शुभ फलों का अनुभव जलदी नही आता। लोग कहते है कि इस व्यक्ति की वाणी ही अशुभ है। ऐसे एक व्यक्ति का मुझे स्वयं परिचय हुआ था। कुछ वर्ष पहले कुछ माल लेकर घूम कर बेचने का काम मै करता था। उस समय मेरा ब्याह हुए कुछ ही दिन हुए थे। एक जगह एक व्यक्ति को माल दिखला रहा था कि उसी व्यक्ति ने मेरा चेहरा देख कर कहा कि चार साल बाद तुम्हारी पत्नी मर जायगी और हंसने लगा। तहकीकात करने पर पास के लोगों ने कहा कि इस व्यक्ति की वाणी अशुभ है और इस का कहा हुआ जल्द ही सच्चा होता है। इसी व्यक्ति ने कुछ दिन बाद एक लक्षाधीश को बतलाया कि आयु के २२ वें वर्ष तुम्हें दरदर भीख मांगनी पडेगी। इस व्यक्ति की कुण्डली इस प्रकार थी—जन्म चैत्र अमावास्या, शक १७९९, इष्ट घटी ४४-१५, रात्रि को ११-३०, धनु लग्न-१५ वां अंश, ता. १३-४-१८७७.

लग्न के १५ वें अंश के बारे में चारुबेल का फलादेश इस प्रकार है —इस समय दूरबीन आकाश की ओर होती है। ये लोग वैज्ञानिक, ग्रह-नक्षत्रों के अभ्यासक होते है। धनु लग्न ज्योतिषियों का लग्न है। साथ ही इसके पंचम में रवि, बुध, चंद्र और नेपच्यून तथा धनस्थान में मंगल हैं। अतः यह जो भी अशुभ कहे वही सच्चा होता है। शुभ फल का अनुभव नही आता। उसके कहने के अनुसार चार वर्ष बाद मेरी पत्नी की मृत्यु हुई तथा लक्षाधीश की भी सारी इस्टेट नष्ट होकर पत्नी एक जगह, बच्चे दूसरी जगह, खुद तीसरी जगह ऐसी दशा हुई। इस व्यक्ति ने मुझे जो एक बहुत शुभ फल कहा था उसका भास तो हुआ किन्तु वह मिला नही। इस योग के बिलकुल विपरीत योग स्व. श्री. नवाथेजी की कुण्डली में था। उनके धनस्थान में गुरु स्वगृह में था। वे जो भी शुभ फल कहते थे उसका बहुत अच्छा अनुभव आता था किन्तु मृत्यु या धन-हानि के योगों का फल नही मिलता था। अतः ज्योतिषी को अपने धन-स्थान में जैसे ग्रह हो वैसा शुभ या अशुभ फल कहना चाहिए। अब द्वितीय स्थान के मंगल के शुभ फल का एक उदाहरण देखिए। श्रीमान ड्यूक ऑफ यॉर्क—जन्म ता. १४-१२-१८९५, रात्रि को ३-५, स्थान, लंडन।
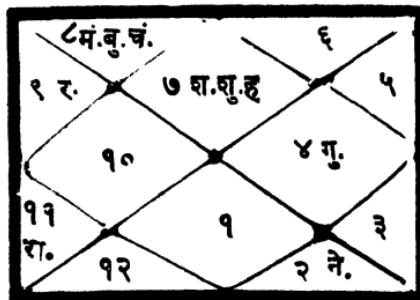
इनके धन स्थान में स्त्री राशि में मंगल है। इससे इन्हें सार्वभौम पद प्राप्त हुआ।

द्वितीय स्थान में वक्री ग्रह की राशि में मार्गी मंगल हो तो वह व्यक्ति अति कामुक होता है ऐसा रट्टमत में कहा है।

तीसरा स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—मतिविक्रमवान् । बुद्धिमान तथा पराक्रमी ।

पराशर—अग्रजं पृष्ठजं हन्ति सहजस्थो धरासुतः । बडे और छोटे भाई की मृत्यु होती है ।

कल्याणवर्मा—शूरोभवत्यधृष्यो मुदान्वितः समस्तगुणभाजनं ख्यातः । शूर, निर्भय, आनंदयुक्त, सर्वगुणसंपन्न, कीर्तिमान ।

आर्यग्रन्थ—कृशतनुसुखभागी तुंगभौमो विलासी । धनसुखनरहीनो नीचपापारिगेहे वसति सकलपूर्णे मन्दिरे कुत्सितश्च । दुबलापतला शरीर, सुखप्राप्ति । यह मंगल उच्च का हो तो विलासी होता है । नीच गृह में, शत्रु गृह में या पापग्रह की राशि में हो तो धन तथा सुख नष्ट होता है । घर अच्छा मिलता है किन्तु स्वभाव कुत्सित होता है ।

वैद्यनाथ—अशठमतिर्दुश्चिक्ययाते । सरल स्वभाव होता है ।

जयदेव—नृपकृपा सुखवित्तपराक्रमी भवयुतोनुजदुःखयुतः । राजा की कृपा, सुख, धन, पराक्रम प्राप्त होते है । छोटे भाई की मृत्यु होती है ।

काशीनाथ, मन्त्रेश्वर तथा जागेश्वर—इनके फल जयदेव के समान ही हैं ।

गर्ग—भगिन्यौ सुभगे द्वे च क्रूरेण निधनं गते । कुमृत्युना भ्रातरौ द्वौ मृतौ शस्त्रादिभिस्तथा ।। दो सुंदर बहिने होती है किन्तु उनकी मृत्यु होती है । दो भाइयों का भी शस्त्रादि के द्वारा घात होता है ।

गोपाल रत्नाकर—यह दरिद्री होता है । इस मंगल के साथ राहु हो तो वह अपनी स्त्री का त्याग करके परस्त्री से व्यभिचार करता है । साहसी, शूर, शत्रु के लिए निष्ठुर तथा संबंधियों की वृद्धि करनेवाला होता है ।

शौनक—पुंवीर्ये खचरे तृतीयभवने दृष्टे च पूर्णेऽथवा । पश्चात् पुत्र-समुद्भवो निगदितः पूर्वं हि कन्योद्भवः ।। सौरिक्षेत्रविनष्ठगर्भकरणं विख्यातमंत्रीश्वरं भौमे । ततीय स्थान में पापग्रह हो, मंगल हो अथवा उस

की पूर्ण दृष्टि हो तो पहले कन्या होती है, फिर पुत्र होता है। यह शनि की राशि में हो तो गर्भपात होता है। यह प्रसिद्ध मंत्री होता है।

बृहद्यवनजातक—कथारतः व्यब्देनुजक्षितिसुतोनुजमुच्चविश्वे ॥ आयु के १३ वें वर्ष छोटे भाई को तकलीफ होती है।

पुंजराज—कुजो वा तदास्थिभंगं विषजं भयं च करोति दाहज्वलनाच्च चिन्हं। हड्डी टूटना, विषबाधा, जलने के दाग रहना।

रामदयाल—पुंजराज के समान ही मत है।

नारायण भट्ट—कुतो बाहुवीर्यं कुतो बाहुलक्ष्मी तृतीयो न चेन्मंगलो मानवानां। सहोत्थव्यथा भण्यते केन तेषां तपश्चर्यया चोपहास्यः कथं स्यात् ॥ बहुत पराक्रम, संपत्ति, तपश्चर्या तथा बन्धुओं से तकलीफ ये इस मंगल के फल हैं।

जीवनाथ—नारायणभट्ट के समान मत है।

घोलप—श्रेष्ठ कवि, शत्रुओं का नाश करनेवाला।

यवनमत—धन, रत्न, वस्त्र तथा गृह की प्राप्ति होती है।

पराशर—विक्रमे भ्रातृमरणं धनलाभः सुखं यशः। भाई की मृत्यु, धन, सुख तथा कीर्ति प्राप्त होना ये फल है।

हिल्लाजातक—त्रयोदशे बन्धु सौख्यं तृतीयः कुरुते कुजः। तेरहवें वर्ष भाई का सुख प्राप्त होता है।

पाश्चात्यमत—गाडी, रेल, वाहन इनसे भय होता है। पडोसियों से तथा सम्बन्धियों से झगडा होता है। किसी दस्तावेज पर दस्तखत करने से अथवा गवाह देने से भयंकर आपत्ति आती है। स्वभाव आग्रही और क्रोधी होता है। बुद्धिमान किन्तु हलके हृदय का होता है। मकर के सिवाय अन्य राशियों में यह मंगल हो तो मस्तकशूल अथवा चित्तभ्रम हो सकता है। यह मंगल अशुभ योग में हो तो सम्बन्धियों से बहुत तकलीफ, प्रवास में तकलीफ तथा दारिद्र्य ये फल मिलते है।

अज्ञात—स्वस्त्री व्यभिचारिणी । शुभदृष्टे । न दोषः अनुजहीनः । द्रव्यलाभः । राहुकेतुयुते वेश्यासंगमः । भ्रातृद्वेषी क्लेशयुक्तः सुभगः अल्पसहोदरः । पापयुते पापवीक्षणेन भ्रातृनाशः उत्पाद्य सद्योनिहतः । उच्चे स्वक्षेत्रे शुभयुते वा भ्राता दीर्घायुः मतिधैर्यविक्रमवान् । युद्धे शूरः । पापयुते मित्रक्षेत्रे धृतिमान् । नृपमानः रिपुनाशः निरंकुशः नित्यमहोत्सवः ॥ पत्नी व्यभिचारिणी होती है । शुभग्रह की दृष्टि हो तो यह फल नही मिलता । छोटे भाई नही होते । धन लाभ होता है । साथ में राहु हो तो वेश्यागमन करता है । भाईयों का द्वेष , तकलीफ, सुंदरता, भाई कम होना ये फल मिलते है । पापग्रह साथ में हो या उसकी दृष्टि हो तो भाईयों का नाश होता है, जन्मतेही मर जाते है । मकर, मेष या वृश्चिक में हो अथवा शुभ ग्रह से युक्त हो तो भाई दीर्घायुषी होते है तथा बुद्धिमान, धैर्यशाली एवं पराक्रमी होते है, युद्ध में विशेष शौर्य बतलाते है । यह पाप ग्रह से युक्त होकर किसी मित्र ग्रह की राशि में हो तो वह व्यक्ति सोचविचार करनेवाला, प्रबल धारणाशक्ति से युक्त होता है । राजमान्यता प्राप्त होकर शत्रुओं का नाश होता है । किसी का वर्चस्व सहन नही होंता । अपनी ही इच्छा से कार्य करता है । इसके घर नित्य ही आनंदकारक घटनाएँ होती रहती है ।

मेरे विचार---तृतीय स्थान पराक्रम स्थान है । इसमें शास्त्रकारोंने सब शुभ फलों की योजना की है । किन्तु सभी शास्त्रकारों ने बन्धु का घात होना यह अशुभ फल भी कहा है । आचार्य, गुणाकर आदि ने जो यह फल कहा है इसका अनुभव स्त्री राशियों में आता है । सुख न मिलना यह फल पुरुष राशियों का है । हिल्लाजातक, बृहद्यवनजातक, पुंजराज, गर्ग, शौनक, रामदयाल, वैद्यनाथ तथा पाश्चात्य इनके फलादेश भी पुरुष राशियों के है । तृतीय के मंगल के उदाहरण स्वरूप एक कुण्डली—ड्यूक ऑफ विंडसर—जन्म ता. २३–६–१८९५, रात्रि को १०, लंडन ।

इनके तृतीय में राहु कें साथ मंगल है अतः एक स्त्री के मोह से राज्य छोड दिया । पंचम में गुरु, शुक्र तथा नेपच्यून की युति भी इसमें कारण हुई है । यह तृतीय का मंगल जलराशि में है इसलिए छोटे बन्धु
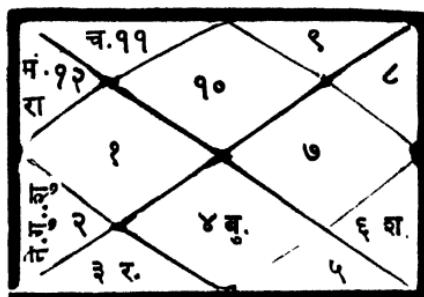
की स्थिति अच्छी रही। इस विषय का एक श्लोक इस प्रकार है—भ्रातृदो स्त्रीग्रहर्क्षस्थो भ्रातृदो पुंग्रहर्क्षगो। सोदरेशकुजो स्यातां भ्रातृस्वसृसुखप्रदो॥ मंगल स्त्रीग्रह की राशि में हो तो बन्धुओं का सुख मिलता है। पुरुष ग्रह की राशि में हो तो बहनों का सुख मिलता है।

मेरे अनुभव—यह मंगल पुरुष राशि में हो तो माता की मृत्यु होकर सौतेली मां आती है। मकर के सिवाय अन्य स्त्री राशि में हो तो बडे और छोटे भाई जीवित रहते है। पुरुष राशि में हो तो छोटा भाई बिल्कुल नही होता। बहिन होती है या फिर गर्भपात ही होता है। छोटी बहिन के बाद छोटा भाई हो तो जीवित रह सकता है। भाई के साथ इसके सम्बन्ध अच्छे नही रहते। बंटवारा हो जाता है। किन्तु अदालत में जाकर नही होता। यह मंगल पुरुष राशि में हो तो अदालत में झगड कर विभक्त होना पडता है। यह मेष, मकर या वृश्चिक में हो तो जीवन में स्थिरता नही होती। अति सत्यप्रिय होने से लोगों को अप्रिय होता है। स्त्री राशि में साधारणतः स्वार्थी और धूर्त स्वभाव होता है। इस्टेट छोडनी पडती है। घरबार की चिन्ता नही होती।

चौथा स्थान

आचार्य तथा गुणाकर— विसुखः पीडितमानसश्चतुर्थे। सुख नही मिलता, मनको पीडा होती है।

कल्याणवर्मा--बन्धुपरिच्छदरहितो भवति चतुर्थेर्थवाहनविहीनः । अतिदुःखैःसंतप्तः परगृहवासी कुजे पुरुषः ।। आप्त परिवार नही होता, धन या वाहन नही मिलता, दूसरों के घर रहना पडता है और बहुत दुःख होता है ।

गर्ग--कुजे बंधौ भूम्याजीवो नरः सदा । भूमि पर आजीविका (खेती) करता है ।

काशीनाथ--चतुर्थे भूसुते कृष्णः पित्ताधिक्योरिर्निर्जितः । वृथाटनो हीनपुत्रो महाकामी च जायते । काले वर्ण का, पित्त प्रकृति का तथा शत्रुओं द्वारा पराजित होता है । अकारण प्रवास करना, पुत्र न होना तथा अति कामुकता ये फल मिलते है ।

जागेश्वर--सभौमे विदग्धं, विभग्नं, यदा मंगले तुर्यभावं प्रपन्ने सुखं किं नराणां तथा मित्रसौख्यम् । कथं तत्र चिन्त्यं धिया धीमता वा परं भूमितो लाभभावं प्रयाति ।। टूटा फूटा घर होता है तथा वह भी जलता है । मित्रों का तथा अन्य किसी प्रकार का सुख नही मिलता । बुद्धि नही होती किन्तु जमीन से कुछ लाभ होता हैं ।

वैद्यनाथ--स्त्रीनिर्जितः शौर्यवान् । नीचेऽरातौ कुजे सुखे स्यादगृहो नरः ।। स्त्री के अधीन, शूर होता है । खुद का घर नही होता ।

बृहद्यवनजातक--दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रवासात् कलेवरे रुग्बलता-बलित्वं । प्रसूनिकाले किल मंगलेस्मिन् रसातलस्थे फलमुक्तमाद्यैः ।। मित्र, वाहन, प्रवास इनसे दुख होता है । शरीर में बहुत रोग तथा दुर्बलता एवं प्रसूति के समय कष्ट होता है । असृगष्टसहोदरार्तिम् । आठवें वर्ष भाई को कष्ट होता है ।

आर्यग्रन्थ--जडमतिररतिदीनो बंधुसंस्थे च भौमे न भवति कुल आर्य-बंधुहीनोतिदुःखी । भ्रमति सकलदेशे नीचसेवानुरक्तः परवशपरदारे लुब्धन चित्तः सदैव ।। मंदबुद्धि, हीन अपने कुल मे या बडे बूढों के साथ न रहने वाला, बंधुहीन, दुःखी, सब प्रदेशों में घूमनेवाला, नीच लोगों की सेवा करनेवाला, दूसरों के अधीन रहनेवाला, परस्त्रियों में आसक्त होता है ।

मन्त्रेश्वर—विमातृ–माता का वियोग होता है।

पराशर—चतुर्थे बन्धुमरणं शत्रुवृद्धिर्धनव्ययः। भाई का मृत्यु, शत्रुओं में वृद्धि तथा धन की हानि ये इस मंगल के फल है।

जयदेव—असुखवाहनधान्यधनो जनो विकलधीः सुखगे सति भूसुते। वाहन, धनधान्य, बुद्धि, सुख इनमें से कुछ भी प्राप्त नही होता।

वसिष्ठ—भौमः सुचिरं चतुर्थे। वस्त्र अच्छे होते है।

पुंजराज—आरः सबलश्चतुर्थे पित्तज्वरो वा व्रणरुग्जनन्याः। भवेन्नितान्तं मनुजो व्रणार्तः पार्श्वेथवारे दहनेन दग्धः॥ यह बलवान हो तो माता को पित्तज्वर अथवा व्रणरोग होता है। शरीर मे व्रण होते है। खास कर पीठ में या जलने से व्रण होते है। मातामहस्य पक्षेपि विषशस्त्रकृता व्यथा। इसकी माता के पिता के घर के लोगों को विष या शस्त्रों से कष्ट होता है।

रामदयाल—पुंजराज के समान ही मत है।

नारायण भट्ट—कृपावस्त्रभूमिर्लभेत् भूमिपालात्। राजा की कृपा से वस्त्र तथा जमीन प्राप्त होती है।

घोलप—विदेश में बहुत कष्ट होता है।

गोपाल रत्नाकर—मां बाप को शारीरिक तथा आर्थिक कष्ट होते है। यह मंगल सौम्य हो तो नरवाहन (मनुष्यों द्वारा चलाए जानेवाले रिक्षा, पालकी आदि वाहन) का सुख मिलता है। घर के रहस्य बाहर ज्ञात नही होते। यह पराधीन होता है तथा स्त्री का घात करता है।

हिल्लाजातक—चतुर्थो बंधुहानिश्च हायने चाष्टमे ध्रुवं। आठवें वर्ष भाई की मृत्यु होती है।

यवनमत—यह मंगल बलवान न हो तो वृद्धावस्था मे बहुत तकलीफ होती है। मातापिता के साथ विरोध होता है। घर की झंझटों में व्यस्त रहता है। घर गिरना या आग लगने का भय होता है। स्वभाव उद्धत

होता है। हाथ पैर लंबे होते है। यह युद्ध में विजयी किन्तु निर्दय तथा ऋणग्रस्त होता है।

पाश्चात्य मत—बहुत घूमनेवाला, झगडालू, मां-बाप का घात करने वाला तथा सुखहीन होता है। यह शुभ सम्बन्ध में हो तो जीवन में कभी दुखी नही होता। इसके व्यवहार में झंझटे और झगडे बहुत होते हैं। यह पागल जैसा होता है और बहुत गलतियां करता है। साहसी और दुराग्रही होता है। इस पर पापग्रह की दृष्टि हो या पापग्रह से युक्त हो तो दुर्घटनाओं का भय होता है।

अज्ञात—गृहच्छिद्रम्। अष्टमे वर्षे पितृरिष्टं। मातृरोगी। सौम्ययुते परगृहवासः। शरीरकष्टं क्षेत्रहीनः। धनधान्यहीनः। जीर्णगृहवासः। उच्चे स्वक्षेत्रे शुभयुते मित्रक्षेत्रे वाहनवान् क्षेत्रवान् मातृदीर्घायुः। नीचर्क्षे पापंमृत्ययुते मातृनाशः। बंधुजनद्वेषी स्वदेशपरित्यागी वस्त्रहीनः बंधुरहितः शौर्यवान् स्त्रीभिर्जितः॥ घर में अयोग्य घटनाएं बहुत होती है। आठवें वर्ष पिता का मृत्यु तथा माता को रोग होना ये फल होते है। बुध के साथ हो तो दूसरों के घर रहना पडता हैं। शरीर को कष्ट होते है। धनधान्य, घरबार नही होता। टुटे फुटे घर में रहना पडता है। मेष, वृश्चिक या मकर में शुभ ग्रह से युक्त हो अथवा मित्र ग्रह की राशि में हो तो वाहन तथा खेतीवाडी का सुख मिलता है तथा माता दीर्घायुषी होती है। कर्क राशि में तथा अष्टमेश से युक्त हो तो माता की मृत्यु होती है। भाईबंदों का द्वेष करता हैं, स्वदेश का त्याग करता है। शूर किन्तु स्त्रियों के अधीन होंता है।

मेरे विचार—जमीन, घरबार, खेतीबाडी इनका कारक मंगल माना है किन्तु यह ठीक प्रतीत नही होता क्योंकि इस इस्टेट का मंगल द्वारा नाश ही होता है। इस ग्रह का स्वभाव नाशकारी ही है। अपनी बुद्धिमत्ता विशेष नही होती। अग्नि जिस तरह सभी को जलाती है—यह आदमी, यह जानवर ऐसा भेद नही करती—उसी तरह मंगल नाश करता है। आचार्य, गुणाकर, काशीनाथ, कल्याणवर्मा, जागेश्वर (भूमि लाभ

का फल छोडकर), बृहद्यवनजातक, आर्यग्रंथ, मंत्रेश्वर, जयदेव, पुंजराज, रामदयाल, घोलप, गोपाल रत्नाकर, हिल्लाजातक, पराशर, यवन तथा पाश्चात्य इन सभी ने चतुर्थ के मंगल के फल नाशरूप बतलाये है। ये फल पुरुष राशियों के है। अन्य आचार्यों के शुभ फल है वे स्त्री राशियोंके है।

मेरा अनुभव--इसे संपत्ति का सुख तो मिलता है किन्तु संतति नही होंती। हुई तो कष्टदायक होती है। इसका उत्कर्ष २८ वें वर्ष से ३६ वें वर्ष तक होता है। बाद में खा-पीकर सुख से रहता है। व्यवसाय अनेक होते है। मेष, कर्क, सिंह या मीन लग्न हो और चतुर्थ मे मंगल हो तो माता का मृत्यु अथवा द्विभार्या योग नही होता। क्योंकि ऐसी स्थिति में मंगल कर्क, तुला, वृश्चिक या मिथुन में होता है। अन्य राशियों में मातापिता के मृत्यु तथा द्विभार्या योग ये फल मिलते है। सौतेली मां आ सकती है। आठवें, १८ वें २८ वें, ३८ वें तथा ४८ वें वर्ष शारीरिक आपत्ति आती है। इसका उत्कर्ष जन्मभूमि में नही होता, वहां बहुत कष्ट होते है। जन्मभूमि छोडकर दूर रहने से उत्कर्ष होता है। इसकी पैतृक इस्टेट नही होती। हुई भी तो उसका उपयोग जीवन भर नही होता। अपने कष्ट से ही घरबार प्राप्त करना पडता है। यह मंगल अग्नि राशि में हो तो घर को आग लगती है। अपना घर बनवा कर आखिरी दिन वही बिताने की प्रबल इच्छा होती है। मंगल, कर्क, तुला, वृश्चिक, मिथुन में हो तो ही यह इच्छा सफल होती है। किन्तु मृत्यु अपने घर में नही होता। (इसके उदाहरण स्वरूप लोकमान्य तिलक की कुण्डली देखना चाहिए।) इस स्थान के मंगल से पहले पुत्र की मृत्यु होती है। अदालत में यश मिलता है। मित्र बहुत होते है और उनसे लाभ भीं होता है। स्त्रियों से लाभ होता है। मृत्यु के समय कारोबार अच्छी स्थिति में होता है तथा मृत्यु के समय विशेष तकलीफ नही होती। इसके पूर्वजों ने किसी गरीब की जायदाद का अपहरण किया होता है या देवी या गणपति की उपासना बंद कराई होती है जिसके फलस्वरूप इसके घर में सदा ही असमाधान बना रहता है। स्त्री का मृत्यु, माता का मृत्यु, जायदाद न मिलना ये फल मिलते है। इस मंगल के उदाहरण स्वरूप एक कुण्डली--

श्री. बलवंत रामचंद्र गोखले, कल्याण, जन्म ता. ३-१०-१८९०, स्थान बेलगांव, सूर्योदय के समय।

इन ने पोस्ट डिपार्टमेंट में सर्विस की। धर्मनिष्ठ, स्नान संध्या, देवपूजा आदि नियमपूर्वक करते थे। इन के मातापिता की जलदी ही मृत्यु हुई तथा विवाह भी अनेक हुए। पहली पत्नी का पुत्र भी जीवित नही रहा। कई कन्याओं के बाद सन १९३८ में एक पुत्र हुआ। अपना घरबार नही हुआ। ये अच्छे ज्योतिषी थे।

पांचवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—असुतो धनवर्जितः। पुत्रहीन, दरिद्री होता है।

कल्याणवर्मा—सौम्यार्थपुत्रमित्रं चपलमतिः पंचमे कुजे भवति। पिशुनोनर्थप्रायः खलश्च विकलो नरो नीचः॥ थोडा धनलाभ तथा पुत्र और मित्रों का सुख मिलता है। बुद्धि चंचल होती है। दुष्ट, अनर्थ करने वाला, किसी अवयव से विकल और नीच होता है।

वैद्यनाथ—क्रूरोटनश्चपलसाहसिको विधर्मा भोगी धनी च यदि पंचमगे धराजे॥ क्रूर, प्रवासी, साहसी, चपल, धर्महीन, भोगी और धनवान होता है। पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोवनेर्यच्छति। पुत्र की मृत्यु होती है।

गर्ग—रिपुदृष्टो रिपुक्षेत्रे नीचो वा पापसंयुतः। भूमिजः पुत्रशोकार्ति करोति नियतं नृणाम्॥ यह शत्रुग्रह की राशि में नीच राशि में, पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो पुत्र की मृत्यु नियम से होती है।

जागेश्वर—महीजे सुते चेत् तदासौ क्षुधावान् कफैर्वातगुल्मैः स्वयं पीड्यतेसौ । परं वै कलत्रात् तथा मित्रतोऽपि भवेद् दुःखितो मित्रतश्चापि नूनम् ।। यदा मंगलः पंचमे वै नराणां तदा सन्ततिर्जायते नश्यते वा । इसे भूख बहुत होती है । कफ तथा वातगुल्म रोग से पीडा होती है । स्त्री, मित्र तथा शत्रुओं से कष्ट होता है । सन्तान होती हैं किन्तु मर जाती है ।

बृहद्यवनजातक—कफानिलव्याकुलता कलत्रान् मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः । मतिर्विलोमा विपुलो जयश्च प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ।। इस में जागेश्वर जैसा ही वर्णन है । सिर्फ दो बातें अधिक है—बुद्धि विपरीत होना तथा बहुत जय प्राप्त होना । षष्ठोग्निभीतिर्धरणीजः । छठवें वर्ष आग का भय होता है ।

काशीनाथ—पंचमस्थे धरासूनौ कुसन्तानः सदारुजः । बंधुवर्गैर्विरक्तश्च नरो बुद्धिविवर्जितः ।। सन्तान दूराचरणी होती है । रोग बहुत होते है । भाईबदों का सम्बन्ध नही चाहता । बुद्धिहीन होता है ।

मन्त्रेश्वर—विसुखोऽतनयोऽनर्थप्रायः सुते पिशुनोऽल्पधीः । पुत्रसुख नही होता, अनर्थ करता है, दुष्ट तथा बुद्धिहीन होता है ।

आर्यग्रंथ—तनयभवनसंस्थे भूमिपुत्रे मनुष्यो भवति तनयहीनः पापशीलोऽतिदुःखी यदि निजगृहतुंगे वर्तते भूमिपुत्रः कृशकमलनिकेतं पुत्रमेकं ददाति ।। पुत्रहीन, पापी और दुःखी होता है । यदि यह मंगल मेष, वृश्चिक या मकर का हो तो एक दुबला पतला लडका होता है ।

पुंजराज—भौमेग्निशस्त्रव्यथा प्रोक्तांगेषु मृतप्रजास्तु नितरां स्यान्मानवो दुःखितः । अग्नि से या शस्त्र से दाहिने पैर को जखम होती है । सन्तति जन्मते ही मरती है । बहुत दुःखी होता है ।

जयदेव—जागेश्वर के समान मत है ।

जीवनाथ—अपत्ये क्ष्मापुत्रे भवति जठराग्निप्रबलता न सन्तानो जीवत्यपि यदि च जीवत्यपि गदी । सदान्तः सन्तापः खलमतिरनल्पाघनिचये कृतेपि स्वर्गाप्तिर्न हि जनिवतामर्थनिवहः ।। भूख बहुत तेज होती है । सन्तान जीवित नही होती, रही तो रोगी होती है । मन में बहुत सन्ताप

होता है। बुद्धि पापयुक्त होती है। शुभ कर्म हो भी तो स्वर्ग नही मिलता। धन भी नही मिलता।

नारायणभट्ट---जीवनाथ के समान ही मत है।

घोलप---काले वर्ण का, सजा भोगनेवाला, व्यभिचारी, राजनीतिक झगडों के कारण कुटुम्बीयों के साथ विदेश में रहनेवाला, लाल आंखों का, मूर्ख, मूर्खों की संगति में रहनेवाला, वातपित्तरोगों से युक्त, वंध्या स्त्री का पति ऐसा यह व्यक्ति होता है।

गोपाल रत्नाकर---अभागी, राजकोप से दुःखी होनेवाला। बच्चे मरे हुए उत्पन्न होते है।

हिल्लाजातक---पंचमः पंचमे वर्षे बंधुनाशकरः कुजः। पांचवें वर्ष बन्धु की मृत्यु होती है।

यवनमत---कम बोलता है। पुत्र, संपत्ति, नौकरी इन से इसे दुख होता हैं। इज्जत नही रहती। क्रोधी तथा पेट के विकारों से एवं कफ तथा वायुरोग से बीमार रहता है।

पाश्चात्य मत---इस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो सट्टे के व्यापार में बहुत नुकसान होता है। पुत्र उद्धत होते है। उन के अकस्मात मरने का डर होता हैं। धन और स्त्री का सुख मिलता है। शराब का व्यसन होता है। कुटुम्ब में शान्ति नही रहती। स्वभाव खर्चीला होता है। उच्च या स्वगृह में यह मंगल हो तो अथवा शुभ ग्रह की इस पर दृष्टि हो तो सट्टा, लाटरी, रेस आदि में बहुत यश मिलता है। कफ, वायु तथा पित्त विकार होते हैं। बहुत प्रवास करता है।

पराशर---पंचमे पितृहानिं च धनायतिसुतौ यशः। पिता का मृत्यु होता है किन्तु धन, संतति तथा कीर्ति प्राप्त होती है।

लोमश संहिता---अर्को राहुः कुजः सौरिर्लग्ने तिष्ठति पंचमे पितरं मातरं हन्ति भ्रातरं च शिशून् क्रमात्॥ लग्न में या पंचम में हो तो रवि से पिता का, राहु से माता का, मंगल से भाई का एवं शनि से बच्चों का मृत्यु होता है।

अज्ञात--निर्धनः पुत्राभावः दुर्मार्गी राजकोपः षष्ठवर्षे आयुधेन किंचिद्दण्डकालः दुर्वासनाज्ञानवान् मायावादी तीक्ष्णधीः। उच्चे स्वक्षेत्रे पुत्रसमृद्धिः अन्नदानप्रियः राज्याधिकारयोगः शत्रुपीडा। पापयुते पापक्षेत्रे पुत्रनाशः। बुद्धिभ्रंशादिरोगः। रन्ध्रेशे पापयुते पापी वीरः। दत्तपुत्रयोगः। पुत्रार्तिः दुर्मतिः। स्वजनैर्वादः उदरे व्याधिः। पत्नीकष्टम्॥ दरिद्री, पुत्रहीन, दुराचरणी, राजकोप को पात्र होता है। छठवें वर्ष शस्त्र से पीडा होती है। बुरी वासनाएं होती है। ज्ञानी, किन्तु प्रत्यक्षवादी संसारवादी (मटीरिअलिस्ट), तीक्ष्ण बुद्धि का होता है। मकर, मेष या वृश्चिक में हो तो पुत्र बहुत होते है, अन्नदान करता है, अधिकारी होता है। शत्रुओं से कष्ट होता है। पाप ग्रह की राशि में या उस से युक्त हो तो पुत्रनाश होता है। बुद्धिभ्रंश आदि रोग होते है। षष्ठ स्थान के स्वामी से युक्त हो तो पापी किन्तु शूर होता है। पुत्रशोक होता है। दत्तक पुत्र लेना पडता है। बुद्धि पापयुक्त होती है। अपने लोगों के साथ झगडा करता है। पेट में रोग और पत्नी को कष्ट होता है।

मेरे विचार----शास्त्रकारों ने प्रायः बुरे फल कहे है वे पुरुष राशियों के है। जो कुछ अच्छे फल कहे वे मकर को छोड कर अन्य स्त्री राशियों के है। पराशर के सिवाय अन्य सभीने अशुभ फल कहे है। व्यवसाय में नुकसान, पुत्र उद्धत होना, अकस्मात पुत्रमृत्यु, व्यसनाधीन होना, कुटुम्ब में अशान्ति, भाई और पिता का मृत्यु, पुत्र न होना या होकर मरना, गर्भपात, बुद्धिहीनता, दुष्टता, दारिद्र्य, आग तथा शस्त्रों से भय, क्रूरता, प्रवास, साहस, चपलता, वात, कफ तथा गुल्मरोग, स्त्रीपुत्रों से तकलीफ, विपरीत बुद्धि, तीव्र भूख, पापकर्मो में रुचि, सजा, मूर्खता, मूर्खों की संगति, कम बोलना, नौकरी में सुख न होना, धनलाभ न होना, इज्जत न होना, क्रोधी स्वभाव, अनर्थप्रियता, ये सब पापफल पुरुष राशियों के तथा मकर राशि के है। विपुल जय यह बृहद्यवनजातक का फल तथा पाश्चात्य मत का वैभव एवं स्त्रीसुख का फल, सट्टे में लाभ ये शुभ फल स्त्री राशि-योंके है। पराशर ने पिता को मारक यह फल कहा। किन्तु पंचम स्थान पिता का स्थान नही है तथा मंगल पिता का कारक नही है। अतः इस

की उपपत्ति नही बैठती । शायद दशमस्थान से यह आठवां स्थान है इस लिए यह फल कहा हो ।

मेरा अनुभव--मकर को छोड अन्य स्त्री राशियों में तथा मिथुन राशि में इस मंगल से पुत्र सन्तति होती है और जीवित भी रहती है । किन्तु पहला पुत्र मरता है । अन्य राशियों में गर्भपात, मरा हुआ बच्चा पैदा होना या पांच वर्ष के पहले ही मर जाना ये प्रकार होते है । माता के पूर्वजन्म के दोषों के कारण ऐसा होता है । इस विषय में दो श्लोक इस प्रकार है---आद्ये चतुष्के जननीकृताघैर्मध्ये तु पित्रार्जितपापसंघैः । बाल· स्त्वन्त्यासु चतुःशरत्सु स्वकीयदोषैः समुपैति नाशम् ।। आद्वादशाब्दान्तर-योनिजन्मनामायुष्कला निश्चयितुं न शक्यते । मात्रा च पित्रा कृतपापकर्मणा बालग्रहैर्नाशमुपैति बालकः ।। ऐसे समय माता की कुण्डली देख कर या उसे स्वप्न दीखते है उससे फल का ज्ञान कर लेना चाहिए (इसके सम्बन्ध में परिशिष्ट देखिए ।) सन्तति होती ही न हो तो स्त्री को सन्तति प्रति-बंधक रोग भी हो सकते है । मासिक धर्म ठीक न होना, उस समय पेट में तकलीफ होना, सन्धियों में दर्द होना, संभोग के समय बहुत कष्ट होना, प्रदर होना, ये रोग हो सकते है । स्त्री राशि में यह मंगल हो तो तीन लडके होते है । वे दुराचारी होते है । पहली कन्या हुई तो जीवित रहती है । पराशर के कहे हुए पितृनाश के फल के बारे में मेरा अनुभव इस प्रकार है---लग्न, धन, चतुर्थ, पंचम तथा षष्ठ इन स्थानों में पाप ग्रह हो तो पिता का मृत्युयोग होता है । तृतीय स्थान में पापग्रह हो तो माता का मृत्युयोग होता है । इसी प्रकार सप्तम, नवम, अष्ठम, दशम तथा व्यय स्थान के पापग्रह भी माता की मृत्यु को कारण होते है । पराशर का एक और श्लोक इस प्रकार है---सूर्येण वेश्मस्थानेन पितुर्मृतिपदं वदेत् । चंद्रेण पंचमेनैव मातुर्मृतिपदं वदेत् ।। सूर्य से चौथे स्थान का विचार कर पिता का मृत्यु कहना चाहिए तथा चंद्र से पांचवें स्थान का विचार कर माता का मृत्यु कहना चाहिए । इसी प्रकार ग्यारहवें स्थान से बन्धु के मृत्यु का विचार योग्य बतलाया है । इस स्थान में स्त्री राशि में मंगल हो तो धन ज्यादा नही मिलता किन्तु कीर्ति प्राप्त होती है । मेष, सिंह, या धनु राशि

में हो तो सेना, पुलिस, फॉरेस्टरी, इंजीनियरिंग, विमान विद्या, मोटर ड्राईविंग, टेक्नालजी इन विभागों में शिक्षा प्राप्त होती है। वृषभ, कन्या या मकर राशि में हों तो सर्वे, भूमिति, ओवरसियर, टेलरिंग ये शिक्षाएं प्राप्त होती है। मिथुन, तुला, कुम्भ में हो तो वैद्यक, डॉक्टरी, फौजदारी कानून ये शिक्षाएं मिलती है। कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो सर्जरी, इतिहास, रंग काम आदि की शिक्षा मिलती है। यहां मंगल बलवान हो तो वे विद्यार्थी सन्मानपूर्वक (ऑनर्स कक्षा में) उत्तीर्ण हो सकते है। पंचम में मंगल होना यह कीर्तियोग है। श्री. भाटे बुवा, स्वर्गीय दादासाहब खापर्डे इनकी कुण्डलियों में पंचम में मंगल है। बरताव व्यवस्थित तथा स्वभाव मिलनसार होता है। ब्याह देर से होता है। आवाज मधुर किन्तु स्त्री जैसा होता है। हिज मास्टर्स व्हाइस कंपनी के एक अच्छे गायक श्री. जी. एन्. जोशी की कुण्डली में पंचम में मकर का मंगल है। ब्याह देरसे किन्तु अन्य जातीय लडकी से हुआ (जन्म ता. ६-४-१९०९। इस योग पर जो अधिकारी रिश्वत लेते है वे बहुत जलदी पकडे जाते है। ये लोग शृंगारकुशल, कामशास्त्रज्ञ होते है। स्त्रियां इन पर प्रसन्न रहती है। सदा अग्रणी रहने की और सन्मान पाने की इच्छा तीव्र होती है। खर्च बहुत करते है और वह भी ऐश के लिए। व्यभिचारी भी हो सकते है। मधुर आवाज के उदाहरण स्वरूप एक कुण्डली देखिए। कुमार गन्धर्व— जन्म ता. ८-४-१९२४ शक १८४५ चैत्र शु. ४ मंगलवार दोपहर को ३-४५ स्थान सुलेगाव (अक्षांश १५-५०, रेखांश ७४-५०)।
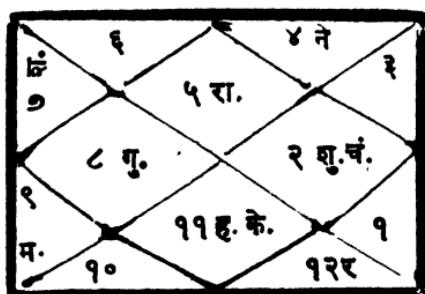
पंचम में मंगल तथा लग्न में राहु होने से बचपन से ही गाने की ओर प्रवृत्ति हुई। मधुर आवाज से प्रसिद्धि भी प्राप्त हुई। चंद्र से राहु चौथा है अतः पूर्व संस्कारों का भी फल मिला। इनके पिता भी गायक थे। पंचम का मंगल किसी भी राशि में हो यह प्रसिद्धियोग होता है। विदेश-यात्रा होती है। डॉक्टरों के लिए यह योग अच्छा है। इन्हें पेट के रोग (अपेंडिसाइटिस, लिवर, स्प्लिन), टॉन्सिल ज्वर तथा गुप्त रोगों की चिकित्सा अधिक करनी पडती है और वे उसमें यशस्वी भी होते है। वकीलों की कुण्डली में यह योग हो तो उन्हें झगडे, गालीगलोज, ठगना आदि व्यवहारों में काम करना पडता है। यह पुरुष राशि में हो तो पुरुषों से और स्त्री राशिमें हो तो स्त्रियों से सम्बन्ध अधिक रहता है। इस स्थान के मंगल से द्विभार्या योग होता है तथा कामुकता अधिक होती है। इस योग के डॉक्टर गरीब लोगों से प्रेम, दया तथा सहानुभूति का बरताव करते है। ये डॉक्टर तथा वकील अपने विषय को जलदी तथा अच्छी तरह समझ लेते है। लोगों पर इनका प्रभाव अच्छा पडता है। ये मधुर भाषी, मिलन-सार किन्तु अभिमानी भी होते है। इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिर्विद का मत इस प्रकार है—इसका स्वभाव उत्साही, क्रियाशील, विधायक तथा प्रेरक होता है। यह ग्रह शक्ति, विस्तार तथा ओज का प्रतिनिधि है। स्वतन्त्रता इसे प्रिय होती है। बन्धन, कैद या देरी इसे सहन नही होती। यह उदार, खुले दिल का, शूर, तथा धैर्यशाली होता है। आत्म-विश्वास के साथ नियमित कार्य करके यह यश प्राप्त करता है। किन्तु इन्हें साहस तथा गरम मिजाज से सावधान रहना चाहिए। क्योंकि इनकी प्रवृत्ति ही आक्रमक तथा अपनी इच्छानुसार चलने की होती है। अतः साहस से विपत्ति की सम्भावना है। ये बहुत अभिमानी होते है। बात बात पर बिगडते है और उत्तेजित होने पर संयम और शान्ति को भूल जाते है। ये थोडे समय में बहुत कार्य कर सकते है। ये यदि थोडा आत्म-संयम करे तो समर्थ तथा योग्य कार्यकर्ता बन सकते है।

छठवां स्थान

पराशर---षष्ठे रिपुसमृद्धि च जयं बन्धुसमागमम् अर्थवृद्धि। शत्रु बहुत होते है। जय प्राप्त होता है। सम्बन्धियों से मेलमिलाप होता है। धन की वृद्धि होती है।

आचार्य---बलवान् शत्रुजितश्च शत्रुयाते। बलवान, शत्रुओं को जीतनेवाला होता है।

गुणाकर---आचार्य के समान मत है। यह स्वामी होता है--सेवकों से काम कराता है। खुद नौकरी नही कर सकता।

वैद्यनाथ---स्वामी रिपुक्षयकरः प्रबलोदराग्निः श्रीमान् यशोबलयुतोऽवनिजे रिपुस्थे। स्वामी, शत्रुओं का नाश करनेवाला, धनवान, कीर्तिमान तथा बलवान होता है। भूख तेज होती है।

कल्याणवर्मा--प्रबलमदनोदराग्निः सुशरीरो जायते बली षष्ठे। रुधिरे सम्भवति नरः स्वबन्धुविजयी प्रधानश्च॥ कामुक, तीव्र भूखवाला, सुन्दर अपने सम्बन्धियों पर विजय पानेवाला तथा मुख्य होता है।

आर्यग्रंथ--रिपुगृहगतभौमे संगरे मृत्युभागी सुतधनपरिपूर्णस्तुंगगे सौख्यभागी। रिपुगणपरिदुष्टे नीचगे क्षोणिपुत्रे भवति विकलमूर्तिः कुत्सितः क्रूरकर्मा॥ यहां मृत्युभागी शब्द का अर्थ युद्ध में मृत्यु पानेवाला ऐसा है किन्तु इस विषय में हमें सन्देह है। पुत्र तथा धन से युक्त होता है। उच्च का हो तो सुख मिलता है।नीच अथवा पापग्रह से युक्त अथवा शत्रु ग्रह की राशि में हो तो दुर्बल, निन्दनीय तथा क्रूर होता है।

जागेश्वर---महीजो यदा शत्रुगो वै नराणां तदा जाठराग्निर्भवेद् दीप्ततेजाः सदा मातुले दुःखदायी प्रतापी सतां संगकारी भवेत् कामयुक्तः॥ भूख तेज होती है। मामा को दुख देता है। पराक्रमी, सत्संगति में रहनेवाला और कामुक होता है।

बृहद्यवनजातक--प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषाद् रोषावेशः शत्रुवर्गेऽपि शान्तिः। संद्भिः संगो धर्मधीः स्यान्नराणां गोत्रैः पुण्यस्योदयो भूमिसूनौ॥

बहुत क्रोधी होता है। शत्रु शान्त होते है। सत्संगति तथा धार्मिक बुद्धि होती हैं। अपने कुटुम्बीयों की उन्नति कराता है। भौमो वै जिनसंमिते प्रददते पुत्रं च—२४ वें वर्ष पुत्र होता है।

काशीनाथ—षष्ठे भौमे शत्रुहीनो नानार्थैः परिपूरितः। स्त्रीलालसः पुष्टदेहः शुभचित्तश्च जायते ॥ शत्रु नही होते। धनधान्यसंपन्न, स्त्री मे आसक्त, पुष्ट शरीर का तथा शुभ अन्तःकरण का होता है।

गर्ग—बहुदाराग्निपुंस्कः स्यात् सुकार्यो बलवान् कुजे ॥ बहुत स्त्रियों का उपभोग लेनेवाला, अच्छे काम करनेवाला तथा बलवान् होता है।

जयदेव—कल्याणवर्मा के समान मत है।

पूंजाराम—रुधिरो यदा पशुमयं वाजाविकं चोष्ट्रं। षष्ठ में मंगल बलवान हो तो पशु, भेडबकरियां अथवा ऊंट चराने का धंदा करना पडता है। आरो रिपुभावसंस्थः शस्त्राग्निघातस्त्वथवाग्निदग्धं। करोति मर्त्यस्य च मातुलस्य विषोत्थदोषेण विदूषितं वा ॥ इसे तथा इस के मामा को विष, अग्नि तथा शस्त्रों का भय होता है।

मन्त्रेश्वर—प्रबलमदनः श्रीमान् ख्यातो रिपौ विजयी नृपः॥ कामुक, धनवान, कीर्तिमान, विजयी, राजा होता है।

जीवनाथ तथा नारायणभट्ट—मन्त्रेश्वर के समान मत है।

गोपाल रत्नाकर—धनधान्यवृद्धि, शत्रुओं का क्षय, राजसेवा, ज्ञानी, लोगों के साथ शत्रुता, बडे व्यवसाय करना किन्तु बडप्पन के मोह में व्यवसाय की ओर दुर्लक्ष होना ये इस मंगल के फल है।

घोलप—घर में बेफिक्र वृत्ति से रहनेवाला, बुद्धिमान, धन से पंडितों को वश करके कीर्ति प्राप्त करनेवाला, कामुक तथा तेज भूख वाला ऐसा यह व्यक्ति होता है।

हिल्लाजातक—पुत्रलाभकरः षष्ठश्चतुर्विंशे च वत्सरे। चौवीसवें वर्ष पुत्र होता है।

यवनमत—शत्रुओं को मारनेवाला, सुन्दर, आनन्दी, धनवान, कृतज्ञ, उदार तथा कुल में अग्रेसर होता है।

पाश्चात्य मत—इसे हलके दर्जे के नौकरों से तकलीफ होती है। यह स्थिर राशि में हो तो मूत्रकृच्छ, गंडमाला; हृद्रोग आदि रोग होते है। द्विस्वभाव राशि में हो तो छाती और फेफडों के रोग होते है। चर राशि मे हो तो आग का भय होता है, गंजापन, यकृत रोग तथा सन्धिवात ये रोग होते है। इस के नौकर अच्छे नही होते। इस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो दुर्घटना का भय होता है। कार्य करने की शक्ति बहुत होती है।

अज्ञात—प्रसिद्धः कार्यसमर्थः शत्रुहन्ता पुत्रवान्। सप्तविंशतिवर्षे कन्यकाश्वादियुत उष्ट्रवान्। पापर्क्षे पापयुते पापदृष्टे पूर्णफलानि। वातशूलादिरोगः। बुधक्षेत्रे कुष्ठरोगः। शुभदृष्टे परिहारः। कीर्ति प्राप्त होती है। कार्य करने का सामर्थ्य होता है शत्रुओं का नाश करता है। पुत्रप्राप्ति होती है। २७ वे वर्ष कन्या प्राप्त होती है, ऊंट, घोडे आदि प्राप्त होते है। यह मंगल पापग्रह के साथ, उस की राशि में अथवा दृष्टि में हो तो पूरा फल अशुभ होता है। वात तथा शूल रोग होते है। यह मिथुन या कन्या में हो तो कुष्ठ रोग होता है, शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वह दूर होता है।

मेरे विचार—इस स्थान में आचार्य, गुणाकर, कल्याणवर्मा, वैद्यनाथ पराशर, यवनमत, गोपाल रत्नाकर, हिल्लाजातक, गर्ग, काशीनाथ, जयदेव, मन्त्रेश्वर, नारायणभट्ट, जीवनाथ इन ने जो फल कहे वे स्त्री राशियों के है। आर्यग्रंथ, जागेश्वर, बृहद्यवनजातक, पुंजराज, घोलप, पाश्चात्य इन के फल—कामुकता, भूख तेज होना, ज्ञानी लोगों के साथ शत्रुता—ये पुरुष राशियों के है। आर्यग्रंथ के पहले चरण का फल स्त्री राशि का तथा दूसरे चरण का फल पुरुषराशि का है। बृहद्यवनजातक में तेज भूख तथा क्रोध यें फल कहे वे पुरुष राशि के है। जागेश्वर ने मामा को दुख यह फल कहा वह पुरुष राशि का है। पुंजराज का फल—भेडबकरी तथा ऊंट चराना—स्त्री राशि का है। शस्त्र, अग्नि अथवा विष से भय यह फल मेष, सिंह तथा धनु राशियों का है।

मेरे अनुभव—इस स्थान के मंगल के फलों का वर्णन ऊपर किया ही है। विशेष यह कि मामा और मौसी मरती है तथा सन्तान भी मरती

है। मौसी विधवा होती है अथवा ये दोनों निपुत्रिक होते है। इस योग पर अधिकारी रिश्वत लेने पर भी पकडा नही जाता। द्विभार्या योग हो सकता है। षष्ठ के मंगल के उदाहरण स्वरूप एक कुण्डली देखिए। विल्यम मार्कोनी–रेडिओ के आविष्कार का जनक–जन्म ता. २५-४-१८७४ स्थान रोम (अक्षांश ४१–५४, रेखांश १३। लग्न–धनु–२५ वां अंश।
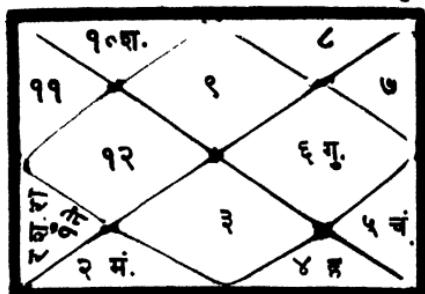
(२५ वे अंश के बारे में चारुबेल ने लिखा है—काले मेघों के ऊपर बलून में उडनेवाले व्यक्ति के समान यह होता है। वैज्ञानिक प्रयोग करके असम्भव बातों का पता लगाने की कोशिश करता है। बहुत प्रयोगों के बाद इसे यश निश्चित रूप से मिलता है।) मार्कोनी को स्त्रीसुख बहुत कम मिला। १९१० में इसकी पत्नी ने तलाक लिया। इसके मांबाप चाहते थे कि यह अच्छा संगीतज्ञ बने किन्तु इसने इंजीनियरिंग तथा विज्ञान का अभ्यास करके उसी में कीर्ति प्राप्त की। मृत्यु ता, २०–७–१९३७। षष्ठ स्थान में मंगल पुरुष राशि में हो तो कामुकता बहुत होती है और सम्भोग के समय कठोर बरताव करता है। एकाध दुसरा पुत्र होता है। किन्तु पुत्र मरते है। पहला या दूसरा पुत्र सयाना होकर धनार्जन प्रारंभ करने की उम्र में मरता है जिससे बहुत शोक होता है। स्त्री को गर्भाशय के विकार होने से सन्तति बिलकुल न होने का सम्भव होता है। हिल्ला-जातक में २४ वे वर्ष पुत्र प्राप्ति यह फल कहा है। कुछ प्रतिष्ठित समाजों में २५ या ३० वे वर्ष के बाद ही आजकल विवाह होते है। अतः इस फल का उपयोग विचारपूर्वकही करना चाहिये। भूख तेज होती है। खासकर तीखे या नमकीन पदार्थों पर रुचि होती है। इससे कामवासना भी तीव्र होती है। दोपहर के समय यह विशेष जागृत होती है। बहुत

खाने से उष्णता उत्पन्न होकर नाना रोग होते है। बहुत खाना और शराब पीना शरीर को अपायकारक ही है। इन्हे कीर्ति प्राप्त करने के पहले संघर्षमय परिस्थिति में से गुजरना पडता है और निराश हो जाने पर कही मार्ग मिलता है।

सातवाँ स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—स्त्री अनादर करती है।

कल्याणवर्मा—मृतदारो रोगार्तोऽमार्गरतो भवति दुःखितः पापः। श्रीरहितः सन्तप्तः शुष्कतनुर्भवति सप्तमे भौमे ॥ स्त्री का मृत्यु होता है। रोगीं, दुराचारी, दुःखी, पापी, निर्धन, तथा दुबला होता है।

वैद्यनाथ—स्त्रीमूलप्रविलापको रणरुचिः कामस्थिते भूमिजे। स्त्री के लिए विलाप करना पडता है। युद्धप्रिय होता है।

पराशर—स्त्रियां दारमरणं नीचसेवनं नीचस्त्रीसंगमः। कुजोक्ते सुस्तना कठिनोर्ध्वकुचा। पत्नी की मृत्यु होती है। नीच स्त्रियों से कामसेवन करता है। स्त्री के स्तन उन्नत तथा कठिन होते है।

सारावली—स्त्री की योनि सूखी, चरपरी तथा छोटी होती है।

गर्ग—मुनिगृहगतभौमे नीचसंस्थेऽरिगेहे युवतिमरणदुःखं जायते मानवानां। मकरगृहनिजस्थे नान्यपत्नीश्चधत्ते चपलमतिविशालां दुष्टचित्तां विरूपाम् ॥ यह मंगल नीच राशि में अथवा शत्रु ग्रह की राशि मे हो तो पत्नी की मृत्यु होती है। यह मकर मे अथवा स्वगृह मे हो तो एकही स्त्री होती है और वह चंचल, बुद्धिमान किन्तु दुष्ट और कुरूप होती है।

मन्त्रेश्वर—अनुचितकरो रोगार्तोऽस्तेऽध्वगो मृतदारवान्। दुराचारी, रोगी, प्रवासी होता है। पत्नी की मृत्यु होती है।

काशीनाथ—भूमिपुत्रे सप्तमगे रुधिरार्तोऽपि कोपवान्। नीचसेवी वंचकश्च निर्गुणोऽपि भवेन्नरः ॥ रक्त के रोगों से युक्त, क्रोधी, हलके लोगों का नौकर, ठगानेवाला तथा गुणरहित होता है।

बृहद्यवनजातक—नानानर्थव्यर्थचित्तोपसर्गैर्वैरित्रातैर्मानवं हीनदेहं । दारापत्यानन्तदु:खप्रतप्त दारागारेंगारकोयं करोति ।। अनेक अनर्थो से मनको व्यर्थ ही तकलीफ होती है । शत्रुओं से पीडा होती है। शरीर दुबला होता है । स्त्री पुत्रों के बारे मे तथा और भी कई दु:खों से पीडित होता है । तिथ्यसृगथाग्निभयं मुनींदो । १७ वे वर्ष अग्निभय होता है ।

जागेश्वर—यदा मंगल: सप्तमे स्यात्तदानीं प्रियामृत्युमाप्नो त्यवश्यं व्रणैर्वा । परं जाठरे क्रूररोगैश्च रक्ताद् विचार्यं त्विद जन्मकालेऽथ प्रश्ने ।। सुखं नो नराणां तथा नो कृपाणां तथा पादमुष्टिप्रहारैर्हत:स्यात् । परस्पर्धया क्षीयते शत्रुवर्गात् यदा मंगलो मंगलाया गृहे स्यात् ।। स्त्री का मृत्यु होता है । व्रण तथा पेट के रोग होते है । रक्त दूषित होता है । इन फलों का विचार जन्म कुण्डली तथा प्रश्न कुण्डली दोनों मे किया जा सकता है । इस व्यक्ति को सुख नही मिलता, व्यापार मे यश नही मिलता, घूसों लातों से अपमानित होना पडता है । शत्रुओं के साथ स्पर्धा करने से हानि होती है ।

जयदेव—अबलागतगेहसंचयो रुगनर्थोऽरिभयोद्युने कुजे । घरबार प्राप्त होता है । रोगी, अनर्थकारी, शत्रुओं से भयभीत होता है ।

पुंजराज—यौवनारेप्यतीता ।। क्षितिजे नरस्य रमणी पित्तव्रणेनान्विता दग्धा वा विषवन्हिना यदि तदा वा बस्तिरोगान्विता । भूमिपुत्रद्यूनभावोपयाते कान्ताहीन: सन्ततं मानव: स्यात् ।। स्त्री तरुण नही होती । वह पित्त या व्रणरोग से पीडित होती है अथवा विषसे या आगमें जल कर मरती है अथवा योनिरोग से युक्त होती है । इस से पत्नी की मृत्यु अवश्य होती है ।

जीवनाथ—कुजे कान्तागारं गतवति जनोतीव लघुतां समाधत्ते युद्धे प्रबलरिपुणा स क्षततनु: । तथा कान्ताघाती परविषयवासी खलमतिर्निवृत्तो वाणिज्यादपि परवधूरंगविरत: ।। हीन, युद्ध में शत्रु के द्वारा आहृत होता है । स्त्री का मृत्यु होता है । विदेश में रहना पडता है । दुष्ट बुद्धि होती है । व्यापार नही करता तथा परस्त्री से विलास नही करता ।

नारायणभट्ट—जीवनाथ के समान ही मत है ।

गोपाल रत्नाकर—स्त्री को शारीरिक कष्ट होते है। यह पापग्रहों से युक्त हो तो स्त्री का मृत्यु होता है। शुभग्रहों से युक्त हो तो मृत्यु नही होता। पेट तथा हाथ मे रोग होते है। भाई, मामा तथा मौसियां बहुत होती है। बुद्धिमान होता हैं।

वसिष्ठ—भौमः किल सप्तमस्थो जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्तर्ति च। पत्नी दुराचारिणी होती है। सन्तति कम होती है।

घोलप—इसने सप्तम स्थान का फल ठीक तरह नही कहा है।

रामदयाल—यौवनाढ्या कुजेपि। (टीकाकार–अपि शब्दात् क्रूरा कुटिला नातिसुन्दरी च।) यह मंगल बलवान हो तो स्त्री तरुण, क्रूर; कुटिल स्वभाव की और साधारण रूप की होती है–बहुत सुन्दर नही होती।

हिल्लाजातक—सप्तत्रिंशन्मिते वर्षे जायानाशं च सप्तमः। ३७ वे वर्ष स्त्री का मृत्यु होता है।

यवनमत—स्त्री का उपभोग कम प्राप्त होता हैं। अत्याचारी काम करता है। झगडा पसन्द नही होता। स्त्री का मृत्यु होता है।

पाश्चात्य मत—स्त्री कठोर स्वभाव की तथा झगडालू होती है। विवाह सुख अच्छा नही मिलता। विभक्त रहना पडता है तथा हमेशा झगडे होते है। स्त्री के लिए झगडे या अदालती व्यवहार करने पडते है। व्यापार में शत्रु की स्पर्धा प्रबल और खुले रूप से होती है। साझीदारी मे यश नही मिलता। छोटी बातों पर चिढता है। यह मंगल कर्क या मीन राशि मे हो तब तो स्त्री का स्वभाव बहुत ही तापदायी होता है। बहुत बार अपने मन के विरूद्ध बरताव करना पडता है। अदालती झगडों मे पराजय होने से नुकसान होता है। स्थावर जायदाद नष्ट होती है।

अज्ञात—स्वदारपीडा पापर्क्षे पापयुते स्वर्क्षे स्वदारहानिः। शुभयुते जीवति। अपत्यनाशः विदेशवासः। विगततनुः मद्यपानप्रियः रणरुचिः। चोरव्यभिचारमुलेन कलत्रान्तरं दुष्टस्त्रीसंगः। भगचुम्बकः। मन्दयुते दृष्टे शिश्नचुम्बकः। वन्ध्यारजस्वलास्त्रीसम्भोगी। तत्र शत्रुयुते बहुकलत्रनाशः।

अहंकारी ।। पापग्रह की राशि मे अथवा पापग्रह से युक्त मंगल सप्तम में हो तो पत्नी को शारीरिक पीडा होती है। यह वृश्चिक में हो तो पत्नी की मृत्यु होती है। यह शुभ ग्रह युक्त हो तो पत्नीं की मृत्यु नही होती किन्तु सन्तति जीवित नही रहती। विदेश में रहना पडता है। शरीर दुबला होता है। शराबी तथा झगडालू होता है। चोरी या व्यभिचार के लिए स्वस्त्री को छोड कर दुष्ट स्त्रियों का सेवन करता है। यह शनि के साथ अथवा उसके द्वारा दृष्ट हो तो सममैथुन करता है। वंध्या अथवा रजस्वला स्त्री से भी कामसेवन करता है। शत्रुग्रह से युक्त हो तों अनेक पत्नियों की मृत्यु होती है। अहंकारी होता है।

मेरे विचार—सभी शास्त्रकारों ने इस मंगल के फल अशुभ कहे है—स्त्री का मृत्यु, द्विभार्यायोग, स्त्री का स्वभाव क्रूर तथा झगडालू होना, सुन्दर न होना, शत्रुओं द्वारा पराजय, व्यापार में अपयश, रोग, दु:ख, पाप, दारिद्रय आदि सभी अशुभ फल हैं। इन का अनुभव वृषभ, कर्क, कन्या, धनु तथा मीन इन्ही राशियों मे आता है। अन्य राशियों में शुभ फल मिलते है।

मेरा अनुभव—इन स्थान में किसी भी राशि में मंगल हो, उस व्यक्ति को जो देखे वही उद्योग करने की इच्छा होती है किन्तु ठीक तरह से एक भी उद्योग नही होता। १८ वे वर्ष से ३६ वें वर्ष तक कुछ स्थिरता प्राप्त होती है और मंगल के कारकत्व का कोई एक उद्योग करता है। इस योग में पत्नी अच्छी होती है किन्तु झगडालू और पति को वश में रखनेवाली होती है। मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुंभ इन राशियों में द्विभार्यायोग होता है। वृषभ या तुला में यह मंगल हो तो वह अपनी पत्नी पर बहुत प्रेम करता है। कन्या या कुंभ में हो तो विवाह के बाद भाग्योदय हो कर स्थिरता प्राप्त होती है। उद्योग ठीक तरह से चलता हैं और धन मिलता है। दूसरे विवाह के बाद अधिक उत्कर्ष होता है। कर्क या मकर में हो तो ३६ वें वर्ष तक उद्योग में खूब मेहनत करनी पडती है। फिर जीवन भर किसी बात की कमी नही रहती। अन्य राशियों में अस्थिरता रहती है।

सप्तम के मंगल के व्यवसाय–मेष, सिंह तथा धनु लग्न में–प्रिन्टिंग प्रेस, जिनिंग प्रेस। वृषभ, कन्या तथा मकर लग्न में–बिल्डिंग कॉन्ट्रॅक्टर, इमारती लकडी के विक्रेता, खेतीवाडी। मिथुन, तुला तथा कुम्भ में–साइकिल तथा मोटर के विक्रेता तथा रिपेरर, विमान वाहक। कर्क, वृश्चिक तथा मीन लग्न में–सर्जरी, इंजीनियरिंग। उच्च के मंगल के उदाहरण स्वरूप तीन कुण्डलियां देखिए। एक क्ष–जन्म ता. १०–५–१८९२, वैशाख शु. १४ शक १८१४ मंगलवार, इष्ट घटी १५–२३, जन्मस्थान अक्षांश २१–३०, रेखांश ७९–३०।
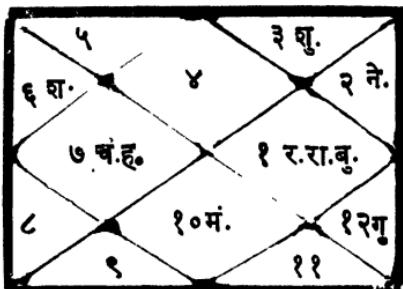
इनका एकही विवाह हुआ। पत्नी कुछ झगडालू थी। सन्तान जीवित रही। व्यवसाय खेती का था।

दूसरे व्यक्ति–जन्म ता. १०–६–१८९२ ज्येष्ठ पौर्णिमा शक १८१४ शुक्रवार, सूर्योदय ५–३०, जन्मस्थान अक्षांश १६, रेखांश ७३–३०।
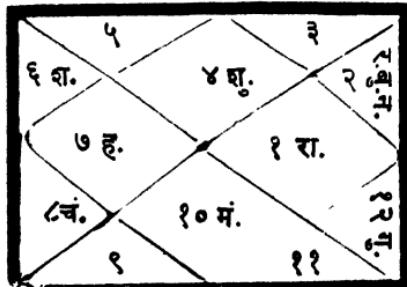
ये एक बडे प्रोफेसर है। अच्छी खासी तनखा है। कीर्ति प्राप्त हुई है। दो तीन बार विदेश हो आए है। स्थावर जायदाद हुई है। किन्तु

विवाह नही हुआ। इनके सप्तम में मंगल वक्री तथा स्तंभित है तथा लग्न मे शुक्र वक्री है। इसी प्रकार चंद्र के सप्तम में रवि, बुध है तथा शुक्र के केन्द्र में तीन पापग्रह है। अत: विवाह के बारे में यह फल मिला। हमेशा मुंह टेढा रहता है। चेहरे पर आपरेशन करना पडा। हमेशा रोगी रहते है। दुबला पतला शरीर तथा कद मंझला है।

तीसरे व्यक्ति—जन्म ता. १३-७-१८९०, स्थान रत्नागिरी, सुबह ५ (स्थानिक समय) इनका विवाह नही हुआ।
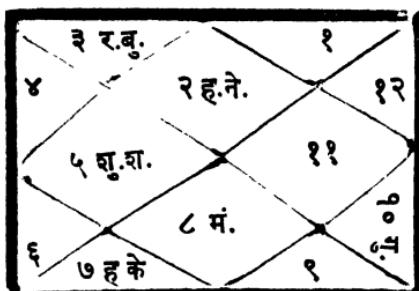
मिथुन, कन्या, धनु, मकर, वृश्चिक तथा सिंह इन राशियों में पति की कुण्डली में मंगल हो तो वह स्त्री सन्तति प्राप्त करने के लिए व्यभि-चारी होती है। इसमें पति की सम्मति भी हो सकती है। (इस विषय मे चन्द्र की स्थिति का भी ठीक विचार करना चाहिए।) इस मंगल के फलस्वरूप अपनी बुद्धिमत्ता के बारे मे बहुत अभिमान होता है। हठी और दुराग्रही स्वभाव होता है। यह स्त्री राशि मे हो तो संकट के समय घबरा जाते है। यही पुरुष राशि मे हो तो धैर्य और विचार पूर्वक आपत्ति सहन करता हैं। इन्हें मित्र बहुत कम होते है। स्त्रीसुख कम मिलता है। (पूर्व जन्म मे किसी अच्छें दंपति मे झगडा लगाने का पाप करने के फल स्वरूप इस जन्म मे यह दुख मिलता है।) पत्नी के मांबाप मे से किसी एक की मृत्यु जलदी ही होती है। पत्नी को भाई कम होते है अथवा बिलकुल नही होते। सप्तम मे मंगल हो तो डॉक्टरों को दुर्घटना मे मृत व्यक्तियों की चीरफाड करने का मोका आता है। बडे ऑपरेशन बहुत करने पडते है तथा उनमे यश भी मिलता है। विदेश यात्रा होती है।

वकीलों को फौजदारी अदालतों मे और खास कर अपीलों मे अच्छा यश मिलता है। अतः पहले अदालत मे पराजय हो तो ऐसे वकीलों को घबराना नही चाहिए। मेकॅनिक, इंजीनियर, टर्नर, फिटर, ड्राइवर आदि लोगों के लिए भी यह योग अच्छा है। पुलिस तथा अबकारी इन्स्पेक्टरों के यह योग हो तो उनने अपने साथ काम करने के लिए स्त्री अफसर का चुनाव करना चाहिए। इससे यश जलदी मिलता है। बडे ऑफिसों तथा फर्मों मे काम करने वाले लोगों के सप्तम मे मंगल हो तो बडे अफसरों से हमेशा झगडे होते रहते हैं। मेष, सिंह, तथा धनु मे नौकर इमानदार होते है। इस योग मे नौकर होना ही सभव है, मालिक नही होते।

——o——

आठवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर—निधनगेल्पसुतो विकलेक्षणः। पुत्र कम होते है तथा आंखें अच्छी नही होती।

पराशर—मृत्यौ धननाशं पराभवं। धनहानि तथा पराभव होता है।

कल्याणवर्मा–व्याधिप्रायोल्पायुः कुशरीरो नीचकर्मकर्ता च। निधनस्थे क्षितितनये भवति पुमान् नित्यसन्तप्तः॥ रोगग्रस्त, अल्पायुषी, शरीर अच्छा न होना, दुराचारी, दुःखित।

वैद्यनाथ—विनीतवेषो धनवान् गणेशो महीसुते रन्ध्रगते तु जातः। कपडे सादे होते है, धनवान, लोगों में प्रमुख होता है।

गर्ग—मृत्यु गतो मृत्युकरो महीजः शस्त्रादिलूतादिभिरग्नितो वा। कुष्ठपणाशो गृहिणीप्रपीडा नयत्यधो नाशकमानयेच्च॥ शस्त्रों से, कोढ से, शरीर के अवयव सडने से अथवा जलकर मृत्यु होती है। पत्नी को कष्ट होता है। अधोगति होती है।

काश्यप—१ संग्रामाद् २ गोग्रहणात् ३ स्वहस्तात् ४ निजशत्रुतः ५ द्विजपार्श्वात् ६ अश्मपातात् ७ काष्ठात् ८ कूपप्रपाततः॥ ९ भित्तिपातात् १० गुप्तरोगात् ११ विषभक्षणतस्ततः १२ चोरप्रहरणाद् भौमे मृत्युः स्यान्मृत्युभावगे॥ यह मंगल क्रमशः मेषादि राशियों में हो तो आगे कहे

हुए प्रकारों से मृत्यु होता है—१ युद्ध मे, २ गायों की चोरी का प्रतिकार करते हुए, ३ अपने ही हाथ से, ४ शत्रुओं से, ५ सांप से, ६ पत्थर गिरने से, ७ लकडी के आघात से, ८ कुंए में गिरने से, ९ दिवाल गिरने से, १० गुप्त रोग से, ११ विष खाने से तथा १२ चोरों के प्रहार से ।

बृहद्यवनजातक—वैकल्यं स्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वं रक्तात् पीडा नीचकर्म प्रवृत्तिः । बुद्धेरान्ध्यं सज्जनाना च निन्दा रन्ध्रस्थाने मेदिनीनन्दनश्चेत् ॥ आंखे अच्छी नही होती, कुरूप होता है । खून के रोग होते है । बुरे कामों की ओर प्रवृत्ति होती है । बुद्धि अन्ध होती है । सज्जनों की निन्दा करता है । कुजस्तु विपदाक्षयं । ३२ वे वर्ष विपत्ति आती है ।

काशीनाथ—अष्टमे मंगले कुष्ठी स्वल्पायुः शत्रुपीडितः । अल्पद्रव्यः सरोगश्च निर्गुणोऽपि हि जायते ॥ कोड होता है । अल्पायुषी, शत्रुओं द्वारा पीडित, निर्धन, रोगी तथा गुणरहित होता है ।

जयदेव—रुधिरार्तो गतनिश्चयः कुधीर्विदयो निन्द्यतमः कुजेष्टमे खून के रोग (संग्रहणी आदि) होते हैं । बुद्धि के द्वारा निश्चय नहीं कर सकता । बुरे विचारों का, निर्दय तथा बहुत ही निन्दनीय होता है ।

जन्मेश्वर—शरीरं कृश किं शुभं तस्य कोशे परं स्वस्य वर्गो भवेच्छत्रुतुल्यः । प्रयासे कृते नाशमायाति कामो यदा मृत्युगो भूमिजो वै विलग्नः ॥ शरीर दुबला होता है । धन नही होता । अपने ही लोग शत्रु के समान होते है । बहुत प्रयास करने पर भी इच्छा पूरी नही होती । अविवाहित रहना पडता है ।

मन्त्रेश्वर—कुतनुरधनोल्पायुः छिद्रे कुजे जननिन्दितः । बुरे शरीर का, निर्धन, अल्पायुषी तथा निन्दनीय होता है ।

पुंजराज तथा रामदयाल—इन ने इस स्थान का फल ठीक तरह नही कहा है ।

आर्यग्रन्थ—प्रलयभुवनसंस्थे मंगले क्षीणनीचे व्रजति निधनभावं नीरमध्ये मनुष्यः । धनकनकचरार्कः सर्वदा चैव भोगी करपदगसुनीलो मृत्युलोकं प्रयाति ॥ सोनाचांदी आदि धन प्राप्त होता है । हाथ पांव काले

होकर (कोढ से) मृत्यु होती है। यह मंगल क्षीण अथवा नीच राशि मे हो तो पानी मे डूबने से मृत्यु होती है।

वसिष्ठ---सर्वे ग्रहा दिनकरप्रमुखा नितान्तं मृत्युस्थिवा विदधते किल दुष्टबुद्धि। शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभागं सौख्यैर्विहीनमतिरोगगणैरुपेतम्। बुद्धि दुष्ट होती है। शस्त्रों के प्रहार से अवयवों को पीडा होती है। सुख प्राप्त नही होता। बहुत रोग होते है।

नारायणभट्ट---शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये विधानेऽपि चेदष्ठमे भूमिसूनुः। सखा किं न शत्रूयते सत्कृतोपि प्रयत्ने कृते भूयते चोकसर्गैः॥ मंगल अष्टम स्थान में हो तो अन्य शुभ ग्रहों का कुछ भी उपयोग नही होता। मित्र भी शत्रु जैसा बरताव करतें है। प्रयत्न करने पर भी इसे आपत्ति ही प्राप्त होती हैं।

गोपाल रत्नाकर--पुत्र थोडे होते है। नेत्ररोग होता है। आयु मध्यम होती हैं। पिता और दादा को कष्ट होते है। मामा का मृत्यु होता है। वेश्यागमन करता है।

घोलप---अपूज्य, निन्दनीय, उन्मत्त, वातपीडा से युक्त, मूर्ख, डरपोक, दुराचारी, स्त्रीपुत्रों का भरणपोषण करने मे असमर्थ, पापी, दुबला, खर्चीला, रक्तपित्त रोगों से युक्त, नेत्ररोग से युक्त, शत्रु से भयभीत ऐसा यह व्यक्ति होता है।

हिल्लाजातक---पंचविंशे तथा वर्षे मृत्युकर्ताष्टमः कुजः। २५ वे वर्ष मृत्यु होती है।

यवनमत---इसे गुह्यरोग होते है। स्त्री से दुःख प्राप्त होता है। चिन्ताग्रस्त होता है। अच्छा परीक्षक होता है। शस्त्रों के प्रहार से जखमी होता है। यह मंगल नीच का हो तो रक्तपित्त रोग होता है।

पाश्चात्य मत---इसे विवाह से लाभ नही होता। रवि और चंद्र से अशुभ योग हो तो अकस्मात मृत्यु होता है। यह मंगल अकेला हो तो मृत्यु जलदी नही होता। बन्दूक की बारूद से मृत्यु होता है। यह जल-राशि मे हों तो पानी मे डूबकर, अग्नि राशि मे हो तो आग मे जलकर

तथा वायु राशि मे हो तो मानसिक व्यथा से मृत्यु होता है। पृथ्वीतत्त्व मे यह मंगल हो तो शुभ फल मिलता है।

अज्ञात--नेत्ररोगी। मध्यमायुः। पित्तरिष्टं। मूत्रकृच्छरोगः। अल्पपुत्रवान्। वातशूलादिरोगः। दारसुखयुतः। करवालात् मृत्युः। शुभयुते देहारोग्यवान्। दीर्घायुः। मनुष्यादिवृद्धिः। पापक्षेत्रे पापयुते इक्षणवशात् वातक्षयादिरोगः मूत्रकृच्छाधिक्यं वा। भावाधिपे बलयुते पूर्णायुः आंखों के रोग, मध्यम आयु, पिता का मृत्यु, मूत्रकृच्छ रोग, पुत्र थोडे होना, वातशूल इत्यादि रोग, स्त्रीसौख्य, तलवार से मृत्यु ये मंगल के फल हैं। यह शुभग्रहों से युक्त हो तो नीरोग शरीर, दीर्घ आयु तथा घर मे समृद्धि होती है। पापग्रह की राशि मे अथवा पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो वातक्षयादिक रोग होते है या मूत्रकृच्छ् से बहुत पीडा होती है। अष्टम स्थान का अधिपति बलवान हो तो पूर्ण आयु मिलती है।

मेरे विचार—इस स्थान के फल सभी शास्त्रकारों ने अशुभ कहे है–सिर्फ वैद्यनाथ का अपवाद है। ये अशुभ फल पुरुष राशियों के हैं। वैद्यनाथ के फल स्त्री राशि के है। काश्यप ने बारह प्रकार से मृत्यु का वर्णन किया है उस मे विशेष तथ्य प्रतीत नही होता। मृत्यु के विषय मे हमारे शनि विचार मे विशेष विवेचन किया है।

मेरा अनुभव—यह मंगल पुरुष राशि मे हो तो घर के रहस्य स्त्री या नौकरो द्वारा बाहर के लोगों को मालूम हो जाते है। विवाह के बाद ससुर दरिद्री होता है और स्त्री खर्चीली होती है। यह व्यभिचारी हो सकता है। चेचक आदि के दाग मुंह पर रहते है। कई शास्त्रकारों ने यहां सन्तति का भी फल बतलाया है। शायद यह पितृस्थान से नौवां और मातृस्थान से पांचवां स्थान होने से ऐसा फल बतलाया होगा। वैसे अष्टमस्थान सन्ततिस्थान नही है। यह मंगल पुरुष राशि मे हो तो संतति बहुत कम होती है। स्त्री राशि मे कर्क, वृश्चिक तथा मीन मे अधिक सन्तति होती है, वृषभ और कन्या मे कम होती है, मकर मे बिलकुल नही होती। स्त्री राशि मे घर के रहस्य घर मे रहते है। यह स्थान पत्नी का धनस्थान है अतः वह दरिद्री होती है। इससे पति को बहुत कष्ट होता

है। स्त्री राशि के मंगल से लाभ होता है। पत्नी बोलने मे चतुर तथा प्रेम करनेवाली होती है किन्तु स्त्रीसुख अधिक काल नही मिलता। इस योग मे अफसर बहुत रिश्वत लेने पर भी पकडे नही जाते। इस व्यक्ति की पूर्व वय मे ३० वे वर्ष तक बहुत खाने की आदत होती है। इससे उत्तर आयु मे अपचन के कारण मलेरिया, एनिमिया, एनेस्थेशिया, अर्धांग-वायु, ब्लड प्रेशर आदि रोग होते है। इसका मृत्यु शान्त रीति से होता है। मृत्यु के समय कष्ट नही होता। कर्क, वृश्चिक, धनु या मीन लग्न हो और इन राशियों मे अष्टम का मंगल हो तो हठयोग का अभ्यास पूरा होता है। मेष, सिंह, धनु लग्न हो तो राजनीतिज्ञ होता है। अल्पायु होना यह फल ठीक नही है। रवि, चंद्र, शनि के सम्बन्ध से दूषित हो तो ही यह फल मिलता है। अष्टम का मंगल स्त्री राशि मे हो तो दोपहर ४ बजे से ही स्त्रीभोग की उत्सुकता उत्पन्न होती है।

नौवां स्थान

आचार्य--धर्मेऽधवान्। पापी होता है।

गुणाकर--धर्मेर्थसंपत्तिवान्। धनवान होता है।

कल्याणवर्मा--अकुशलकर्मा द्वेष्यः प्राणिवधपरो भवेन्नवमसंस्थे। धर्म-रहितोऽतिपापो नरेन्द्रकृतगौरवो रुधिरे॥ कुशलता से कार्य नही करता। लोग इसका द्वेष करते है। हिंसक, धर्महीन, बहुत पापी किन्तु राजमान्य होता है।

पराशर--पराभवमनर्थं च धर्मे पापरुचिक्रिया। पराभव, अनर्थ तथा पाप कर्म मे रुचि होती है।

वैद्यनाथ--भूसूनौ यदि पित्रनिष्टसहितः ख्यातः शुभस्थानगे। पिता का अनिष्ट होता है। कीर्ति मिलती है।

गर्ग--कुजे रक्तपटानां हि भवेत् पाशुपती वृत्तिः। भाग्यहीनश्च सततं नरः पुण्यगृहं गते॥ यह बौद्ध हो तो भी शवों के समान प्राणिवध मे रुचि रखता है। अभागा होता है।

आर्यग्रन्थ---नवमभवनसंस्थे क्षोणिपुत्रेऽतिरोगी नयनकरशरीरैः पिंगलः सर्वदैव । बहुजनपरिपूर्णो भाग्यहीनः कुचैलो विकलजनसुवेशी शीलविद्यानुरक्तः ॥ बहुत रोगी, आंखें हाथ तथा शरीर लाल-पीले वर्ण के होते है। अनेक लोगों से घिरा हुआ, भाग्यहीन होता है । वस्त्र अच्छे नही होते । शीलवान तथा विद्यानुरागी होता है ।

जयदेव---सीमायुतो भूपतिमानयुक्तः सस्वो विधर्मो नवमे धराजे ॥ मर्यादित शक्ति का, राजमान्य, धनवान किन्तु धर्महीन होता है ।

जागेश्वर---सभौमे विषाद्यग्निपीडा ॥ कुशीलः कुलीलः परं भाग्यहीनः पदे रक्तरोगी कृशः क्रूरकर्मा । प्रतापी तपेज्जन्मकाले यदि स्यान्महीजी यदा पुण्यभावं प्रयातः ॥ विष तथा आग से पीडा होती है । व्यभिचारी, दूराचारी, भाग्यहीन, पांव में रक्तरोग से युक्त, दुबला, क्रूर, तथा पराक्रमी होता है ।

बृहद्यवनजातक-हिंसाविधाने मनसः प्रवृत्तिर्धरापतेर्गौरवतोऽपि लब्धिः। क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यस्थितः क्षोणिसुतः करोति ॥ हिंसक कामों की ओर रुचि होती है । राजमान्य, पुण्यहीन और धनहीन होता है । अष्टाविंशतिभूमिनन्दनसमालाभोदये संस्मृतम् २८ वे वर्ष भाग्योदय होता है ।

काशीनाथ---धर्मस्थे धरणीपुत्रे कुकर्मा गतपौरुषः । नीचानुरागी क्रूरश्च संकष्टश्च प्रजायते ॥ दुराचारी, पौरुषहीन, नीच लोगों के साथ रहनेवाला, क्रूर तथा कष्टी होता है ।

मन्त्रेश्वर---नृपसुहृद्रपि द्वेष्योऽतातः शुभे जनघातकः । राजा का मित्र किन्तु लोग इसका द्वेष करते है । पिता का सुख नही मिलता । लोगों का घात करता है ।

पुंजराज---आरो भ्रातृनाशप्रदो स्तः । द्वाभ्यां हीनः ॥ दो भाइयों की मृत्यु होती है ।

रामदयाल---आरेऽग्न्यादिविषार्दितः ससहृजः । विष तथा अग्नि से पीडा होती है । बन्धुओं से युक्त होता है ।

वसिष्ठ---धर्मस्थिता-भूमिपुत्राः कुर्वन्ति धर्मरहितं विमतिं कुशीलं। धर्महीन, दुर्बुद्धि और दुराचारी होता है।

गोपाल रत्नाकर---पिता का सुख नष्ट होता है। नौकरी करनेवाला, क्रूर, व्यापार के लिए नाव मे घूमनेवाला होता है।

घोलप---अधिकारी, कवि, शत्रुहीन होता है।

हिल्लाजातक---भूसुतो नवमगश्चतुर्दशे वत्सरे दिशाति तातनाशनम् ॥ चौदहवें वर्ष पिता का मृत्यु होता है।

यवनमत---राजमान्य, विख्यात, परस्त्रियों का उपभोग करनेवाला, भाग्यवान तथा अपने गांव में सुखी होता है।

पाश्चात्य मत---कठोर स्वभाव का, ईर्ष्यालु, झूठ बोलनेवाला प्रवासी, शंकाशील, दुराग्रही होता है। पानी के सम्बधितों से हानि होती है। धर्म-पर थोडी श्रद्धा होती है। अध्यात्म के बारे मे दुराग्रही विचार होते है। अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो उद्धत और दुराभिमानी होता है। मन पर संयम नही होता, चाहे जैसा बरताव करता है। अग्नि राशि मे हो तो उद्धत होता हैं। पृथ्वी तथा जलतत्त्व की राशियों मे हो तो कुछ अच्छा स्वभाव होता है।वायुराशि मे हो तो कानून और नीतितत्वों का उल्लंघन सहज ही करता है।

अज्ञात---पित्ररिष्टं। भाग्यहीनः। उच्चे स्वक्षेत्रे गुरुदारगः देशान्तरे भाग्ययोगः। शुभे शुभयुते शुभक्षेत्रे पुण्यशाली धराधिपः। पिता का मृत्यु होता है। भाग्यहीन होता है। यह उच्च अथवा स्वगृह मे हो तो गुरुपत्नी से व्यभिचार करता है। विदेश मे इस का भाग्योदय होता है। यह शुभ-ग्रहों से युक्त अथवा उन की राशियों मे हो तो पुण्यवान होता है। यह राजयोग होता है। विदेश मे भाग्योदय के उदाहरणस्वरूप एक कुण्डली देखिए-एक क्ष-जन्म ता. १२-६-१८९३ सुबह।
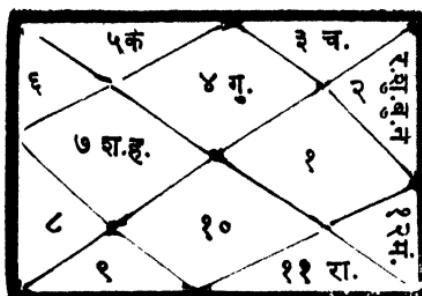
इस व्यक्ति ने जन्मभूमि छोडकर उत्तर मे दूर के प्रदेश मे व्यवहार किया तब भाग्योदय हुआ।

मेरे विचार—इस स्थान के फल आचार्यो ने मिश्र स्वरूप के कहे है। आचार्य, कल्याणवर्मा, पराशर, आर्यग्रंथकार, जागेश्वर, बृहद्यवनजातक, काशीनाथ, वसिष्ठ तथा गोपाल रत्नाकर ने पापी, क्रूर, दुराचारी, हिंसक, व्यभिचारी होना ऐसा फल कहा। यह मकर और मीन राशि के लिए ही ठीक है। राजमान्य, धनवान, गांव मे प्रसिद्ध होना ये शुभ फल मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि मे मिलते है। भाई का मृत्यु यह पुरुष राशि का फल है। विद्यावान किन्तु धर्महीन यह विशेषता मेष, सिंह, तथा मकर को छोड अन्य राशियों मे मिलती है। कानून और नीति-नियमों का उल्लंघन करना यह फल मिथुन, तुला और कुम्भ मे ठीक प्रतीत होता है। आंखें नष्ट होना, गुप्त रोग होना, मुंह टेढामेढा होना, त्वचारोग होना, नपुंसकता निर्माण होना, हाथ पांव टूटना आदि शारीरिक अशुभ फल इस स्थान मे मिलते है। दूसरों का नुकसान कर के भी ये लोग अपना फायदा करना चाहते है। ये पीछे निन्दा करने मे चतुर होते है किन्तु आगें आकर कुछ कहने का धैर्य इन मे नही होता। ये क्रोधी होते है किन्तु वैसा लोगों को बतलाते नही। ये राजनीतिक मनोवृत्ति के–षड्यंत्र करने मे कुशल होते है। किसी को ऊंचा नीचा दिखाना इन्हें बहुत पसन्द होता है। अपमान होने पर उस वक्त तो हंस कर बात टाल देते है किन्तु मन मे दंश रख कर प्रतिशोध लेते है। इन्हें अपने कार्य मे यश भी मिलता है। इन पर विश्वास रखना उचित नही। ये खुद को

अति विद्वान समझते है। गुरु को भी अपना शिष्य बतलाने मे नही हिच-किचाते। दुराभिमानी, दुराग्रही और गायें हांकनेवाले होते है। विदेशयात्रा हो सकती है। सन्तान भाग्यवान नही होती। मांबाप को तकलीफ देनेवाले होते है। कभी मारपीट करते है अथवा उन से विभक्त होते है। मेष, सिंह, धनु, कर्क तथा वृश्चिक राशियों मे अधिकारी, फुर्तीले, उदार, प्रेमी, मिलनसार होते है। कुंभ, वृश्चिक और मीन मे कुछ स्वार्थी होते हैं। कर्क मे फल अच्छा मिलता है।

नवम मंगल के उदाहरण स्वरूप दो कुण्डलियां देखिए—

१ श्रीमान काशीनाथ गालवनकर—जन्म ता. २५–४–१८९८, इष्ट घटिका १५–२५, स्थान वसई।

२ इन्ही के छोटे बंधु डॉक्टर सदानंद गालवनकर—जन्म ता. ३–११–१९०० इष्ट घटिका ०–४।
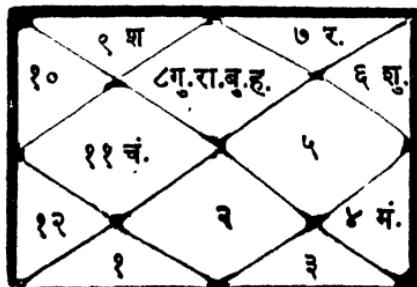
ये युनिवर्सिटी मे सीनेटर रह चुके है। इन दोनों की कुण्डली मे नवम मे मंगल है। इन की चार बहनों का मृत्यु हुआ। तथा दोनों के दो बार विवाह हुए।

मेरा अनुभव—इस स्थान मे मिथुन, तुला, कुंभ, वृषभ कन्या तथा मकर में मंगल हो तो मां का सुख कम मिलता है। इस योग मे पत्नी विजातीय होती है। अथवा उस मे पति से बहुत भिन्नता और नवीनता होती है। मंगल प्रधान युवक नवमतवादी और सुधारक प्रवृत्ति का होता है। विवाह संस्था पर विश्वास न होना तथा चाहे जिस स्त्री से सम्बन्ध रखना ऐसी इस की प्रवृत्ति होती है। विवाह न होना भी संभवनीय है। किन्तु विवाह के बाद पत्नी से प्रेमपूर्वक रहते है। द्विभार्या योग भी हो सकता है। ऐसे समय पत्नी की मृत्यु होती है कि बच्चों को देखभाल करने के लिए तथा घरगृहस्थी के लिए उस की बहुत ही जरूरत होती है। ये लोग व्यभिचारी हो सकते है। प्रसिद्ध होते है किन्तु भाग्यवान नही होते। डॉक्टरों के लिए यह योग अच्छा है। कीर्ति मिलती है तथा नैतिक आचरण भी अच्छा रहता है। इन्हें आयुभर किसी चीज की कमी नही रहती। वकीलों के लिए यह योग मामूली होता है। सिर्फ फौजदारी मामलों मे कुछ सफलता मिलती है। इंजीनियर, टर्नर, फिटर, बढई, सुनार, लुहार आदि लोगों के लिए यह अच्छा योग है। इन के काम की प्रशंसा होती है और नौकरी में उन्नति होती है। पुलिस और अबकारी इन्स्पेक्टरों को अफसरों से लड झगड कर उन्नति करनी पडती है। इन के विभाग के कर्मचारी ही इन के विरुद्ध रिपोर्ट करते रहते हैं। इस स्थान का मंगल स्त्री राशि में हो तो भाइयो को मारक नही होता, बहनों को मारक होता हैं। पुरुष राशि में हो तो बहनों को तारक और भाइयों को मारक होता है। इन का भाग्योदय २७–२८ वे वर्ष से होता हैं। नीचे के वर्गो में १८ वे वर्ष से भी होता हैं। ये लोग म्युनिसिपालिटी, लोकल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, असेंब्ली आदि में चुन कर आते हैं। लोगों पर प्रभाव पडता हैं। लोग विरोध में हो तो भी इन के विरुद्ध मुंहपर कुछ नही बोल पाते। कर्क, वृश्चिक, मकर, मीन में यह मंगल हो तो विवाह

के बाद स्थिरता प्राप्त हो कर भाग्योंदय होता है। डॉक्टर, किसान या रसायनशास्त्रज्ञ होते है। कर्क में स्वभाव बहुत विचित्र होता है। वृश्चिक में धूर्त होता है। अपने फायदे के लिए दुसरों का नुकसान भी करते है। मकर और मीन में स्वभाव नीच होता हैं। झूठ बोलनेवाले, निर्लज्ज और अपनी ही डींग हांकनेवाले होते हैं।

---o---

दसवां स्थान

आचार्य तथा गुणाकर---सुखशौर्यभाक्। सुखी तथा शूर होंता है।

कल्याणवर्मा---कर्मोद्युक्तो दशमे शूरोघृष्यः प्रधानजनसेवी। सुतसौख्ययुतो रुधिरे प्रतापबहुलः पुमान् भवति॥ क्रियाशींल, पराक्रमी, अजेय, महान पुरुषों की सेवा करनेवाला, पुत्रसुख से युक्त तथा बहुत प्रतापी होता है।

वैद्यनाथ---मेषूरणस्थेऽवनिजे तु जाता। प्रतापवित्तप्रबलप्रसिद्धाः। प्रतापी, धनवान, बलवान तथा प्रसिद्ध होता है। माने कुलीरभवने च सुखं ददाति। यह कर्क राशि में हो तो सुख देता है।

गर्ग---वैद्यनाथ के समान मत है।

जयदेव---तोषावतंसोपकृतार्थयुक्तः। संतुष्ट, भूषणभूत, परोपकारी तथा धनवान होता है।

जागेश्वर---यदा लग्नचंद्रात् खमध्ये महीजस्तदा साहसं क्रूरभिल्लस्यवृत्तिः। भवेद्दूरवासः कदाचिन्नराणां तथा दुष्टसंगः परं नीचसंगः॥ दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रे स्थितस्तदा। म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः॥ लग्न से अथवा चंद्र से दसवें स्थान मे मंगल हो तो साहसी, भील के समान क्रूर प्रवृत्ति का, जन्मभूमि से दूर रहनेवाला, दुष्ट तथा नीचो साथ रहनेवाला होता है। यह शत्रु ग्रह की राशि मे हो तो पिता का मृत्यु होता है।

काशीनाथ---शुभकर्मा सुपुत्री गर्विष्ठोपि भवेन्नरः। अच्छे काम करने वाला किन्तु गर्विष्ठ होता है। पुत्र अच्छे होते है

बृहद्यवनजातक—विश्वंभराप्राप्तिमथो । क्षितिजो भवर्षे शस्त्राद् भयम् । जमीन मिलती है । २७ वें वर्ष शस्त्रों से भय होता है । इस के अन्य वर्णन आचार्य, कल्याणवर्मा, वैद्यनाथ, गर्ग और जयदेव के समान है ।

मन्त्रेश्वर—उपर्युक्त शास्त्रकारों के समान ही मत है ।

पुंजराज तथा रामदयाल—इन के मत जागेश्वर के समान है । विषयासक्त अधिक होना इतना फल अधिक कहा है ।

आर्यग्रन्थ—दशमगतमहीजे दान्तिकः कोशहीनो निजकुलजयकारी कामिनोचित्तहारी । जरठसमशरीरो भूमिजीवोपकोपी द्विजगुरुजनभक्तो नातिनीचो न ऱ्हस्वः ॥ संयमी, निर्धन, कुल का उद्धार करनेवाला, स्त्रियों को प्रिय, वृद्ध के समान शरीर से युक्त, जमीन पर उपजीविका करनेवाला, ब्राह्मणों का तथा बडेबूढों का भक्त, एवं मंझले कद का होता है ।

पराशर—धनव्ययं च दशमे धनलाभं कुकर्म च । धन प्राप्त होता है किन्तु खर्च हो जाता है । बुरे कर्म करता है ।

वसिष्ठ—भौमः किल कर्मसंस्थो कुर्यान्नरं बहुकुकर्मरतं कुपुत्रम् । दुराचारी होता है । इस के पुत्र भी अच्छे नही होते ।

गोपाल रत्नाकर—कुल का उद्धार करनेवाला, नगर का प्रमुख, अपना कमांया हुआ धन उपभोगनेवाला, किसी देवालय का अधिकारी होता है ।

घोलप—वाहनसुख मिलता है । घर अच्छा तथा बुद्धि तीक्ष्ण होती है । शत्रुहीन, काव्य तथा कलाओं में कुशल होता हैं ।

हिल्लाजातक—वत्सरे षडधिके विंशतिभिः शस्त्रभीतिमतुलां दशमस्थः । २६ वें वर्ष शस्त्रों से भय होता है ।

महेश—बृहद्यवनजातक के समान मत है ।

यवनमत—धनवान, गुणवान, पूज्य, दयालू और उदार होता है । अच्छा धनवान जमीनदार हो सकता है ।

पाश्चात्य मत—धैर्यशाली, अभिमानी, उतावले स्वभाव का, लोभी होता है । किसी बॅन्क या संस्था का चालक हो सकता है । व्यापार मे

प्रवीण होता है। किन्तु कभी फायदा तो कभी नुकसान भी होता है। वृत्ति पाशवी होती है। टीकाकार होता है। यह मंगल शुभ सम्बन्ध में हो तो धैर्यशाली और बहादुर होता है। सुख और दुःख दोनों मिलते है—स्थिरता नही होती।

अज्ञात—जनवल्लभः। भावाधिपे बलयुते भ्राता दीर्घायुः। विशेष-भाग्यवान्। ध्यानशीलवान्। गुरुभक्तियुक्तः। पापयुते कर्मविघ्नवान्। शुभयुते शुभक्षेत्रे कर्मसिद्धिः। कीर्तिप्रतिष्ठावान्। अष्टादशे वर्षे द्रव्यार्जन-समर्थः। व्यापारात् भूमिपालतः प्रसादात् साहसात् वन्हिशस्त्रात्। सर्व-समर्थः। तेजवान्। आरोग्यं। दृढगात्रः। चौरबुद्धिः। दुष्कृतिः। भाग्येश-कर्मेशयुते महाराजयौवराज्यपट्टाभिषेकवान्। गुरुयुते गजान्तैश्वर्यवान्। भूसमृद्धिमान्। लोकप्रिय होता है। दशमस्थान का स्वामी बलवान हो तो भाई दीर्घायु होता है। विशेष भाग्यवान होता है। ध्यान धारणा करता है तथा शीलवान, गुरु का भक्त होता है। पापग्रह के साथ हो तो किसी भी कार्य मे विघ्न उपस्थित करता है। शुभ ग्रह के साथ या उस की राशि में हो तो काम सफल होते है, कीर्ति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। १८ वें वर्ष व्यापार मे, या राजा की कृपा से अथवा साहस से धन प्राप्त करता है। सामर्थ्यवान, तेजस्वी, नीरोग, मजबूत शरीर का होता है। बुद्धि चोर जैसी और आचरण बुरा होता है। भाग्य और कर्मस्थान के अधिपति भी मंगल के साथ दशम में ही हो तो वह राजयोग होता है। गुरु के साथ हो तो गजान्त ऐश्वर्य प्राप्त होता है। जमीन बहुत मिलती है।

मेरे विचार—इस स्थान में जागेश्वर, पुंजराज, रामदयाल, पराशर तथा आर्यग्रंथकार ने कुछ शुभ और कुछ अशुभ ऐसे मिश्र फल कहे है। वसिष्ठ, हिल्लाजातक तथा पाश्चात्य ग्रंथकार ने अशुभ फल कहे है। अन्य शास्त्रकारों ने शुभ फल कहे है। इन में जो अशुभ फल है उन का अनुभव वृषभ, मिथुन, तुला तथा कुम्भ मे आता है। शुभ फलों का अनुभव मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन मे आता है। आर्य-ग्रंथकार ने कामिनीचित्तहारी तथा जरठसमशरीर ये दो परस्परविरुद्ध

फल बतलाए है। इन की संगति लगाना सम्भव नही। स्त्रियां एक तो सुंदरता पर मोहित होती है अथवा संपत्ति या विद्वत्ता पर भी मोहित होती है।

मेरा अनुभव–इस स्थान में मंगल हो तो माता या पिता की मृत्यु बचपन में ही होती है। व्यक्ति दत्तक लिया जा सकता है। यह योग वृषभ, कन्या और मकर मे होता है। पुत्रों का मृत्यु होता है। समाज में कीर्ति प्राप्त नही होती। नवमेश और दशमेश के साथ यह मंगल हो तो राजयोग होता है। गुरु के साथ हो तो गजान्त संपत्ति होती है ऐसा कहा है किन्तु इस के बिलकुल विपरीत एक कुण्डली देखिए—

एक क्ष जन्म वैशाख शु. ८ शक १८१७ गुरुवार इष्ट घटिका २३–३० । लग्न ५–२–२९–३० ।
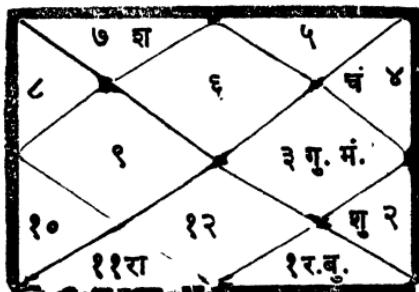
यह व्यक्ति आयुभर ३० रुपया माहवार पर नौकरी करता रहा। गजान्त संपत्ति का योग कर्क, सिंह या मीन लग्न हो और दशम मे गुरु–मंगल हो तो ही होता है। लग्न मे स्त्रीराशि हो तो अपने प्रयत्न से बडे कष्ट के बाद उन्नति होती है। पुरुष राशि लग्न मे हो तो प्रयत्न न करते हुए भी उन्नति होकर कीर्ति प्राप्त होती है। कुछ शास्त्रकारों ने इस स्थान मे पूर्वजन्मों के कर्मों का विचार करना चाहिए ऐसा कहा हैं। दशम मे पापग्रह हो तो पूर्वजन्म के पाप के फलस्वरूप इस जन्ममे दुःख भोगना पडता है। संतति होती है तो संपत्ति नही होती और संपत्ति हो तो संतति नही होती या मानसन्मान प्राप्त नही होता। इस स्थान के मंगल से वंशक्षय होता है ऐसा भी अनुभव मिलता है। इसका फल कई अंशों मे लग्न के

मंगल के समान होता है। बहुत धंदे करने की रुचि होती हैं किन्तु ठीक तरह से एक भी नही होता। २६ वें वर्ष से कुछ भाग्योदय होता है और ३६ वें वर्ष से स्थिरता प्राप्त होती है। इन लोगों को मृत्यु के पूर्व अपना घर देखने की बहुत इच्छा होती है।

दशम के मंगल के उदाहरण स्वरूप महाराष्ट्र के विख्यात गायक श्री. बालगन्धर्व की कुण्डली देखिए—
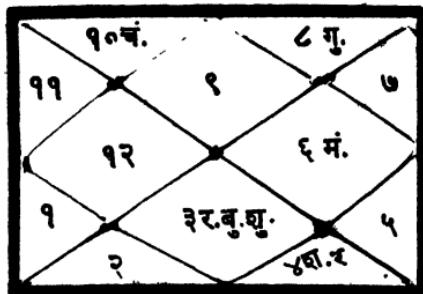
अमरावती के साप्ताहिक पत्र उदय के संपादक श्री. बामणगांवकर की कुण्डली भी ऐसी ही है। दोनों को पुत्रसन्तति नही। सिर्फ लडकियां हैं। किन्तु श्री. बालगन्धर्व का एकही विवाह हुआ और श्री. बामणगांवकर के दो विवाह हुए।

वैद्यनाथ ने कहा है कि दशम मे कर्क राशि का मंगल बहुत सुख देता है। किन्तु ऐसे समय लग्न में तुला राशि होती है और लघुपाराशरी के अनुसार लग्न के लिए 'जीवार्कमहिजाः पापाः'—गुरु, रवि और मंगल ये ग्रह अशुभ है। इन दो मतों मे विरोध है किन्तु वह दूर किया जा सकता है। लघुपाराशरी का मत लग्नकुण्डली के विचार के लिए ठीक है। इस मंगल के फलस्वरूप बचपन में माता या पिता का मृत्यु होकर पूर्वार्जित जायदाद नष्ट होती है। वैद्यनाथ का मत महादशा के विचार के लिए ठीक है। इस मंगल की महादशा में स्थिरता प्राप्त होती है, मानसन्मान होता है, जायदाद मिलती है, कीर्ति प्राप्त होती है। महत्वाकांक्षा बहुत होती है। प्रयत्नपूर्वक उन्नति करते है। सब लोगों के साथ झगड कर प्रगति करने की प्रवृत्ति होती है। इसके उदाहरणस्वरूप एक कुण्डली

देखिए—जर्मनी के भूतपूर्व सम्राट कैसर जन्म ता. २७-१-१८५९ दोपहर ३, बर्लिन ।

इनने सन १९१४ में पहला विश्वयुद्ध शुरू किया। इसमें दशम का मंगल प्रेरक रहा। किन्तु षष्ठ के चंद्र से इस युद्ध में इनका पराजय हुआ। रवि शनि प्रतियुति से इन्हें राज्यत्याग करना पडा।

दशम का मंगल कर्क, वृश्चिक, मीन तथा मेष, सिंह, धनु मे साधारण अच्छे फल देता है। वृषभ, कन्या, मकर तथा मिथुन, तुला, कुंभ मे साधारण अशुभ फल देता है। विदर्भ कॉंग्रेस के भूतपूर्व नेता वीर वामनराव जोशी की कुण्डली में दशम मे मकर का मंगल था। इन्हें कीर्ति बहुत मिली किन्तु पुत्रसन्तति नही हुई। एक और उदाहरण देखिए। आचार्य अत्रे—ता. १३-८-१८९८ सुबह ७-३० स्थान सासवड (पूना के पास)।
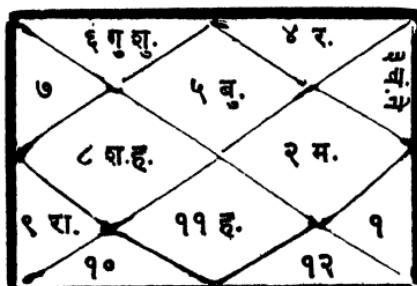
ये महाराष्ट्र के विख्यात साहित्यिक, नाटककार, कवि, आलोचक तथा सम्पादक हैं। कीर्ति बहुत मिली। ३६ वें वर्ष से भाग्योदय शुरू हुआ। चतुर्थ, पंचम तथा व्यय स्थान में पापग्रह है अतः विदेश यात्राएं

हुई। सप्तमेश शनि हर्षल से युक्त है अतः स्त्री विजातीय है। शुक्र गुरु के साथ है अतः पत्नी सुशिक्षित, शान्त संसारदक्ष तथा स्नेहल है। (सिंह लग्न के व्यक्ति प्रायः पत्नी के विषय में भाग्यवान होते है।)

महाराष्ट्र के एक और कवि तथा नाटककार श्री. स. अ. शुक्ल जन्म ता. २६-५-१९०२ सुबह १० स्थान कऱ्हाड।

इन्हें दशम के मंगल के फल स्वरूप लेखन व्यवसाय में कीर्ति तथा धन दोनों की प्राप्ति हुई।

डॉक्टरों की कुंडली मे वृश्चिक राशि मे दशम मे मंगल हो तो वे सर्जन के रूप में प्रसिद्ध होते है। मिरज के डॉक्टर वालनेस की कुण्डली में यह योग देखा है। वकीलों के लिए यह योग अच्छा है। फौजदारी मामलों में इन्हें अच्छा यश मिलता है। तथा अदालत मे अपील के वक्त अच्छा प्रभाव पडता है। नौकरी मे इस मंगल के फलस्वरूप बडे अफसरों से झगडे होते है। वैद्यनाथ ने इस मंगल के बारे मे एक और श्लोक कहा है--माने वा यदि पंचमे कुजरविच्छायाकुमारेन्दवः सद्यो मातुलतातबाल-जननीनाशं प्रकुर्वन्ति ते। दशम या पंचम मे मंगल हो तो मामा का तत्काल नाश होता है, रवि हो तो पुत्र का तथा चन्द्र हो तो माता का नाश होता है। किन्तु दशम मे मंगल हो तो मामा के मृत्यु से कुछ सम्बन्ध प्रतीत नही होता।

भारत सरकार के राज्यमंत्री डॉक्टर पंजाबराव देशमुख की कुण्डली मे दशम मे कर्क राशि में मंगल है। विख्यात वैज्ञानिक सर रमन की कुण्डली मे दशम मे धनु राशि मे मंगल है।

एकादश स्थान

-आचार्य—लाभे प्रभूतधनवान् । विपुल धन प्राप्त होता है ।

गुणाकर—ने भी यही फल कहा है ।

पराशर—लाभे धनं सुखं वस्त्रं स्वर्णक्षेत्रादिसंग्रहम् । धन, सुख, वस्त्र, सोना खेती आदि का लाभ होता है ।

वैद्यनाथ-आयस्थे धरणीसुते चतुरवाक् कामी धनी शौर्यवान् । बोलने मे चतुर, कामी, धनवान और शूर होता है ।

कल्याणवर्मा—एकादशगे धनवान् प्रियसुखभागी तथा भवेत् शूरः । धनधान्यसुतैः सहितः क्षितितनये विगतशोकश्च ।। यह धनवान्, सुखी, शूर, पुत्रों से युक्त तथा शोकरहित होता है ।

वसिष्ठ—क्षितिजश्च नारीम् । स्त्रियों का लाभ होता है ।

गर्ग-प्रभूतधनवान् मानी सत्यवादी दृढव्रतः । अश्वाढ्यो गीतसंयुक्तो लाभस्थे भूमिनन्दने ।। विधेयः प्रियवाक् शूरो धनधान्यसमन्वितः । लाभे कुजे मृतो मानी हृतचित्तोग्नितस्करैः ।। धनवान, मानी, सत्य बोलनेवाला, व्रत का दृढता से पालन करनेवाला, अश्वों का स्वामी, गायक मधुर बोलनेवाला, सेवक, शूर, मृत जैसा निष्क्रिय तथा निराश अन्तःकरण का होता है । अग्नि और चोरों से इस की हानि होती है ।

जीवनाथ-यदाये माहेयः प्रभवति बलादेव समरे । जयत्यद्धा शत्रूनपि सुतविषादेन विकलः ।। धनग्रामक्षोणीचपलतुरगानंदकृदसौ । परार्थव्यापाराद् क्षतिमतितरामेव लभते ।। संग्राम में शत्रुओं पर विजय पानेवाला तथा पुत्र के दुःख से पीडित होता है । इस मंगल के फलस्वरूप जमीन, धन, वाहन आदि से सुख प्राप्त होता है । किन्तु दूसरों की दी हुई पूंजी से व्यापार किया तो उसमे बहुत नुकसान होता है ।

नारायणभट्ट—का मत भी प्रायः इसी प्रकार है ।

बृहद्यवनजातक—ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरूप्यवस्त्रागमं सुललितानि च वाहनानि । भूपप्रसादसुकुतूहलमंगलानि वध्वादवाप्तिभवने हि धरात्मजः ।।

सभी प्रकार की संपत्ति–जैसे तांबा, प्रवाल, चांदी, सोना, वस्त्र तथा वाहन–का सुख प्राप्त होता है तथा राजा की कृपा प्राप्त होकर मंगल होता है। लाभे सृजेत् जिनवर्षलक्ष्मीम्। २४ वें वर्ष में धन प्राप्त होता है।

जागेश्वर––कुजेकादशे पुत्रचिन्ता नराणाम् भवेज्जाठरं गुल्मरोगादियुक्तम्। प्रतापो भवेत् सूर्यवत् तस्य नूनं नृपात्तुल्यता वा भ्रमस्तस्य देहे॥ पुत्रचिन्ता होती है। पेट में गुल्म आदि रोग होते हैं। इस का प्रताप सूर्य जैसा और वैभव राजा जैसा होता है। किन्तु इसे भ्रम भी हो सकता है।

काशीनाथ––लाभे भौमे भूरिलाभो नानापापान्नभक्षकः। नेत्ररोगी भूपमान्यो देवद्विजरतो नरः॥ इसे बहुत लाभ होता है। यह गन्दा अन्न खाता है। आंखों के रोग होते हैं। राजा द्वारा सन्मान होता है। देव और ब्राह्मणों का भक्त होता है।

मन्त्रेश्वर––धनसुखयुतोऽशोकः शूरो भवेत्सुशीलः कुजे। धनवान, सुखी, शोकरहित, शूर तथा सदाचारी होता है।

जयदेव––इस का मत बृहद्यवनजातक के समान है।

आर्यग्रन्थ––सुरजनहितकारी चायसंस्थे च भौमे नृप इव गृहमेधी पीडितः कोपपूर्णः। भवति च यदि तुंगो लोकसौभाग्ययुक्तो धनकिरणनियुक्तः पुण्यकामार्थलोभी॥ देवों का भक्त, राजा के समान घर के काम करनेवाला, दुःखी तथा क्रोधी होता है। उच्च राशि में हो तो लोकप्रिय होता है। बहुत किरणों से युक्त हो तो पुण्य कार्य करने वाला और धन का लोभी होता है।

पुंजराज––एवं भूमिसुतेऽग्निशस्त्रजनितो यात्राधनैः साहसैः स्वर्णैर्वा मणिभूषणेसु नितरां द्रव्यागमः संवदेत्। यात्रा से, साहस से, अग्नि या शस्त्रों से अथवा सोने जवाहरात के व्यापार में बहुत धन प्राप्त होता है।

रामदयाल––पुंजराज के समान ही मत है।

नारायण भट्ट––सकृच्छून्यतार्थे च पैशून्यभावात्। धनहीन तथा दुष्ट होता है।

घोलप—स्वामी की संगति से सुख होता है। प्रभु से द्रव्य प्राप्ति होती है। अच्छे घर में रहता है। श्रेष्ठ कवि, वाहनों से युक्त, धनवान, मित्रोंद्वारा घिरा हुआ और प्रतापी होता है।

गोपाल रत्नाकर—बहुत जमीन मिलती है। खेतीवाडी करता है। भाईबन्द बहुत होतें है। बहुश्रुत किन्तु ठगानेवाला होता है।

हिल्लाजातक—एकादशे भूमिसुतो धनलाभकरः सदा। सदा धनलाभ होता है।

यवनमत—इस के वस्त्र रेशमी या जरी के होते है। घर में नौकर-चाकर होते हैं। घोडे, गाडी आदि वाहन होते हैं। कामुक, पंडित तथा सत्यभाषी होता है।

पाश्चात्य मत—इस व्यक्ति के मित्र विश्वस्त नही होते। मित्रों द्वारा ठगाया जाता है। किन्तु इस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो मित्रों से अच्छा लाभ होता है। जलतत्त्व की राशि में यह मंगल हो तो मित्रों के सम्बन्ध से आपत्ति आती हैं। उन की जमानत भरनी पडती हैं। यह अग्नि तत्त्व की राशि में हो तो सट्टा, लॉटरी, रेस और जुए में अच्छा लाभ होता है। इस स्थान में मंगल की आत्म संयमन की शक्ति प्रबल होती हैं।

अज्ञात—बहुकृत्यवान्। धनी। स्वगुणैः अमितलाभवान्। सिंहस्थे वा क्षेत्रेशयुते राज्याधिपत्यवान्। शुभद्वययुते महाराज्याधिपत्ययोगः। भ्रातृवित्तवान्। द्रव्यार्थमानभोगी। सन्ततिपीडा। विचित्रयानम्। हर्म्य-भूस्वर्णलाभो भवति। बहुत काम करता है। धनवान तथा अपने गुणों से बहुत लाभ प्राप्त करनेवाला होता हैं। यह सिंह राशि में अथवा लाभेश के साथ हो तो बडा अफसर होता है। दो शुभग्रहों के साथ हो तो बडे राज्य का अधिकारी होता है। भाई का द्रव्य प्राप्त होता है धन तथा मान प्राप्त होता है। सन्तान के बारे में कष्ट होता है। तरह तरह के वाहनों में घूमता है। बडी बिल्डिंग, जमीन तथा सोने-जवाहरात की प्राप्ति होती है।

मेरे विचार—ऊपर के फलवर्णन में गर्ग, जीवनाथ, जागेश्वर, नारायणभट्ट इन के मत पुरुषराशियों में ठीक प्रतीत होते है। अन्य शास्त्र-कारों ने कुछ शुभ फल कहे है उन का अनुभव स्त्री राशियों में आता है।

मेरा अनुभव---इस स्थान में मंगल पुरुष राशि में-मेष, सिंह, धनु, मिथुन, तुला या कुंभ में हो तो पुत्र नही होते, हुए भी तो जीवित नही होते अथवा गर्भपात होते है अथवा बडे होने पर मांबाप से झगडते है। महत्त्वाकांक्षा बहुत होती है किन्तु साध्य नही हो पाती। मंगल स्त्रीराशि में हो तो तीन पुत्र होते है। कीर्ति मिलती है। अफसर रिश्वत के तो पकडे जाते है। (लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम और लाभ स्थान ये गुप्त बातें प्रकट करने के स्थान है। धन, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम यें स्थान गुप्त ही रखते है। व्यय स्थान के बारे में सन्देह है।) इस स्थान में स्त्री राशि के मंगल से द्रव्यलाभ तथा अधिकार प्राप्ति के लिए चाहे जो करने की प्रवृत्ति होती है। अपनी पत्नी का शील तक बेच सकते है (इस फल का अनुभव मेष, तुला और वृश्चिक में शायद नही मिलता) पुरुष राशि में यह मंगल हो तो स्त्रियों को मासिक धर्म के समय तकलीफ होती है, बहुत रक्तस्राव होना, गर्भाशय फिसल जाना इत्यादि बातें होती है। सन्तति प्रतिबन्धक रोग होते हैं।

डॉक्टरों के लिए यह योग अच्छा है। उत्तम सर्जन तथा स्त्री रोगों के विशेषज्ञ होते है। ग्रॅन्ट मेडिकल कॉलेज बंबई के भूतपूर्व डीन डॉक्टर नाडगीर की कुण्डली देखिए-जन्म ता. १६-११-१८८०, स्थान धारवाड।
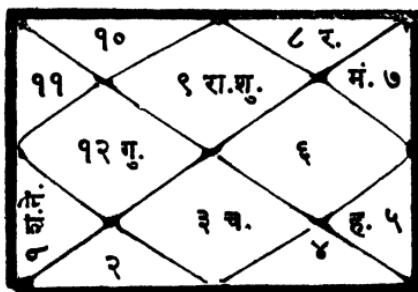
वे अस्थिशास्त्रज्ञ और सर्जन के रूप में प्रसिद्ध हुए। व्ययस्थान के रवि के फलस्वरूप जीवन में प्रगति हुई। गरीबों के लिए ऑपरेशन की मुफ्त व्यवस्था हो इस लिए इन ने हुबली में कोऑपरेटिव सोसाइटी का अस्पताल स्थापित किया। सन १९२७ में अर्धांगवायु से इन की मृत्यु हुई।

वकीलों की कुण्डली में यह योग अच्छा होता है। अदालत में प्रभाव पडता है और धन भी मिलता है। किन्तु एखाद बार सनद रद्द होने की नौबत आ जाती है। वादी और प्रतिवादी दोनों से रिश्वत लेने की इन्हें आदत होती है किन्तु उसी से कठिनाई होती है। इंजीनियर, टर्नर, फिटर, ड्राइवर, सुनार, लुहार, बढई आदि लोगों को यह मंगल अच्छा होता है।

———०———

बारहवां स्थान

वैद्यनाथ—भौमे विरोधी धनदारहीनः। विरोधक, धनहीन तथा स्त्रीहीन होता है।

आर्यग्रन्थ—परधनहरणेच्छुः सर्वदा चंचलाक्षश्चपलमतिविहारी हास्ययुक्तः प्रचण्डः। भवति च सुखभागी द्वादशस्थे च भौमे परयुवतिविलासी साक्षिकः कर्मपूरः॥ इसे दूसरों का धन अपहरण करने की इच्छा होती है। आंखें चंचल, बुद्धि चपल और इच्छा घूमनेफिरने की होती है। हंसमुख, तगडे शरीर का, सुखी और परस्त्री से सम्बन्ध रखनेवाला होता है। गवाही देने का काम बहुत करना पडता है।

जयदेव—बन्धनात्यययुतोऽल्पदृग्बलो मित्रनुत् कुमतिमान् कुजेऽन्त्यगे। कैद, मृत्यु के समान आपत्ति आदि से युक्त होता है। नेत्ररोगी और दुर्बल होता है। मित्रों को कष्ट देनेवाला, दुर्बुद्धि होता है।

मन्त्रेश्वर—नयनविकृतः क्रूरोऽदारो व्यये पिशुनोऽधमः। नेत्ररोगी, क्रूर, स्त्रीहीन, दुष्ट और अधम होता है।

पुंजराज—भूमीपुत्रे चेत् व्ययस्थानसंस्थे द्रव्यं पुंसां नीयते क्षत्रियैस्तत्। घातः कट्यां दक्षवामे च पादे वामे कर्णे लोचने तत्स्त्रिया वा॥ पुण्याधिक्यादल्पकं तन्नृनार्योः पापाधिक्याच्चाधिकं वा तदंगं। दग्धं वाच्यं वह्निना वाऽप्युधोत्थं वातं यद्वा सव्रणं दीर्घकालम्॥ कुजो वा व्ययस्थितश्चेन्मनुजस्य नूनं। तदा पितृव्यो निधनं प्रयाति पितृष्वसादृष्टयुतो न सद्भिः॥ चोरी डकैतों से द्रव्यहानि होती है। स्त्री के बाईं ओर के किसी अवयव को—आंखें, कान, पैर या हाथ को अपघात होता है। यह मंगल शुभ सम्बन्ध में

हों तो जखम थोडे समय तक रहती है। अशुभ सम्बन्ध में हो तों अधिक काल तक रहती है। चाचा का और फूफा का मृत्यु होता है।

आचार्य—पतितस्तु रि:फे—पतित होता है।

गुणाकर—आचार्य के समान मत है।

कल्याणवर्मा—नयनविकारी पतितो जायाघ्नः सूचकश्च। द्वादशगे परिभूतो बन्धनभाक् भवति भूपुत्रे॥ नेत्ररोगी, पतित, अपमानित होता है। पत्नी का घात करनेवाला तथा कारागृह में जानेवाला होता है।

गर्ग—कोपनो बहुकामाढयो व्यंगो धर्मस्य दूषकः। क्रोधी, कामुक, किसी अवयव से हीन, धर्म भ्रष्ट होता है। भूमिजे द्वादशस्थे तु विद्वेषी मित्रबन्धुषु। मित्रों का और बंधुओं का द्वेष करता है।

बृहद्यवनजातक—स्वमित्रवैरं नयनातिबाधा क्रोधाभिभूति विकलत्वमंगे। धनव्ययं बन्धनमल्पतेजो व्यवस्थभौमो विदधाति नूनम्॥ मित्रों से वैर, आंखों को बहुत पीडा, बहुत क्रोध, अवययों में हीनता, धनहानि, कारागृह-वास, तेज कम होना ये इस मंगल के फल है। पंचवेदमिते कुजो धनहृरः। ४५ वें वर्ष धनहानि होती है।

जागेश्वर—तथा कर्णकण्ठे परा रक्तपीडा जने नैव मान्यः। कान और गले में तथा खून बिगडने से बहुत पीडा होती है। लोंगों में मान्यता नही मिलती।

काशीनाथ—असद्व्ययी व्यये भौमे नास्तिको निष्ठुरः शठः। बहुवैरी विदेशे च सदा गच्छति मानवः॥ अयोग्य कामों में खर्च करनेवाला, नास्तिक, निष्ठुर, दुष्ट, बहुतों का शत्रु और सदा विदेश जानेवाला होता है।

नारायण भट्ट—शाताक्षोऽपि तत्सक्षतो लोहघातैः कुजो द्वादशोऽर्थस्य नाशं करोति। मृषा किंवदन्तो भयं दस्युतो वा कलिः पारधीहेतुदुःखं विचिन्त्यम्॥ इस का शस्त्र का आघात भयंकर होता है। धनहानि होती है। झूठी अफवाहे उठती है। चोरों से तथा झगडों से और पराधीनता से भय होता है।

वसिष्ठ—क्षितिसुतो बहुपापभाजम्। बहुत पाप करता है।

जीवनाथ—कुजोऽपाये यस्य प्रभवति यदा जन्मसमये तदा वित्तापायं सपदि कुरुते तस्य सततं । कलंकप्रख्यातिं पिशुनजनतश्चौरकुलतो भयं वा शस्त्रदेरपि रिपुकृतं दुःखमाधिकं ।। तात्काल धनहानि होती हैं । दुष्टों के द्वारा झूठा कलंक लगाया जाता है । चोरों से, शस्त्रों से और शत्रुओं से बहुत भय होता है ।

पराशर—व्यये नेत्ररुजं भ्रातृनाशं च कुरुते । नेत्ररोग होवे है । भाई का मृत्यु होता है ।

हिल्लाजातक—पंचवेदमिते वर्षे हानिदो द्वादशः कुजः । ४५ वें वर्ष हानि होती है ।

घोलप—दण्ड और कैद होती हैं । खर्चीला, क्रूर, झगडालू होता है । द्रव्यलाभ के समय दुष्ट लोग विघ्न उपस्थित करते है । यंत्र, सांप तथा आग से भय होता है । कारागृह में मृत्यु होता है ।

गोपाल रत्नाकर—निर्धन, वातरोग से पीडित, ठगानेवाला, बहुत शत्रुओं से युक्त होता है । घर आग से जलता है । स्त्री की मृत्यु होती है । यह मंगल शुभ सम्बन्ध में हो तो सब दुःख दूर होते है ।

यवनमत—वाणी कडवी होती है । क्रोधी, दुःखी, बहुत प्रवास से त्रस्त, उष्णता से आंखों का नाश होना, मोतियाबिन्दु होंना आदि इस मंगल के फल है ।

पाश्चात्य मत—गुप्त शत्रुओं से भय होता है । शनि के साथ अशुभ योग हो तो चोर-डाकुओं से भय होता हैं । कारागृहवास होता हैं । साहसी किन्तु कभी पागल होता है । नीच राशि मे अथवा अशुभ ग्रहों के साथ यह मंगल हो तो यह फल मिलता है । जुंआ, अस्वस्थता, साहस, हिंसक वृत्ति, अनैतिकता और राजद्रोही प्रवृत्ति के कारण अपराध करने की प्रवृत्ति होती है ।

अज्ञात—द्रव्याभावः । पापयुते दाम्भिकः । शत्रुयुते राजबन्धनम् । द्रव्यनाशादियोगकरः । दुर्बुद्धिमान् । मातृनाशस्तथा च भ्रातृकष्टः अष्टाविंशतिवर्षे । निर्धनता और दुर्बुद्धि होती है । यह पापग्रह के साथ हो तो

दांभिक होता है । शत्रुग्रह के साथ हो तो कैद होती है । द्रव्यनाश होता है । २८ वें वर्ष माता की मृत्यु होती है तथा भाई को कष्ट होता है ।

मेरे विचार--इस स्थान में आर्यग्रन्थकार छोड कर अन्य सभी ने अशुभ फल बतलाए हैं । ये फल सभी राशियों में मिश्र रूप से अनुभव में आते हैं । तथापि मेष, सिंह, धनु, कर्क तथा मीन में अशुभ फल मिलते है । मिथुन, तुला, कुम्भ, में अशुभ फल कम मिलते है । वृश्चिक और मकर में बहुत अशुभ फल मिलते हैं । हिल्लाजातक तथा यवनजातक ने ४५ वें वर्ष धनहानि बतलाई उस का अनुभव नही आता । अज्ञात ने २८ वें वर्ष माता की मृत्यु, भाई को कष्ट बतलाया यह अनुभव से ठीक प्रतीत होता है । आर्यग्रन्थकार ने जो अच्छे फल कहे वे मेष, सिंह, मिथुन, कर्क तथा तुला राशि के है । पराशर ने इस स्थान में भाई के मृत्यु का फल कैसे कहा यह स्पष्ट नही । शायद यह पितृस्थान से तीसरा स्थान है । इस लिए कहा होगा ।

मेरा अनुभव--यह व्यक्ति बहुत खाता है । कामुक होता है किन्तु स्त्रीसुख कम मिलता है । एक पत्नी की मृत्यु होकर दूसरी से ब्याह करना पडता है । गणित की शिक्षा पूरी नही होती । मार्फोलाजी (वनस्पति तथा प्राणियों के आकार तथा गठन का शास्त्र) का अध्ययन होता है । प्रामाणिक, सत्यवादी, उदार, क्रोधी, त्यागी होता है । ये लोग बहुत दान देनेवाले, संस्था स्थापन करनेवाले होते है । नेता हो तो क्रान्तिवादी होते है । भाई और सन्तति को यह योग मारक है । वंशक्षय हो सकता है । नागपुर के दानवीर रायबहादुर डी. लक्ष्मीनारायण की कुण्डली में व्ययस्थान में तुला राशि में मंगल था । स्वर्गीय देशबन्धु दास की कुण्डली में व्यय में सिंह का मंगल था । लाहोर के लाला गंगाराम की कुण्डली में व्यय में वृश्चिक का मंगल था । इन तीनों का वंशक्षय हुआ । (आम तौर पर नवम स्थान में वंश का विचार किया जाता है । किन्तु मातृस्थान से नौवां व्ययस्थान होता है । अत: माता के पूर्वकर्म के दोष से इस व्यक्ति का वंशक्षय होता हैं ।) सन्तति कम होती है । अधिक हुई तो पुत्रसन्तति नही होती । तीखे, तले हुए पदार्थ खाने की रुचि होती है । विदेशयात्रा करनी पडती है । परस्त्री

गमन करते है। सुधारक, नवमतवादी होते है। पतिपत्नी में दिन में अच्छे संबंध रहते है किन्तु रात में झगडे होते है। मन की इच्छा आकांक्षाएं पूरी नही होती तथापि २६ वें वर्ष से प्रसिद्धि मिलती है। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध साहित्यिक श्री, खांडेकर की कुण्डली में व्ययस्थान में धनु राशि में मंगल है। दयालू, सब के लिए कष्ट करनेवाला होता है। यह अपना, यह पराया ऐसा भेदभाव नही रखते। क्रोधी, स्पष्टवक्ता होते है। सुख प्राप्त करने की हमेशा चिन्ता करते है। कर्ज हो तो मृत्यु के पहले सब कर्ज चुकाया जाता है। गिरना, विष बाधा होना, अपघात होना आदि का डर होता है। सिर दर्द, आधा सिर दुखना, खून बिघडना, गुह्य रोग, वार्धक्य में अपचन आदि विकार होते है। एक शास्त्रकार ने माता की मृत्यु की इच्छा करना ऐसा फल कहा है किन्तु मुझे इस योग में पिता की मृत्यु की इच्छा करनेवाले मिले है। धनसंग्रह कभी नही होता। कोई पैसे उठा ले जाता है, उधार ले जाता है अथवा गुम जाते है। इस मंगल के अशुभ फलों का वर्णन सब शास्त्रकारों ने किया ही है।

प्रकरण छठवां

महादशा विचार

रविविचार में महादशा की संगति के बारे में लिखा है वही पद्धति मंगल की महादशा के लिए भी समझ लेना चाहिए।

मृग, चित्रा तथा धनिष्ठा नक्षत्रमें यह महादशा जन्म से ७ वर्ष तक होती है। इन व्यक्तियों की कुण्डली में लग्न, धन, पंचम, षष्ठ, अष्टम या व्ययस्थान में मंगल हो तो इन्हे बचपन में होनेवाले बहुतसे विकार होते है। इनके मामा, मौसी या भाई की मृत्यु होती है। चेचक, अतिसार आदि रोग होते है। मां को तकलीफ होती है।

रोहिणी, हस्त तथा श्रवण नक्षत्र हो तो यह महादशा १० वे वर्ष से १७ वें वर्ष तक होती है। इस समय विषमज्वर आदि दीर्घ कालीन रोग

होते है। स्कूल में ध्यान न देना, परीक्षा में फेल होना, पिता को तकलीफ होना, ये फल इस समय मिलते है।

कृत्तिका, उत्तराषाढा तथा उत्तरा नक्षत्र हो तो यह महादशा १७ से २४ वें वर्ष तक होती है। इस समय मां या पिता के मृत्यूयोग का विशेष सम्भव होता है। बहिन की भी मृत्यु होती है। शिक्षा में कठिनाई उत्पन्न होती है। शरीर पर फोडे फुन्सी होती है।

भरणी, पूर्वा तथा पूर्वाषाढा इन नक्षत्रों में यह महादशा ३३ वें वर्ष से ४३ वें वर्ष तक आती है। इस समय शिक्षा समाप्त होकर धन प्राप्ति का प्रारम्भ होता है। विवाह हुआ हो तो पत्नी की मृत्यु का योग होता है तथा दूसरा विवाह होता है। मां या पिता की मृत्यु होती है। इन नक्षत्रों में जन्म के समय शुक्र की महादशा होती है। उसके बीस वर्षों में कितने भुक्त हुए और कितने भोग्य रहे इसका विचार जरूर करना चाहिए। यदि भरणी की ६० घटिकाओं में जन्म समय ४० घटिका व्यतीत हुई हो तो शुक्र की महादशा जन्म समय से छठवें वर्ष तक ही रहेगी और इस लिए मंगल की महादशा २३ वें वर्ष से ३० वें वर्ष तक होगी। इस समय कुण्डली में मंगल अच्छा हो तृतीय, पंचम, षष्ठ, दशम, एकादश या व्यय स्थान में हो तो विदेश में प्रवास करने का मौका मिलता है। शिक्षा पूरी होकर कीर्ति प्राप्त होती है। अनपेक्षित धन प्राप्त होता है। इस्टेट मिलती है। चुनाव में विजय प्राप्त होती है। कोर्ट के व्यवहारों में सफलता मिलती हैं। कुछ सन्तानों की या भाई या बहिन की मृत्यु की सम्भावना होती है। भाई भाई में बटवारा होने का योग होता है।

अश्विनी, मघा तथा मूल नक्षत्रों में यह महादशा ४३ वें वर्ष से ५० वें वर्ष तक होती है। इस समय इस्टेटकी व्यवस्था करनी पडती है। पूत्रोंसे तकलीफ होती है। पत्नी और पुत्रोंके अनुरोधसे चलना पडता है।

पुष्य, अनुराधा तथा उत्तराभाद्रपदा इन नक्षत्रों में ६९ से ७६ वें वर्ष तक यह महादशा होती है। इस समय मृत्यु ही एकमात्र फल कहा जा सकता है।

मंगल की दशा के फल के विषय में शास्त्रकार लिखते है---दशादौ सुखमाप्नोति दशान्ते कष्टमादिशेत् । अर्थात् इस दशा के आरम्भ में सुख और अन्तिम समय में कष्ट होता है । मध्यकाल का फल बतलाया नही है अतः वह साधारणतः अच्छा समझना चाहिए । और एक वचन इस प्रकार हैं-भूनन्दनस्य पाकादौ मानहानिर्धनक्षयः । मध्ये नृपाग्निचौराद्यैर्भीतिश्चान्ते तथा भवेत् ॥ इस दशा के आरम्भ में मानहानि और धनहानि होती है तथा मध्य और अन्तिम भाग में सरकार, अग्नि और चोरों से डर पैदा होता है । एक उदाहरण से स्पष्टीकरण करते है । एक क्ष-जन्म ता. २६-९-१८८४ सुबह ९-२७ अक्षांश १९-३५ ।
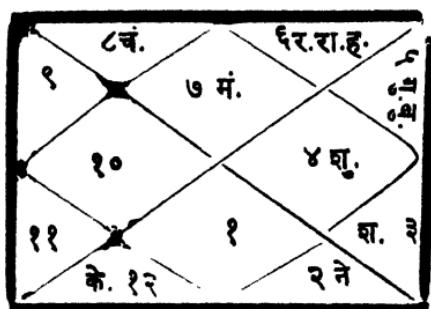
इन महाशय ने बहुत परिश्रम से एक अंग्रेजी हायस्कूल की स्थापना की तथा संस्था की बहुत प्रगति की । इन्हें ही मंगल की महादशा (जो १८-२-१९३० से १८-२-१९३७ तक थी) आरम्भ होने पर गांव के लोगों द्वारा तरह तरह के आरोप लगाए गए और कोर्ट में भी इन की पराजय हुई । आखिर उन्हें वह संस्था छोड कर अन्यत्र जाना पडा ।

मंगल की महादशा के बारे में विस्तृत विवेचन सर्वार्थचिन्तामणि, बृहत् पाराशरी आदि ग्रन्थों में देखना चाहिए ।

प्रकरण सातवां

वास्तु विचार

आधुनिक युग में लोग घर बांधते समय सिर्फ कॉन्ट्रैक्टर के प्लॉन पर ही अवलम्बित रहते है। किन्तु उस घर के रहनेवालों पर उसका क्या प्रभाव पडेगा इसका बिलकुल ही विचार नही किया जाता। बम्बई में ऐसे कई बडे बडे बिल्डिग है जो निर्माण होने के समय से ही अशुभ फल दे रहे है– अर्थात् उनके स्वामी हमेशा बदलते रहते है या उन्हें सन्तान नही होती। मरते समय किसी को सारी सम्पत्ति दे देनी होती है। इस लिए गृहनिर्माण के समय वास्तुशास्त्र और ग्रहमान का विचार जरूर करना चाहिए।

आचार्य वराहमिहिर ने इस विषय पर बृहत्संहिता में एक प्रकरण लिखा है। वसिष्ठ संहिता में भी इस का विवेचन मिलता है। पहले घर की जो जगह हो उसकी लम्बाई चौडाई नापना चाहिए। लम्बाई और चौडाई के गुणाकार से क्षेत्रफल प्राप्त होता है। इसे ८ से भाग देना चाहिए। इसमें जो शेष रहता है उसे आय कहते है। इन आठ आयों के नाम क्रमशः इस प्रकार है—१ ध्वज २ धूम ३ सिंह ४ श्वान ५ वृष ६ गर्दभ ७ गज ८ ध्वांक्ष उदाहरणार्थ–किसी जगह की लम्बाई ९५ हाथ और चौडाई ८३ हाथ है। इस जगह का क्षेत्रफल (९५ × ८३) ७८८५ हुआ। इसे आठ से भाग देने पर ५ शेष रहे। यह वृष आय हुआ। इस प्रकार आयसाधन किया जाता है। इनमें सम आय अशुभ और विषम आय शुभ समझे जाते है। ब्राह्मणों के लिए ध्वज, क्षत्रियों के लिए सिंह, वैश्यों के लिए वृष तथा शूद्रों के लिए गज ये आय अच्छे होते है।

मंगल भूमि का कारक है उसी प्रकार नये घर बनवाने का भी कारक ग्रह है। अतः जन्मकुण्डली में मंगल नीच, वक्री, स्तंभित या अस्तंगत हो तो घर बनवाते समय ऊपर की रीति से आयसाधन जरूर करना चाहिए।

घर के आकार का भी उसमें रहनेवालों पर प्रभाव पडता है। जिस घरमें हमेशा अदालती झगडे चालू रहते हैं, पत्नी और पुत्र बीमार रहते है, झगडे होते है, अन्न होकर भी खाने के वक्त ही तकरार होती है, अकाल

मृत्यु होते है, एक या तीन साल के बाद एखाद मृत्यु होते रहता है, असमाधान रहता है, संकट आते है, शत्रुत्व बढता है, ऐसा घर लाभदायक नही होता यह स्पष्ट है। ऐसे घरों के चार प्रकार है। इनके आकार इस प्रकार है—

क्र. १ पंचक | क्र. २ व्याघ्रमुख | क्र. ३ त्रिकोण | क्र. ४ वर्तुलमुख
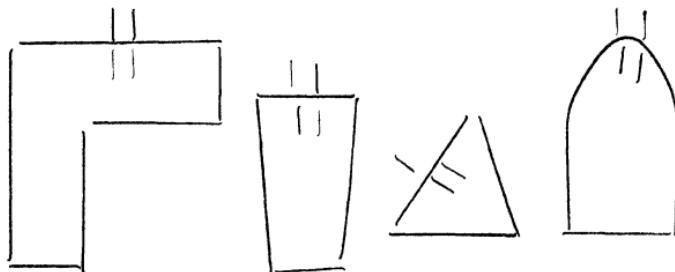
पहले प्रकार में दारिद्रय और शारीरिक पीडा बहुत होती है। दूसरे प्रकार में वंशक्षय होता है। तीसरे प्रकार में हमेशा होनेवाले झगडों से मानसिक स्वास्थ्य नष्ट होता है। बीमारी, कर्ज, फौजदारी मामले आदि से तकलीफ होती है। चौथे प्रकार में चोरी, व्यभिचार, लापरवाही आदि की वृद्धि होती है। घर म असन्तोष बहुत होता है।

कुण्डली में मंगल बलवान हो तो खेत या घर खरीदने के बाद अच्छी प्रगति होती है। ऐसे घर दो प्रकार के है—
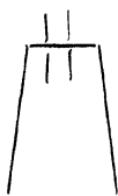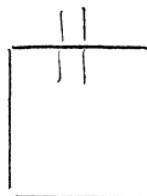
क्र. १ गोमुख | क्र. २ चतुरस्र

अब वास्तुविचार से सम्बधित एक उदाहरण देखिए---एक क्ष-जन्म ता. ४-२-१८९० ।
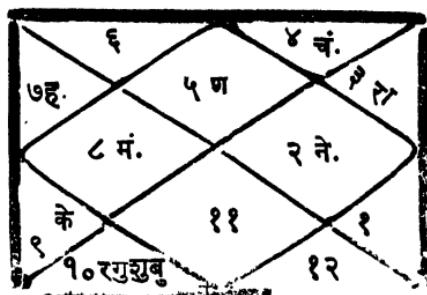
इनका घर व्याघ्रमुखी था। इसमें २१ वर्षो में ७मृत्यु-तीन तीन वर्षों के अन्तर से और एक ही रोग से हुए। धन बहुत मिला किन्तु सन्तति नही हुई। सन १९२७ में वह घर बेचकर विवाह किया। तब संपत्ति विशेष नही रही किन्तु एक लडका और लडकी हुई। आनंद और सुख का वातावरण उत्पन्न हुआ।

यहां ध्यान में रखना चाहिए की इस विषय में शनि के योग भी महत्त्वपूर्ण होते है।

परिशिष्ट ९ सन्तति विचार

जिन स्त्रियों को सन्तति नही होती अथवा होकर चार वर्ष की आयु में ही मर जाती है उन्हें स्वप्नों में कई चमत्कारिक दृश्य दिखाई देते है। साप को मारना अथवा मरवाना या उसके टुकडे किये जाना, गोद से किसी के द्वारा बच्चा छीना जाना, लडाई झगडों में फंसना, घर गिरता हुआ दिखना, वृक्ष अथवा उसके फल गिरते हुए दिखना, तालाव, नदी अथवा समुद्र में गिरना और उससे बाहर निकलने की कोशिश होना, विधवा स्त्री दिखना---ये ऐसे कुछ दृश्य है जो ऐसी स्त्रियों को स्वप्नों में दिखाई देते है। ये पूर्व जन्म के कर्मो के फल है ऐसा समझना चाहिए। इन दोषों के परिहार के बाद ही सन्तति योग हो सकता है। रवि या

अथवा प्रतियोग हो या मंगल से चौथे या आठवें स्थान मे शनि हो तो अशुभ फल मिलते है--विधवा होना, पति से विभक्त होना, सन्तति न होना आदि फल मिलते है। सन्तति नही हुई तोही संपत्ति मिलती है। पुत्र होते ही दीवाला निकलना, नौकरी छूटना, सस्पेंड होना, रिश्वत खाने के अपराध में फंसना आदि प्रकार होते है और आत्महत्या अथवा देशत्याग का विचार करने लगते है। जब जन्मस्थ मंगल से गोचर शनि का भ्रमण होता है तब ये फल मिलते है। पति बुद्धिमान, कलाकुशल, उत्साही होकर भी कुछ कर नही पाता। ५० वें वर्ष तक स्थिरता प्राप्त नही होती। ऐसी कन्या के विवाह के बाद उसका पति दूसरा विवाह कर सकता है। सौत आनेपर भाग्योदय होता है। लग्नादि पांच स्थानों से अन्य स्थानों में मंगल हो तो बाधक नही समझा जाता। किन्तु शनि द्वारा दूषित हो तो उन स्थानों मे भी ये ही अशुभ फल मिलते है। अब कुछ उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण देते है--

उदाहरण १

पत्नी--जन्म पौष शु.५ शक १८३३ सोमवार दोपहर १-४५

पति--जन्म भाद्रपद शक १८२४ इष्टघटी २२-१८

इसने पत्नी का परित्याग कर समाज में जिसे मान्यता नही ऐसी स्त्री से पुनर्विवाह किया। पत्नी की कुण्डली में मंगल के पीछे शनि है। पति के लग्न में भी शनि है अतः उसका मृत्युयोग नही हुआ।

उदाहरण २

पत्नी–जन्म ता. ७–१–१९१२ इष्टघटी २१-३५ अक्षांश १५-५२ रेखांश ७४–३४

पति–जन्म कार्तिक शु. ९ शक १८२६ बुधवार सुबह ८ अ. १७ रे. ७४–३०

इनका विवाह फरवरी, सन १९२४ में हुआ। छह वर्ष बाद यह कन्या विधवा हुई। यहां मंगल के पीछे शनि है।

उदाहरण ३

एक स्त्री–जन्म–पौष शु. १५ शक १८३६ इष्टघटी ५५ स्थान रत्नागिरि।
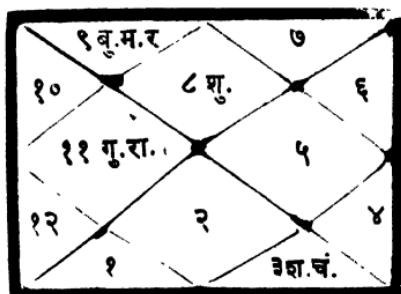
इस स्त्री का विवाह हुआ किन्तु पति से कभी सम्बन्ध नही हुआ–उसने इसका हमेशा के लिए त्याग कर दिया। इस कुण्डली में पतिकारक दोनों ग्रह रवि तथा मंगल शनि के सप्तममें है और चंद्र शनि के साथ अष्टममें है।

उदाहरण ४.

पत्नी–जन्म आश्विन व. शक १८४७ इष्टघटी ५८–४६ बंबई

पति–जन्म आषाढ कृ. ३ शक १८३६ इ. घ. ५८–४५ रत्नागिरी
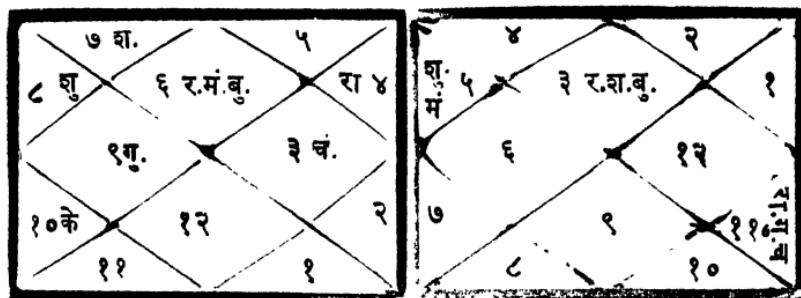
इनका विवाह मई, सन १९३९ में हुआ किन्तु उसी समय पति पागल हुआ। इस स्त्री को विवाह सुख बिलकुल नही मिला। यहां दोनों के लग्न में रवि, शनि. बुध तथा रवि, मंगल, बुध ऐसे ग्रह है। किन्तु पत्नी की कुण्डली में मंगल शनि के पीछे है और शीघ्र ही उनकी युति हो रही है।

उदाहरण ५

पत्नी–जन्म पौष कृ. ५ शक १८३६ इष्टघटी १६–१०

पति–जन्म कार्तिक कृ. १२ शक १८२६ इष्टघटी १२–३०

इस स्त्री की कुण्डली में रवि, मंगल, बुध के सप्तम में शनि है। इन्हे पुत्रसन्तति नही हुई अतः पति का अच्छा भाग्योदय हुआ। पुत्र होते ही समृद्धि नष्ट होने का डर है।

उदाहरण ६

एक स्त्री–जन्म भाद्रपद व. १४ सोमवार शक १८३५
इष्टघटी ३–३५ स्थान वाडे (जि. ठाणा)

विवाह के बाद पति ने इस स्त्री का हमेशा के लिए परित्याग किया। यहां मंगल के पीछे शनि है।

उदाहरण ७

पत्नी–जन्म भाद्रपद कृ. ९ शक १८४३ इष्टघटी ३–१०

पति–जन्म ता. २८–५–१९१९ बुधवार सुबह ७–४५ बम्बई
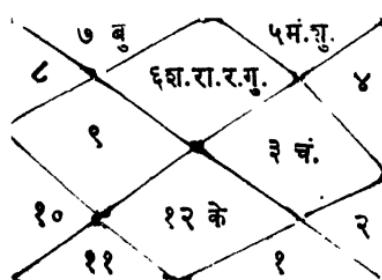
इनका विवाह मई, सन १९३९ में हुआ किन्तु पति तभी से बीमार हुआ और जनवरी, १९४१ में उसकी मृत्यु हुई। यहां दोनों के व्ययस्थान में मंगल है। अतः कई ज्योतिषियों ने इन्हें अनुरूप बताया। किन्तु स्त्री के लग्न में शनि, राहु, रवि ये पापग्रह होने से वैधव्य योग हुआ। इस विषय में वसिष्ठ का वचन है—मूर्तौ राह्वर्कभौमेषु रंडा भवति कामिनी—लग्न में राहु, रवि या मंगल हो तो वह स्त्री विधवा होती है। इस तरह स्त्री की कुण्डली में पति को मारक तीन योग है और पति की कुण्डली में पत्नी को मारक एक ही योग है।

उदाहरण ८

पत्नी—जन्म ता. १५—११—१९२३	पति—जन्म ता. ७—४—१९२६
सूर्योदय, अ. १८—३६ रे. ७२—५६	सुबह ४·२० अ. १८·१२ रे.७४·२०
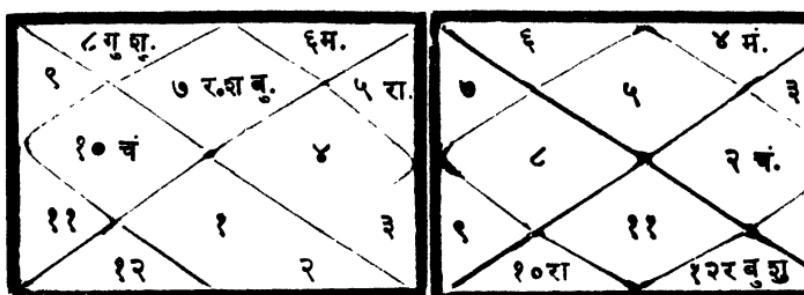
यहां भी दोनों के व्यय में मंगल है यह देखकर विवाह करा दिया गया। किन्तु इन्हे विवाह सुख बिलकुल नही मिला। स्त्री को देखते ही पति को १०४ तक बुखार चढता था। अतः उसे पिता के घर ही रहना पडा। कन्या के लग्न के शनि, रवि का यह फल मिला।

उदाहरण ९

श्रीमती हरिगंगाबाई शहा, वसई, जन्म—भाद्रपद व. ४
शक १८११ सूर्योदय, स्थान सूरत।

इसके जन्म के बाद तीसरे महिने में पिता का मृत्यु हुआ। तेरहवें वर्ष (मार्गशिर कृ. ११ शक १८२४) विवाह हुआ। उस के बाद तीसरे ही महिने में पति का मृत्यु हुआ। सन्तति नही हुई। यहां भी लग्न में रवि, शनि तथा मंगल है।

उदाहरण १०

एक स्त्री–जन्म ता. १८-७-१९२३ दोपहर ११–२५ स्थान-पूना। कन्या लग्नमे शनि, धनस्थान में गुरु, दशमस्थान में बुध, शुक्र, लाभस्थानमें रवि, मंगळ और व्ययस्थान में चंद्र, राहू सिंह राशि में है। इसका विवाह ४–२–१९४१ को हुआ और १०–३–१९४१ को इसके पति की मृत्यु हुई। वह डॉक्टर था और वह लडकी भी डॉक्टरी पढने लगी। लग्न में शनि, व्यय में राहू, चंद्र तथा धनस्थान में गुरु इस योग से यह वैधव्य हुआ।

उदाहरण ११

पत्नी–जन्म मार्गशिर कृ. ९ शक १८२९ इष्टघटी ३६–५४। सिंह लग्न, तृतियस्थान में चंद्र, पंचमस्थान में रवि, बुध षष्ठस्थान में शुक्र, सप्तमस्थान में शनि, अष्टमस्थान में मंगल, लाभस्थान में राहु और व्यय स्थानमे कर्क राशिमे गुरु है। पति–जन्म श्रावण व. ९ शक १८१५ इष्टघटी ३७ ता. ४–९–१८९३ सिंह लग्न में रवि, मंगल, बुध धनस्थान में शनि, शुक्र अष्टमस्थान में राहु और दशमस्थान में चंद्र, गुरु वृषभ राशिमें है।

इन दोनों ने विवाह के बाद गरीबीं में ही दिन बिताए। विशेष समृद्धि की आशा बिलकुल नही। किन्तु दोनों में बहुत प्रेम है और सन्तति

भी अच्छी हुई । यहां पत्नी की कुण्डली में अष्टम के मंगल के पीछे शनि है । किन्तु पति की कुण्डली में लग्न में रवि, मंगल और धनस्थान में शनि शुक्र है । अतः दुष्परिणाम नही हो सका ।

उदाहरण १२

एक स्त्री–जन्म ता. २–१२–१९१२ रात ९ स्थान अमरावती । लग्न मिथुन, चतुर्थस्थान में कन्या राशि में चंद्र, षष्टस्थान में रवि, मंगल, बुध सप्तमस्थान में शुक्र, गुरु भाग्यस्थान में नेपच्यून और दशममें राहू, वृषभ राशिमें व्ययस्थान में शनि है ।

पति की कुण्डली में कुंभ लग्न में गुरू है, व्यय में शनि तथा दशम में मंगल है । यहां स्त्री की कुण्डली मे रवि मंगल शनि द्वारा दूषित है । अतः भाग्योदय होने पर भी पुत्रसन्तति नही हुई ।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होगा कि जिस कन्या की कुण्डली में शनि–मंगल का अशुभ योग है अथवा चतुर्थ में शनि है अथवा धन, चतुर्थ, या सप्तम में पापग्रह है उसका विवाह नही होता, हुआ तो संसारसुख नही मिलता अथवा वैधव्य प्राप्त होता है । ऐसी कन्या के वर की कुण्डली में शुक्र और शनि का अशुभ योग होना चाहिए---युति, प्रतियोग अथवा द्विर्द्वादश योग होना चाहिए । उन दोनों का जीवन गरीबी में किन्तु समाधानपूर्वक बीतेगा । जिस तरह कन्या की कुण्डली मे मंगल दूषित हो तो पति पर अनिष्ट परिणाम होता है उसी तरह पति की कुण्डली में शुक्र दूषित हो तो पत्नी पर अनिष्ट परिणाम होता है । इस लिए इन दोनों अशुभ योगों के इकठ्ठे आने से सुखमय जीवन बीतता है । अंतः विवाह के समय सिर्फ मंगल पर अवलंबित नही रहना चाहिए । रवि और शनि के संबंध भी देखना जरूरी है ।

शुक्र-विचार

दैव विचार माला पुष्प—६

शुक्र-विचार

लेखक

ज्योतिषी—स्व. ह. ने. काटवे

संशोधित हिन्दी अनुवाद

नागपूर प्रकाशन, मेनरोड सिताबर्डी, नाग

विषयानुक्रम

प्रथमावृत्ती : १९६० मूल्य ६ रुपये
वृत्ती : १९७७

मुद्रक :
न. पां. बनहट्टी
यण मुद्रणालय
ो, नागपूर–१२

प्रकाशक :
वि. मा. धुमाळ
नागपूर प्रकाशन,
सीताबर्डी, नागपूर–१२

शुक्र - विचार

प्रकरण पहला

प्रास्ताविक

दधिकुमुदशशांककांतिभृत् स्फुटविकसत्किरणो बृहत्तनुः ।
सुगतिरविकृतो जयान्वितः कृतयुगरूपकरः सिताह्वयः ॥

—आचार्य वराहमिहिर—बृहत्संहिता,

दही, कुमुद फूल अथवा चन्द्र के समान कान्तिवाला शुक्र यदि निर्मल किरणों से युक्त, बडे आकार का तथा, अच्छी गति से चलनेवाला एवं विकाररहित हो तो सभी के लिए विजयकारी होता है ।

अब तक के विवरण में कहा गया है कि रवि ग्रह आत्मा का, चन्द्र मन का, मंगल पराक्रम का, बुध बुद्धि का तथा गुरु ज्ञान का प्रतिनिधि है । इसी तरह शुक्र ग्रह जीवन में प्राप्त होने वाले आनन्द का प्रतीक है । संसार में श्रेष्ठ आनन्द की प्राप्ति स्त्री से होती है । अतः इसे स्त्रियों का भी प्रतिनिधि माना है । नैसर्गिक कुण्डली में द्वितीय तथा सप्तम इन दो स्थानों का स्वामी शुक्र है । नैसर्गिक कुण्डली इस प्रकार है—

इनमें द्वितीय स्थान के वृषभ राशि का स्वभाव व्यवहारी, स्वार्थी और स्त्रियों जैसा बतलाया है। इस स्थान से धन तथा अन्नवस्त्र का विचार करते है। प्रतिदिन के संसार की फिकर इन्ही बातों के लिए होती है और स्त्री की कुशलता पर ही इन बातों का सुख अवलम्बित है। सप्तम स्थान के तुला राशि का स्वभाव पुरुषों जैसा, बुद्धिमत्तापूर्ण, सारासार-विचार करनेवाला कहा है। युद्ध, व्यवसाय, विलासादि के विचार में यह स्थान महत्त्वपूर्ण है। जो स्त्रियां स्वतन्त्र विचारों की, पराक्रमी, निर्लोभी जनहितकारी तथा कुछ विरक्तसी होती है उनका यह प्रतीक है। इतिहास में ऐसी स्त्रियों के बहुत उदाहरण मिलते है जिन्हें लौकिक प्रपंचसुख तो नही मिला किन्तु जिनने महत्त्वपूर्ण कार्यो से अक्षय कीर्ति प्राप्त की। पुराणों में वर्णित सीता, विदुला, चित्रांगदा, लोपामुद्रा तथा इतिहास में वर्णित महारानी लक्ष्मीबाई, ताराबाई, देवी अहिल्याबाई, महारानी कर्णावती, दुर्गावती, कुरमदेवी, देवलदेवी आदि स्त्रियां इसी प्रकार के विकसित शुक्र के स्वामित्व में थीं।

प्रकरण दुसरा

शुक्र का सामान्य स्वरूप

शुक्र के स्वरूप के विषय में विभिन्न लेखकों ने निम्नलिखित वर्णन किया है---

आचार्य---सितश्च मदनः, दानवपूजितश्च सचिवः, शुक्रः, श्यामः, चित्रः सितः, शयनस्थानम्, वस्त्रं दृढं, मुक्ताधातुः, वसन्तः, आम्लरसः। कामविकार पर शुक्र का अधिकार है। यह दैत्यों का गुरु, श्याम वर्ण का, चित्रविचित्र वस्त्र धारण करनेवाला है। सोने का स्थान, मजबूत वस्त्र, मोती, वसन्त ऋतु और खट्टी रुचि पर इसका अधिकार है।

कल्याणवर्मा---दिशा-आग्नेयीं, शुक्रः सौम्यः, शची इन्द्राणी, शुक्रः विप्रः, स्त्रीणां स्वामी, यजुर्वेदपतिः सितः, शुक्रः पितृणां बन्धुः स्त्रीक्षेत्रे भार्गवः बली, शुक्रो निशार्धे। यह आग्नेय दिशा का स्वामी शुभ ग्रह है;

इसकी देवता इन्द्राणी है। यह ब्राह्मण वर्ण का, स्त्रियों का स्वामी, यजुर्वेद का अधिपति, पितृलोक का दर्शक है। स्त्री राशि में, अर्धरात्रि के समय तथा चतुर्थ स्थान में यह बलवान होता हैं।

पराशर—भृगु: वीर्यप्रदायक:, रज:स्वभाव:, इक्षु: पुष्पवृक्षान् भृगोः सुत:। यह राजस स्वभाव का ग्रह है। वीर्य देने वाला है। मीठी रुचि तथा फूलों के पौधों पर इसका अधिकार हैं। ग्रहों के तत्त्वों के बारे में पराशर कहते है—अग्निभूमिनभस्तोयवायव: क्रमतो द्विज। भौमादीनां ग्रहाणां च तत्त्वाश्चामी प्रकीर्तिता: ॥ अग्नि तत्त्व पर मंगल का, भूमि तत्त्व पर बुध का, आकाश तत्त्व पर गुरु का, जलतत्त्व पर शुक्र का तथा वायु तत्त्व पर शनि का अधिकार है।

वैद्यनाथ—शुक्र: सितांग:, शिरसा शुक्र:, सितो द्विपात्, जलाशयान् सुरारिवन्द्य:, षोडशवत्सर: सित:, शाखाधिप: सित:, नष्टप्रश्ने—कर्बुर:, असुराचार्यस्य वज्र: रत्नं, सितस्ततो गौतमिकान्तभूय: काल: पक्ष:, दृष्टि: कटाक्षेण कवे:, जेता वक्रसमागमे, भृगुजो लघुस्वभाव:, काम:, सित: अरिष्टद:, सोमेन शुक्र:। स्वोच्चे स्ववर्गदिवसे यदि राशिमध्ये शत्रुव्ययानुजगृहे हिबुकेऽपराह्णे। युद्धे च शीतकरसंगमवक्रचारे शुक्रोऽरुणस्य पुरतो यदि शोभन: स्यात् ॥ यह ग्रह शुभ्र वर्ण का है, सिर की ओर से उदय होता है, दोपाये प्राणी और जलाशयों का स्वामी है। आयु सोलह वर्ष की है। यह शाखाधिप है। नष्ट प्रश्न में—इसका रंग चितकबरा हैं। रत्नो में हीरा, एक पक्ष का काल, तथा कृष्णा नदी से गोदावरी नदी तक का प्रदेश शुक्र के अधिकार में है। इसकी दृष्टि तिरछी है। वक्री ग्रह के साथ हो तो विजयी होता है। इसका स्वभाव हलका है। सप्तम स्थान में यह संकट उत्पन्न करता है। यह चन्द्र द्वारा पराजित होता है। अपनी उच्च राशि में, द्रेष्काण तथा नवांश कुण्डली में स्वगृह में हो तो, राशि के मध्यभाग में, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ या व्यय स्थान में, सन्ध्यासमय, युद्ध के समय, चन्द्र के साथ हो तो, वक्री हो तो तथा सूर्य के आगे हो तो शुक्र ग्रह शुभ फल देता है और बलवान होता है। भृगु: सपत्ने—यह षष्ठ स्थान में विफल होता है।

जयदेव—शुक्रः पूर्ववक्त्रः, वैश्यः, मध्यमः। इसका मुख पूर्व की ओर, वर्ण वैश्य तथा वय मध्यम है।

मंत्रेश्वर—वेश्यावीथ्यवरोधाः, देवता लक्ष्मीः, कीकटो देशः रौप्यं, सप्त, वल्ली। शुक्र के स्वामित्व में वेश्याओं के निवासस्थान, अंतःपुर, कीकट प्रदेश, सात वर्ष की आयु, चांदी धातु तथा वेल इनका समावेश होता है। इसकी देवता लक्ष्मी है।

पुंजराज–देवता इन्द्रः, अतिशुक्लस्तु सितः, मध्यमः, स्निग्धो विलोमो विपुलः सदीप्तिः, स्त्रीक्षेत्रगो वीर्ययुतः सितः। इसकी देवता इन्द्र हैं। यह बहुत सफेद तथा मध्यम आयु का हैं। शान्त और तेजस्वी किरणों से युक्त और वक्री हो तो यह बलवान होता है। स्त्रीराशियों में यह प्रबल होता है।

विलीयम लिली–यह तेजस्वी शुभ्र वर्ण का ग्रह सन्ध्यातारा (ईवनिंग स्टार) अथवा हेस्पेरस इन नामों से प्रसिद्ध है क्योंकि यह सूर्यास्त के बाद दिखाई देता है। सूर्योदय के पहले जब यह दिखाई देता है तब इसेही प्रभात तारा (मॉर्निंग स्टार) भी कहते हैं। इसकी मध्यम गति ५९ कला ८ विकला है। दैनिक गति अधिकतम ८२ कला होती है। अधिकतम शर ९ अंश २ कला होता है। यह ४२ दिन वक्री और २ दिन स्तंभित रहता हैं। सूर्य की परिक्रमा यह २२४ दिन ७ घंटों में पूरी करता है। यह ग्रह स्त्रीप्रकृति का, शीतल तथा आर्द्र है। आनंद तथा इश्कबाजी का प्रेरक ग्रह शुक्र है।

अबतक शास्त्रकारों के जो वर्णन उद्धृत किए उनका अब विवेचन करते है—

भारतीय ग्रन्थकारोंने मुख्यतः सूर्यास्त के बाद दृगोचर होनेवाले शुक्र का वर्णन किया है। यह अष्टम या नवम स्थान में होता है तथा बहुत तेजस्वी और आकर्षक प्रतीत होता है। सूर्योदय के पहले का शुक्र लग्न-स्थान में होता है वह विशेष तेजस्वी नही होता अतः उसकी ओर कुछ दुर्लक्ष्य हुआ है।

आचार्य ने **कामवासना** पर शुक्र का अधिकार कहा है। यह अष्टम स्थान का कारकत्व है। यह स्थान वृश्चिक राशि का है जिसका अधिकार गुप्त इन्द्रियों पर है। इसी तरह अष्टम स्थान सन्ध्या समय का द्योतक है और इसी समय कामवासना जागृत होने लगती है। अतः कामवासना पर शुक्र का स्वामित्व कहा है। सुबह का शुक्र कामवासना शान्त होने की अवस्था का प्रतीक है। उस समय कवि, उपन्यासकार, नाटककार, ज्योतिषी, योगी आदि को अपने कार्य में अद्वितीय प्रतिभा प्राप्त होती है।

पुराणों में दैत्यराज वृषपर्वा के गुरु शुक्र थे ऐसा वर्णन है। अतः **दानवपूजित** यह विशेषण दिया है।

वर्ण–श्याम। आँखों से शुक्र सफेद दीखता है। किन्तु लग्न या सप्तम में शुक्र हो तो उस व्यक्ति का रंग काला भी पाया जाता है। लग्नस्थ शुक्र होने पर पत्नी काले वर्णकी मिल सकती है।

वस्त्र का वर्ण––चित्रविचित्र। शुक्र स्त्रियों का प्रतिनिधि है। स्त्रियों को तरहतरह के नयेनये वस्त्र पहनने का बहुत शौक होता है। अतः यह वर्णन किया। वस्त्र का विचार धनस्थान से करते है। यह वृषभ राशि का है जो चित्रविचित्र वर्ण का द्योतक है। अतः यह वर्णन किया। कुछ शास्त्रकारों ने सफेद रंग कहा है।

धातु–वीर्य। यह सप्तमस्थान का कारकत्व है।

शयनस्थान––सोने की जगह। यह वस्तुतः व्यय स्थान का कारकत्व है। इस स्थान में शुक्र उच्च का होता है अतः उसका अधिकार शयन स्थान पर कहा है।

वस्त्र–दृढ। यह धनस्थान और वृषभ राशि के स्वरूप के अनुसार वर्णन किया है। वृषभ राशि दृढता बतलाती है।

धातु–मोती। आकाश में शुक्र मोती के समान गोल और सफेद दीखता है अतः यह वर्णन किया।

ऋतु–वसन्त। शुक्र शीतल और आर्द्र है अतः उसे वसन्त ऋतु का स्वामी माना है।

रुचि–आम्ल । इस वर्णन की उपपत्ति स्पष्ट नही । हमारी समझ में मधुर रुचि पर अथवा रुचिहीन सुगन्धित वस्तुओं पर शुक्र का अधिकार होता है ।

दिशा–आग्नेय । कल्याणवर्मा ने यह दिशाओं का विभाजन किस तत्त्व पर किया यह स्पष्ट नही किन्तु अनुभव की दृष्टि से उपयुक्त है ।

स्वभाव–**सौम्य** । यह सप्तम स्थान की तुला राशि का वर्णन है । तुला राशि शान्ति की द्योतक है ।

देवता–इन्द्राणी । शुक्र स्त्री ग्रह है अतः इन्द्र की स्त्री देवता मानी होगी । हमारी समझ में लक्ष्मी देवता मानना ठीक है ।

वर्ण–वैश्य । मंगल से शनि तक पांच ग्रह दो दो राशियों के स्वामी है अतः उनके दो दो वर्ण अवकहडा चक्र में कहे है । यथा––

मंगल – मेष – क्षत्रिय, वृश्चिक – विप्र
बुध – मिथुन – शूद्र, कन्या – वैश्य
गुरु – धनु – क्षत्रिय, मीन – विप्र
शुक्र – वृषभ – वैश्य, तुला – शूद्र
शनि – मकर – वैश्य, कुम्भ – शूद्र

मेष में मंगल और धनु में गुरु पुलिस या सेना में अधिकार प्राप्त कराते है । यह क्षत्रिय वर्ण का स्वरूप है । वृश्चिक में मंगल और मीन में गुरु ज्ञान, अध्ययन, अध्यापन, तपश्चर्या आदि कराते है । यह ब्राह्मण वर्ण का स्वरूप है । मिथुन में बुध, तुला में शुक्र तथा कुंभ में शनि नौकरी कराते है । यह शूद्र वर्ण हुआ । कन्या में बुध, वृषभ में शुक्र तथा मकर में शनि व्यापार के कारक होते है । अतः वैश्य वर्ण कहा है । इस तरह अवकहडा चक्र में शुक्र के दो वर्ण कहे है । और कल्याणवर्मा ने ब्राम्हण वर्ण भी कहा है । इसलिए स्थान के अनुसार तीनों में उचित वर्ण का विचार करना चाहिए ।

वेद–यह यजुर्वेद का स्वामी है ।

लोक–पितृलोक का स्वामी है। इन दो वर्णनों का तात्पर्य स्पष्ट नही है।

बल–यह चतुर्थस्थान में बलवान होता है। नैसर्गिक कुण्डली में धन और सप्तम स्थान शुक्र के है। चतुर्थ स्थान चन्द्र का है। किन्तू चतुर्थ में शुक्र होने पर अन्य ग्रह अशुभ भी हों तो आयुष्य साधारणतया सुखकर होता है। इसलिए इसे चतुर्थ में बलवान माना है। स्त्रीराशियों में शुक्र को बलवान माना है। यह पुरुषों के लिए ठीक है। स्त्रियों की कुण्डली में स्त्रीराशि के शुक्र का फल अशुभ मिलता है। मध्यरात्रि के समय शुक्र को बलवान माना है क्यों कि स्त्रीपुरुषो में रतिक्रीडा प्रायः इसी समय होती है।

वीर्य धातु–पराशर ने शुक्र को वीर्यदायक माना है। यह सप्तम स्थान का कारकत्व है।

स्वभाव–यह रजोगुणी ग्रह है। यह भी सप्तम स्थान का वर्णन है।

वेल–फूलों के वेल और मोगरा, जुही आदि सफेद फूलों पर शुक्र का अधिकार है।

उदय–सिर की ओर से उदय होता है। इसका स्पष्टीकरण श्री. नवाथे के जातकशिरोमणि में देखना चाहिए।

द्विपाद–मानव तथा दोपाये प्राणियों पर शुक्र का अधिकार है। यह सप्तम स्थान का वर्णन है। दोपाये प्राणियों में कौए का भी समावेश किया गया है।

जलाशय- शुक्र जलाशयों का स्वामी है। शरीर में जिस तरह वीर्य है उसी प्रकार सृष्टि में जल सफेद रंग का द्रव पदार्थ है। अतः उसका स्वामी शुक्र माना है।

आयु–सोलहवें वर्ष पर शुक्र का अधिकार कहा है क्यों कि प्रायः इसी वर्ष पुरुषों में वीर्य की उत्पत्ति होती है। हमारी समझ में पूरी तरुण आयु पर शुक्र का स्वामित्व है। आयु और जलाशय ये दोनों वर्णन सप्तम स्थान के है।

शाखाधिप–पराशर ने वृक्षों की शाखाओं पर शुक्र का अधिकार माना है। वैद्यनाथने मूलों पर कहा है। इसकी उपपत्ति समझना कठिन है।

रंग–चितकबरा। प्रश्नकुण्डली से किसी नष्ट हुई वस्तु का वर्णन करते समय इस रंग का वर्णन करना चाहिए।

रत्न–हीरा। यह शुक्र के समान सफेद रंग का तेजस्वी रत्न है। अतः हीरे पर शुक्र का अधिकार कहा है। यह धनस्थान का वर्णन है।

पक्ष–एक पक्ष के समय पर शुक्र का अधिकार कैसे माना यह स्पष्ट नही।

कटाक्षदृष्टि–पुराणों में दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य एकाक्ष (एक आँख से अन्धे) माने गये है। अतः शुक्रको तिरछी दृष्टि का अथवा कानेपन का कारक माना है। अनुभव से भी यह ठीक प्रतीत होता है।

वक्रसमागम–मंगल और गुरु वक्री हो और उनके पास जाकर शुक्र क्रान्तियुति या भेदयुति करे तो वह बलवान होता है। इस शुक्र से वक्री मंगल और गुरु के अशुभ फल कम होते है किन्तु वक्री बुध और शनि के साथ शुक्र की युति हो तो शुक्र का बल कम होता है और उसके फल अशुभ होते है।

स्थानबल–स्व. श्री. नवाथे के अनुसार सप्तम में शुक्र अरिष्ट दूर करता है। किन्तु मेरा अनुभव उलटा ही है। अपने उच्च राशि में, द्रेष्काण और नवांश कुण्डली में स्वगृह में, दिन में राशि के मध्य में, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ तथा व्यय स्थान में, तृतीय प्रहर में, युद्ध के समय, चन्द्र के साथ वक्री अवस्था में, और सूर्य के आगे गया हुआ शुक्र बलवान होता है। वैद्यनाथ ने षष्ठ के शुक्र को विफल माना है।

मुख–जयदेव ने शुक्र का मुख पूर्व की ओर और आयु मध्यम मानी है। इसकी उपपत्ति स्पष्ट नही।

अन्तःपुर–मन्त्रेश्वर ने वेश्यागृह और अन्तःपुरों पर शुक्र का अधिकार माना है। पहले शयनस्थान का उल्लेख कर आये है। उसी के अनुसार यह वर्णन है।

देश–कीकट अर्थात सौराष्ट्र और गुजरात प्रदेश पर शुक्र का अधिकार है क्यों कि इस प्रदेश के लोग धनप्राप्ति में ज्यादा तत्पर रहते है।

धातु–चांदी सफेद होने से चांदी पर शुक्र का अधिकार है। यह वर्णन धनस्थान के है।

वेल–स्त्री जैसे पुरुष पर अवलम्बित रहती है वैसे वेल वृक्ष पर रहती है अत: उस पर शुक्र का अधिकार माना है।

किरण–पुंजराज ने शुक्र के किरण शान्त हो तब वह शुभ फल देता है ऐसा कहा है। किसी भी ग्रह के किरण शान्त तभी होते है जब वह सूर्य से बहुत दूर होता है। यह स्थिति नीच राशि में–शुक्र के लिए कन्या में होती है। अतः नीच ग्रह शुभ फल देते है यह मत हमने स्थिर किया है।

भाग्य की कमी–यह फल विलियम लिली ने कहा है किन्तु यह ठीक प्रतीत नही होता। शुक्र धन देनेवाला ग्रह है। लिली के अन्य वर्णन आर्द्र, शीतल, रात्रिकालीन, आनंदी, इश्क की प्रवृत्ति रखनेवाला–ये सब उचित ही है।

———o———

प्रकरण तिसरा

शुक्र का विस्तृत वर्णन

इस प्रकरण में शुक्रप्रधान व्यक्तियों के बारे में शास्त्रकारों ने जो वर्णन दिये है उनका विवेचन करना है।

आचार्य–भृगु: सुखी कान्तव: सुलोचनः कफानिलात्मा सितवक्रमूर्धजः।। यह सुखी, सुन्दर शरीर का, अच्छी आंखोंवाला, कफ-वात प्रकृति का होता है। इसके केस काले और लहरीले होते है।

कल्याणवर्मा–चारुर्दीर्घभुज: पृथूरुवदन: शुक्राधिक: कान्तिमान् कृष्णाकुंचितसूक्ष्मलम्बितकचो दूर्वादलश्यामल: ।। कामी वातकफात्मकोऽतिसुभग-श्चित्रांबरो राजसो लीलावान् मतिमान् विशालनयन: स्थूलात्मदेहः सित:।। यह सुन्दर होता है। हाथ लम्बे होते है। चेहरा मोटा और चौडा, केश

काले, लहरीले, बारीक और लम्बे होते है। रंग दूर्वा जैसा सांवला और प्रकृति कफ-वात की होती है। वीर्य अधिक होता है। यह कान्तिमान, बुद्धिमान, आराम से रहनेवाला और मोटा होता है। रजोगुणी और चित्र-विचित्र वस्त्र पहननेवाला होता है। आंखें बडी होती हैं।

पराशर––इनका वर्णन आचार्य जैसा ही है। सिर्फ काव्यकर्ता यह अधिक विशेषण दिया है।

गुणाकर––कल्याणवर्मा के समान वर्णन है।

ढुंढिराज––मदनयुतो गजगामी। इसकी चाल हाथी जैसी मतवाली होती हैं। अन्य वर्णन पहले जैसे है।

सर्वार्थचिन्तामणि––बहुरोमयुक्तो गुणाभिरामः। बहुत केशों से युक्त तथा गुणवान होता है।

जयदेव––मधुरा गिरा च। वाणी मधुर होती है।

लघुजातक––यह आचार्य वराहमिहिर का ही ग्रन्थ है। इसमें दिया हुआ वर्णन इस प्रकार है––श्यामो विकृष्टपर्वा कुटिलासितमूर्धजः सुखी कान्तः। कफवातिको मधुरवाग् भृगुपुत्रः शुक्रसारश्च ॥ इसमें विकृष्टपर्वा इतना विशेषण अधिक है। इसका अर्थ हिन्दी अनुवादक पंडित सीताराम झा 'विरल देहसन्धियोंवाला' करते है। विकृष्टानि विरलानि पर्वाणि शरीरसन्धयो यस्य स तथोक्तः–ऐसा विग्रह किया है। किन्तु जयदेव ने दृढग्रन्थि अर्थात मजबूत सन्धियोंवाला यह विशेषण भी दिया है। इसकी संगति लगाना कठिन है।

महादेवशर्मा––दर्शनीयवपुः। शरीर देखने योग्य–सुन्दर होता है।

मन्त्रेश्वर––इसका वर्णन अबतक के वर्णनों के समान ही है।

वैद्यनाथ–– असितकुटिलकेशः श्यामसौन्दर्यशाली समतररुचिरांगः सौम्यदृक् कामशीलः। अतिपवनकफात्मा राजसः श्रीनिधानः सुखबलसुगुणानामाकरश्चासुरेज्यः ॥ केश काले और लहरीले, रंग सांवला किन्तु सुन्दर, अवयव सम और मोहक, दृष्टि सौम्य, प्रवृत्ति कामुक तथा वातकफ की, रजोगुणी, धनवान सुखी, बलवान तथा गुणवान ऐसा इसका स्वरूप है।

विलियम लिली---शुक्रप्रधान व्यक्ति स्त्री हो या पुरुष, उसका चेहरा सुन्दर, गोल और पुष्ट होता है। आंखें बडी, होंठ लाल तथा आंखों की पंखुडियां कुछ काली किन्तु सुन्दर और आकर्षक होती है। निचला होंठ कुछ मोटा या लम्बा होता है। केश मोहक रंग के होते है। उनका रंग राशि के अनुसार बदलता है। बहुत काला, या हलका पींला रंग होता है। केश स्निग्ध और कोमल होते है। शरीर का कद बहुत सुन्दर होता है। कद ऊंचा नही होता, कुछ नाटा ही होता है। (झडकिले के वर्णानुसार--चेहरा हंसमूख होता है।)

कार्पोरेचर---वर्ण कुछ सांवला--गोरा और बहुत आकर्षक होता है। कद ऊंचा नही होता। आंखें सुन्दर और कभी कभी काली होती है। चेहरा गोल होता है और बहुत बडा नही होता। केश सुन्दर, स्निग्ध और विपुल तथा हलके पिंगल वर्ण के होते है। मुख आकर्षक और होंठ लाल होते है। शरीर का आकार बहुत प्रमाणबद्ध होता है। शरीर और कपडों के बारे में बहुत व्यवस्थित रहते है। कामुक दृष्टि होती है।

यह शुक्र पूर्व की ओर हो तो---कद कुछ ऊंचा और सीधा तना हुआ शरीर होता है। शरीर में वक्रता नही होती। बहुत ऊंचा न होनेपर भी गठन अच्छा होता है। अच्छा आकर्षक रूप होता है।

यह शुक्र पश्चिम की ओर हो तो---कद नाटा, सुन्दर और लोकप्रिय होता है।

शुक्र शुभ स्थिति में हो तो---स्वभाव शान्त होता है। कानून का सहारा नही लेना चाहते। झगडा फिसाद की ओर रुचि नही होती। दुष्ट नही होते। आनंददायक, व्यवस्थित, हंसी मजाक करनेवाले और कपडे आदि व्यवस्थित रखनेवाले होते है। खाने की अपेक्षा पीने की ओर रुचि अधिक होती है। प्रेमप्रकरणों में फंसते है। उत्साहपूर्वक प्रियाराधन करते है। संगीत और अन्य निर्दोष मनोरंजनों में दिलचस्पी लेते है। किसी पर जलदी विश्वास करते है। परिश्रमी नही होते। मिलनसार, आनन्दी, सद्गुणी किन्तु कभी अकारण मत्सर करनेवाले होते है। अविश्वासु नही होते।

शुक्र अशुभ स्थिति में हो तो—झगडालू, खर्चीली प्रवृत्ति के इष्क-बाज होते है। इज्जत की फिक्र न करनेवाले, अनैतिक सम्बन्धों में रस लेनेवाले, चंचल, अविश्वासी, होते है। सभी कमाई शराब पीने में गंवा देते है। दोस्ती में भी स्थिरता नहीं होती। किसी भी चीज में व्यवस्थितता नही होती। धर्म के बारे में भी उदासीन होते है।

उपर्युक्त मतों का कुछ विवेचन—भारतीय लेखकों ने पूर्व की अपेक्षा पश्चिम के शुक्र की ओर अधिक ध्यान दिया है। पूर्व का शुक्र धन, लग्न और व्ययस्थान में होता है। तथा पश्चिम का शुक्र षष्ठ, सप्तम तथा अष्टम स्थान में होता है। किन्तु धन, षष्ठ और सप्तम स्थानों में शुक्र दृष्टिगोचर नहीं होता। लग्न, व्यय तथा अष्टम स्थान का शुक्र दृग्गोचर होता है। शुक्र पश्चिम की ओर उदय होता है तब सूर्य के पीछे होता है अतः कुछ सांवला शुभ्र वर्ण होता हैं। इसी लिए प्रायः सभी शास्त्रकारों ने 'दूर्वादलश्यामल' जैसा वर्णन किया है। पश्चिमी ज्योतिषियों ने भी Being white but tending to a little darkness ऐसा वर्णन किया है। यही शुक्र पूर्व की ओर हो तो सूर्य के आगे होने से वर्ण अति शुभ्र और तेजस्वी होता है। हमारे अनुभव में शुक्र लग्न में होने पर भी कई बार काला वर्ण देखा है। इसके दो उदाहरण बतलाते है। एक 'क्ष' कन्या—जन्म ता. ९–६–१९२४ सुबह ८–२७ बम्बई।

इसका वर्ण काला किन्तु सतेज था। केश भ्रमर जैसे काले, रेशम जैसे स्निग्ध और घुटनों तक लम्बे थे। आंखें शुक्र जैसी तेजस्वी थी। इसका पति ऊँचे कद का, गोरे रंग का, अच्छा शिक्षित था। दोनों का रंग

बिलकुल विसंगत लगता था। दूसरा 'क्ष' व्यक्ति-जन्म ता. ४।३।१९१२ सूर्योदय के पहले। लग्न-मकर राशि का २५ वां अंश।
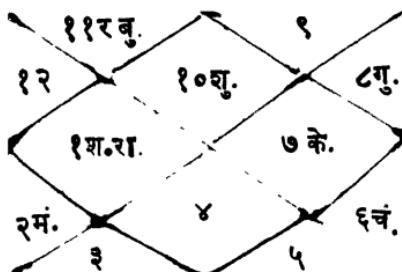
यह व्यक्ति बहुत काला, ऊँचा और दुबलापतला था। इसके विपरीत एक और उदाहरण देखिए। एक 'क्ष' व्यक्ति-जन्म कार्तिक वद्य ३० शक १८१५ सुबह १०-३० मद्रास।
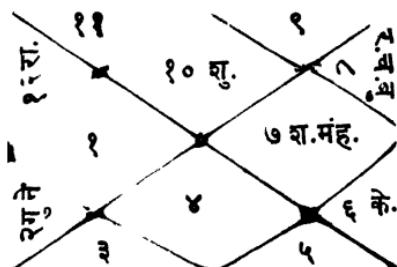
ये सज्जन बहुत गोरे वर्ण के थे। चेहरा भव्य और आंखें बहुत बडी थीं। किन्तु इनकी पत्नी काले वर्ण की थी। यहां तक वर्ण का विवेचन हुआ।

शुक्रप्रधान व्यक्ति सुखी होते है ऐसा प्रायः सभी ग्रन्थकारों ने कहा है। इनके चार प्रकार किये जा सकते है। कन्या लग्न हो तो प्रथम दर्जे का सुख प्राप्त होता है। इससे कुछ कम मात्रा में क्रमशः मकर, मिथुन और कुम्भ लग्न के लोग सुखी होते है।

कान्तिमान-सुन्दर शरीर होना यह सप्तम स्थान का वर्णन आकाशस्थ शुक्र की सुन्दरता देखकर किया गया है। इसी प्रकार कामेच्छा अधिक होना यह वर्णन भी सप्तम स्थान का है।

स्थूलदेह—यह वर्णन कल्याणवर्मा ने किया है। वैद्यनाथ 'समतर-रुचिरांग' कहते है। ये वर्णन क्रमशः धन और सप्तम स्थान के है। धनस्थान में वृषभ, राशि के स्वरूपानुसार स्थूल नाटा शरीर होता है। सप्तम स्थान में तुला राशि के स्वभावानुसार ऊँचा, पतला शरीर होता है। शुक्र दो राशियों का स्वामी है अतः ये दो प्रकार पाये जाते हैं। मंगल, बुध, गुरु और शनि के बारे में भी यही भेद देखने में आता है।

कफ और वात प्रकृति—शुक्र का आर्द्र शीतल स्वरूप देखकर यह वर्णन किया है।

अन्य वर्णनों में कवि, हाथी जैसी धीमी चाल से चलनेवाले, सौम्य दृष्टि, धनवान, मधुर वाणी ये धनस्थान के वर्णन है। केश बहुत होना (केश सिर पर बहुत होते है, शरीर के अन्य अंगों पर कम होते है), वीर्य अधिक होना, सुन्दर शरीर यें वर्णन सप्तम स्थान के है। विलियम लिली ने शुक्र का स्वरूप धनस्थान के अनुसार कहा है और कार्पोरेचर आदि सप्तमस्थान के अनुसार है।

कुण्डली में शुक्र बलवान हो तो—जीवन सफल होता है। व्यवसाय में यश, सन्तति, सम्पत्ति, कीर्ति आदि की प्राप्ति होती है। स्त्रियां एकाधिक होती है। कामुक किन्तु परस्त्रियों से विमुख प्रवृत्ति होती है। तृतीय, षष्ठ, अष्टम या व्यय स्थान में यह शुक्र नही होना चाहिए। क्यों कि इन स्थानों में शुभ फल नही मिलते। इन्हे कोई भी स्त्रीं निषिद्ध नही होती। इसी तरह भोजन भी जैसा हो वैसा चुपचाप खा लेते है। मित्र कम होते है। लोगों के व्यवहार में दखल नही देते। किन्तु लोगों को इन के विषय में गलतफहमी होती है।

शुक्र निर्बल हो तो—परस्त्रियों से संपर्क होता है और उससे लाभ भी होता है। इस कारण समाज में मान नही रहता। पैसे की फिक्र नही करते। इस बिषय में विलियम लिली का वर्णन बिलकुल ठीक प्रतीत होता है।

प्रकरण चौथा

कारकविचार

शुक्र के कारकत्व के विषय में प्राचीन ग्रन्थकारों के विचार देखिए।

कल्याणवर्मा — वस्त्रमणिरत्नभूषणविवाहगन्धेष्टमाल्ययुवतीनाम् । गोमयनिधानविद्याधनशुक्तिरजतप्रभुः शुक्रः ।। कपडा, मणि, रत्न, अलंकार, विवाह, सुगन्धी पदार्थ, पुष्पहार, युवती, गोमय, धनसंचय, विद्या, सींप और चांदी पर शुक्र का अधिकार है । यहां गोमय शब्द का सामान्य अर्थ गोबर है किन्तु वह उपयुक्त नही । अतः हमारे मत से बहुत गायों का समूह यह अर्थ करना चाहिये ।

गुणाकर—पत्नीसुखं च दासः स्त्रीसुख और सेवकों का विचार शुक्र से करना चाहिये ।

वैद्यनाथ—पत्नीवाहनभूषणानिमदनव्यापारसौख्यं भृगोः। पत्नी, वाहन, अलंकार तथा कामोपभोग सुख का विचार शुक्र से करना चाहिये। कान्ता-विकारजनिमेहरुजासुराद्यैः स्वेष्टांगनाजनकृतैर्भयमासुरेज्यः । स्त्रियों के सम्पर्क से उत्पन्न होनेवाले प्रमेहादि रोग तथा प्रेयसी स्त्रियों से भय यह भी शुक्र के अधिकार में है ।

पराशर—कलत्रकामुकसुखगीतशास्त्रकाव्यपुष्पसुकुमारयौवनाभरणरज-तयानगर्वलोकमौक्तिकविभवकवितारसादिकारकः शुक्रः।। भृगोर्विवाहकर्माणि भोगस्थानं च वाहनम् । वेश्यास्त्रीजनगात्राणि शुक्रेणैव निरीक्षयेत् ।। स्त्री, कामसुख, गीत, शास्त्र, काव्य, फूल, कोमलता, तारुण्य, अलंकार, चांदी, वाहन, गर्व, लोक, मोती, ऐश्वर्य, कविता तथा पारा आदि पर शुक्र का अधिकार है। विवाह के कार्य, उपभोग के स्थान, वाहन और वेश्या स्त्रियों के अवयवों का विचार शुक्र से करना चाहिये। यदि कुण्डली में शुक्र प्रबल हो तो वह बालक पारा सिद्ध करनेवाला, धातुओं के भस्म बनानेवाला, थोडे ग्रन्थ लिखनेवाला तथा प्राकृत ग्रन्थों का अभ्यासक कवि होता है— रसवादी भवेद् बालो धातूनां भस्मकारकः । स्वल्पग्रन्थकरो द्विजः । शुक्रेण काव्यकर्ता च प्राकृतग्रन्थतत्परः ।।

सर्वार्थचिंतामणि— संगीतसाहित्यदास्यरसाद्भुतमदनयुवतिरतिकेलिविलासविचित्रकान्तिसौन्दर्यराजवशीकरणराजमुखवशीकरणगारुडेन्द्रजाल-मालावैशद्यमहिमाणिमाद्यष्टैश्वर्यकाव्यकलासम्भोगकलत्रकारकः शुक्रः ॥ संगीत, साहित्य, नौकरी, रस, अद्भुत बातें, कामविकार, तरुणी स्त्रियों से क्रीडा, विचित्र सुन्दरता और कान्ति, राजा को वश करना, गारुड और इंद्रजाल जादूगिरी, हार, स्पष्टता, महिमादिक आठ सिद्धियां (बडा रूप धारण करना, छोटा रूप धारण करना, भारी होना, हलका होना, किसी चीज को प्राप्त करना, इच्छा पूरी करना, दूसरों पर प्रभाव डालना और स्वतः किसी के वश न होना ये आठ सिद्धियां योगसाधना से प्राप्त होती है- अणिमा महिमा चैवं गरिमा लघिमा तथा। प्राप्तिः प्राकाम्यंमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः ॥ इनका वर्णन पतंजलि के योगदर्शन में हुआ है।) काव्य, कला, सम्भोग तथा स्त्री इन विषयो का विचार शुक्र पर अवलम्बित है।

मन्त्रेश्वर—सम्पद्वाहनवस्त्रभूषणनिधिद्रव्याणितौर्यत्रिकं भार्यासौख्यसुगन्धपुष्पमदनव्यापारशय्यालयान् । श्रीमत्त्वं कवितां सुखं बहुवधूसंगं विलासं मदं साचिव्यं सरसोक्तिमाह भृगुजादुद्वाहकर्मोत्सवम् ॥ सम्पत्ति, वाहन, कपडे, अलंकार, जमीन में गडा हुआ धन, वाद्य, पत्नी का सुख, सुगन्धी पदार्थ, फूल, कामक्रीडा, सोने के स्थान, कविता, सुख बहुतस्त्रियों से सम्बन्ध, उपभोग, मद, मन्त्रिपद, मधुर बोलना तथा विवाह पर शुक्र का अधिकार है। इस ग्रह का रोगविषयक कारकत्व इस प्रकार है— पाण्डुश्लेष्ममरुत्प्रकोपनयनव्यापत्प्रमेहामयान् गुह्यस्थामयमूत्रकृच्छ्मदनव्यापत्तिशुक्रस्रुति। वारस्त्रीकृतदेहकान्तिविहतिं शोषामयं योगिनीयक्षीमातृगणाद् भयं प्रियसुहृद्भंगं सितःसूचयेत् ॥ पाण्डुरोग, कफरोग, वातरोग, आंखों के रोग, प्रमेह, गुप्तेन्द्रिय रोग, मूत्रविरोध, कामसुख में बाधक रोग, वीर्यस्राव, वेश्यागमन से शरीर निस्तेज होना, सुखा रोग तथा योगिनी, यक्षी या मातृदेवताओं द्वारा कष्ट, प्रिय मित्रों से सम्बन्ध टूटना आदि की सूचना शुक्र से मिलती है।

विद्यारण्य—छत्रवाहनकीर्ति च दारचिन्ता च शुक्रतः। छत्र, वाहन, कीर्ति तथा स्त्रीविषयक चिन्ता ये विषय शुक्र के अधिकार में है।

जीवनाथ–संगीतसाहित्यकलाकलापप्रल्हादकान्तरतिगीतवाद्यम् । कलत्र सौन्दर्यविनोदविद्याबलानि वीर्याणि कवे:सकाशात् ।। संगीत, साहित्य, विविध कलाएं, आनन्द, स्त्रीसुख, गायन, वाद्य, स्त्रीसुन्दरता, विनोद, विद्या, बल और वीर्य का विचार शुक्र से करना चाहिए ।

कालिदास–श्वेतच्छत्रसुचामराम्बरविवाहायद्विपात्स्त्रीद्विजा: । सौम्य-श्वेतकलत्रकामुकसुखन्हृस्वाम्लपुष्पाज्ञका: । कीर्ति यौवनगर्वयानरजताग्नेय-प्रियक्षारका: । तिर्यग्दृक्पक्षराजसदृढा मुक्ता यजुर्वैश्यका: ।। सौन्दर्यक्रय-विक्रया: सरलसल्लापो जलास्थानकं । मातंगस्तुरगो विचित्रकवितानृत्यं च मध्यं वय: ।। गीतं भोगकलत्रसौख्यमणयो हास्यप्रिय: खेचरो । भृत्यों भाग्य-विचित्रकान्तिसुकुमारा राज्यगन्धस्रज: ।। वीणावेणुविनोदचारुगमनाष्टैश्वर्य-चार्वङ्गता । स्वल्पाहारवसन्तभूषणबहुस्त्रीसंग्रहप्राङमुखा: ।। नेत्रं सत्यवच: कलानिपुणता रेतो जलात् पीडितो । गाम्भीर्यातिशयश्चतुरवाद्यं नाटकालं-कृति: ।। केलीलोलकखण्डदेहमदनप्राधान्यसन्मान्यता । युक्तश्वेतपटप्रियों भरतशास्त्रं राजमुद्रा प्रभु: ।। गौरीश्रीभजने रतिर्मुदुर्रतिक्लान्तो दिवा-मातृका: । काव्यादौ रचनाप्रबन्धचतुरस्यानीलकेश: शुभम् ।। गुह्यं मूत्र-सुनागलोकसरणे तत्रापराण्हं तथा । जामित्रं स्थलजं रहस्यमुदितं सर्वं वदेद् भार्गवात् ।। शुक्र के अधिकार में निम्नलिखित विषय आते है–सफेद छत्र, चंवर, वस्त्र, विवाह, धनलाभ, दोपाये प्राणी, स्त्री, ब्राम्हण, सौम्य स्वभाव, सफेद रंग, पत्नी, कामुकता, सुख, नाटा कद, खट्टी रुचि, फूल, आज्ञा, कीर्ति, तारुण्य, गर्व, वाहन, चांदी, आग्नेय दिशा, नमक, तिरछी दृष्टि; पक्ष, दृढता, राजा, मोती, यजुर्वेद, व्यापारी, सुन्दरता, खरीदबिक्री, सरस बोलना, जलाशय, हाथीघोडे, कविता, नृत्य, मध्यम वय, गीत, स्त्रीसुख, रत्न, हंसी, नौकर, भाग्य, तेज, सुकुमारता, राज्य, सुगन्धी फूलोंके हार, वीणा, बांसुरी, विनोद, आठ प्रकार के ऐश्वर्य, आहार थोडा होना, वसन्त ऋतु, अलंकार, पूर्वमुख, आंखें, सच बोलना, कलानिपुणता, वीर्य, जल के रोग, गम्भीरता, वाद्य, नाटक, क्रीडा, सन्मान, सफेद वस्त्र, राजमुद्रा, लक्ष्मी या पार्वती की उपासना, थकावट, केश नीले होना, गुह्यांग, सन्ध्या समय, स्थानविषयक रहस्य, नागलोक ।

विलियम लिली---गायक, खिलाडी, जुंआरी, रेशम और पडसन के व्यापारी, रंगारी, जौहरी, कसीदा काम करनेवाले, दर्जी, माता, पत्नी, कुमारी, संगीत में साथ देनेवाले, फिडल और बांसुरी वादक, सुगन्धी पदार्थोंके विक्रेता, चित्रकार, खुदाई करनेवाले, फर्निचर बनानेवाले, सौन्दर्य-प्रसाधनों के विक्रेता आदि पर शुक्र का अधिकार है। रोगों के विषय में--गर्भाशय तथा जननेंद्रिय सम्बन्धी रोग, कमर, पेट, पीठ, नाभि आदी के रोग, प्रमेह, गरमी, अति स्त्रीभोग से उत्पन्न रोग, नपुंसकता, हर्निया, मधुमेह, बहुमूत्र रोग आदी का निर्देश शुक्र से होता है।

कारकत्व का वर्गीकरण

ऊपर जिन मतों का वर्णन किया उनका वर्गीकरण तीन भागों में हो सकता है। कुछ कारकत्व नैसर्गिक कुण्डली के धनस्थान का है---वस्त्र, रत्न, भूषण, धन, विद्या, निधान, सुगन्ध, पुष्पहार, चांदी, सुख, गीत, शास्त्र, काव्य, कोमलता, यौवन, मोती, वैभव, रस, पुष्प, साहित्य, तेज, राजवशीकरण, अष्टसिद्धी, ऐश्वर्य, कला, मन्त्रिपद, मधुरवाणी, छत्र, कीर्ति, गायक, वादक, फर्निचर आदी के व्यापारी।

कुछ कारकत्व सप्तमस्थान का है---स्त्री, युवती, दास, कामसुख, स्त्रीरोग, पत्नी, वाहन, दान, हास्य, सौन्दर्य, क्रीडा, विलास, नृत्य, कामविकार, शय्यास्थान, व्यापार, विवाह।

कुछ कारकत्व निरुपयोगी है---सीप, लोक, गारुड, इन्द्रजाल, मंत्राभिचार, स्त्रीदेवताओं से यक्षिणियों आदी से पीडा। रोगविषयक कारकत्व में आंख, रक्त तथा कफ-वात के रोग धनस्थान के आधार से और गुह्यरोग तथा स्त्रीसुखसम्बन्धी रोग सप्तम स्थान के आधार से बतलाये है।

हमारे मत से शुक्र के कारकत्व में निम्नलिखित विषयों का समावेश अधिक करना चाहिये। निसर्गचिकित्साशास्त्र, चित्रकला, रसायनशास्त्र, नर्स प्रशिक्षण, स्त्री अधिकारी, फोटोग्राफी, पुरातत्त्व, विद्या, सम्पत्ति (नगद तथा शेअर आदी दोनों रूपों में), स्वतन्त्र व्यवसाय, प्राचीन संस्कृति का अभिमान, गायभैंसें, कपास और कपड़े के व्यापारी, मस्का, सब्जी,

फूल आदी बेचनेवाली स्त्रियां, स्टेशनरी और साडियों के व्यापारी, सटोडिये, इत्र के कारखाने, फिल्म व्यवसाय, जुंआ, सट्टा, रेस, मद्य, मधु, स्त्रियों से लाभ, इश्कबाजी में यश, स्त्रीधन, स्त्री सम्बधित, तुवर की दाल, गायक, वाद्य, मिठाई, हलवाई, दासी, व्यभिचार, शराब की दूकानें, शरीर के ध्वनिसम्बन्धी अवयव–कण्ठ, कान, का अन्तर्भाग, बीजकोश, अंडाशय, ठोडी, गाल, गुह्येंद्रिय, ध्वनिविषयक रोग–गले की सूजन, टान्सिल बढना, अर्बुद, स्त्रीरोग, पेट की जलन, मासिक स्राव की तकलीफ आदी।

शुक्र के सामान्य फल

पुरुषों की कुण्डली में पुरुष राशि में और स्त्रियों की कुण्डली में स्त्री राशि में शुक्र अशुभ फल देता है। यह लग्न में हो तो शत्रुओं का नाश करता है, धन स्थान में हो तो सम्पत्ति देता है, तृतीय में सुखदायी होता है। चतुर्थ में धन देता है, पंचम में पुत्र देता है, षष्ठ में शत्रु बढाता है, सप्तम में शोक कराता है, अष्टम में धन देता है, नवम में विविध वस्त्रों का सुख देता है, दशम में शुभ फल नहीं देता, लाभस्थान में धनसंचय कराता है और व्यय स्थान में भी धनप्राप्ति कराता है।

प्रकरण पाचवां

द्वादशभाव विवेचन

लग्नस्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर—स्मरनिपुणाः सुखिनश्च विलग्ने। शुक्रे रतेषु निपुणः सुखवान् विलग्ने। यह कामक्रीडा में निपुण और सुखी होता है।

कल्याणवर्मा—सुनयनवदनशरीरं सुखिनं दीर्घायुषं तथा भीरुं। युवतिजननयनकान्तं जनयति होरागतः शुक्रः॥ इसका शरीर, मुख और आँखें सुन्दर होती है। युवतियों के लिये आकर्षक, सुखी, दीर्घायु तथा डरपोक होता है।

पराशर—तुलामेषविलग्नेषु प्रायः शुक्रो भवेद्बली। यह तुला या मेष लग्न में हो तो बलवान होता है।

वैद्यनाथ—कामी कान्तवपुः सुदारतनयो विद्वान् विलग्ने भृगौ॥ यह कामुक, सुन्दर, अच्छें स्त्रीपुत्रों से युक्त तथा विद्वान होता है।

वसिष्ठ—कान्ति शत्रुनाशं। निहन्ति दोषांस्त्रिशतं भृगुश्च। इसका शरीर तेजस्वी होता है और शत्रुओं का नाश होता है। यह शुक्र अन्य ग्रहों के ३०० अशुभ योगों को दूर करता है।

पराशर—शुक्रो वा यदि केन्द्रगः। तस्य पुत्रस्य दीर्घायुर्धनवान् राजवल्लभः। शुक्र केन्द्रस्थान में हो तो वह धनवान और राजा को प्रिय होता है। उसका पुत्र दीर्घायू होता है।

गर्ग—वाचालः शिल्पशोलाढ्यो विनीतो गीततत्परः। काव्यशास्त्रविनोदी च धार्मिको लग्नगे भृगौ॥ यह बहुत बोलता है। नम्र, गायन में कुशल, शीलवान, शिल्पकला में प्रवीण, काव्यशास्त्रविनोद में तत्पर तथा धार्मिक होता है। तनुस्थानस्थिते शुक्रे दृष्टिभिर्वा विलोकिते। गौरवर्णो भवेद्देहो वातपित्तसमन्वितः॥ कटिपार्श्वोदरे गुह्ये व्रणो वाथ तिलोथवा॥ श्वशृंगिभ्यो वायुतो वा पीडा देहे प्रजायते॥ लग्न में शुक्र हो या उसकी दृष्टि हो तो शरीर गोरे रंग का होता है। प्रकृति वातपित्तप्रधान होती है। कमर, पीठ, पेट या गुह्य भाग में कोई व्रण या तिल होता है। कुत्ता या सींगोवाले किसी पशु से कष्ट होता है। वातरोग होते है। कविः स्थिरप्रकृतिदायकः। शुक्र से स्थिर स्वभाव प्राप्त होता है।

जातकमुक्तावली—यदि शुक्रो लग्नस्थो द्वादशाब्दे भवेत् तस्य मस्तके चिन्हदर्शनम्। यदि तनौ भृगुजः सिंहगतोक्षिहरस्तदा। इसके १२ वें वर्ष मस्तकपर कुछ चिन्ह प्रकट होता है। यह शुक्र लग्न में सिंह राशि में हो तो दृष्टि नष्ट होती है।

नारायणभट्ट—समीचीनमंगं समीचीनसंगं समीचीनबव्हंगनाभोगयुक्तः। समीचीनकर्मा समीचीनशर्मा समीचीनशुक्रो यदा लग्नवर्ती॥ लग्नस्थान में शुभ शुक्र सुन्दर शरीर, सत्संगति, अच्छी स्त्रियों का उपभोग, अच्छे व्यवसाय और अच्छे सुख को देता है।

बृहद्यवनजातक---बहुकलाकुशलो विमलोक्तिकृत् सुवदनामदनानुभवः पुमान् । अवनिनायकमानधनान्वितो भृगुसुतेतनुभावमुपागते ।। **दैत्येश्वरः** सप्तभूः दारान् । अनेक कलाओं में कुशल, उत्तम बोलनेवाला, उत्तम स्त्रियों का उपभोग लेनेवाला, राजा द्वारा सन्मानित तथा धनी ऐसा यह व्यक्ति होता है । आयु के १७ वें वर्ष इसे स्त्रीप्राप्ति होती है ।

ढुंढिराज का वर्णन इसी प्रकार है ।

मन्त्रेश्वर---तनौ सुतनुदृक्प्रियं सुखिनमेव दीर्घायुषं । यह सुन्दर, आकर्षक, सुखी तथा दीर्घायु होता है ।

आर्यग्रन्थ---तनुगे भृगुनन्दने भवति कार्यरतः परपण्डितः । विमलबाल्यगृही सदने रतो भवति कौतुकहा विधिचेष्टितः । काम में मग्न, दूसरी भाषाओं का विद्वान, बचपन से अच्छे घर में रहनेवाला, कौतुक दूर रखकर दैवयोगों से प्राप्त स्थिति में सन्तुष्ट रहनेवाला होता है ।

जयदेव---सदा सुकर्मा विमलोक्तिकृद् गुणी सभूतिकन्दर्पसुखस्तनौ कवौ । अच्छे काम करता है । उत्तम बोलता है । गुणी, धनवान तथा कामसुख प्राप्त करनेवाला होता है ।

काशीनाथ---लग्ने शुक्रे सुशीलश्च वृत्तिमानपि सुन्दरः । शुचिर्विद्वान् मनोज्ञश्च, धार्मिकश्च भवेन्नरः ।। यह शीलवान, उत्तम वर्तन करनेवाला, सुन्दर, पवित्र, विद्वान, आकर्षक तथा धार्मिक होता है ।

जागेश्वर---भृगोर्वंशनाथो यदा लग्ननाथः स गौरस्तथाखण्डितांगो बलीयान् । परं पुण्डरीकं भवेन्नेत्रकोणे वधूनां गणं सेवते शक्तिवीर्यात् ।। यह गोरे रंग का, बलवान तथा अव्यंग होता है । आंख में कुछ दोष रहता है । बहुत वीर्यवान होने से कई स्त्रियों का उपभोग करता है ।

पूंजराज---भार्गवः विलग्नगः आम्लक्षारप्रियो नित्यं । नमकीन और खट्टे पदार्थ प्रिय होते है ।

घोलप---धन से सुशोभित, सत्पुरुषों की कृपा से युक्त, शत्रुओं को नष्ट करनेवाला, मित्रों से युक्त, वेदान्ती, सुन्दर, शान्त, चतुर, उत्तम स्त्री पुत्रों से युक्त तथा समुद्री प्रवास द्वारा धन प्राप्त करनेवाला होता है ।

गोपालरत्नाकर– गणितज्ञ, दीर्घायु, पोशाक सदा बदलनेवाला, सुगन्ध और अलंकार प्रिय होनेवाला तथा पत्नी पर प्रेम करनेवाला होता है।

हरिवंश—भृगौ निलग्नगे नरोऽतिसुन्दरो निरामयी समृद्धिमानलंकृतः शुभों बहुविभूषणैः। सुभामिनीसुखान्वितो नृपोऽथवा नृपोपमः कुलप्रदीपको भवेत् सुपण्डितः पराक्रमी ।। यह सुन्दर, नीरोग, धनवान, अलंकारो से शोभित, स्त्रीसुख से युक्त, राजा अथवा राजा जैसा प्रभावी तथा कुल को भूषणभूत, पण्डित एवं पराक्रमी होता है।

जीवनाथ—प्रबलरिपुभंगश्च सहसा। अतिक्रीडा नित्यं हरिणनयनाभिस्तनुभृतः ।। प्रबल शत्रुओं का नाश होता है। यह स्त्रियों के साथ बहुत क्रीडा करता है। जीवनाथ का अन्य वर्णन नारायणभट्ट के समान है।

हिल्लाजातक—भृगुःसप्तदशेवर्षे लग्नस्थो विषयी सुखम्। १७ वें वर्ष स्त्रीसुख प्राप्त होता है।

लखनऊ के नबाब–अव्वलखाने जोहरा महबूबं मुकरवं नृपतेः। दानिश्मन्दं मनुजं जंरदारं जनखूबूरः प्रकुरुते ।। यह तेजस्वी, राजा जैसा, उदार, श्रीमान और रूपवान होता है।

पाश्चात्य मत—यह विलासी, सुन्दर और चैनबाज होता है। इसे स्त्रियों को वश करना सहज साध्य होता है। स्वभाव अच्छा, आनन्दी, स्नेहयुक्त होता है। गायनवादन, चित्रकला आदी का शौक होता है। लग्न में शुक्र वृषभ, मिथुन, तुला, कुम्भ या मीन राशि में हो तो शुभ होता है। मेष, वृश्चिक, कन्या और मकर लग्न में यह शुभ नही होता। वृश्चिक लग्न में शुक्र मंगल द्वारा पीडित हो तो व्यभिचारी, शराबी, नीच, दुष्ट प्रकृति होती है। मंगल के साथ शुभ योग में शुक्र हो तो चित्रकार, शिल्पकार, नट, गायक आदि रूप में प्रसिद्ध होते है। नाटक मंडली या जिसमें लोक समुदाय से सम्बन्ध आता हो ऐसे अन्य व्यवसाय में सफलतां मिलती है ऐसा राफेल आदि ने कहा है। इनकी भाषणशैली मोहक, बरताव मृदुतापूर्ण और स्वभाव प्रसन्न तथा आकर्षक होता है। किन्तु आरोग्य और आयुष्य के लिए यह शुक्र अच्छा नही होता। अति विलास और सुखोपभोग से सामर्थ्य क्षीण होकर अवययों में शिथिलता आ जाती है।

भृगसूत्र—गणितशास्त्रज्ञः, दीर्घायुः, दारप्रियः, वस्त्रालंकारप्रियः, रूपलावण्यप्रियः गुणवान्, स्त्रीप्रियः, धनी, विद्वान् । शुभयुते अनेकभूषणवान् स्वर्णकान्तिदेहः । पापवीक्षितयुते नीचास्तंगते चोरः वचनवान्, वातश्लेष्मादिरोगवान् । भावाधिपे राहुयुते बृहद्बीजो भवति । वाहने शुभयुते गजान्तैश्वर्यवान् सर्वसौख्ययुतः । स्वक्षेत्रे महाराजयोगः रन्ध्रे अष्टव्ययाधिपे शुक्रे दुर्बले स्त्रीद्वयम्, चंचलभाग्यः, क्रूरबुद्धिः ।। यह गणितज्ञ, दीर्घायु, गुणवान, धनी तथा विद्वान होता है । इसे सौन्दर्य, कपडे, आभूषण और स्त्रियां बहुत प्रिय होती है । यह शुक्र शुभग्रह के साथ हो तो शरीर की कान्ति सोने जैंसी उत्तम होती है और अनेक अलंकार प्राप्त होते है । पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो अथवा नीच राशि में या अस्तंगत हो तो चोर, ठग, वात–रोगादि से पीडित होता है । लग्नेश राहु के साथ हो तो वह बृहद्बीज होता है । शुभग्रह के साथ हो तो गजान्त वैभव प्राप्त होता है, सब सुख मिलते है । यह स्वगृह में हो या अष्टमस्थान का स्वामी अथवा निर्बल हो तो द्विभार्यायोग होता है ।

हमारे विचार—शुक्र ग्रह संपत्तिदायक है । यह लग्न में होने पर बहुत संपत्ति न भी मिले तो जीवन सुखपूर्वक बिताने के लिए पर्याप्त धन मिल जाता है । नैसर्गिक कुण्डली के सप्तमस्थान का जो कारकत्व है उस के अनुसार इस स्थान में आचार्य, गुणाकर, वैद्यनाथ, काशीनाथ, बृहद्यवनजातक तथा वसिष्ठ ने फल बतलाये है । अन्य ग्रन्थकारों ने धनस्थानानुसार वर्णन किया है । यह प्रायः पूर्व की ओर उदित शुक्र का फलवर्णन है । यवनजातक तथा हिल्लाजातक में १७ वें वर्ष स्त्रीप्राप्ति बतलाई इस का अनुभव मिलना आजकल प्रायः असम्भव ही है ।

हमारा अनुभव—इस स्थान में मेष, सिंह या धनु में शुक्र हो तो विवाह देर से होता है । पत्नी अच्छी मिलती है । दोनों में प्रेम अच्छा रहता है । धनु राशि में हो तो ३६ वें वर्ष के बाद विवाह होता है या अविवाहित रहने की प्रवृत्ति होती है । यह द्विभार्यायोग भी हो सकता है । लोगों में प्रभाव रहता है । मधुर बोलने से और प्रेमपूर्ण व्यवहार से आदर होता है । नौकरी–धन्धा ठीक चलता है । भाग्योदय के लिए बहुत कष्ट

करना पडता है। सन्तति कम होती है। वृषभ राशि में यह शुक्र हो तो पत्नी अच्छी होने पर भी व्यभिचारी प्रवृत्ति होती है। कन्या राशि में लग्नस्थ शुक्र हो तो परस्त्री से विन्मुख, अपनी स्त्री मे सन्तुष्ट रहते है। स्त्रियों का आकर्षण कम होता है। विरक्त, अविवाहित रहने की प्रवृत्ति होती है। मकर में शुक्र हो तो विवाह के पूर्व बहुत लडकियों को देख कर नापसन्द ठहराते है किन्तु अन्त में साधारणसी लडकी से ही विवाह कर ठीक तरह रहते है। इनकी पत्नी प्रायः काले-सांवले वर्ण की होती है। यह लोग नौकरी स्थिरता से करते है। कुछ लज्जाशील होते है। लोगों में आगे रहना नही चाहते। मिथुन, तुला तथा कुम्भ में यह शुक्र हो तो पत्नी प्रेमपूर्ण, बुद्धिमान और सुशिक्षित होती है। किन्तु ये लोग सिर्फ शौक के लिए परस्त्रियों को भ्रष्ट करने की कोशिश करते है। द्विभार्यायोग हो सकता है। कर्क, वृश्चिक राशियों में स्त्रीसुख अच्छा मिलता है। एक ही विवाह होता है। व्यवसाय बदलते है। ये लोग बच्चोंपर बहुत प्रेम करते है किन्तु स्त्री से बोलना पसन्द नही करते। मीन में यह शुक्र हो तो दो तीन विवाह होते है। पैसा बहुत मिलता है। एकही विवाह हो तो परिस्थिति साधारण अच्छी रहती है। ये लोग हमेशा अपने मत बदलते रहते है। लग्नस्थ शुक्र का सामान्य फल यह है कि धन बहुत मिलने पर भी संग्रह नही हो सकता। खर्च हो जाता है। स्वयं कंजूष हो तो भी पत्नी द्वारा खर्च होता है। लोगों में मिलनेजुलने से डरता है। आयु के १८ वें वर्ष से ही स्त्री की इच्छा करता है। हलके वर्गो मे इसी आयु में विवाह हो जाते है। सुशिक्षितों में ३१ से ३६ वे वर्ष तक विवाह होता है। इनके तीसरे या १५ वें वर्ष में घर के किसी प्रमुख व्यक्ति का मृत्यु होता है। लग्न में शुक्र हो तो कवि, नाटककार, उपन्यासकार, गायक, चित्रकार आदि रूप में यश प्राप्त होता है। लग्न में मिथुन, तुला, धनु या कुम्भ राशि में शुक्र हो तो शिक्षक या प्राध्यापक भी हो सकते है। यह गुप्त रोग होने का भी योग है। मिथुन तथा तुला, वृश्चिक व कुम्भ लग्न में शुक्र होने पर कुछ वन्ध्या स्त्रियों के उदाहरण देखे गये हैं जिनकी दृष्टि बहुत दूषित थी। पुरुषों के लिए मोहक और बच्चों के लिए घातक ऐसी इनकी दृष्टि थी।

धनस्थान में शुक्र के फल

यह स्थान शुक्र का नैसर्गिक स्थान होने से इसमें वह बलवान होता है। इसके फल इस प्रकार बतलाये है--

आचार्य व गुणाकर--गुरु के समान फल कहे है।

कल्याणवर्मा--प्रचुरान्नपानविभवं श्रेष्ठविलासं तथा सुवाक्यं च। कुरुते द्वितीयराशौ बहुधनसहितं सितः पुरुषम् ।। इसे विपुल खानापीना प्राप्त होता है। यह धनवान, विलासी, अच्छा बोलनेवाला होता है।

वैद्यनाथ--विद्याकामकलाविलासधनवान् वित्तस्थिते भार्गवे ।। यह विद्यासंपन्न, कामुक, कलाकार, विलासी तथा धनवान होता है।

पराशर--भृगुनन्दनो वा नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः। विविध रीतियों से धन का संग्रह होता है।

गर्ग--विद्यार्जितधनो नित्यं स्त्रीधनोऽथवा धनी। धने शुक्रे वीक्षिते वा धनवांश्च बहुश्रुतः ।। यह विद्या के बलपर अथवा स्त्री से धन प्राप्त करता है। मुखे च लक्षिता वाणी सभायां पटुता तथा। इसका बोलना मधुर होता है और सभाओं में यह विजयी होता है।

नारायणभट्ट--मुखं जारुभाषं मनीषापि चार्वी मुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य। कुटुम्बे स्थिता पूर्वदेवस्य पूजा कुटुम्बेन किं चारु चार्वंगिकामः ।। यह मधुर बोलनेवाला, अच्छी इच्छाएं रखनेवाला, सुन्दर, अच्छे वस्त्र पहननेवाला, सुन्दर स्त्रीका पति तथा अच्छे कुटुम्ब से युक्त होता है। घर में परंपरागत देवोपासना चलती रहती है।

बृहद्यवनजातक--सदन्नपानाभिरतं नितान्तं सद्वस्त्रभूषाधनवाहनाढ्यम्। विचित्रविद्यं मनुजं विदध्याद् धनप्रपन्नो भृगुनन्दनीयम् ।। इसे अच्छे खानेपीने की रुचि होती है। कपडे, आभूषण, धन और वाहन अच्छे मिलते है। यह विविध विद्याएं प्राप्त करता है। उशना हि खषष्ठिलक्षीम्। ६० वें वर्ष संपत्ति प्राप्त होती है। --**ढुंढिराज** का वर्णन भी ऐसा ही है।

आर्यग्रन्थकार--परधनेन धनी धनगे भृगो भवति योषिति वित्तपरो नरः। रजतसीसधनी गुणशैशवैः कृशतनुः सुवचा बहुबालकः ।। यह स्त्री

का अथवा दूसरों का धन प्राप्त कर धनवान होता है चांदी वा सीसे से धन मिलता है। बचपन से गुणवान, दुबला-पतला, मधुर बोलनेवाला और बहुत पुत्रों से युक्त होता है।

मन्त्रेश्वर—करोति कविरर्थगः कविननेकंवित्तान्वितं ॥ यह कवि और धनी होता है।

जयदेव—सुभोजनी सद्वसनी सुवाग् धनी सुकीर्तियुगम् धान्यगते भृगोः सुते। पूर्व वर्णनों से कीर्तियुक्त होना यह एकही विशेषण अधिक है।

काशीनाथ—धने शुक्रे धनी विद्वान् बन्धुमान्यो नृपार्चितः। यशस्वी गुरुभक्तश्च कृतज्ञश्च भवेन्नरः ॥ यह धनवान, विद्वान, बान्धवों में माननीय, राजा द्वारा सन्मान्वित, यशस्वी, गुरुभक्त तथा कृतज्ञ होता है।

जागेश्वर—सशुक्रे धने सुन्दरं तस्य वक्त्रं वदेन्माधुरं बुद्धिमान् वीर्यशाली। कुबुम्बे सुखं कामिनोकामकामी क्रयीविक्रयी कोशजातं प्रभूतम् ॥ इसमें वीर्यवान होना और खरीद-बिक्री के व्यवहार करना ये दो विशेषण अधिक है, बाकी वर्णन पहले आ चुका है।

जीवनाथ—इसने नारायणभट्ट का वर्णन ही प्रायः दिया है। सिर्फ स्त्रियों को प्रिय—चपलनयनानां प्रियकरः—यह एक वर्णन अधिक है।

पुंजराज ने लग्नस्थान के ही फल बतलाये है।

हरिवंश—सदन्नभोजनं सुवस्त्रवाहनादिसंयुतं विचित्रविश्वमुज्वलं चरित्रशोभनंर्नरं। यशोदयासुसंस्कृतं करोति भूपपूजितं धनैः सुपूरितं धने सुरद्विषां पुरोहितः ॥ धनस्थाने भृगुर्यस्य सुमूर्तिः प्रियभाषणः। सुबुद्धिर्धनवान् पुण्यदानादिमतितत्परः ॥ यह सुन्दर, मधुर बोलनेवाला, बुद्धिमान. धनवान तथा दानपुण्य में तत्पर होता है। इसे खानपान, कपडे, वाहन आदि अच्छे प्राप्त होते हैं। यह शीलवान, यशस्वी, दयालु, राजाद्वारा सन्मानित होता है।

घोलप—जगत में प्रसिद्ध, न्याय से धन से प्राप्त करनेवाला शत्रुरहित व वीर्यवान होता है। राजा जैसा सुशोभित, कलाओं का ज्ञाता, बहुत

लोगों के साहाय्य से वैभवशाली होनेवाला, मधुर अन्न का आस्वाद लेनेवाला तथा उत्तम लोगों को दान देनेवाला होता है ।

गोपाल रत्नाकर--इस का कुटुम्ब बडा होता है । यह शुभ कार्य करता है, उत्तम भोजन प्राप्त करता है । स्त्रीसुख उत्तम मिलता है । विद्यावान, विजयी, सुन्दर तथा स्नेहल होता है । आंखे बडी होती है ।

हिल्लाजातक--यवनजातक के समान वर्णन है ।

लखनऊन के बाब-शीरीसखुन् मनुष्यं जमजे वर्कशीशालैः । युक् मिहिरो जरखाने जोहरा कुरुते च सद्मजं दक्षं ॥ मधुर बोलना, अच्छे वस्त्र पहनना अच्छे काम करना, घरबार प्राप्त करना ये इस शुक्र के फल है ।

पाश्चात्य मत--यह शुक्र बलवान हो तो विजय मिलता है । पापग्रह से युक्त हो तो शराबी होता है । स्त्रियां, कपडे, अलंकार, जवाहरात आदि का शौकीन होता है । विविध खेल और मनोरंजनों में भाग लेता है । शृंगारसाधन बहुत प्रिय होते हैं । इस पर शनि की शुभ दृष्टि हो तो अच्छा धनसंचय होता है । व्यापार अच्छा चलता है । चन्द्र की शुभ दृष्टि हो तो स्त्रियों और अन्य लोगों से लाभ होता है । यह विदेशों में यशस्वी होता है । मित्र को दिलभर शराब पिलाकर अपने काम बना लेता है । इस शुक्र के साथ शनि हो तो दारिद्र्य और धननाश का योग होता है । इस स्थान में बलवान शुक्र व्यवसाय मे यश देता है जिस से पैसा बहुत मिलता है । किन्तु वस्त्र, अलंकार, मनोरंजन आदि में ये लोग खूब खर्च करते है । फिर भी कभी सांपत्तिक कठिनाई नही होती । ये साधारणतः लोकप्रिय होते है और मित्रों से इन्हें व्यवसाय में अच्छा लाभ होता है ।

भृगुसूत्र--धर्मवान् धनवान् कुटुम्बी सुभोजनः विनयवान् नेत्रविलासः सुमुखः दयावान् परोपकारी । द्वात्रिंशद्वर्षे उत्तमस्त्रीलाभः, भूमिलाभः । भावाधिपे दुर्बले दुःस्थाने नेत्रवैपरीत्यं भवति । शशियुते निशान्धः कुटुम्बहीनो नेत्ररोगी धननाशकरः ॥ यह धर्म, धन, नम्रता, सौन्दर्य, दया, परोपकार इन गुणों से युक्त होता है । कुटुम्ब बडा होता है । भोजन अच्छा मिलता है । आंखें सुन्दर होती है । ३२ वें वर्ष उत्तम स्त्री तथा

भूमि प्राप्त होती है। धनेश दुर्बल हो अथवा अशुभ स्थान में (६, ८ अथवा १२ वें) हो तो आंखों के रोग होते हैं। यह शुक्र चन्द्र के साथ हो तो रात को नही दीखता, कुटुम्ब नही रहता, धन नष्ट होता है और आंखों के रोग होते है।

हमारे विचार—नैसर्गिक कुण्डली में शुक्र धनस्थान का स्वामी है अतः शास्त्रकारों ने प्रायः इसके फल शुभ बतलाये है। वे पुरुषराशियों में ठीक पाये जाते है। अशुभ फलों का अनुभव स्त्री राशियों में मिलता है। यवनजातक में ६० वें वर्ष धनलाभ ऐसा फल कहा है वह कुछ असम्भव ही दीखता है क्यों कि इतनी अधिक आयु में किसी से दान में ही धन प्राप्त हो सकता है—स्वतंत्र रूप से नही। भृगुसूत्र में ३२ वें वर्ष स्त्री लाभ का फल बतलाया है वह विवाहद्वारा हो ऐसा प्रतीत नही होता। अवैध रीति से किसी श्रीमान विवाहित या विधवा स्त्री से सम्पर्क हो यह सम्भव हैं। धनेश दुर्बल हो और चन्द्र साथ हो तो नेत्ररोगादि अशुभ फल बतलाये है। ये फल सिंह, धनु और कुम्भ लग्न के लिये ठीक है क्यों कि इन लग्नों में चन्द्र षष्ठ, अष्टम और व्यय स्थान का स्वामी होता है उस का शुक्र से सम्बन्ध अशुभ ही होगा। मिथुन लग्न हो तो चन्द्र ही धनेश होगा अतः उसके सम्बन्ध से अशुभ फल नही मिलेंगे।

हमारा अनुभव—यह शुक्र मेष, सिंह या धनु राशि में हो तो नौकरी से धनार्जन होता है। पैतृक सम्पत्ति मिलती है किन्तु टिक नही सकती। सट्टा, लॉटरी, रेस आदि का शौक होता है। एकदम बहुत धन प्राप्त करना चाहते हैं किन्तु सफल नही होते। वृषभ कन्या, मकर इन राशियों में यह शुक्र हो तो पैतृक सम्पत्ति या तो होती ही नही और हो भी तो मिलती नही। सरकारी नौकरी में प्रगति करते है। पत्नी हमेशा बीमार रहती है। रोगों के उपचार में बहुत खर्च होता है। कुछ व्यभिचारी प्रवृत्ति होती है। स्त्रियों के सम्बध से धन प्राप्त होता है। वाणी मधुर और लेखन अच्छा होता है। कवि हो सकते हैं। मिथुन, तुला या कुम्भ में यह शुक्र हो तो व्यापार में प्रगति होती है। पूर्वार्जित इस्टेट मिलती

है । व्यापार में प्रगति के साथ पुत्र न होने की चिन्ता बनी रहती है । कर्क, वृश्चिक तथा मीन में यह शुक्र हो तो लेखनद्वारा प्रसिद्ध होते हैं । स्त्रीसुख कम मिलता है । अपत्यों में लडकियां ज्यादा होती है । द्विभार्या-योग हो सकता है । धनस्थान के शुक्र का सामान्य फल यह है कि इन के धनार्जन में सतत स्थिरता नही होती । किन्तु धन की बहुत कमी भी कभी नही होती । विवाह के बाद भाग्योदय होता है और पत्नी की अच्छी मदद होती है । उच्च वर्गो में २३ वें वर्ष से और हलके वर्गो में छोटी आयु मे ही धन मिलना शुरू हो जाता है । स्त्री भी धनार्जन करती है । आयु का पूर्वार्ध कष्टकर और मध्यकाल सुखसमृद्धि का होता है । मृत्यु के बाद पत्नी की स्थिति खराब होती है । ३२ वें वर्ष आकस्मिक हानि और ३८ वें वर्ष आकस्मिक लाभ का योग होता है । लग्न मेष हो तो विवाहित स्त्री से हमेशा झगडा होता है धन और तृतीयस्थान में रवि और बुध का योग हो तो ज्योतिष में अच्छा प्रवेश होता है । इनका शुभ फलों का वर्णन अनुभव में उत्तम आता है ।

तीसरे स्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर--इन ने तृतीय में गुरु के समान ही शुक्र के फल बतलाये है ।

पराशर--शत्रुवृद्धि धनक्षयम् । शत्रु बढते है और धन कम होते जाता है ।

कल्याणवर्मा--सुखधनसहितं शुक्रो दुश्चिक्ये स्त्रीजितं तथा कृपणम् । जनयति मन्दोत्साहं सौभाग्यपरिच्छदातीतम् ।। यह सुखी, धनवान, कंजूस तथा स्त्री के आधीन होता है । उत्साह कम होता हैं ।

वसिष्ठ--सुविनीतवेषं सौख्यं । सादा वेष धारण करता है । सुखी होता है ।

वैद्यनाथ--शुक्रे सोदरगे सरोषवचनः पापी वधूर्निजितः । यह क्रोध से बोलता है, पापी और स्त्री के अधीन होता है । सोदरारातिगः शुक्रः शोकरोगभयप्रदः । तत्रैव शुभकारी स्यात् पुरतो यदि भास्करात् ।। तृतीय

और षष्ठ में शुक्र हो तो शोक, रोग और भय प्राप्त होते हैं। किन्तु यह रवि के आगे हो तो शुभ फल देता है।

गर्ग--भ्रातृस्थाने भृगोः पुत्रे भगिन्यो बहुलाः स्मृताः। भ्रातरश्च त्रयः प्रोक्ताः क्रूरेण निधनं गताः ॥ इसे बहुत बहिने होती है और तीन भाई होते है। साथ में क्रूर ग्रह हो तो उनकी मृत्यु होती है। सहजस्थानगो दत्ते गौरांगीं भगिनीं भृगुः। इसकी बहिन गौर वर्ण की होती है। अशीतिनाथो भृगुनन्दनः। इस का परिवार ८० लोगों का होता है।

बृहद्यवनजातक--सहजगे सहजैः परिवारितो भृगुसुते पुरुषः पुरुषैर्नतः। स्वजनबन्धुविबन्धनतांगतःसततमाशुगतिर्गतिविक्रमः ॥ यह बन्धुओं से युक्त होता है। शीघ्र काम करनेवाला, उत्साही, अपने लोगों को बन्धन से छुडानेवाला और सन्माननीय होता है। रत्ननखतः प्रकरोति चार्थम्। २९ वें वर्ष धनलाभ होता है।

ढुंढिराज--कृशांगयष्टिः कृपणो दुरात्मा द्रव्येण हीनो मदनानुतप्तः। सतामनिष्टो बहुदुष्टचेष्टो भृगोस्तनूजे सहजे नरः स्यात् ॥ यह दुबला, कंजूस, दुष्ट, निर्धन, कामुक, और सज्जनों को कष्ट देनेवाला होता है।

नारायणभट्ट--रतिः स्त्रीजने तस्य नो बन्धुनाशो गुरुर्यस्य दुश्चिक्यगो दानवानाम्। न पूर्णो भवेत् पुत्रसौख्येऽपि सेनापतिः कातरो दानसंग्रामकाले ॥ इसे स्त्रीपुत्रों का सुख प्राप्त नही होता। बन्धुओं का नाश होता है। यह डरपोक और कंजूस होता है।

आर्यग्रन्थ--सहजमंदिरवर्तिनि भार्गवे प्रचुरमोहयुतो भगिनीसुतः। भवति लोचनरोगसमन्वितो धनयुतो प्रियवाक् च सदंबरः ॥ यह मोहयुक्त, धनी, मधुर बोलनेवाला और अच्छे कपडे पहननेवाला होता है। इसे आखों के रोग होते है।

मन्त्रेश्वर--विदारसुखसंपदं कृपणमप्रियं विक्रमे। स्त्री, सुख तथा धन से रहित, कंजूस और लोगों को अप्रिय होता है।

जयदेव--कृशो दुरात्मा कृपणोऽधनोऽस्मरः कुचेष्टितोनिष्टकरस्तृतीयगे। यह दुबला, दुष्ट, कंजूस, निर्धन, अनिष्ट काम करनेवाला और कामसुख से रहित होता है।

काशीनाथ—भार्गवे सहजे जातो धनधान्यसुतान्वितः। निरोगी राजमान्यश्च प्रतापी चापि जायते॥ यह धन, धान्य तथा पुत्रों से युक्त, निरोगी राजा को माननीय तथा प्रतापी होता है।

आगेश्वर—कृशांगो रतिः स्त्रीजने कातरोऽसौ रणे वै सुताद् दुःखितो द्रव्यशून्यः। नरः स्याद् दुराचारयुक्तो न जायाप्रसूतिर्भवेद् भूयसी भ्रातृशुक्रे॥ दुबला, कामुक, युद्ध में डरनेवाला, निर्धन, दुराचारी होता है। इस की पत्नी बहुत बार प्रसूत नही होती। पुत्रसे दुःख होता है।

जीवनाथ—नारायण भट्ट के समान फल वर्णन है। सिर्फ स्त्री पर बहुत आसक्त होना—गते भ्रातुः स्थानं जनुषि यदि शुक्रे तनुभृतामतिप्रीतिः शश्वत् कमलवदनायां—यह फल अधिक कहा है।

हरिवंश—तृतीयगेहगे भृगौ कृशांग आतुरः पुमान् उद्यमी दुराग्रही सुशीलसत्यवर्जितः। कुकामुकः कलिप्रियः कलत्रकर्मकारको भवेत् पराभवः परैः सहोदरैः समन्वितः॥ यह दुबला, आतुर, उद्योगी, दुराग्रही, शीलरहित, झूठ बोलनेवाला, अवैध मार्ग से कामसुख प्राप्त करनेवाला, झगडालू, स्त्रियों के काम करनेवाला, शत्रुओं द्वारा पराभूत होनेवाला होता है।

लखनऊ के नबाब—जोहरा भवति बिरादरखाने चेन्मानवो जातः। जोरावरो हरीशः सालस्यः सानुजः साश्वः॥ यह सिंह जैसा बलवान किन्तु आलसी होता है। भाइयों से युक्त और घोडे पालनेवाला होता है।

घोलप—यह जीवनभर स्त्रीधन का उपभोग करता है। सुशोभित, शत्रुरहित, सदाचारी, बन्धुसुख से युक्त और विपत्तिरहित होता है।

गोपालरत्नाकर—माता के पक्ष की वृद्धि होती है। यह दाक्षिण्ययुक्त; बलवान और लोभी होता है।

हिल्लाजातक—तृतीयः तीर्थनिरतम्। यह हमेशा तीर्थयात्रा करता है।

यवनमत—यह आलसी और सुस्त होता है। नींद बहुत आती है। हमेशा स्त्रियों को खुश करने में लगा रहता है।

पाश्चात्य मत--इसे बन्धु, मित्र, पडोसी आदि से अच्छी मदद होती है। पढने की रुचि होती है। कलाओं का ज्ञाता, भाषाशास्त्रज्ञ, कवि, गायक या चित्रकार होता है। यह शुक्र अशुभ योग में हो तो व्यभिचारी, रंगीला होता है और उसे बहुत नुकसान सहना पडता है। यह आनन्दी और उत्साही होता है। प्रवास सुखपूर्ण होते है और प्रवास करते समय नये परिचय होते है। पत्रव्यवहार से भी मित्रता बढती है। इसी प्रकार विवाह की बातचीत पक्की होती है।

भृगुसूत्र--अतिलुब्धः। दाक्षिण्यवान्। भ्रातृवृद्धिः। संकल्पसिद्धिः। पश्चात्सहोदराभावः। क्रमेण भ्रातृतत्परः। वित्तभोगपरः। भावाधिपे बलयुते उच्चस्वक्षेत्रे भ्रातृवृद्धिः। दुःस्थाने पापयुते भ्रातृनाशः॥ यह बहुत लोभी, नम्र, संपत्ति का उपभोग करनेवाला होता है। भाइयों की वृद्धि होती है। छोटे भाई नही होते। मन के विचार सफल होते है। तृतीयेश बलवान, उच्च में या स्वगृह में हो तो भाइयों की वृद्धि होती है। वही अशुभ स्थान में या पापग्रह से युक्त हो तो भाइयों का विनाश होता है।

हमारे विचार--इस स्थान में कुछ शास्त्रकारों ने शुभ और अन्य शास्त्रकारों ने अशुभ फल कहे है। यदि शुक्र इस स्थान में अकेला हो तो अशुभ फलों का अनुभव मिलेगा। रवि यदि धन, तृतीय या चतुर्थ स्थान में हो तो भी अशुभ फल मिलेंगे। लग्न में या पंचम में रवि हो तो शुभ फलों का अनुभव मिलेगा। हमारे विचार से शुक्र के लिए यह स्थान बहुत अशुभ है।

हमारा अनुभव--शुक्र के लिए ३-६-८-१२ ये स्थान अशुभ है, अन्य स्थान शुभ है। तत्त्वप्रदीप जातक में यही कहा है--संप्राप्तो दर्पगेहे तनुसुखजनके कोणकोशे प्रशस्तः शेषे भावे न शस्तो वदति च भृगुजः पूर्वग्रन्थेषु तज्ञः॥ इस शुक्र के अनिष्ट फल मुख्यतः विवाह के बारे में अनुभव में आते है। विवाह में विघ्न होना, पत्नी से ठीक सम्बन्ध न रहना, एक से अधिक विवाह होना, विजातीय स्त्री होना, पत्नी से दूर रहने के प्रसंग बारबार आना, पुर्नविवाहित स्त्री होना, विवाह के बाद आर्थिक कष्ट होना आदि अशुभ फल मिलते है। इन्हें अधिक आयु की और गम्भीर स्त्री

पसन्द होती है। कामुक होते है। दिन में भी स्त्रीसंग की इच्छा रहती है। प्रथम पत्नी का मृत्यु हुआ तो दूसरा विवाह जलदी नही होता। इन के बारे में स्त्रियों को हमेशा सन्देह बना रहता है। तात्पर्य स्त्रीसुख पूरी तरह न मिलना यह इस शुक्र का फल है। यह शुक्र पुरुष राशि में हो तो पत्नी सुन्दर, आकर्षक, बुद्धिमान और अभिमानी होती है। स्त्रीराशि में हो तो पत्नी अव्यवस्थित, साधारण रंगरूप की, व्यवहारज्ञान न होनेवाली होती है। पुरुषराशि में यह शुक्र हो तो अति कामुक प्रवृत्ति होने से स्त्रियों से अवैध सम्बन्ध रहते है। स्त्रीराशि में हो तो कामुकता होनेपर भी घर से बाहर जाने की प्रवृत्ति नही होती। मंगल से दूषित शुक्र तृतीय में हो तो अनैसर्गिक चेष्टाओं—मुष्टिमैथुन आदि द्वारा कामपूर्ति करते है। दुराचारी होते है। चाहे जिस मार्ग का अवलम्ब करते है। इन के हाथ पर शुक्र का कंकण चिन्ह (girdle of venus) देखा जा सकता है। धन के बारे में यह शुक्र कभी स्थिरता नही देता। व्यवसाय में हानिलाभ होते रहने से हमेशा आर्थिक कष्ट होता है। शुक्र के कारकत्व के व्यवसाय करने पर इन व्यक्तियों को नुकसान होता है। फिर अन्य व्यवसायों की ओर जाते है। पुरुष राशि में हो तो यह शुक्र सन्तति कम देता है। एक दो पुत्र होते है—कन्याएं नही होती। भाईबहने कम होती है या नही ही होती। स्त्रीराशि में विशेषत: वृश्चिक और मीन में हो तो कन्याएं अधिक होती है पुत्र कम होते है। बहिने अधिक होती है। सन्तति का विचार मुख्यत: स्त्री की कुण्डली से करना चाहिए। मिथुन, तुला या कुम्भ राशि में यह शुक्र हो तो ४५ वे वर्ष से कुछ बहिरेपन आ जाता है। ५५ वें वर्ष तक एक कान पूरा बहरा हो जाता है। तृतीयस्थान में गुरु या शुक्र होने से हस्ताक्षर अच्छा नही होता। यह शुक्र स्त्री राशि में हो तो रसिकता नही होती। पुरुष राशि में हों तो विवाह निश्चित करते समय बहुतसी लडकियां देखकर नापसन्द करते है किन्तु अन्त में किसी साधारण लडकी से ही विवाह करना पडता है। एक और अशुभ फल यह है कि इन्हें भोजन के बाद स्त्रीसंग की इच्छा होती हैं। इस से अन्नपचन ठीक नही होता और प्रकृति क्षीण होते जाती है।

चतुर्थ स्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर---इस स्थान में गुरु के समान फल बतलाए है।

कल्याणवर्मा— बन्धुसुहृत्सुखसहितं कान्तं वाहनपरिच्छदसमृद्धम्। ललितमदीनं सुभगं जनयति हिबुके नरं शुक्रः।। आप्त और मित्रों से युक्त, सुखी, सुन्दर, धन और वाहनों से संपन्न, स्नेहल और धीर स्वभाव का ऐसा यह व्यक्ति होता है।

वैद्यनाथ---स्त्रीनिर्जितः सुखयशोधनबुद्धिविद्यावाचालको भृगुसुते यदि बन्धुयाते।। यह स्त्री के आधीन होता है। सुखी, कीर्तिमान, धनी, बुद्धिमान, विद्वान और बहुत बोलनेवाला होता है।

वसिष्ठ---प्रधानं धनाप्तिं। यह प्रमुख मंत्री और धनी होता है।

गर्ग---परदयितविचित्री वासवासी विलासी बहुविधबहुभोगी राजपूज्यश्चिरायुः। वरपरिकरभार्या भार्गवे बन्धुसंस्थे भवति मनुजवर्गः सर्वदा विक्रमी च।। यह दूसरों का मित्र, विक्षिप्त स्वभाव का, घर में ही अधिक रहनेवाला, विलासी, कई प्रकार के उपभोग बहुत समय प्राप्त करनेवाला, राजा द्वारा सन्मानित, दीर्घायु, पराक्रमी और उत्तम स्त्री तथा परिवार से युक्त होता है। शुक्रे च तत्रस्थे धनं रौप्यमयं बहु। प्रचुरं च तथा धान्यं रसाश्च बहुला गृहे।।शुक्रस्तु दाराश्रयसौख्यवृत्तं स्रग्वस्त्रसौभाग्यगृहं विदध्यात्।। चांदी के रूप में बहुत धन रहता है। विपुल धान्य और दूधदही घर में रहता है। स्त्री के आश्रय से सुख मिलता है। फूलों के हार, वस्त्र आदि से घर सुन्दर लगता है।

बृहद्यवनजातक-मित्रक्षेत्रे ग्रामसद्वाहनानां नानासौख्यं वन्दनं देवतानाम्। नित्यानन्दं मानवानां प्रकुर्याद् दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थितश्चेत्।। गांव, अच्छे वाहन आदि से विविध सुख और सदा आनन्द प्राप्त होता है। यह देवों की वन्दना करते रहता है। स्वं शुक्रोम्बुजे सुखमथो। यह ४ थे वर्ष सुख देता है।

ढुंढिराज---इस लेखक ने यवनजातक जैसा वर्णन किया है।

आर्यग्रन्थ--भवति बन्धुगते भृगुजे नरो बहुकलत्रसुतेन समावृतः। सुरमते सुखमध्यगते गृहे वसनपानविलाससमावृतः ॥ स्त्री तथा कई पुत्रों से युक्त, अच्छे घर में खानापीना तथा कपडे आदि के सुखसे युक्त, विलासपूर्वक रहता है ।

जयदेव--सुभूमिमित्रालययानमानमुद्युत् सुखी धर्ममनाः सुखे सिते । यह जमीन, मित्र, घरबार, वाहन आदि से संपन्न, मानी, सुखी, आनन्दी तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है ।

जागेश्वर--सुखे भार्गवे वैभवं मानवानां सुखं दीयते वै जनन्या यथेष्टम् । परं राज्यसत्कारवत्त्वं नराणां गृहे गायकाः पण्डिताः वेदवन्तः ॥ इसे माता का सुख अच्छा मिलता है । राजा द्वारा सन्मानित और वैभवशाली होता है । इस के आश्रय में गायक, पंडित और वेदाभ्यासी विद्वान रहते हैं ।

मन्त्रेश्वर--सुवाहन सुमन्दिराभरणवस्त्रगन्धं सुखे ॥ इसे घर, वाहन, वस्त्र, आभूषण और सुगन्धी पदार्थ अच्छे प्राप्त होते है ।

नारायणभट्ट--महित्वेधिको यस्य तुर्येऽसुरेज्यो जनैः किं च मे चापरै रुष्टतुष्टैः । कियत् पोषयेत् जन्मतः संजनन्या अधीनार्पितोपायनैरेव पूर्णः ॥ यह सन्मानित होता है । लोगों के प्रेम या द्वेष की परवाह नही करता । माता का पोषण करता है । नौकरों से इसे अच्छा लाभ होता है ।

गौरीजातक--लग्नाच्चतुर्थगे शुक्रे जन्मकाले गते सति । कफादितोऽक्षरोगी च जन्मतो धनवर्जितः ॥ यह जन्म से ही निर्धन और कफरोग तथा आंखों के रोग से पीडित होता है ।

काशीनाथ--सुखे शुक्रे सुखी विज्ञो बहुभार्यो धनान्वितः । ग्रामाधिपो विवेकी स्याद् यशस्वी च भवेन्नरः ॥ यह सुखी, धनवान, गांव का मुखिया, यशस्वी, विवेकशील, विद्वान और बहुत स्त्रियों से युक्त होता है ।

जीवनाथ--सुखं गोमातंगप्रवरतुरगैः सौख्यमधिकं । गाय, घोडे, हाथी आदि से यह संपन्न होता है । इस लेखक का अन्य वर्णन नारायणभट्ट के समान है ।

हरिवंश—जनाधिपं पुराधिपं कुलाधिपं करोति च। समस्तसौख्यसंयुतं च देवदेवताप्रियं ॥ नरं सुविद्ययान्वितं सुवाहनादिसंयुतं। सुहृत् सुरद्विषां सुहृद्गृहं गतः सुहृत्स्त्रियं ॥ यह अपने कुटुम्ब, शहर तथा लोगों में प्रमुख, सुखी, देवभक्त, विद्वान, अच्छे वाहनों से संपन्न और स्त्री मित्रों से युक्त होता है।

घोलप—यह दुष्टों का पराभव करता है। बलवान, पवित्र, सदाचारी सज्जनों का सेवक, धनवान, कामुक, सुन्दर, पराक्रमी, स्थावर-जंगम संपत्ति का उपभोग लेनेवाला, और क्षमाशील होता है। इसे माता का सुख अच्छा मिलता हैं।

लखनऊ के नबाब—ऐयाशो मालदारो नेको कारश्च फारसश्चेत् स्यात्। जोहरा दोस्तमकाने भवति मनुष्यः प्रियंवदश्चाढ्यः ॥ यह धनवान, प्रामाणिक, बुद्धिमान, मधुर बोलनेवाला और अच्छे काम करनेवाला होता है। व्यभिचार की ओर इस की प्रवृत्ति होती है।

गोपालरत्नाकर—यह गायबैल पाल कर दूध दही का व्यापार करता है। धनधान्य से संपन्न, घोडे और वाहनों से युक्त, भाग्यवान, विद्वान, बुद्धिमान तथा आप्तों पर स्नेह करनेवाला होता है। इसे मातृसुख अच्छा मिलता है।

हिल्लाजातक—तुयंगो बन्धुसौख्यदः। यह भाईयों को सुख देता है।

पाश्चात्य मत—यह शुक्र पीडित न हो तो जीवन भर अच्छा सुख मिलता है। पैतृक संपत्ति मिलती है। मातापिता का सुख अच्छा मिलता है। आयु का उत्तरार्ध उत्तम होता है। मृत्यु अच्छी स्थिति में होता है। रवि और चन्द्र से शुभ योग हो तो विजय और लाभ प्राप्त होता है तथा स्थावर इस्टेट मिलती है। मंगल से अशुभ योग हो तो आयु के अन्तिम भाग में बहुत खर्च करना पडता है।

भृगुसूत्र—शोभनः बुद्धिमान् क्षमावान् सुखी। भ्रातृसौख्यं मातृसौख्यं। त्रिंशद्वर्षे अश्ववाहनप्राप्तिः। क्षीरसमृद्धिः। भावाधिपे बलयुते अश्वान्दोलिकाकनकचतुरंगादिवृद्धिः। तत्र पापयुते पापक्षेत्रे अरिनीचगे बलहीने

क्षेत्रवाहनहीनः मातृक्लेशवान् कलत्रान्तरभोगी। यह बुद्धिमान, सुशोभित, क्षमाशील तथा सुखी होता है। माता और भाइयों का सुख अच्छा मिलता है। तीसवे वर्ष घोडे और वाहन प्राप्त होते है। दूधदही खूब होता है। चतुर्थेश बलवान हो तो घोडे, पालकी, सोने के आसन आदि वैभव प्राप्त होता है। वही पापग्रह युक्त हो अथवा पापग्रह की राशि में, शत्रुराशि में या नीच में दुर्बल हो तो खेती, वाहन आदि नही होते। माता को कष्ट होता है। एकाधिक स्त्रियों का उपभोग करता है।

हमारे विचार--शास्त्रकारों ने इस स्थान में सभी शुभ फल बतलाये हैं। इनका अनुभव पुरुष राशियों में अच्छा आता है। अशुभ फलों का वर्णन किसी ने नही किया है।

हमारा अनुभव--यह शुक्र पुरुष राशि में हो तो माता का सुख कम मिलता है। माता जीवित रही तो हमेशा बीमार रहती है। इसे पैतृक संपत्ति मिलती है किन्तु चैनबाजी से या बडे व्यवसाय की उलझन में वह संपत्ति नष्ट होती है। फिर अपनी मेहनत से काफी धन प्राप्त करते है। २२ वें वर्ष से स्थिरता प्राप्त होती है। स्त्रियों से अच्छी मदद मिलती है। नौकरी करते हों तो भी ये अन्य धन्धे भी करते है। यंह शुक्र स्त्रीराशि में हो तो पिता का सुख कम मिलता है। यह बहुत कंजूस होता है। मीठा बोलकर अपना काम कर लेता है। अपना स्वार्थ हो तो ही दूसरों के काम में मदद करता हैं। ३२ वें वर्ष तक स्थिरता नही मिलती। कुछ समय नौकरी, कुछ समय व्यवसाय ऐसा परिवर्तन करके अन्त में व्यापार में यश प्राप्त करते है। पुरुष राशि में यह शुक्र हो तो स्त्री सुन्दर और आकर्षक होती है। स्त्री राशि में हो तो साधारण स्त्री होती है। वृषभ और तुला में हो तो बहुत ही साधारण या कुरूप पत्नी प्राप्त होती है। इसका रहनसहन बहुत सादा होता है। वृषभ, कन्या, मकर तथा मीन राशियों में यह शुक्र हो तो द्विभार्यायोग होता है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में हो तो घरबार नही होता। इस स्थान का साधारण फल यह है कि विवाह के बाद भाग्योदय होता है। अपना घरबार होता है। आयु का अन्तिम भाग अच्छा जाता है। किन्तु उस समय स्त्री के आधीन रहना

पड़ता है। बड़े लोगों से स्नेह होता है। उनसे मदद भी मिलती है। प्रथम पुत्र सन्तति होती है। तृतीय के शुक्र से हमेशा स्त्री का चिन्तन होता है वैसे ही चतुर्थ के शुक्र से हमेशा पैसे की चिन्ता होती है। आयु के २४-२६ और ३६ वें वर्ष में शारीरिक कष्ट बहुत होता है। तीसरे या छठे वर्ष में घर में किसी ज्येष्ठ व्यक्ति का मृत्यु होता है। माता या पिता में से एक का मृत्यु बचपन में होता है। जो जीवित रहे उसका सुख ४५ वें वर्ष तक मिलता है।

पंचमस्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर—सुखयुतः प्रतिमास्थितेः। सुखी होता है।

कल्याणवर्मा—सुखसुतमित्रोपचितं रतिपरमतिधनमखण्डितं शुक्रः। कुरुते पंचमराशौ मन्त्रिणमथ दण्डनेतारम् ॥ यह सुखी, पुत्र तथा मित्रों से युक्त, कामुक, धनवान तथा मन्त्री या सेनापति पद प्राप्त करनेवाला होता है।

वसिष्ठ—पुत्रबहुलं। बहुत पुत्र होते है।

वैद्यनाथ—सत्पुत्रधनवानतिरूपशाली सेनातुरंगपतिरात्मजगे च शुक्रे। उत्तम पुत्र और मित्र होते है। यह धनवान, बहुत सुन्दर और सेनापति या अश्वदल का मुख्य होता है।

गर्ग—सुतसुखविविधोपचितं परमधनं पंडितं शुक्रः। कुरुते पंचमराशौ मन्त्रिणमथ दण्डनेतारम् ॥ इस में प्रायः कल्याणवर्मा के समान वर्णन है। सिर्फ पण्डित होना इतना अधिक फल बतलाया है।

बृहद्यवनजातक—सकलकाव्यकलाभिरलंकृतः तनयवाहनधान्यसमन्वितः नरपतेर्गुरुगौरवभाक् नरो भृगुसुते सुतसद्मनि संस्थिते ॥ कविता तथा कलाओं में कुशल, पुत्र, धनधान्य तथा वाहनों से संपन्न और राजाद्वारा सन्मानित ऐसा यह व्यक्ति होता है। उशना शरवर्षलक्ष्मीम्—पांचवें वर्ष में धन प्राप्त होता है। यही वर्णन **ढुंढिराज** ने भी दिया है।

आर्यग्रन्थकार—तनयमंदिरगे भृगुनन्दने भृगुसुतो दुहितावरपूजितः। बहुधनो गुणवान् वरनायको भवति चापि विलासवतीप्रियः ।। इसे पुत्र कम और कन्याएं अधिक होती है । अतः दामादों का सत्कार करते रहना पडता है । यह धनी, गुणवान, प्रमुख तथा विलासिनी स्त्रियों को प्रिय होता है ।

गौरीजातक—लग्नात् पंचमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् बहुकन्यासमायुक्तो धनवान् कीर्तिवर्जितः ।। यह धनी किन्तु कीर्तिरहित होता है । इसे कन्याएं बहुत होती है ।

नारायणभट्ट—सुपुत्रेपि किं यस्य शुक्रो न पुत्रे प्रयासेन किं यत्नसंपादितोऽर्थः । व्युदकं विना मन्त्रमिष्टाशनाभ्यां अधित्वेन किं चेत् कवित्वेन शक्तिः ।। अच्छे पुत्र होते है । विशेष प्रयास न करते हो धन मिलता है । मन्त्र और मिष्टान्न प्राप्त होते है । कविता करने की शक्ति अच्छी होती है।

जयदेव—नानागमी भूरिधनात्मजः सुखी समानदानः सुतगे भृगोः सुते । यह विविध शास्त्रों का अभ्यास करनेवाला, धनवान, सुखी, बहुत पुत्रों से युक्त, सम्मानित तथा दानी होता है ।

काशीनाथ—सुते शुक्रे समृद्धश्च सुरूपोऽपि सदा नरः । पुत्रकन्यापौत्रयुतः सुभगोपि भवेन्नरः ।। यह संपन्न सुन्दर तथा लडके–लडकियों और पोतों से युक्त होता है ।

जागेश्वर—यदा पंचमे भार्गवः सौभगः स्यात् परं विद्यया काव्यकल्पः सकल्पः । परं पंडितैर्लिख्यते यत्तदुक्तं सुतै राजमान्यैः प्रतापी भवेद् वा । यह धनवान, विद्वान, कवि, लेखक होता है । इसके पुत्र राजाद्वारा सन्मानित होते है । प्रतापी होता है ।

मंत्रेश्वर—अखंडितधनं नृपं सुमतिमात्मजं सात्मजं । यह सदा धनवान, राजा के समान वैभवयुक्त, सद्विचारी तथा पुत्रों से युक्त होता है।

जीवनाथ—नारायणभट्ट के समान वर्णन दिया है ।

हरिवंश—स्वलंकृतः सुविद्यया सुकाव्यकौशले पुमान् सुराजमन्त्रवित् सखा सुधर्मकर्मसंग्रही । सुरूपवान् सदोन्नतः सुभाग्यभोगभूषणैः सुताधिको भवेद् भृगोः सुते सुतालयं गते ।। यह विद्वान, कवि, राजनीतिज्ञ, उत्तम

मित्र, धार्मिक, क्रियाशील, सुन्दर, भाग्यवान, उपभोग और अलंकार प्राप्त करनेवाला तथा बहुत पुत्रों से युक्त होता है।

लखनऊ के नबाब—दानीश्वरो मनुष्यः सुतधनधान्यैश्च संकुलो यस्य। जोहरा पंचमखाने भवति यदा हि महीपतेः प्रीतिः ।। यह उदार, धनवान, पुत्रों से युक्त तथा राजा का प्रिय व्यक्ति होता है।

घोलप—यह सत्पुरुषों की सेवा करता है। राजा जैसा वैभवशाली, सुखी, गुणवान, बुद्धिमान, सभा में श्रेष्ठ, शत्रुरहित, अपने देश में हीं धन प्राप्त करनेवाला तथा स्त्रीपुत्र और वाहनादि से सुशोभित होता हैं।

गोपाल रत्नाकर—यह बुद्धिमान, मन्त्रिपद प्राप्त करनेवाला, सेनापति, बुद्धिमान तथा विद्वान होता है। माता को अरिष्ट उत्पन्न होता है। पुत्र होते है।

हिल्लाजातक—पंचमः पंचमे वर्षे पितृलाभकरो भृगुः। यह पांचवें वर्ष पिता को लाभदायी होता है।

पाश्चात्य मत—यह वैभवशाली तथा स्त्रियों में बहुत आसक्त होता है। इसे पुत्रों से कन्याएं अधिक होती है। साहसी, विद्याभिलाषी और विजयी होता है। मन समाधानी रहता है बहुत हर्ष या बहुत खेद इसे नही होता। व्यवहारी और संसारसुख प्राप्त करनेवाला होता है। नाटक–सिनेमा देखने का बहुत शौक होता है। सन्तति विपुल होती हैं। पुत्र सुन्दर, आज्ञाधारक और मां बाप को प्रसन्न रखनेवाले होते है। इस स्थान में शुक्र बलवान हो तो सट्टा, लॉटरी, जुंआ आदि में आकस्मिक लाभ होता है। पहला पुत्र (या कन्या) बहुत सुन्दर और ललितकलाओं का अभ्यासक होता है। इस शुक्र से नाटक–सिनेमा आदि से लाभ होता है। शनि या मंगल से यह शुक्र पीडित हो तो अशुभ फल देता है।

भृगुसूत्र—कवित्वे मतिः। मन्त्री, सेनापतिः। मातृसेवकः। काव्यशक्तियौवनदारपुत्रवान्। प्रगल्भमतिमान्। राजसन्मानी। सुज्ञः। स्त्रीप्रसन्नतावृद्धिः। लौकिको न्यायवृत्तिः। तत्र पापयुते पापक्षेत्रे अरिनीचगे बुद्धिजाड्ययुतः। पुत्रनाशः। तत्र शुभयुते बुद्धिमान् नीतिमान्। पुत्रप्राप्तिः

वाहनयोगः ।। यह मन्त्री या सेनापति होता है। कवि, प्रौढ बुद्धि का, माता की सेवा करनेवाला, सुज्ञ, राजा द्वारा सन्मानित, तरुण स्त्री तथा पुत्रों से युक्त होता है। स्त्री हमेशा प्रसन्न रहती है। यह कीर्तिमान, न्यायी होता है। पापग्रह के साथ, पापग्रह की राशि में, शत्रु राशि में या बीच में हो तो बुद्धि जड होती है तथा पुत्रों का नाश होता है। शुभग्रह साथ हो तो बुद्धिमान, नीतिमान, पुत्रों से युक्त तथा वाहनों से समृद्ध होता है।

हमारा अनुभव--इस स्थान में सभी लेखकों ने शुक्र के शुभ फल बतलाये है। किन्तु हमें कई बार अशुभ फलों का भी अनुभव मिला है। यह शुक्र पुरुष राशि में हो तो पुत्रसन्तति होती है। कन्या एक ही होती है और वह भी कई पुत्रों के बाद होती है अथवा होती ही नही। मेष, सिंह तथा धनु में यह शुक्र हो तो शिक्षा कम होने पर भी वे लोग विद्वान माने जाते हैं। चैन की प्रवृत्ति होने से पैसा बचता नही। नाटक या सिनेमा में नट के रूप में प्रसिद्ध होते है। ३६ वें वर्ष तक इन्हें स्थिरता नही मिलती। यें बहुत कामुक होते है। अतः अपनी पत्नी पर प्रेम होते हुए भी अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखते है। सन्तति के लिए इन्हे इतनी फिक्र नही होती। मिथुन, तुला तथा कुम्भ में यह शुक्र हो तो शिक्षा पूरी होकर बी. ए; एम्. ए. आदि उपाधियां प्राप्त होती है। ये अति कामुक और विद्वान होते है। शिक्षक, प्राध्यापक, लेखक होते है। इन्हें सन्तति नही होती। ग्रन्थों के कारण कीर्ति मिलती है। इन्हें किसी बुद्धिमान, सुशिक्षित स्त्री मित्र की बहुत चाह होती है। वह नही मिली तो उदास भाव से रहते है। इस योग मे स्त्रियों को मासिक स्राव सम्बन्धी कष्ट होता है। स्राव कमजादा होना, दर्द होना, स्राव बन्द होना, प्रदर आदि विकार होते है। बन्ध्या होना भी सम्भव है। कर्क वृश्चिक, मीन एवं वृषभ, कन्या तथा मकर राशियों में यह शुक्र हो तो बी. एस् सी., एम्. बी. बी. एस्. आदि विज्ञान की उपाधियां प्राप्त होती है। इन्हें कन्याएं अधिक होती है।पुत्र नही होते अथवा होकर जीवित नही रहते या बहुत वृद्ध आयु में पुत्र होता है। इन का अपनी पत्नी पर विशेष प्रेम या आसक्तिभाव

नहीं होता । हमसफर मुसाफिरों जैसा घर में व्यवहार करते है । ये अपने व्यवसाय में मग्न, अभिमानी, लोगों की ओर ध्यान न देनेवाले होते है । पंचम के शुक्र से २० वें वर्ष से ही अवैध स्त्रीसुख प्राप्त करने की इच्छा होती है । यह द्विभार्या योग भी होता है । स्त्रीराशि में यह शुक्र हो तो विवाह सफल होता है । पुरुषराशि में शुक्र हो तो स्त्रियों के बारे में सात्त्विक आदर और उदात्त प्रेम होता है । इन की सन्तति चैनी और अन्त में दरिद्री होती है । स्त्री राशि के शुक्र से स्त्री के बारे में विशेष आदर या प्रेम नही होता ।

षष्ठ स्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर—इन्हों ने गुरु के समान फल बतलाये है ।

कल्याणवर्मा—अधिकमनिष्टं स्त्रीणां प्रचुरामित्रं निराकृतं विभवैः । विक्लवमतीव नीचं कुरुते षष्ठे भृगोस्तनयः ।। इसे शत्रु बहुत होते है, धन नही होता । स्त्री के लिए अनिष्ट होता है । यह बहुत नीच और दुर्बल होता है ।

पराशर—पराजयम् । सदा पराभव होता है ।

वसिष्ठ—काव्यःमतिविहीनमनल्परोगं रिपोः साध्वसम् । यह बुद्धिहीन होता है । इसे बहुत रोग होते है तथा शत्रुओं से भय होता है ।

गर्ग—नीचास्तगामी रिपुमन्दिरस्थः करोति वैरं कलहागमं च । अन्यत्र शुक्रो रिपुदर्पहारी स्वर्क्षे तु षष्ठे हि सदातिसिद्धिः ।। इस स्थान में शुक्र अस्तंगत या नीच राशि में हो तो झगडे और वैर निर्माण होते है । अन्य राशि में हो तो शत्रुओं का पराभव होता है । वृषभ या तुला में हो तो सर्वदा सफलता मिलती है । भीरुः भूरिरिपुः स्त्रीणामनिष्टो विभवोप्सितः । विक्लवश्च भवेल्लग्नाद् भार्गवे रिपुराशिगे ।। यह डरपोक, बहुत शत्रुओं से युक्त, स्त्रियों को अप्रिय, धन का इच्छुक और दुर्बल होता है । भृगुः रिपुगेहे यदा भवेत् तदा भ्रातृस्वसॄणां च मातुलानां महासुखम् । कन्या-

पत्योऽथ मातुलः । दशाधिपस्तीक्ष्णकरः प्रतिष्ठः सहस्त्रनाथो रजनीकरश्च वक्रार्कजौ हीनदरौ सदैव दोषाणि चन्द्रेण समाः पतगाः ॥ इस स्थान में रवि दस दोष उत्पन्न करता है । चन्द्र तथा बुध, गुरु, शुक्र हजार दोष उत्पन्न करते है । मंगल और शनि दोषरहित होते है । इस स्थान में शुक्र हो तो भाईबहिने तथा मामा को सुख प्राप्त होता है । मामा को कन्याएं होती है ।

बृहद्यवनजातक—अभिमतो न भवेत् प्रमदाजने ननु मनोभवहीनतरो नरः । विकलताकलितः किल संभवे भृगुसुतेऽ रिगतेऽरिभयान्वितः ॥ शुक्रो भूयुगवत्सरे रिपुमृतिम् ॥ यह स्त्रियों को प्रिय नही होता । कामेच्छा कम होती हैं । दुर्बल, डरपोंक और शत्रुओ से युक्त होता है । आयु के ४१ वें वर्ष में शत्रुओं का नाश होता है ।

नारायणभट्ट—सदा दानवेज्ये सुधासिक्तशत्रुर्व्ययः शत्रुगे चोत्तमौ तौ भवेताम् । विपद्येत संपादितं चापि कृत्यं तपेन्मन्त्रतः पूज्यसौख्यं न धत्ते ॥ इस के शत्रु मीठा बोलनेवाले होते है । खर्च बहुत होता हैं । बना हुआ काम भी बिगडता है । इसे दूसरों की सलाह से क्रोध आता है । माता-पिता का सुख नही मिलता ।

वैद्यनाथ—शोकापवादसहितो भृगुजे रिपुस्थे । इसे शोक तथा निन्दा के अवसर बहुत आते है ।

मन्त्रेश्वर—विशत्रुमधनं क्षते युवतिदूषितं विक्लवम् । यह शत्रुरहित, निर्धन, दुर्बल तथा युवतियों द्वारा दूषित होता है ।

काशीनाथ—षष्ठे शुक्रे भवेद् दम्भी जाड्यहानिभयान्वितः । दुःसंगी कलही तातद्वेषी चैव सदा नरः ॥ यह ढोंगी, बुद्धिहीन, डरपोक, झगडालू, बुरी संगति में रहनेवाला, पिता से द्वेष करनेवाला तथा नुकसान सहनेवाला होता है ।

जागेश्वर—सदा गीतनृत्ये भवेच्चित्तवृत्तिः परं वैरिवृन्दस्य नाशो नराणां । सदातो भवेद् रोगयोगादिचिन्ता यदा शत्रुगोऽदेवपूज्यो न पूज्यः ॥ यह नाचगानों में आसक्त रहता हैं । शत्रुओं का नाश करता हैं । इसे सदा रोगों से चिन्तित रहना पडता है और सन्मान प्राप्त नही होता ।

आर्यग्रन्थ---भवति वै कुशलोद्भवपण्डितो रिपुगृहे भृगुजेऽस्तगते नरः। जयति वैरिबलं निजतुंगगे भृगुसुते सुखदे किल षष्ठगे ॥ यह शुक्र अस्तंगत हो तो वह कुशल, पण्डित तथा शत्रुओं को जीतनेवाला होता है। उच्च राशि में हो तो सब सुख मिलता है।

जयदेव--स्त्रीसौख्यहीनस्तनुरोगभाग् नरो विभूत्ययुक्तो मलिनः सितेऽरिगे ॥ इसे स्त्रीसुख और वैभव नही मिलता। यह मलिन और रोगी होता है।

पुंजराज---शत्रुस्थाने यदा शुक्रस्तदा मातृष्वसुः सुखम्। त्रयाणांच द्वयोर्वापि वक्तव्यं दैववेदिना ॥ इसे दो या तीन मौसियां होती है।

हरिवंश---अकामुकः सुकामिनीसुपौरुषेण वर्जितः कलिप्रियः कुकर्मकृद् भवेत् कुसंगसंरतः। रुजांगदुर्बलो जडोऽतिदंभलोभसंयुतः कुशंकया नरः सुरारिपेऽरिगेहगेऽकविः॥ इसे अच्छी स्त्री नही मिलती और कामेच्छा नही होती। यह दुर्बल, रोगी, झगडालू, बुरे काम करनेवाला, बुरी संगति में रहनेवाला, बुद्धिहीन, ढोंगी, लोभी और हमेशा शंकाओं से चिन्तित होता है।

लखनऊ के नवाब---यारो न कम सहबद बेदर्दो जाहिलो जातः। खलु जोहरा वै दुश्मनखाने बेदिलो भवति ॥ इसे मित्र नही होते। यह अभिमानी, निर्दय, मूर्ख और निरोगी होता है।

घोलप---यह निर्भय, दुराचारी तथा हमेशा रोगों से पीडित होता है। दुष्टो की संगति से और अपने दुर्गुणों से भी राजदरबार में अवकृपा हो कर यह निर्धन होता है। इस के कुटुम्बीय कुटिल स्वभाव के होते है।

हिल्लाजातक---एकवेदमिते वर्षे षष्ठः शस्त्रमृतिप्रदः। इस का मृत्यु शस्त्रघात से ४१ वें वर्ष में होता है।

गोपालरत्नाकर---यह शत्रुओं का नाश कर अपनी जाति का हित करता है। परस्त्रीगमन करता है। पोते होने तक जीवित रहता है। स्त्री रोगी होती है।

पाश्चात्य मत--यह निरोगी होता है किन्तु अतिश्रम से स्वास्थ बिगडता है। इस के मित्र अच्छे होते है। यह नियमित नही होता। इसे सुख और वैभव अच्छा मिलता है। अपने नाम से स्वतन्त्र व्यवसाय में इसे अच्छा लाभ नही होता। नौकर के रूप में यशस्वी होता हैं। अच्छे नौकरों से इसे लाभ होता है। यह शुक्र शुभ सम्बन्ध में हो तो अच्छे कपडों की रुचि रहती है। नौकरी से और नौकरों से लाभ होता है। विवाह के बाद आहारविहार नियमित रखने से प्रकृति अच्छी रहती है। यही शुक्र अशुभ सम्बन्ध में हो तों अति विषयभोग से स्वास्थ्य गिरता है। जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग होते है। मूत्रपिण्ड के विकार, मेह, उपदंश आदि तथा गले के रोग होते है।

भृगुसूत्र--ज्ञातिप्रजासिद्धिः। शत्रुक्षयः। मदनः। नेत्रव्रणः। पुत्र-पौत्रवान्। अपात्रव्ययकारी। मायावादी रोगवान्। भावाधिपे बलयुते शत्रु-ज्ञातिवृद्धिः। शत्रुपापयुते नीचस्थे शत्रुज्ञातिनाशः॥ इस की जाति के लोग तथा सन्तति अच्छी होती है। शत्रु नष्ट होते है। कामुक होता है। आंख में जखम होती है। यह बच्चों और पोतों से युक्त होता है। अयोग्य बातों में खर्च करता है। कपटी, रोगी होता है। षष्ठेश बलवान हो तो शत्रु बढते है। वही शत्रु या पाप ग्रह की राशि में अथवा नीच में हो तो शत्रुओं का नाश होता है।

हमारे विचार--इस स्थान में शुक्र के फल कुछ लेखकों ने बहुत अच्छे और कुछ ने बहुत अशुभ बतलाये है। शुभ फल पुरुष राशि के और अशुभ फल स्त्री राशि के प्रतीत होते है।

हमारा अनुभव--यह शुक्र वृषभ, कन्या या मकर में हो तो पत्नी अच्छी मिलती है। झगडालू होने पर भी प्रेम से रहती है। उसे ३० वें वर्ष के बाद कुछ व्याधि होती है। कामुक होने पर भी ये लोग बाहर के मार्गो का अवलम्ब नही करते। इन्हें हमेशा कर्ज बना रहता है। एक कर्ज चुकाते चुकाते ही दूसरा तैयार हो जाता है। मृत्यु भी ऋणी स्थिति में ही होता है। इनकी कन्या विधवा होकर पिता के आश्रय मे रहती है। व्यवसाय में और सन्मान के बारे में जलदी प्रगति नही होती। पत्नी

गरीब परिवार की होती है। सन्तति कम होती है। अति खाने से रोग होते है। कर्क, वृश्चिक या मीन में यह शुक्र हो तो व्यभिचारी प्रवृत्ति होती है। दूसरा विवाह हो सकता है। यह शुक्र पुरुष राशि में हो तो पत्नी पुरुषी पद्धति की–सुन्दर, आवाज कुछ कर्कश और केश अधिक–इस प्रकार की होती है। स्त्री राशि के शुक्र से जनानी कोमलता से युक्त स्त्री मिलती है। किन्तु उसके विचार पुरुषों जैसे होते है। सन्तति कम होती हैं। व्यवसाय पर इस शुक्र का बहुत परिणाम होता है। अपनी पूंजी लगा कर किये गये व्यवसाय बिलकुल असफल होते हैं। शुक्र के कारकत्व के व्यवसायों में भी नुकसान ही होता है। बिना–पूंजी के धन्धे ही अच्छे हो सकते हैं। स्त्री राशि के शुक्र से मामा–मौसियों की स्थिति अच्छी नही होती। पुरुष राशि के शुक्र से सुख मिलता है। २८ वें वर्ष नुकसान होता है। ३६ वें वर्ष यां ४० वें वर्ष पत्नी की प्रकृति अस्वस्थ होती है।

---o---

सप्तम स्थान के शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर––प्रियकलहोऽस्तगते सुरतेप्सुः। कंदर्पगे कलहकृत् सुरताभिलाषी ॥ यह झगडालू और कामुक होता है।

कल्याणवर्मा––अतिरूपदारसौख्यं बहुविभवं कलहवर्जितं पुरुषं। जनयति सप्तमधामनि सौभाग्यसमन्वितं शुक्रः ॥ इस की पत्नी बहुत सुन्दर होती है। यह धनवान, भाग्यवान तथा झगडों से दूर रहनेवाला होता है।

वैद्यनाथ––वेश्यास्त्रीजनवल्लभश्च सुभगो व्यंगः सिते कामगे ॥ यह वेश्या तथा स्त्रियों को प्रिय, भाग्यवान किन्तु शरीर में कुछ व्यंग से युक्त होता हैं। शुक्रे मन्मथराशिगे बलवति स्त्रीणां बहूनां पतिः। यह शुक्र बलवान हो तो इसे बहुत स्त्रियां होती हैं। शुक्रे सौभाग्यसंयुक्ता श्रीमतीच बलान्विते। यह शुक्र बलवान हो तो पत्नी भाग्यवान और धनवान होती है।

गर्ग––युवतिमन्दिरगे भृगुजे नरो बहुसुतेन धनेन समन्वितः। विमलवंशभवप्रमदापतिर्भवति चारुवपुर्मुदितः सुखी ॥ यह पुत्रों तथा धन से युक्त

सुन्दर, आनन्दी तथा सुखी होता है। इस की स्त्री कुलीन होती है। शुक्रे यौवनाढ्या। गौरी सुरूपां स्फुटपंकजाक्षीं सितः शुभर्क्षे शुभदृष्टयुक्तः। भौमांशकगते शुक्रे भौमक्षेत्रगतेऽथवा। भौमेन युतदृष्टे वा पर स्त्रीभोग॰ मिच्छति॥ पत्नी तरुण होती है। यह शुक्र शुभ राशि में, शुभ ग्रह के साथ या दृष्टि में हो तो स्त्री बहुत सुन्दर, गोरे वर्ण की और कमलों जैसे, आंखोवाली होती है। यह शुक्र मंगल के साथ, दृष्टि में, नवांश में या मंगल की राशियों में हो तो परस्त्रीगमन की प्रवृत्ति होती हैं।

बृहद्यवनजातक— बहुकलाकुशलो जलकेलिकृद् रतिविलासविधान-विचक्षणः। अधिकृतां तु नटीं बहु मन्यते सुनयनाभवने भृगुनन्दने॥ यह कलाओं में कुशल, जलक्रीडा करनेवाला, काम क्रीडा में निपुण तथा किसी नटी पर प्रेम करनेवाला होता है। मनुके सितः स्त्री वर्षे। १४ वें वर्ष स्त्री प्राप्ति होती है।

वसिष्ठ—जनमनोहरा, सशोकम्। इस की स्त्री बहुत आकर्षक होती है। इसे शोक के प्रसंग बारबार आते है।

पराशर—सप्तमस्थ गुरु के समान फल बतलाये है।

वेंकटेश्वर—शुक्रे कलत्रे त्वतिकामुकः स्यात्। गर्भिणीसंगमो भगी। जलं। वाणिज्याद् विभवागमम्। यह बहुत कामुक होता है। गर्भवती से भी क्रीडा करता है। जलक्रीडा करता है। व्यापार से धनलाभ होता है।

जयदेव--कलिप्रियो गीतरुची रतिप्रियः श्रेष्ठोम्बुलीलाकुशलः सितेऽ-स्तगे। यह झगडालू, गायन तथा कामक्रीडा में आसक्त, जलक्रीडा में प्रवीण और श्रेष्ठ होता है।

मन्त्रेश्वर--सुभार्यमसतीरतं मृतकलत्रमाढ्यं मदे॥ इस की पत्नी अच्छी होती है किन्तु उस का मृत्यु जलदी होता है। यह धनवान और व्यभिचारी होता है।

काशीनाथ--सप्तमे भृगुपुत्रे स्याद् धनी दिव्यांगनायुतः। नीरोगः सुखसंपन्नो बहुभाग्यश्च जायते॥ यह धनवान, उत्तम स्त्रीसे युक्त, नीरोग, सुखी और बहुत भाग्यवान होता है।

नारायणभट्ट—कलत्रे कलत्रात् सुखं नो कलत्रात् कलत्रं तु शुक्रे भवेद् रत्नगर्भ। विलासाधिको गण्यते च प्रवासी प्रयासाल्पकः के न मुह्यन्ति तस्मात् ॥ इसे स्त्रीसुख अच्छा नही मिलता किन्तु पुत्र भाग्यवान होते है। यह बहुत विलासी, प्रवास करनेवाला, कम कष्ट करनेवाला और बहुत आकर्षक होता है।

जागेश्वर—भृगुर्गौरवर्णां वरिष्ठां। इस कीं स्त्री गौर वर्णकी और श्रेष्ठ होती है। कलत्रात् सुखं लभ्यते तेन पुंसा भवेत किन्नरः किन्नराणां च मध्ये। स्वयंकामिनी वै विदेशे रतिः स्याद् यदा शुक्रनामा गतः शुक्र-भूमौ। इसे स्त्रीसुख प्राप्त होता है। यह गायन में कुशल होता है। तथा परस्त्रियों में आसक्त होता है।

गौरीजातक—लग्नात् सप्तमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत्। पुरुषार्थ-विहीनः स्यात् शंकितश्च पदे पदे ॥ यह पुरुषार्थ नही कर पाता और सदा शंकायुक्त होता है।

लखनऊ के नबाब—साहेबदर्दः कुशलः सकलकलासु फारसो ना स्यात्। जोहरा हफ्तुमखाने स्त्रीगणचिन्तासु रंजको भवति ॥ यह दयालु, सब कलाओं में कुशल, चतुर और स्त्रियों के बारे में चिन्तातुर होता है।

हरिवंश—उदारबुद्धिमुज्वलांगमुन्नतिं कुलेऽधिकां नृपप्रतापमूर्जितं प्रसन्नतां प्रवीणतां। न रोगतां सुभोगतां करोति मानवस्य चेत् सुकामिनी सुखाधिकं भृगुः सुभामिनीगृहे ॥ इस की बुद्धि उदार, शरीर उज्वल, कुल उन्नत, तथा प्रताप राजा जैसा होता है। यह प्रसन्न, प्रवीण, निरोगी, उपभोगों से युक्त और अच्छी स्त्री से सुख प्राप्त करनेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह बहुत कामुक, परस्त्री में आसक्त, वैभवशाली और दुराचारी होता है। यह शुक्र शनि से युक्त हो तो इसकी स्त्री व्यभिचारी होती है।

घोलप—स्त्री, पुत्र, धन, बल, गुण आदि से यह सुखी होता है। गौर वर्ण का, सत्संगति में रहनेवाला, अजेय, देव गुरु तथा अतिथियों का सन्मान करनेवाला एवं धन का विशेष व्यय करनेवाला होता है। षड्वर्ग

कुण्डली में सप्तमेश शुक्र हो या सप्तम पर शुक्र की दृष्टि हो तो अनेक स्त्रियों का उपभोग करता है ।

हिल्लाजातक---स्त्रीलाभकृत् सप्तमगः । स्त्रीलाभ होता है ।

पाश्चात्य मत---इस स्थान में शुक्र निसर्गतः बलवान होता है । इस व्यक्ति का विवाह कम उम्र में ही सुन्दर और सद्‌गुणी युवती से होता है तथा विवाहसुख अच्छा मिलता है । विवाह के बाद भाग्योदय होकर धनलाभ विपुल होता हैं । इस शुक्र से साझीदारी में तथा कचहरियों के मामलों में सफलता मिलती है । गायन, नाटक आदि लोगों के मनोरंजन के साधनों से सम्बन्ध रहता है । सार्वजनिक स्वरूप के व्यवहारों में यह अच्छी सफलता प्राप्त करता है । इन व्यवहारों में झगडों की सम्भावना भी नही होती । इस व्यक्ति को स्त्री, पुत्र, मित्र, साझीदार आदि से अनुकूल व्यवहार प्राप्त होने से सुखी जीवन व्यतीत होता है । पुत्रों पर विशेष प्रेम होता है । यह शुक्र वृश्चिक या मकर में हो तो व्यभिचारी वृत्ति होती है । यह शुक्र दूषित हो तो विवाह देर से होकर स्त्रीसुख अच्छा नही मिलता । साझीदार तथा मित्रों से नुकसान होता है ।

भृगुसूत्र---अतिकामुकः भगचुंबकः । अर्थवान् । परदाररतः । वाहनवान् । सकलकार्यनिपुणः । स्त्रीद्वेषी । सत्प्रधानजनबन्धुकलत्रः । पापयुते शत्रुक्षेत्रे अरिनीचगे कलत्रनाशः, विवाहद्वयम् । बहुपापयुते अनेककलत्रान्तरप्राप्तिः । पुत्रहीनः । शुभयुते उच्चे वृषभे तूले कलत्रदेशें बहुवित्तवान् । कलत्रमूलेन बहुप्राबल्ययोगः । स्त्रीचिन्तकः ।। यह बहुत कामुक, परस्त्रियों में आसक्त, धनवान, वाहनों से युक्त, सब कामों में निपुण, स्त्रियों का द्वेष करनेवाला होता है । इस के सलाहगार, आप्त, स्त्री आदि अच्छे होते है । यह शुक्र पापग्रह के साथ, शत्रुग्रह की राशि में या नीच में हो तो पत्नी की मृत्यु होकर दूसरा विवाह होता है । बहुत पापग्रह साथ हो तो अनेक विवाह होते है । पुत्र नही होते । शुभग्रह के साथ, उच्च में या वृषभ अथवा तुला में यह शुक्र हो तो वह धनवान होता है । स्त्री के सम्बन्ध से इसे बहुत उन्नति प्राप्त होती है । स्त्री के ही विषय में वह बहुत चिन्ता करता है ।

हमारे विचार——इस स्थान में शुक्र निसर्गतः बलवान है क्यों कि नसर्गिक कुण्डली में यह सप्तमेश होता है। अतः इस स्थान में शुभ फल ही मिलने चाहिये। पुराणों में शुक्राचार्य को दैत्यों का गुरु तथा ज्ञानी कहा है। सप्तम की तुला राशि का स्वरूप भी ज्ञान एवं पौरुष का द्योतक है। इस स्थान में नारायणभट्ट एवं नबाब–लखनऊ को छोड अन्य लेखकों ने शुभ फल बतलाये हैं। इनका अनुभव पुरुष राशि में अच्छा मिलता है। अशुभ फल स्त्री राशि में मिलते हैं। नैसर्गिक कुण्डली में धन और सप्तम इन दोनों मारक स्थानों का स्वामी शुक्र है। अतः कुछ लेखकों ने इसके अशुभ फल बतलाये हैं।

हमारा अनुभव——यह शुक्र, मेष, मिथुन या तुला में हो तो स्त्री का सौन्दर्य पुरुष जैसा होता है। चेहरा कुछ लम्बा, आंखें तेजस्वी, ऊंचा कद, प्रमाणबद्ध शरीर, लम्बे और घने केश, आवाज हुकूमत से भरा हुआ–इस प्रकार रूप होता है। वह बुद्धिमान, संसार में दक्ष, कुटुंब में मिलजुल कर रहनेवाली, पति को प्रिय, कामुक, धैर्यशाली, आनन्दी, कलाओं में कुशल तथा सुशिक्षित होती है। पति पर अधिकार रखती है। इसे सन्तति कम होती है। पति की अति कामुकता से इसे शारीरिक विकृति से कष्ट होता है। सिंह या कुम्भ में यह शुक्र हो तो स्त्री शरीर से मोटी, गम्भीर चेहरे की, मंझले कद की होती है। आंखें मादक, नाक कुछ चपटा होता है। यह संसार में मग्न, बुद्धिमान होती है। पुरुष राशि में यह शुक्र हो तो स्त्री संसार में विशेष आसक्त नही होती। विपत्ति में घबडा जाती है किन्तु दैव की सहायता से किसी रुकावट के बिना व्यवहार चलते रहते हैं। धनु राशि में यह शुक्र हो तो स्त्री सुन्दर, ऊंचे कद की, प्रमाणबद्ध शरीर की होती है। उस की आंखें बहुत सुन्दर, वर्ण आकर्षक, केश लम्बे और घने होते है। यह बिपत्तियों में स्थिर रहती हैं। कामेच्छा कम होती है। रहनसहन व्यवस्थित होता है। इस का व्यवहार किसी वृद्ध स्त्री जैसा सोच समझकर चलता है। पति को योग्य सलाह देती हैं। किन्तु यह पति को विशेष प्रिय नही होती। कर्क, वृश्चिक या मीन में यह शुक्र हो तो दुबलापतला शरीर, ऊंचा कद, लम्बा चेहरा, तेजस्वी आंखे, लम्बे

तथा चमकीले केश, त्वचा कोमल तथा मनोहर इस प्रकार स्त्री का स्वरूप होता है। वह कुछ स्वार्थी, झगडालू, कुटुम्ब में मिलजुलकर न रहनेवाली, प्रपंच की विशेष फिक्र न करनेवाली तथा खर्चीली होती है। सत्ता अपने हाथ में रखने की कोशिश करती है। रहनसहन तथा बोलने में व्यवस्थित होती है। वृषभ, कन्या या मकर राशि में यह शुक्र हो तो स्त्री कुछ मोटी, नाटे कद की, गोल चेहरे की होती है। उस के केश थोडे किन्तु घने होते है। संसार में आसक्त, सत्ता की इच्छुक घर के सब काम सम्हालनेवाली, सब के साथ समान व्यवहार करनेवाली तथा रोगियों की सेवाशुश्रूषा करनेवाली होती है। स्त्री राशि के शुक्र से स्त्री के गुणों का पूर्ण विकास होता है। ये स्त्रियां विपत्ति में स्थिर और शान्त रहकर स्थिति सम्हालती है तथा प्रसंगावधानी होती है। कुछ उदाहरणों में हमने स्त्रीसुख का अभाव भी देखा है। अविवाहित रहना, पत्नी से विभक्त होना, दो विवाह होना ये इस शुक्र के अशुभ फल है। वृषभ, कर्क, वृश्चिक, मकर तथा मीन इन राशियों में इन का अनुभव आता है। पुरुष राशियों में मिथुन और धनु में यहीं अनुभव आता है। पुरुष राशि के शुक्र से कामुकता बहुत होती है। मेष, वृश्चिक, मकर तथा कुंभ में यह शुक्र विजातीय अथवा पति से अधिक आयु की पत्नी देता है। सिंह और मीन में यह शुक्र विवाह के बाद भाग्योदय कराता है। स्त्री जबतक जीवित हो तभी तक वैभव बना रहता है। पूर्वायुष्य में ४० वें वर्ष तक स्थिरता या सुख नही मिलता। उस के बाद एकदम प्रगति होती है। पुरुष राशि में यह शुक्र २१ से २६ वें वर्ष तक अथवा २८ से ३२ वे वर्ष तक विवाहयोग कराता है। हलके वर्गो में १८ से २२ तक भी होते है। शुक्रप्रधान व्यक्ति मुख्यतः स्वतन्त्र व्यवसाय में प्रवृत्त होते है। किन्तु स्त्री राशि में यह शुक्र नौकरी में भी यश देता है। इन्हें व्यवसाय और नौकरी दोनों में सफलता मिलती है। ये लोग उपव्यवसाय करते है। किन्तु साझीदारों के साथ धंधा करना इन्हें पसन्द नही होता। मेष, मिथुन, तुला, तथा धनु में गायन, वादन, अभिनय आदि क्षेत्रों में या लेखन, सम्पादन, मुद्रण, अध्यापन आदि में प्रवृत्ति होती है। अन्य राशियों में व्यापार करते है। प्रवृत्ति विलासी, रंगीली किन्तु स्त्री का सम्मान करनेवाली होती है। स्त्री को अपने से

हीन नही समझते । स्त्री राशि में इस के प्रतिकूल वृत्ति होती है। स्त्री कों तुच्छ तथा सिर्फ वासनापूर्ति का साधन मानते है।

अष्टम स्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर--इस स्थान में गुरु के समान ही अशुभ फल बतलाये है।

कल्याणवर्मा--दीर्घायुरनुपमसुखः शुक्रे निधनाश्रिते धनसमृद्धः। भवति पुमान् नृपतिसमः क्षणे क्षणे लब्धपरितोषः।। यह दीर्घायु, बहुत सुखी, धनवान तथा राजा के समान सर्वदा सन्तुष्ट होता है।

पराशर तथा वसिष्ठ--गुरु के समान फल बतलाये है।

गर्ग--अनृणं पितुराधत्ते तीर्थे मरणमेव च। नयेत् पितृकुलं पुण्यं रन्ध्रगो भृगुनन्दनः।। सूर्यादिभिर्निधनगैर्निधनं हुताशनौकायुधज्वरजमामयजं क्रमेण।। कफाच्चानिलात्। गुरुसितेन्दुसुता निधनेऽथवा स्थिरभगाः सततं बहुकष्टदाः।। यह पिता का ऋण चुकाता है तथा कुल की उन्नति करता है। इस का मृत्यु किसी तीर्थक्षेत्र में होता है। इस का मृत्यु वातकफ से या क्षुधा से होता है। यह शुक्र स्थिर राशि में हो तो सतत कष्ट होता है।

काश्यप--तृष्णातो मुखरोगाच्च दन्तदोषात् त्रिदोषतः। विषूच्या वनसत्त्वेन भुजंगात् विषभक्षणात्।। लूतया विषकण्ठेन सुरतोत्थप्रकोपतः। बहुदुःखाद् भवेन्मृत्युः मृत्युभावगते सिते।। यह शुक्र मेष में हो तो तृष्णा से, वृषभ में मुखरोग से, मिथुन में दन्तरोग से, कर्क मे त्रिदोष से, सिंह में विषूची से, कन्या में जंगली जानवर से, तुला में सांप से, वृश्चिक में विष खा कर, धनु में लूत से, मकर में विषप्रयोग से, कुम्भ में अति कामभोग से और मीन में अति दुःख के कारण मृत्यु होता है।

वैद्यनाथ--दीर्घायुः सर्वसौख्यातुलबलधनिको भार्गवे चाष्टमस्थे। यह दीर्घायु, बलवान, धनवान तथा सब तरह से सुखी होता है।

बृहद्यवनजातक--प्रसन्नमूर्तिर्नृपलब्धमानः सदा हि शंकारहितः सगर्वः। स्त्रीपुत्रचिन्तासहितः कदाचिन्नरोऽष्टमस्थानगते सिताख्ये।। यह दीखने में

सुन्दर, राजा द्वारा सन्मानित, निर्भय, गर्विष्ठ और कभी कभी स्त्रीपुत्रों की चिन्ता से युक्त होता है। सितो दशागमे स्वपराक्रमं च। दसवें वर्ष अपने पराक्रम से धनलाभ करता है।

आर्यग्रन्थ---निधनसद्मगते भृगुजे नरो विमलधर्मरतो नृपसेवकः। भवति मांसप्रियः पृथुलोचनो निध मेति चतुर्थवयेऽपि वा॥ यह राजा का सेवक, धार्मिक, बडी आंखोंवाला तथा मांसाहार की ओर रुचि रहनेवाला होता है। चौथे वर्ष में इस का मृत्यू होने की सम्भावना रहती है।

नारायणभट्ट---जनः क्षुद्रवादी चिरं चारु जीवेत् चतुष्पात्सुखं दैत्यपूज्यो ददाति। जनुष्यष्टमे कष्टसाध्यो जयार्थः पुनर्वर्धते दीयमानं धनर्णम्॥ यह दीर्घायु होता है। बोलना नीचों जैसा होता है। इसे चौपाये पशुओं की समृद्धि होती है। विजय मिलने में कष्ट होता है। ऋण कितना भी देने पर पूरा चुकाया नही जाता--सूद बढते जाता है।

जागेश्वर---नरो नीचवक्ता पशुयूथयुक्तो धनं वर्धते रोगकर्ता ग्रहः स्यात्। चिरंजीवते मृत्युगेहे च नूनं यदा चाष्टमे भार्गवः स्यात् तदानीम्॥ यह नीच बातें बोलनेवाला, पशुओं से युक्त, धनवान, रोगी किन्तु दीर्घायु होता है।

जयदेव--नीचः सकान्तो निधनः शठोऽभयः स्त्रीपुत्रचिन्तासहितोऽष्टमे भृगौ। यह नीच, निर्धन, दुष्ट, निडर और स्त्रीपुत्रों की चिन्ता से युक्त होता है।

मन्त्रेश्वर--- चिरायुषमिलाधिपं धनिनमष्टमे संस्थितः। यह दीर्घायु, धनवान और भुमि का स्वामी होता है।

काशीनाथ---अष्टमस्थे दैत्यपूज्ये सरोगः कलहप्रियः। वृथाटनी कार्यहीनो जनानां च प्रियो मतः॥ यह रोगी, झगडालू, बेकार, बिना काम के घूमनेवाला किन्तु लोगों में प्रिय होता है।

लखनऊ के नबाब---मगरूरो बदखुल्कः स्त्रीसौख्यैश्च वर्जितो मनुजः। हुस्तमुखाने जोहरा भवति वितृप्तं मनो न संग्रामे॥ यह उद्धत, बीभत्स बोलनेवाला और झगडालू होता है। इसे स्त्रीसुख नही मिलता।

लोलप—दुर्बुद्धि, दोषयुक्त और सब तरह से हानि सहनेवाला होता है। यह बुद्धिमान, धनवान और पण्डितों को आश्रय देनेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह अल्पायुषी, सुखी, ऐश्वर्यवान, प्रसिद्ध, दुराचरण में प्रवृत्त और मातृसुख से वंचित होता है।

हिल्लाजातक—शत्रुर्दिश्यष्टमः। सितोऽष्टयमके स्वपराक्रमं च॥ यह बहुत शत्रुओं से युक्त होता है। २० वें वर्ष से पराक्रम प्रदर्शित करता है।

पाश्चात्य मत—यह शुक्र बलवान हो तो विवाह से, सट्टे के व्यवहार में या वारिस के रूप में अच्छा धनलाभ होता है। स्त्रीधन प्राप्त होता है या किसी आप्त स्त्री की मृत्यु से धन प्राप्त होता है। मृत्युपत्र से या साक्षीदारी से लाभ होता है। यह शुक्र पीडित हो तो पत्नी (या पति) बहुत खर्चीली होती है। इस शुक्र से बीमे के व्यवहार में लाभ होता है। मृत्यु शान्त स्थिति में होता है। दुर्घटनाओं का भय इन्हें नही होता। यही शुक्र निर्बल हो तो बीमे की पूरी रकम नही मिलती। मूत्राशय के रोग होते है। ये लोग दूसरों के इस्टेट के ट्रस्टी के रूप में अच्छा धन प्राप्त करते है।

भृगुसूत्र—सुखी। चतुर्थवर्षे मातृगण्डः। मध्यायुः। रोगी। हितदारवान्। असन्तुष्टः। शुभयुते शुभक्षेत्रे पूर्णायुः। तत्र पापयुते अल्पायुः॥ यह सुखी, मध्यम आयुष्य का, रोगी, असन्तुष्ट होता है। इस के चौथे वर्ष में माता पर संकट आता है। इस की पत्नी हितकर होती है। शुभग्रह की राशि में या युति में हो तो पूर्ण आयु प्राप्त होती है। वही पापग्रह के साथ हो तो अल्प आयु होती है।

हमारे विचार—आठवां स्थान मृत्युस्थान है। यहाँ शुभग्रह हो तो आयु में थोडाबहुत सुख अवश्य मिलता है। मानसिक, आर्थिक, शारीरिक या स्त्रीविषयक सुखों में कोई एक सुख अच्छी मात्रा में मिलता है। इस स्थान में स्त्रीराशि या पुरुष राशि का भेद ज्ञात नही होता। काशीनाथ और लखनऊ के नवाब ने अशुभ फल बतलाये है उन का भी अनुभव आता है। यवनजातक में १० वें वर्ष पराक्रम का फल कहा वह शारीरिक

दृष्टि से सम्भव नही है। किन्तु, गायन, वादन आदि कलाओं में सफलता द्वारा इतनी छोटी आयु में प्रसिद्धि मिल सकती है। किन्तु यह शुभ फल लग्न, पंचम, सप्तम, नवम या एकादश स्थान का है। अष्टम स्थान में इस का अनुभव मिलना कठिन है।

हमारा अनुभव--इस स्थान में शुक्र हो तो वे व्यक्ति विद्वान और सदाचारी होते हैं। एक उदाहरण के रूप में पंडित मदन मोहन मालवीय की कुण्डली देखियें। जन्म मार्गशिर कृ. ८ शुक्रवार, शक १७८३ इष्ट घटी ३०-१६ ता. १५-१२-१८६१. आप स्वाभिमानी, विद्वान, सदाचारी,
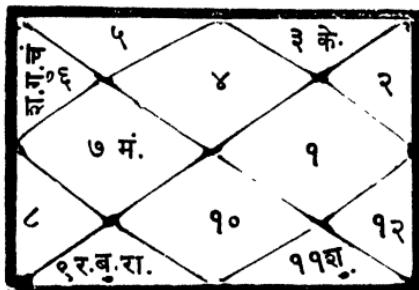
धार्मिक, ज्योतिष के ज्ञाता तथा प्रसिद्ध नेता हुए। बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय की स्थापना कर आपने अक्षय कीर्ति प्राप्त की। आप दीर्घायु, परोपकारी और प्रपंच में भी सफल हुये। मंगल के पीछे शनि होने से राष्ट्रकार्य में कारावास का योग प्राप्त हुआ।

इस शुक्र से पत्नी अभिमानी, विपत्तियों में धैर्य रखनेवाली, सुस्वभावी, घर की बातें बाहर न बतानेवाली, व्यवस्थित, मधुर बोलनेवाली होती है। मिथुन तथा वृश्चिक में यह शुक्र स्त्रीपुत्रों से कलह कराता है। स्त्री सुख नही मिलता। धन कम मिलता है। व्यवसाय ठीक नही चलता। अस्थि-रता बहुत होती है। वृषभ, कर्क और धनु में प्रकृति ठीक नही रहती। मधुमेह, प्रमेह, उपदंश आदि रोग होते है। व्यभिचारी प्रवृत्ति होती है। सिंह और मकर में पुत्र से झगडा होता है। सन्तति कम होती है। पत्नी से सुख नही मिलता। किन्तु परस्त्रियों से सुख और धन प्राप्त होता है। मेष और कन्या में विवाह के बाद भाग्योदय नष्ट होता है। आर्थिक संकट

आते हैं । व्यवसाय या नौकरी में सफलता नही मिलती । हमेशा ऋण बना रहता है । कुम्भ, मीन और तुला में प्रपंच ठीक चलता हैं । साधारणतः सुखी और धनवान होते है । परित्यक्ता या विधवा परस्त्रियों से स्नेह रखते है । कर्क, सिंह, और मीन में–शराबी होते है । वृश्चिक और कुम्भ में अफीमची होते है । यह शुक्र पूर्ण दूषित हो तो खुद को और पत्नी को गुप्त रोग होते है । १६ वें वर्ष से ही कामसुख चाहते है । अति विषयी होने से अनैसर्गिक सम्भोग करते है । मीन राशि में अष्टमस्थ शुक्र के फल बहुत अशुभ मिलते है । इन की पत्नी मर्दानी प्रकृति की, व्यभिचारी होती है । व्यवसाय मे नुकसान होता है । कारावास की नौबत आती है ।

नवम स्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर—गुरु के समान फल बतलायें है ।

कल्याणवर्मा—समभायततनुवित्तो दारयुवतिसुखसुहृज्जनोपेतः । भृगुतनये नवमस्थे सुरातिथिगुरुप्रसक्तः स्यात् ।। यह सुदृढ शरीर का, धनवान, स्त्री और मित्रों से युक्त तथा देव, गुरु एवं अतिथि का आदर करनेवाला होता है ।

वैद्यनाथ—विद्यावित्तकलत्रपुत्रविभवः शुक्रे शुभस्थे सति । यह विद्या, धन, स्त्री, पुत्र आदि से संपन्न होता है ।

गर्ग—भवति भाग्यविधिर्धनवल्लभो बहुगुणी द्विजभक्तिपरायणः । निजभुजार्जितभाग्यमहोत्सवे भवति धर्मगते भृगुनन्दने ।। यह भाग्यवान, धनवान, बहुत गुणों से युक्त, ब्राह्मणों का सम्मान करनेवाला और अपने परिश्रम से उन्नति करनेवाला होता है ।

बृहद्यवनजातक—अतिथिगुरुसूरार्चातीर्थयात्रोत्सवेषु पितृकृतधनसन्धात्यन्तसंजाततोषः । मुनिजनसमवेषो जातिमान्यः कृशश्च भवति नवमभावे संस्थिते भार्गवेऽस्मिन् ।। यह पिता से प्राप्त हुई सम्पत्ति का व्यय तीर्थयात्रा, उत्सव, देव, गुरु तथा अतिथियों का पूजन आदि में करता है ।

बहुत सन्तुष्ट, मुनि के समान सादे वेष में रहनेवाला, दुबला और अपनी जाति में माननीय होता है। सितोत्र लक्ष्मीं, पंचविंशति भृगुः लाभोदये संस्मृतः। १५ वें वर्ष धनलाभ होता है तथा २५ वें वर्ष भाग्योदय होता है।

वसिष्ठ—बृहद्वस्त्रलाभम्। अच्छे वस्त्रों की प्राप्ति होती है।

नारायण भट्ट—भृगोस्त्रिकोणे पुरे के न पौराः कुसीदेन ये वृद्धिरस्मै ददीरन्। गृहं ज्ञायते तस्य धर्मध्वजादेः सहोत्थादि सौख्यं शरीरे सुखं च॥ इस से सब लोग ऋण लेते है और ब्याज देते है। इस के घर में हमेशा धार्मिक कार्य चलते रहते है। भाइयों का सुख तथा शारीरिक सुख मिलता है।

काशीनाथ—धर्मे शुक्रे धर्मपूर्णो ज्ञानवृद्धः सुखी धनी। नरेन्द्रमान्यो विजयी नराणांच प्रियः सदा॥ यह धार्मिक, ज्ञानी, सुखी, धनवान, लोकप्रिय तथा राजा को भी माननीय होता है।

जयदेव—सकलसुकृतकर्मा पापहर्ता सतोषो विगतसकलरोषो धर्मगे भार्गवेऽस्मिन्॥ पापकार्य दूर कर के अच्छे कार्य करनेवाला, समाधानी और क्रोधरहित होता है।

मन्त्रेश्वर—सदारसुहृदात्मजं क्षितिपलब्धभाग्यं शुभे॥ यह स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त एवं राजा से भाग्योदय प्राप्त करनेवाला होता है।

लखनऊ के नवाब—नेकोकारः सुभगः खुसरो दानी च पानवो जोहरा। बख्तमकाने मुर्तजिनशरश्च मज्लसी भवति॥ यह सुन्दर आनन्दी, प्रामाणिक, दानी, धनवान, मानी स्वतन्त्रता से उपजीविका प्राप्त करनेवाला और सभाओं में सफल पण्डित होता है।

हरिवंश—सुखसमुन्नति कुले नृपप्रतापपूर्तिते सुकीर्तिमुज्वलं सुधर्मकर्मसंग्रहैः। सुविद्यया प्रवीणतां समृद्धवंशजाततां करोति भाग्यमव्ययं नरस्य भाग्यगो भृगुः॥ यह राजाकी कृपा से कुल की उन्नति करता है। सुखी, कीर्तिमान, धार्मिक कार्य करनेवाला विद्वान और धनवान होता है। इस का भाग्य कभी कम नही होता।

गोपाल रत्नाकर—यह धार्मिक अनुष्ठान करता है, बहुतों को नौकरी देता है, गुरु पर श्रद्धा रखता हैं तथा अपने काम में मग्न रहता है ।

घोलप—यह दानशूर, धार्मिक, पवित्र, बहुत मित्रों से युक्त पृथ्वी का स्वामी, पुत्रों से युक्त, गुणवान, स्त्रीसुख से युक्त होता है ।

हिल्लाजातक—नवादिगृहगः काव्यः धनसौख्यधनान्वितम् ।। नवम से व्यय तक के चार स्थानों में शुक्र हो तो वह धनवान और सुखी होता है ।

पाश्चात्य मत—यह प्रवासी, आनन्दी, सुस्वभावी, स्नेहल, धार्मिक, शुद्ध चित्त का, काव्यनाटकादि पढनेवाला, परोपकारी, विद्याव्यासंगी होता है । यह समुद्री प्रवास भी करता है । अलभ्य वस्तुओं की प्राप्ति के लिये कोशिश करता है । विवाह से होनेवाले आप्तों का साहाय्य इसे अच्छा मिलता है ।

भृगुसूत्र—धार्मिकः तपस्वी अनुष्ठानपरः । पादे बहुत्तमलक्षणः । धर्मी भोगवृद्धिः सुतदारवान् पितृदीर्घायुः । तत्र पापयुते पित्रारिष्टवान् । पापयुते पापक्षेत्रे अरिनीचगे धनहानिः गुरुदारगः । शुभयुते भाग्यवृद्धिः महाराजयोगः । वाहनकामेशयुते महाभाग्यवान् । अश्वान्दोल्यादिवाहनवान् । वस्त्रालंकारप्रियः ।। यह धार्मिक, तपस्वी तथा जपादिक कार्य करनेवाला होता है । इसके पांव पर अच्छे सामुद्रिक लक्षण होते है । उपभोग बहुत मिलते है । स्त्री पुत्रों से युक्त होता है । इस का पिता दीर्घायु होता है । पापग्रह साथ हो तो पिता पर संकट आता है । पापग्रह के साथ, उस की राशि में, शत्रुग्रह की राशि में या नीच में हो तो धनहानि होती है । गुरुपत्नी से व्यभिचार करता है । शुभग्रह साथ हो तो भाग्योदय होता है । अधिकारपद प्राप्त होता है । चतुर्थेश तथा सप्तमेश के साथ हो तो बहुत भाग्यवान होता है । घोडे, पालकी आदि वाहन प्राप्त करता है । विविध कपडे और आभूषणों का शौकीन होता है ।

हमारे विचार—प्राचीन लेखकों ने इस स्थान में शुक्र के फल प्रायः शुभ बतलाये है । इन का अनुभव मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशियों में मिलता है । जो थोडे अशुभ फल कहे है वे बाकी राशियों

के है । नारायणभट्ट ने ब्याज से रुपये देने का विशिष्ट फल कहा है । अप्राप्य वस्तु (जैसे तांबे का सोना करना, असाध्य रोगों की दवाइयां खोजना, स्त्री का पुरुष में परिवर्तन करना आदि) की खोज की ओर प्रवृत्ति होना कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशियों में ठीक प्रतीत होता है । अज्ञात ने पिता दीर्घायु होने का फल कहा किन्तु हमारे अनुभव में माता का दीर्घायु होना अधिक पाया है । पांव में शुभ लक्षण होने का नवमस्थान से अथवा शुक्र से कोई विशेष सम्बन्ध नही है। यवनजातक में १५ वें वर्ष धन प्राप्ति का फल कहा वह वारिस के रूप में ही मिल सकता है— अपने परिश्रम से नही।

हमारा अनुभव——इस स्थान में शुक्र पुरुष राशि में हो तो भाई अधिक और बहने कम होती है । तथा लडके कम और लडकियां अधिक होती है । पत्नी अच्छी होती है फिर भी इन की प्रवृत्ति कुछ व्यभिचारी होती है । स्त्री राशि में हो तो भाईबहनों और पुत्रों की स्थिति पुरुष राशि के समानही होती है । पत्नी साधारण होती है । उसी के साथ प्रेम-पूर्वक रहते है । मिथुन, धनु कर्क तथा मकर में विवाह के बाद भाग्योदय होता है । व्यवसाय के लिये स्त्रियों से पूंजी मिलती है । सन्मान मिलता है । किन्तु स्त्री की मृत्यू के बाद सब वैभव नष्ट होता है । कन्या और कुम्भ में सन्तति से भाग्योदय होता है । पहली कन्या हो तो वैभव स्थिर रहता है । पुत्र हो तो पहले अच्छी स्थिति प्राप्त हो कर बाद में अवनति होती है । मिथुन और वृश्चिक में मृत्यु वैभवशाली स्थिति में होता है । मेष, मिथुन, सिंह, तुला तथा धनु में पत्नी सुन्दर होती है । उस का भाल विशाल, आंखें बडी और तेजस्वी, प्रमाणबद्ध शरीर, चेहरा कुछ लम्बा, केश लम्बे, काले तथा चमकीले होते है । स्वभाव आनन्दी होता है तथा काव्यनाटकादि साहित्य की ओर रुचि होती है । यह संसार में बहुत आसक्त नही होती तथा सन्तति की भी विशेष इच्छा नही होती । कुछ उदासीन रहती है । इस स्थान में शुभ योग में शुक्र ललितकलाओं—गायन, वादन, साहित्यलेखन, सिनेमा आदि में निपुणता द्वारा कीर्ति देता है । अभिनय, और दिग्दर्शन में इन्हे स्वभावतः निपुणता प्राप्त होती है । इन्हें

२१ वें वर्ष से लाभ होता है और ३३ वें वर्ष में नुकसान होता है। कर्क, वृश्चिक और मीन में पत्नी गोरे वर्ण की, ऊंची, निर्भय, हावभाव के साथ बोलनेवाली, दूसरों पर प्रभाव डालनेवाली तथा घर में अपना ही स्वामित्व चाहनेवाली होती है। यह संसार में विशेष आसक्त नही होती। वृषभ, कन्या, मकर में चेहरा गोल, अभिमानी और क्रोधी स्वभाव होता है। इन की किसी से बनती नही। संसार में बहुत आसक्त और स्वार्थी प्रवृत्ति होती है। इस स्थान में शुक्र दूषित हो तो विजातीय अथवा आयु में अधिक या विधवा स्त्री से विवाह होता है। अथवा अनैतिक सम्बन्ध रहते है। इन की पढाई का जीवन में इन्हें कुछ उपयोग नही होता। यह स्त्री के अधीन हो कर मातापिता के विरोध में कार्य करता है। पैतृक सम्पत्ति नष्ट होती है। धन का संकट बना रहता है। बरताव व्यवस्थित होता है। राजनीति से दूर रहते है क्यों कि संकट से बहुत डरते है। बिना श्रम के सुखपूर्वक रहना चाहते है। स्त्रियों में ये अप्रिय होते है। मीन में तृतीयस्थान के समान फल मिलते है। अनैसर्गिक स्त्रीसम्बन्ध की रुचि होती है। रिश्ते में बडी स्त्रियों–जैसी फूफी, मौसी, मामी या मित्र की पत्नी से अनैतिक सम्बन्ध होता है। कभी कभी पत्नी के धन से ही उपजीविका करनी पडती है।

दशमस्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर––सधनः। यह धनवान होता है।

कल्याणवर्मा––उत्थानविवादजिताः सुखरतिभावार्थकीर्तयो यस्य। दशमस्थे भृगुतनये भवति पुमान् बहुमतिख्यातः॥ यह वादविवाद में अजेय, सुखी, विलासी, धनवान कीर्तिमान तथा बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध होता है।

वैद्यनाथ––शुक्रे कर्मस्थानगे कर्षकाच्च स्त्रीमूलात् वा लब्धवित्तो विभुः स्यात्। इसे किसानों या स्त्रियों से धन प्राप्त होता है। शुक्रचरकः यह संन्यासी होता है।

वसिष्ठ––यह शुक्र विपत्तिदायक है।

बृहद्यवनजातक——सौभाग्यसन्मानविराजमानः कान्तासुतप्रीतिरतीव नित्यं। भृगोः सुते राज्यगते नरः स्यात् स्नानार्चनध्यानविराजमानः॥ भृगुजोत्र सौख्यम्॥ यह भाग्यवान, सन्मानित तथा स्नान, ध्यान, पूजा आदि में मग्न होता है। यह स्त्रीपुत्रों पर बहुत प्रेम करता है। यह १२ वे वर्ष धन प्राप्त करता है।

आर्यग्रन्थ——दशममन्दिरगे भृगुवंशजे बधिरबन्धुयुतः स च भोगवान्। वनगतोऽपि च राज्यफलं लभेत् समरसुन्दरवेशसमन्वितः॥ यह कुछ बहरा, भाइयों से युक्त, भोगयुक्त तथा युद्ध के वेश में सुन्दर दीखता है। इसे जंगल में भी राज्य मिलता है—यह बहुत भाग्यवान होता है।

जयदेव—स्वजनैर्युतकलत्रप्रीतियुक्तः सवित्तः शुचितरवरचित्तः सन्मतिः कर्मसंस्थे॥ यह आप्तों से युक्त, पत्नी पर प्रेम करनेवाला, धनवान, पवित्र चित्त का और सदविचारी होता है।

मन्त्रेश्वर——नभस्यतियशःसुहृत्सुखितवृत्तियुक्तं प्रभुम्॥ यह कीर्तिमान् मित्रों से युक्त, व्यवसाय में सफल तथा प्रभावशाली होता है।

नारायणभट्ट——भृगुः कर्मगो गोत्रबीजं रुणद्धि क्षयार्थो भ्रमः किन्न आत्मीय एव। तुलामानतो हाटकं विप्रवृत्त्या जनाडम्बरैः प्रत्यहं वा विवादात्॥ यह पुत्रसन्तति के होने में विघ्न उत्पन्न करता है। सोनेचान्दी के व्यवहार मे यह धन प्राप्त करता है। लोगों से हमेशा विवाद करता है और अपने बारे में बहुत आडम्बर बतलाता है।

काशीनाथ——कर्मस्थिते भृगोः पुत्रे सुकर्मा निधिरत्नवान् राजसेवी धार्मिकश्च जायते दयिताप्रियः॥ यह अच्छे काम करनेवाला, रत्न तथा सम्पत्ति से युक्त, सरकारी नौकर, धार्मिक तथा स्त्री को प्रिय होता है।

हरिवंश——नृपप्रियं नरोत्तमं प्रभू सुभाग्यभूषितम् भवेत् सुयज्ञदानसंस्तुतं सुकीर्तिविस्तृतं। धनैः सुपूरितं शरीरसुन्दर मनोहरं सुकाव्यकर्मकौशलं करोति कर्मगः कविः॥ यह श्रेष्ठ पुरुष, प्रभावी, राजा को प्रिय, भाग्यवान, यज्ञदानादि कामों से प्रशंसनीय होनेवाला, कीर्तिमान, धनवान, सुन्दर, आकर्षक तथा कविता लिखने में निपुण होता है।

लखनऊ के नबाब—दर्शाको जरदारः पितृगुरुभक्तश्च काबिलो मनुजः। जोहरा शाहमकाने भवति मुशीरश्च साहबो वा स्यात् ॥ यह धैर्यवान, धनाढ्य, पिता तथा गुरु का भक्त, योग्य, राजा का मन्त्री या राजा ही होता है।

जागेश्वर—यदा कर्मगो भार्गवो वै नराणां भवेत् पुत्रसौख्यं तथा कामिनीनां। ध्रुवं वाहनानां सुखं राजमानं सदा सोत्सवो विद्यया वै विवेकी ॥ इसे स्त्री, पुत्र तथा वाहनों का सुख मिलता है। राजा द्वारा सन्मान मिलता है। विद्वान और विवेकी तथा हमेशा उत्सवों में भाग लेने वाला होता है।

घोलप—यह किसी प्रसिद्ध पिता का पुत्र होता है। सुशोभित, शत्रु-रहित, सुन्दर घर से युक्त, स्त्री पुत्रादि से युक्त तथा वाहनों का स्वामी होता है। इसके मनोरथ पूर्ण होंते है।

गोपाल रत्नाकर—यह पिता और देवों का आदर करता है। संपत्ति और वाहनों से समृद्ध होता है। इसे बडा भाई नही होता और शिक्षा अधूरी रहती है।

पाश्चात्य मत—यह शुक्र शुभ सम्बन्ध में हो तो सब तरह से ऐश्वर्य देता है। नौकरी, व्यवसाय, सन्मान, इज्जत, कीर्ति आदि के लिये यह शुक्र शुभ होता है। जीवन सुखी होता है। स्वभाव शान्त और मिलनसार रहता है। इन्हें झगडे बिलकुल नही सुहाते। स्त्री से इन्हें अच्छा लाभ और सन्मान प्राप्त होता है। प्रसिद्ध या श्रीमान कुल की तरुणी से विवार होता है। विवाह से भाग्योदय और धनलाभ होता है। गायन, वादन, साहित्यरचना, चित्रकारी आदि कलाओं में रुचि होती है। इन कलाओं से सम्बद्ध व्यवसाव करता है। सम्पत्तिका कष्ट सहसा नही होता नैतिक आचरण अच्छा होता है। दशमस्थ शुक्र पीडित या अशुभ सम्बन्ध में हो तो स्वैराचारी वृत्ति से अपमान होता है। वृषभ, तुला और मीन में इस शुक्र से बहुत अच्छे फल मिलते है। जन्मस्थ चन्द्र से शुभ योग हो तो आर्थिक और कौटुम्बिक सुख अच्छा मिलता है। यह नीतिमान और

विजयी होता है। दूरदूर के प्रदेशों में प्रवास करता है। रवि और चन्द्र की शुभ दृष्टि हो तो कई उपाधियां मिलती है। यह किसी को शरण जाना स्वीकार नही करता। गुणवान और धनवान होता है। अभिजित नक्षत्र जिस प्रकार सर्वविजय बतलाता है वैसे ही दशमस्थ शुक्र सर्वोन्नति कराता है।

भृगुसूत्र—बहुप्रतापवान्। संकल्पसिद्धिः। शुभकर्मकारी। अनेकवाहनवान्। मणिगोरौप्यचयः। पापयुते कर्मविघ्नकरः। गुरुचन्द्रबुधयुते अनेकवाहनारोहणवान्। अनेकक्रतुसिद्धिः। दिगन्तविश्रुतकीर्तिः। अनेकराजयोगः। बहुभाग्यवान्। वाचालः। सधनसुशीलदारवान्॥ यह बहुत प्रतापी और अच्छे काम करनेवाला होता है। इसके संकल्प पूर्ण होते है। वाहन, रत्न, गायबैल और चान्दी से यह सम्पन्न होता है। पापग्रह साथ हो तो कामों में विघ्न आते है। गुरुचन्द्र या बुध साथ हो तो कई वाहन मिलते है। कई यज्ञ करता है। बहुत कीर्ति प्राप्त होती है। अधिकारपद प्राप्त होते है। भाग्यवान, धनी और सुशील स्त्री से युक्त तथा बडबड करनेवाला होता है।

हमारे विचार—इस स्थान में वसिष्ठ और नारायणभट्ट के सिवाय अन्य सभी लेखकों ने शुक्र के शुभ फल बतलाये है। वसिष्ठ ने विपत्ति और नारायणभट्ट ने पुत्रसन्तति को प्रतिबन्ध होना ये फल कहे हैं। इन का अनुभव पुरुष राशियों में और क्वचित मीन में मिलता है। अन्य राशियों में शुभ फल ही मिलते हैं।

हमारा अनुभव—दशमस्थान में पुरुष राशि में शुक्र हो तो अविवाहित रहने की ओर प्रवृत्ति होती है। स्त्रीसम्बन्ध नही चाहते। धनार्जन शुरू होने पर ही विवाह का विचार करते है। स्त्री से सम्बन्ध अच्छे नही होते। सन्तति की चिन्ता रहती है। स्त्रीपुत्रों का सुख मिला तो व्यवसाय ठीक नही चलता। यह द्विभार्यायोग भी हो सकता है। यही फल मीन राशि में भी मिलते है। मां या पिता का मृत्यु बचपन में ही होता है। स्त्रीराशि में दशमस्थ शुक्र विवाह के बाद स्थिरता और भाग्योदय दर्शाता

है। एक दो पुत्र होतें है। इस स्थान में शुक्र होने से नौकरी पसन्द नही होती। व्यवसाय की ओर रुचि होती है। मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु तथा कुम्भ में–बी. एस्. सी., एम्. एस्. सी., बी. ई. इत्यादि विज्ञान की उपाधियां मिलती है। वनस्पतिशास्त्र, पुरातत्त्व, शुश्रूषा, चिकित्सा, दर्जीकाम आदि कामों में कुशलता प्राप्त होती है। गणित तथा ज्योतिष में भी प्रवीण हो सकते है। गायन, वादन, रेकाॅडिंग, सिनेमा व्यवसाय रसायन, भौतिक शास्त्र, फोटोग्राफी, मोटर ड्रायव्हिंग आदि व्यवसाय भी होते है। स्त्री राशि के शुक्र से व्यापार या नौकरी में प्रगति होती है। इस शुक्र से व्यक्ति उदार, मिलनसार, लोकप्रिय किन्तु किसी व्यसन के आधीन होती है। पैसा बहुत मिलता है किन्तु संचय नही हो सकता। संकट आते है। आलसी स्वभाव होता है। यह शुक्र दूषित हो तो स्त्रियों के सम्बन्ध से बेइज्जत होती है। परस्त्रियों के आधीन हो कर धन खर्च करते है। मंगल से शुभ योग हो तो शीलवान होते है। पुरुष राशि में दशमस्थ शुक्र पिता का सुख नही देता। शुक्र के कारकत्व के व्यवसायों में यश नही मिलता। सभी धन्धे करना चाहते है किन्तु एक भी सफल नही होता। अब दशमस्थ शुक्र के दो उदाहरण देखिये। प्रो. विश्वनाथ बलवंत नाईक–जन्म माघ कृ. २ शुक्रवार शक १८०१ ता. २७–२–१८८० इष्ट घटी ६–१६।
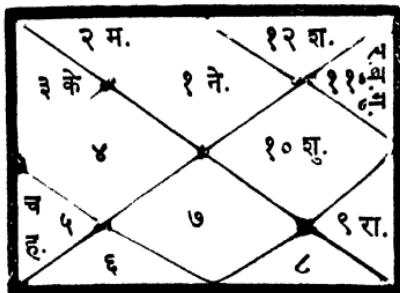
आप फर्ग्युसन काॅलेज, पूना में गणित के प्राध्यापक थे तथा गणित-ज्योतिष के अच्छे विद्वान थे।

दूसरा उदाहरण–पंडित गौरीशंकर मिश्र–जन्म ता. ३–२–१८९७ इष्ट घटी १९–३५ स्थान बालापुर (जिला अकोला)।
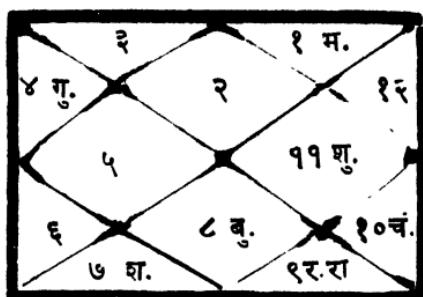
आप नागपुर हायकोर्ट में रेकार्ड-कीपर थे और अच्छे ज्योतिषी थे। फल बतलाने की आपकी शैली बहुत अच्छी थी।

एकादश स्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर—गुरु के समान फल बतलाया है।

कल्याणवर्मा—प्रतिरूपदासभृत्यं बव्हायं सर्वशोकसंत्यक्तं ॥ जनयति भवभवनगतो भृगुतनयः सर्वदा पुरुषं ॥ वेश्यास्त्रीसंयोगैर्गमनागमनैर्धनं भवति पुंसां। आये सितेऽपि चैव मुक्तारजतादिभूयिष्ठं ॥ यह सुन्दर, नौकरचाकरों से युक्त, शोकरहित होता है। इसे अच्छी आय होती है। इसे वेश्याओं के सम्बन्ध से और घूमने फिरने के व्यवसायों से (जैसे सेलिंग एजेन्ट आदि) काफी धन मिलता है। नगरपुरवृन्दयोगैः स्थावरकर्म-क्रियाभिरपि वित्तम् ॥ गांव या शहर के सम्बन्ध से और इमारते बनवाने के कामों से इसे धनलाभ होता है।

वैद्यनाथ—लाभस्थे भृगुजे सुखी परवधूलोलोऽटनो वित्तवान्। यह सुखी, परस्त्री में आसक्त, प्रवासी और धनवान होता है। शुक्रः स्त्रीजन-काव्यनाटक कलासंगीतविद्यादिभिः। इसे स्त्रियों से, कविता, नाटक संगीत आदि कलाओं से धनलाभ होता है।

वसिष्ठ—शुक्रः करोति सुगुणं धनाप्ति। यह गुणवान और धनी होता है।

गर्ग--स्त्रीरत्नवररत्नाढ्यो स्वस्थशोकविवर्जितः । सम्पन्नधनभृत्यश्च मर्त्यो लाभगते सिते ॥ यह उत्तम स्त्री और रत्नों से युक्त, शोकरहित, धनवान तथा नौकरों से युक्त होता है ।

बृहद्यवनजातक--सद्गीतनृत्यादिरतो नितान्तं नित्यं च वित्तागमनानि नूनं । सत्कर्मधर्मागमचित्तवृत्तिः भृगोः सुतो लाभगतो यदि स्यात् ॥ यह गायन नृत्य आदि कलाओं का शौकीन, धार्मिक, सदाचारी, धनवान तथा शास्त्रानुकूल काम करनेवाला होता है । इनाब्दे शुक्रः करोति धनं । यह १२ वें वर्ष धनलाभ कराता है ।

ढुंढिराज--प्रायः यवनजातक का उद्धरण दिया है । चिन्तागमनानि--प्रवास और चिन्ता होना यह अधिक बतलाया है ।

आर्यग्रन्थ--भवभावगते भृगुनन्दने वरगुणावहितोप्यनलैर्युतः । मदन-तुल्यवपुः सुखभाजनं भवति हास्यरतिः प्रियदर्शनः ॥ यह सुन्दर, सद्गुणी, अग्निपूजक, सुखी और हंसमुख होता है ।

जयदेव--बहुधनागमवान् सुमतिः पुमान् नटनगीतविदायगते सिते । यह धनवान, बुद्धिमान तथा नृत्यगीत का ज्ञाता होता है ।

काशीनाथ--लाभे शुक्रे सदालाभो यशःसत्यगुणान्वितः । धनी भोगी क्रियाशुद्धो जायते मानवोत्तमः ॥ यह मानव श्रेष्ठ, सदाचारी, धनवान, उपभोग प्राप्त करनेवाला, कीर्तिमान, सच बोलनेवाला तथा सदा लाभयुक्त होता है ।

जागेश्वर--सदा गीतनृत्यं धनं तस्य गेहे सुकर्मी सुधर्मागमे तस्य चित्तं । दृढं विद्यया ईश्वरे तस्य चित्तं यदा भार्गवो लाभभावं प्रयातः ॥ इस के घर में हमेशा नाचगाना चलता है । यह धनवान, धार्मिक और सदाचारी तथा ईश्वरभक्त होता है ।

नारायणभट्ट--भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्नात् सुरूपं महीपं च कुर्याच्च सम्यक् । लसत्कीर्तिसत्यानुरक्तं गुणाढ्यं महाभोगमैश्वर्ययुक्तं सुशीलं ॥ यह लाभयुक्त, सुन्दर, कीर्तिमान, सत्यप्रिय, गुणी, वैभवशाली, शीलवान, उपभोग प्राप्त करनेवाला तथा राजा (बडा अधिकारी) होता है ।

मन्त्रेश्वर—धनाढ्यमितरांगनारतमनेकसौख्यं भवे ।। यह धनवान्, सुखी, परस्त्री में आसक्त होता है ।

लखनऊ के नवाब—जरदारं महबूबं सिरदारं बामुरौवतं मनुजं याफ्तिमकाने जोहरा मईशं पुरुदनं कुरुते ।। यह धनवान, श्रेष्ठ, सरदार, लोगों की फिक्र न करनेवाला, तेजस्वी, शीलवान तथा राजा जैसा प्रभावी होता है ।

हरिवंश—सुसौख्यबाहुलं सुवित्तवाहनादिबाहुलं सभृत्यबाहुलं कुटुम्ब-बाहुलं नरस्य च । सुभाग्यबाहुलं सुभोगभूषणादिबाहुलं सुलाभदो नृपात् करोति लाभगो भृगुः ।। यह बहुत सुखी, भाग्यवान तथा राजा द्वारा सन्मानित होता है । इसे धन, वाहन, नौकर, कुटुम्ब, उपभोग, आभूषण आदि विपुल मात्रा में मिलते है ।

घोलप—यह अनेक मित्रों से युक्त, पुत्रयुक्त, सत्संगति में रहनेवाला, बलवान, शत्रुरहित, लोकप्रिय, गीत तथा नृत्य का शौकीन होता है ।

गोपालरत्नाकर–यह विद्वान, श्रीमान, भूमि का स्वामी तथा सन्मान-युक्त होता है ।

पाश्चात्य मत–यह अच्छे मित्रों की मदद से प्रगति करता है । व्यापार में सफल हो कर धन प्राप्त करता हैं । विवाह से भी धनलाभ होता है । स्त्रियों के आश्रय से भाग्योदय होता है । आकांक्षाये पुरी होती है । पुत्र बहुत होते है । मित्रों के परिवारों से विवाह सम्बन्ध होते हैं । यह शुक्र दूषित या निर्बल नही होना चाहिये । यह मंगल, शनि, हर्षल या नेपच्यून से युक्त हो तो अशुभ फल मिलते हैं । रवि से शुभयोग हो तो स्त्रियों से, चन्द्र से शुभ योग हो तो मनोरंजक खेलों से, मंगल से हो तो आकस्मिक प्रेम से, बुध से हो तो चालाक लोगों से, गुरु से हो तो मित्रों से अच्छा लाभ होता है । शनि के सम्बन्ध से शोकमय स्थिति पैदा होती है ।

भृगुसूत्र—विद्वान्, बहुधनवान्, भूमिलाभवान्, दयावान् । शुभयुते अनेकवाहनयोगः कनकसमृद्धिः दिव्यकायासुकान्तिः । पापयुते पापमूलात् धनलाभः । शुभयुते शुभमूलात् । नीचर्क्षे पापरन्ध्रेशादियोगे लाभहीनः ।।

यह विद्वान, बहुत धनवान, भूमि प्राप्त करनेवाला, दयालु होता है। शुभ ग्रहों के साथ हो तो शरीर बहुत कान्तिमान होता है तथा बहुत वाहन और विपुल सुवर्ण प्राप्त होता है। पापग्रहों से युक्त हो तो बुरे कामों से और शुभ ग्रहों से युक्त हो तो अच्छे कामों से लाभ होता है। नीच में, पापग्रह के साथ या अष्टमेश से युक्त हो तो लाभ नही होता।

हमारे विचार--इस स्थान में सभी लेखकों ने शुभ फल बतलाये हैं क्योंकि सभी ग्रहों के लिये एकादश स्थान अच्छा माना गया है।

हमारा अनुभव--यह शुक्र पुरुष राशि में हो तो पुत्र कम होते है-कन्याएँ अधिक होती है। मेष, सिह, तथा धनु में पुत्र नही होते या होकर मर जाते है। बडे भाई का खर्च उठाना पडता है। धन बहुत मिलता है किन्तु खर्च भी बहुत होता है। व्यापार या नौकरी व्यवस्थित रहती है। स्त्रीराशियों में पुत्र अधिक और कन्याएँ कम होती है। इन का आचरण दूषित होता है। पतित स्त्रियों से सम्बन्ध होता है। कंजूस होते है। इन के बारे में तरह तरह की अफवाहें फैलती है। स्वार्थी, मित्रता की फिक्र न करनेवाले होते है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में सन्तति नही होती अथवा सिर्फ कन्याएँ होती है। द्विभार्यायोग हो सकता है। हीन वर्गो में २२ वें वर्ष से और उच्च वर्गो में ३२ वें वर्ष से भाग्योदय होता है। अस्थिरता, अति अभिमान, शीलभ्रष्टता ये फल होते है।

---o---

व्यय स्थान में शुक्र के फल

आचार्य व गुणाकर--गुरु के समान फल बतलाते हैं-यह दुर्जन होता है। झषे द्रविणी स्यात्। यह मीन राशि में हो तो धनवान होता है।

कल्याणवर्मा-अलसं सुखिनं स्थूलं पतितमष्टाशिनं भगोस्तनयः शयनोपचारकुशलं द्वादशगः स्त्रीजितं जनयेत्॥ यह आलसी, सुखी, मोटा, दुराचारी, बहुत खानेवाला, स्त्री के अधीन और कामक्रीडा में कुशल होता है।

वसिष्ठ--शुक्रो बहुव्ययकरः व्याधिकरः। खर्च बहुत होता है तथा रोग होते है।

गर्ग—श्रद्धाहीनो घृणाहीनः परदाररतः सदा । व्ययस्थानगते शुक्रे रोगार्तः स्थूलदेहकः ।। यह श्रद्धाहीन, निर्दय, व्यभिचारी, रोगी तथा मोटा होता है ।

बृहद्यवनजातक—सन्त्यक्तसत्कर्मविधिर्विरोधी मनोभवाराधनमानसश्च । दयालुता सत्यविवर्जितः स्यात् काव्ये प्रसूते व्ययभावयाते ।। यह अच्छे काम बिलकुल नही करता । कामुक और निर्दय तथा झूठ बोलनेवाला होता है । शुक्रो धनं द्वादशे । यह १२ वें वर्ष धन देता है ।

वैद्यनाथ—शुक्रे बन्धुविनाशकोन्त्यगृहगे जारोपचारोऽधनी । यह आप्तों का नाश करनेवाला, व्यभिचारी तथा निर्धन होता है ।

आर्यग्रन्थ—निजमते व्ययवर्तिनि भार्गवे भवति रोगयुतः प्रथमं नरः। तदनु दम्भपरायणचेतनः कृशबलो मलिनः सहितः सदा ।। यह बचपन में रोगी रहता है । दाम्भिक, दुर्बल और मलिन होता है ।

काशीनाथ—व्यये शुक्रे व्ययाढ्यश्च गुरुमित्रविरोधवान् । मिथ्यावादी बन्धुवर्गे गुणहीनोऽपिजायते ।। यह खर्चीला, मित्रों और बडों से झगडनेवाला झूठ बोलनेवाला और गुणहीन होता है ।

मन्त्रेश्वर—भृगुर्जनयति व्यये सरतिसौख्यवित्तद्युतिम् । यह धनवान, तेजस्वी तथा स्त्रीसुख से युक्त होता है ।

जयदेव—गतसुकर्मक्रियः स्मरचेष्टितः कलिरुचिः सधनो व्ययगे भृगौ । यह दुराचारी, कामुक, झगडालू और धनवान होता है ।

जागेश्वर—स्वयं सत्यहीनो दयानाशपीनः प्रपंची भवेत् कामवार्तावरिष्ठः । त्यजेत् सत्क्रियां पापवार्तागरिष्ठः कुशीलः कुलीलो व्यये शुक्रनामा ।। यह झूठा, निर्दय, संसारी, कामुक, पापी, दुराचारी होता है ।

हरिवंश—स्वमानवेषु शत्रुतां तथा परेषु मित्रतां तथा दयाविहीनता तथा शरीरदीनतां । मलिनतां कुकर्मतां कठोरतामसत्यतां भृगुर्व्ययाढ्यतां करोति व्ययालयं गतः ।। यह आप्तों को शत्रु बनाता है तथा शत्रुपक्ष से प्रेम करता है । यह निर्दय, दुर्बल, मलिन, दुराचारी, कठोर, झूठा और खर्चीला होता है ।

नारायणभट्ट--कदाप्येति वित्तं विलीयेत पित्तं सितो द्वादशे केलिसत्कर्मशर्मा। गुणानांच कीर्तः क्षयं मित्रवैरं जनानां विरोधं सदाऽसौकरोति। कभी धन मिलने से चित्त शान्त होता है। यह कामक्रीडा में कुशल, गुणहीन, कीर्तिहीन, झगडालू और मित्रों से भी वैर करनेवाला होता है।

लखनऊ के नबाब-खर्वो बदकारः कमसहश्च मानवो मुदितः। स्याद् बदअक्लो जातो जोहरा खर्चमकाने हि गुस्वरो भवति॥ यह खर्चीला, दुष्कर्मों में धन खर्च करनेवाला, बेअकली और क्रोधी होता है।

हिल्लाजातक--भृगुसुतोऽर्कमितेऽक्षिपीडां। यह १२ वें वर्ष में आँख में पीडा निर्माण करता है।

घोलप--यह बहुत क्रूर, दूसरों के घर रहनेवाला, दुष्टों के आश्रय से दुःख भोगनेवाला होता है। स्त्रीपुत्रों को यह सुख नही दे सकता। गाँव में और बाहर भी दुख सहता है। बहुत कामुक और द्वेषी होता है।

गोपाल रत्नाकर--यह ऐश्वर्यवान, कामुक और कंजूस होता है। नेत्ररोग से पीडित और उन रोगों का चिकित्सक होता है।

पाश्चात्य मत--इस का विवाह जलदी होता है। यह व्यभिचारी होता है। गुप्त रीति से विषयसुख प्राप्त करना चाहता है। शुभग्रह से सम्बन्ध हो तो ये सम्बन्ध गुप्त रहते है। किन्तु शनि, मंगल, हर्षल या नेपच्यून से अशुभ सम्बन्ध हो तो दुष्कीर्ति और संसारसुख का नाश होता है। कई बार विवाहिता स्त्री को छोडकर रखैल के साथ रहते है। वृश्चिक, मकर, कन्या, कर्क तथा मेष में यह शुक्र अशुभ होता है। यह पीडित शुक्र स्त्रियों को शत्रुता और उस से धनहानि का फल देता है। इस स्थान में बलवान शुक्र पशुपालन की रुचि और उस से लाभ बतलाता है। इस शुक्र पर शनि की अशुभ दृष्टि हो तो पत्नी की मृत्यु, स्त्रीवियोग, तलाक देना आदि प्रकारों से स्त्रीसुख नष्ट होता है। चन्द्र और मंगल का शुभ सम्बन्ध हो तो इस का व्यभिचार गुप्त रहता है। यह चन्द्र १२ वें स्थान में हो तो व्यभिचारी प्रवृत्ति बहुत तीव्र होती है। यह शुक्र पीडित होने से ठगों द्वारा बहुत नुकसान होता हैं।

भृगुसूत्र—बहुदारिद्र्यवान् । पापयुते विषयलोभपरः । शुभयुक्तश्चेद् बहुधनवान् । शय्यामंचकादिसौख्यवान् । शुभलोकप्राप्तिः । पापयुते नरकप्राप्तिः ॥ यह बहुत दरिद्री होता है । पापग्रह के साथ हो तो विषयी होता है । इसे मृत्यु के बाद नरक प्राप्त होता है । शुभग्रह के साथ हो तो धनवान, शय्या आदि सुख से युक्त होता है तथा मृत्यु के बाद अच्छी गति प्राप्त करता है ।

हमारे विचार—इस स्थान में शुक्र के फल प्रायः सभी लेखकों ने अशुभ बतलाये है । यह ग्रह किसी न किसी अशुभ स्थान का स्वामी होता है । मेष लग्न हो तो धनेश और सप्तमेश (मारक स्थानों का स्वामी), वृषभ लग्न में लग्नेश और षष्ठेश, मिथुन लग्न में पंचमेश व व्ययेश, कर्क में लाभेश, सिंह में तृतीयेश, कन्या में धनेश, तुला में लग्नेश व अष्टमेश, वृश्चिक में सप्तमेश व व्ययेश तथा धनु लग्न में लाभेश व षष्ठेश होता है । मकर और कुम्भ लग्न के लिये सिर्फ यह राजयोगकारक है । मीन लग्न में भी अष्टमेश और तृतीयेश अर्थात अशुभ ही है । यवनजातक १२ वें वर्ष में नेत्ररोग होना कहा है और हिल्लाजातक में इसी वर्ष धनलाभ बतलाया है यह चिन्तनीय है ।

हमारा अनुभव—इस स्थान में मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो स्त्री झगडालू होती है । मिथुन, तुला, कुम्भ में सुन्दर और आकर्षक पत्नी होती है । नौकरी में सफलता मिलती है किन्तु इच्छा स्वतन्त्र व्यवसाय की ओर रहती है । इसलिये अस्थिरता रहती है । धनलाभ साधारण होता हैं । नैतिक आचरण अच्छा होता है । स्त्री मित्र का प्रेम चाहते है किन्तु उस के योग्य नही होते । कवि, लेखक, चित्रकार, गायक, नर्तक फोटोग्राफर आदि कलाकार हो सकते है । स्त्री राशि में—कामुकता अधिक होती है और व्यभिचारी प्रवृत्ति होती है । दो विवाह होते है । वैसे ये लोग भाग्यवान होते है । इस स्थान में स्त्री के साथ कलह होना यह फल मुख्यतः मिलता है । शनि से दूषित हो तो इस शुक्र से विजातीय स्त्री से विवाह होता है । अथवा अविवाहित रहते है । अवैध सम्बन्ध निभाने की कोशिश करते है । आर्थिक स्थिति साधारण होती है । ऋण बना रहता है । सिर्फ मृत्यु के समय ऋणरहित होते है ।

प्रकरण छठवाँ

महादशा विवेचन

शुक्र की महादशा २० वर्ष की होती है। भरणी, पूर्वा तथा पूर्वाषाढा जन्मनक्षत्र हो तो पहले बीस वर्षों में यह दशा होती है। अश्विनी, मघा तथा मूल नक्षत्रों में ८ वें से २८ वें बर्ष तक होती है। आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों में २५ वें वर्ष से ४५ वें वर्ष तक होती है। पुष्य, अनुराधा तथा उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रों में ४३ वें वर्ष से ६३ वें वर्ष तक होती है। पुनर्वसु, विशाखा तथा पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रों में ५९ वें से ७९ वें वर्ष तक होती है।

पहले २० वर्षो की महादशा में शुक्र १, ३, ५, ९, ११ इन स्थानों में शुभ स्थिति में हो तो शिक्षा पूर्ण मिलती है और उपजीविका जलदी प्रारम्भ होती है। पिता की प्रगति होतो है। शुक्र दूषित हो तो शिक्षा में विघ्न आते है। पिता की प्रगति नही होती, मां को शारीरिक कष्ट होता है। स्वयं हमेशा बीमार रहता है। बचपन में ही बहुत प्रवास करना पडता है। २, ४, ६, ७, ८, १०, १२ इन स्थानों में शुक्र हो तो माता की मृत्यु होना, शिक्षा न होना, उद्धत बरताव होना, पिता को आर्थिक कष्ट होना ये अशुभ फल मिलते है। हलके वर्गो में व्यवसाय बहुत जलदी शुरू करना पडता है और विवाह भी कम उम्र में होता है।

८ वें से २८ वें वर्ष तक की महादशा में—लग्नादि शुभ स्थानों में शुक्र हो तो शिक्षा पूर्ण होती है, द्रव्यार्जन की कोशिश शुरू होती है, पिता की मृत्यु होती है। विवाह जलदी नही होता। माता का सुख भी नही मिलता। द्विभार्यायोग हो सकता है। भाई या बहिन की मृत्यु होती है। ३६ वें वर्ष तक स्थिरता नही मिलती। द्वितीयादि अशुभ स्थानों में शुक्र हो तो शिक्षा अधूरी रहती है। दशा पूरी होने तक स्थिरता नही मिलती। विवाह जलदी होकर स्त्रीसुख अच्छा मिलता हैं। सन्तति बहुत होती है। अच्छे काम करने से लोगों का स्नेह प्राप्त होता है।

उत्तर आयु में शुक्र की दशा सब तरह से सुखदायी होती है।

महादशागणित के अष्टोत्तरी तथा विंशोत्तरी ये दो प्रकार है। अधिकतर शास्त्रकारों ने विंशोत्तरी महादशा का स्वीकार किया है। इस विषय में लेखकों के मत इस प्रकार है—

भैरवदत्त—दशा विंशोत्तरी चात्र ग्राह्या नाष्टोत्तरी स्मृता।

मानसागरी—दशाप्यष्टोत्तरी शुक्ले कृष्णे विंशोत्तरी मता। गणनीया दशा सुज्ञैस्तदुमेश्वर संमतम्॥ कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि। विंशोत्तरी दशा तस्य शुभाशुभफलप्रदा॥ शुक्ल पक्ष मे जन्म हो तो अष्टोत्तरी और कृष्णपक्ष में हो तो विंशोत्तरी दशा देखना चाहिए। कृष्ण-पक्ष में दिन में और शुक्लपक्ष में रात्रि में जन्म हो तो विंशोत्तरी दशा देखना चाहिये।

तीसरा मत—गूर्जरे कच्छसौराष्ट्रे पांचाले सिन्धुपर्वते। एतेष्वष्टोत्तरी श्रेष्ठान्यत्र विंशोत्तरी स्मृता॥ गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ, सिन्ध तथा पांचाल (उत्तरप्रदेश) में अष्टोत्तरी दशा और अन्यत्र विंशोत्तरी दशा देखना चाहिये।

चौथा मत—दशा विंशोत्तरी नृणां स्त्रीणामष्टोत्तरी मता। श्रुति-प्रमाणं तत्रैव नान्यथा फलसम्भवः॥ पुरुषों के फल वर्णन में विंशोत्तरी तथा स्त्रियों के फलवर्णन में अष्टोत्तरी दशा का प्रयोग करना चाहिये।

जातकविनोद—मरुभुवनभवानी पद्धतिः प्रेक्षणीया कलियुग इह काले सा च विंशोत्तरी स्यात्। मरुदेश की भवानी देवी का मत है कि कलियुग में विंशोत्तरी दशा अच्छी है।

जीवनाथ—कृत्तिकादिस्त्रिरावृत्या दशा विंशोत्तरी मता। अष्टोत्तरी न संग्राह्या मारकार्थविचक्षणैः॥ कृत्तिकादि तीन तीन नक्षत्रों के लिये विंशोत्तरी दशा का प्रयोग करना चाहिए। मारक समय जाननेवालों ने अष्टोत्तरी दशा का गणित नही करना चाहिए। हमारे अनुभव में हमने विंशोत्तरी दशा का ही फल देखा है।

महादशा का फल देखते समय जन्मकुंडली में शुक्र किस स्थान में हैं यह देखकर तदनुसार फल बतलाना चाहिये। इसी तरह नैसर्गिक कुंडली में शुक्र धन और सप्तम स्थान का स्वामी है। उन स्थानों के फल भी देखने चाहिये।

प्रकरण सातवा

शुक्र कुंडली

शुक्र ग्रह के स्वरूपवर्णन में बतलाया है कि यह स्त्री का प्रतिनिधि ग्रह है। अतः पति की कुंडली प्राप्त हो और पत्नी की कुंडली नही हो तो पति की कुंडली में शुक्र के स्थान को लग्न मान कर पत्नी की कुंडली बना कर उस के फल देख सकते है। उदाहरण स्वरूप दशमस्थान के वर्णन में जो कुण्डली दी थी उस की शुक्र कुण्डली इस प्रकार बनायेंगे--

इस कुण्डली का स्थूल वर्णन इस प्रकार करेंगे।

लग्नस्थान--इस में मीन यह स्त्री राशि है। यह कष्ट और चिन्ता बतलाती है। स्त्रीयों के लिये स्त्रीराशि और पुरुषों के लिये पुरुष राशि का लग्न कष्टदायी होता है। स्वभाव दक्ष, प्रेमपूर्ण, उदार, आनन्दी, हंसमुख, खर्चीला तथा संसार में आसक्त होता है। चेहरा गोल, कद साधारण ऊंचा तथा शरीर हट्टाकट्टा होता है।

धनस्थान–धनेश मंगल तृतीय में है। अतः पैतृक इस्टेट नही मिलेगी।

तृतीयस्थान---इस स्थान में वृषभ राशिका मंगल है। यह भाई और बहनों का सुख नही मिलेगा।

चतुर्थस्थान---चतुर्थेश बुध दशम में है अतः मातृसुख जल्दी नष्ट होगा। पति अपने परिश्रम से ४८ वें वर्ष तक घरबार प्राप्त करेंगे। वृद्धायु में सुख मिलेगा।

पंचमस्थान---यहां कर्क यह जलराशि है तथा पंचमेश चन्द्र व्यय में है अतः पुत्र नही होता, हुआ तो मृत होता हैं, पुत्र के लिये बहुत चिन्ता रहती है। यथा–सुतसन्तापसंयुक्तो विदेशगमनो भवेन्मनुजः। सुतेशे षष्ठ-रि:फस्थे पुत्रः शत्रुत्वमाप्नुयात् मृत्युतो ग्राह्यपुत्रो वा धनपुत्रोथवा भवेत।

षष्ठस्थान---षष्ठेश रवि लाभस्थान में है अतः पशु, धन, गुण, धैर्य, मान, साहस आदि प्राप्त होते है। पुत्र नही होता। यथा–षष्ठेशे सप्तमे लाभे लग्ने वा पशुमान् भवेत्। धनवान् गुणवान् मानी साहसी पुत्रवर्जितः॥ षष्ठ में गुरु है। यह अल्प पुत्र देनेवाला और वातव्याधि निर्माण करनेवाला है।

सप्तमस्थान---सप्तमेश दशम में है अतः पति पत्नी से एकनिष्ठ रहता है, धार्मिक और वातरोग से युक्त होता है। यह धनु राशि में है जो कानून की कारक राशि है। अतः कोर्ट से सम्बद्ध व्यवसाय है। यथा– द्यूनेशे दशमे तुर्ये एकपत्नीव्रतो भवेत्। धर्मात्मा तस्य संयुक्तः केवलं वातरोगवान॥

मृत्युस्थान---इस का स्वामी शुक्र लग्न में उच्च में है अतः पति के पहले और अच्छी स्थिति में मृत्यु होगी।

नवमस्थान---यहां वृश्चिक राशि है और नवमेश मंगल तृतीय में है। तथा इस स्थान में शनि है। इस के फलस्वरूप बहुत प्रौढ आयु में पुत्र होगा और देवादि की उपासना से वह जीवित रहेगा। यह शनि वंशक्षय नही करता।

दशमस्थान--यहां बुध है। पिता से माता की मृत्यु पहले होगी। विवाह के बाद पिता की अवनति होगी।

लाभस्थान--यहां मकर में रवि तथा राहु है। यह योग भी सन्तति को घातक है। पिता के दोष से सन्तति को कष्ट होता है। देवोपासना से यह कष्ट दूर होकर पुत्र जीवित रहता है और वृद्ध आयु सुखपूर्वक जाती हैं।

व्ययस्थान--व्ययेश शनि नवम में है। ये हमेशा व्रत, उद्यापनादि धर्मकार्य करते है। लोगों से सुख न मिलने से उदासीन रहते है। प्रवास बहुत होतें है।

इस प्रकार शुक्र कुण्डली से स्त्री का फलवर्णन हो सकता है।

---o---

प्रकरण आठवाँ

समारोप

मेरी पुस्तकें जब प्रकाशित हो गई तब अनेक स्थानोंपर यही विवाद होने लगा कि काटवेंजीने उच्च ग्रहों के अशुभ फल तथा निच ग्रहों के शुभ फल कथन कियें है। आज तक यह कल्पना किसीने भी जनता के सामने नही रखी थी तो फिर आचार्यों के खिलाफ इन्होंने कैसे कथन किया, अर्थात इनका कथन निरुपयोगी है--और काटवेजी का कथन अफलातून है--अत्युक्त है।

जब मैंने उपर्युक्त आरोपपर विचार किय। तब मैं जान गया कि ये सब बकवासी-संशोधन, करने में विचार करने में या किसी अनुभवी द्वारा विचार प्रसृत करने पर भी विचार करने में असमर्थ है। न वे स्वयं विचार करते है न संशोधन ! यदि शनि उच्च हो तो अशुभ फल देने में किस प्रकार समर्थ होता है--यह तत्त्वप्रदीपकार के शब्दों में देखिये--"स्वोच्चा नैव प्रशस्ता विमलफल हर: रंध्ररि:फारियुक्ता:।" उसी प्रकार लखनौ के नबाब का भी कथन है--यदा शत्रुखाने पडे उच्च का। करै खाक दौलत फिरै जा बे जा" कोई भी उच्च ग्रह षष्ठ अष्टम तथा व्यय स्थान में

उत्तम नही रहता । वह सब शुभ फल नष्ट किये देता है । नवाब का कथन है--यदि शत्रुस्थान में कोई भी ग्रह उच्च हो तो वह सब जायदाद का नाश करता है तथा उसे भ्रमण कराकर बेकार बनाता है । अब प्रत्येक लग्न के अनुसार सोचेंगे ।

मेष---सप्तम में शनि उच्च का रहता है । जातकचंद्रिकाकार का कथन है--" मंद सौम्य सिताः पापा "--यह शनि दशम तथा लाभ इन स्थानों का अधिपति बनता है । "मंदादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनोग्रहा ॥"

देशभक्त श्री. केशव गोविंद गोखले बी. ए. वकील शक १८१८ भाद्रपद शु॥ ८ सोमवार रात्री ८-३० जन्मस्थल शहापूर-बेळगांव मेष लग्न धनस्थान में मंगल-नेपच्यून, पंचम में रवि, गुरु-केतु, षष्ठ में बुध-शुक्र सप्तम में शनि हर्षल, नवम में चंद्र लाभस्थान में राहु । इनके हाथ से एक भी व्यवसाय न हो सका । न धन कमाया न मान । पत्नी एकही-संतति दो । दोनों के बीच में महत् अंतर पडा ।

वृषभ---षष्ठ में उच्च होता है । जातकचंद्रिकाकारके मत से यह राजयोग कारक होनेपर भी तत्त्वप्रदीपकार तथा नवाब साहब के मत से यह शुभ फल नाशक है ।

श्री. ज. भा. सामंत, शके १८१८ आश्विन शु॥ १२ ता. १८-९-१८९६ रात्रौ १०-४० जन्मस्थान अर्नाला-वसई के पास लग्न वृषभ लग्न में मंगल नेपच्यून । चतुर्थ में गुरु-पंचम में रवि, बुध-शुक्र-षष्ठ में तूल का शनि, भाग्य में चन्द्र, दशम में राहू यें रेल्वे में नौकर थे । कार्यालय में शत्रुता निर्माण होने से बुद्धि नष्ट होकर १९३० मे घर चले आये ।

मिथुन---पंचम में उच्च होता है । अष्टमेश होकर पंचम में यह योग अनिष्ठकारी होता है । नवमस्थान का अधिपति होकर भी इस योग का शुभ फल नही मिलता । परंतु अष्ठमेश काही फल दिया करता है । जातकचंद्रिकाकार के मत से-"शनिः साक्षाग्रहन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥ मारक लक्षणों से युक्त होकर भी शनि स्वयं मारक नही होता । परंतु यह शनि मारक होने का अनुभव देता है ।

एक " क्ष " जन्म शके १८१७ भाद्रपद व।। ७ बुधवार ता. १२-९-१८९७ रात्री १-१८ अक्षांश १५-२२ रेशांश ७४-३२ लग्न मिथुन धनस्थान में कर्क का गुरु, तृतीय में स्वगृह का रवि, चतुर्थ में स्वगृहका बुध-मंगल-शुक्र। पंचम में उच्चका शनि। भाग्य में राहु व्यय में चन्द्र जन्म उत्तम परिस्थिति में। अचानक किसी पराई इस्टेट का लाभ मिला है। विवाह एकही परंतु किसी पराई स्त्री के फेर में पडकर संपत्ति का नाश-अर्धशिक्षित तथा संततिहीन।

कर्क-चतुर्थ में उच्च होता है। जातकचंद्रिकाकार कहते है-" शुक्र मंद बुधाः पापाः।" कर्क लग्न को यह अशुभ फल देता है-कारण यह सप्तमेश तथा अष्टमेश इन दोनों मारक स्थानों का अधिपति बन जाता है।

एक क्ष--१२-६-१८९६ को प्रभात में ९ बजे जन्म, अक्षांश २०, रेखांश ७३-५० कर्कलग्न-लग्न में गुरु उच्च स्थान में। चतुर्थ में शनि-हर्षल उच्च। अष्टम में राहू, भाग्य में मंगल, लाभस्थान में रवि, शुक्र, बुध-नेपच्यून। व्ययस्थान मे चंद्र और चतुर्थ में शनि। मातृ-पितृ सुख मिला। परंपरागत जायजाद नष्ट हो गई। बाद में दत्तक बने। वहाँ की जायजाद भी नष्ट की। अंत में घरबार त्यागकर उत्तर की ओर प्रस्थान किया। किसी प्रकार पेट भरते है। स्त्री चल बसी। घरबार से वंचित हो गये।

सिंह--तृतीय में उच्च का आता है। जातक चंद्रिकाकार का कथन है--' मंद सौम्य सितः पापाः "। शनि यह अशुभ फल दाता है। कारण यह षष्ठेश तथा सप्तमेश बन जाता है। " शनिः साक्षान्नहन्तास्यान्मारकत्वेन लक्षितः।" शनि भलेही मारक लक्षणों से युक्त हो तथापि वह स्वयं मारक नही बनता।

एस. व्ही. गोखले ता. ५-३-१८९६ शाम को जन्म, इष्ट घटी ३२ जन्मस्थान मंगलवेढा-पंढरपूर के पास-लग्नसिंह-तृतीय में शनि, चतुर्थ में चंद्र, षष्ठ में मंगल, शुक्र, बुध, सप्तम में रवि, राहु। दशम में नेपच्यून और व्ययस्थान में गुरु। जन्म उत्तम परिस्थिति में। धन कमाया धन

खोया। अनेक नौकरियाँ की। अनेक धंदे किये। अंत में दरिद्री बने। तृतीय के शनि के फल स्वरुप-इन्होंने सब खो दिया। इनके बडे भैय्याने संपूर्ण जायजाद अपनी पत्नी के नाम चढवादी। जिससे इनके पल्ले कुछ नही पडा। न शिक्षा न धन-न स्थिरता। मिली केवल दरिद्रता।

कन्या-धनस्थान में उच्च का आता है-यह षष्ठ इस अशुभस्थान का अधिपति है। साथही यह पंचम त्रिकोण का अधिपति भी होता है। मेरे मत से यह अशुभ फलदाता होता है।

कृष्णराव पागे, नागपुर कोर्ट में लिपिक शक १८१७ वैशाख शु॥ ८ गुरवार, इष्ट घटी २३, लग्न कन्या, धनस्थान में उच्च शनि। षष्ठ में राहु, अष्टम में उच्च रवि तथा बुध भाग्य में, स्वगृह का चंद्र, व्ययस्थान में केतु, जन्म उच्च घराने में परंतु अनंतर परिवार उध्वस्त। वेतन केवल पचास रुपये। परंपरागत घर। इनको एक पुत्र था। सन १९३६ वैशाख महिने में जिस दीन इसका मौंजी बंधन हुआ उसी दिन तालाब में डूबकर इस लडके का देहान्त हुआ। आखीर इनका वंशान्त हो गया।

तूल---यह लग्न में उच्च बनता है। जातक चंद्रिकाकार का कथन-"शनैश्वर बुधो शुभी।" यह ग्रह उच्च राजयोगकारक होकर भी उसके उत्तम फल नही मिलते-अनुभव यही है।

तूल लग्न लग्न में शनि---इस प्रकार की एक पत्रिका गुरु-विचार पृष्ठ ६४ पर दी गई है। इस में लग्न में तूल में शनि होने का फल-हर कार्य में अपयश, वर्ण काला, नेत्र तिरछे, शरीर से बेढब होकर दृष्टि विषय-विषाक्त। (गुरु विचार देखिये।)

वृश्चिक---बुधशुक्रार्कतनयाः पापाः। जातक चंद्रिकाकार का यही कथन है---कारण व्ययस्थान में उच्च का आता है। यह तृतियेश तथा चतुर्थेश बन जाता है। साथही जातक तत्त्वप्रदीपकार का कथन है---इन दोनों मतानुसार यह अशुभ-फल निर्माण करता है।

स्व. शिवराम गणपत पवार-अध्यापक मुक्काम सडे जि. नगर जन्म १२-५-१८६६ रात्री. वृश्चिक लग्न. ५ अंश उदित. अक्षांश १९-८ रेखांश ७४-४८। स्वयं ज्योतिष-सिद्धान्त गणितज्ञ थे। ज्योतिष सिद्धान्त

गणितपर इनके ग्रंथ प्रसिद्ध है। लग्न वृश्चिक, तृतिय में गुरु, पंचम मे चंद्र मंगल, षष्ठ में उच्च रवि, सप्तम में शुक्र, लाभ में राहु, तथा व्यय में तूल का शनि, संपूर्ण जीवन शांति में व्यतीत हुआ। व्ययस्थान के उच्च शनि के कारण इनकी विशेष नामवरी नही हुई। इनके ग्रंथ टिलक पंचाग करने में अवश्य काम आते है। ये टिलक पंचांग के कट्टर अभिमानी थे। जातकप्रदीपकारके मत से यह शनि का प्रताप है--जिसमें उपयोगिता के स्थानपर निरुपयोगिता है।

धनु---शनि लाभस्थान में उच्च आता है। जातकचंद्रिकाकार अथवा अन्य किसी आचार्य ने इसे अशुभ फलदाई नही कहा है। परंतु अनुभव में इसके अशुभ फल प्राप्त होते है। धनेश तथा तृतियेश में दोनों बलशाली मारकस्थान है। इन दोनों स्थानों का अधिपति लाभस्थान में पडे तो अशुभ फल प्रदान करता है। श्री. जे. सी. पटेल ज. ता. १०-१२-१८९५ सूर्योदयात इ. घटी २-३३, जन्मस्थान मुंबई, लग्न धनु, लग्न में रवि, बुध, धनस्थान में चंद्र तृतिय में राहू, अष्टम में उच्च गुरु लाभस्थान में स्वगृहका शुक्र, उच्च का शनि तथा व्यय में मंगल, जन्म उत्तम स्थिति में। हाँगकाँग में विशाल व्यापार था। पिताजी के रहते सब ठीक था। पिताकी मृत्यु के बाद सब परिवार बरबाद हुआ। परंपरागत इस्टेट नष्ट हो गई। केवल पेटभर की नौकरी है। विवाह नही हो पाया। लाभस्थान में शनि शुक्र के होने से-बडी बहन घर में अविवाहित है। बडे भय्या सबका पालन कर रहे है। इस स्थान का उच्च का शनि या तो संतति देगा या संपत्ति-नामवरी देगा। दोनो एक साथ संभव नहीं है। इन सब के होने पर भी विद्वान होनेपर भी पिता को लाभ होने की आशंका रहती यही हालत गुरु से भी होती है।

डॉ. गौर की पत्रिका में लाभस्थान में उच्च का शनि है। उन्होंने असीमित संपत्ति कमाई।

दूसरी एक पत्रिका "क्ष" शक १७८७ पौष व॥ १२ शनिवार ता. १४-१-१८९६ लग्न धनु, लग्न में मंगल गुरु, शुक्र-बुध। धनस्थान में रवि। चतुर्थ में केतु दशम में राहु लाभस्थान में शनि, व्ययस्थान में चन्द्र

बचपन में जीवन अत्यंत कष्टमय, वकील बने, आयु के २८ वें वर्ष से भाग्योदय प्रारंभ । संतति भरपूर, दो पत्नियाँ हो गई । संतति सुशिक्षित परंतु शिक्षा लेकर कमाने लगे कि घर से बाहर रहने लग जाते है। पितासे निभाना कठिन है । यह धनेश तथा तृतीयेश बनता है । यह दोनो मारक स्थानों का अधिपति होता है ।

मकर---दशम में उच्च का होता है । यह धनस्थान का अर्थात मारक स्थान का अधिपति बनता है जिस से दशम में अशुभ फल निर्माण करता हैं।

"क्ष" जन्म शक १८१७ श्रावण व।। १२ ता. १७-८-१८९५ इष्ट घटी ३१-५० लग्न मकर-धनस्थान में राहु पंचम मे नेपच्यून, षष्ठ में चंद्र, सप्तम में गुरु, अष्टम में रवि, बुध, मंगल, केतु, भाग्यस्थान में शुक्र, और दशमस्थान में शनि हर्षल । इनका जन्म सामान्य परिस्थिति में हुआ। स्वकष्टार्जित शिक्षा लेकर उसी संस्था के प्रधान बने । सन १९३९ में संस्था संचालक ने किसी आरोप से उन्हे नौकरी से हटा दिया । आज बेकार है । इनको न मातृ-पितृ सुख मिला न पत्नी सुख ।

दूसरी पत्रिका एक प्रथम श्रेणी न्यायाधीश वेतन बहुत बडा था । सेवानिवृत्ति में केवल तीन महिने थे । परंतु केवल साडेचार रुपये खाने के कारण कोर्ट में सजा हुई तथा बिना सेवानिवृत्ति वेतन घर लौटना पडा । एकही पुत्र था वह भी चल बसा । दो पत्नियाँ थी । फिर भी दरिद्रता में रहे । इन का मकर लग्न दशम में शनि था । जिससे पिता के साथ शत्रुता रही ।

तीसरी पत्रिका जन्म शक १८४६ फाल्गुन शु।।२ मंगलवार प्रभात में ५-४ बजे । जन्मस्थान मुंबई लग्न-मकर लग्न में शुक्र-केतु-धनस्थान में रवि, बुध, चतुर्थस्थान में मंगल, सप्तम में राहू, दशम में शनि तथा व्यय में गुरु-मां-बाप की इकलौती लडकी थी । विवाह के पूर्व माँ मृत तथा विवाहोपरांत पिता जेल में । नौकरी से छूट्टी और जेलमे दोनों साथ थे ।

कुंभ---नवमस्थान में उच्च होता है । व्ययेश तथा लग्नेश बनता है। एक ओर से शुभ फल तो भावस्थित अशुभ फल प्राप्त होता है । लग्नेश के भाग्य में होने से सर्वसाधारण फल मिलता है ।

श्री. अनंतराव वींदे शक १८१७ ज्येष्ठ–शु।। ५ बुधवार सूर्योदय इ. घ. ४५–३५. जन्म–ठाणे, लग्न कुंभ. लग्न में राहु–चतुर्थ में रवि, नेपच्यून. पंचम में शुक्र, मंगल–गुरु बुध. षष्ठ में चंद्र. सप्तम में केतु, भाग्य में शनि हर्षल, इस शनिका फल न भाई है न बहन–एक है वह मतधवा, नोकरी मे शत्रुता, परंतु यशस्वी। संतति भरपूर।

मीन–अष्टम में उच्च तथा लाभेश व्ययेश होने से जातकचंद्रिकाकार के मत से–"मंदशुक्रांशुमत्सौम्याः पापाः।' यही जातकतत्व प्रदीपकारका कहना है।

श्री. डी. एन कुर्लावाला जन्म मुंबई, ता. २१–१२–१८६६ माध्यान्ह १२–३०. लग्न मीन चतुर्थ में हर्षल पचम में चंद्र मंगल, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि, नवम में शुक्र, बुध दशम में रवि, गुरु। इस शनिने न धन दिया न पत्नी न पदोन्नति परंतु सेवानिवृत्ति वेतन आनंद से खाते है। दीर्घायु है।

इस प्रकार मेरे अनुभव के उच्च शनि के द्वादशस्थान के फल दिये है। पाठक अपने अनुभव इन में मिला दे। जनता जनार्दन की कृपासे यह शुक्र विचार पूर्ण कर के मै विराम लेता हुँ।

(इति–शम्)

शनि-विचार

दैव विचार माला पुष्प—७

शनि-विचार

लेखक

ज्योतिषी—स्व. ह. ने. काटवे

संशोधित हिन्दी अनुवाद

नागपूर प्रकाशन, मेनरोड सितावर्डी, नागपूर-१२

विषयानुक्रम

प्रथमावृत्ती : १९६१ मूल्य ६ रुपये
द्वितीयावृत्ती : १९७७

मुद्रक :
म. पां. बनहट्टी
नारायण मुद्रणालय
धंतोली, नागपूर-१२

प्रकाशक :
वि. मा. धुमाळ
नागपूर प्रकाशन,
सीताबर्डी, नागपूर-१२

श नि-वि चा र

प्रकरण पहिला

उपोद्घात

वैडूर्यकान्तिरमलः शुभदः प्रजानां
बाणातसी कुसुमवर्णनिभश्च शरतः।
पंचापि वर्णमुपगच्छति तत्सवर्णान्
सूर्यात्मजः क्षपयतीति मुनिप्रवादः ।।

आचार्य वराहमिहिर–बृहत्संहिता

शनि ग्रह वैडूर्य रत्न अथवा बाणफूल या अलसी के फूल जैसे निर्मल नीले रंग से प्रकाशित होता है, उस समय प्रजा के लिये शुभ फल देता है। यह अन्य वर्णों को प्रकाश देता हो तो उन वर्णों के लोगों का नाश करता है ऐसा मुनि कहते है।

ग्रह–विचार माला के इस पुष्प में पुरातन ग्रहों में सातवें और अन्तिम शनिग्रह का वर्णन करना है। फल ज्योतिषशास्त्र के प्रारंभ से ही इस ग्रह को मारक तथा अशुभ माना गया है। पश्चिमी ज्योतिषी भी इसे दुर्देव लानेवाला–Evil fate Bringer कहते है। मराठी में तो महिपति नामक कवि ने शनिमाहात्म्य नामक स्वतन्त्र ग्रन्थ ही लिखा है। इसमें शनि का स्वरूप, द्वादशभावफल, महादशा तथा साडेसाती के फलों का वर्णन किया है। शनि की दृष्टि का परिणाम बतलाते हुए यह कवि कहता है—' शनि का जन्म होते ही उसकी दृष्टि पिता (सूर्य) पर पड़ी, उससे तत्काल ही सूर्य कुष्ठरोग से पीडित हुआ, उस का सारथी अरुण पंगु हुआ और उसके घोडे अन्धे हो गये। इस प्रकार शनि की दृष्टि महा-

विनाशकारी है। किन्तु यही शनि कृपायुक्त हों तो सब आनन्द भी प्राप्त होते है।' यह सायंकाल के अस्तगामी सूर्य का रूपकात्मक वर्णन है। अस्त के समय की निस्तेजता को कुष्ठरोग कहा है तथा रात्रि में सूर्य की गति अदृश्य होती है उसे सारथी पंगु होना तथा घोडे अन्धे होना कहा है। अन्य ग्रन्थों में भी शनि को यम, काल, दु:ख, दैन्य, मन्द आदि अशुभ-सूचक नाम दिये है। अंग्रेजों में भी इसको शैतान Reaper आदि नाम मिले है। इस ग्रह के फल सचमुच सिर्फ अशुभ ही है या महीपति के वर्णनानुसार आनन्ददायक भी है इसी का इस पुस्तक में विचार करना है।

प्रकरण दूसरा

सामान्य स्वरूप (ग्रहयोनिभेदाध्याय)

शनि के विषय में प्राचीन लेखकों के वर्णन इस प्रकार है।

आचार्य व गुणाकर—दु:खं दिनेशात्मजः। दु:खदायकः प्रेष्यः सहस्रांशुजः। भास्करिः कृष्णदेहः। धातुः स्नायुः। वसतिः क्षित्युत्करः। वस्त्रं स्फाटितं। लोहधातुः। शिशिरर्तुः। क्षाररुचिः। यह सेवक, दु:खदायी, काले वर्ण का है। स्नायु, कूडा करकट फेंकने की जगह, फटे जीर्ण वस्त्र, लोहा, शिशिर ऋतु तथा नमकीन रुचि पर इसका अधिकार है।

कल्याणवर्मा—दिशा–पश्चिम, प्रकृति–नपुंसक, नरक लोक।

वैद्यनाथ—मन्दः पृष्ठेनोद्यति सर्वदा। चतुष्पदो भानुसुतः। मन्दः भवन्ति। शैलाटविसंचरन्तः। शताब्दसंख्याः। मूलप्रधानोऽर्कजः। कृष्णः शनिः। देवता विरिंचिः। शनेर्नीलं। शनिः स्यात् तु हिमाचलान्तं। मन्दोन्त्यजानां पतिः। शनिः तमःस्वामी। पवनतत्त्वं। कषायरसः। अधोऽक्षिपातः। वधू मन्दः। शनिः सुतीक्ष्णः। अर्केण मन्दः शनिना महीसुतः। मन्दस्तुलामकरकुम्भगृहे कलत्रे याम्यायने निजदृगाणदिने दशायाम्। अन्ते ग्रहस्य समरे यदि कृष्णपक्षे वक्रे समस्तभवनेषु बलाधिकः स्यात्॥ शनि का उदय पृष्ठभाग से होता है। यह चौपाया, पर्वत तथा वनों में घुमनेवाला, सौ वर्ष

की आयु का, मूलप्रधान, काले वर्ण का हैं। इसकी देवता ब्रह्मा है। नीलरत्न, गंगा से हिमालय तक का प्रदेश, अन्त्यज लोग, तमोगुण, वायु तत्त्व, कषैली रुचि, नीचे दृष्टि, स्त्रीस्थान, तीक्ष्ण स्वभाव इन पर इसका अधिकार है। रवि द्वारा शनि पराजित होता है तथा शनि द्वारा मंगल पराजित होता है। यह तुला, मकर तथा कुम्भ राशि में स्त्री स्थान में, विषुव के दक्षिण अयन में, द्रेष्काण कुण्डली में स्वगृह में, शनिवार को, अपनी दशा में, राशि के अन्तभाग में, युद्ध के समय, कृष्णपक्ष में तथा वक्री हो उस समय किसी भी स्थान में हो तो बलवान होता है।

पराशर––शनिः शूद्रः। तमः। बली ज्ञेयो दिनशेषे। दुर्भगान् सूर्यपुत्रकः। नीरसान् सूर्यपुत्रश्च। गृहेषु मन्दो वृद्धोस्ति। यह शूद्र वर्ण का, तमोगुणी ग्रह सन्ध्यासमय बलवान होता है। भाग्यहीनों तथा नीरस वस्तुओं पर शनि का अधिकार है।

जयदेव––सन्ध्यां मन्दः। पक्षिणौ बुधसौरी। शनिः प्रतीच्यः। मन्दः स्थविरो ग्रहः। सूर्यजः संकराणाम् भूम्यधिपः। यह गृह पश्चिम दिशा का, वृद्ध, पक्षीस्वरूप, भूमि का स्वामी, संकर जाति का है। सन्ध्या के समय बलवान होता है।

मंत्रेश्वर––नीचश्रेण्यशुचिस्थलं वरुणदिक्शास्तुः शनेण्लयः। हलके वर्गों के लोगों के निवास स्थान, अपवित्र स्थान, पश्चिम दिशा के स्वामी के स्थान (मद्रास और मैसूर प्रदेश के मुनीश्वर देवालय) इन पर शनि का अधिकार है। स्पर्शनेंद्रिय, लोहधातु, सौ वर्ष की आयु, ज्ञानप्राप्ति, प्रवास, सौराष्ट्र और काठेवाड प्रदेश, तिल, कालदेवता, वायुतत्त्व यह शनि के अधिकार के अन्य विषय है।

पुंजराज––वर्णः असितः–काला रंग होता है। यह ग्रह तीक्ष्ण, उग्र तथा सन्ध्यासमय बलवान होता है। रविजस्तथाऽन्ते।

विलीयम लिली––यह पुरातन ग्रहों में सब से दूर का ग्रह है। गुरु से भी इसकी कक्षा बाद में है। यह बहुत चमकीला अथवा प्रकाशमान नही तथा टिमटिमाता नही है। इसका रंग फीका, राख जैसा निस्तेज है।

इसकी गति बहुत मन्द है। राशिचक्र की परिक्रमा यह २९ वर्ष ५ मास १७ दिन ५ घंटों में पूरी करता है। इसकी मध्यम गति २ कला १ विकला है। दैनिक गति ३ से ६ कला तक होती है। अधिकतम शिर उत्तर की ओर २ अंश ४९ कला रहता है तथा दक्षिण की ओर २ अंश ४९ कला रहता है। यह १४० दिन वक्री रहता है तथा वक्री होते समय और मार्गी होते समय ५ दिन स्तंभित रहता है।

शनि के अधिकृत स्थानों में रेगिस्तान, जंगल, अज्ञात घाटियां, गुहाएं, गव्हर, पर्वत, कब्रस्तान, चर्च का मैदान, खंडहर, कोयले की खदानें, मैली बदबूदार जगहें, कार्यालय आदि का समावेश होता है। इस ग्रह का स्वभाव शीतल, रूक्ष, उदासीन है। यह पुरुष ग्रह पृथ्वीतत्त्व का स्वामी है। दुर्दैव लानेवाला, एकान्तप्रिय, पापग्रह है।

उपर्युक्त वर्णन प्राय: शनि के दृश्य स्वरूपानुसारही है। जहां ग्रन्थकारों के मत परस्पर विरुद्ध बतलाये है उनका विचार करना है। वैद्यनाथ ने चतुष्पाद और जयदेव ने पक्षी स्वरूप कहा इनमें बहुत अन्तर है। अनुभव से वैद्यनाथ का मत ठीक प्रतीत होता है। जयदेव ने भूमितत्त्व कहा है और अन्य लेखक वायु तत्त्व बतलाते है। हमारे मत से वायु तत्त्व पर बुध का और भूमितत्त्व पर शनि का अधिकार ठीक प्रतीत होता है। वैद्यनाथ ने शनि द्वारा मंगल का पराजय होना लिखा है। किन्तु शनि–मंगल की युति या प्रतियोग के समय मंगल के अशुभ गुणधर्म ही अधिक स्पष्ट होते है। अत: मंगल द्वारा ही शनि का पराजय कहना चाहिये। यह वक्री हो तो सब स्थानों में बलवान कहा है किन्तु यह शुभ फल के बारे में ठीक नही है। हमारे अनुभव में वक्री शनि के फल अत्यन्त अशुभ, कष्टमय और दारिद्र्यप्रदायी प्रतीत हुए है। प्रवास अधिक होते है यह अनुभव ठीक है।

———o———

प्रकरण तीसरा

शनिस्वरूप का विस्तृत वर्णन

अब शनि के स्वरूप के विषय में विभिन्न लेखकों के मत देखिए।

आचार्य--मन्दोलसः कपिलदृक् कृशदीर्घगात्रः स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा। शनिप्रधान पुरुष आलसी, दुबला तथा वात प्रकृति का होता है। इसकी दृष्टि पिंगल वर्ण की, अवयव लम्बे, दांत बडे और केश रूक्ष होते है।

गुणाकर--पिंगेक्षणः कृष्णवपुः शिरालो मूर्खोलसः स्थूलनखोऽनिलात्मा। क्रोधी जरावान् मलिनः कृशांग, स्नाय्वाततः सूर्यसुतोऽतिदीर्घः॥ इस की आंखें पिंगट, शरीर काला, नख बडे, कद बहुत लम्बा और स्नायु विस्तृत होते है। यह कृश (शिराएं दीखनेवाला), मूर्ख, आलसी। वात प्रकृति का, क्रोधी, वृद्ध जैसा, मैला होता है।

कल्याणवर्मा--पिंगो निम्नविलोचनः कृशतनुर्दीर्घः शिरालोऽलसः कृष्णांगः पवनात्मकोऽतिपिशुनः स्नाय्वाततो निर्घृणः। मूर्खः स्थूलनखद्विजोऽतिमलिनो रूक्षोऽशुचिस्तामसो। रौद्रः क्रोधपरो जरापरिणतः कृष्णांबरो भास्करिः॥ इसमें आचार्य और गुणाकर के वर्णन से अधिक भाग इस प्रकार है--इसकी दृष्टि निम्न (नीचे की ओर) होती है। यह दुष्ट, चुगलखोर, तामसी और काले वस्त्र पहननेवाला होता है।

वैद्यनाथ--काठिन्यरोमावयवः कृशात्मा दूर्वासितांगः कफमारुतात्मा। पीनद्विजश्चारुपिशंगदृष्टिः सौरिस्तमोबुद्धिरतोऽलसःस्यात्॥ केश और अवयव कठिन होते है। शरीर दूर्वा जैसा काले रंग का होता है। प्रकृति कफवात की होती है। अन्य वर्णन पहले आ चुका है।

पराशर--कृशदीर्घतनुः शौरिः पिंगदृष्टयानिलात्मकः। स्थूलदन्तोलसः त्पुंगखररोमकचो द्विजः॥ यह ब्राह्मण वर्ण का है। अन्य वर्णन पहले जैसा है।

महादेव--क्रियास्वपटुः कातराक्षः कृष्णः कृशदीर्घांगो बृहद्दन्तो रूक्षतनूरुहो वातात्मा कठिनवाक् निन्द्यो मन्दः॥ यह कामों में कुशल नहीं

होता । दृष्टि से डरपोक प्रतीत होता है । कठोर बोलता है और निन्दनीय होता है । अन्य वर्णन पहले जैसा है ।

ढुंढिराज–श्यामलोऽतिमलिनश्च शिराल: सालसश्च जटिल: कृशदीर्घ: । स्थूलदन्तनखपिंगलनेत्रो युक् शनिश्च खलतानिलकोपै: ।। इस वर्णन में पूर्व वर्णनों से जटायुक्त होना इतना विशेषण अधिक है ।

मन्त्रेश्वर––इसमें कल्याणवर्मा जैसा वर्णन कर पंगु होना इतना अधिक कहा है ।

जयदेव––शनि: कृश: श्यामलदीर्घदेहोऽलसोऽनिलात्मा कपिलेक्षणश्च । पृथुद्विज: स्थूलनखोष्ठकेश: शठ: शिरोजा: पिशुन: । इस वर्णन में होंठ बडे होना इतना अधिक विशेषण है ।

पूंजराज––मूर्खोलस: कृष्णतनु: कृशांग: स्यात् स्नायुसारो मलिनोऽतिदीर्घ: क्रोधी जरत्पिंगदृशोऽर्कसूनु: सपैत्यवायु: पृथुरोमदन्त: ।। इसमें प्रकृति पित्तवातात्मक होना इतना विशेष है ।

विलियम लिली––शनिप्रधान व्यक्ति का शरीर साधारणत: शीतल और रुक्ष होता है । मझला कद, फीका काला रंग, आंखें बारीक और काली, दृष्टि नीचे की ओर, भाल भव्य, केश काले और लहरीले तथा रूक्ष, कान बडे लटकते जैसे, भौंहें झुकी हुई, होंठ और नाक मोटा, डाढी पतली इस प्रकार का स्वरूप बतलाया जा सकता है । यह चेहरा देखने से प्रसन्नता नहीं होती । सिर झुका हुआ और चेहरा अटपटा सा लगता है । कन्धे चौडे, फैले और टेढेमेढे होते है । पेट पतला, जंघाएं बारीक तथा घूटन और पैर भी टेढेमेढे होते हैं । चाल शराबी जैसी लडखडाती प्रतीत होती है । घुटने एक दूसरे से सटे रख कर चलते हैं । शनि पूर्व की ओर हो तो प्रमाणबद्धता और मृदुता कुछ हद तक होती है । कद नाटा होता है । पश्चिम की ओर हो तो कृश, और अधिक काले रंग का होता है । शरीर पर केश बहुत कम होते है । शनि के शर कम हो तो कृशता ज्यादा होती है । शर अधिक हो तो मांसल शरीर होता है । दक्षिण शर हो तो मांसल शरीर होकर चाल जलदी होती है । उत्तर शर हो तो

केश बहुत और शरीर मांसल होता है । स्तंभित शनि हो तो साधारण मोटापा होता है । मार्गी होते समय स्तंभित शनि मोटा, टेढामेढा और दुर्बल शरीर देता है ।

कुण्डली में शुभ सम्बन्ध में हो तो–गहरा विचार करना, कम बोलना, अति व्यवस्थित बरताव, परिश्रम बहुत करना, किसी भी विषय पर गम्भीरतासे बोलना, लेनदेन में खुले दिल से व्यवहार, जीवन का उत्तरार्ध सुखमय होना, व्यासंगी होना, अभ्यासशील वृत्ति यह इस व्यक्ति के विशेष होते है । सब तरह से व्यवस्थित स्वभाव होता है ।

कुण्डली में अशुभ सम्बन्ध में हो तो––लोगों से शत्रुत्व करना, लोभी मत्सरी स्वभाव, अविश्वासी वृत्ति, डरपोक होना, हमेशा किसी संकट में होने जैसा बरताव, हीनता, कंजूसी, अपना सच्चा स्वरूप छुपाना, आलसी वृत्ति, संशय लेना, स्वार्थपरता, स्त्रियों के बारे में तिरस्कार, झूठ बोलना, दुष्टता, असन्तोष, हमेशा रोती सूरत रहना यह इस व्यक्ति के विशेष गुण होते है । साधारणत: ये व्यक्ति अपना कार्य धूर्तता से सिद्ध करते है । लोगों को अपनाही मत ठीक है ऐसा समझाते है, दुष्टता और प्रतिशोध की भावना से काम करते है, धर्म की बिलकुल फिक्र नही करते, गाली-गलौज खुल कर करते है, बीभत्स बोलते है, ठग, बहुत खानेवाले झगडालू, लोभी होते है । यह क्वचित ही धनवान होता है ।

एलनलिओ––यह ग्रह शान्त, गम्भीर और विचारी प्रवृत्ति देता है । निसर्गत: वृद्धावस्था पर इसका अधिकार है, तारूण्य बीत जाने तक इसके फलों का ठीक अनुभव नही मिलता । आत्मविश्वास, संकुचित वृत्ति, मितव्यय, सावधानता, धूर्तता ये इसके स्वभाव विशेष होते है । इच्छा-शक्ति प्रबल होने से सहनशील, शान्त, स्थिर, दृढ प्रवृत्ति होती है । उल्हास, आनन्द, प्रसन्नता ये गुण क्वचित दिखाई देते है । समाज में किसी की श्रेष्ठता न मानना, हंसी मजाक का वातावरण बनाना यह प्रवृत्ति होती है । व्यवहारज्ञान और कुशलता अच्छी होने से लोगों के साथ बरताव में और व्यवसाय में चतुरता से व्यवस्था करते है । मनुष्य की योग्यता देख कर उससे काम करा लेते है । महत्त्वाकांक्षी, दूर की सोचने-

वाले, योजनाएं बनानेवाले होते है । किन्तु किसी भी योजना की सफलता में बहुत समय लगता है । जगत में सच्चे और झूठे का भेद समझना यह इसका श्रेष्ठ गुण होता है ।

हमारा अनुभव---यह ग्रह कुण्डली में विकसित शुभ फल देता हो तो कौटुम्बिक प्रेम का विकास होता है । इन लोगों को सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति की इच्छा होती है और उसके लिये प्रयत्न भी करते है । उपभोग करते हुए भी त्यागी होते है । लोककल्याण के लिये प्रयत्नशील रहते है । अभिमान नही होता । मिलनसार, उदार, राष्ट्रोपयोगी कार्य में तत्पर, अनेकों के घर बसानेवाले, परोपकारी वृत्ति के होते है । विद्वान, संशोधक, मंत्री, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करनेवाले पुरुष होते है । ज्ञान, विश्वबन्धुत्व, प्रेम, पवित्रता ये भावनाएं विकसित होती है । किसी भी शास्त्र में तह तक खोज करनेवाले, अनासक्त, अधिकार की इच्छा न होते हुए भी अधिकार प्राप्त करनेवाले होते है । गूढ शास्त्रों का अभ्यास, लेखन, ग्रंथप्रकाशन, तत्त्वज्ञान का प्रसार इन प्रवृत्तियों में भाग लेते है । अपमानित स्थिति में दीर्घकाल न रह कर स्वाभिमान से दो दिन में मरना अच्छा समझते है । कीर्तिमान, संस्थाओं के स्थापक, अन्याय का प्रतिकार करनेवाले, जुल्म न सहनेवाले होते है । बहुत श्रीमान, अपने सुख की फिक्र करनेवाले, लोगों की बातों से अलिप्त रहते है । यह गोद लिये जाने का योग होता है । लोगों पर उपकार या अपकार करने की इच्छा नही होती । इन्हें मित्र कम होते है । ये डरपोक, कुछ धूर्त, संशयी, प्रतिशोध की भावना रखनेवाले होते है किन्तु ये दोष छिपाने की कोशिश करते है । सावधान, दीर्घोद्योगी, सौजन्ययुक्त, नियमित व्यवस्थित, कार्य में दृढ, गंभीर, अंगीकृत काम बहुत प्रयत्न से पूर्ण करनेवाला, हठी, दुरा-ग्रही, लोगों का न सुनकर अपने दिल से काम करनेवाला, अपने विचार गुप्त रखनेवाला, दीर्घद्वेषी, अकारन गलतफहमी कर लेनेवाला ऐसा इस व्यक्ति का स्वभाव होता है । संसार में आसक्त और दीर्घायु होते है । इन्हें अधिकार की बहुत लालसा होती है किन्तु इनका अधिकार कायम नही रहता । राष्ट्रीय कार्य में भाग लेना, कानून का अभ्यास, देनलेन में

चिकित्सा किन्तु लोगों का आदर सत्कार करना, मधुर बोलना यह प्रवृत्तियां होती है ।

यदि कुण्डली में शनि, अशुभ फल देता हो तो—स्वार्थी, धूर्त, दुष्ट, मन चाहे वैसा बर्ताव करनेवाला, दुर्बल मन का, आलसी मन्द बुद्धि, उद्योग से पराङ्मुख, अविश्वासी, गर्वीला, नीच कामों में मग्न, घातपाती कृत्यों में आनन्द माननेवाला, झगडालू, झगडे लगानेवाला, विरोध बढानेवाला ऐसा व्यक्तित्व होता है । थोडी थोडी बचत करते है किन्तु बडे खर्च रोक नही सकते । व्यवसाय में चिकित्सक, सचझूठ में भेद न करनेवाला, दूसरों की तरक्की में बुरा माननेवाला, कठोर बोलनेवाला यह इस व्यक्ति का स्वरूप होता है । विचित्र मनोवृत्ति, असन्तोष, व्यसनों में आसक्ति, स्त्रियों की अभिलाषा, पापपुण्य की परवाह न करना, विषयमग्नता, दुराचरण, अच्छे कामों में विघ्न लाना, अपने सुख और फायदे की ओर ही देखना, दूसरों की गलतियां ढूंढते रहना, बीभत्स बोलना, अविचारी बरताव, दूसरों के धन का अपहरण, धन की तृष्णा, सत्ता के लिये कोशिश, सत्ता मिलते ही जुल्म और दुराचार शुरू करना , अपने को ही सर्वश्रेष्ठ मानना, क्रोधी प्रवृत्ति, दांभिक बरताव, उपाधियों की प्राप्ति के लिये झूठ का आश्रय, गद्दारी, दारिद्रय ये गुणधर्म पाये जाते है ।

सामान्यतः—शनि के लिये मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक, मीन तथा मिथुन ये राशियां शुभ है । तुला और कुम्भ अशुभ हैं । वृषभ, कन्या और मकर बहुत अनिष्ट है । इन्हें उत्पात राशि कहा है ।

—o—

प्रकरण चौथा

कारकत्व विचार

शनि के कारकत्व के विषय में पुरातन लेखकों के विचार पहले देखिए—

कल्याणवर्मा—त्रपुसीसकाललोहककुधान्यमृतबंधभृतकानाम् । नीच-स्त्रीपण्यकदासवृद्धजनदीक्षाप्रभुः सौरिः ।। टिन, सीसा, लोहा, हलके धान्य,

प्रेत की अर्थी के वाहक, नीच, स्त्रियों का व्यापार, गुलाम, वृद्ध, दीक्षा इन विषयों का कारक शनि है।

गुणाकर—दासों का कारक शनि है। यवनमत से वृद्धत्व भी इसी का कारकत्व है—"जरा यवनैस्तथैव।"

वैद्यनाथ—आयुर्जीवनमृत्युकारणविपत्संपत्प्रदाता शनिः। दारिद्र्य-दोषजनिकर्मपिशाचचौरैः क्लेशं करोति रविजः सह सन्धिरोगैः॥ आयु, मृत्यु के कारण, संपत्ति और विपत्ति का विचार शनि से करना चाहिये। दारिद्र्य, पिशाच बाधा, चोरी सन्धिरोग ये दोष शनि के अधिकार के हैं।

पराशर—आयुष्यं जीवनोपायं दुःखशोकमहद्भयम् सर्वक्षयं च मरणं मन्देनैव विनिर्दिशेत्॥ महिषायगजतैलवस्त्रशृंगारप्रयाणसर्वराज्यदार्वायुध-गृहयुद्धसंचारशूद्रनीलमणिविघ्नकेशशल्यशूलरोगदासदासीजनायुष्यकारकः शनिः॥ शनि के स्वामित्व के विषय इस प्रकार है—आयुष्य, जीवन के उपाय, दुःख, भय, शोक, नाश, मरण, भैंस, हाथी, तेल, कपडे, शृंगार, प्रवास, राज्य, लकडी के आयुध, घर के झगडे, शूद्र, नीलरत्न, विघ्न, केश, शल्य, शुलरोग, गुलाम।

सर्वार्थचिन्तामणि—लोभमोहविषमपरपीडानिधीतनैष्ठुर्यदुर्मतिदारिद्र्य-दुर्मर्षामयवातवंचनमहिषीयवागुकृष्णधान्यायुष्यजीवनोपायकारकः शनिः। लोभ, मोह, विषमता, दूसरों को कष्ट देना, नाश करना, निष्ठुरता, दुष्ट, बुद्धि, दरिद्रता, बुरा क्रोध, वातरोग, ठगना, भैंस, पेज, काले धान्य (तिल, उडद, चना आदि), आयुष्य तथा जीवन के उपाय इन विषयों का कारक शनि है।

मन्त्रेश्वर—तैलक्रयी भृतकनीचकिरातकायस्काराश्च दन्तिकरटाश्च पिकाः शनौ स्युः। बौद्धाहितुण्डिकखराजवृकोष्ट्रसर्पध्वांतादयो मशकमत्कुण-कृम्युलूकाः॥ वातश्लेष्मविकारपादविहृतिं चापत्तितन्द्राश्रमान् भ्रान्ति कुक्षिरुगन्तरुष्णभृतकध्वंसं च पार्श्वाहतिं। भार्यापुत्रविपत्तिमंगविहृतिं। हृत्तापमर्कात्मजो वृक्षाश्मक्षतिमाह कश्मलगणैः पीडां पिशाचादिभिः॥ तेल के व्यापारी, नौकर, नीच, वनचर, लुहार, हाथी, कोकिल, संपेरे, बौद्ध,

गधा, बकरा, भेडिया, ऊंट, सांप, कौआ, मच्छर, खटमल, कृमि, उल्लू, आदि पर, शनि का अधिकार है। वात, श्लेष्म (कफ), पैरों के रोग, आपत्ति, तन्द्रा, श्रम, भ्रम, पसलियों का दर्द, अन्दर की उष्णता, नौकरों का नाश, स्त्रीपुत्रों पर विपत्ति, अवयव टूटना, हृदय को कष्ट, वृक्ष या पत्थर से आघात और पिशाच्चों की बाधा ये शनि के विषय हैं।

विद्यारण्य--आयुष्यं जीवनोपायं मरणं च शनैश्चरात्। इसका अर्थ पहले आ चुका है।

कालिदास-- जाड्यादिप्रतिबन्धकाश्वगजचर्मायप्रमाणानिसंक्लेशोव्याधिरोधदुःखमरणं स्त्रीसौख्यदासीखराः। चाण्डाला विकृतांगिनो वनचरा बीभत्सदानेश्वरावायुर्दायनपुंसकान्त्यजखगाः प्रेताग्निदासक्रियाः॥ आचारेतररिक्तपौरुषमृषावादित्वदार्वानिला वृद्धस्नायुदिनान्तवीर्यशिशिरत्वेत्यन्तकोपश्रमाः। कुक्षत्रोदितकुंडगोलकजनिर्मालिन्यवस्त्रं गृहं तादृग्वस्तुमनोविचारखलमैत्री कृष्णपापानि च॥ क्रौर्यं भस्म च नीलधान्यमणिलोहौदार्यसंवत्सराः शूद्रो विट् पितृकारकोन्यकुलविद्यासंग्रहः पंगुता। तीक्ष्णं कंबलवस्त्रपश्चिममुखे संजीवनोपायकाधोदृष्टी कृषिजीवनायुधगृहज्ञातिर्बहिःस्थानकाः॥ ईशान्यप्रियनागलोकपतने संग्रामसंचारिता शल्यं सीसकदुष्टविक्रमतुरुष्का जीर्णतैलेपि च। दासब्राह्मणतामसे च विषभूसंचारकाठिन्यके भीतिर्दीर्घनिषादवैकृतशिरोजाः सर्वराज्यं भयम्। छागाद्या तहिषादयो रतिरतों वस्त्रादिशृंगारता मृत्यूपासकसारमेयहरिणाः काठिन्यचित्तं शनेः॥ शनि से निम्नलिखित विषयों का विचार करना चाहिये--मूर्खता, कैद, घोडा, हाथी, आय, चर्म, प्रमाण, क्लेश, रोग, विरोध, दुःख, मरण, स्त्रीसुख, दासी, गधे, चाण्डाल, विकृत अवयववाले (काने, लंगडे आदि), वनचर, बीभत्स, उदार, आयुष्य, नपुंसक, अन्त्यज, पक्षी, प्रेत, अग्नि, दास, आचार पौरुष की कमी, झूठ बोलना, लकडी, वायु, वृद्ध, स्नायु, सन्ध्याकाल, वीर्य, शिशिर ऋतु, बहुत क्रोध, अतिश्रम, क्षत्रियों की अवैध सन्तान, मलिनता, घर, कपडे तथा विचार अपवित्र होना, दुष्टों से मैत्री, बहुत बुरे पाप, क्रूरता, भस्म, काले धान्य, लोहा, उदारता, वर्ष, शूद्र, वैश्य, पिता, दूसरे कुलों के ज्ञान का संग्रह, लंगडापन, तीक्ष्णता, कम्बल, पश्चिम की ओर

मुख, जीवन के साधन, नीचे दृष्टि, खेती, शस्त्र, जाति, बाहर के स्थान, ईशान्य दिशा, नागलोक, लडाई, प्रवास, शल्य, सीसा, बुरे पराक्रम, तुर्क लोग, पुराना तेल, ब्राह्मण, तामसी स्वभाव, विष, भूमिसंचार, कठिनता, डर, निषाद, विकृति, सुदृढ, धमनियां, सर्व राज्य, बकरे, भैंसे आदि, रति, वस्त्रादि, शृंगार, मृत्यु की उपासना, कुत्ते, हरिण आदि तथा चित्त की कठोरता ।

विलीयम लिली—शनिप्रधान व्यक्ति साधारणत: किसान, श्रमिक, वृद्ध, साधु, सांप्रदायिक, भिक्षुक, विदूषक, पुत्रपौत्रों से युक्त होते है । व्यवसाय की दृष्टि से–चमार, रात के काम करनेवाले श्रमिक, खदानों के श्रमिक, टिन का काम, कुम्हार, झाडू बनानेवाले, नल लगानेवाले, ईंटे बनानेवाले, रसोइये, चिमनी साफ करनेवाले, प्रेतवाहक, खोदनेवाले, नईस, कोयले के व्यापारी, गाडी चलानेवाले, माली, मोमबत्ती बनानेवाले, काले कपडे, ग्वाल ये शनि के कारकत्व में आते है । रोगों का कारकत्व–दांत, दाहिने कान के रोग, चौथे दिन का बुखार, शीतज्वर, उष्णता से और उदासीनता से उत्पन्न ज्वर, कोढ, रक्तपित्त, क्षय, कामला, अर्धांगवायु, कंप, निरर्थक, भीति, पागलपन, जलोदर, सन्धिवात, अति रक्तस्त्राव, हड्डियों का टूटना आदि । यह सिंह या वृश्चिक में हो अथवा शुक्र की अशुभ दृष्टि, में हो तो इन रोगों का उदय होता है ।

हमारे अनुभव—शनि के कारकत्व के बारे में हमने निम्न विषयों का अनुभव देखा है–बैंक, ब्याज का धन्धा, मिल, कारखाने, मिलों से सम्बन्धित कानून, भूगर्भशास्त्र, मुस्लिम कानून, मिलमालिक, साझीदार, प्रिन्टिग प्रेस, कोयले का व्यापार, बडी कम्पनियां, जिनिंग प्रेसिंग फैक्टरी, इस्टेट ब्रोकर, खदानों के कानून, बीमा व्यवसाय, लोहे की चीजें, वैद्यकीय कानून, कृषि विद्यालय, पूंजीपति, तेल के व्यापारी और कारखाने, इस्टेट सम्बन्धी कानून, भूमि सम्बन्धी कानून, रोमन कानून, पुरातत्त्व संशोधन, स्नायु शास्त्र, हठयोग, उच्चन्यायालय, न्यायाधीश, नगरनिगम, जनपद, जिलापरिषद, विधानसभा आदि के सदस्य, जमीदार, खनिजपदार्थ. गुप्त बातें, दुष्टतापूर्ण काम, खलनायक, कैद, दण्ड, राजनीति और व्यवसाय में

हानि, सरकार की ओर से मुकदमा चलाया जाना, छोटे भाईबहन, चोरी, जेलर, जेलसुपरिटेंडेंट, विदेशमन्त्री, विदेशनीति, सन्धि. शत्रुत्व या मैत्री, इन्जेक्शन, क्वार्टर मास्टर (सेना में), (रोगों मे-) हड्डियों के व्रण, दाद, इसब, फोडे, सन्धिवात, यकृत और प्लीहा रोग, पैर और घुटनों के रोग, मलमूत्रोत्सर्जक इन्द्रियों के रोग, हाथीपांव, पसीने को दुर्गन्धि होना, गूंगापन ।

प्रकरण पांचवां

द्वादशभाव विचार

प्रथमस्थान में शनि के फल

आचार्य---अदृष्टार्थो रोगी मदनवशगोत्यन्तमलिन: शिशुत्वे पीडार्त: सवितृसुतलग्नेत्यलसवाक् । गुरुस्वर्क्षोच्चस्थे नृपतिसदृशो ग्रामपुरप: सुविद्वांश्चार्वंगो दिनकरसमोन्यत्र कथित: ।। शनि लग्न में हो वह व्यक्ति निर्धन, रोगी, कामुक, बहुत मलिन, बचपन में रोगों से पीडित तथा आलसी होता है । यह शनि स्वगृह, उच्च या गुरु की राशि में (धनु, मीन, मकर, कुम्भ या तुला में) हो तो वह व्यक्ति राजा जैसा सम्पन्न, नगर या गांव का प्रमुख, विद्वान, सुन्दर होता है । अन्य स्थानों में शनि के फल रवि के समान समझना चाहिये । यही वर्णन गुणाकर, जयदेव, कल्याणवर्मा तथा मन्त्रेश्वर ने दिया है ।

वैद्यनाथ---दुर्नासिको वृद्धकलत्ररोगी मन्दे विलग्नोपगतेंगहीन: । महीपतुल्य: सुगुणाभिरामो जात: स्वतुंगोपगते चिरायु: ।। इस के नाक में दोष रहता है, स्त्री वृद्ध जैसी होती है । यह रोगी, अंगहीन (किसी अवयव में दोषयुक्त) होता है । शनि स्वगृह या उच्च में हो तो राजा जैसा, गुणवान, तथा दीर्घायु होता है ।

गर्ग---कंडूतिपूर्णांगकफप्रवृत्तिर्लग्ने शनौ स्यात् सततं नराणाम् । हीनाधिकांगत्वमध:प्रदेशे कर्णांतरे वातगद: सदैव ।। लग्ने मन्देऽथवा दृष्टे कृशदेहश्च दु:खित: । मूर्खश्च मदनाचारो भिन्नवर्णस्तनौ भवेत् ।। कोहादिभि:

शिर:पीडा आत्मचिन्ता निरन्तरं। तुलाकोदंडमीनानां लग्नसंस्थे शनैश्चरे ।। करोति भूपतिं आतमन्यराशौ गतायुषं । स्थविरौ सबलौ यस्य ग्रही स्यातां विलग्नगौ । प्रकृत्या स भवेद् वृद्धो मान्यः सर्वजनेषु च ।। इसके सब शरीर में खुजली रहती है, कफ प्रवृत्ति रहती है, नीचे के भाग में कोई अवयव कम या अधिक रहता हैं । कान में वातरोग होता है । शरीर कृश होता है । यह दु:खी, मूर्ख, कामुक और विवर्ण होता है । इस के सिर में लोहे की चीज के आघात से पीडा होती है । हमेशा अपने बारे में चिन्ता रहती है । यह अल्पायु होता है । तुला, धनु या मीन लग्न में यह शनि राजा जैसी समृद्धता ओर दीर्घायु देता हैं । लग्न में वृद्ध ग्रह बलवान हों (गुरु और शनि) तो वह प्रौढ प्रकृति का और लोकमान्य व्यक्ति होता है ।

आर्यग्रन्थ---सततमल्पगतिमंदपीडितस्तपनजे तनुगे खलुचाधमः । भवति हीनकचः कृशविग्रहो निजसुहृद्रिपुसद्मनि मानवः ।। यह बहुत कम चलता है, अहंकारी और अधम होता है । इसे केश कम होते है और इस का शरीर कृश होता है । यह शत्रुओं से मित्रता करता है ।

बृहद्यवनजातक---प्रसूतिकाले नलिनीशसूनौ स्वोच्चत्रिकोणर्क्षगतें विलग्ने । कुर्यान्नरं देशपुराधिनाथं शेषर्क्षसंस्थे सरुजं दरिद्रम् ।। शरार्कि: अरिष्टं करोति ध्रुवम् ।। लग्नस्थ शनि स्वगृह, मूलत्रिकोण या उच्च राशि में हो तो देश या नगर की प्रमुखता मिलती है । अन्य राशियों में रोगी और दरिद्री होता हैं । यह ५ वें वर्ष में संकट उत्पन्न करता है ढुंढिराज ने भी यही वर्णन किया है ।

पराशर---रवि और मंगल के सदृश फल बतलाये है अर्थात-सिर के रोग, बन्धुओं से विरोध, तथा चपलता और फोडेफुन्सी आदि होना ये फल है ।

वसिष्ठ---बहुदु:खभाजं । सर्वनाशः । यह शनि बहुत दु:ख देनेवाला और सर्वनाश करनेवाला होता है ।

जागेश्वर---यदा मन्दतो वन्हिखेटा विलग्ने नरं दन्तुरं दन्तरोगान् प्रकुर्युः । तथा काष्ठपाषाणजैश्चापि घातैः सलोहैः सदा दुःखितो वायुरोगैः ।।

शनिर्यस्य शीर्षे बलं चाधिकारं तथा सौष्ठवं कुत्र लभ्यं च तस्मात् । स्वयं मत्सरी क्रूरदृष्टिः सकोपः स्त्रिया संजितः स्त्रीप्रधानो भवेद् वा ॥ शनि आदि तीन ग्रह लग्न में हो तो दांत बडे होते है । दांतों के रोग होते है । लकडी, पत्थर, या लोहे के आघात से कष्ट होता है । वातरोग होते है । उसे बल, अधिकार, सौष्ठव प्राप्त नही होते । वह मत्सरी, क्रूर और स्त्री के अधीन होता है ।

नारायणभट्ट–धनेनातिपूर्णोऽतितृष्णो विवादी तनुस्थेऽर्कजे स्थूलदृष्टिर्नरः स्यात् । विषं दृष्टिजं तधिकृद् व्याधि बाधाः स्वयंपीडितो मत्सरावेश एव ॥ यह धनवान किन्तु बहुत लोभी, विवाद करनेवाला, स्थूल दृष्टि का होता है । इस की दृष्टि विषयुक्त होती है (अच्छी वस्तु पर इसकी लोभी निगाह पडे तो वह वस्तु नष्ट होती है) । यह रोगों और चिन्ताओं से पीडित होता है । मत्सर के कारण खुद ही परेशान होता है ।

लखनऊ के नवाब–ताले यदि स्याज्जुहलो बदअक्लश्च लागरो मनुजः । शठकंबुरं बेदिलः वाममतिपूर्णः प्रभुर्भवति ॥ यह मूर्ख, दुर्बल, दुष्ट, कुरूप, निर्दय और टेढी बुद्धि का व्यक्ति होता है ।

हरिवंश—स्वोच्चे जीवगृहे स्वालयस्थः शनिश्चेत् लग्ने कोणे भूपतुल्यं मनुष्यं । कुर्यांच्छेषे संस्थितो रोगयुक्तं दीनं हीनं दुःखभाजं दरिद्रं ॥ लग्न अथवा कोण में शनि तुला, धनु, मकर, कुम्भ या मीन में हो तो राजा जैसा पद मिलता है । अन्य राशियों में वह व्यक्ति रोगी, दीन, निर्धन और दुःखी होता है ।

काशीनाथ—लग्ने शनौ सदा रोगी कुरूपः कृपणो नरः । कुशीलः पापबुद्धिश्च शठश्च भवति ध्रुवम् ॥ यह हमेशा रोगी रहता है । कुरूप, कंजूस, दुराचारी, पापबुद्धि और बदमाश होता है ।

हिल्लाजातक–इस स्थान में शनि के फल मंगल के समान बतलाये है ।

गोपाल रत्नाकर—यह पुत्ररहित, दुर्बुद्धि, मलिन, कामुक, रोगी और कुरूप होता है । यह दुष्टों की संगति में रहता है । राजा के क्रोध का

विषय होता है। वातपीडित होता है। उच्च में यह शनि हो तो गांव का प्रमुख होता है।

भृगुसूत्र--दृष्ट्यैव रिपुनाशकः तनुस्थाने शनिर्यस्य धनी पूर्णतृषान्वितः स्थूलदेहो विषदृष्टिः वातपित्तदेहः। उच्चे पुरग्रामाधिपः धनधान्यसमृद्धिः। स्वर्क्षे पितृधनवान्। वाहनेशकर्मेशभाग्यक्षेत्रे बहुभाग्यम् महाराजयोगः। चन्द्रमसादृष्टे परान्नभुक्। शुभदृष्टे निवृत्तिः॥ यह धनवान, शत्रु का नाश करनेवाला, लोभी, मोटा, वातपित्त प्रकृति का होता है। इस की दृष्टि विषैली होती है। शनि उच्च में हो तो गांव या शहर का मुख्य होकर धनधान्य की समृद्धि रहती है। स्वगृह में हो तो पैतृक सम्पत्ति मिलती है। यह वाहनेश, दशमेश या भाग्येश की राशि में हो तो राजयोग होता है। चन्द्र की दृष्टि हो तो दूसरों पर अवलम्बित रहना पडता है। अन्य शुभ ग्रह की दष्टि हो तो वह दोष दूर होता है।

पाश्चात्य मत--यह शनि शुभ सम्बन्ध में हो तो भाग्योदय कराता है। पूर्व आयु में संकट और मुसीबतें झेल कर दीर्घ उद्योग से और आत्म-विश्वास तथा धैर्य से आखिर सफलता प्राप्त होती है। शनि अशुभ सम्बन्ध में हो तो वे लोग डरपोक, बडे कामों से दूर रहनेवाले, दूसरों पर विश्वास रखनेवाले, दुष्ट, लोभी, मत्सरी, दीर्घद्वेषी, ठग, दुःखी उद्विग्न तथा एकान्त-प्रिय होते है। लोगों में अप्रिय तथा जीवन में असफल होते है। निराशा, दुःख, कष्ट, कामों में विघ्न यही इन का जीवनक्रम होता है। पूर्व आयु में रोगी रहते है। जुखाम, गिरने से सिर को चोट लगना आदि कष्ट होते है। वृश्चिक लग्न में बद्धकोष्ठ, सिंह में रक्ताभिसरण में दोष, कर्क में पचनक्रिया के दोष, तुला में मूत्राशय के रोग होते है। साधारणतः लग्नस्थ शनि से प्रवृत्ति उदासीन, हठी, निश्चयी, एकान्तप्रिय, लज्जाशील एकही बातपर अडे रहने की मनोवृत्ति इस प्रकार होती है। यह हर तरह से स्वार्थ साधनेवाला, लोभी किन्तु दुखी और ठग होता हैं। धार्मिक आचार-विचार के बारे में इस के मत अजीब से होते है। लग्नस्थ शनि अग्निराशि में हो तो स्वभाव कुछ मिलनसार, सरल तथा प्रामाणिक होता है। किन्तु साथ में साहस, क्रोध, झगडे और वादविवाद की रुचि होती है। पृथ्वीराशि

में और विशेषतः वृषभ में मन्दता, नीचता दुष्ट और दीर्घद्वेषी वृत्ति रहती है। कन्या में जरूरत से ज्यादा पूछताछ करना, चिडचिडा मिजाज, संशयी वृत्ति यह स्वभाव होता हैं। मकर में धूर्त, वादविवाद में कुशल, स्वार्थी, मतलबी, परिश्रमी, लोभी, कंजूस होता है। वायुराशि में शनि विचारी, अभ्यासी, व्यासंगी, मेहनती, उद्योगी, व्यवहारकुशल, पैसों के बारे में व्यवस्थित, अपने हित में दक्ष, धार्मिक, सच बोलनेवाला निष्कपट, आस्थापूर्ण, भाविक तथा कर्मठ व्यक्तित्व देता है। मिथुन व कुम्भ में ये गुण अच्छी तरह देखे जाते है। तुला में गर्विष्ठ, अपना ही मत सच माननेवाला, दुराग्रही स्वार्थी, कंजूस स्वभाव होता है। शनि शुभसम्बन्ध में हो तो फलों में कुछ सुधार होता है किन्तु अशुभ सम्बन्ध में हो तो अशुभ फल अत्यन्त तीव्र होते है। कर्क या मीन में मन्दबुद्धि, दुःखी, बीभत्स, दुराचारी, पतित, अधर्मी, होता है। क्वचित धर्म के बारे में अतिरिक्त उत्साह भी बतलाते है। वृश्चिक में अशुभ सम्बन्ध में शनि हो तो वह व्यक्ति अति धूर्त, दुष्ट, द्वेषी, प्रतिशोध की भावना रखनेवाला, विश्वास के अयोग्य और ठग होता है। वह मत्सरी, डरपोक और सोचविचार करनेवाला होता है। अग्निराशि में काम में कुशल किन्तु हमेशा असन्तुष्ट रहता है। पृथ्वीराशि में मूर्ख, विचारशून्य होता है। कन्या में कहानियां सुनने का शौक होता है। वह संशयी, कंजूस और चोर होता है।

हमारे विचार---किसी अन्धियारी रात में निरभ्र आकाश में दूरबीन से शनि की ओर देखें तो वह किसी शिवलिंग या तेलघानी जैसा प्रतीत होता है। यह विशाल गोलाकार ग्रह कई रंगों से युक्त है। ध्रुवों पर नीला, अन्यत्र पीला सा और बीच में एक सफेद पट्टा दिखाई देता है। उस पर पिंगल, जामुनी या लाल रंग के धब्बें भी है। मध्य के ग्रहगोल को घेर कर तीन वलय है। उन में बीच का वलय बहुत आकर्षक जामुनी रंग का है। ये वलय ग्रहगोल से सटें हुए नही है। इस प्रकार शनि इन वलयों के बीच में अलगसा स्थित है। तदनुसार लग्नस्थ शनि के फलों में एकान्त प्रिय होना, आलस, निष्क्रियता, उदासीनता, प्रपंच से दूर रहना, अकस। इन का वर्णन किया है। दूसरे—पुरानी ग्रहमाला में यह अन्तिम

ग्रह है। सूर्य उत्पत्ति का, चन्द्र स्थिति का और शनि विनाश का कारक माना गया है। इसलिये मूलत: शनि के फल अशुभ और मारक समझे गये। नैसर्गिक कुण्डली में दशम और लाभस्थान का स्वामी होनेपर भी इसे शुभ नही माना गया। फिर भी हमारी समझ में शनि के अशुभ फल मुख्यत: वृषभ, कन्या, मकर, तुला तथा कुम्भ राशियों में मिलते है। अन्य राशियों में शुभ फल प्राप्त होते है। तुला, मकर, कुम्भ में शनि के उत्तम (राजा जैसी समृद्धि) फल शास्त्रकारों ने दिये है किन्तु अनुभव मे ये फल ठीक प्रतीत नही होते। यवनजातक में ५ वें वर्ष संकट का फल बतलाया है। इस समय शनि तृतीय स्थान में भ्रमण करता है अत: उस का मारक फल नही होगा।

हमारा अनुभव—इस स्थान में मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में शनि हो तो बहुधा वे व्यक्ति किसी आफिस में नौकर होते है। इन्हें वरिष्ठों से झगड कर उन्नति करनी पडती है। पेन्शन के समय तक स्थिति अच्छी हो जाती है। अधिकार अच्छा रहता है। इन का विवाह एक होता है। पुत्र सन्तति कम होती है या नही होती। कन्याएं अधिक होती है। मेष, सिंह तथा धनु में आँखें बडी किन्तु सदोष होती है। शरीर प्रमाणबद्ध नही होता है। आवाज रौब से भरा और दृष्टि अधिकारपूर्ण होती है। बने जहां तक लोगों के कल्याण के लिये यत्न करते है। मिथुन में शनि दो विवाह कराता है। सन्तति नही होती। पूर्व आयु में बहुत कष्ट सह कर उत्तर आयु में यश प्राप्त करते है। ये सुशिक्षित, कानुन के ज्ञाता होते है। डाक्टर भी हुए देखे है। महाराष्ट्र में प्रख्यात सर्जन डॉक्टर मोने अच्छे सन्मानित अधिकारी हुए। इन के लग्न में मिथुनस्थ शनि था। सन्तति का अभाव रहा। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में—आवाज मधुर और मोहक होता है। मीठा बोल कर काम कर लेते है। बोलने में और युक्तिवाद में कुशल रहते है। सुख से जीवनयापन करने की कोशिश करते है। किसी के कनिष्ठ के रूप में काम करना नही चाहते। वृषभ, कन्या, तुला, मकर और कुम्भ में—नौकरी में सुख मानते है। व्यवसाय के क्षेत्र में, बडी मिलों या फर्मों में अधिकारी होते है। इन का कौटुम्बिक

जीवन ठीक नहीं रहता। पत्नी से नही बनती। दो विवाह होते है। मिलनसार नही होते। गुण न होते हुए भी अभिमानी होते है। नाटक या सिनेमा में खलनायक हो सकते है। यह विषैली दृष्टि का योग है। इन व्यक्तियों द्वारा प्रशंसित वस्तु या व्यक्ति का जल्दी ही विनाश होता है। मलिन स्त्रियों से सम्बन्ध होता है। पत्नी बीमार रहती है। बचपन में माता या पिता का मृत्यु होता है। अधिकतर पिता का मृत्युयोग होता है। सिर्फ तुला के शनि से मातापिता दीर्घायुषी भी पाये गये है। शिक्षा अधूरी छोड कर आजीविका के लिये यत्न करना पडता है। बडा व्यापार करने की इच्छा होती है किन्तु वह जल्दी पूरी नही होती। साझीदारी से यश मिलता है। पैतृक सम्पत्ति नही होती। हुई तो भी ट्रस्टियों के अयोग्य व्यवहार से प्राप्त नही होती। स्थावर जायदाद का दलाली व्यवहार कर सकते है। माता पिता जीवित हो तो उन से सम्बन्ध ठीक नही रहते। उन्हें अर्थिक मदद नही हो सकती। वे रहते है तब तक स्थिरता नही मिलती। जीवन में असफलता मिलने पर भी ये लोग दीर्घोद्योगी होते है। प्राचीन संस्कृती की रुचि रहती है। बरताव दम्भपूर्ण रहता है। स्त्रियों का आदर नही करते। मन की इच्छायें पूरी नही होती। स्वभाव दुष्ट, प्रतिशोध प्रिय, सहानुभूति से रहित होता है। जीवन में प्रगति का आरम्भ २६ वें वर्ष से होता है। ३६ वें वर्ष से अच्छी सफलता मिलती हैं। ५६ वें वर्ष तक सुस्थिति रहती है। २५ वें तथा ३१ वें वर्ष आर्थिक नुकसान होता है। घर में २॥, ७॥, १७॥, २७ तथा ३२ वें वर्ष मे किसी महत्व-पूर्ण व्यक्ति की मृत्यु होती है। लग्नस्थ शनि शुक्र से दूषित हो तो विवाह-सुख अच्छा नही मिलता—या तो विवाह होता नही, अथवा स्त्री की मृत्यु होती हैं, व्यभिचारी होते है, रखैल से सम्बन्ध रखते है। धनलाभ अच्छा हुवा तो पुत्र नही होते या होकर मृत्यु हो जाती है। कन्या सन्तति रहती है। साधारणत: व्यवसाय में हमेशा असफल रहता है, धन की कमी रहती है। क्वचित स्त्री एक ही होकर कीर्ति अच्छी प्राप्त होने के उदाहरण देखे है। यह शनि मंगल से दूषित हों तो अपघात होना, आकस्मिक मृत्यु, कारावास, घूस खाने के आरोप आदि कष्ट का अनुभव होता है। मेष, सिंह तथा धनु में—पसीने को बदबू आती है। कपडे अच्छे नही रहते-फटे

और मैले रहते है। प्रकृति नीरोग रहती है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में —सरदी, जुकाम, खांसी से हमेशा कष्ट होता है। बुढापे में बद्धकोष्ठ होता है। कभी कभी उन्माद, पागलपन, मूत्ररोग, बहुमूत्रमेह आदि रोग होते है। मिथुन, तुला तथा कुम्भ में—साधारणतः प्रकृति अच्छी रहती है। वातरोग हो सकते है। वृषभ, कन्या तथा मकर में—मूत्रकृच्छ, कफरोग उपदंश आदि की संभावना होती है।

प्रथम दर्शन में इन व्यक्तियों का अच्छा प्रभाव नही पडता। मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु तथा मीन में—स्वभाव बहुत अच्छा होता है किन्तु अच्छे परिचय बिना इस अच्छाई का अनुभव नही होता। अन्य राशियों में खलनायक की योग्यता होती हैं। कन्या, मकर, कुंभ तथा वृषभ में अपने स्वार्थ के लिये दूसरों का नुकसान करते है। बोलने में संगति नही रखते। झूठ बोलते है। गंभीरता बतलाते है। धूर्त होते है। अब लग्नस्थ शनि के कुछ उदाहरण देखिये—

(१) जन्म चैत्र शु. ८ शक १८५२ रविवार ता. ६-४-१९३० रात्रि १२ स्थान कऱ्हाड (महाराष्ट्र)। इस के पिता का मृत्यु २-१०-१९३०
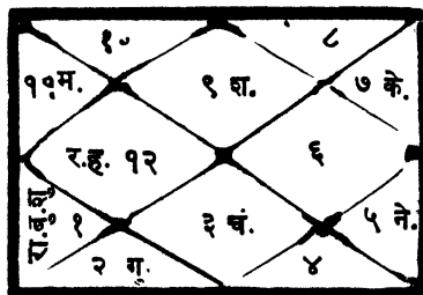
का हुआ। यहां लग्न में शनि है तथा रवि और चन्द्र से केन्द्रयोग है।

(२) जन्म आश्विन व. १२ शक १८३८ रात्रि ११-२५ स्थान बेलगांव

इस के आयु के दूसरे ही वर्ष में पिता अज्ञात स्थान में चला गया। लग्न में शनि और चतुर्थ में रवि का यह फल मिला।

(३) जन्म चैत्र शुद्ध ७ शक १८४६ इष्टघटी ३१-१२।
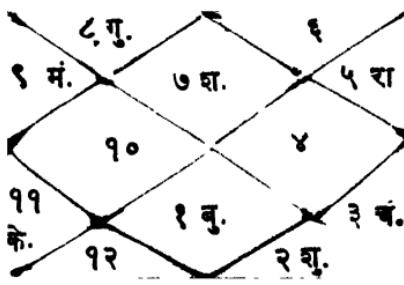
इस के पिता का मृत्यु इस के २० वें वर्ष हुआ।

(४) जन्म भाद्रपद शु. ८ शक १८०२ रविवार ता. १२-९-१८८० रात्रि ९ अक्षांश २१-९ रेखांश ७३-३६।
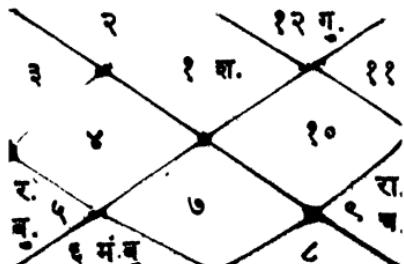
इस के ७ वें वर्ष में पिता ने हमेशा के लिये घर छोडकर कहीं प्रयाण किया।

(५) जन्म माघ व. १२ शक १८३४ दोपहर १२ अक्षांश १५–४२ रेखांश ७४–३८। इस के वृषभ लग्न में शनि है। आयु के ३ रे वर्ष माता का मृत्यु हुआ।

(६) श्री. गणपतराव खरे, अमरावती। जन्म भाद्रपद शु. ३ शक १८१७ ता. २३–८–१८९५।
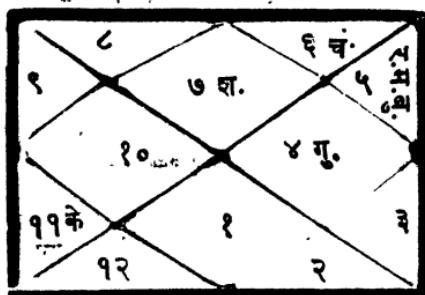
इन के दूसरे वर्ष में पिता का तथा २० वें वर्ष मे माता का मृत्यु हुआ।

अब लग्नस्थ शनि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरणों का निर्देश करते है—स्व. गोपाल कृष्ण गोखले (तुला लग्न), स्व. वासुदेव शास्त्री खरे (कर्क) स्व. वैद्य (सांगली रियासत के दीवान) (मिथुन), श्री. गणेश दामोदर सावलकर, राफेल, (मीन), श्री. दाजी नागेश आपटे बडौदा (मिथुन), डॉ. ग. कृ. गर्दे (मिथुन), भारतरत्न डॉ. अण्णासाहब कर्वे (कर्क), न्यायमूर्ति पुराणिक नागपुर (मिथुन)।

धनस्थान में शनि के फल

आचार्य–भूरिद्रव्यो नृपहृतधनो वक्त्ररोगी द्वितीये। यह बहुत धनवान किन्तु राजा के कोप से निर्धन होता है। मुखरोग होते है। यही वर्णन गुणाकर ने लिखा है।

कल्याणवर्मा--विकृतवदनोऽर्थभोक्ता जनरहितो न्यायकृत् कुटुम्बगते। पश्चात् परदेशगतो जनवाहनभोगवान् सौरे ॥ इस का मुख विकृत होता है। धन का उपभोग करता है। लोगों से मिल कर नही रहता। न्यायप्रिय होता है। आयु के उत्तरार्ध में विदेश जाता है। लोगों और वाहनों का सुख मिलता है।

वसिष्ठ--दु:खावहो धनविनाशकर: प्रदिष्ट:। यह दु:ख दे कर धन का नाश करता है।

पराशर--धनहानिश्च। धन की हानि होती है।

गर्ग--काष्ठांगाराल्लोहधन: कुकार्याद्धनसंचय:। नीचविद्यानुरक्तश्च ॥ धने मन्दे धनैर्हीनो निष्ठुरो दु:खितो भवेत्। मित्रसौम्यैर्युते दृष्टे धर्मसत्यदयान्वित: ॥ मृतवत्साभगिन्यादि गर्भस्त्रावादिकं वदेत्। प्रतिवेश्मादि बालानां विपत्तिरपि कथ्यते ॥ इसे लकडी, कोयले, लोहा आदि के व्यापार से तथा बुरे कामों से धन मिलता है। यह नीच विद्या का अभ्यास करता है। धनहीन, दु:खी तथा निष्ठुर होता है। इस के बहन की सन्तति जीवित नही रहती, गर्भपात होता है। घर तथा बच्चों की हानि होती है। इस शनि पर मित्र ग्रह या शुभ ग्रह की दृष्टि हो या उन के साथ हो तो वह व्यक्ति धार्मिक, दयालु और सत्यप्रिय होता है।

वैद्यनाथ--असत्यवादी चपलोऽटनोऽधन: शनौ कुटुम्बोपगते तु वंचक:। यह झूठ बोलनेवाला, चपल, प्रवास करनेवाला निर्धन तथा ठग होता है।

बृहद्यवनजातक--अन्यालयस्थो व्यसनाभिभूतो जनोज्झित: स्यात्सानुजश्च पश्चात्। देशान्तरे वाहनराजमान्यो धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ ॥ यह दूसरों के घर रहता है, विपत्तियों से पीडित, लोगों द्वारा छोडा गया होता है। इसे छोटे भाई नही होते। विदेश में वाहनों का सुख तथा राजा द्वारा मान्यता मिलती है। यही वर्णन ढूंढिराज ने दिया हैं।

आर्यग्रन्थ--धननिकेतनवर्तिनि भानुजे भवति वाक्यसुहासधनान्वित:। चपललोचनसंचयने रतो भवति चौर्यपरो नियतं सदा ॥ यह मधुर बोलता

है तथा धनवान होता है। इस की दृष्टि चपल होती है। संग्रह में तत्पर तथा चोरी करनेवाला होता है।

जयदेव---स्वजनपदगतोऽस्वोऽसौ कुटुम्बोज्झितः स्यात् परजनपदयन्ता सर्वसौख्योऽसिते स्वे ॥ यह अपने देश में हो तब तक निर्धन और कुटुम्ब-रहित होता हैं। विदेश में सब सुख मिलते है ।

काशीनाथ---धने मन्दे धनैर्हीनो वातपित्तकफातुरः। देहास्थिपित्त-रोगश्च गुणैः स्वल्पोपि जायते ॥ यह निर्धन, वात, पित्त, कफ तथा अस्थि रोग से पीडित और गुणहीन होता है।

मन्त्रेश्वर-विमुखमधनमर्थेऽन्यायवन्तं च पश्चात् इतरजनपदस्थं यान-भोगार्थयुक्तं ॥ यह धनहीन, अन्यायी और विद्रूप चेहरे का होता है। विदेश में जाने पर वाहन, धन तथा उपभोग प्राप्त होते है।

जागेश्वर---धने पंगुना विद्यमाने सुखं किं कुटुंबात् तथा क्लेशमाहुर्ज-नानाम्। न भोक्ता न वक्ता वदेन्निष्ठुरं वै धनं लोहजातं न शत्रोर्भयं स्यात्॥ इसे कुटुम्ब से कोई सुख नही मिलता। लोगों से कष्ट होता है। यह वक्ता नही होता-निष्ठुर बोलता है। उपभोग प्राप्त नही होते। इसे लोहे के व्यापार से धनप्राप्ति होती है। शत्रु का भय नही होता।

नारायणभट्ट---सुखापेक्षया वर्जितोऽसौ कुटुम्बात् कुटुम्बे शनौ वस्तु किं किं न भुंक्ते। समं वक्ति मित्रेण तिक्तं वचोपि प्रसक्ति विना लोहकं को लभेत ॥ यह सुख की इच्छा से कुटुम्ब छोड देता है। मित्रों से भी तीखा बोलता है। विविध वस्तुओं का उपभोग करता है। लोहे के व्यापार से फायदा होता है।

लखनऊ के नबाब-याबागी बदहालः कोतो दत्तश्ज गुस्वरो जोहलः। जरखाने यदि मनुजो नाढ्यः परदेशगश्चापि ॥ यह निर्धन, क्रोधी, दुःस्थिति में रहनेवाला तथा विदेश में जानेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर---यह साधारणतः दरिद्री होता है। दो विवाह होते है। मुखरोग होते है। नेत्र दुर्बल होते है। इस की शिक्षा में रुकावटे आती

है । भूमि कम रहती है । इस शनि के साथ पापग्रह हो तो बहुत अशुभ फल मिलते है ।

पाश्चात्य मत--इस शनि से धनहानि होती है तथा व्यापार में नुकसान होता है । शुभ संबध में हो तो लोकोपयोगी कार्य, कम्पनियां, शेअर, सट्टा, आदि में अच्छा लाभ होता है । अजीब चीजें (Curios) तथा पुरानी चीजों के व्यापार से फायदा होता है । शुभ सम्बन्ध में और विशेषकर तुला में यह शनि पैतृक सम्पत्ति अच्छी देता है । यह मितव्ययी, होशियार तथा दीर्घदर्शी होने से सम्पत्ति का विनियोग बडेबडे सुरक्षित व्यवसायों के विकास में करता है । इससे सम्पत्ति में अच्छी वृद्धि होती है। व्यवसायों के लिये पूंजी देनेवाले श्रीमानों (Financers) की कुण्डलियों में यह योग अक्सर पाया जाता है । यही शनि पीडित और निर्बल हों तो जीवनभर दरिद्री रहना पडता है । उदरनिर्वाह भी बहुत कष्ट से होता हैं । आर्थिक कष्ट होते रहता है । व्यापार या व्यवसाय मे हमेशा नुकसान होता हैं । बहुत श्रम करने पर भी लाभ नही होता । इस प्रकार इस स्थान में शनि के फल देखते समय शुभाशुभ सम्बन्ध देखना आवश्यक है ।

भृगुसूत्र--द्रव्याभावः । दारद्वयम् । पापयुते दारवंचना । मठाधिपः । अल्पक्षेत्रवान् । नेत्ररोगी ॥ यह धनहीन होता है । दो विवाह होते है । आंखों के रोग होते है । खेती कम रहती है । मठाधीश हो सकता है । यह शनि पापग्रह से युक्त हो तो स्त्रियों की वंचना करनेवाला होता है ।

हमारे विचार--इस स्थान में कुछ लेखकों ने बहुत अशुभ और अन्य लेखकों ने मिश्र फल बतलाये है । इनमें पूर्वार्जित सम्पत्ति के बारे में विशेष विचार करना चाहिये । साधारणतः शुक्र और गुरु इन दो ग्रहों को सम्पत्तिकारक माना जाता है क्योंकि नैसर्गिक कुण्डली में शुक्र धनस्थान का स्वामी होता है और भावकारक कुण्डली में गुरु को धनभावकारक माना है । किन्तु नैसर्गिक कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी शनि है और वैद्यनाथ तथा पराशर ने शनि के कारकत्व में भी सर्व सम्पत्ति और जीवनोपाय ये विषय दिये है । गुरु धन का नही-ज्ञान का कारक है । इसका विवेचन गुरुविचार में किया है । तात्पर्य, हमारे मत से शुक्र और

चतुर्थ स्थान के शनि के बारे में भी यही विचार करना चाहिये।

धनस्थान में शनि के प्रसिद्ध उदाहरण—स्व. अण्णासाहब लठ्ठे (बम्बई प्रदेश के अर्थमन्त्री) (मीन), स्व. रावबहादुर रंगनाथ नरसिंह मुधोलकर, अमरावती (मिथुन), स्व. सूर्यनारायणराव, विख्यात ज्योतिषी, मद्रास, (मिथुन), श्री. बोरकर ज्योतिषी, बम्बई (मकर), स्व. दादाभाई नौरोजी, विख्यात राष्ट्रनेता (वृषभ), स्व. सर माधवराव बर्वे (कोल्हापूर रियासत के दीवान) (कन्या), बैरिस्टर पेठकर (मकर), स्व. बैरिस्टर मुकुंदराव जयकर (मकर), महात्मा गांधीजी (वृश्चिक), बैरिस्टर पंजाबराव देशमुख (वृश्चिक), जर्मनी के शाह विलियम कैसर (कर्क), डॉक्टर खरे (भूतपूर्व मध्यप्रदेश के मुख्य मन्त्री (मेष)।

तृतीय स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर——मतिविक्रमवान् तृतीयगे यह बुद्धिमान और पराक्रमी होता है।

कल्याणवर्मा——मलिनोऽसंस्कृतदेहो नीचोऽलसपरिजनो भवति सौरे। शूरो दानानुरतो दुश्चिक्यगते विपुलबुद्धिः॥ यह अस्वच्छ, गन्दे शरीर का, नीच, शूर, उदार और बुद्धिमान होता है। इसके परिवार के लोग आलसी होते है।

वैद्यनाथ——अल्पाशी धनशीलवंशगुणवान् भ्रातृस्थिते भानुजे सौरिस्तृतीयेऽनुजनाशकर्ता॥ यह कम खाता है। धनवान, सुशील, कुलीन, गुणवान होता है। इसके छोटे भाइयों के लिये यह योग मारक है।

पराशर——तृतीये मित्रवर्धनं धनलाभं। पृष्ठेजातं शनैश्चरः॥ मित्र बढते है। धनलाभ होता है। छोटे भाई की मृत्यु होती है।

गर्ग——तथा तृतीयगे मन्दे सनरो भाग्यवान् भवेत्। भवेद् दोषस्थिता पीडा शरीरे तस्य सर्वदा॥ भ्रातृगो मन्दगः कुर्याद् भ्रातृस्वसृविनाशनम्। नृपतुल्यं च सुखिनं सततं कुरुते नरम्॥ सौरिः गर्भविनाशनं च नियतं

मन्त्रीश्वरो नान्यथा ॥ यह भाग्यवान, राजा जैसा सुखी, मन्त्री होता है। इसके शरीर में दोष होने से पीडा रहती है। भाईबहिनों का और सन्तति का नाश होता है।

जागेश्वर—यदा विक्रमे मन्दगामी कदुष्णं भवेन्मानसं भाग्यविघ्नः सदा स्यात्। भवेत् पालको वै बहूणां नराणां रणे विक्रमी भाग्यवान् हस्त-रोगी ॥ भवेद् भ्रातृकष्टं विदेशे प्रयाणं गृहे नो विरामं लभेद् बन्धुतोऽपि। भवेन्नीचसक्तो विरक्तोऽर्थधर्मे यदा विक्रमे सूर्यसूनुर्नराणां ॥ इसका मन साफ नही रहता। भाग्योदय में विघ्न आते है। यह बहुतों को आश्रय देता है। युद्ध में वीरता बतलाता है। हाथ के रोग होते है। भाइयों का कष्ट रहता है। यह देशान्तर में जाता है, घर में आराम नही पाता। भाइयों से अच्छा नाता नही रहता। यह नीचों की संगति में रहता है। धर्म तथा धन की फिक्र नही करता।

आर्यग्रन्थ—सहजमन्दिरगे तपनात्मजे भवति सर्वसहोदरनाशकः। तदनु-कूलनृपेण समो नरः स्वसुतपुत्रकलत्रसमन्वितः ॥ यह सभी भाइयों के लिये मारक होता है। स्त्रीपुत्रों से युक्त और राजा जैसा भाग्यवान होता है।

बृहद्यवनजातक—राजमान्यशुभवाहनयुक्तो ग्रामपो बहुपराक्रमशाली। पालको भवति भूरिजनानां मानवो रविसुतेऽनुजसंस्थे ॥ यह राजसभा में माननीय, उत्तम वाहनों से युक्त, गांव में मुख्य, पराक्रमी, बहुतों को आश्रय देनेवाला, होता है। यही वर्णन ढुंढिराज ने दिया है।

मन्त्रेश्वर—इसका वर्णन अबतक के कथन से विशेष भिन्न नही।

वसिष्ठ—स्त्रीणां प्रियं रविजस्तृतीये। यह स्त्रियों को प्रिय होता है।

काशीनाथ—छायात्मजे तृतीयस्थे प्रसन्नो गुणवत्सलः। शत्रुमर्दी नृणां मान्यो धनी शूरश्च जायते ॥ यह प्रसन्न, गुणवान, प्रेमल, शत्रु का नाश करनेवाला, सन्मानित, धनवान तथा शूर होता है।

लखनऊ के नवाब—जोरावरो यशीलः खुशदानो च मानवः सभ्यः। अनुचरवृन्दसमेतो भवति यदा वै बिरादरे जोहलः ॥ यह बलवान, विख्यात, प्रसन्न, बुद्धिमान सभ्य तथा सेवकों से युक्त होता है।

नारायणभट्ट--तृतीये शनौ शीतलं नैव चित्तं जनाद्युद्यमाज्जायते युक्तभाषी। अविघ्नं भवेत् कर्हिचित् नैव भाग्यं दृढाशा सुखी दुर्मुखः सत्कृपोऽपि ॥ इसका चित्त शान्त नही होता । यह उद्योगी और योग्य बोलने-वाला होता है । विघ्नों के बाद ही इसका भाग्योदय होता है । यह आशा-वादी, सुखी किन्तु असन्तुष्ट होता है । शनैश्चरस्तुलाकुम्भे मकरे च यदा भवेत् । आद्ये षष्ठतृतीये च तदारिष्टं न जायते ॥ तुला, कुम्भ या मकर लग्न हो और तृतीय या षष्ठ में शनि हो तो अरिष्ट नही आते ।

हरिवंश--भूपात् सौख्यं चारुकीर्तिः सुकान्तिः वित्ताधिक्यं वाहनानां समृद्धि । नैरुजांगं पालनं मानवानां भ्रातृस्थाने भानुजातः करोति ॥ इसे राजा से सुख प्राप्त होता है । कीर्ति, धन, वाहन, सौन्दर्य, आरोग्य तथा लोगों को आश्रय देने की शक्ति प्राप्त होती है ।

घोलप--यह भाग्यवान होता है किन्तु भाग्योदय के समय की इसे कल्पना नही होती । धन, पुत्र, घरबार, बल, आरोग्य से सपन्न होता है । शत्रुओं में आपस में झगडे लगाकर उनका नाश कराता है । राजा की कृपा से बहुतों को आश्रय देकर सुखी बनाता है । अपना इष्ट हेतु पूरा कराता है ।

गोपाल रत्नाकर--यह साहसी, दुष्ट, नौकर चाकरों से युक्त, धन-धान्य से सम्पन्न, खेती में रुचि लेनेवाला होता है । यह योग भाईयों के लिये हानिकर है ।

भृगुसूत्र--भ्रातृहानिकारकः, अदृष्टः, दुर्वृत्तः । उच्चे स्वक्षेत्रे भ्रातृ-वृद्धिः । तत्र पापयुते भ्रातृद्वेषी । प्रतापवान् ॥ यह भाइयों को हानि पहुंचाता है । यह दुराचारी होता है । उच्च या स्वक्षेत्र में हो तो भाईयों की वृद्धि होती है । पापग्रह साथ हो तो भाईयों का द्वेष करता है । यह प्रतापी होता है ।

पाश्चात्य मत--यह शनि शुभ सम्बन्ध में बलवान हो तो मन गम्भीर, स्थिर, शान्त विवेकी, सौम्य तथा विचारशील होता है । चित्त की एकाग्रता जलदी होती है । इसलिये विचार, मनन और एकाग्रता की जिन्हें जरूरत

होती है ऐसे विषयों का अध्ययन अच्छी तरह कर सकते है। शनि के प्रमुख शुभ लक्षण न्यायी, प्रामाणिक, चतुर होना–इनमें पाये जाते है। बुद्धि गहरी और सलाह अच्छी होती है। यही शनि पीडित या निर्बल हो तो रिश्तेदार, भाईबन्द, पडोसी आदि से बनती नही, उनसे सुख नही मिलता। शिक्षा पूरी नही होती। प्रवास से लाभ नही होता। लेखन, ग्रन्थों का प्रकाशन आदि में रुकावटें आती है। प्रवास में बरसात या ठंडे मौसम के कारण अस्वस्थता होती है। मन पर विद्वत्ता या उदात्त विचारों का संस्कार नही होता। दुःखी विचारों से परेशान होते है। आप्तमित्रों से इनका बहुत नुकसान होता है। ज्योतिष आदि गूढ शास्त्रों में रुचि रहती है। इस शनि का मंगल से अशुभ योग विश्वासघात, वंचना, ठगों के काम में कुशलता का कारण होता है। बुध से अशुभ योग चोरी की प्रवृत्ति निर्माण करता है। शुक्र से शुभ योग हंसी मजाक की प्रवृत्ति बतलाता है।

एलनलिओ—बन्धु या रिश्तेदारों से अच्छे सम्बन्ध नही रहते। उनसे मन मुटाव होता है और उनके कामों से नुकसान ही होता है।

हमारे विचार—तृतीयस्थान पापग्रहों के लिये निसर्गतः अच्छा समझा गया है इसलिये जागेश्वर को छोडकर अन्य लेखकों ने प्रायः शुभ फल दिये है। सिर्फ भ्रातृनाश यह फल प्रायः सभीने दिया है। उसमें भी छोटे भाई की मृत्यु का उल्लेख किया है। यथा–अग्रे जातं रविर्हन्ति पृष्ठे जातं शनैश्चरः। अग्रजं पृष्ठजं हन्ति सहजस्थो धरासुतः॥ तृतीयस्थ रवि से बडे भाई का, शनि से छोटे भाई का और मंगल से दोनों का मृत्युयोग होता है। पाश्चात्य विद्वानों ने इतना स्पष्ट वर्णन न कर मनमुटाव होना आदि साधारण फल बतलाये है। इस स्थान के शुभ फल मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि के शनि के है एवं अशुभ फल वृषभ, कन्या, तुला, मकर तथा कुम्भ के है।

हमारा अनुभव—इस स्थान में पुरुषराशि में शनि भाइयों के लिये अशुभ है। बडे और एक छोटे भाई की मृत्यु होती है। बहिनें विधवा होती है। अथवा उनका कौटुम्बिक जीवन ठीक नही रहता इसलिये भाई

के पास रहती है। स्त्रीराशि में शनि भाईयों का मृत्युयोग नही करता लेकिन उनसे मनमुटाव होता है। बँटवारा होता है। एकत्र (साथ२) रहे तो भाग्योदय में रुकावट आती हैं। आर्थिक स्थिति ठीक नही रहती। इस को जल्दी ही घर का बोझ सम्हालना पडता है। चाहे जिस मार्ग से प्रगति करता है। आवश्यकतानुसार दूसरों का नुकसान करके भी प्रगति करना चाहता है। स्वभाव दुष्ट और कुछ एकांतप्रिय होता है। यह विश्वास-योग्य नही होता। स्त्रीराशि में सन्तति देर से होती है। पुरुषराशि में सन्तति जलदी होती है किन्तु गर्भपात या एकाध सन्तति को मारक योग होता है। कन्या और तुला में—विवाह के बाद आर्थिक कष्ट होता है। व्यापार में नुकसान होता है। नौकरी में कष्ट होता है। मित्र नही रहते। स्वभाव आनन्दी व स्नेहल होता है। उद्योगी वृत्ति होती है। इनमें उत्साह और कुशलता होने पर भी इनके काम की कद्र नही होती। इनके आप्त-मित्र ही उन्नति में बाधक होते है। आपत्तियों में ये बहुत जल्दी घबरा जाते है। धैर्य नही रहता। गृहत्याग या आत्महत्या की कोशिश करते है। यह फल कन्या से तुला में अधिक देखा है। कर्क में भी कुछ कुछ ऐसा ही अनुभव मिला है। यह शनि पहले माता का और फिर पिता का मृत्यु-योग कराता है। सौतेली मां होने का अधिक सम्भव होता है। मकर और कुम्भ में दारिद्रय योग होता है यह पिता का इकलौता पुत्र होता है। एक बहन हो सकती है। ये लोग साधारणतः नास्तिक होते है। अपने कर्तृत्व पर अधिक भरोसा रखते है। लोगों पर विश्वास नही करते। हलके वर्गो में १३–१४ वें वर्ष से ही धनार्जन शुरू होता है। उत्तरोत्तर प्रगति होती है। यह शनि दीर्घायुत्व देता है। ये तेजस्वी होते है किन्तु प्रभाव नही पडता। बोलचाल में अधिकारी जैसे कुछ अलग से रहते है। शांत, विचारी, साधक बाधक बातों पर ध्यान देनेवाले होते है। यह शनि पूर्व आयु में स्थिरता नही देता। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में प्रवास बहुत होता है। कारस्थानी वृत्ति होती है। लोभी होते है। स्वार्थ के लिये दूसरों का नुकसान करते है। स्वभाव दुष्ट, निर्दय होता है। मित्र विशेष नही होते। ये किसी के बहलाव में नही आते। सावधान रहते है। अपने परिश्रम से उन्नति कर अधिकारी होते है और लोगों पर प्रभाव जमाते है। पुरुष

राशि में शिक्षा बहुधा नही होती। स्त्री राशि में शिक्षा अच्छी होती है। आत्मविश्वास बहुत रहता है।

तृतीयस्थ शनि के प्रसिद्ध उदाहरण–पण्डित मदनमोहन मालवीयजी (कन्या), श्रीमान भवानराव पन्तप्रतिनिधि (भूतपूर्व औंर रियासत के राजा) (सिंह), स्व. श्रीमान चुनीलाल सरैया (चांदी के विख्यात व्यापारी) (सिंह), स्व. अण्णासाहब कुरुन्दवाडकर (मकर), येवला के नगरसेठ गंगाराम छबीलदास (मकर)।

आत्महत्या के योग का एक उदाहरण–स्व.श्री. मधुकर गालवणकर–जन्म माघ कृ. १ शक १८१७, शुक्रवार ता. ३१–२–१८९६ स्थान वसई (बम्बई) इष्टघटी ३४–५० । लग्न ४–२६–२८–३ ।

व्यापार में दो साल बहुत नुकसान होने से इन्हें हृदयविकार हुआ। ता. ६–५–१९४१ को अफीम खाकर आत्महत्या की कोशिश की। उससे बचे। किंतु हृदयविकार से फरवरी १९४२ में मृत्यु हुआ। इनके तृतीय में उच्चस्थ शनि का यह फल मिला।

चतुर्थ स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर—विसुखः पीडितमानसश्चतुर्थे। यह दुखी और चिन्तातुर होता है।

कल्याणवर्मा–पीडितहृदयो हिबुके निर्बन्धववाहनार्थमतिसौख्यः बाल्ये व्याधितदेहो नखरोमधरो भवेत् सौरे ॥ इस के हृदय में पीडा रहती है।

रिश्तेदार, धन, वाहन, बुद्धि या सुख की प्राप्ति नही होती। बचपन में रोगी रहता है। नख और केश अधिक होते हैं।

वैद्यनाथ—आचारहीनः कपटी च मातृक्लेशान्वितो भानुसुते सुखस्थे। यह दुराचारी, कपटी होता है। माता का कष्ट होता है। सुखे मन्दे सुखक्षयः। इसे सुख नही मिलता।

वसिष्ठ—शनिः सुखवर्जितांगः। शरीर में सुख नही होता।

पराशर—सुखे सौख्यं शत्रुभिश्च समागमम्। शत्रुओं से संपर्क होकर सुख मिलता है।

गर्ग—भग्नासनोऽगृहो नित्यं विकलो दुःखपीडितः। स्थानभ्रंशमवाप्नोति सौरे बन्धुगतं नरः॥ यह अच्छे आसन या घर में नहीं रह पाता। हमेशा अस्वस्थ और दुखी रहता है। इसे अपने स्थान से हटना पडता है।

बृहद्यवनजातक—पित्तानिलं क्षीणबलं कुशीलमालस्ययुक्तं कलिदुर्बलागं। मालिन्यभाजं मनुजं विदध्यात् रसातलस्थो नलिनीशजन्मा॥ यह वात और पित्त के रोगों से युक्त, दुर्बल, व्यभिचारी, आलसी, मलिन और झगडालू होता है।

आर्यग्रन्थ—बन्धुस्थितो भानुसुतो नराणां करोति बंधोर्निधनं च रोगी। स्त्रीपुत्रभृत्येन विनाकृतश्च ग्रामान्तरे चासुखदः स वक्री॥ इसके बान्धवों का मृत्यु होता है। यह रोगी होता है। स्त्री, पुत्र, नौकरों से रहित होता है। वक्री हो तो विदेश में भी दुःख होता है।

नारायणभट्ट—चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं धनं मंदिरं बन्धुवर्गापवादः। पितुश्चापि मातुश्च सन्तापकारी गृहे वाहने हानयो वातरोगी॥ इसे पूर्वार्जित धन या घर आदि नही मिलता। आप्तों द्वारा निन्दा होती है। घर तथा वाहनों का नाश होता है। इसे वातरोग होते है।

जागेश्वर—चतुर्थे शनौ बन्धुवर्गैश्च वैरं धनं नैव भुंक्ते पितुर्वाहनाद्यं। न गेहे तदीये तथा वायुरोगी न सौख्यं च पित्रोः स्वयं तप्यतेऽसौ॥ यह वर्णन प्रायः नारायणभट्ट जैसा ही है।

मन्त्रेश्वर—दुःखी स्याद् गृहयानमातृवियुतो बाल्ये सरुग् बन्धुभे ।। यह दुखी, बचपन में रोगी तथा घर, वाहन और माता से वियुक्त होता है ।

काशीनाथ—सुखं मन्दे सुखैर्हीनो हृतार्थो बान्धवैर्नरः । गुणस्वभावो दुःसंगी कुजनैश्च न संशयः ।। यह सुखरहित, गुणी किन्तु बुरी संगति में रहनेवाला होता है । इसके रिश्तेदार इसे धनहीन बनाते है ।

जयदेव—बहुवित्तवातसहितो विबलोलसकार्श्यदुःखसहितः सुखगे ।। यह धनयुक्त, वातरोगी, दुर्बल, आलसी, कृश और दुखी होता है ।

लखनऊ के नवाब—मुतफक्किरो बेहोषः परितृप्तो मानसो जोहलः । मादरखाने यदि स्यात् कमजोरश्च लागरो भवति ।। यह चिन्तातुर, उद्विग्न, बलहीन, कृश और समाधानी वृत्ति का होता है ।

घोलप—यह कृश, क्रूर, तामसी, तामसी संगति में रहनेवाला, उर्ध्व-वायु से बलहीन, अल्पवीर्य तथा दिन व्यर्थ गंवानेवाला होता है ।

गोपाल रत्नाकर—यह पिता को मारक योग है । सौतेली मां होती है । शूलरोगी, दुखी, कपटी, राजा द्वारा पीडित, पूर्वार्जित सम्पत्ति से रहित, मजदूरी करनेवाला, भूमिरहित होता है ।

मृगुसूत्र—मातृहानिः । द्विमातृवान् । सौख्यहीनः । निर्धनः । उच्चे स्वक्षेत्रे न दोषः । अश्वान्दोलनावश्ववरोही । लग्नेशे मन्दे मातृदीर्घायुः सौख्यवान् । रन्ध्रेशयुक्ते मात्रारिष्टं सुखहानिः । माता की मृत्यु होकर सौतेली मां होती है । यह सुखहीन, निर्धन होता है । शनि उच्च या स्वक्षेत्र में हो तो यह दोष नही होते । घोडे या पालकी की सवारी मिलती हैं । यह शनि लग्नेश हो तो माता दीर्घायु होती है और सुखी होता है । अष्टमेश से युक्त हो तो माता का मृत्यु होकर कष्ट होता है ।

पाश्चात्य मत—यह शनि मकर, कुम्भ या तुला में शुभ सम्बन्ध में हो तो पूर्वार्जित इस्टेट अच्छी मिलती है । जमीन, घरबार, खेती, खानों के व्यवहार में लाभ होता है । उत्तर वय में अच्छा फायदा होता है । ये लोभी होते है । मृत्यु समय तक अधिकाधिक धन प्राप्त करना चाहते है । यह शनि निर्बल तथा पीडित हो तो माता या पिता का मृत्युयोग जल्दी

के पास रहती है। स्त्रीराशि में शनि भाईयों का मृत्युयोग नही करता लेकिन उनसे मनमुटाव होता है। बँटवारा होता है। एकत्र (साथ२) रहे तो भाग्योदय में रुकावट आती है। आर्थिक स्थिति ठीक नही रहती। इस को जल्दी ही घर का बोझ सम्हालना पडता है। चाहे जिस मार्ग से प्रगति करता है। आवश्यकतानुसार दूसरों का नुकसान करके भी प्रगति करना चाहता है। स्वभाव दुष्ट और कुछ एकांतप्रिय होता है। यह विश्वास-योग्य नही होता। स्त्रीराशि में सन्तति देर से होती है। पुरुषराशि में सन्तति जलदी होती है किन्तु गर्भपात या एकाध सन्तति को मारक योग होता है। कन्या और तुला में--विवाह के बाद आर्थिक कष्ट होता है। व्यापार में नुकसान होता है। नौकरी में कष्ट होता है। मित्र नही रहते। स्वभाव आनन्दी व स्नेहल होता है। उद्योगी वृत्ति होती है। इनमें उत्साह और कुशलता होने पर भी इनके काम की कद्र नही होती। इनके आप्त-मित्र ही उन्नति में बाधक होते है। आपत्तियों में ये बहुत जल्दी घबरा जाते है। धैर्य नही रहता। गृहत्याग या आत्महत्या की कोशिश करते है। यह फल कन्या से तुला में अधिक देखा है। कर्क में भी कुछ कुछ ऐसा ही अनुभव मिला है। यह शनि पहले माता का और फिर पिता का मृत्यु-योग कराता है। सौतेली मां होने का अधिक सम्भव होता है। मकर और कुम्भ में दारिद्रय योग होता है यह पिता का इकलौता पुत्र होता है। एक बहन हो सकती है। ये लोग साधारणत: नास्तिक होते है। अपने कर्तृत्व पर अधिक भरोसा रखते है। लोगों पर विश्वास नही करते। हलके वर्गो में १३--१४ वें वर्ष से ही धनार्जन शुरू होता है। उत्तरोत्तर प्रगति होती है। यह शनि दीर्घायुत्व देता है। ये तेजस्वी होते है किन्तु प्रभाव नही पडता। बोलचाल में अधिकारी जैसे कुछ अलग से रहते है। शांत, विचारी, साधक बाधक बातों पर ध्यान देनेवाले होते है। यह शनि पूर्व आयु में स्थिरता नही देता। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में प्रवास बहुत होता है। कारस्थानी वृत्ति होती है। लोभी होते है। स्वार्थ के लिये दूसरों का नुकसान करते है। स्वभाव दुष्ट, निर्दय होता है। मित्र विशेष नही होते। ये किसी के बहलाव में नही आते। सावधान रहते है। अपने परिश्रम से उन्नति कर अधिकारी होते है और लोगों पर प्रभाव जमाते है। पुरुष

राशि में शिक्षा बहुधा नही होती। स्त्री राशि में शिक्षा अच्छी होती है। आत्मविश्वास बहुत रहता है।

तृतीयस्थ शनि के प्रसिद्ध उदाहरण–पण्डित मदनमोहन मालवीयजी (कन्या), श्रीमान भवानराव पन्तप्रतिनिधि (भूतपूर्व औंध रियासत के राजा) (सिंह), स्व. श्रीमान चुनीलाल सरैया (चांदी के विख्यात व्यापारी) (सिंह), स्व. अण्णासाहब कुरुन्दवाडकर (मकर), येवला के नगरसेठ गंगाराम छबीलदास (मकर)।

आत्महत्या के योग का एक उदाहरण–स्व.श्री. मधुकर गालवणकर–जन्म माघ कृ. १ शक १८१७, शुक्रवार ता. ३१–२–१८९६ स्थान वसई (बम्बई) इष्टघटी ३४–५० । लग्न ४–२६–२८–३ ।

व्यापार में दो साल बहुत नुकसान होने से इन्हें हृदयविकार हुआ। ता. ६–५–१९४१ को अफीम खाकर आत्महत्या की कोशिश की। उससे बचे। किंतु हृदयविकार से फरवरी १९४२ में मृत्यु हुआ। इनके तृतीय में उच्चस्थ शनि का यह फल मिला।

चतुर्थ स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर—विसुखः पीडितमानसश्चतुर्थे। यह दुखी और चिन्तातुर होता है।

कल्याणवर्मा–पीडितहृदयो हिबुके निर्बान्धववाहनार्थमतिसौख्यः बाल्ये व्याधितदेहो नखरोमधरो भवेत् सौरे ॥ इस के हृदय में पीड़ा रहती है।

रिश्तेदार, धन, वाहन, बुद्धि या सुख की प्राप्ति नही होती। बचपन में रोगी रहता है। नख और केश अधिक होते है।

वैद्यनाथ—आचारहीनः कपटी च मातृक्लेशान्वितो भानुसुते सुखस्थे। यह दुराचारी, कपटी होता है। माता का कष्ट होता है। सुखे मन्दे सुखक्षयः। इसे सुख नही मिलता।

वसिष्ठ—शनिः सुखवर्जितांगः। शरीर में सुख नही होता।

पराशर—सुखे सौख्यं शत्रुभिश्च समागमम्। शत्रुओं से संपर्क होकर सुख मिलता है।

गर्ग—भग्नासनोऽगृहो नित्यं विकलो दुःखपीडितः। स्थानभ्रंशमवाप्नोति सौरे बन्धुगतं नरः॥ यह अच्छे आसन या घर में नहीं रह पाता। हमेशा अस्वस्थ और दुखी रहता है। इसे अपने स्थान से हटना पडता है।

बृहद्यवनजातक—पित्तानिलं क्षीणबलं कुशीलमालस्ययुक्तं कलिदुर्बलांगं। मालिन्यभाजं मनुजं विदध्यात् रसातलस्थो नलिनीशजन्मा॥ यह वात और पित्त के रोगों से युक्त, दुर्बल, व्यभिचारी, आलसी, मलिन और झगडालू होता है।

आर्यग्रन्थ—बन्धुस्थितो भानुसुतो नराणां करोति बंधोर्निधनं च रोगी। स्त्रीपुत्रभृत्येन विनाकृतश्च ग्रामान्तरे चासुखदः स वक्री॥ इसके बान्धवों का मृत्यु होता है। यह रोगी होता है। स्त्री, पुत्र, नौकरों से रहित होता है। वक्री हो तो विदेश में भी दुःख होता है।

नारायणभट्ट—चतुर्थे शनी पैतृकं याति दूरं धनं मंदिरं बन्धुवर्गापवादः। पितुश्चापि मातुश्च सन्तापकारी गृहे वाहने हानयो वातरोगी॥ इसे पूर्वार्जित धन या घर आदि नही मिलता। आप्तों द्वारा निन्दा होती है। घर तथा वाहनों का नाश होता है। इसे वातरोग होते है।

जागेश्वर—चतुर्थे शनौ बन्धुवर्गैश्च वैरं धनं नैव भुंक्ते पितुर्वाहनाद्यं। न गेहे तदीये तथा वायुरोगी न सौख्यं च पित्रोः स्वयं तप्यतेऽसौ॥ यह वर्णन प्रायः नारायणभट्ट जैसा ही है।

मन्त्रेश्वर—दुःखी स्याद् गृहयानमातृवियुतो बाल्ये सरुग् बन्धुभे ।। यह दुखी, बचपन में रोगी तथा घर, वाहन और माता से वियुक्त होता है ।

काशीनाथ—सुखं मन्दे सुखैर्हीनो हृतार्थो बान्धवैर्नरः । गुणस्वभावो दुःसंगी कुजनैश्च न संशयः ।। यह सुखरहित, गुणी किन्तु बुरी संगति में रहनेवाला होता है । इसके रिश्तेदार इसे धनहीन बनाते हैं ।

जयदेव—बहुवित्तवातसहितो विबलोलसकार्श्यदुःखसहितः सुखगे ।। यह धनयुक्त, वातरोगी, दुर्बल, आलसी, कृश और दुखी होता है ।

लखनऊ के नवाब—मुतफक्किरो बेहोषः परितृप्तो मानसो जोहलः । मादरखाने यदि स्यात् कमजोरश्च लागरो भवति ।। यह चिन्तातुर, उद्विग्न, बलहीन, कृश और समाधानी वृत्ति का होता है ।

घोलप—यह कृश, क्रूर, तामसी, तामसी संगति में रहनेवाला, उर्ध्व-वायु से बलहीन, अल्पवीर्य तथा दिन व्यर्थ गंवानेवाला होता है ।

गोपाल रत्नाकर—यह पिता को मारक योग है । सौतेली मां होती है । शूलरोगी, दुखी, कपटी, राजा द्वारा पीडित, पूर्वार्जित सम्पत्ति से रहित, मजदूरी करनेवाला, भूमिरहित होता है ।

भृगुसूत्र—मातृहानिः । द्विमातृवान् । सौख्यहीनः । निर्धनः । उच्चे स्वक्षेत्रे न दोषः । अश्वान्दोलनावधवरोही । लग्नेशे मन्दे मातृदीर्घायुः सौख्यवान् । रन्ध्रेशयुक्ते मात्रारिष्टं सुखहानिः । माता की मृत्यु होकर सौतेली मां होती है । यह सुखहीन, निर्धन होता है । शनि उच्च या स्वक्षेत्र में हो तो यह दोष नही होते । घोडे या पालकी की सवारी मिलती हैं । यह शनि लग्नेश हो तो माता दीर्घायु होती है और सुखी होता है । अष्टमेश से युक्त हो तो माता का मृत्यु होकर कष्ट होता है ।

पाश्चात्य मत—यह शनि मकर, कुम्भ या तुला में शुभ सम्बन्ध में हो तो पूर्वार्जित इस्टेट अच्छी मिलती है । जमीन, घरबार, खेती, खानों के व्यवहार में लाभ होता हैं । उत्तर वय में अच्छा फायदा होता है । ये लोभी होते है । मृत्यु समय तक अधिकाधिक धन प्राप्त करना चाहते है । यह शनि निर्बल तथा पीडित हो तो माता या पिता का मृत्युयोग जल्दी

होता है । गृहसौख्य नही मिलता । जमीन, खेती, इस्टेट का नुकसान होता है । जीवन के आखरी दिन बहुत अशुभ होते हैं । चतुर्थ में शनि शुभ हो या न हों–उत्तर आयु में एकांतप्रिय और संन्यासी वृत्ति होता है । यह कभी कभी अपनी उन्नति के प्रतिकूल भी होता है । दैववशात् किसी एक ही स्थान में अटकना पडता है ।

हमारे विचार—इस स्थान में प्राय: सभी ने अशुभ फल बतलाये है, ये मुख्यत: स्त्री राशियों के है । पुरुष राशियों में कुछ शुभ फल मिलते है। किन्तु बचपन और बुढापे में कष्ट ही होता है । इनको मानो पूर्वजन्म में सब सुख मिले होते है और यह जन्म दुख के लिये ही है ऐसा प्रतीत होता है । इसलिये मृत्यु के समय मानों ये मृत्यु का स्वागत ही करते है–इतनी दुखद स्थिति रहती है ।

हमारा अनुभव—इस स्थान में पुरुष राशि में शनि माता से पहले पिता का मृत्यु योग कराता है । क्वचित ही माता का मृत्यु पहले होता है । जिसका मृत्यु बाद में हो उससे सम्बन्ध ठीक नही रहते । उसके जीवित रहते भाग्योदय नही होता । मानसिक या शारीरिक कष्ट बना रहता है । मेष, कर्क, सिंह, तुला, धनु, वृश्चिक, मीन तथा मिथुन में यह शनि सरकारी नौकरी में यश देता है–मॅजिस्ट्रेट, सबजज, आइ. ए. एस., डॉक्टर, वकील आदि होते है । विज्ञान की उपाधियाँ–बी. एस-सी,, एम. एस-सी; डी. एस-सी. आदि प्राप्त हो सकती है । यह शनि द्विभार्यायोग कराता है । वृषभ, कन्या, मकर तथा कुम्भ में व्यापारी होते है । नौकरी की तो बहुत समय एक ही स्थान में पडे रहते है । तरक्की नही होती । यह बहुधा पिता का इकलौता लडका होता है । पैतृक सम्पत्ति नही मिलती । व्यापार में शुरू में स्थिरता नही रहती । हमेशा दिवालिया होने का या गांव छोडने का डर बना रहता है । बेइज्जती होने के अवसर आते है । स्त्री राशि में यह शनि सौतेली मां का अस्तित्व बतलाता है । द्विभार्यायोग होता हैं । पुरुष राशि में साधारणत: ४८ से ५२ वें वर्ष में पत्नी की मृत्यु होती है । ये लोग साधारणत: उदार, शांत, गम्भीर, उदात्त, सावधान, विपत्ति में धीरता रखनेवाले, विरक्त प्रवृत्ति के होते है । इनके वस्त्र

अच्छे नही रहते, जल्दी मैले होते है और फटते है। ये निर्लोभी, न्यायी, निर्व्यसनी तथा अतिथि सत्कार में दक्ष होते हैं। ये बडी संस्थाओं के लिये सम्पत्ति अर्पण करते है। इस योग के कुछ उदाहरण-बैरिस्टर चित्तरंजन दास, डाक्टर राशबिहारी घोष, डाक्टर आशुतोष मुकर्जी, रावबहादुर डी. लक्ष्मीनारायण, बम्बई के श्री. अनन्त शिवाजी देसाई टोपीवाले, पुलगांव मिल तथा द्रविड हायस्कूल (वाई) के स्थापक श्री. भिकाजी कृष्ण द्रविड आदि। अति उदारता से कभी कभी उत्तर वय में दरिद्रता भी होती है। साधारणत: इन लोगों का घर में व्यवहार प्रेमपूर्ण नही होता। अधिकारी जैसा रौब से रहना चाहते है। इस लिये वृद्धावस्था में पत्नी तथा पुत्रों से इन्हें अच्छा बर्ताव नही मिलता। ये लोग अपनी जन्मभूमि में उन्नति नही कर पाते। सन्तति की दृष्टि से-मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में विपुल; मिथुन, तुला, कुम्भ में बहुत कम या नही होना, और वृषभ, कन्या, मकर में मध्यम प्रमाण पाया गया है। यह शनि किसी तरुण पुत्र की मृत्यु का योग करता है। पूर्वार्जित इस्टेंट नही होती। रही भी तो कायम नही रहती और वह नष्ट होने पर ही भाग्योदय हो सकता है। पूर्व आयु में ३६ वें वर्ष तक कष्ट रहता है। तदनन्तर ५६ वें वर्ष तक अच्छी स्थिति रहती है। यह दत्तक पुत्र होने का योग है। अपनी जन्मभूमि में इनकी प्रगति नही होती; किसी दूर के प्रदेश में तरक्की कर सकते है। वृषभ, कन्या, मकर में पश्चिम की ओर और अन्य राशियों में उत्तर की ओर के प्रदेश अनुकूल होते हैं। विमान-प्रवास में इन्हें डर रहता है। वृद्धावस्था में इनकी सम्पत्ति कायम नही रहती। दान में बहुत खर्च हो जाता है। फिर भी बडे व्यवसाय करने की कोशिश करते है। उसमें नुकसान होता है। स्त्रीपुत्रों की सम्पत्ति कायम रह सकती है। चतुर्थ का शनि बहुत दूषित हो तो पिता का मृत्यु बचपन में होना, सौतेली मां द्वारा कष्ट होना, अस्थिरता, हमेशा कर्ज रहना, कर्ज के लिये कारावास, पुत्रों से कष्ट होना, द्विभार्यायोग, धन का संचय न होना, जन्मभूमि में प्रगति न होना, ये सब फल मिलते है। किन्तु ये अपने विशिष्ट मित्रवर्ग में नेतृत्व प्राप्त करते है। इनका मृत्यु पूर्व आभास मिलकर समाधानपूर्वक वासनारहित स्थिति में होता है। ये दयालु होते है। मायावी नही होते।

इन्हे आयु के ८।१८।२२।२८।४०।५२ वें वर्ष में शारीरिक कष्ट बहुत होता है। २२ वें तथा २७ वें वर्ष कुटुम्ब में मृत्युयोग होता है। २८ वें वर्ष जीविका को आरम्भ होता है। १६।२२।२४।२७।३६ ये भाग्यकारक वर्ष होते है। नौकरी मिलना, विवाह, सन्तति होना आदि शुभ योग इन वर्षो में देखना चाहिये ये लोग माता की मृत्यु का विचार करते है ऐसा कुछ उदाहरणों में प्रतीत हुआ है।

एक उदाहरण—श्री. किसनसिंग, नगरकर, जन्म वैशाख व. ३० शके १७७९ रविवार, इष्ट घटी ८-१५ स्थान अहमदनगर। बचपन में माता-पिता से कष्ट होने से नगर छोड कर यवतमाल में रहे। शिक्षा नही हुई।
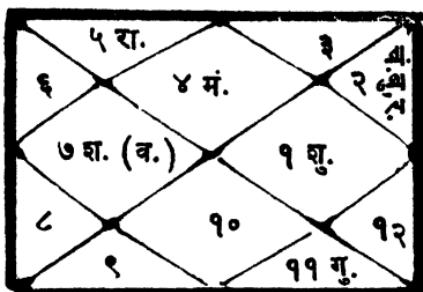
जंगल विभाग में नौकर हुए। माता का मृत्यु जलदी हुआ। पिता जीवित थे किन्तु सम्बन्ध अच्छे नही रहे। पेन्शन के बाद अमरावती रहे। इनके चार विवाह हुए; तीसरे विवाह के बाद भाग्योदय शुरू हुआ। पुत्र एक हुआ। सन्मान और सम्पत्ति का सुख अच्छा मिला। कौटुम्बिक सुख नही मिला। अन्य प्रसिद्ध उदाहरण—

बैरिस्टर रामराव देशमुख (भूतपूर्व मन्त्री, मध्यप्रदेश) (कन्या राशी मे शनि), स्व. गंगाधरराव देशपांडे (कर्नाटक के काँग्रेस नेता) (धनु राशि मे शनि), स्व. दादा साहब करन्दीकर (सातारा) (कर्क राशि मे शनि), , श्री. केशवराव गोंधलेकर (जगद्धितेच्छु प्रेस, पूना) (वृश्चिक राशि मे शनि), प्रिन्सिपाल आपटे (उज्जैन) (धनु राशि मे शनि), रूस के झार निकोलस (वृश्चिक राशि मे शनि)।

-०--

पंचम स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर—अपुत्रो धनहीनः। इसे सन्तति और सम्पत्ति नही मिलती।

कल्याणवर्मा—सुखसुतमित्रविहीनं मतिरहितं चेतसं त्रिकोणस्थः। सोन्मादं रवितनयः करोति पुरुषं सदा दीनम्॥ यह दुखी, पुत्ररहित, मित्र-रहित, बुद्धिहीन, उन्मत्त और हमेशा दीन होता है।

वैद्यनाथ—मत्तश्चिरायुरसुखी चपलश्च धर्मी जातो जितारिनिचयः सुतगेऽर्कपुत्रे। यह उन्मत्त, दुःखी, चंचल, धार्मिक, शत्रुओं को जीतनेवाला तथा दीर्घायु होता है।

पराशर—पंचमे पुत्रलाभं च बुद्धिमुद्यमसिद्धिकृत्। यह बुद्धिमान, उद्योगी तथा पुत्रों से युक्त होता है।

वसिष्ठ—शनिस्तनुजगोऽपुत्रम्॥ पुत्र नही होते।

गर्ग—सुतभवनगतोऽरिमन्दिरस्थः सकलसुतान् विनिहन्ति मन्दगामी। समुदितकिरणः स्वतुंगभस्थः कथमपि जनयेत् सुतीक्ष्णमेकपुत्रम्॥ यह शनि शत्रुग्रह की राशि में हो तो सब पुत्रों का नाश होता है। तेजस्वी, उच्च मे या स्वराशि में हो तो किसी तरह एक पुत्र अच्छा होता है। बुद्धिः कुटिला मन्दः। बुद्धि कुटिल होती है। घटशनिः सुतगः सुतपंचकी मृगश-निश्च सुतात्रयदस्तथा। यह शनि कुम्भ राशि में हो तो पांच पुत्र होते है और मकर में हों तो तीन कन्याएं होती है।

बृहद्यवनजातक—सुजर्जरं क्षीणतरं वपुश्च धनेन हीनत्वमनगहीनम्। प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रास्थितः पुत्रभयं करोति॥ इसका शरीर दुबला और जर्जर होता है। यह निर्धन और कामेच्छारहित होता है। पुत्रों को भय रहता है।

आर्यग्रन्थकार—गर्ग के समान वर्णन है।

जागेश्वर—शनिः पंचमे सन्ततिर्दुःखिता स्यात् तथा मन्ददुःखी धनीनां विरोधी। भवेद् बुद्धिहीनस्तथा धर्मरोधी सदा मित्रतः क्लेशकारी नरः स्यात्॥

इसकी सन्तति दुःखित रहती है। धनवानों का विरोधक, बुद्धिहीन, नास्तिक, मित्रों से कष्ट पानेवाला तथा गलत सलाह से दुखी होता है।

काशीनाथ—पुत्रे मन्दे पुत्रहीनः क्रियाकीर्तिविवर्जितः। हीनकोशो विरूपश्च मानवो भवति ध्रुवम्॥ इसे पुत्र, कीर्ति, धन, रूप इनका सुख प्राप्त नही होता।

नारायणभट्ट—शनौ पंचमे च प्रजाहेतुदुःखी विभूतिश्चला तस्य बुद्धिर्न शुद्धा। रतिर्दैवते शब्दशास्त्रे न तद्वत् कलिर्मित्रतो मन्त्रतः क्रोऽपीडा॥ यह सन्तति के लिये दुखी रहता है। इस का वैभव अस्थिर और बुद्धि अशुद्ध होती है। धर्म और शास्त्रों पर श्रद्धा नही होती। मित्रों से झगडे होते है। हृदय या पेट में कष्ट होता है।

मन्त्रेश्वर—भ्रान्तो ज्ञानसुतार्थहर्षरहितो धीस्थे शठो दुर्मतिः। यह ज्ञान, पुत्र, धन और आनन्द से रहित होता है। दुर्बुद्धि, भ्रमयुक्त और दुष्ट होता है।

जयदेव—इसका वर्णन मन्त्रेश्वर तथा यवनजातक के समान है।

लखनऊ के नबाब—बदअक्लो मुत्फकिरः सुतसुखरहितश्च काहिलो मनुजः। जोहलः पंजुमखाने कोतहदेहश्च जाहिलो भवति। यह निर्बुद्ध, चिन्तित, पुत्ररहित, दुखी, आलसी और नाटा होता है।

घोलप—यह हमेशा चिन्तित, निर्धन, श्रेष्ठ विद्वान होकर भी दुष्टों के संसर्ग से नीचता प्राप्त करनेवाला, कुटिल, मुत्सद्दी, कूटनीतिज्ञ, कामक्रोधमदमत्सर से युक्त, दुर्जनों के आश्रय से हीन तथा स्त्रीपुत्रों के सुख से वंचित होता है।

गोपाल रत्नाकर—सन्तति में विघ्न होता है। बुद्धि और विचार दुष्ट होते है। राजा का कोप होता है। मिथुन, कन्या, धन या मीन में यह शनि हो तो गोद लेने या लिये जाने का योग होता है।

भृगुसूत्र—पुत्रहीनः अतिदरिद्री दुर्वृत्तः दत्तपुत्रः। स्वक्षेत्रे स्त्रीप्रजासिद्धिः। गुरुदृष्टे स्त्रीद्वयम् तत्र प्रथमाऽपुत्रा द्वितीया पुत्रवती। बलयुते मन्दे स्त्रीभिर्युक्तः॥ यह पुत्रहीन, बहुत दरिद्री दुराचारी, दत्तक पुत्र

होता है। यह शनि स्वगृह में हो तो कन्याएं होती है। गुरु की दृष्टि हो तो दो विवाह होकर दूसरी पत्नी को पुत्र होता है, पहली को सन्तति नही होती। शनि बलवान हो तो यह स्त्रियों से युक्त होता है।

पाश्चात्य मत—गुरु या रवि से शुभ सम्बन्ध में हो तो यह शनि अपने कारकत्व के व्यवहारों-जमीन, खाने, घर आदि के व्यवहारों में सफलता देता है। सार्वजनिक अधिकारपद से लाभ होता है। विशेषत: शिक्षा के क्षेत्र में यह योग लाभप्रद है। यह शनि पीडित हो तो प्रेम प्रकरणों में असफल होना, अपने से अधिक आयु वाले व्यक्ति से प्रेम होना ये फल होते है। सन्तति नही होती अथवा होकर दुर्लौकिक को कारणीभूत होती है। स्त्रियों को पेट में शूल होना, ऋतुप्राप्ति के बाद बहुत वर्षो से सन्तति होना, दो सन्तानों में ५।७।९।११।१३ वर्षो जितना दीर्घ अन्तर रहना, प्रसूति का समय बहुत देर से होना ये फल शनि १।३।५।७।९।११ इन स्थानों मे हो तो पाये जाते है। ५।९।११ इन स्थानों में विशेषत: ये फल मिलते है। इस पीडित शनि से सट्टे के व्यवहार में, लॉटरी में, रेस में नुकसान होता हैं। इस व्यक्ति का मृत्यु हृदयविकार से या पानी मे डूबने से होता है। सन्तति अनीतिमान, व्यसनी होती है।

हमारे विचार—पंचमस्थान बलवान शुभ त्रिकोण स्थान है, अत: इसमें शनि जैसे पापग्रह के फल अशुभ ही होंगे। यह प्राचीन आचार्यो का मत प्रतीत होता हैं। किन्तु ये अशुभ फल मुख्यत: वृषभ, कन्या, तुला, मकर तथा कुंभ इन राशियों में मिलते है अन्य शुभ फल-जैसे पराशर आदि ने कहे है-अन्य राशियों में प्राप्त होते है।

हमारा अनुभव—मेष और सिंह में पंचमस्थ शनि से शिक्षा पूरी होती है। पहले शनि के कारकत्व के विषय बतलाये है उन में निपुणता प्राप्त होती है। धनु में शिक्षा पूरी नही होती। इन तीन राशियों में स्वभाव कुछ आविश्वासी, मन के विचार छुपानेवाला, अपने ही विचार से चलनेवाला, संशयी होता है। किसी पर प्रेम नही होता। सिर्फ अपने सुख की फिक्र होती है। कुछ अहंकारी होता है। मुंह पर प्रशंसा कर पीछे निन्दा करता है। घर में पत्नी को बहुत चाहेंगे किन्तु बाहर जाने

पर उस का स्मरण नही रहेगा। स्वभाव दुष्ट, प्रतिशोधपूर्ण होता है। किन्तु लोगों को इनसे विशेष कष्ट नही होता। ये लोगों के बारे में गलतफहमी कर लेते है। मीठा बोल कर गप्पें लडाते है। आलसी होते है, कोई भी काम जल्दी नही करते। किन्तु हमेशा काम मे लगे रहे जैसा बर्ताव होता है। इन्हें सन्तति काफी होती है। कुछ पुत्र बडे होकर इनके पहले ही मृत होते है। आखिर एक या दो पुत्र और कन्याएं जीवित रहते है। विवाह एक ही होता है। कर्क वृश्चिक तथा मीन में सन्तति काफी और बहुत कम अन्तरसे होती है। ये स्वभाव से दुष्ट, प्रतिशोधपूर्ण होते है। लोगों पर इनका असर भी अधिक होता है। ये बहुत झगडालू होते है। ये रेल, बैंक या बीमा कम्पनी, सार्वजनिक संस्थाएं, म्युनिसिपालिटी, जनपद या जिलापरिषद, विधानसभा, संसद आदि में अधिकारपद प्राप्त करते है। ये स्वार्थी होकर भी शिक्षा संस्था आदि के लिये कुछ कार्य करते है। वृषभ, कन्या, मकर में स्वभाव निरुपद्रवी, अपने काम में तत्पर, दूसरों के व्यवहार में दखल न देनेवाला होता है। आनन्दी, मौजी, मित्रों के शौकीन, स्वभाव से साधारण अच्छे होते है। इन्हें सन्ततिसुख नही होता या बहुत कम मिलता है। पत्नीको गर्भाशय सम्बन्धी विकार—पेट में शूल होना, मासिक स्राव अनियमित होना या बन्द होना, गर्भाशय आकुंचित होना या उस पर गांठें आना—आदि से कष्ट होता है। इस लिये ये दूसरा और क्वचित तीसरा विवाह करते है। इनकी शिक्षा कम होती है और व्यापार की ओर प्रवृत्ति होती है। इनका स्वभाव साधारण अच्छा होता है। मिथुन, तुला, कुम्भ में—शिक्षा पूरी होती है। ये वकील, न्यायाधीश हो सकते है। स्वभाव विश्वसनीय नही होता। अपने काम के समय खूब मीठा बोलते है किन्तु बाद में पहचान भी नही बतलाते। पंचमस्थ शनि का साधारणफल जनकमातापिताओं का सुख नही रहता। गोद लिये जाने का सम्भव रहता है। पूर्वार्जित इस्टेट मिलती है। वह बाद में नष्ट हो सकती है। मेष, सिंह धनु, कर्क, वृश्चिक, मीन में भाग्योदय का योग होता है। अपने कष्ट से उन्नति करते है। वृषभ, कन्या, मकर में पूर्वार्जित इस्टेट मिल कर नष्ट होती है और बाद में किसी रिश्तेदार की इस्टेट वारिस के रूप में मिलती है। मिथुन तुला, कुम्भ में अपने कष्ट

से उन्नति करते है। पूर्वाजित इस्टेट अधिक मिली तो कर्ज भी साथ में होता है। साधारणत: पंचमस्थ शनि आपत्तियों के साथ समृद्धि देता है। दूषित शनि के फल आचार्यो ने विशेषत: बतलाये है। सन्तति की मृत्यु होना, वृद्ध आयु में सन्तति होना इस प्रकार सन्ततिसुख की कमी होती है। अपने जीवन में पुत्रों की प्रगति नही हो पाती। सन्तति से सम्बन्ध अच्छे नही रहते। पुरुष राशि में दो सन्तानों में अन्तर काफी अधिक ५-७-९-११ वर्षों तक का होता है। यह शनि अधिकारपद देता है। दया, प्रेम की भावना नही होती। अपना काम पहले देखते है। दूसरों के काम की फिक्र नही होती।

कुछ प्रसिद्ध उदाहरण--(१) स्व. सर सेठ हुकूमचन्दजी, इन्दौर-जन्म ता. १६-६-१८७४ इष्ट घटी २१-५५, स्थान अक्षांश २३-९ रेखांश, ७५-५२ पलभा ५-७।
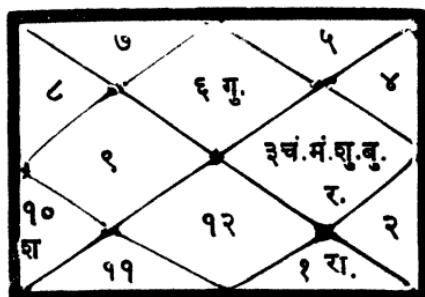
इनके तीन विवाह हुए किंतु सन्तति नही हुई। फिर भतीजे को गोद लिया। उसके बाद औरस पुत्र भी हुआ। फिर दत्तक पुत्र को इस्टेट का कुछ हिस्सा अलग कर दिया। पहले दत्तक और फिर औरस पुत्र होने का योग पुरातन ग्रन्थकारों ने इस प्रकार बतलाया है-मन्दांशे पुत्रराशीश: स्वराशौ गुरुभार्गवौ। पूर्वं दत्तसुतप्राप्ति: परं नार्यां: पुन: सुत:॥ पंचमेश शनि के नवमांश में हो और गुरु, शुक्र स्वगृह में हो तो पहले दत्तक पुत्र होकर फिर औरस पुत्र होता है। पंचमस्थ शनि के इस उदाहरण में अन्य सब बाते शुभ थी-धन, कीर्ती विपुल प्राप्त हुई। पांच छ: मिलों के प्रधान रहे। कोटयाधीश का वैभव प्राप्त हुआ।

(२) सर जमशेटजी नसरवानजी टाटा जन्म ता. ३-३-१८३९ इष्ट घटी ५२-५ स्थान नवसारी। इन्हें आयु के पूर्वार्ध में बहुत अस्थिरता

रही, कष्ट भी हुआ। ३६ वें वर्ष से भाग्योदय को शुरुवात हुई। टाटा-नगर के लोहा-इस्पात करखाने से कोटयाधीश हुए। अन्तरराष्ट्रीय कीर्ति प्राप्त हुई। सार्वजनिक कार्य के लियें बहुत दान दिया। इन्डियन इन्स्टि-टयूट ऑफ सायन्स बेंगलोर, केरल में टाटापुरम् टाटा बैन्क, नागपूर में एम्प्रेस मिल,लोणावला में जलविद्युत योजमा, शहाबाद में सीमेन्ट कारखाना, आदि का प्रारम्भ इन्ही की कम्पनी द्वारा हुआ। अन्य उदाहरण—स्व. न्यायमूर्ति रानडे (धनु), स्व. धर्ममार्तंड भाऊशास्त्री लेले, वाई (कन्या), सर चन्द्रशेखर वेंकट रामन (कर्क), ज्योतिषी बाबासाहब फणसलकर (मेष), इंग्लैंड के भूतपूर्व मुख्य प्रधान लाईड जार्ज (कन्या)

षष्ठ स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर—बलवान् शत्रुजितश्च शत्रुयाते। यह बलवान होकर शत्रुओं को जीतता है।

कल्याणवर्मा—प्रबलमदनं सुदेहं शूरं बव्हाशिनं विषमशीलम्। बहु-रिपुपक्षक्षपितं रिपुभवनगतोर्कजः कुरुते॥ यह बहुत कामुक, सुन्दर, शूर बहुत खानेवाला, अशुद्ध शील का और बहुत शत्रुओं का क्षय करनेवाला होता है।

वैद्यनाथ—बह्वाशनी विषमशील: सपत्नभीत: कामी धनी रविसुते शत्रुघाते ॥ इसमें धनी होना यह एक फल अधिक बतलाया है।

गर्ग—विद्वेषिपक्षपक्षपित: शूरो विषमचेष्टित:। बह्वाशी बहुकाव्यज्वारिदाहो रिपुगे शनौ ॥ षष्ठे नीचगत: सौरिर्जनयेन्नीचवैरिणम् अन्यथा वैरिणं हन्ति निर्वैरं स्वगृहे गत: ॥ इसमें कवि होना यह अधिक फल कहा है। षष्ठ में शनि नीच में हो तो शत्रु भी नीच होते है। यह स्वगृह में हो तो शत्रुरहित होता है। अन्य राशियों में शत्रु का नाश होता है।

वसिष्ठ—पंगुर्नरं रिपुगृहेष्वतिपूजनीयं। इसका शत्रुओं से सन्मान होता है।

पराशर—षष्ठे धनं जयं कुर्यात्। यह धनी, विजयी होता है।

जयदेव—विबलारिवान् धनकुटुम्बयुत: सगणो बली रिपुगतेऽर्कसुते ॥ यह बलवान, सेवकों से युक्त, धनी और कुटुम्ब से समृद्ध होता है। इसके शत्रु दुर्बल होते है।

बृहद्यवनजातक—विनिर्जितारातिगुणो गुणज्ञ: स्वज्ञातिजानां परिपालकश्च। पुष्टांगयष्टि: प्रबलोदराग्नि: नरोऽर्कपूत्रे सति शत्रुसंस्थे ॥ यह गुणों की कद्र करनेवाला, अपने जातिबन्धुओं का पालक, शत्रुओं को जीतनेवाला, प्रबल होता है। छायासुतो भवेच्चैव शत्रुमातुलनाशकृत्—यह शत्रु और मामा का नाश करता है।

ढुंढिराज—उपर्युक्त वर्णन में सुज्ञों का मत माननेवाला सुज्ञाभ्यनुज्ञापरिपालक: इतना अधिक कहा है।

आर्यग्रन्थ—नीचो रिपौ नीचकुलक्षयं च षष्ठ: शनिर्गच्छति मानवानां। अन्यत्र शत्रून् विनिहन्ति तुंग: पूर्णार्थकामाज्जनतां ददाति ॥ यह शनि नीच हो तो कुलक्षय होता है। अन्य राशियों में शत्रुओं का नाश होता है। उच्च में धन और कामसुख मिलता है।

काशीनाथ—शत्रुभावस्थिते मन्दे शत्रुहीनो महाधनी। पशुपुत्रयशोयुक्तो नीरोगो जायते नर: ॥ यह नीरोग, पुत्रयुक्त, पशुओं से समृद्ध, कीर्तिमान, धनी और शत्रुरहित होता है।

जागेश्वर—शनौ शत्रुगे शत्रवः संज्वलन्ति प्रतापानले राजगेहेऽरिचारान् । बलैर्बुद्धियोगैर्भवेत् कस्तदग्रे परं वा प्रमेही स रोगी नितम्बे ॥ इसके शत्रु या शत्रु के गुप्त चर नष्ट होते है। बलवान और बुद्धिमान होता है। प्रमेह और गुप्त रोग होते है।

मंत्रेश्वर—बह्वाशी द्रविणान्वितो रिपुहतो धृष्टश्च मानी रिपौ। यह धनवान उद्धत और अभिमानी होता है। बहुत खाता है तथा शत्रुओं का घात करता है।

नारायणभट्ट—अरेर्भूपतेश्चोरतो भीतयः किं यदीनस्य पुत्रो भवेदस्य शत्रौ। न युद्धे भवेत् संमुखे तस्य योद्धा महिष्याविकं मातुलानां विनाशः॥ इसे शत्रु, राजा या चोरी से कोई भय नही होता। यह अद्वितीय वीर होता है। भैंस आदि पशु घर में होतें है। मामा का नाश होता है।

हरिवंश—पुष्टिर्देहे वीर्यमारोग्यता च भाग्यं भोगं भूषणं वाहनं तु। विद्यां वित्तं सौख्यवर्ग तनोति शत्रोर्हानिं शत्रुगोऽशत्रु पुत्र ॥ प्रसादो भूमिपालतः स्त्रीपुत्रजनितं सौख्यं जन्मे षष्ठगते शनौ ॥ इसका शरीर पुष्ट, नीरोग तथा वीर्यशाली होता है। यह भाग्यवान, भोगों, भूषणों तथा वाहनों से सम्पन्न, सुशिक्षित, धनी, सुखी तथा शत्रुओं का नाश करनेवाला होता है। इस पर राजा की कृपा रहती है तथा स्त्रीपुत्रों से सुख मिलता है।

लखनऊ के नवाब—दानीश्वरं जलीलं जनयति मनुजं मुकर्रवं नृपतिं। निर्जितवैरिसमूहं दुष्मनखाने स्थितो जोहलः॥ यह बडा दानी, शत्रुओं को जीतनेवाला, राजा जैसा समृद्ध किन्तु किती दुःख से पीडित होता है।

घोलप—यह सर्वत्र पूज्य, कवि, पराक्रमी, श्रेष्ठ लोगों का मित्र, दुष्ट और शत्रुओं का नाशक, स्वदेशप्रिय, खर्चीला तथा राजा जैसा शोभायुक्त होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह मूर्ख, अल्पज्ञ, बहुरा, शत्रुरहित, धनधान्य की वृद्धि करनेवाला, झगडालू और कम पुत्रों से युक्त होता है।

पाश्चात्य मत—इस स्थान में अशुभ सम्बन्ध में निर्बल शनि बहुत अशुभ फल देता है। इससे दीर्घकाल चलनेवाले, गन्दे रोगों से शरीर त्रस्त

होता है । प्रकृति हमेशा रोगी तथा अशक्त रहती है । अन्नवस्त्र की कमी से अस्वस्थता रहती है । यहां स्थिर राशि में शनि हृदयविकार, घटसर्प, कण्ठविकार, मूत्रकृच्छ्, खांसी, श्वासनलिका का दाह आदि रोग उत्पन्न करता है । द्विस्वभाव राशियों में फेंफडों के विकार, दमा, आमांश और पांवों के विकार होते है । चर राशियों में पेट, छाती, सन्धिवात आदि के रोग होते है । तुला राशि में पित्ताशय, यकृत के विकार, कन्या में दीर्घकाल के रोगों से अपंगता होती है । षष्ठ में शनि से आहार के बारे में रुचि बहुत तीव्र होती है । इन्हें नौकर अच्छे नही मिलते, नौकरों से नुकसान होता है । इन्हें नौकरी अच्छी नही मिलती तथा उससे विशेष फायदा भी नही होता । षष्ठ में बलवान, शुभ सम्बन्ध में शनि यशस्वी अधिकारी के गुण देता है । इन्हें नौकरों द्वारा अनुशासन कायम रख कर अच्छा काम कराने की कुशलता प्राप्त होती है ।

अज्ञात–अल्पज्ञातिः । शत्रुक्षयः । धनधान्य समृद्धः । कुजयुते देशान्तर-संचारी । अल्पराजयोगः । भंगयोगात् क्वचित् सौख्यं । क्वचिद्उद्योगभंगः । रन्ध्रेशे मन्दे अरिष्टं । वातरोगी । शुलव्रणदेही ।। इसके सम्बधित कष्ट कम होते है । शत्रुओं का क्षय होता है । धनधान्य की समृद्धि रहती है । मंगल शनि के साथ हो तो यह व्यक्ति विदेशों में घूमता है । यह अल्प मात्रा में राजयोग होता है । राजयोग का भंग होने से सुख कम मिलता है । कभी प्रयत्न विफल होते है । यह शनि अष्टमेश हो तो अरिष्टयोग होता है । इसे वातरोग, शूल और व्रण से कष्ट होता है ।

हमारे विचार––इस स्थान में शनि के शुभ फल मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशियों में प्राप्त होते हैं । अन्य राशियों में अशुभ फल मिलते है ।

हमारा अनुभव-षष्ठस्थान में शनि पूर्व आयु में बहुत कष्ट देता है । प्रगति में रुकावटें आना, किसी की मदद न मिलना. लोगों के अपवाद सहते हुए मेहनत करना इस प्रकार कष्टपूर्वक प्रगति करनी पडती है । मामा, मौसियों के लिये यह अशुभ योग है । उनका घरबार ठीक नही

रहता । उन्हें सन्तति नही होती या होकर नष्ट होती है । इन व्यक्तियों का विवाह एकही होता है और पत्नी अच्छी मिलती हैं । ये भैंस अच्छी तरह पाल सकते है । किन्तु गाय, घोडे नही पल सकते । वृद्ध आयु में इन्हें आर्थिक कष्ट होता है । समय से पहले शारीरिक व्यंग के कारण पेन्शन लेनी पडती है; या कभी पेन्शन मिलती ही नही । इन्हें अपने स्थान के समान ही विदेश में भी कष्ट ही होता है । स्थानान्तर से प्रगति नही होती । इनकी ग्रहणशक्ति अच्छी रहती है । मन की एकाग्रता जलदी हो सकती है । व्यवहार में तीक्ष्ण होतें है । व्यवसाय में कीर्ति मिलती है । लोगों पर प्रभाव पडता है । किन्तु कभी कभी प्रयत्न करनेपर भी असफल होने से इनकी नीयत के बारे में गलतफहमी होती है । उदाहरण—स्व. अच्युत बलवन्त कोल्हटकर (सम्पादक-सन्देश) इन के षष्ठ में मीन राशि में शनि था । इस स्थान में शनि से शत्रु बहुत होते हैं किन्तु वे कायम नही रहते । ये परिस्थिति से सतत संघर्ष कर प्रगति करते है । क़ीर्ति और सम्पत्ति या अधिकार साथसाथ नही मिलते । सम्पत्ति हो तो कीर्ति नही मिलती, सम्पत्ति न होकर कीर्ति होने के उदाहरण क्रान्तिकारियों की कुण्डलियों में मिले । प्राय: इनके किसी एक पांव में कुछ दोष रहता है ।

रोगविषयक फल-मेष, सिंह तथा धनु में सन्धिवात, घुटनों में पीडा ३० वें या ६० वें वर्ष में होते है । वृषभ, कन्या , मकर मे हृदयविकार होते हैं । मिथुन, तुला, कुम्भ में-वात और श्वास के विकार होते है । कर्क, वृश्चिक, मीन में-बद्धकोष्ट, मधुमेह, बहुमूत्र आदि होते है । इस विषय का विशेष विवरण पाश्चात्य मत में दिया है । इन व्यक्तियों का स्वास्थ्य पूर्व आयु में अच्छा नही हो तो विवाह के बाद स्वास्थ्य में काफी सुधार होता है । षष्ठ में दूषित शनि से दारिद्रय, असफलता, अस्थिरता, शत्रु बहुत होना । अपमान, बुद्धि होने पर भी कदर न होना. कारावास में दीर्घकाल रहना आदि अशुभ फल मिलते है ।

कुछ प्रसिद्ध उदाहरण—प्रसिद्ध क्रान्तिकारी स्वातंत्र्यवीर सावरकर तथा सेनापति बापट, रावबहादुर एन्.के.केलकर (भूतपूर्व मन्त्री मध्यप्रांत) (वृश्चिक), नामदार दामले, अकोला (वृश्चिक), स्व. नामदार दाजी

आबाजी खरे (मिथुन), योगी अरविन्द घोष (धनु), स्व. खानविलकर (दीवान, बडोदा रियासत) (मकर), स्व. चंदूलाल (दीवान, बडोदा) (मेष) स्व. डॉक्टर भाटवडेकर (मेष), कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर (सिंह), श्री. माधवराव जोशी (प्रसिद्ध मराठी नाटककार) (वृषभ)। इन उदाहरणों से प्रतीत होगा कि षष्ठ में शनि कीर्ति, धन तथा अधिकार के फल भी देता है।

———०———

सप्तम स्थान में शनि के फल

आचार्य—स्त्रीभिर्गतः परिभवो मदगे पतंगे। इसका स्त्री द्वारा अपमान होता है।

कल्याणवर्मा—सततमनारोग्यतनुं मृतदारं धनविवर्जितं जनयेत्। द्यूनेऽर्कजः कुवेषं पापं बहुनीचकर्माणम्॥ यह हमेशा अस्वस्थ रहता है। पापी, नीच काम करनेवाला, निर्धन, गन्दा वेष धारण करनेवाला होता है। इसकी पत्नी मृत होती है।

पराशर—सप्तमे स्त्रीविरोधनम्। हीना च पुष्पिणी व्याधिदौर्बलिनस्तथा॥ स्त्री द्वारा इस व्यक्ति का विरोध होता है। हीन, रोगी, रजस्वला स्त्री से संग होता है।

वसिष्ठ—रविजः किल सप्तमस्थः जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्तति च। इसकी पत्नी दुराचारी होती है तथा सन्तति अल्प होती है।

वैद्यनाथ—भाराध्वश्रमतप्तधीरधनिको मन्दे मदस्थानगे। यह प्रवास से कष्ट भोगता है तथा निर्धन होता है। लम्बापीनपयोधरा। इसकी स्त्री का वक्षस्थल उन्नत होता है।

गर्ग—विश्रामभूतां विनिहन्ति जायां सूर्यात्मजः सप्तमगश्च रोगान्। धत्ते पुनर्दंभधरांगहीनं मित्रस्थवंशेन हृतासुहृच्च॥ इस व्यक्ति की सुख देनेवाली पत्नी का मृत्यु होता हैं। यह रोगी, ढोंगी, अंगहीन और मित्रों से भी मायावी व्यवहार करनेवाला होता है। क्लीबा शनौ—इसकी पत्नी को कामेच्छा बहुत कम होती है।

बृहद्यवनजातक—आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्तिजलचित्तसंस्थितः। कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनौ नरः ॥ यह रोगों के कारण दुर्बल होता है। हीन रोगों के संसर्ग में रहता है। इसे स्त्री, घर या धान्य का सुख नही मिलता।

नारायणभट्ट—सुदारा न मित्रं चिरं चारुवित्तं शनौ द्युनगे दम्पती रोगयुक्तौ। अनुत्साहसन्तप्तकृद् हीनचेताः कृतो वीर्यवान् विव्हलो लोलुपः स्यात् ॥ इसे अच्छी पत्नी, मित्र या धन का सुख दीर्घ काल नही मिलता। ये पतिपत्नी रोगी रहते है। उदास रहने से दुखी होता है। हीन विचार रहता है। वीर्यवान नही होता। विव्हल और लोभी होता है।

काशीनाथ—कलत्रस्थे मित्रपुत्रे सकलत्रो रुजान्वितः। बहुशत्रुर्विवर्णश्च कृशश्च मलिनो भवेत् ॥ यह पत्नी सहित रोगी रहता है। शत्रु बहुत होते है। यह दुबला, विवर्ण तथा गन्दा होता है।

जयदेव—सगदः प्रियालयधनैर्विसुखः परभाग्यवान् भवति सप्तमगे। यह रोगी होता है। इसे स्त्री, धन और घर का सुख नही मिलता। दूसरों पर अवलम्बित रहता है।

लखनऊ के नबाब—बदरोजनः कृशांगः कमफहमश्च मानवो ह्रिर्जः। जानो वा स्याज्जोहलो हफ्तुमखाने यदा भवति ॥ यह दुराचारी, दुबला, कम बोलनेवाला, बुद्धिहीन और सदा पराधीन रहनेवाला होता है।

घोलप—यह पापी, क्षीण प्रकृति का, बहुत मूर्ख, कुटिल मित्रों से युक्त, बुरी दृष्टि का, रोगी स्त्री के कारण दुखित तथा अन्नवस्त्र के अभाव से पीडित होता है। राजकीय कारणों से इस का बहुत व्यय होता है।

गोपाल रत्नाकर—इसका शरीर सदोष होता है। दो विवाह होते है। वेश्यागमन करता है। विदेश में घूमता है। हमेशा दूसरों के यहां भोजन करना पडता है। इसके नाभि व कान में रोग होता है। यह बहु-भार्यायोग भी हो सकता है। सप्तम में शुक्र भी हो तो पत्नी व्यभिचारी होती है।

पाश्चात्य मत--इस व्यक्ति की पत्नी (या पति) उदास, दुखी, निराश, कम बोलनेवाली होती है। यह स्त्रीवियोग (या वैधव्य) का निश्चित योग होता है। शनि द्विस्वभाव राशि में हो तो बहु विवाह होने का योग होता है। शनि राशिबली और शुभ सम्बन्ध में हो तो विवाह से धन और इस्टेट का लाभ होता है। स्त्रियों की कुण्डली में यह शनि किसी विधुर, आयु में काफी बडे किन्तु सम्पन्न वर से विवाह का योग करता है। साधारणतः सप्तम में शनि शुभ नही होता। विवाहसुख ठीक नही मिलता। व्यभिचार की प्रवृत्ति होती है। बदमाश, झूठ बोलनेवाले, विश्वासघातकी लोगों से एकदम शत्रुता होती है। साझीदारी में नुकसान होता है। कानून कचहरी के मामलों में असफल होते है। दूसरों के साथ किये व्यवहारों से बेकार के झगडे होकर तकलीफ होती है। राशिबली और शुभ सम्बन्ध में यह शनि अशुभ फल नही देता प्रत्युत शनि के विकसित गुणों से युक्त पत्नी मिलती है। विवाह से भाग्योदय होता हैं। विशेषतः तुला राशि में यह शनि पतिपत्नी में अच्छा प्रेम रखता है। चन्द्र साथ मे हो तो संसार सुख बिलकुल नही मिलता।

भृगुसूत्र--शरीरदोषकरः कृशकलत्रः वेश्यासम्भोगवान् अति दुःखी। उच्चस्वक्षेत्रगते अनेकस्त्रीसम्भोगी। कुजयुते शिश्नचुम्बनपरः शुक्रयुते भगचुम्बनपरः परस्त्रीसम्भोगी॥ इस का शरीर दोषयुक्त रहता है। पत्नी कृश होती है। यह वेश्यागमन करता है। बहुत दुखी होता हैं। शनि उच्च या स्वक्षेत्र में हो तो यह कई स्त्रियों का उपभोग करता है। यहां शनि मंगल से युक्त हों तो वह स्त्री अतिकामुक होती है। शुक्र की युति हो तो वह पुरुष अतिकामुक होते है। परस्त्री से सम्पर्क रखते है।

हमारे विचार--इस स्थान में आचार्यो ने प्रायः अशुभ फल ही बतलाये है। वे फल मुख्यतः वृषभ, कन्या, मकर, तुला तथा कुम्भ इन राशियों में मिलते है। शुभ फलों का विचार नही किया है।

हमारा अनुभव--सप्तम स्थान में शनि निसर्गतः बली होता है अतः इस के शुभ फल भी होने चाहिए। किन्तु केन्द्र में पापग्रह अशुभ फल ही देते है इस पूर्वग्रह से आचार्यो ने शुभ फलों का वर्णन नही किया है। मेष,

सिंह, मिथुन, कर्क, वृश्चिक धनु तथा मीन इन राशियों में शनि सप्तम स्थान में हो तो विवाह एक ही होता है और पतिपत्नी में अच्छा प्रेम रहता है। दिनभर बातूनी झगडे करेंगे लेकिन मन में प्रेम बना रहता है। इस व्यक्ति की पत्नी पति को देवता समझकर हर समय आपत्ति में भी धैर्य और शान्ति से काम चलाती है। संकट में पति को उत्साह देती है। लोगों में पति का मान रखती है। एकान्त में उस के दोष स्पष्ट बतलाकर उन्हे दूर करने का प्रयास करती है। यह प्रखर नीति की इच्छुक व निर्भय होती है। कामेच्छा उसे बहुत कम रहती है। पति के उद्योग में मदद देती है और उस के स्वास्थ्य की बहुत चिन्ता रखती है यद्यपि पति का आलसी रहना उसे बिलकुल नही सुहाता। यह संसार में दक्ष किन्तु अनासक्त होती हैं। घर में सब पर प्रेम और रौब भी रहता है। अतिथि सत्कार अच्छा करती है। एलन लिओ ने इस शनि के पत्नी के बारे में फल यों बतलाया है--'यह योग विवाह देरी से होने का या उस में बाधा आने का है। किन्तु विवाह होने पर पत्नी गम्भीर और विश्वासु स्वभाव की मिलती है। वह न्यायी, उद्योगी, दूरदर्शी, सावधानता से काम करने-वाली तथा मितव्ययी होती है। यह बहुत उन्नति का योग नही है किन्तु विवाहसम्बन्ध विश्वासपूर्ण रहता है। यह पति के प्रति प्रेम शब्दों से नही कृति से व्यक्त करती है और पति से भी इसी प्रकार का व्यवहार चाहती है।' हमारे अनुभव में सप्तमस्थ शनि से पत्नी कुछ प्रौढ प्रकृति की और धैर्ययुक्त, परिपक्व विचारों की होती हैं। सिंह तथा धनु में--रौबदार, गोल चेहरा होता है। कुछ पुरुष जैसा किन्तु मोहक आकार होता है। कद कुछ नाटा रहता है। वर्ण सांवला, वाणी मधुर, चेहरा हंसमुख और हावभावयुक्त होता है। मेष में-कद ऊंचा, छरहरा बदन, चेहरा लम्बासा, आंखें बारीक, नाक नुकीली और केश विपुल होते है। वृषभ, कन्या तथा मकर में-चेहरा चौकोर, कुछ उबड खाबड प्रकृति, वर्ण गोरा किन्तु फीका, केश कम और बोलना भी कम होता है। मिथुन, तुला, कुम्भ में चेहरा गोल, तेजस्वी, स्थूल, केश रेशम जैसे चमकीले किन्तु विरल, वर्ण कुछ गोरा, बोलना बहुत मंजा हुआ तथा स्वभाव कुछ झगडालू होता है। कर्क, वृश्चिक, मीन में-चेहरा कुछ लम्बा, रौबदार, केश चमकीले, रूखे और

लम्बे तथा मुद्रा गम्भीर होती है। इस शनि से पत्नी अच्छे स्वरूप और स्वभाव की मिलने पर आर्थिक स्थिति डांवाडोल रहती है। व्यापार में कमीबेशी चलती रहती है। आर्थिक कष्ट भी रहता है। किसी तरह संसार चलता है। व्यवसाय या नौकरी में परिवर्तन होते है। सन्तति कम होती है। इस व्यक्ति को २८ वें वर्ष से जीविका के साधन मिलते है। ३६ वें वर्ष से भाग्योदय शुरू होकर ४२ वें वर्ष में अच्छी प्रगति होती है। वृषभ, कन्या, मकर कुम्भ में–दो विवाह होते है। दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय होता है। इन की पत्नियां साधारणही रहती है–स्वार्थी, संसार में आसक्त, झगडालू तथा संकुचित स्वभाव की होती है। इसलिए इन्हें स्त्रीसुख अच्छा नही मिलता। तुला में स्त्री अच्छी किन्तु आर्थिक स्थिति मामूली रहती है। सप्तमस्थ शनि से साधारणत: खाने की इच्छा और कामेच्छा अधिक रहती हैं। मेष, मिथुन, सिंह, धनु, मकर तथा कुम्भ में शिक्षा पूरी होती है। कानून के क्षेत्र में (वकील, बॅरिस्टर, जज, मॅजिस्ट्रेट आदि के रूप में) सफलता मिलती है। अन्य क्षेत्रों में यश नही मिलता। वृषभ, कन्या, तुला, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में कॉंट्रॅक्टर, प्लम्बर, खानों का काम, कोयला, लोहा, लकडी आदि के व्यापारी, मुद्रक, विदेशी माल के एजन्ट आदि के रूप में यश मिलता है। मिथुन, कन्या, धनु तथा मीन में ज्योतिषी, शिक्षक, प्राध्यापक, गणितज्ञ, सम्पादक, मुद्रक आदि (ज्ञान सम्बन्धी) के रूप में यश मिलता है। यह योग क्वचित गोद लिये जाने का है। माता और कभी कभी पिता का मृत्यु २० वें वर्ष तक होता है। बहुधा बचपन में ही माता या पिता का वियोग होंता है। कभी सौतेली मां से सम्बन्ध आता है। पत्नी का मृत्यु ५२ से ५५ वे वर्ष तक होता है। मिथुन, तुला तथा कुम्भ में सन्तति में काफी अन्तर रहता है। नौकरी और व्यवसाय दोनों से आजीविका चलती है। तुला में–द्विभार्यायोग हुआ तो लाभ होता है अन्यथा स्थिति साधारण रहती है। सप्तमस्थ शनि का साधारण फल यह है कि पत्नी में कामेच्छा अधिक नही होती। वृषभ तथा कन्या में अविवाहित रहने की ओर प्रवृत्ति होती है। साधारणत: सप्तमस्थ शनि हो तो वह व्यक्ति पत्नी के पहले मृत होता है। लग्न में शनि से पत्नी का मृत्यु पति से पहले होता है या पत्नी हमेशा बीमार

रहती है। दोनों का आचरण अच्छा रहता है। मेष, सिंह, धनु, मिथुन तथा तुला में यह शनि हो तो उस व्यक्ति का स्वभाव उदार, आनन्दी, स्नेहल, खर्चीला, मिलनसार, क्वचित क्रोधी, लोगों को मदद करनेवाला तथा परस्त्री से विन्मुख होता हैं। कुछ दुष्ट, हठी, गर्वीला और खुद को बहुत अच्छा और दूसरों को मूर्ख माननेवाला यह व्यक्ति होता है। पसीने से कपडे हमेशा मैले रहते है और जलदी फटते है। इसे खानेपीने के लिए और अन्य वस्तुओं में भी ऊंची चीजों की इच्छा रहती है। कन्या, तुला, धनु में सन्तति आयु के उत्तरार्ध में होती है। सप्तमस्थ शनि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण-स्व. नरसिंह चिन्तामणि केलकर (धनु) (विवाह एक ही हूआ)। स्व. शिवराम महादेव परांजपे (कन्या)। सरदार आबा-साहब मुजुमदार, पूना (मिथुन) (ये गोद लिये गये थे, विवाह एक ही हुआ)। श्रीमन्त प्रतापसेठ, अंमलनेर (मीन) (गोद लिये जाने से वैभव प्राप्त हुआ, विवाह एक ही हुआ)। ज्योतिषी वसन्त लाडोबा म्हापणकर (मीन)। श्री. एम्. जी. ओक, बम्बई (मकर) (वुडस्टाक टाइपराइटर स्कूल में शिक्षक, दो विवाह हुए, जन्म वैशाख कृ. १ शक १८२१ इष्टघटी १४-५०)। डा. रिचारिया, नागपुर (मीन) (जन्म ता. १९-३-१९०८ अच्छे वैज्ञानिक है, कपडा बनाने की नई पद्धति की खोज की है, कृषि-शास्त्र में तज्ञ है, विवाह एक हुआ)। प्रो. नारके (वृषभ) (ये भूगर्भ विज्ञान के विद्वान थे)। स्व. रावजी रामचन्द्र काले, सातारा (वृश्चिक) (वकील थे, विवाह एक हुआ, सन्तति नही थी)। सर फेरोजशाह मेहता (मकर) (बम्बई के प्रख्यात राजनीतिज्ञ, क्रानिकल पत्र के सम्पादक, दूसरे विवाह के बाद भाग्योवय हुआ)। श्री. ताम्बे (मकर) (यें कुछ समय के लिये मध्यप्रान्त के गवर्नर हुए थे, दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय हूआ)। ज्योतिषी होराभूषण गणेश प्रभाकर दीक्षित, कुण्डली वर्णन के लेखक तथा ज्योतिषी यशवन्तराव प्रधान, जातकमार्गोपदेशिका के सम्पादक, दोनों की कुण्डलियां प्रायः समान है। सप्तम में मिथुन में शनि है। ज्योतिषी, शिक्षक, सम्पादक के रूप में अच्छा काम इन्हों ने किया।

अष्टमस्थान में शनि के फल

आचार्य---स्वल्पात्मजो निधनगे विकलेक्षणश्च । इसे पुत्र कम और आंखें क्षीण होती है ।

कल्याणवर्मा---कुष्ठभगन्दररोगैरभितप्तं ह्रस्वजीवितं निधने । सर्वारम्भविहीनं जनयति रविजः सदा पुरुषम् ।। यह कोढ, भगन्दर आदि रोगों से पीडित, अल्पायु और निरुत्साही होता है ।

पराशर---अष्टमे व्याधिर्हानि च । रोग होते है तथा हानि होती है ।

वसिष्ठ---इन के विचार पहले मंगल विचार में स्पष्ट किये है ।

गर्ग---विदेशतो नीचसमीपतो वा सौरिर्मृतिं रन्ध्रगतो विधत्ते । हृच्छोककासामयवद्-विषूचीनानाविधं रोगगणं विधाय ।। विदेश में या समीप के किसी हीन स्थान में मृत्यु होता है । हृदय को हुआ शोक, खांसी, कॉलरा आदि नाना रोगों के कारण मृत्यु होता है ।

काश्यप---बुभुक्षया लंघनेन तथा प्रायोपवेशनात । बन्धुवर्गादरिकरात् क्षयतः पृथुदद्रुतः ।। चटकैर्व्रणकोपेन हयपादाभिघाततः । हस्तितः खरतो मृत्युर्मन्दे स्यान्मृत्युभावगे ।। शनि अष्टम स्थान में हो तो नीचे लिखें अनुसार मृत्यु होता है ।---मेष में भुख से, वृषभ में लंघन से, मिथुन में उपवास से, कर्क में रिश्तेदारों से, सिंह में शत्रुओं के हाथ से, कन्या में क्षय से, तुला में बडी खुजली से, वृश्चिक में चटकों से, धनु में व्रणों से, मकर में घोडे की लात से, कुम्भ में हाथी से और मीन में गधे से ।

ज्योतिषश्यामसंग्रह--इस में काश्यप के श्लोकों में ही कुछ परिवर्तन इस प्रकार किया है--बुभुक्षया लंघनेन तथाच बहुभोजनात् । संग्रहण्याः पण्डुरोगात् प्रमेहात् सन्निपाततः । कटकैर्व्रणकोपेन हस्तिपादाभिघाततः । हयतः खरतो मृत्युर्मन्दे स्यात् मृत्युभावगे ।। इसमें बहुत खाना, संग्रहणी, पण्डुरोग, प्रमेह, सन्निपात, कांटा चुभना, ये कारण अधिक गिनाये है ।

वैद्यनाथ---शूरो रोष्यप्रगण्यो विगतबलधनो भानुजे रन्ध्रयाते । मन्दे लग्नगतेऽथवाष्टमगते तत्पाकभुक्तौ मृतिः ।। यह शूर, बहुत क्रोधी, दुर्बल

और निर्धन होता है। लग्न में या अष्टम में शनि हो तो उसकी दशा में मृत्यु होता है।

नारायणभट्ट--वियोगो जनानां त्वनौपाधिकानां विनाशो धनानां स को यस्य न स्यात्। शनौ रन्ध्रगें व्याधितः क्षुद्रदर्शी तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु॥ लोगों का वियोग और धन की हानि होती है। रोगी रहता है। क्षुद्र दृष्टि होती है। इसे कोई वंचित नही कर सकता।

बृहद्यवनजातक--कृशतनुर्ननु दद्रुविचर्चिकाप्रभवतो भयतोषविवर्जितः। अलसतासहितो हि नरो भवेन्निधनवेश्मनि भानुसुते गते॥ यह कृश, खुजली फोडों से दुःखित, असन्तुष्ट, निर्भय, आलसी होता है।

आर्यग्रन्थ--शनैश्चरे चाष्टमगे मनुष्यो देशान्तरे तिष्ठति दुःखभागी। चौर्यापराधेन च नीचहस्ते पंचत्वमाप्नोत्यथ नेत्ररोगी॥ यह विदेश में रहता है और दुखी होता है। चोरी के अपराध में दण्ड सहता है। नीच व्यक्ति के हाथों मृत्यु होता है। नेत्ररोग होते है।

काशीनाथ--क्रोधातुरोऽष्टमे मन्दे दरिद्रो बहुरोगवान्। मिथ्याविवाद-कर्ता स्याद् वातरोगी भवेन्नरः॥ यह बहुत क्रोधी, दरिद्री, निरर्थक विवाद करनेवाला तथा वातरोगों से पीडित होता है।

जयदेव--कृशतनुः सगदोऽलसभाग् विदृग् विगततोषसुखोऽष्टमगे शनौ। यह दुर्बल, रोगी, आलसी, असन्तुष्ट, दुखी होता है। आंखों का कष्ट रहता है।

आगेश्वर--परं कष्टभाक् क्रूरवक्ता प्रकोपी भवेत् क्षुद्रको धान्यकं नैवं सत्वं। परं हासवार्तादिकं किं तदग्रे यदा मन्दगो मृत्युगो वै नराणाम्॥ यह क्रोधी, निष्ठुर बोलनेवाला, कष्टयुक्त, क्षुद्र स्वभाव का और कभी हंसीमजाक में शामिल न होनेवाला होता है।

मन्त्रेश्वर--शनैश्चरे मृतिस्थिते मलीमसोऽर्शसोऽवसुः। करालधीर्बुभुक्षितः सुहृज्जनावमानितः॥ यह मैला, निर्धन, भूखा, दुष्ट बुद्धि का, मित्रों द्वारा अपमानित तथा अर्श से पीडित होता है।

लखनऊ के नबाब---बीमारश्च हरीशो दगलबाजश्च दोजखी मनुज:। जोहलो हस्तमखाने भवति बखील: कृपालसो भीरु: ।। यह रोगी, आलसी, विश्वासघातक, पापी, डरपोक, कंजूस होता है ।

घोलप---यह दुष्ट, दुखी, दुष्टों की संगति से निन्दित, सज्जनों से दूर रहनेवाला, अल्पवीर्य, जड होता है । इस की दृष्टि अच्छी नही होती। शरीर में रक्त कम होता है ।

गोपाल रत्नाकर--यह विवाद करनेवाला, दरिद्री, नौकरी से जीविका चलानेवाला, शूद्र स्त्री से संपर्क रखनेवाला होता है। इसकी नाभी बडी होती है। नेत्ररोग, कोढ, गांठें इन से कष्ट होता है। पुत्र कम होते है।

हरिवंश---स्यादायुस्थे दद्रुयुक्तो दरिद्री धातुहीनो दुर्बलांगो रुजानां। सुतौ धूर्तौ भीरुरालस्यधीरो भानो: पुत्रे निन्द्यमार्गप्रगामी ।। यह दरिद्री, दुर्बल, डरपोक, आलसी तथा निन्दगीय मार्ग का अवलम्बन करनेवाला होता है। खुजली व धातु की कमी से कष्ट होता है। इसके पुत्र धूर्त होते है।

पाश्चात्य मत---यह मकर, कुम्भ या तुला में शुभसम्बन्धित हो तो विवाह से आर्थिक लाभ होता है। वारिस के रूप में जमीन आदि इस्टेट प्राप्त होती है। उसकी देखभाल भी अच्छी करते है। अष्टम में बलवान शनि दीर्घायु देता है। नैसर्गिक वृद्धत्व से ही मृत्यू होता है। अष्टम में पीडित शनि विवाह से लाभ नही कराता। दहेज आदि कुछ नही मिलता। विवाह के बाद आर्थिक संकट आते है। दीर्घकाल रोग से कष्ट होकर मृत्यु होता है। पूर्वार्जित धन नही मिलता। कर्क या मेष में अशुभ शनि से ये फल विशेष रूप मे मिलता है। पीडित शनि से अकस्मात मृत्यु का योग होता है। जीवन में हमेशा निराशा होती है। गूढ शास्त्रों का अभ्यास करतें है।

भृगुसूत्र---त्रिपादायु: दरिद्री शूद्रस्त्रीरत: सेवक:। उच्चे स्वक्षेत्रे दीर्घायु:। अरिनीचगे भावाधिपे अल्पायु: कष्टान्नभोगी ।। यह ७५ वर्ष की आयु पाता है। दरिद्री, नौकरी करनेवाला, शूद्र स्त्री से सम्पर्क रखने-

वाला होता है। उच्च में या स्वक्षेत्र में शनि हो तो दीर्घायु होता है। यह शत्रु ग्रह की राशि में या नीच में हो तो अल्पायु होता है। कष्टपूर्वक उपजीविका चलती है।

हमारे विचार—प्राचीन लेखकों ने इस स्थान में शनि के फल सब अशुभ ही बतलाये है। वे मुख्यतः वृषभ, कन्या, कुम्भ, धनु, मीन तथा मिथुन इन राशियों के है। वृषभ में हो तो तुला लग्न और धनु में हो तो वृषभ लग्न होता है। इन लग्नों के लिये शनि शुभयोगकारक होने पर भी अष्टम में सुखदायक नही हो सकेगा। कन्या में हो तो यह व्ययेश होता है अतः दुःख और दारिद्रय का ही फल मिलेगा। कुम्भ और मीन राशि में हो तो सप्तम और षष्ठ का स्वामी होता है। वृश्चिक में हो तो चतुर्थ और तृतीय का स्वामी होता है अतः दुःखद फल मिलता है।

हमारा अनुभव—अष्टम स्थान विनाशसूचक है और शनि ग्रह यह भी आपत्तियों द्वारा विरक्ति का जन्मदाता ही है। अतः इन दोनों का संयोग दुःखदायी होता ही है। मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक तथा मकर में शनि से अधिकार, सम्पत्ति या सन्तति में से किसी एक के बारे में कष्ट रहता है। सन्तति और सम्पत्ति दोनों की प्राप्ति नही होती। सिर्फ कर्क राशि में दोनों बातों से सुख मिलता है। आकस्मिक धनलाभ होता है। धनु राशि में विवाह के बाद भाग्य क्षीण होते जाता है क्यों कि यह भाग्येश अष्टम में होता है (भाग्येशो मारकस्थेषु जातभाग्यनिरर्थकं)। मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, धनु और मकर में मुख्यतः स्वतन्त्र व्यवसाय से जीविका चलती है। अन्य राशियों में नौकरी का योग होता है। अष्टमस्थ शनि पूर्ववय में दुःखदायी हो तो वृद्ध अवस्था में सुख देता है और पूर्ववय में सुख मिले तो वृद्ध आयु दुःखपूर्ण होती है। इस के विपरीत चतुर्थ के शनि से प्रारम्भ में कष्ट, फिर कुछ सुख और वृद्ध आयु में पुनः कष्टपूर्ण स्थिति रहती है। अष्टमस्थ शनि से पत्नी अच्छी मिलती है। आपत्ति में धैर्य रखती है तथा घर की गुप्त बातें बाहर नही बतलाती है।

अब मृत्युयोग के बारे में विचार करेंगे। (१) शनि और राहु दोनों का भ्रमण २।४।६।८।१२ इन स्थानों से हो रहा हो (२) जन्मस्थ रवि

चन्द्र दूषित हो (३) गोचर भ्रमण में गुरु का रवि परसे भ्रमण हो रहा हो अथवा केन्द्र मे से गुरु का भ्रमण हो (४) चन्द्र से गुरु का युतियोग हो (५) धनेश तथा सप्तमेश परसे शनि का भ्रमण हो रहा हो (धनेश तथा सप्तमेश एक ही स्थान में हो तो उस स्थान में से शनि का भ्रमण मृत्युयोग कारक है , अलग अलग हो तो एक में शनि और दूसरे में गुरु का भ्रमण यही योग करता है) (६) २।४।६।७।८ इन स्थानों के स्वामी के ग्रह की दशा चल रही हो तो मृत्युयोग होता है। जन्म समय शनि केन्द्र में हो तो गोचर शनि के उपर्युक्त स्थानों में भ्रमण से मृत्युयोग नही होता। इस समय शनि का भ्रमण १।३।५।७।९।१०।११ इन स्थानों से होता है। अष्टमस्थ शनि मृत्यु के समय सावधान स्थिति रखता है। इन व्यक्तियों की वासनाएं क्षीण होंने से मृत्यु के समय का आभास इन्हें कुछ समय पहले मिल जाता है। मेष, सिंह, कर्क, वृश्चिक, मकर तथा तुला में दीर्घ आयु मिलती है। पश्चिमी साहित्य में राफेल द्वारा लिखित मेडिकल एस्ट्रालाजी मृत्युयोग के बारे में उपयुक्त ग्रन्थ है। यह शनि ५४ वें वर्ष के बाद अशुभ स्थिति बतलाता है। विवाह के बाद स्थिति बिगडती है। कर्क तथा तुला में ही इस के अपवाद पाये जाते है। पत्नी का स्वभाव अच्छा होता है।

उदाहरण--(१) रैंगलर रघुनाथ पांडुरंग परांजपे, पूना (कुम्भ) (भूतपूर्व शिक्षामन्त्री, पूना विश्वविद्यालय के प्रमुख धनवान तथा कीर्तिमान हुए, पुत्रसन्तति नही हुई)। (२) श्रीमान चुन्नीलाल (मेष) (धनवान, दो विवाह हुए, पुत्र नही हुआ)। (३) डॉक्टर कैंकिणी, बम्बई,
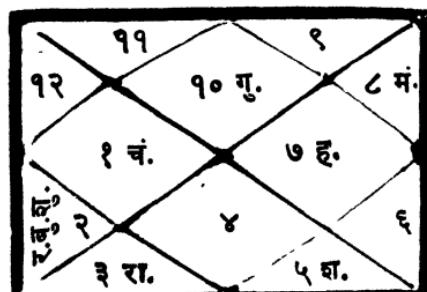
जन्म ता. १७-५-१८९० वैशाख कृ. १४ शक १८१२ इष्ट घटी ३४-१४ जन्मस्थान कारवार जन्मस्थ शुक्र महादशा भोग्य ७-२-१५ । ये विख्यात सर्जन हुए, धन तथा कीर्ति पर्याप्त मिली, पुत्रसन्तति नही हुई ।

(४) एक क्ष, जन्म ता. ३-९-१८९१ इष्ट घटी ६-७ (सिंह) ये संस्कृत के प्राध्यापक है। वेतन अच्छा है। थोडी पूर्वाजित इस्टेट है। पुत्र नही।

(५) एक क्ष-जन्म ता. १५-४-१८८९ रात्रि ११ जन्मस्थान बालाघाट। ये प्रसिद्ध वकील है। पूर्व आयु में बहुत कष्ट से प्रगति की।
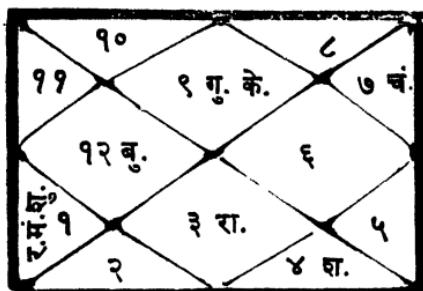
एक विवाह हुआ, पुत्र अनेक हुए, घरदार, वाहन का सुख अच्छा मिला।

(६) श्री. श्रीकृष्ण पांडुरंग जोशी, ज्योतिषी, बालापूर जन्म ता. २२-१२-१८८६ सूर्योदय।
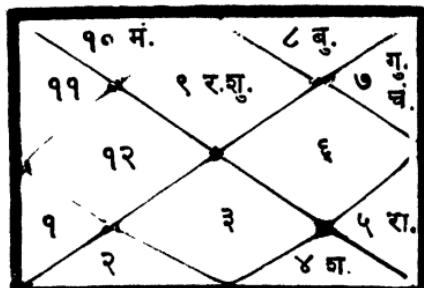
ये अच्छे कीर्तनकार तथा पुराणवाचक, कवि, ज्योतिषी थे। गुजराती व हिन्दी में अच्छी रचना की है। धन और उपभोग इन्हे पर्याप्त प्राप्त हुए। इससे निरिच्छ भावना हुई।

(७) महाराष्ट्र के प्रख्यात अभिनेता श्री. बालगन्धर्व तथा पत्रकार श्री. नारायणराव बामणगांवकर इनके अष्टम में शनि है। दोनों ने बहुत धन प्राप्त किया और वह नष्ट भी हुआ। कीर्ति अच्छी मिली। पुत्र सन्तति नही हुई।

साधारणतः चतुर्थ व अष्टम में पापग्रह हो तो मृत्यु के समय सावधान स्थिति रहती है तथा मृत्यु के समय का आभास पहले होता है। इन स्थानों में शुभग्रह हो तो मृत्यु के समय बेहोशी रहती है। भाग्योदय ३६ वें वर्ष के बाद होता है। अष्टमस्थ शनि बहुत दूषित हो तो कारवास का योग होता है। घरबार नष्ट होना, रोगी रहना, पतिपत्नी में अनबन होना ये फल मिलते हैं। ६ वें वर्ष बडा नुकसान होता है। मातापिता का मृत्यु अथवा पिता पर आर्थिक संकट इस रूप में नुकसान होता है। इसी तरह ३२ वां वर्ष आपत्तिकारक होता है।

नवम स्थान में शनि के फल

आचार्य—धर्मे सुतार्थसुखभाक्। यह धनी, सुखी तथा पुत्रसहित होता है।

कल्याणवर्मा—धर्मरहितोऽल्पधनिकः सहजसुतविवर्जितो नवमसंस्थे। रविजे सौख्यविहीनः परोपतापी च जायते मनुजः॥ यह धर्म, धन, बन्धु, पुत्र, सुख इन सबसे रहित तथा दूसरों को ताप देनेवाला होता है।

वैद्यनाथ—मन्दे भाग्यगृहस्थिते रणतलख्यातो विदारो धनी॥ यह शूर, धनवान किन्तु स्त्रीहीन होता है॥

गर्ग—दम्भप्रधानः सुकृतः पितृदैवतवंचकः। क्षीणभाग्यः सुधर्मा च स्यान्नरो नवमे शनौ॥ स्वोच्चे स्वभे शनौ भाग्ये वैकुण्ठादागतो नरः। राज्यं कृत्वा स्वधर्मेण पुनर्वैकुण्ठमेष्यति॥ नवमभावगतः स्वगृहे शनिर्भवति चेत् स महेश्वरयज्ञकृत्। अतिशयं कुरुते जयसंयुतं नृपतिवाहनचिन्हसमन्वितम्॥ यह दाम्भिक, अच्छे काम करनेवाला, पिता तथा देवता पर

आस्था न रखनेवाला, क्षीण भाग्य का, धार्मिक होता है। नवमस्थ शनि उच्च या स्वगृह में हो तो पूर्वजन्म तथा पुनर्जन्म अच्छे होते है एवं इस जन्म में धर्मपूर्वक राज्य करता है। यह महेश्वरयज्ञ करनेवाला, विजयी, राजचिन्हों तथा राजा के वाहनों से युक्त होता है।

वसिष्ठ—कुर्वन्ति धर्म रहितं विमतिं कुशीलम्। यह धर्म, बुद्धि तथा शील से रहित होता है।

पराशर—नवमे मित्रबन्धनम् भाग्यहानिश्च। भाग्य की हानि होती है तथा मित्रों को कारवास होता है।

नारायणभट्ट—मतिस्तस्य तिक्ता न तिक्तं तु शीलं रतिर्योगशास्त्रे गुणो राजसः स्यात्। सुहृद्वर्गतो दुःखितो दीनबुद्धया शनिर्धर्मगः कर्मकृत् संन्यसेद् वा॥ इसकी बुद्धि तिखी किन्तु आचरण अच्छा रहता है। योगशास्त्र में रुचि रहती है। राजस प्रकृति का होता है। इसे मित्रों से सुख मिलता है। बुद्धि हीन होती है। यह कर्मनिष्ठ या संन्यासी होता है।

आर्यग्रन्थकार—धर्मस्थपंगुर्बहुदम्भकारी धर्मार्थहीनः पितृवंचकश्च। मदानुरक्तो विधनी च रोगी पापिष्ठभार्यापरहीनवीर्यः॥ यह बहुत दाम्भिक, धर्महीन, धनहीन, मदान्ध, रोगी, पिता की वंचना करनेवाला तथा हीन पत्नी के वश होकर वीर्यहीन होनेवाला होता है।

बृहद्यवनजातक—धर्मकर्मरहितो विकलांगो दुर्मतिर्हि मनुजो विमनाः सः। संभवस्य समये हि नरस्य भाग्यसद्मनि शनौ स्थिरचित्तः॥ यह धर्म कर्म से रहित किसी अवयव से हीन, दुर्बुद्धि, विमनस्क किन्तु स्थिरचित्त होता है।

ढुंढिराज—उपर्युक्त वर्णन में सिर्फ अतिमनोज्ञ-सुन्दर होना इतना विशेषण अधिक जोडा है।

काशीनाथ—धर्मे मन्दे धर्म हीनो अविवेकी रिपोर्वशः। नृशंसो जायते लोके परदाररतः सदा॥ यह धर्महीन, अविवेकी, शत्रू के वशवर्ती, निष्ठुर तथा परस्त्री में अनुरक्त होता है।

जयदेव—सुसुतवित्तसुखो विमलांगभाग् विमतिभाग् विमना नकमेऽ-कंजे ॥ यह धन, पुत्र तथा सुख से सम्पन्न, निर्मल शरीर का, विमनस्क तथा दुर्बुद्धि का होता हैं ।

जागेश्वर—भवेत क्रूरबुद्धिस्तथा धर्मोनाशो न तीर्थं न सौजन्यमेतस्य देहे । तथा पुत्रभृत्यादिचिन्तातुरः स्याद् यदा पुण्यगो मन्दगामी नरस्य ॥ यह क्रूर स्वभाव का, धर्महीन, पुत्र तथा नोकरों के लिये चिन्तित, सौजन्य-रहित होता है । यह कभी तीर्थयात्रा नही करता ।

मन्त्रेश्वर—भाग्यार्थात्मजतातधर्मरहितो मन्दे शुभे दुर्जनः । यह दुष्ट, भाग्यहीन, धनहीन, धर्महीन, पुत्रहीन तथा पिता से वियुक्त होता हैं ।

हरिवंश—मन्दप्रज्ञो मन्दमानापमानो मन्दप्राप्तिर्मन्दविन्मन्द सौख्यः । मन्दस्त्यागी मन्दसत्यप्रसूतो भाग्ये मन्दे मन्दभाग्यो मनुष्यः ॥ यह मन्दबुद्धी का होता है । मान, अपमान की भावना तीव्र नही होती । धन कम ही मिलता है । दान भी थोडा ही करता है । सत्यप्रीति ज्ञान तथा भाग्य भी अल्प होता है ।

घोलप—यह राजद्रोही, कामेच्छारहित दुष्टों की संगति में रहने-वाला, दुराचारी, धर्महीन, कृश होता है । सज्जन इसपर रुष्ट होते है । इसे सिंहादि क्रूर प्राणियों से हानि होती है ।

गोपाल रत्नाकर—यह कंजूस होता है । पुराने कपडे पहनता है । तालाब, मन्दीर आदि बनवाता है । इसके पिता के कुटुम्ब के व्यक्ति इसके विरोधक होते है । उनमें स्त्री सम्बन्धितों का वियोग होता है ।

लखनउ-नबाब—बख्तबुलन्दः श्रीमान् शीरीं सखुनश्च मानवो यदि वै । जोहलो बख्तमकाने वेतालश्च हि कृपालुरपि भवति ॥ यह हमेशा भाग्यवान, धनवान, मधुरभाषी, सुखी तथा दयालू होता है ।

पाश्चात्य मत—इस स्थानमें तुला, मकर, कुम्भ या मिथुन में शुभ-सम्बन्धित शनि हो तो वह, व्यक्ति विद्याव्यासंगी, विचारी, शान्त, धीरोदात्त, स्थिरवृत्ति तथा मितभाषी होता है । यह कानून, दर्शनशास्त्र,

वेदान्त आदि जटिल विषयों में रुचि रखता है तथा प्रवीणता प्राप्त करता है। न्यायदान, धार्मिक संस्थाएं, विद्यालय आदि में अपनी पवित्रता तथा श्रेष्ठ बुद्धि से ये अच्छा स्थान प्राप्त करते है। दैवी धर्मसंस्थापकों की कुण्डली में अकसर यह योग देखा गया है। इसी स्थान में पीड़ित शनि हो तो द्वेषी, कंजूस, स्वार्थी, क्षुद्रबुद्धि, छद्मी, धर्म के विषय में दुराग्रही तथा मर्मघातक बोलनेवाला होता है। इसे विवाह से सम्बधित रिश्तेदारों से हानि होती है। विदेश में घूमने से, कानूनी व्यवहारों में लम्बे प्रवास से नुकसान होता है। ग्रन्थप्रकाशन में असफलता मिलती है। इस स्थान में शुभ शनि ही विदेशभ्रमण के लिये अच्छा है। अशुभ शनि से विदेश में बहुत कष्ट होता है। इसका स्वभाव अभ्यासप्रिय, गम्भीर, दूसरों का तिरस्कार करनेवाला होता है। अशुभ सम्बन्ध से चित्तभ्रम, भटकना, पागलपन आदि फल मिलते हैं। इस शनि से ज्योतिष आदि गूढ शास्त्रों में रुचि रहती है।

भृगुसूत्र—अधिपतिः। जीर्णोद्धारकर्ता। एकोनचत्वारिंशद्वर्षे तटाकगोपुरनिर्माणकर्ता। उच्चस्वक्षेत्रे पितृदीर्घायुः। पापयुते दुर्बले पित्ररिष्टवान्। यह अधिकारी होता है। पुरानी इमारतों का जीर्णोद्धार करता है। ३९ वें वर्ष में तालाब, मन्दिर बनवाता है। उच्च में या स्वगृह में यह शनि हो तो पिता दीर्घायु होता है। पापग्रह से युक्त या दुर्बल हो तो पिता पर आपत्ति आती है।

हमारे विचार—प्राचीन लेखकों में कल्याणवर्मा, गर्ग, वसिष्ठ, पराशर, नारायणभट्ट, आर्यग्रन्थकार, ढुंढिराज, यवनजातककार, जयदेव, काशीनाथ, जागेश्वर, मन्त्रेश्वर, घोलप, गोपाल रत्नाकर तथा हरिवंशकारने इस स्थान में शनि के फल अशुभ बतलाये हैं। इनका अनुभव वृषभ, कन्या, तुला, मकर तथा कुम्भ में आता है। आचार्य, गुणाकर, लखनऊ के नबाब इन्होंने जो शुभ फल दिये है उनका अनुभव मेष, मिथुन, कर्क, सिंह वृश्चिक, धनु तथा मीन में आता है।

हमारा अनुभव—नवम में मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक, मीन में शनि ३६ वें वर्ष से भाग्योदय कराता है। जीविका का आरम्भ

मामूली लोगों में २० वर्ष से तथा उच्च वर्गों में २७ वें वर्ष से होता है। पूर्वार्जित सम्पत्ति प्राप्त होती है तथा उसमें कुछ वृद्धि भी होती है। शेष राशियों में पूर्वार्जित सम्पत्ति नही होती। रही भी तो ३४ वें वर्ष तक अपने ही हाथों नष्ट होती है। सम्पत्ति में वृद्धि नही होतीं। दारिद्र्ययोग होता है। अस्थिरता रहती है। अपमान के अवसर आते हैं। पिता का जल्दी मृत्यु होता है या जीवित रहे तो सम्बन्ध ठीक नही रहते। भाइयों से अनबन होती है। भाईबहिनों की स्थिति अच्छी नही रहती। बंटवारा कर अलग रहना इनके लिये अच्छा होता है। इन्हें विवाह के बारे में कुछ अनियमित परिस्थिति प्राप्त होती है। रजिष्टर पद्धति से विवाह करेंगे या स्थैर्य प्राप्त होने तक विवाह न करना पसन्द करेंगे। विदेशभ्रमण हुआ तो किसी विदेशी युवती से विवाह करेंगे। आस्तिक विचार होते हैं किन्तु आचरण नास्तिकों जैसा होता है। मेषादि रशियों में शिक्षा पूरी होती है। विज्ञान की उपाधियां–बी. एस. सो., एम्. एस. सी; डी. एस सी. आदि– या कानून की उपाधि प्राप्त होती है। शिक्षक, संशोधक, वकील, अटर्नी आदि के रूप में सफल होते हैं।

स्वतन्त्र व्यवसाय या व्यापार का योग क्वचित देखा है। ये कर्मठ होते हैं। सौतेली मां होने का योग होता है। इस स्थान में पुरुष राशि में शिक्षा पुरी होती है। स्त्री राशि में क्वचित ही होती है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन में यह शनि छोटे भाइयों के लिये शुभ है। अन्य राशियों में छोटे भाई नही रहते।

उदाहरण—(१) स्व. डॉ. शंकर आबाजी भिसे–ये अच्छे संशोधक थे। टाइपों में सुधार किये तथा ओटोमिडीन नामक औषधि तैयार की। इनके नवम में वृश्चिक में शनि था।

(२) क्ष–जन्म ता. १६–४–१९०३ सुबह ८–२३ इष्ट घटी ६–५० लग्न १–२५–७–४१।
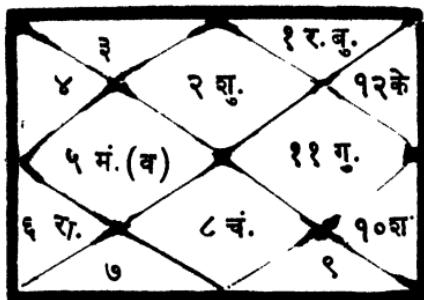
इसे कभी स्थिरता नही मिली। नौकरी कई जगह की किन्तु बारबार काम छोडना पडा। धन नही मिला। घर में सब से छोटे थे। दारिद्र्ययोग का यह अच्छा उदाहरण है।

दशम स्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर—सुखशौर्यभाक् खे। यह सुखी और शूर होता है।

कल्याणवर्मा—धनवान् प्राज्ञ: शुरो मन्त्री वा दण्डनायको वापि। दशमस्थे रवितनये वृन्दपुरग्रामनेता च ।। यह धनी, बुद्धिमान शूर तथा मन्त्री या सेनापति होता है। यह नगर, गांव और जनसमूह का नेता होता है।

पराशर—दशमे धनलाभं सुखं जयं। माने च मीने यदि वार्कपुत्र: संन्यासयोगं प्रवदन्ति तस्य ।। यह धनी, सुखी तथा विजयी होता है। यह शनि मीन में हो तो संन्यास का योग होता है।

गर्ग—भवेत् वृन्दपुरग्रामपतिर्वा दण्डनायक:। प्राज्ञ: शूरो धनी मन्त्री नर: कर्मस्थिते शनौ ।। सेवार्जितधन: क्रूर: कृपण: शत्रुघातक:। जंघारोगीनीचशत्रुराशिस्थे कर्मगे शनौ। शनि के साधारण फल कल्याणवर्मा जैसे बतलाये हैं। यह नीच या शत्रु राशि में हो तो नौकरी से धनार्जन करनेवाला, क्रूर, कंजूस तथा शत्रुओं का घात करनेवाला होता है। इसकी जंघा में रोग होते हैं।

वसिष्ठ—बहुकुकर्मरतं कुपुत्रं दौर्मनस्यं। यह बहुत दुराचारी, दुर्बुद्धि तथा दुष्ट पुत्रों से युक्त होता है।

वैद्यनाथ—मन्दे यदा दशमगे यदि दण्डकर्ता मानी धनी निजकुलप्रभवश्च शूरः॥ विवासः। यह धनी, मानी, शूर, अपने कुल में श्रेष्ठ, शासक होता है। यह संन्यास का भी योग होता है :

बृहद्यवनजातक—राज्ञः प्रधानमतिनीतियुतं विनीतं सद्ग्रामवन्दपुरभेदनकाधिकारम्। कुर्यान्नरं सुचतुरं द्रविणेन पूर्णं मेषूरणे हि तरणेस्तनुजः करोति॥ यह राजमन्त्री, बहुत नीतिमान, नम्र, गांव और लोगों का प्रमुख अधिकारी, चतुर, धनी होता है।

आर्यग्रन्थ—शनैश्चरे कर्मगृहे स्थितेऽपि महाधनी भृत्यजनानुरक्तः। प्राप्तप्रवासे नृपसद्मवासी न शत्रुवर्गाद् भयमेति मानी॥ यह बहुत धनवान, नौकरों में आस्था रखनेवाला, प्रवास में राजप्रासादों में रहनेवाला, निर्भय तथा मानी होता है।

काशीनाथ—कर्मभावे सूर्यपुत्रे कुकर्मी धनवर्जितः। दयासत्यगुणैर्हीनश्चंचलोपि भवेत् सदा॥ यह दुराचारी, निर्धन, निर्दय, चंचल तथा सत्य से विमुख होता है।

जयदेव—प्राज्ञः प्रधानमतिमान् सभयो विनीतो ग्रामाधिकारसहितः सधनोऽम्बरस्थे। यह बुद्धिमान, प्रधान, नम्र, गांव का अधिकारी, धनवान और भययुक्त होता है।

जागेश्वर—शनौ कर्मणे पितृघाती नरःस्यात् परं मातृकष्टं कथं देहसौख्यं तथा वाहनं मित्रसौख्यं कुतः स्याद् ध्रुवं दुष्टकर्मा भवेन्नीचवृत्तिः॥ यह पिता के लिये घातक होता है तथा माता को भी कष्ट होता है। शरीर सुख, वाहन अथवा मित्रों का सुख नही मिलता। यह दुराचारी और नीचवृति से युक्त होता है।

नारायणभट्ट—अजातस्य माता पिता बाहुरेव वृथा सर्वतो दुष्टकर्माधिपत्यात्। शनैरधते कर्मगः शर्म मन्दो जयो विग्रहे जीविकानां तु यस्य॥ शनौ व्योमगे विन्दते किं च माता सुखं शैशवं दृश्यते किन्तु पित्रा। निधिः

स्थापितो वा पिता वा कृषिश्च प्रणश्येत् ध्रुवं दृश्यतो दैवतो ना ।। इसके बचपन में ही मातापिता का मृत्यु होता है। इसे बहुत धीरे धीरे सुख मिलता है। युद्ध में विजयी होता है। अधिकारी होने पर यह व्यर्थ ही दुष्ट काम करता है। इसकी पैतृक सम्पत्ति, जमीन आदि दृश्य या दैवी कारण से नष्ट होती है।

मन्त्रेश्वर—मन्त्री वा नृपतिर्धनी कृषिपरः शूरः प्रसिद्धोम्बरे ।। यह राजा अथवा मन्त्री, धनवान, शूर तथा खेती में रुचि लेनेवाला होता है।

लखनऊ नवाब—शाहमकाने जोहलश्चेषु दशाप्ते च मानवो शाहः। अथवा भवेन्मशीरः खुशखुल्क सुकृती गनी नेही शनि दशम में हो और शनि की दशा प्राप्त हो उस समय राजपद अथवा मन्त्रिपद मिलता है। यह संसार में सुखी, सदाचारी, लोगों से स्नेह रखनेवाला होता है।

हरिवंश—बुद्धियुक्तं पूर्णवितं मनुष्यं ग्रामवीश राजमान्यं करोति। स्वोच्चस्थो वा स्वारूयस्थो विशेषात् शेषस्थश्चेद् वैरिभीत्यं शनिश्च ।। यह शनि उच्च या स्वगृह में हो तो वह बुद्धिमान, धनी, गांव का अधिकारी और राजमान्य होता है। अन्य राशियों में शत्रुओं से भय रहता है।

बोलप—यह सब कलाओं का ज्ञाता, राजा जैसा सुखी, लोगों से स्नेहपूर्वक रहनेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह मातृभूमि छोडकर विदेश में निर्वाह करता है। कंजूस, पित्त प्रकृति का होता है। यह माता के लिए मारक योग है। गांव का प्रमुख होता है। खेती से धनार्जन करता है। गंगास्नान करता है।

भृगुसूत्र—पंचविंशतिवर्षे गंगास्नायी। अतिलुब्धः पित्तशरीरी। पापयुते कर्मविघ्नकरः। शुभयुते कर्मसिद्धिः। केन्द्रे मन्दे षट्त्रिंशद्वर्षादुपरि भाग्यवृद्धिः। जनसेवकः मित्रवृद्धिः। समाजकार्ये रज्जकार्ये च कुशलः। सन्मानलाभश्च ।। यह २५ वें वर्ष गंगास्नान करता है। लोभी और पित्त-प्रकृति होता है। पापग्रह साथ हो तो कामों में विघ्न आते हैं। शुभग्रह

साथ हो तो काम सफल होते हैं। शनि केन्द्र में हो तो ३६ वें वर्ष के बाद भाग्योदय होता है। यह लोकसेवा करनेवाला, समाजकार्य तथा राजकारण मे कुशल, सन्मान पानेवाला और बहुत मित्रों से युक्त होता।

पाश्चात्यमत—यह शनि राशिबली–तुला मकर, कुम्भ या मिथुन में हो, या अन्य ग्रहों से शुभ सम्बधित हो तो सत्ता, अधिकार तथा भाग्य के लिये उत्कर्षकारक होता है। दीर्घ उद्योग, परिश्रम, महत्वाकांक्षा, प्रामाणिकता, दूरदृष्टि, व्यवस्थितता आदि गुणों से ये लोग सहज ही महान पद प्राप्त करते हैं। दूसरों की मदद के बिना अपने ही गुणों तथा परिश्रम से इनकी उन्नति होती है। अधिकारपद, बडे उद्योंगों के संचालक, बैन्कों के डाइरेक्टर आदि उत्तरदायित्वपूर्ण पदों के लिये योग्य व्यक्ति होते हैं। दशम में बलवान शनि कानून के क्षेत्र में अधिकार देता है— सबजज, जज, हाइकोर्ट के जस्टिस आदि होते हैं। पीडित शनि से प्राप्त अधिकार का दुरुपयोग करते हैं। दुराचार, झूठे षडयन्त्र, अप्रामाणिक व्यवहार से सत्ता प्राप्त होती है अतः उनका अधःपात भी जल्दी ही होता है। हर्षल, नेपच्यून, सूर्य, मंगल या गुरु से अशुभ सम्बधित होनेपर यह शनि बहुत अशुभ होता है। बचपन में मातापिता का मृत्यु होना, बालवय में ही स्थावर सम्पत्ति नष्ट होना, नौकरी में असफल होना, वरिष्ठ अधिकारीं से झगडा होना, उच्च पद छोडकर हलके पदपर नियुक्त होना, सामाजिक कार्य में नुकसान होना आदि फलपीडित शनि से प्राप्त होते हैं। जीविका के लिये कठोर परिश्रम और कष्ट दायक काम करने पडते है। बेइज्जती के अवसर बारबार आते हैं। स्वतन्त्र व्यवसाय में दिक्कतें आती हैं। दशमस्थ शनि से रवि अथवा चन्द्र अशुभ सम्बन्ध में हो तो अशुभ फल बहुत तीव्र होते हैं। यह योग हमेशा असफलता, विघ्न, दारिद्रय, अपमान और अपकीर्ति का कारण होता है। दशम में मेष, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में शनि के फल बहुत अनिष्ट होते हैं।

हमारे विचार—इस स्थान में आचार्य, गुणाकर, कल्याणवर्मा, गर्ग, पराशर, वैद्यनाथ, यवनजातक, आर्यग्रन्थ, हरिवंश जयदेव, मन्त्रेश्वर,

लखनऊके नवाब, घोलप तथा रत्नाकर ने सब शुभफल बतलाये हैं । इनका अनुभव मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक तथा मीन में मिलता है । वसिष्ठ, काशीनाथ, जागेश्वर, नारायण भट्ट ने अशुभ फल बतलाये हैं उनका अनुभव वृषभ, कन्या, तुला, मकर तथा कुम्भ में मिलता है ।

हमारा अनुभव–दशमस्थ शनि बचपन में ११ वें वर्ष तक ही माता-पिता का वियोग कराता है । उनका मृत्यु होता है अथवा गोद लिये जाने से दूसरे घर जाना पडता है अथवा विदेश में निर्वासित होना पडता है । यही दोनों एकत्र रहे तो पिताको सतत कष्ट का अनुभव होता है । व्यवसाय बदलना, हानि होना, बेकार रहना, अस्थिरता होना, कर्ज न चुकाने से कारावास, आदि बातें होती है । नौकरी हो तो पदावनति होना, सस्पेण्ड होना, मतिभ्रम होना, निर्वासित होना, फौजदारी कानून से दण्डित होना, असाध्य रोग होना आदि से कष्ट होता है । यह बालक बडा होने पर मातापिता से इसके सम्बन्ध अच्छे नही रहते । उपजीविका नही चलती । भाग्योदय बिलकुल नही होता । मामूली इच्छाएं भी पूरी नही होती । बडे होकर बेकार रहने से घर में हमेशा अपमान होता है । पैतृक इस्टेट नही मिलती और मिली तो वह पूरी तरह नष्ट होने पर ही कहीं सफलता मिल सकती है । इस योग में पितापुत्र दोनों एकसाथ प्रगति नही कर सकते । गोपालरत्नाकर का विदेशगमन से प्रगति होने का फल हमारे अनुभव से भी ठीक प्रतीत होता है । इन लोगों का अपनी जन्मभूमि में भाग्योदय नही होता । मेष, सिंह, धनु, मिथुन में प्राध्यापक, संशोधक, अधिकारी गूढशास्त्रों के अभ्यासी होते है । क्वचित व्यापारी भी देखे है । वृषभ, कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक, मीन, तुला, कुम्भ में संन्यासी, धर्म-प्रवर्तक, लेखक, गूढशास्त्रों के अभ्यासी, ज्योतिषी आदि होते है । नगर-निगम, जिलापरिषद आदि की सदस्यता या अध्यक्षता भी इस योग पर मिल सकती है । मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक, मीन में शिक्षा पूरी होती है । एम्. ए., एल्. एल्. बी., एम्. डी., एम्. एस्सी. आदि उपाधियां प्राप्त होती है । न्यायविभाग में जज, आदि अधिकारी, पुलिस, सेना या अबकारी इन्स्पेक्टर, रेंजर, डी. एफ्. ओ., टेकनिकल अधिकारी

आदि की कुण्डलियों में यह योग होता हैं। वृषभ, कन्या, तुला, कुम्भ में लेखक होने का योग होता है। ये दूसरों को बहुत उपदेश देते है किन्तु स्वयं दरिद्री ही रहते है। कॉंट्रॅक्टर, विदेशी माल के एजन्ट आदि हो सकते है। ये अपने व्यवसाय के मर्म को अच्छी तरह समझते है और उसमें इनसे कोई स्पर्धा नही कर पाता। इन्हें स्त्रीसुख कम मिलता है। दो विवाह हो सकते है। इन्हे पुत्र नही होते या पुत्रों से सुख नही मिलता गोद लिये जाने पर इन्हें पुत्रसुख मिल सकता है। साधारणतः शनि के फलस्वरूप विषयेच्छा कम होनी चाहिए किन्तु अनुभव में ये विषयासक्त ही पाये जाते है। शुक्र और चन्द्र का अशुभ सम्बन्ध हो तो इनका किसी ज्येष्ठ स्त्री से अवैध सम्बन्ध पाया जाता है। वृद्ध आयु में भी स्त्रीसुख की इच्छा इन्हें बनी रहती है। इनके वस्त्र पसीने से हमेशा मैले रहते है और जलदी फटते है। ये अपने घर से अधिक दूसरों के व्यवहार की फिकर करते है। दूसरों के विवाह जमाना, समझौता कराना, संस्थाएं स्थापित करना आदि में मग्न होकर ये घर का खयाल भूल से जाते है। दशमस्थ शनि से कामशास्त्र के उपदेशक और वेदान्त के प्रवर्तक दोनों प्रवृत्तियों के लोग पाये आते है। इन्हें कीर्ति, सन्मान, धन मिलता है। विदेशयात्रा होती है। ये स्वयं को किसी श्रेष्ठ कार्य के लिये उत्पन्न हुये मानते है और उस कार्य को सफल देख कर मृत्यु के समय सन्तोष का अनुभव करते है। मातापिता की दृष्टि से ही यह योग अशुभ होता है। माता का मृत्यु होता है या उसे कोई असाध्य रोग या व्यंग होता है और पिता के जीवित रहते भाग्योदय नही हो पाता।

कुछ प्रसिद्ध उदाहरण—नासिक मठ के शंकराचार्य डॉ. कुर्तकोटी (मीन), स्वामी विवेकानन्द (कन्या), स्व. श्री. पांगारकर (मराठी सन्त साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान) (धनु), प्रख्यात मराठी उपन्यासकार स्व. हरि नारायण आपटे (कन्या), भूतपूर्व मध्यप्रदेश राज्य के मन्त्री श्री. बाबासाहब खापर्डे (मेष), स्व. तात्यासाहब सांगलीकर (वृश्चिक) (इनके सात विवाह हुए किन्तु पुत्र नही हुआ), श्री. गंगाधर केशव देशपांडे, पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट (वृश्चिक) (तीन पत्नियों का मृत्यु हुआ),

सांगली रियासत के प्रधान (सिंह) (गोद लिये जाने से अधिकारपद मिला), स्व. जमनालाल बजाज (सिंह) (गोद लिये जाने से वैभव मिला) स्व. सयाजीराव गायकवाड, महाराज बडौदा, (कन्या) (गोद लिये जाने से अधिकारपद, द्विभार्यायोग), श्री. उदगांवकर, अमरावती (तुला) (टेक्निकल स्कूल के प्रमुख), श्री. एन. एम. पटवर्धन (मीन) (डिस्ट्रिक्ट जज हुए), फ्रान्स के बादशाह नेपोलिअन बोनापार्ट (मिथुन) (युद्ध में कुशलता तथा बहुभार्या योग), जर्मनी के युद्धकालीन प्रमुख एडाल्फ हिटलर (कर्क), पंडित पद्मनाभ पांडुरंग पालये (मीन) (ज्योतिषी), कुण्डलीसंग्रह (पं. रघुनाथशास्त्री द्वारा प्रकाशित) की कुण्डली नं. ११२ (दशम में तुला में शनि) इसके जन्म के बाद ३ वर्षों में ही मातापिता का मृत्यु हुआ, जन्म के समय स्थिति अच्छी थी द्विभार्या योग हुआ।

दशमस्थ अशुभ शनि अति विपत्ति का कारण होता है। बहुत दारिद्रय, खाने की मुश्किल होना, पैतृक सम्पत्ति न होना या होकर भी प्राप्त न होना, कष्टमय जीवन, बेइज्जत होना, मन के प्रतिकूल हलकी नौकरी, नौकरी में बहुत बार परिवर्तन, मृत्यु के समय तक कष्ट यह इन लोगों के जीवन का हाल रहता है। दशमस्थ शनि, मेष, सिंह, धनु, मिथुन, कर्क, वृश्चिक और मीन में होकर रविचन्द्र से केन्द्रयोग करता हो तो सांसारिक कष्ट बहुत रहते हैं किन्तु कीर्ति अच्छी मिलती है। इसका अच्छा उदाहरण स्व. हरि नारायण आपटे की कुण्डली है। इन्हें जीवन पर्यन्त सन्तति तथा सम्पत्ति सुख अच्छी तरह प्राप्त नही हुआ किन्तु उनके मराठी उपन्यास चिरस्मरर्णाय हुए हैं। इनकी कुण्डली में रवि-चन्द्र का शनि से षडाष्टक योग हुआ हैं।

———०———

लाभस्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर—प्रभूतधनवान्। यह बहुत धनवान होता है।

कल्याणवर्मा—बह्वायुः स्थिरविभवः शूरः शिल्पाश्रयो विगतरोगः। आयस्थे भानुसुते धनजनसम्पद्युतो भवति॥ यह दीर्घायु, धनवान, शूर,

शिल्प के आश्रय से जीविका चलानेवाला, नीरोग तथा परिवार से युक्त होता है।

वसिष्ठ—रविजः सुकीर्तिम् ।। कीर्तिमान होता है।

गर्ग—स्थिरसम्पत्तिभूलाभी शूरः शिल्पान्वितः सुखी। निर्लोभश्च शनौ कैश्चित् मृत प्रथमजीविकः ।। इसकी सम्पत्ति, जमीन आदि स्थिर होती है। यह शूर तथा शिल्प से युक्त, सुखी एवं निर्लोभी होता है। इसकी पहली सन्तति मृत होती है।

पराशर—एकादशे धनानां च सिद्धि मित्रसमागमम् ।। धन प्राप्त होता है तथा मित्रों की संगति मिलती है।

वैद्यनाथ—भोगी भूपतिलब्धवित्तविपुलः प्राप्ति गते भानुजे। दासी-दासकृषिक्रियार्जितधनं धान्यं समृद्धं शनिः ।। यह राजा की कृपासे विपुल धन प्राप्त कर अच्छा उपभोग करता है। इसे दासदासियों से तथा खेती से धनधान्य मिलता है।

आर्यग्रन्थ—सूर्यात्मजे चायगते मनुष्यो धनी विमृश्यो बहुभाग्यभोगी। मितानुरागी मुदितः सुशीलः स बालभावे भवतीतिरोगी ।। यह धनवान, विचारशील, भाग्यवान, आनन्दी, शीलवान होता है। बचपन में रोगी रहता है।

बृहद्यवनजातक—कृष्णाश्वानामिन्द्रनीलोर्णकानां नांनाचंचद्वस्तु-दन्तावलीनाम्। कुर्यान्मनवान्तं प्राप्ति बलीयान् प्राप्तिस्थाने वर्तमानोऽर्कसूनुः ।। इसे काले घोडे, इन्द्रनील रत्न, हस्तिदन्त आदि विविध वस्तु, की प्राप्ति होती है।

नारायणभट्ट—स्थिरं वित्तमायुः स्थिरं मानसं च स्थिरानैव रोगादयो न स्थिराणि। अपत्यानि शूरः शतादेक एव प्रपंचाधिको लाभगे भानुपुत्रे ।। यह हमेशा धनवान, दीर्घायु शूर तथा स्थिर चित्त का होता है। इसे दीर्घकाल रोग नही होते। इसकी सन्तति स्थिर नही रहती। प्रपंच बडा होता है।

जागेश्वर—धनं सुस्थिरं दन्तिनस्तस्य गेहे भयं याग्निना जायते देहदुःखं । न रोगा गरिष्ठास्तदंगे कदाचित् यदा लाभगो मन्दगामी जनानाम् ॥ यह सदा धनवान होता है । घर में हाथी पलते है । इसे आग से भय तथा शरीर में दुःख होता है । बडे रोग नही होते ।

काशीनाथ—छायात्मजे तु लाभस्थे सर्वं विद्याविशारदः । खरोष्ट्रमहिषैः पूर्णो राजमान्योऽशुचिर्भवेत् ॥ यह सब विद्याओं में प्रवीण, राजमान्य, किन्तु अपवित्र होता है । इसके घर में ऊंट, भैंस, गधे आदि प्राणी बहुत होते हैं ।

जयदेव—कृष्योर्णिकाश्वगजनीलबलाढ्यता स्यात् सद्वस्तुता भवति लाभगतेऽर्कसूनो । खेती, ऊन, घोडे, हाथी, नीली वस्तुएं आदि अच्छी चीजों से यह समृद्ध होता है ।

हरिवंश—पृथ्वीपालं मानलाभं धनंच विद्यालाभं पण्डितेभ्यः प्रसूतौ । नानालाभ सर्वतो मानवस्य लाभस्थाने भानुपुत्रो विदध्यात् ॥ इसे राजा से सन्मान, पण्डितों से विद्या, धन आदि कई लाभ होते है ।

लखनऊ-नबाब—साहेबदर्दो नेकः शीरीं सखुनत्वबंगरोना स्यात् । याफ्तमकाने जोहलः ईशः साबिरो रिपुहन्ता ॥ यह दयालु, शुद्ध आचरण करणेवाला मधुरभाषि धनवान बहुत लोगों का दयालु मालिक, सन्तुष्ट और शत्रु को जितनेवाला होता है ।

घोलप—यह उत्तम गुणों से युक्त, तेजस्वी, शत्रु का घात करनेवाला, अच्छे घर में रहनेवाला होता है इसका मन सत्संगति से शुद्ध होता है । नीतिमान और कष्टमुक्त होता है ।

गोपाल रत्नाकर—यह बहुत श्रीमान, राजपूज्य होता है । इसे भूमि का लाभ होता है । शिक्षा में रुकावट आती है । इसको और इसके पिता को बडे भाई नही होते । वाहनसुख मिलता है ।

पाश्चात्य मत—यह शनि तुला, मकर और कुम्भ में शुभसम्बन्धित हो तो आयु के उत्तरार्ध में साम्पत्तिक सुख बहुत अच्छा मिलता है। धनप्राप्ति का प्रमाण अच्छा होता है और संचय भी होता है । मित्र कम होते है ।

यह शनि सन्तति के लिये अनुकूल नही है। स्त्री वन्ध्या है होती अथवा देर से सन्तति होती है या होकर नष्ट होती है। सन्तति से कष्ट होता हैं इस स्थान में पीडित शनि के कारण मित्रों से नुकसान होता है। किसी की जमानत लेने या पैसे उधार देने से नुकसान होता। है। इस शनि से रवि–चन्द्र का अशुभ योग हो तो वह दारिद्रयोग होता है। यह पीडित शनि चरराशि में हो तो मित्रों के कारण सर्वनाश होता है। स्थिरराशि में हो तो पूर्ण वय में बहुत कष्ट होते है। द्विस्वभाव राशि में हो तो सभी आशाएं भग्न होकर सर्वत्र असफलता ही प्राप्त होती है। इसके दिये हुए कर्ज कभी वसूल नही होते।

भृगुसुत्र—बहुधनी। विघ्नकरः। भूमिलाभः। राजपूजितः। उच्चे स्वक्षेत्रे विद्वान् महाभाग्ययोगः वाहनयोगः॥ यह धनवान होता है। किसी भी काम में विघ्न लाता है। इसे राजदरबार से सन्मान और भूमि का लाभ होता है। यह शनि तुला, मकर या कुम्भ में हो तो वह विद्वान, बहुत भाग्यवान और वाहनसम्पन्न होता है।

हमारे विचार—इस स्थान में प्राचीन लेखकों ने बहुत शुभ फल बतलाये है। वे मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु तथा मिन में प्राप्त होते है। अन्य राशियों में अशुभ फल मिलते है।

हमारा अनुभव—इस स्थान में मिथुन, सिंह, धनु में शनि पुत्रसन्तति नही देता। मुश्किल से एक पुत्र होता है। अन्य राशियों में सन्तति होती है। पुत्र होने पर उनसे सम्बन्ध अच्छे नही रहते। वे अलग रहते है। इसका स्वभाव कंजूस, लोभी होता है, कभी दान नही देता। इसे कोई ठगा न्ही सकता। चुनाव में जीतते है। प्रधानपद मिलता है। इसे पूर्व तथा उत्तर आयु में कष्ट होता है, सिर्फ जीवन का मध्यकाल कुछ सुखसे बीतता है। पूर्ववय में परिस्थिति वशात् सभी कष्ट रहते है। उत्तर आयु में स्त्रीपुत्रों से कष्ट होता है। धन अच्छा मिलता है और संचय की प्रवृत्ति होती है। इन्हे अपने कष्ट से ही प्रगति करनी पडती है। अब सन्तति-स्थानों में (१।३।५।७।९।११) शनि का साधारण फल बतलाते है। इस

व्यक्ति का स्वभाव हट्टी, दुराग्रही, प्रतिशोधपूर्ण, किन्तु ऊपर दिखाने के लिये मधुर बोलनेवाला होता है। इसकी दुष्टता कुछ छिपी सी रहती है। व्यसनों में स्वभावतः दूर रहते है। बुद्धि गहरी, संशयी अविश्वासु, अपनी ही फिक्र करनेवाला, दूसरों की परवाह न करनेवाला, अपना ही सच माननेवाला व्यवहार में स्पष्ट ऐसा यह व्यक्ति होता हैं। इसे सच्चे मित्र प्राप्त नही होते। ये जिलापरिषद, नगरनिगम आदि में भाग लेते है। किसी कीं जमानत लेनें से इन्हें हानि होती है। ये बहुत लोभी होते है।

———o———

व्ययस्थान में शनि के फल

आचार्य व गुणाकर—पतितस्तु रि:फे। यह पतित होता है।

कल्याणवर्मा—विकलः पतितो रोगी विषमाक्षो निर्घृनो विगतलज्जः। व्ययभवनगते सौरे बहुव्ययः स्यात् सुपरिभूतः॥ यह दुखी, पतित, रोगी, निर्दय, निर्लज्ज बहुत खर्च करनेवाला, अपमानित होता है। इसकी आंखें समान नही होती।

पराशर—द्वादशे धनहानिं च व्ययं वा कुक्षिरुक् क्रमात्। धनहानि, खर्च बढना तथा पसलियों में व्यथा ये इस शनि के फल है।

वसिष्ठ—रविजः सुतीव्रः। यह बहुत तीक्ष्ण होता है।

वैद्यनाथ—मन्दे रि:फगृहं गते विकलधीः मूर्खोऽधनी वंचकः। यह मन्दबुद्धि, मूर्ख, निर्धन तथा वंचक होता है।

गर्ग—नीचकर्माश्रितः पापो हीनांगो भोगलालसः। व्ययस्थानगते मन्दे क्रूरेषु कुरुते रुचिम्॥ यह नीच काम करता है। पापी। भोगलोलुप तथा क्रूर कामों में रुचि लेनेवाला होता है। इसके किसी अवयव में व्यंग होता है।

बृहद्यवनजातक—दयाविहीनो विधनो व्ययार्तः सदालसो नीचजनानुयातः नरोऽगभंगोज्झितसर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतौ॥ यह निर्दय, निर्धन, बहुत खर्च से पीडित, आलसी, नीच लोगों के साथ रहनेवाला, किसी अवयव के टूटने से सदा दुखी रहता है।

आर्यग्रन्थ—व्यये शनौ पंचगणाधिनाथो गदान्वितो हीनवपुःसुदुःखी। जंघाव्रणी क्रूरमतिः कृशांगो वधे रतः पक्षिगणस्य नित्यम्। यह बहुत लोगों का प्रमुख, रोगी, दुबला, दुखी, क्रूर, पक्षियों को मारने की रुचि रखनेवाला होता है। इसका शरीर हीन होता है, जंघा में व्रण होता है।

काशीनाथ—असद्व्ययी व्यये मन्दे कृतघ्नो वित्तवर्जितः। बन्धुवैरी कुवेषः स्याच्चंचलश्च सदा नरः॥ यह बुरे काम में धन खर्च करता है। निर्धन, कृतघ्न, चंचल, बुरा वेष धारण करनेवाला तथा रिश्तेदारों को वैरी माननेवाला होता है।

जागेश्वर—व्यये संप्रयुक्तोऽलसो नीचसेवी कुतस्तस्य सौख्यं जनो याति नाशं। यदा सौरिनामा गतश्चान्त्यभावम्॥ यह खर्चीला आलसी, नीच लोगों का सेवक, दुखी होता है। इसके स्वजनों का नाश होता है।

जयदेव—विदयो विधनः स्वकर्महीनो विसुखो हीनतनुर्व्ययेऽर्कपुत्रे॥ यह निर्दय, निर्धन, दुखी, अपने काम को छोडनेवाला और हीन शरीरका होता है।

मन्त्रेश्वर—निर्लज्जार्थसुतो व्ययेंऽगविकलो मूर्खो रिपूत्सारितः। यह निर्लज्ज, निर्धन, पुत्ररहित, मूर्ख, शत्रुद्वारा पराजित तथा किसी अवयव में व्यंगयुक्त होता है।

हरिवंश—स्वस्य देशे सदालस्ययुक्तो नरो बुद्धिहीनस्तथोद्विग्नचित्तः। बुद्धिभ्रंशं मानभंगं कुसंगं मांघं शाल्पं देहजाड्यं नरस्य। बन्धोर्वैरं वित्तहानिः प्रसूती कुर्युराज्यब्दकुधरे (?) व्यवस्थः॥ यह अपनी जन्मभूमि में हमेशा आलसी, उद्विग्न रहता है। बुद्धिहीन अथवा बुद्धिभ्रष्ट अपमानित, बुरी संगति में रहनेवाला, मन्द, जड शरीर का, रिश्तेदारों से वैर करनेवाला होता है। इसके धन की हानि होती है।

नारायणभट्ट—व्ययस्थे यदा सूर्यसूनौ नरः स्यादशूरोऽथवा निस्त्रपो मन्दनेत्रः। प्रसन्नो बहिर्नो गृहे लग्नपश्चेद् व्ययस्थो रिपुध्वंसकृद् यज्ञभोक्ता॥ यह शूर नही होता। निर्लज्ज होता है। इसकी आंखें मन्दतेज होती है। यह घर में प्रसन्न नही रहता, बाहर प्रसन्न रहता है। यह शनि यदि लग्नेश हो तो शत्रु का घात कर यज्ञ करनेवाला व्यक्ति होता है।

लखनऊके नवाब–तंगहालो बदफेलः पापासक्तश्च मुफ्तिसो मनुजः । ओहलः खर्जमकाने भवति हरीशः कृपालुः स्यात् ।। यह कठिन स्थिति में रहता है । दुराचारी, पापी, बलवान, दयालू होता है ।

घोलप—यह क्रुर, दुखी, दुर्बुद्धि, आप्तलोगों से रहित, खर्चीला, बुरी संगति में रहनेवाला होता है ।

गोपाल रत्नाकर—यह विद्वान, अंगहीन होता है । साथ में पापग्रह हो तो नेत्रहीन होता है । शुक्र से युति हो तो सुखी, सब कामों में रुचि रखनेवाला होता है । यह कुछ तिरछा देखता है । पापकर्म करता है ।

पाश्चात्य मत—इसकी प्रवृत्ति एकान्तप्रिय, संन्यासी जैसी होती है । गुप्त शत्रुओं के कारण प्रगति में बारबार रुकावटें आती हैं । किसी पशु के कारण अपघात होता है । यह अपने हाथ से ही अपना नुकसान करता है । अज्ञातवास, कारावास, विषप्रयोग, झूठे इलजामों से कैद आदि से कष्ट होता है । यह शनि पापग्रह से पिडित और राशि से बलहीन हो तो ये अशुभ फल तीव्र होते हैं । यही शुभसम्बन्धित हो तो एकान्तप्रियता और जिन व्यवसायों में लोगों से विशेष सम्बन्ध नही आता उनसे लाभ होता है । भिक्षागृह, अस्पताल, कारागृह, दानसंस्था आदि से सम्बन्ध रहता है । ये लोग गुप्त रीति से धनसंचय करते हैं । गुप्त नौकरी, हलके काम आदि से लाभ होता है । यह शनि बुध से अशुभ सम्बन्ध में हो तो पागलपन की सम्भावना होती है । मंगल से अशुभ सम्बन्ध हो तो अपघात, खून या आत्महत्या द्वारा मृत्यु होता है । हर्शल से अशुभ सम्बन्ध हो तो अधिकारी और बडे लोगों से शत्रुता होने से अपमान और दुष्कीर्ति होती है । रवि-चन्द्र से अशुभ सम्बन्ध हो तो प्रिय व्यक्ति को मृत्यु से खेद होता है । इस शनि से साधारणतः उदास और शोकपूर्ण प्रवृत्ति होती है ।

भृगुसुत्र—पतितः । विकलांगः । पापयुते नेत्रच्छेदः । शुभयुते सुखी सुनेत्रः । पुण्यलोकप्राप्तिः । पापयुते नरकप्राप्तिः । अपात्रव्ययकारी निर्धनः शुभयुते राजयोगकरः ।। यह पतित, विकलांग होता है । पापग्रह के साथ हो तो आंखे अन्धी होती है, अयोग्य काम में धन खर्च करता है । निर्धन

होता है । मृत्यु के बाद नरक में जाता है । शुभग्रह के साथ हो तो सुखी होता है । आंखे अच्छी होती है । राजयोग होता है मृत्यु के बाद अच्छी गति मिलती है ।

हमारे विचार---प्राचिन लेखकों ने इस स्थानमें शनि के फल प्रायः अशुभ बतलाये हैं । ये दुषित शनि के फल है । इसे हर्षित ग्रह कहा हैं, किन्तु फल अशुभ बतलाये है ।

हमारा अनुभव---व्ययस्थान में मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु मिन में शनि शुभ फल देता है । ये किसी विषय में प्रवीण होते है । बुद्धि तीव्र होती है । वकील, बैरिस्टर, राजनीतिज्ञ, विद्वान होते है । अवकाश मिलने पर संस्था स्थापन करना, उनका काम देखना आदि से किर्ति प्राप्त होती है । राजनीतिक झगडों में इन्हें दीर्घ कारावास होता है । घरसे बाहर रहना पडता हैं । इनकी पत्नी भी इनके ही समान प्रौढ, गम्भीर रहती है, अतः इनमे पतिपत्नी प्रेम कैसा है यह कहना कठिन होता है । ये व्यवहारी, दुबलेपतले होते है, एक आंख से काने हो सकते है । एक दो सन्तान होती है । ये प्रसिद्ध होते हैं, किन्तु इनके पुत्रपौत्री की अवनति ही होती है । ये अपनी संस्कृति को कभी छोडना नही चाहते, उसी को सबसे अच्छा समझते है । वृषभ, कन्या, तुला, मकर कुम्भ में भी वकील, बैरिस्टर, डाक्टर आदि होने का योग होता है । अपने व्यवसाय में इन्हें कीर्ति मिलती हैं । बी. एस्-सी. एम्. एस्-सी., डी. एस्-सी, डी, लिट्, आइ. ए-एस्., आदि उपाधियां प्राप्त होती है । इन्हे पहले कन्या सन्तति होती है । पुत्र हो तो जीवित नही रहता । सन्तति काफी होती है । इन्हें मातापिता का सुख अच्छा मिलता है । ये लोग सार्वजनिक काम में भाग नही लेते । अपने को बहुत श्रेष्ठ मानते है । मिथुन, वृश्चिक, कुम्भ में इस शनि से क्रान्तिकारी प्रवृत्ति होती है । इनके मृत्यु से भी इन्हें चिरकालीन कीर्ति मिलती है । स्त्रियों की कुण्डली में भी यह शनि किर्ति देता है ।

कुछ प्रसिद्ध उदाहरण---स्व. दादासाहब खापर्डे, अमरावती (प्रसिद्ध कांग्रेस नेता) (वृषभ), सरदार माधवराव किबे, इन्दौर (कुम्भ), महामहोपाध्याय शास्त्री शिंदे, पूना (कुम्भ), स्व. शिवराम पमार (तुला), स्व.

भँडारकर (कन्या), नेताजी सुभाषचन्द्र बोस (वृश्चिक), स्व. प्रो. विश्वनाथ बलवन्त नाईक (मीन), दीवानबहादुर सिद्दप्पा तोहप्पा कम्बली (मिथुन) स्व. विष्णुशास्त्री चिपलूनकर (मकर), स्व. बलवंत पांडुरंग किर्लोस्कर (मकर), प्रसिद्ध मराठी अभिनेता स्व. भाऊराव कोल्हटकर (कन्या), सर मोरोपंत जोशी (सिंह), स्व. महारानी जमनाबाई गायकवाड, बडौदा (वृषभ), महारानी लक्ष्मीबाई, झांशी (तुला), श्रीमती एनी बिझांट (कुम्भ), श्रीमती कमलाबाई किबे (मिथुन)।

प्रकरण छठवाँ

महादशा विचार

मकर और कुम्भ इन दो राशियों पर शनि का अधिकार है। अतः दो स्थानों के ग्रह की दशा का विचार मंगलविचार में किया है तदनुसार समझना चाहिये। पुष्य, अनुराधा, उत्तरा, भाद्रपदा इन नक्षत्रों को यह दशा जन्म से २० वें वर्ष तक रहती है। कुण्डली में शनि अनिष्ट हो तो बचपन में मातापिता का मृत्युयोग, बीमारी, शिक्षा में रुकावट, बारबार फेल होना ये सब अनिष्ट बातें होती है। पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपदा इन नक्षत्रों को १७ वें वर्ष से ३५ वें वर्ष तक शनि की दशा होती है। शिक्षा पूर्ण होना, विवाह, उपजीविका का प्रारम्भ इसका यह समय है। आर्द्रा, स्वाति, शततारका इन नक्षत्रों के लिये ३५ वें वर्ष से ५३ वें वर्ष तक यह दशा होती है। इसमें स्थिति अस्थिर रहती है, कुछ प्रगति होती है, नौकरी में अवनति भी होती है। कुछ सन्तति की मृत्यु होती है। मृग, चित्रा, धनिष्ठा, इन नक्षत्रों को ४२ से ६० वें वर्ष तक यह दशा होती है। इसमें कुछ सन्तति और पत्नी की मृत्यु का सम्भव होता है। कुण्डली में शनि शुभ हो तो इसी आयु में भाग्योदय होता है।

लग्न के अनुसार किस स्थान का फल अधिक प्रभावी होता है, उसका विवरण इस प्रकार है—मेष लग्न में लाभस्थान, वृषभ लग्न में दशम स्थान, मिथुन लग्न में अष्टम स्थान, कर्क लग्न में सप्तम स्थान,

सिंह लग्न में सप्तम स्थान, कन्या लग्न में पंचमस्थान, तुला लग्न में चतुर्थस्थान, वृश्चिक लग्न में चतुर्थस्थान, धनु लग्न में धनस्थान, मकर लग्न में लग्नस्थान, कुम्भ लग्न में व्ययस्थान तथा मीन लग्न में लाभस्थान का फल प्रभावी होता है ।

शनिमहादशा में आरम्भ में अशुभ और बाद में शुभ फल मिलते है। इस विषय में मतान्तर है ।—नीचराशिगतो मन्दः स्वोच्चांशकसमन्वितः। दशादौ दुःखमापाद्य दशान्ते सुखदो भवेत् ॥ उच्चराशिगतो मन्दो नीचांशकसमन्वितः दशादौ सुखमापाद्य दशान्ते कष्टदो भवेत् ॥ शनि नीच राशि के उच्च अंश म हो तो दशा के आरम्भ में दुःख और अन्त में सुख मिलता है । वही उच्च राशि के नीच अंश में हो तो प्रारम्भ में सुख और अन्त में कष्ट होता है ।

शनि कुण्डली में मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु या मीन में केन्द्र या त्रिकोण में हो तो दशा शुभ होती है । अन्यत्र अशुभ होती है । शनि की महादशा में रवि, चन्द्र और मंगल की अन्तर्दशा अशुभ होती है । २।४।५।८।१०।१२ इन स्थानों में शनि हो तो यह महादशा स्त्री, पुत्र, धन आदि के लियें हानिकारक तथा सन्मान कीर्ति आदि के लिये लाभकारक होती है । महादशा का विस्तृत विवरण सर्वार्थचिन्तामणि में देखना चाहिये ।

वाचकोंको विनम्र सूचना

शनि-बिचार पृष्ठ क्र. ३२ के बाद
पृष्ठ ४१ गलत से छापे गये हैं।
कृपया वाचकोंने उसमे शंका नही
रखना। मजकूर मे कोई भी
गलती नही है।

—प्रकाशक

राहु-केतु
और
ग्रहण विचार

दैव विचार मालां पुष्प- ८

राहु केतु और ग्रहण विचार

लेखक

ज्योतिषी-स्व. ह. ने. काटवे
(२५ ज्योतिष ग्रंथके कर्ता)

संशोधित हिन्दी अनुवाद

नागपूर प्रकाशन, मेनरोड सीताबर्डी, नागपूर-१२

१०-६-१९८[illegible]

द्वितीय संस्करण [illegible] मूल्य ८ रुपये

मुद्रक :
अं. पु. तापस
गिरीश प्रिंटर्स,
सुभाषरोड, नागपूर-१०

प्रकाशक :
वि. मा. धुमाळ
नागपूर प्रकाशन,
सीताबर्डी, नागपूर-१२

राहु-केतु
और
ग्रहण विचार

अनुक्रमणिका

ग्रहण-'राहु-केतु' विचार

ग्रहण विचार

चन्द्र और सूर्य के ग्रहणों का ज्ञान भारत में वेदकाल से ही चलता आया है। यह सृष्टि का एक चमत्कार है। प्रायः सभी राष्ट्रों में ग्रहणों के फल बहुत अशुभ माने गये है। अब भी सर्वत्र वेधशालाओं मे ग्रहणों के वेध लेने की बहुत कोशिश की जाती है। पश्चिमी ज्योतिषी भी ग्रहणों के फल अशुभ ही मानते है।

चन्द्र का ग्रहण पौर्णिमा के पूर्ण होने पर हो सकता है। चन्द्र और राहुका अन्तर सात अंश से कम हो तो ग्रहण अवश्य होता है। सात से नौ अंशों तक अन्तर होने पर ग्रहण की सम्भावना होती है। इस से अधिक अन्तर हो तो ग्रहण नही होता। राहु की पात कक्षा मे चन्द्र हो और उस का शर एक या डेढ अंश में हो तो ग्रहण होता है। ऐसी स्थिति मे पृथ्वी और सूर्य की विरुद्ध दिशा मे चन्द्र होता है तथा पृथ्वी की छाया से चन्द्र का कुछ भाग आच्छादित होता है—यही ग्रहण कहलाता है। जब पृथ्वी और सूर्य के बीच चन्द्र आता है तब सूर्य का कुछ भाग दीखता नही है—यही सूर्यग्रहण है। सूर्यग्रहण मे सूर्य, चन्द्र तथा राहु का विचार करना होता है। चन्द्रग्रहण मे चन्द्र और राहु का ही विचार होता है। अब हम कुण्डली के भावों के अनुसार ग्रहण फलों का विचार करेंगे।

प्रथम स्थान में ग्रहण के फल

प्रथम स्थान में मेष, सिंह या धनु मे राहु चन्द्र हो तो वह व्यक्ति विक्षिप्त, साहसी, गुस्सैल, बुद्धिमान होता है। बचपन मे नजर लगना, रक्तदोष आदि से कष्ट होता है। दांत जलदी नही आते; बोलना सीखने

मे देर लगती है। वृषभ, कन्या तथा मकर मे—मन के अनुसार चलनेवाला, किसी के प्रभाव मे न आनेवाला, स्वार्थी, अपनी ही फिक्र करनेवाला, घर के लोगों की भी चिन्ता न करनेवाला, पत्नी से सरल व्यवहार न करनेवाला, कुछ व्यभिचारी, धन का संचय करनेवाला होता है। मिथुन, तुला और कुम्भ में—बचपन में सूखा होना, मस्तक के विकार, बोलना सीखने में देर होना, गले में कौओ का विकार होना, अति बुद्धि, लोकविरुद्ध बरताव, शिक्षा में रुकावट ये फल होते है। कर्क, वृश्चिक और मीन में—भाग्यवान किन्तु सदा रोगी, मितव्ययी, प्रपंच मे बहुत आसक्त किन्तु मृत्यु से न घबरानेवाला, अभिमानी, बातूनी, विचारी, शान्त पैसे के बारे मे चिकित्सक होता है। लग्न में राहु-चन्द्र के साधारण फल इस प्रकार है—तरुण वय से प्रकृति नीरोगी रहती है, प्रसिद्ध, चंचल, हठी, अनेक धन्धे करनेवाला, पिता और कुटुम्ब को कष्ट देनेवाला होता है। लग्न मे सूर्यग्रहण (रवि, चन्द्र और केतु एकत्र होना) बहुत कम देखने मे आता है। ऐसे व्यक्ति बचपन में हमेशा बीमार रहते है, चलना बोलना देर से आता है, दांत देर से आते है। अतिसार, संग्रहणी, कॉलरा आदि का कष्ट होता है। शिक्षा में शुरूसे ही रुकावटें आती है। मां-बाप को कष्ट होता है। जन्म के समय स्थिति साधारण रहती है। अपनी मेहनत से तरक्की करते है। घर में किसी दुर्घटना से मृत्यु का डर रहता है। घर की बाते ये गुप्त नही रखते। झूठ बोलना, स्त्रियों से अधिक मित्रता रखना, पैसे के बारे मे अविश्वास, दुष्टता, अति अभिमान होना ये इनके विशेष है। इनके आंख या वाणी मे दोष होता है। बरताव कुछ गूढ, आलसी, बिना कुछ काम किये स्वस्थ रहना, पत्नी की कमाईपर निर्वाह करना आदि फल मिलते है। यह योग शुभ युति मे हो तो शरीर स्वस्थ रहता है। अशुभ युति में हो तो दुबला पतला होता है। शुभ युति में बुद्धि शान्त, संशोधनप्रिय, एकान्तप्रिय, मिलनसार, उद्योगी स्वभाव होता है। इस योग मे भाई बहन कम होते है। दो विवाह होते हैं। सन्तति कम होती है।

द्वितीय स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में होतो मेष, सिंह, धनु में—पूर्वार्जित सम्पत्ति नही होती। खुद की मेहनत से प्रगति कर धन प्राप्त करते है। धन बहुत कमाते है किन्तु संचय नही कर पाते। मिलनसार किन्तु व्यवहार में अनुशासन प्रिय, पैसे की फिक्र न करनेवाले, खाने के शौकीन, निर्व्यसनी, कुछ डरपोक होते है। सामाजिक रुचि कम होती है। वृषभ, कन्या, मकर मे—बरताव बहुत व्यवस्थित, मितव्ययी, कम बोलने-वाला होता है। पूर्वार्जित धन थोडा होता है, उसे बढाते है। व्यवसाय मे सफल होते है। बचपन मे बहुत कष्ट रहता है। उत्तरार्ध मे, सुख मिलता है। मिथुन, तुला, कुम्भ में—पूर्वार्जित सम्पत्ति नही होती। अपनी मेहनत से प्रगति करते है।

इस स्थान मे सूर्यग्रहण हो तो—पूर्वार्जित सम्पत्ति होती है किन्तु बडे व्यवसायों मे नुकसान होकर आयु के ४२ से ४८ वे वर्ष तक निर्धन अवस्था आती है। फिर अपनी मेहनत से कुछ प्रगति करते है। निडर स्वभाव होता है। कीर्ति के लिए कोशिश करते है, स्वभाव से कम बोलने-वाले किन्तु मौका पाकर अच्छा बोलते है। प्रवास बहुत होता है। यह ग्रहण शुभ युति मे हो तो बडे व्यवसायों मे अच्छा लाभ होता है। उपयुक्त संस्थाओं को दानधर्म बहुत करता है। माता-पिता का सुख कम तथा पारिवारिक सुख अच्छा मिलता है। इसकी पत्नी की मृत्यु इस से पहले होती है। इसकी कीर्ति अच्छी होती है। सन्तति अच्छी नही होती।

धनस्थान मे ग्रहण अशुभ हो तो प्रसिद्ध खानदान की हालत बिगडती है। घर के कई लोगों की मृत्यु एक ही विशिष्ट ढंग से होती है। आखिरी समय संकट आते है। दो पीढियों मे ही खानदान उजड जाती है। शुभ ग्रहण हो तो अप्रसिद्ध घराना धीरे-धीरे अच्छी हालत मे आता है। विद्वान, बुद्धिमान व्यक्ति होते है। इस योग में विद्या अथवा धन मे एक की प्राप्ति होती है। कुल में पहले धन हो तो वह नष्ट होकर विद्वत्ता आती है। विद्वत्ता हो तो वह कम होकर धन मिलता है।

तीसरे स्थान के फल

इस स्थान मे चन्द्रग्रहण शुभ हो तो यह व्यक्ति विद्या मे आसक्त, शान्त, बुद्धिमान, बिना सोचे-समझे के काम करनेवाला होता है। यह बहनों के लिए घातक योग है—वे जीवित नही रहती अथवा विधवा होती है अथवा कुटुम्बसुख नही मिलता। माता तथा भाइयों के लिए भी मारक योग है। इस व्यक्ति को कीर्ति मिलती है। ग्रहण अशुभ युति मे हो तो यह बहुत बोलनेवाला, खर्चीला, अविश्वासी, निपुत्रिक, कई ब्याह करनेवाला होता है। इसे कान के रोग होते है। वृद्ध वय मे दाहिना कान बेकार होता है। क्वचित दृष्टि मे भी दोष होता है। इस स्थान मे सूर्यग्रहण शुभ युति मे हो तो यह व्यक्ति बहुत साहसी, अपने पराक्रम से प्रगति करनेवाला, लोकप्रिय, मिलनसार, सात्विक स्वभाव का, उदार, बड़े व्यवसाय करनेवाला, संस्थाओं का स्थापक होता है। यह ग्रहण अशुभ युति मे भाइयों को मारक होता है। उन्हे धन या सन्तति का कष्ट रहता है। अपघात से भाई बहनों का अन्त होता है। यह तामसी, गुस्सैल, गुस्से मे आकर लोगों का नुकसान करनेवाला, आलसी, निरुद्योगी होता है। यह झगड़ालू, व्यसनी, लोगों पर आश्रित, समाज के लिए निरुपयोगी होता है। इसे मस्तिष्क के विकार होते है।

चतुर्थ स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण हो तो माता की मृत्यु ७ वे वर्ष के पहले होती है। इस के मृत्यु के बाद पत्नी जीवित रहती है। कई व्यवसाय करता है। जन्मभूमि से दूर जाना पडता है। यह असफल, अपमानित, अविश्वसनीय होता है। क्वचित गोद जाने का योग होता है। इस का स्वभाव निग्रही, किसी का न माननेवाला, अपने ही मन से चलनेवाला, व्यवसाय में गलती करनेवाला होता है। इस की स्थावर सम्पत्ति नष्ट होती है। स्थिति अस्थिर रहती है। अन्त में दारिद्र रहता है। मृत्यु के समय इस का अपना घर नही होता। इस के माता के कुल में वंशवृद्धि

नही होती या बडे रोग होते है । इस के कुल में किसी बडे योग से झगडा निकल कर अगली पिढी वंचित होती है । यह ग्रहण शुभयुति में हो तो कीर्ति बहुत और पैसा कम मिलता है । आचरण अच्छा होता है । इस योग में दो माताएं, दो पत्नियां होती है । यह लोगों के लिए बहुत अच्छे कार्य करता है किन्तु अपने घर का बहुत कल्याण नही कर पाता । यह साहसी होता है । घरबार मिलता है किन्तु टिकता नही । वृद्ध आयु में बच्चो से कष्ट होता है । अन्त दारिद्र में तथा चमत्कारिक रीति से होता है । इस स्थान मे सूर्यग्रहण शुभयुति मे हो, तो पूर्वार्जित इस्टेट नही होती । हों तो नष्ट होती है । अपनी मेहनत से प्रगति करते है । इसे पिता का सुख कम माता का सुख अच्छा मिलता है । यह प्रामाणिक, विश्वासु, व्यवसाय में कुशल होता है । धन अच्छा मिलता है । दान बहुत करता है । सदाचारी, शीलवान, नियमित, स्वाभिमानी, मिलनसार, बलवान शरीर का, परोपकारी, लोगों के लिये कष्ट सहनेवाला होता है ।

यह ग्रहण अशुभ युति में हो तो स्वभाव हलका, अविश्वासु, सच और झूठकी फीक्र न करनेवाला, शौकरहित,पापपुण्य से उदासीन होता है । माता को कष्ट होता है अथवा उस का मृत्यु होता है । इसका किसी से बनता नही । चतुर्थ स्थान में ग्रहण हो तो सन्तति नही होती । अथवा पहली सन्तति के बहुत बाद दूसरी सन्तति होती हैं । वृद्धायु में अधिक सन्तति होती है ।

पाचवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो यह बुद्धिमान, संशोधक, शान्त, स्त्रीभोग से कुछ उदासीन, कीर्तिमान होता हैं । मृत्यु के बाद इस-की कीर्ति नही होती । पुत्र नही होते अथवा अल्पायुषी होते है । शीलवान होता है । माता का मृत्यु जलदी होता है । यह उच्च दैवी प्रेम का इच्छुक होता है तथा पत्नी पर ऐसा ही उदात्त प्रेम करता है । ग्रहण अशुभ युति में हो तो यह बुद्धिभ्रष्ट, दुराचारी, परस्त्रियों में आसक्त, उद्योग में अस्थिर, सांसारिक सुख से वंचित तथा कुल की कीर्ति को नष्ट

करनेवाला होता हैं । इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युति में हो तो अतिशय कीर्ति का योग होता है । इस के विवाह दो तथा पुत्र बहुत कम होते है । यह बडे उद्योग कर के बहुत धन कमाता है । बहुत विद्या सीख कर विदेश में भी जाता है । संस्थाएं स्थापन करता है । शान्त, मिलनसार, दयालु, नियमित होता है । अशुभ युति में ग्रहण हो तो यह उद्धत, किसी की परवाह न करनेवाला, जंगली जैसा, तामसी, गुस्सैल, निरुद्योगी, आलसी दूसरों के व्यवसाय में विघ्न लानेवाला, झठी अफवाहे फैलानेवाला, व्यभिचारी होता है । इसकी पत्नी को सन्ततिप्रतिबन्धक रोग होते है । इस स्थान मे ग्रहण से पेट के रोग, तथा गुप्त रोग होते है । स्त्रीसुख की चिन्ता रहती है ।

छठवें स्थान के फल

इस स्थान में ग्रहण शुभ युति में हो तो शरीर नीरोग रहता है । अकारण शत्रु बहोत होते है किन्तु शत्रुत्व कायम नही रहता । इस की नौकरी ठीक तरह चलती है, पेन्शन निर्बाध मिलती है । प्रगति होती है । लोगों पर प्रभाव रहता है । योगाभ्यास की ओर रुचि होती है । व्यवहार ठीक रहते है । अशुभ युति में ग्रहण हो तो हमेशा रोग होते है । रोगों की चिकित्सा डॉक्टर या वैद्य नही कर पाते । रोगी अवस्था के कारण असमय में पेन्शन लेनी पडती है । योगाभ्यास में दोष होने से रोग होते है । इस के व्यवहार हमेशा उलझनभरे रहते है । उन्नति के लिये यह जो काम करता है उस से अवनति ही होती है । लोगों मे निन्दा का पात्र होता है । तरह तरह की अफवाहे फैलती है । अकारण विवाद करनेवाला, झगडालू, शत्रुओं से त्रस्त होता है । रोग अल्पकाल के होते है ।

इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युति में हो तो मेहनत से प्रगति होती है । नौकरी में प्रगति होकर पेन्शन योग्य समय मिलती है । वरिष्ठ अधिकारी से झगडकर प्रगति होती है । शरीर नीरोग रहता है तथा शत्रु नष्ट होते है । सब व्यवहार सरल होते है । यह ग्रहण अशुभ युति में हो तो हमेशा रोग होते है । शत्रु बहुत होते है । व्यवसाय में नुकसान होता

है। नौकरी ठीक नही चलती। असमय में पेन्शन लेनी पडती है। इस का स्वभाव दुष्ट, स्वार्थी, वंचक होता है।

इस स्थान में ग्रहण का साधारण फल इस प्रकार है। मामा व मौसियों का ससार ठीक नही होता--मौसियाँ विधवा होती है, मामा ो पुत्र सन्तति नही होती। इस स्थान में ग्रहण से अनैतिक सम्बन्ध-परस्त्री, परपुरुष से सम्बन्ध होना अथवा अविवाहित रहना या पुत्रहीन होना यह फल भी देखा है। किन्तु वसिष्ठ के कथनानुसार इस स्थान में ग्रहण शुभ फल देता है। यथा-त्रिषट्दशाविलग्ने नराणां शुभप्रदं स्यात् ग्रहणं रवीन्द्वोः। द्विसप्तनन्देषु च मध्यमं स्यात् शेषेष्वनिष्टं मुनयो वदन्ति। सूर्य अथवा चन्द्र का ग्रहण ३-६-१० इन स्थानों में शुभ होता है, २-७-९ इन में मध्यम यथा बाकी स्थानों में अनिष्ट होता है।

सातवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो सप्तम स्थान के विषय-स्त्री तथा उद्योग में किसी एक की हानि होती है। शुभ युति में स्त्री राशि में हो तो साधारण फल मिलते है। विवाह एकही होना, पतिपत्नी में अच्छा प्रेम रहना, नौकरी या धन्धा ठीक चलना आदि फल मिलते है। यह सदाचारी और समाधानी होता है किन्तु भाग्योदय विशेष नही होता। वृद्ध वय में पत्नी की मृत्यु पहले होती है। उस का स्वास्थ्य अच्छा नही रहता। ग्रहण पुरुष राशि में अशुभ युति में हो तो विवाह अधिक होते है। नौकरी स्थिर नही रहती। सन्तति बहुत कम होती हैं। आपत्तियां बहुत आती है। स्त्री का स्वभाव अच्छा न होने से संसार से उदासीन होता है। घर छोडने या देहत्याग की इच्छा होती है।

इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ हो तो स्त्रीसुख साधारण अच्छा मिलता है। ४८ वे वर्ष में स्त्री का मृत्युयोग होता है। सन्तति १-२ होती है। यह औकात के बाहर के धन्धे करता है। लोगों में कीर्ति पाता है। लोकोपयोगी कार्य करता है। अशुभ योग हो तो स्त्रीसुख नही मिलता, नौकरी स्थिर नही होती, विवाह अनेक होते है, अपना घरबार कभी नही हो पाता, प्रवास से बहुत कष्ट होता है।

आठवे स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ हो तो आयु ३८ वर्ष तक होती है। इसी अल्पकाल में कीर्ति मिलती है। स्त्रीधन मिलता है। अशुभ हो तो अल्पायु होता है, आयुष्य कष्टपूर्ण होता है। स्त्री या सन्तति का सुख नही मिलता। सूर्यग्रहण शुभ हो तों ४८ वर्ष तक आयु होती है। स्त्री अच्छी मिलती है। विवाह जलदी होता है। स्त्रीधन मिलता है। पुत्र एकही होता हैं। स्वास्थ्य अच्छा रहता है किन्तु आयु के पूर्वार्ध में कष्ट रहता है। अशुभ हो तो विवाह में कठिनाई होती है। धनहानि होती हैं। आयु के उत्तरार्ध में शारीरिक कष्ट होता हैं। क्षय, दमा या श्वास पण्डु रोगादि से कष्ट होता है।

नौवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो इस की अगली पीढी बहुत भाग्यवान होती है। लम्बे प्रवास, यात्राएं होती है। धार्मिक वृत्ति तथा शील अच्छा होता है। इसे छोटे भाई नही होते-बहने रहती है। बहनों के पोषण को चिन्ता रहती है। यह बहुपत्नीयोग है। इसे प्रथम कन्याएं होती है। वृद्धायु में पुत्र होता है। बचपन से मेहनत कर प्रगति करता है। नौकरी अच्छी तरह होती है। माता या पिता की बचपन में ही मृत्यु होती है। आयु के अन्तिम भाग मे घरबार प्राप्त होता है। पूर्वाजित सम्मत्ति को यह बढाता हैं। ग्रहण अशुभ हो तो यह व्यभिचारी होता है। पिता की बचपन मे मृत्यु होती है। भाईबहने नही होती। इज्जत नही होती। हीन स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। यह परावलम्बी, बेकार भटकनेवाला, गप्पे हांकनेवाला, कुल की कीर्ति नष्ट करनेवाला होता है।

इस स्थान मे सूर्यग्रहण शुभ युतिमे हो तो यह कीर्तिमान, तेजस्वी, कार्यकुशल होता है। इस के पुत्र भाग्यवान होते है। किसी के मदद के विना प्रगति करता है। दयालु, संस्थाओं का स्थापक, मिलनसार, शील-

वान, विद्वान होता है। शिक्षा पूरी होती है। यह योग भाईबहनों के लिए मारक है। भाई रहे तो समझदारी से बटवारा होता है। एकसाथ रहे तो भाई की प्रगति में बाधा रहती है। भाईबहनों से बनती नही। यह प्रीतिविवाह करता है किन्तु अपने धर्म को नही छोडता। शिक्षा या व्यवसाय के लिए विदेश में जाता है। इस योग में कीर्ति अधिक और धन कम मिलता है। ग्रहण अशुभ युति में हो तो आलसी, उद्योग रहित, परावलम्बी, व्यभिचारी, हमेशा भटकनेवाला होता है। विवाह न करने की प्रवृत्ति होती है। माता-पिता का सुख जलदी नष्ट होता है। भाई-बहने नही होती या उन से झगडे होते है। बटवारे में झगडे होते है। लोगों में अप्रिय होता है। नौकरी या व्यवसाय में अस्थिरता रहती है। नेत्ररोग या कान के रोग होते है। इस स्थान में ग्रहणों के शुभफल का मुख्य समय १९ व २१ वे वर्ष से तथा अशुभफलों का मुख्य समय २८ व ३७ वे वर्ष से रहता है जब अपमान, धनहानि कुटुम्ब के लोगों की मृत्यु आदि होते है।

दसवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति मे हो तो पूर्वार्जित इस्टेट नही होती। खुद की कमाई सम्पत्ति उपयुक्त संस्थाओं को दान देता है बचपन से कष्ट कर प्रगति करता है। पिता दीर्घायु होता है। यह स्वतन्त्र वृत्ति का, किसी का अंकित न रहनेवाला होता है। इस की शिक्षा धनार्जन के काम नही आती। दूसरे ही व्यवसाय में कीर्ति मिलती है। तपस्वी, निग्रही, योगी, जनता का सेवक, राजनीतिक या सामाजिक आन्दोलन का नेता, सामाजिक तत्त्वों का पुरस्कर्ता तथा इन के प्रसार के लिए कष्ट सहनेवाला होता है। विचारशील, प्रगल्भ बुद्धि का, न्याय में कुशल, लोगों को अपने विचार समझाने में प्रवीण होता है। ग्रहण अशुभ युति में हो तो यह हलके धन्धे करनेवाला, गप्पे लडानेवाला, स्वार्थी, व्यभिचारी; व्यसनों में पूर्वार्जित सम्पत्ति गमानेवाला, आलसी, निरुद्योगी, उपयोगी कार्यों में विघ्न लानेवाला, झगडे बढानेवाला होता है। यह किसी एक धन्धे में स्थिर नही रह पाता। शिक्षा पूरी नही होती।

इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युति में हो तो माता पिता की मृत्यु बचपन में होती है। पूर्वाजित इस्टेट नही होती। अपने कष्ट से धन, विद्या प्राप्त करता है तथा बडा अधिकारी अथवा अकल्पित व्यवसाय करनेवाला होता है। ग्रहण अशुभ युति में हो तो मातापिता का सुख नही मिलता, पूर्वाजित सम्पत्ति नही होती। इसे सन्तति नही होती। यह दत्तकपुत्र होता है अथवा दत्तक लेता है। आयुष्य में स्थिरता होती है, बहुत प्रगति नही होती। प्रवास बहुत होता है। यह द्विभार्या योग है। साधारणतः इस स्थान का सूर्यग्रहण उन्नति का सूचक है। जीवन समाधानपूर्ण रहता है।

ग्यारहवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो लाभ बहुत होता है। कई व्यवसाय होते है। विधानसभा आदि में चुने जाते है तथा उस काम में कीर्ति मिलती है। इसे कन्याएं अधिक होती है। पुत्र नही होते अथवा होकर मृत होते है, गर्भपात होते है। इसे बडे भाई के कुटुम्ब का पोषण करना पडता है। रिश्वत लेने से हानि नही होती। मृत्युसमय सन्तुष्ट होता है। ग्रहण अशुभ युति में हो तो सन्तति नही होती। लाभ के समय विघ्न आते है वासना बुरी होती है। रिश्वत से हानि होती है। बडे भाई के कुटुम्ब का पोषण करना पडता है। आंख या कान के रोग होते है। इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ योग में हो तो अचानक बहुत लाभ होते है। ३६ वे वर्ष मे धन, कीर्ति, सन्मान मिलता है। पूर्व आयु मे व्यवसाय सफल रहता है। पिता, भाई आदि नही रहते। यह अधिकारयोग है। पुत्र एक होता है तथा वह भाग्यवान होता है। कन्याएं बहुत होती है। अशुभ योग मे ग्रहण हो तो सन्तति नही होती। पत्नी को आर्तवशूल, मासिक धर्म अनियमित होना, आदि से कष्ट होता है। सन्तति हुई तो अल्पायु होती है गर्भपात होते है। व्यवसाय मे लाभ नही होता। हमेशा मानहानि तथा आर्थिक अडचने रहती है। बुद्धिभ्रंश या मस्तिष्क के विकार होते है।

बारहवें स्थान के फल

इस स्थान मे चन्द्रग्रहण शुभ योग मे हो तो कीर्ति मिलती है । पूर्व-वय मे जीविका के लिए प्रवास करना पडता है । उत्तर आयु में स्थिरता रहती है । पति-पत्नी सम्बन्ध प्रेमपूर्ण रहते है । मन विरक्त रहता है किन्तु व्यवहारी होते है । अपवाद आते है किन्तु वे दूर भी होते है । व्यवसाय मे कुशल, साहसी, दुनिया मे कही भी जाने को तैयार, लोक-प्रिय, मिलनसार, नियमित, प्रसंगावधानी, उदार होते है । अकेले खाने को जी नही चाहता । दयालु, परोपकारी होता है । अशुभ योग मे ग्रहण हो तो अकारण ही पति-पत्नी मे वियोग होता है । व्यभिचारी होने से अपवाद फैलते है । मुलकी या फौजदारी कारणों से कारागृह का योग होता है । अनपेक्षित संकट आते है । पुत्र कम होते है । तथा वे पिता के प्रतिकूल आचरण करते है । दो विवाह होते है ।

इस स्थान मे सूर्यग्रहण शुभ युति मे हो तो प्रसिद्धि मिलती है । बडे कार्य करता है । राजकीय या सामाजिक नेता होता है । नौकरी या व्यवसाय मे लोकप्रिय होता है । बडे अधिकार की नौकरी या बडे व्यव-साय करता है । इसे आप्तमित्र बहुत होते हैं । अनाथों को मदद करता है । मृत्यु के बाद भी नाम रहता है । पतिपत्नी मे प्रेम रहता हैं । किन्तु प्रेम के झगडे भी रहते है । यह चुनाव मे जीतता है । संस्थाए स्थापन करता है । उन्हे दान देता है । राजकीय या सामाजिक आन्दोलन में दण्ड, कैद या निर्वासन मिलता है । ग्रहण अशुभ योग में हो तो अयोग्य कामों मे धन गमाता है । बुरी प्रसिद्धि मिलती है । स्त्रीसुख कम मिलता हैं । दो विवाह होते है । व्यभिचारी, गुप्त रोग या कुष्ठ जैसे रोगों से कष्ट होता है । पुत्र कम होते है । अयोग्य कामों मे दण्ड, कैद मिलते हैं । अविश्वासी, कोई भी काम अधूरा करता है । लोगों से अलग रहता है । व्यवसाय में अस्थिरता रहती है । कभी नौकरी, कभी व्यवसाय करता है । शुभ कार्य कभी नही करता ।

इस प्रकार ग्रहणों के भावफल बतलाये । ग्रहण आकाश में दृश्य हो —अर्थात कुण्डली के लग्न, व्यय, लाभ, दशम, नवम तथा अष्टम स्थान

में हो तो ये फल स्पष्ट होते है। द्वितीय से सप्तम स्थान तक के ग्रहण दृश्य नही होतें अतः पंचांग में भी इन ग्रहणों का कोई वर्णन नही होता। किन्तु वराह, वसिष्ठ, नारद, लोमश, भरत आदि संहिताओं में तथा दैवज्ञकामधेनु, मुहूर्तमार्तण्ड, मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्तप्रकाश, मुहूर्तगणपति, मुहूर्तदीपक, मुहूर्तदर्पण, मुहूर्तमाला, धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु, शूद्रकमलाकर आदि ग्रन्थों मे द्वितीय से सप्तमतक के ग्रहणों के फल भी संक्षेप मे दिये है। अतः हमने भी इन फलों का वर्णन दे दिया है। पाठक इस का अनुभव से मिलान करे।

प्रकरण २ रा

राहु का स्वरुप ग्रहयोनिभेद

वैद्यनाथ---स्थान-अहिध्वजाः शैलाटवी संचरन्तः। यह पर्वतशिखरों तथा वनों में संचार करते है। आयु-शताब्दसंख्याः राहूकेतवः। इन की आयु सौ वर्ष की है। रत्न-गोमेदवैडूर्यके। राहुका रत्न गोमेद तथा केतु का वैडूर्य है। दिशा-नैऋत्य। क्रीडास्थान-वेश्मकोणे-राहु का स्थान घर तथा केतु का स्थान कोना है। दृष्टि-अधोक्षिपातः तु अहिनाथः। नीचे देखते है। बल के स्थान-मेषालिकुम्भ तरुणीवृषकर्कटेषु मेषूरणे च बलवानुरगाधिपः स्यात्। कन्यावसानवृषचापधरे निशायामुत्पातकेतुजनने च शिखी बली स्यात्। मेष, वृश्चिक, कुम्भ, कन्या, वृषभ तथा कर्क राशि में दशम स्थान में राहु बलवान होता है। कन्या के अन्त में, वृषभ तथा धनु में, रात्रि मे तथा उत्पात एवं धूमकेतू के दर्शन के समय केतु बलवान होता है।

दोष-राहुदोषं बुधो हन्यात्। राहु के दोष को बुध दूर करता है।

पराशर---स्थान-वनस्थः। वन मे रहता है। शिखिनः स्वर्भानोः वल्मीकं स्थानमुच्यते। इस का स्थान वामी में हैं। जाति-चाण्डाल।

धातु–सीसा। केतु का रत्न–नीलमणि। वस्त्र चित्रकन्था फणीन्द्रस्य केतोश्छिद्रयुतं वस्त्रम् रंगीबेरंगी गोदडी राहुका तथा केतु का वस्त्र कटा हुआ होता है। काल–अष्टौ मासाः स्वर्भानोः केतोः मासत्रयम्। राहुका समय आठ मास तथा केतु का तीन मास है।

मन्त्रेश्वर—सीसं च जीर्णवसनं तमसस्तु केतोः मृद्भाजनं विविध-चित्रपटं प्रदिष्टम्। राहु का धातु सीसा, वस्त्र–जीर्ण है। केतु का पात्र मिट्टी का, वस्त्र रंगबिरंगा है। गुल्मं केतुरहितश्च शालद्रुमाः–केतु छोटे वृक्षों का कर्ता है। राहू शालवृक्ष का निर्माता है।

नीलकण्ठ—वर्ण–निषाद, लिंग–पुरुष, समय–दोपहर का, धातु–लोहा, गुण–तामस, रस–कषाय, भूमि–ऊषर, धातु–वायु, अवस्था–वृद्ध, स्थान–विवर। यह अपाद (चरणरहित), पापग्रह, चरग्रह है।

वेंकटेश्वर शर्मा—सर्पस्थानं सैंहिकेयस्य। इस का स्थान सांप के बिल है। रंग नीला, चित्रविचित्र है।

जयदेव—संध्यायां भुजंगमः। यह संध्या समय बलवान होता है। राहुः सरीसृपः–सरपट चलनेवाला है। दक्षिणतोमुखः–मुख दक्षिणकी ओर है। भोगीन्द्रः प्रकृत्या दुःखदो नृणाम्। दुःख देता है। फणिनः स्थविराः ग्रहाः। यह वृद्ध ग्रह है।

पुंजराज—सिंहीसूनुर्म्लेच्छवंशोद्भवानाम्। यह म्लेच्छों का अधिपति है। रस–तीखा है।

पराशर—धूम्रकारो नीलतनु र्वनस्थोपि भयंकरः। वात प्रकृतिको धीमान् स्वर्भानुप्रतिमः शिखी। यह धुएं जैसा, नीले रंग का, वनचर, भयंकर, वात प्रकृतीका तथा बुद्धिमान होता है।

मन्त्रेश्वर—नीलद्युतिर्दीर्घतनुः कुवर्णः पापी सभापंडितः सहिक्कः। असत्यवादी कपटी च राहुः कुष्ठी परान् निन्दति बुद्धिहीनः। यह नीले रंग का ऊंचे कद का, कुरूप, पापी पंडित, हिचकियों से पीडित, झूठ बोलनेवाला, कपटी, कोढी, परनिन्दक बुद्धिहीन होता है। रक्तोग्रदृष्टि-

विवागुग्रदेहः सशस्त्रः पतितश्च केतुः धूम्रद्युतिः धूमप एवं नित्यं व्रणांकितांगश्च कृशो नृशंसः । केतु की दृष्टि लाल तथा उग्र वाणी, हीन शरीर उग्र शस्त्रसहित, पतित, धुए जैसे रंग का, व्रणसहित, दुबला, दुष्ट तथा नित्य धूम्रपान करनेवाला होता है ।

नीलकण्ठ---राहुस्वरूपं शनिवत् निषादजातिर्भुजंगोऽस्थिपनैर्ऋतीशः । केतुः शिखी तद्वदनेकरूपः खगस्वरूपात् फलमित्थमुद्दाम ।। इस का स्वरूप शनि जैसा, जाति–निषाद, धातु-अस्थि, दिशा नैर्ऋत्य होती है । केतु अनेक रूपों का होता है ।

अज्ञात---कर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।। सैंहिकेयस्तमो राहुः कज्जलाचलसंनिभः । यः पर्वणि महाकायो ग्रसते चन्द्रभास्करौ ।। प्रणमामि सदा राहुं सर्पाकारं किरीटिनम् । सैंहिकेयं करालास्यं सर्वलोकभयप्रदम् ।। इस ग्रह का शरीर आधा, महाबलवान, काजल के पहाड जैसा, अन्धकाररूप, भयंकर, सांप जैसा, मुकुटयुक्त, भयंकर मुख से युक्त है । यह सिंहिका राक्षसी का पुत्र है तथा पर्व के समय सूर्य और चन्द्र का ग्रास करता है ।

पराशर---प्रयाणसमयसर्परात्रि सकलसुप्तार्थद्यूतकारको राहुः । व्रणरोगचर्मार्तिशूलस्फुटक्षुधार्ति कारकः केतुः ।। प्रवास का समय, रात्रि, सोए हुए प्राणी, जुंआ तथा सांपोंका कारक राहु है । व्रण, चर्मरोग, शूल, भूख, फोडेफुन्सी इन का कारक केतु है ।

वेंकटेश्वर---यशःप्रतिष्ठाछत्रकारको राहुः । कीर्ति, सन्मान, राजवैभव का कारक राहु है ।

मन्त्रेश्वर---बौद्धाहितुण्डिखगराजवृकोष्ट्रसर्पान् ध्वान्तादयोमशकमत्कुणकृम्युलूकाः । बौद्ध, संपेरे, पक्षी, भेडिये, ऊंट, सांप, कौए, मच्छर, खटमल, कीडे, उल्लू यें राहु के अधिकार में है । स्वर्भानुर्हृदितापकुष्ठविमतिव्याधि विषं कृत्रिमं पादार्ति च पिशाचपन्नगभयं भार्यातनूजापदं । ब्रह्मक्षत्रविरोधशत्रुभयजं केतुस्तु संसूचयेत् प्रेतोत्थं च भयं विपंचगुलिको देहार्तिमाशौचजम् ।। हृदय, रोग, कोढ, बुद्धिभ्रंश, विषबाधा, पैर के रोग,

पिशाच बाधा, पत्नी या पुत्र का दुःख, ब्राह्मण और क्षत्रियों में विरोध, शत्रु का भय, प्रेतबाधा, शरीर की मलिनता से रोग यह केतु का कारकत्व है।

वैद्यनाथ—सर्पेणैव पितामहं तु शिखिना मातामहं चिन्तयेत्। राहू से दादा का तथा केतु से नाना का विचार करना चाहिए। करोत्यपस्मारमसूररज्जूक्षुधाकृमिप्रेतपिशाचभूतैः। उद्बन्धनाच्चाशुचिकुष्ठरोगैः विधुंतुदश्चातिभयं नराणाम्॥ अपस्मार, चेचक, नासूर, भूख, कृमि, प्रेतपिशाच बाधा, अरुचि, कैद, कोढ यह राहू का कारकत्व है। कण्डूमसूररिपुकृत्रिमकर्मरोगैः स्वाचारहीनलघुजातिगणैश्च केतुः। खुजली, चेचक, शत्रु का कपट, रोग, हीन जाति के लोग इन का कारक केतु है।

कालिदास—छत्रं चामरराष्ट्रसंग्रहकुतर्कक्रूरवाक्यान्त्यजाः पापस्त्रीचतुररत्तयानवृषलद्यूताश्च सन्ध्याबलम्। दुष्टस्त्रीगमनान्यदेशगमनाशौचास्थिगुल्मानृताऽधोदग् भ्रामिकगारुडा यममुखम्लेच्छादिनीचाश्रयाः॥ दुष्टग्रन्थिमहाटवीविषमसंचाराद्रिपीडा बहिः स्थानं नैऋतदिक् प्रियानिलकफक्लेशोहिविण्मारुताः। प्रयाणक्षणो वृद्धो वाहननागलोकजननीताता मरुच्छूलकाः॥ कासश्वासमहाप्रतापवान् दुर्गोपासका धृष्टता सांगत्यं पशुभिस्त्वसव्यलिपिलेख्यं क्रूरभाषाः त्वगः॥ राहु के कारकत्व में निम्न विषय आते है— छत्रचामर (राजचिन्ह), देश की समृद्धि, कुतर्क, क्रूर भाषण, नीच जाति, पापी स्त्रिया, सीमाएं, वाहन, शूद्र लोग, जुंआ, सन्ध्यासमय, अयोग्य स्त्री से सम्बन्ध, विदेश में प्रवास, अपवित्रता, हड्डी या गांठ के रोग, झूठ बोलना, नीचे की तथा उत्तर दिशा, संपेरे, यम, म्लेच्छ, आदि नीच लोग, बुरी गांठें, वन, पर्वत, बाहर के स्थान, नैऋत्य दिशा, वात तथा कफ की पीडा, सांप, हवा, छोटे और बडे सरपट चलनेवाले प्राणी, सोए हुए प्राणी प्रवास का समय, वृद्ध, वाहन, नागलोक, नाना, वातशूल, खांसी, श्वास, दुर्गा की उपासना, ढीठपना, पशुओं की समृद्धि, दांए ओर से लिखी जानीवाली लिपि (उर्दू आदि) तथा क्रूर भाषा। केतु का कारकत्व—चण्डीशेश्वरविघ्नपादिसुरवृन्दोपासना वैद्यकं श्वानः कुक्कुटगृद्धमोक्षसकलैश्वर्यक्षयार्तिज्वराः। गंगास्थानमहातपानिलनिषादस्नेहभृत्यप्रदाः पाषाणो

व्रणमन्त्रशास्त्रचपलत्वब्रह्मवेत्तवता । कुक्ष्यक्ष्यार्तिजडत्वकंटकमृगज्ञानानि मौनव्रतं वेदान्तोऽखिलभोगभाग्यरिपुपीडोत्पन्नतापाल्पभृक् । वैराग्यं च पितामहश्रुदतिशूलस्फोटकाद्या रुजः । शृंगीभृंगिविरुद्धबन्धनकृताशां शूद्रगोष्ठीच्छेनजात् ।। केतु ग्रह से निम्न विषयों का विचार करता चाहिए—शिव, विष्णु या गणेश आदि देवों की उपासना, वैद्यक, कुत्ते, मुर्गे, गीदड, क्षय, ज्वर, सब प्रकार का ऐश्वर्य, मुक्ति, गंगा के तट के स्थान, बड़ी तपश्चर्या, वायु, निषाद (वनचर), स्नेह, नौकर, पत्थर, व्रण, मन्त्रशास्त्र, चपलता, ब्रह्मज्ञान, पेट या आंख के रोग, जडता, कांटे, पशु, ज्ञान, मौन, वेदान्त, सब प्रकार के उपभोग, भाग्य, दादा, भयंकर शूल, फोड़े फुन्सी आदि रोग, शूद्रलोग, नीच आत्माओं से कष्ट ।

हमारे मत से राहु के कारकत्व के विषय—तर्कशास्त्र, स्थानिक स्वायत्त संस्थाएं—म्युनिसिपालिटी, जिला परिषद, विधान सभा, लोकसभा, रेलवे कर्मचारी, कमिशन एजेन्ट, विज्ञापन एजेन्ट, रबड, डामर, बिजली सामान, गांजा, भांग, उन्मादअवस्था, हिप्नाटिझम—मेस्मेरिझम, बदलते रंगों के फूल तथा प्राणी, बरफ, सरकस, सिनेमा, सेल्युलाइड, दुराग्रह, उद्धतपन, विनाशक बाते, भ्रम-आभास, पिशाच-भूतबाधा, दादा की स्थिति कल्पना तथा संशोधन में निपुणता, अफवाहे फैलाना, निराधार बाते करना, कार्य में प्रेरणा, पूर्वपरम्परा- प्राचीन संस्कृति का अभिमान, अद्भुत की रुचि, आकस्मिक-विलक्षण बाते, अस्पष्ट-अव्यवस्थित बरताव, घपले-गबन, पवित्रता, विश्वबन्धुता, वासनारहित होना, भक्तियोग, आध्यात्मिक उन्नति, ज्ञान, मुक्ति, घर के खेल-ताश, कैरम, पांसे, पहेलयां, सुलझाना आदि ।

प्रकरण ५ वा

राहु का कुछ अधिक विवरण

इस ग्रह की गति दैनिक ३ कला २१ विकला है। इसे बारह राशियों के भ्रमण के लिए ६७८५ दिन २० घटी २५ पल ७$\frac{१६३}{१६१}$ विपल इतना समय लगता है। यह लगभग १८ वर्ष ७ मास २ दिन होता है। इस के विषय में विलीयम लिली के विचार इस प्रकार है—यह पुरुष प्रकृति है। गुरु तथा शुक्र के मिश्रण जैसा स्वभाव है। यह भाग्यदायी है। यह शुभ ग्रहों के साथ हो तो उन के शुभ फल अधिक मिलते है। अशुभ ग्रहों के साथ हो तो वे फल कम अशुभ होते है। केतु यदि अशुभ ग्रहों के साथ हो तो अशुभ फल अधिक तीव्र होते है। शुभ ग्रहों से प्राप्त होनेवाले फलों में केतु की युति से आकस्मिक विघ्न आते है तथा बना-बनाया काम बिगड जाता है। शुभ ग्रह केन्द्र में या बहुत अच्छे योग में हो तभी केतु का यह दोष दूर हो सकता है।

मेष—यह पुरुष राशि, दिन की, स्थलांतर सूचक (चर), रुक्ष, उष्ण, अग्नि तत्त्व की है। तामसी, पशु, चैनबाजी, उद्धतपन, असंयत व्यवहार, लाल रंग की द्योतक यह राशि मंगल की प्रधान राशि है। यह राहु के लिए अशुभ है।

वृषभ—यह स्त्री राशि, भूमि तत्त्व की, शीतल रुक्ष उदासीन, स्थिर रात्रि की तथा नीम्बू रंग की राशि शुक्र की गौण राशि है। यह राहू के लिए शुभ है।

मिथुन—यह पुरुष राशि, वायु तत्त्व की, उष्ण, आर्द्र, लाल रंग की दिन की, बुध की प्रधान राशि है। यह राहु की उच्च राशि है अतः राहु के लिए अशुभ है।

कर्क—यह स्त्री राशि, जल तत्त्व की, शीत, आर्द्र, कफ प्रकृति की, नारंगी या हरे रंग की. रात्रि की, चर, कम वाणी की, चन्द्र की प्रधान राशि है। यह राहु के लिए शुभ है।

सिंह—यह पुरुष राशि, अग्नि तत्त्व की, उष्ण रुक्ष, क्रोधी प्रकृति, दिन की, पशु वन्ध्या, लाल या हरे रंग की, सूर्य की प्रधान राशि राहु को बहुत प्रिय है।

कन्या—यह स्त्री राशि, पृथ्वी तत्त्व की, शीत, उदासीन, वन्ध्या, रात्री की, नीले-काले रंग की, बुध की गौण राशि, राहु के लिए अशुभ है। इस मे राहु अन्ध ऐसा कहा गया है।

तुला—यह पुरुष राशि, उष्ण, आर्द्र, आरक्त, चर, सांपातिक, मनुष्य प्रकृति, दिन की, काला या गहरा पीला रंग, शुक्र की प्रधान राशि, राहु के लिए अशुभ है।

वृश्चिक—यह स्त्री राशि, शीत, जलतत्त्व की, रात्रि की, कफ प्रकृति की, स्थिर, गहरे पीले रंग की, मंगल की गौण राशि है। वृश्चिक विष-दर्शक है तथा राहु विषकारक है अतः यह राशि राहु को प्रिय राशि है।

धनु—यह पुरुष राशि, अग्नि तत्त्व की, उष्ण, रुक्ष, तामसी दिन की, वन्ध्या, पीले या आरक्त हरे रंग की, गुरु की प्रधान राशि के लिए अति
।

मकर—यह स्त्री राशि की, शीत, रुक्ष, उदासीन, पृथ्वी तत्त्व की, चर, चतुष्पाद, काले या गहरे पीले रंग की, शनि की गौण राशि राहू को शुभ है।

कुम्भ—यह पुरुष राशि, उष्ण, आर्द्र, दिन की, रक्ताधिक्य सूचक, स्थिर, आस्मानी रंग की शनि की प्रधान राशि राहू की अशुभ राशि है।

मीन—यह स्त्री राशि, फलदायी, कफप्रकृति, जलतत्त्व की द्विस्वभाव, चमकीले सफेद रंग की, रात्रि की, गुरुकी गौण राशि राहु को शुभ है। विलियम लिली ने इसे आलसी, निष्क्रिय निस्तेज स्वभाव की कहा है किन्तु यह हमे उचित प्रतीक नही होता।

राहु का उच्चनीचत्व

राहोस्तु कन्यका गेहं मिथुनं स्वोच्चभं स्मृतम्। उच्चभं मिथुने सिंहिकासुतः। राहुर्युग्मे तु चापे च तमोवत्केतुजं फलम्॥ कुछ आचार्यो के मत से राहु का स्वगृह कन्या तथा उच्च राशि मिथुन है—नीच राशि धनु है। राहोस्तु वृषभं केतोर्वृश्चिकं तुंगसंज्ञितम। मूलत्रिकोणं कुंभं च प्रियं मित्रभमुच्यते॥ अन्य आचार्यो के मत से राहु की उच्च राशि वृषभ, केतु की उच्च वृश्चिक, मूलत्रिकोणं कुम्भ एवं कर्क प्रिय राशि है। नारायणभट्ट ने राहू का स्वगृह कन्या, उच्च मिथुन, नीच धनु, वर्ण आदि शनि जैसा, मूलत्रिकोण कर्क माना है—कन्या राहुगृहं प्रोक्तं राहूच्चं मिथुनं स्मृतम्। राहुनीचं धनुर्णादिकं शनिविदस्यच॥ मूलत्रिकोणं कर्कंच॥

राहु का शत्रु मित्रत्व व स्वभाव

राहु के लिए मंगल शत्रु, शनि सम एवं शेष ग्रह मित्र है। पश्चिमी ज्योतिषी राहु को पुरुष ग्रह मानतें है। मन्त्रेश्वर ने इसे स्त्रीग्रह माना है —शशितमःशुक्राःस्त्रियः। राहु १।३।५।७।९।११ इन स्थानों मे पुरुष राशि मे हो तो तामसी होता है। इन स्थानों मे स्त्री राशि मे तथा अन्य स्थानों मे वह सत्त्वगुणी होता है।

राहुप्रधान व्यक्ति का वर्णन

यह व्यक्ति स्नेहशील होता है। काम करने के पहले बोलना पसन्द नही करता। विचारपूर्वक, परख कर कोई काम करता है। प्रपंच मे आसक्त होता है, स्वार्थ पूरा कर फिर परोपकार करता है। अभिमानी, मान का इच्छुक होता है। तीव्र बुद्धि का, महत्त्वाकांक्षी तथा श्रेष्ठ इच्छाओं के पूर्ति के लिए बहुत प्रयत्न करता है। बहुत बोलना नही चाहता किन्तु लेखन मे सरस, तेजस्वी तथा काव्यपूर्ण होता है। स्वभाव से सरल, स्वतंत्र, एकमार्गी, व्यवस्थित, स्पष्ट होता है। यह दूसरे के काम मे दखल नही देता तथा दूसरों द्वारा अपने काम मे दखल देना पसन्द नही करता। यह न्याय को समझ कर अन्याय के विरुद्ध झगडता है। कल्पनाशक्ति स्वैर होती है किन्तु उस का दुरुपयोग नही करता। सामाजिक व राजनीतिक

सुधार की कोशिश करतां है। इसी से बरताव तथा बोलचाल मे स्थिरता रहती है। अपने उद्योग मे मग्न, वादविवाद मे कुशल, दूसरों पर प्रभाव डाल कर काम कराने मे निपुण, दूसरों के प्रभाव मे न आनेवाला, जीवन मे सफल, प्रखर नैतिक आचरण से युक्त भाग्यवान, प्राचिन संस्कृति का अभिमानी, किन्तु पर धर्मो के बारे मे सहिष्णु, परोपकारमे तत्पर, कुटुम्ब के बडों से नम्रता का व्यवहार करनेवाला, धैर्यवान, बुद्धिमान, पैसे के देनलेन मे दक्ष व सरल होता है।

कुण्डली मे राहु अशुभ योग मे हो तो वह व्यक्ति बुद्धिहीन, दुष्ट, लोकसंग्रह से पराङ्मुख, बहुत स्वार्थी, दुरभिमानी, मत्सरी, अविश्वसनीय, झूठे आचरण से पूर्ण, विक्षिप्त, अव्यवहारी, उद्दण्ड, निर्लज्ज उद्देशरहित, छिद्रान्वेषी, अपने ही मत को श्रेष्ठ मानकर दूसरों को ताने देनेवाला, दूसरों का अहित करने की इच्छा करनेवाला, अति अभिमानी होता है।

राहु के अन्य ग्रहों से होनेवाले युति के शुभ-अशुभ फल के बारे मे श्री. प्रधान द्वारा संपादित ज्योतिर्माला मासिक मे थाना के स्व. स. ग. मुजुमदार ने इस प्रकार विवरण दिया था--राहू की गति राशिचक्र मे उलटी-मीन-कुम्भ-मकर आदि तथा कुण्डली मे भी उलटी-लग्न-व्यय-लाभ-दशम इस प्रकार होती है। अन्य ग्रह पश्चिम से पूर्व की ओर जाते है तो राशिचक्र व राहू पूर्व से पश्चिम की ओर घुमते है--मानों अन्य ग्रह राहू के मुख मे प्रवेश करते है। कल्पना कीजिए कि चन्द्र सिंह के १० वे अंश मे है और राहू १५ वे अंश मे है—इस स्थिति मे चंद्र राहू के मुख मे प्रवेश करता है। यह योग शुभ है। राहू १५ वे अंश मे और चन्द्र २० वे अंश मे हो तो चन्द्र राहू से पृष्ठभाग पर है—यह मध्यम शुभयोग है। राहू १५ वे अंश मे और चन्द्र २७ वे अंश मे हो तो चन्द्र राहू के पुच्छ-भाग पर है--यह अशुभ योग है।

राहु की दृष्टि

पराशर—सुतमदननवान्ते पूर्णदृष्टि तमस्थ युगलदशमगेहे चार्धदृष्टि वदन्ति। सहजरिपुविपक्षान् पाददृष्टि मुनीन्द्रा निजभुवनमुपेतो लोंचनान्धः प्रदिष्टः॥ राहू की दृष्टि ५-७-९-१२ इन स्थानों पर पूर्ण होती है,

२-१० पर आधी होती है तथा ३-६ पर पाव दृष्टि होती है। यह स्वगृह मे हो तो दृष्टि नही होती—अन्ध होती है। यह दृष्टि अन्य ग्रहों के समान देखना चाहिए या राहु की गति के अनुसार उलटे स्थानक्रम से देखना चाहिए इस का स्पष्टीकरण नही मिलता। हमारे विचार से राहु की दृष्टि सिर्फ सप्तम स्थान पर मानना चाहिए।

केतु के फल

कुण्डली मे केतु हमेशा राहु से सप्तम स्थान मे होता है। इन के अलग अलग फल देखें तो परस्पर विरुद्ध फल आते है। अतः हमारे विचार से केतु के स्वतंन्त्र फल नही होते। केतु के फल राहु के ही फलानुसार समझना चाहिए।

* *

प्रकरण ६

राहु के द्वादश भाव फल

लग्नस्थान में राहु के फल

वैद्यनाथ—क्रूरो दयाधर्मविहीनशीलो राहौ विलग्नोपगते तु रोगी। यह क्रूर, निर्दय, अधार्मिक, शीलहीन व रोगी होता है। रविक्षेत्रोदये राहौ राजभोगाय संपदि। स्थिरार्थं पुत्रवान् कुरुते मंदक्षेत्रोदये शिखी॥ लग्न मे सिंह राशि में राहु हो तो राजवैभव मिलता है। मकर या कुंभ मे लग्न मे केतु हो तो स्थिर संपत्ति तथा पुत्रसुख मिलता है।

नारायण—अजवृषकर्किणि लग्ने रक्षति राहुः समस्तपीडाभ्यः। पृथ्वीपतिः प्रसन्नः शतापराधं यथा पुरुषम्॥ राजा की कृपा हो तो सैंकडो अपराध करनेवाले पुरुष की भी रक्षा होती है उसी प्रकार लग्न मे मेष, वृषभ या कर्क मे राहु समस्त पीडा दूर करता है।

गर्ग——सर्वांगरोगी विकलः कुमूर्तिः कुवेषधारी कुनखी कुकर्मा । अधार्मिकः साहसकर्मदक्षो रक्तेक्षणश्चंद्ररिपौ तनुस्थे ।। यह रोगी, विकल, कुरूप, दुराचारी, साहसी, लाल आंखोंवाला तथा अधार्मिक होता है । इस के नख तथा वेष अच्छे नही होते । राहौ लग्नगते जातः संचयं कस्य कुत्रचित् । सिहकर्किणि मेषस्थे स्वर्णलाभाय मंगलः ।। लग्नस्थ राहु किसी तरह कही धनलाभ कराता है । सिंह, कर्क या मेष मे हो तो धनलाभ के लिए यह शुभ होता है । यस्य लग्नोपगः केतुस्तस्य भार्या विनश्यति । बाहुरोगस्तथा व्याधिर्मिथ्यावादी च जायते ।। लग्न मे केतु हो तो पत्नी की मृत्यु होती है । बाहु का रोग होता है तथा यह व्यक्ति झूठ बोलने-वाला होता है ।

यस्य लग्ने स्थितस्तस्यान्दोलिता प्रकृतिर्भवेत् ।। यह चंचल स्वभाव का होता है । राहुः यत्रस्थो तत्र कृष्णलांछनम् । राहु जिस स्थान मे हो वहां काला चिन्ह होता है (लग्न मे हो तो चेहरे पर होगा) ।

मन्त्रेश्वर——लग्नेऽह्यावचिरायुरर्थबलवानूर्ध्वांगरोगान्वितः । लग्न मे राहु आयु, संपत्ति, तथा बल को चंचल करता है । इसे मुख के रोग होते है । लग्ने कृतघ्नमसुखं पिशुनं विवर्णं स्थानच्युतं विकलदेहमसत्समाजम् ।। लग्न मे केतु हो तो वह कृतघ्न, दुखी, दुष्ट, निस्तेज, पदच्युत, शरीर मे विकल तथा बुरी संगति से युक्त होता है ।

बृहद्यवनजातक——लग्ने तमो दुष्टमतिस्वभावं नरं च कुर्यात् स्वजना-नुवंचकम् । शीर्षव्यथां कामरप्सेन युक्तं करोति वादेविजयं सरोगम् ।। इस की बुद्धि दुष्ट होती है, अपने ही लोगों की वंचना करता है । सिर में रोग होता है । कामभाव तीव्र होता है । वाद मे जय मिलता है । केतुर्यदा लग्नगः क्लेशकर्ता सरोगाद् विभागाद् भयं व्यग्रता च । कलत्रादिचिन्ता महोद्वेगता च शरीरेपि बाधा व्यथा मातुलस्य ।। लग्न मे केतु हो तो क्लेश, रोग, व्यग्रता, उद्वेग, स्त्री की चिन्ता, भोग से भी भय, तथा मामा को कष्ट देता है । यही वर्णन ढुंढिराज ने दिया है ।

आर्यग्रन्थ——रोगी सदा देवरिपौ तनुस्थे कुले च धारी बहुजल्पशीलः । रक्तेक्षणः पापरतः कुकर्मा रतः सदा साहसकर्मदक्षः ।। यह रोगी, कुल-

का अभिमानी, बहुत बोलनेवाला, दुराचारी, लाल आंखोंवाला, साहसी, पापी होता है। तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्ता तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम्। कलत्रादिचिन्ता सदोद्वेगता च शरीरे व्यथा नैकदा मारुती स्यात्॥ लग्न मे केतु हो तो बान्धवों को कष्ट होता है। दुर्जनों से भय, व्याकुलता, स्त्री आदि की चिन्ता, उद्वेग, रोग तथा कई बार वात से पीडा होती है।

नारायणभट्ट—स्ववाक्ये समर्थः परेषां प्रतापात् प्रभावात् समाच्छादयेत् स्वान् परार्थान्। तमो यस्य लग्ने स भग्नारिवीर्यः॥ यह दूसरों की सहायता से कार्य सम्पन्न करता है, अपना कथन पूर्ण करता है, शत्रुओं का नाश करता है, अपने और दूसरे लोगों को प्रभावित करता है।

हरिवंश—उच्चसंस्थेपि कोणे तनौ मानवं भूपतुल्यं सद्रव्यं प्रकुर्यादहिः। शेषसंस्थो रुजाक्षीणदेहं शठं दुःखभाजं भयेनान्वितं संभवेत्॥ लग्न मे उच्चस्थ राहु राजवैभव देता है। अन्य राशि में हो तो रोगी, दुष्ट, दुःखी, भयभीत होता है।

बोल्प—यह राहु मेष, वृषभ व कर्क में हो तो सब दुःख दूर करता है। अन्य राशि में हो तो राजा से द्वेष, रोग, चिन्ता होती है। लग्न में केतु हो तो दुर्वर्तनी, सर्वत्र असफल, रोगी, वाहनों से कष्ट पानेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह राहु मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या तथा मकर में हो तो राजयोग होता है। सुखी व दयालु होता है। अन्य राशि में हो तो यह पुत्रहीन होता है अथवा मृत पुत्र होते है।

वसिष्ठ—यह राहु दुःखदायी है।

नबाब लखनऊ—अव्वलखाने यदा राहुः खिश्मनाकश्च काहिलः। मनुजः स्वार्थकर्ता स्याद्भवेद्धरो तु जाहिलः॥ यह सदा दुःखी, कुरूप, आलसी, स्वार्थी व मूर्ख होता है।

पाश्चात्य मत—लग्नस्थ राहु बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। यह व्यक्ति अति हीन दशा से अति उच्च दशा तक पहुंचता है। लोगों की नजरों मे

श्रेष्ठता मिलती है । यह शक्तिमान, पराक्रमी, अभिमानी, जलदी कीर्ति प्राप्त करनेवाला, लोगों की परवाह न करनेवाला होता है, शिक्षा की ओर इस का विशेष ध्यान नही होता । यह प्राचीन संस्कृति का अभिमानी होता है । नई बातों को जलदी ग्रहण नही करता । इस का बदन छरहरा तथा कद ऊंचा होता है । लग्नस्थ केतु से चेहरा हास्यास्पद होता है, कद नाटा तथा ऊबडखाबड शरीर होता है । यह भाग्यहीन होता है ।

अज्ञात—मृतप्रसूतिः । मेषवृषभ, कर्कराशिस्थे दयावान् बहुभागी । अशुभेऽशुभदृष्टे मुखे लांछनम् । तनुस्थले यदा राहुः स्ववाक्यपरिपालकः । बहुदाररतः पुंसः कामाधिक्यं सुवेषवान् ।। इस की सन्तति मृत होती है । मेष, वृषभ, कर्क मे यह राहु हो तो यह दयालु तथा बहुत भोगों से संपन्न होता है । यह अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह से दुष्ट हो तो मुख पर दाग रहता है । यह अपने वचन का पालन करनेवाला, अनेक स्त्रियों मे आसक्त, अति कामी तथा सुन्दर वेष धारण करनेवाला होता है । धूने केतुः कलत्रादि न किंचित् सुखमाप्नूयात् । मार्गे चिन्ता जले भीतिः स्वगृहे लाभदायकः ।। देहे मरुल्लतीपीडा कलही वैभवी क्षयम् । पुत्रमित्रादिकं कष्टं राही जन्मनि लग्नगे ।। लग्न मे राहु व सप्तम मे केतु से स्त्री तथा पुत्र का सुख नही मिलता, मित्र नही होते, मार्ग मे कष्ट, जल से भय रहता है । वातरोग से पीडा होती है । यह झगडालू, धनका क्षय करनेवाला होता है । राहु स्वगृह मे हो तो लाभ देता है ।

श्री. चित्रे—लग्न मे राहु अल्पायुषी करता हैं । मेष, वृषभ, कर्क, मिथुन तथा वृश्चिक में हो तो दीर्घ आयु मिलती है । यह व्यक्ति आलसी, अपने ही लोगों की वंचना करनेवाला, कामातुर तथा वादप्रिय होता हैं । यह अपनी पत्नी से असन्तुष्ट होता है । यह सन्ततिहीन, अन्यायी होता है । यह राहु सिंह मे हो तो सम्पत्ति देता है । मेष, कर्क, मिथुन, कन्या या मकर मे हो तो नौकरी सफल रहती है । यह दयालु, बुद्धिमान तथा सुस्वभावी पत्नी से युक्त होता है । कन्या, मिथुन व कुम्भ लग्न मे राहु अच्छा वैभव देता है ।

हमारे विचार---साधारणत: आचार्यो ने इस स्थान मे राहु के फल अशुभ बताये है। ये फल सिंह से भिन्न पुरुषराशियों के है। (राहू के फल-वर्णन मे जहां पुरुष राशि कहा है वहां सिंह को छोडकर अन्य राशि समझना चाहिए तथा स्त्रीराशि कहा है वहां वृश्चिक का अपवाद करना चाहिए) लग्नमे राहु का साधारण फल-इस व्यक्ति की शिक्षा द्वितीय श्रेणी मे चलती है। मजाक मे यह अपमान भी सह लेता है किन्तु वह बात मन मे रख कर समय पर बदला लेनेकी पूरी कोशिश करता है। इस के बोलने, और बरताव मे मेल नही होता। खुद के दोष न देख कर दूसरों के दोष देखते रहता है। हमेशा दूसरों की निन्दा करते है। अपनी गलतियों के लिये भी दूसरों को दोष देते है। आग्रही, हठी अस्थिर, कुछ व्यभिचारी होते है। राहु शुभ सम्बन्ध में हो तो-लोगों के कल्याण के लिये कोशिश करते है। शान्त, सरल, व्यवस्थित, सदाचारी, बोलने-बरताव में शान्त, मान अपमान की फिक्र न करनेवाला, हंसमुख, उच्च व्यक्तियों की मित्रता प्राप्त करनेवाला होता है। यह राहु पुरुष राशि मे हो तो द्विभार्या योग होता है। स्त्री राशि मे हो तो एक विवाह होता है, स्त्रीसुख कम मिलता है। मेष, सिंह, धनु मे-उद्दण्ड पौरुष की वृत्ति होती है। यह दत्तकयोग होता है। यह मित्रों का कहना नही मानता-अपनी इच्छा से ही बरताव करता है। अभिमानी होता है, मिलनसार नही होता। दैववादी, किसी बात के पीछे पडनेवाला होता है। शिक्षा अधूरी होती है। मेष में खुले दिल का, उदार होता है। सिंह मे दयालु, व्यवस्थित होता है। धनु मे दूसरों के व्यवहार से अलग, लोगों पर प्रभाव रखते है। वृषभ, कर्क, कन्या, मकर, मीन मे-लोगों के कामों में दखल देते है। ध्येयरहित, कुल के अभिमानी होतें है। मिथुन, तुला, कुम्भ में-छिद्रान्वेषी, लोगों का बुरा चाहनेवाले, विपत्ति में शत्रु पर प्रतिशोध लेनेवाले, गद्दार स्वभाव के, गप्पे लडानेवाले, सदा आनन्दी, बहुत बोलनेवाले, काम अधुरा छोड कर उसे भूल जानेवाले होते है। स्त्री राशियों मे बरताव अव्यवस्थित, हावभाव के साथ बोलना, साधारण बोलने मे बहुत अंगविक्षेप करना, दुष्ट स्वभाव होता है। वृश्चिक में---मन के साफ, निष्कपटी होते है। इन का क्रोध क्षणिक होता है। वातरोग होते है। यह द्विभार्यायोग होता है। पहली पुत्रसन्तति की मृत्यु होती है।

आयु के विषय में विचार—लग्न या दशम मे राहु से १६ वे वर्ष मृत्यु होती है ऐसा एक मत है—लग्ने च दशमे राहुः जन्मकाले यदा भवेत् । षोडशाब्दे भवेन्मृत्युर्यदि शक्रोऽपि रक्षति ।। दशमो यस्य वै राहुजंन्मलग्ने यदा भवेत् । वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च । किन्तु हमारे मत से राहु मृत्युकारक ग्रह नही है अतः इन फलों का अनुभव मिलना कठिन है । श्री. चित्रे ने सारावली के एक श्लोक का आधा भाग देखकर लग्नस्थ राहु मे पांचवे वर्ष में मृत्यु होती है ऐसा कहा है । किन्तु यह पूरा श्लोक इस प्रकार है—दर्शनभागे सौम्याः क्रूराः त्वादृश्यके प्रसवकाले । राहुर्लग्नोपगतो यमक्षयं नयति पंचभिर्वर्षैः ।। अर्थात् सौम्य ग्रह कुण्डली के दृश्य भागमें और क्रूर ग्रह अदृश्य भाग में हो कर लग्न मे राहु हो तो पांचवे वर्ष मृत्यु होती है । इस विषय में एक और मत इस प्रकार है—घटसिंहवृश्चिकोदयकृतस्थितिर्जीवितं हरति राहुः । पापैर्निरीक्ष्यमाणः सप्तमितैर्निश्चितं वर्षैः । कुम्भ, सिंह या वृश्चिक लग्न में राहु पर पापग्रह की दृष्टि हो तो सातवे वर्ष में मृत्यु होता है । हमारे विचार से राहु मृत्यु कारक ग्रह नही है—इस से शारीरिक कष्ट का फल मिलता है ।

धन स्थान में राहु के फल

वैद्यनाथ—विरोधवान् वित्तगते विधुन्तुदे जनापराधी शिखिनि द्वितीयगे । राहु द्वितीय स्थान में हो तो उस व्यक्ति का बहुत विरोध होता है । केतु हो तो यह लोगों के अपराध करता है ।

गर्ग—मत्स्यमांसधनो नित्यं नखचर्मादिविक्रयी । जीविका चौरकृत्याच्च राहौ धनगते नरः ।। यह मांसमछली से, नख और चमडा बेचकर तथा चोरी के कामों से धन प्राप्त करता है । द्वितीयभवने केतुर्धनहानिं प्रयच्छति नीचसंगी च दुष्टात्मा सुखसौभाग्यवर्जितः ।। इस स्थान में केतु धनहानि करता है । यह बुरी संगति में रहता है, दुष्ट, दुःखी तथा अभागा होता है ।

पुंजराज—स्याद् दन्तुरो दन्तरुगर्दितो वा सिंहीसुते चेत् धनभावसंस्थे ।। इस के दांत टेढेमेढे होते है अथवा दांत के रोग होते है ।

बृहद्यवनजातक–धनगते रविचन्द्रविमर्दने मुखरताकितभावयुतो भवेत् । धनविनाशकरो हि दरिद्रतां स्वसुहृदां न करोति वचग्रहम् ।। यह बहुत बोलनेवाला, धन का नाश करनेवाला, दरिद्री तथा मित्रों की बात न माननेवाला होता है । धने केतुगे धान्यनाशं धनं च कुटुम्बाद् विरोधो नृपाद् द्रव्यचिन्ता । मुखे रोगता सन्ततं स्यात् तथा च यदा स्वे गृहे सौम्य-गेहे च सौख्यम् ।। धनस्थान में केतु से धनधान्य का नाश होता हैं, कुटुम्ब में झगडे होते है, राजा से भय होता है । मुख में रोग होते है । केतू स्वगृह में अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो ही सुख देता है । यही वर्णन ढुंढिराज ने दिया है । आर्यग्रन्थ में राहु का फल गर्ग के अनुसार तथा केतु का फल यवनजातक के अनुसार दिया है ।

मन्त्रेश्वर—छन्नोक्तिर्मुखरुग् घ्राणी नृपधनविदेषः सुखी । अस्पष्ट बोलनेवाला, मुख में रोग से युक्त, राजा से धन प्राप्त करनेवाला, सुखी होता है । इस की नाक बडी होती है । विद्यार्थहीनमधमोक्तियुतं कुदृष्टि-पातः परान्ननिरतं कुरुते धनस्थः । इस स्थान में केतु से विद्या और धन का अभाव होता है । यह नीचों जैसा बोलता है, बुरी नजर से देखता है और दूसरों के अन्न पर अवलम्बित रहता है ।

नारायणभट्ट—कुटुम्बे तमो नष्टभूतं कुटुम्बं मृषाभाषिता निर्भयो वित्तपालः । स्ववर्गप्रणाशो भयं शस्त्रतश्चेत् अवश्यं खलेभ्यो लभेत् पार-वश्यम् ।। इस का कुटुम्ब नष्ट होता है, झूठ बोलता है, निडर, धन का रक्षण करनेवाला होता है । इस के बान्धवों का नाश होता है । शस्त्र से डरता है तथा दुष्टों के अधीन रहता है । इस लेखकने केतु का फल यवन-जातक जैसा दिया है ।

जागेश्वर—धने राहुणा वर्तमाने धनी स्यात् कुटुम्बस्य नाशो भवेद् दुष्टखेटैः । स्थितिर्वक्रघातस्तथा गोधनं स्याद् धनं वर्धते माहिषं शत्रुनाशः ।। यह धनवान तथा गायभैंसों का स्वामी होता है । कुटुम्ब का नाश होता है । शत्रु नष्ट होते है । मतान्तरम्-नीचविद्यानुरक्तः । यह हलके शास्त्रों में रुचि रखता है ।

हरिवंश---वित्तवाताधिककान्तिः कान्ताधिको गौरवाधिक्ययुक्तो नरःस्यात् । अन्यदेशे महोद्योगः । धनवान्, वातरोगी, कान्तिमान, सम्मानित होता है । यह विदेश में बहुत उद्योग करता है । एक से अधिक स्त्रियां होती है ।

घोलप---यह गुणवान किन्तु धनहीन होता है । कठोर, दूसरों का अहित करनेवाला, कुटुम्ब में झगडे लगानेवाला, प्रवासी होता है । इस स्थान में केतु से दुःखी, बुद्धिहीन, मन में सन्तप्त कुटुम्ब का विरोध करनेवाला, मुखरोगी, राजा से धन की चिन्ता से युक्त होता है ।

वसिष्ठ---धनभुवनगतो वित्तनाशं करोति । धन का नाश करता है।

गोपाल रत्नाकर---शरीर पुष्ट होता है । वर्ण सांवला, मुख टेढामेढा, आंखें रोगयुक्त, विवाह एकसे अधिक तथा पुत्र सन्तति से युक्त होता ये फल है । यह धनहीन होता है ।

लखनऊ के नबाब---कुजी बाहासिदरासे मालखाने च मुफ्लिसम् । करोति मनुजं वान्यदेशे धनसमन्वितम् । यह अपने काम छोडनेवाला, स्वार्थी, दुःखी, विदेश में धन प्राप्त करनेवाला होता है ।

पाश्चात्य मत-यह दैववाला, धनवान, व्यवहार में व्यवस्थित, लोगों का विश्वासपात्र होता है । इस स्थान में केतु से पुत्र की मृत्यु, भाग्य कम होना, नुकसान के कारण धन्धा बन्द करना, दीवालिया होना, बदनामी ये फल मिलते है ।

अज्ञात---निर्धनः । देहव्याधिः । पुत्रशोकः । श्यामवर्णः । पापयुते कलत्रत्रयम् ।। शुभयुते चुबुके लांछनम् । धनव्ययमनारोग्यं चिन्ता बस्तादि-पीडनम् । वक्त्रलोचनपीडाच धनस्थे सिंहिकासुते ।। यह धनहीन, रोगी, सांवले रंग का, पुत्र की मृत्यु से दुखी होता है । राहु के साथ पापग्रह हो तो तीन विवाह होते है । शुभ ग्रह हो तो ठोडी पर दाग होता है । इसे आंख के रोग होते है ।

श्री. चित्रे---यह राहु सिंह में हो तो निर्जन प्रदेश में निवास हो कर धन मिलता है । यह मनुष्यों के जीवितहानि का कारण बनता है । उच्चको

नीचगेहस्थों ग्रहो नैवात्र दोषकृत् ।। धनस्थान में उच्च अथवा नीच ग्रह का कोई बुरा फल नही मिलता । इस नियमसे यह राहु मिथुन, कन्या या कुम्भ में हो तो शुभ फल देता है । यह स्वकार्य छोडनेवाला, दु:खी, धनहीन, पुष्ट शरीर का, कठोर, अविवेकी होता है । विदेश में धन प्राप्त करता है । चोरी में आसक्त, हिंसक, मद्यपी, झगडालू, मुखरोगी, बान्धव-नाशक हो सकता है । इस के दो स्त्रियां होती है ।

हमारे विचार---इस स्थान में नारायणभट्ट, जागेश्वर, तथा पाश्चात्य लेखकोंने धन के विषय में शुभ फल बताये है, अन्य आचार्य अशुभ फल बतलाते है । शुभ फल स्त्रीराशियों के तथा अशुभ फल पुरुषराशियों के है । इस स्थान का कुछ फलादेश जैसे चोरी करना, मांसमछली बेचना आदि--उच्च वर्ग के लोगों के विषय में संभव प्रतीत नही होता ।

हमारा अनुभव---इस स्थान मे राहु के साधारण फल शनि जैसे होते है । पूर्वार्जित सम्पत्ति थोडी मिलती है---उसे बढा कर सुखपूर्वक उपभोग करते है । इन्हे खाने के पदार्थो की विशेष रुचि होती है । बडे व्यवसाय करने की बहुत इच्छा से कभी कभी स्थावर सम्पत्ति गिरवी रख कर भी पूंजी इकठ्टी करते है । एक बार दिवालिया होते है । किन्तु फिर मेहनत से बडे व्यवसाय मे ही सफल हो कर बाजार मे साख जमाते है । यह न तो कंजूस होता है, न खर्चीला---आय के अनुसार व्यवस्थित खर्च करता है । इन्हें पैसे की फिक्र नही होती---कीर्ति की इच्छा करते है । ये लोगों के प्रभाव मे नही आते । ये देखने में अच्छे, स्वस्थ प्रकृति के होते है । आवाज स्त्रियों जैसा कोमल होता है । यह सब वर्णन स्त्रीराशि में शुभ योग में राहु हो तो ठीक समझना चाहिये । अन्य राशियों में राहु अशुभ योग में न हो तो---खानेपीने की कमी नही होती । ये लोगों के कामों मे दखल नही देते । इन्हें मित्र कम होते है---अपने ही घर में मग्न रहते है। ये दूसरों को तकलीफ नही देते लेकिन इन्हें कोई कष्ट दे तो सहन भी नही करते । इस स्थान में राहु पुरुष राशि में अशुभ संबंध मे हो तो---पूर्वार्जित सम्पत्ति नही होती, हुई तो विवादग्रस्त होती है अथवा अपने ही हाथ से नष्ट होती है । इन की खुद की कमाई सम्पत्तिभी

टिकती नही है। इन्हें अचानक अन्याय से मिली हुई सम्पत्ति कायम रहती है। उस के दुष्परिणाम उन के पुत्र पौत्रों को भोगने पडते है। यह दत्तकयोग है। पिता की मृत्यु के बाद भाग्योदय होता है। मां-बाप का नाम बढाते है। तेजस्वी, पराक्रमी होते है। मां बाप के जीवनकाल में यें उन्हें सुख नही दे सकते, मां बाप भी इन का मूल्य नही समझते। (दत्तक योग में १।३।५।७।१०।११।१२ स्थानों मे शनि भी पाया जाता है। इस से शनि के शुभ फल देने की शक्ति का विचार हो सकता है।) यह द्विभार्यायोग होता है। हाथ मे पैसा बचता नही है। कमाया हुआ सब खर्च हो जाता है। इन के मामाको सन्तति कम होती है। धन प्राप्ति के ऐन मौके पर विघ्न आते है। पैसे के बारे मे फिक्र नही होती। लोगों के धन के अव्यवस्थित उपयोग से अपवाद फैलाते है। २५ वे वर्ष मे हानि होती है। २६ वे वर्ष से भाग्योदय शुरू होता है। जीविका शुरू होने के बाद विवाह होता है। ३० वे वर्ष मे लाभ होता है। इन के कुटुम्ब मे कोई न कोई बीमार बना रहता है। वृद्ध वय मे आंख के रोग होते है।

तीसरे स्थान के फल

वैद्यनाथ—राहौ विक्रमगेऽतिवार्यधनिकः केतौ गुणी वित्तवान्। यह पराक्रमी, धनवान होता है। केतु हो तो गुणवान, धनी होता है।

गर्ग—भ्रातृगो हन्ति वा व्यंगमथवा भ्रातरं तमः। लक्षेश्वरं कष्टहीनं चिरं च तनुते धनम्। इस के भाई की मृत्यु होती है अथवा उन के शरीर मे व्यंग रहता है। यह लक्षाधीश, सुखी और चिरकाल तक धन पानेवाला होता है,

मन्त्रेश्वर—मानी भ्रातृविरोधको दृढमतिः शौर्ये चिरायुर्धनी। यह अभिमानी, धनवान, दृढ विचार का, दीर्घायु तथा भाईयों का विरोध करनेवाला होता है। आयुर्बलं धनयशः प्रमदान्नसौख्यं केतौ तृतीयभवने सहजप्रणाशम्। इस स्थान में केतु से आयु, बल, धन, कीर्ति, स्त्री तथा खानपान का सुख मिलता है किन्तु भाइयोंका नाश होता है।

बृहद्यवनजातक---न सिंहो न नागो भुजाविक्रमेण प्रतापीह सिंहीसुते तत्समत्वम् । तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति प्रभावेपि भाग्यं कुतो यत्र केतुः ।। यह हाथी या सिंह से अधिक पराक्रमी होता है तथा विश्व को ही बन्धु समझता हैं । शिखी विक्रमे शत्रुनाशं च वादं धनस्याभिलाभं भयं मित्रतोऽपि । करोतीह नाशं सदा बाहुपीडां भयोद्वेगता मानवोद्वेगतां च ।। इस स्थान मे केतु शत्रु का नाश करता है । इसे धनलाभ होता है किन्तु मित्रों से हानि का डर होता है, विवाद होतें है, बाहुओं मे कष्ट होता है तथा समाज से उद्वेग और भय होता है ।

आर्यग्रन्थ---भ्रातुर्विनाशं प्रददाति राहुस्तृतीयगेहे मनुजस्य देही । सौख्यं धनं पुत्रकलत्रमित्रं ददाति शृंगी गजवाजिभृत्यान् ।। यह राहु भाइयों का नाश करता है । धन, पुत्र, स्त्री, मित्र, हाथी, घोडे, नौकर आदि का सुख देता है । शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च । सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडां भयोद्वेगचिन्तां कुले तां विधत्ते ।। इस स्थान मे केतु शत्रु का नाश कर के धन, भोग, ऐश्वर्य, तेज देता है । इसे कुल की चिन्ता, उद्वेग, बाहु मे पीडा, मित्रों की हानि तथा विवाद से कष्ट होता है ।

ढुंढिराज---दुश्चिक्येऽरिभवं भयं परिहरन् लोके यशस्वी नरः श्रेयो-वादिभवं तदा हि लभते सौख्यं विलासादिकं । भ्रातृणांनिधनं पशोश्च मरणं दारिद्रभावैर्युतं नित्यं सौख्यगणैः पराक्रमयुतं कुर्याच्च राहु सदा । यह शत्रु का भय नष्ट कर कीर्ति देता है । बाद में जय, विलास के सुख तथा पराक्रम से युक्त होता है । इसके भाइयों की तथा पशुधन की मृत्यु होती है । इस लेखक ने केतु के फल आर्यग्रन्थ जैसे दिये है ।

नारायणभट्ट---प्रयत्नेऽपि भाग्यं कुतोऽयत्नहेतुः । इसे बिना प्रयास के भाग्योदय होता है । शेष फल यवनजातक के दिये है । केतु के फल आर्य-ग्रन्थ जैसे है ।

वसिष्ठ---दुश्चिक्ये भूपपूज्यः । यह राजा से सन्मानित होता है ।

बागेश्वर— तमो विक्रमे विक्रमाश्नागयूथैर्भजेत् मल्लविद्यां तु किं मानुषैर्वा। तथा तेजसा तेजसां वि विनाशं करोति स्वयं पुण्यमार्गे वियाति ॥ यदा केतुरास्ते कुहस्तोऽत्र रोगी भवेच्छत्रुसीमन्तिनीनां च भोक्ता। भवेन्मानसं दु:खितं बन्धुकष्टं विशिष्टं फलं विक्रमे संविधत्ते ॥ यह हाथियों से भी कुश्ती लड सकता है। अपने तेज से शत्रुका तेज नष्ट करता है। शुभ मार्ग पर चलता है। इस स्थान मे केतु से हाथ अच्छा नही होता, रोगी, शत्रु की स्त्रियों का उपभोग करनेवाला, मन में दु:खी तथा भाइयों के कष्ट से युक्त होता है।

हरिवंश—भ्रातृसौख्येन हीनो भवेत् भ्रातृगेहे शीतभानुशत्रौ। भाइयों के सुख से रहित होता है।

घोलप—आर्यग्रन्थ जैसे फल दिये है।

गोपाल रत्नाकर—यह धनवान, लक्षाधीश, पराक्रमी होता है। इसे पुत्र, भाइयों का सुख कम मिलता है। कान में रोग होते है।

लखनऊ के नबाब—पाक: शाहबल: स्यात् वै नेकनामो गनी सखी। शेयुमखाने यदा रास: प्रभवेत् मनुजो धनी ॥ यह पवित्र, राजाश्रय पानेवाला, कीर्तिमान, उदार, सत्ताधारी, धनवान होता है।

पाश्चात्य मत—त्वरित बुद्धि, चपल होते है। इस स्थान मे केतु से जादूटोने मे विश्वास होता है तथा उस से कष्ट होता है। संशयी वृत्ति, मानसिक रोगों से युक्त होता है। इसे बहुत स्वप्न आते है। अन्य ग्रह के योग से यह वृत्तपत्रके सम्पादक बन सकता है।

श्री. चित्रे—यह पवित्र स्वभाव का, राजा द्वारा सन्मानित अतएव प्रभावी, कीर्तिमान, उदार, धनवान, विलासी, सुदृढ पुत्र-मित्र-स्त्री-वाहन के सुख से सम्पन्न होता है। इसे साझेदारी के व्यवहार में लाभ होता है। कान के रोग होते है। शत्रु का नाश होता है। भाई तथा पशुधन का नाश होता है। ये फल तब पूर्णरूप से मिलते हैं जब राहु उच्च, स्वगृह का अथवा शत्रु की राशि में होता है। सिंह में राहु तेजस्वी होता है।

अज्ञात—पराक्रमी । साहसोद्यमी । भाग्यैश्वर्यसम्पन्नः । परदेशयुतः । राजमानस्तथैश्वर्यमारोग्यं विभवागमम् । शत्रुक्षयं सुहृत्सौख्यं राहौ लग्ने तृतीयगे ।। यह पराक्रमी, साहसी, उद्योगी, भाग्यवान, धनवान, राजाद्वारा सन्मानित, स्वस्थ, मित्रों से युक्त होता है। यह विदेश में जाता है। शत्रुओं का नाश करता है।

हमारे विचार—इस स्थान में अनेक लेखकों ने शुभ फल बतलाये है। ये फल स्त्रीराशि के है। अशुभ फल पुरुषराशि के है। पश्चिमी ज्योतिषियों ने ३।४।५।६।७।८ इन स्थानों में राहु के फल विशेष नही दिये है क्यों कि ये स्थान अनुदित गोलार्ध के है। २।१।१२।११।१०।९ ये स्थान उदित गोलार्ध के है अतः उन मे राहु के फल उन्हों ने शुभ बतलाये है।

हमारा अनुभव—इस स्थान में पुरुष राशि में राहु भाइयों के लिए मारक है—भाई नही होते अथवा उन का संसार ठीक नही चलता, निरुद्योगी, निपुत्रिक होते हैं। किसी भाई का अपघात से मृत्यु होता है अथवा वह लापता होता है, भाई से अदालत में झगडे चलते हैं। ये व्यक्ति अतिशय आत्मविश्वासी, घमंडी होते है। इन्हे मित्र विशेष नही होते। लोगों की हंसी उडाते है। दुष्ट, कम बोलनेवाले, ढोंगी होते है। ४२ वे वर्ष तक ये कष्ट में रहते है। प्रगति के लिये हर तरह के बुरे काम करते है। निर्दय, दूसरों के बारे मे बेफिक्र होते है। इन की शिक्षा मे रुकावटे आती है, शिक्षा अधूरी रह सकती है। यह राहु स्त्रीराशि मे हो तो—भाइयो को मारक नही होता, बहनों को मारक होता है। ३० वे वर्ष तक कष्ट सहते है फिर अपने ही प्रयत्न से प्रगति करते है। ये सीधे मार्ग से चलते है। रहनसहन अधिकारी जैसा होता है। बुद्धि शान्त, विचारपूर्ण, तेजस्वी होती है। मिलनसार, परोपकारी, दयालु होते है। शिक्षा पूरी होती है। सच बोलनेवाले, काल को देख कर चलनेवाले, कीर्तिमान, सूझबूझ से युक्त, संकट से न डरनेवाले तथा अपने उद्देश में सफल होते है। ये बटवारे में अदालत का सहारा नही लेते। इस स्थान मे राहु का साधारण फल भाइयों के लिए अच्छा नही हैं। दो भाई एकसाथ प्रगति

नही कर सकते । इन्हे सौतेली मां आ सकती है । २१ वे वर्ष पिता की स्थिति बिगडती है । २१ वे वर्ष जीविका का आरम्भ, २७ वे वर्ष विवाह तथा ४२ वे वर्ष विशेष लाभ होता है । पहले पुत्र को यह राहु मारक है ।

चौथे स्थान के फल

वैद्यनाथ--राहौ कलत्रादिजनावरोधी केतौ सुखस्थे च परापवादी । स्त्री आदि को कष्ट होता है । इस स्थान में केतु हो तो वह दूसरों की निन्दा करता है ।

गर्ग--बन्धुस्थानगतो राहुर्बन्धुपीडाकरो भवेत् । गावे कर्किणि मेषे च स च बन्धुप्रदो भवेत् ॥ चतुर्थे भवने केतुर्मातापित्रोस्तु कष्टकृत् । अति-चिन्ता महाकष्टं सुहृद्भिः सुखवर्जितम् ॥ यह राहु मेष, वृषभ, कर्क मे हो तो बन्धुओं का सुख देता है । अन्य राशियों में बन्धुओं को कष्ट देता है । यहां केतु माता-पिता को कष्ट देता है । मित्रों का सुख नही मिलता। बहुत चिन्ता और बहुत कष्ट होता है ।

मन्त्रेश्वर--मूर्खो वेश्मनि दुःखकृत् ससुहृदल्पायुः कदाचित् सुखी । यह मूर्ख, दुःखी, अल्पायु, मित्रों से युक्त होता है । इसे सुख कदाचित ही मिलता है ।

नारायणभट्ट--चतुर्थे कथं मातृनैरुज्यदेहो हृदि ज्वालया शीतलं किं बहिः स्यात् । स चेदन्यथा मेषगोकर्कगो वा वुधर्क्षेसुरो भूपतेर्बन्धुरेव ॥ इस की माता रोगी होती है । हृदय मे चिन्ता रहती है । मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क या कन्या मे यह राहु देव जैसा सुख और राजा का स्नेह देता है । चतुर्थे च मातुःसुखं नो कदाचित् सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति । शिखी बन्धुवर्गात् सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नो वसेत् स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥ इस स्थान मे केतु माता का सुख नष्ट करता है । मित्र नही होते । पैतृक धन नष्ट होता है । अपने घर में अधिक समय नही रह सकता । केतु उच्च मे हों तो बन्धुओं का सुख मिलता है ।

ढुंढिराज—सुखगते रविचन्द्रविमर्दने सुखविनाशनतां मनुजो लभेत् । स्वजनतां सुतमित्रसुखं नरो न च लभेत सदा भ्रमणं नृणाम् ॥ यह दुखी; पुत्र, मित्र तथा स्वजनों से रहित एवं सदा घूमनेवाला होता है। केतु फल नारायणभट्ट के समान दिया है।

आर्यग्रन्थ—राहौ चतुर्थे धनबन्धुहीनो ग्रामैकदेशे वसति प्रकृष्टः । नीचानुरक्तः पिशुनश्च पापी पुत्रैकभागी कृतयोषिदासाम् ॥ यह निर्धन; बन्धुरहित, नीचों की संगति मे आसक्त, दुष्ट, पापी होता है। इसे एकही पुत्र होता है। यह गांव मे रहता हैं। केतु-फल नारायणभट्ट जैसा दिया है।

बृहद्यवनजातक—चतुर्थे भवने चैव मित्रभ्रातृविनाशकृत् । पितुर्मातुः क्लेशकारी राहौ सति सुनिश्चितम् ॥ यह माता-पिता को कष्ट देता है। इस के मित्र-भाइयोंका नाश होता है। केतु—फल नारायणभट्ट जैसा है।

वसिष्ठ—सुहृदि न विनयो भ्रातृमित्रादिहानिः । यह उद्धत होता है। भाई या मित्र नही होते।

जागेश्वर—सुखे वाथवा सैंहिकेयोथ केतुस्तदा मातृपक्षे विषाच्छस्त्र-घातात् । व्यथा वा जनन्या भवेद् वायुपीडाथवा काष्ठपाषाणघातैर्हता स्यात् ॥ इस की माता को वात रोग होता हैं अथवा लकडी या पत्थर के आघात से मृत्यु होती हैं। मामा के घर में विष या शस्त्र से मृत्यु होते है। चतुर्थे तु केतौ भवेन्मातृकष्टं तथा मित्रसौख्यं न पित्र्यं नराणाम् । सदा चिन्तया चिन्तितं नैव सभ्यं यदा चोच्चगो नैव वादं विदध्वम् ॥ इस स्थान में केतु से माता को कष्ट होता है। मित्रों का सुख तथा पैतृक धन नही मिलता। हमेशा चिन्ता रहती है। सभा में अयोग्य सिद्ध होता है। यह उच्च हो तो वाद नही करना चाहिए।

घोलप—घर, धन आदि नष्ट होते है। मित्र अच्छे होकर भी उपयोग नही होता। कुल के दोष से शारीरिक कष्ट होता है। यह सुखहीन, प्रवास बहुत करनेवाला होता है। इसे पुत्रसुख कम मिलता है।

गोपाल रत्नाकर—यह नौकरी करता है। इसे सौतेली मां होती है। द्विभार्यायोग होता है।

हरिवंश---बन्धुगेहे विधोर्मंदके मानवो बन्धुवर्गस्य वैरी कुकामातुरः। आलसी साहसी पूजिते निन्दिते सौख्यहीनो भवेत् सर्वदा ।। यह अपने ही लोगों का शत्रु, अति कामुक, आलसी, साहसी होता है। यह राहु अशुभ योग में हो तो कभी सुख नही मिलता।

लखनऊ के नवाब---रासश्चेद् दोस्तखाने स्यात् परेशानो मुसाफिरः। नादानोऽपि च वादी च सौख्यहीनो विपक्षकः ।। यह चिन्तित, प्रवासी, नादान, झगडालू, दु:खी, शत्रुओं से युक्त होता है।

पाश्चात्य मत---राहु चतुर्थ में और केतु दशम में हो तो उस व्यक्ति कों अवैध सम्बन्ध से सन्तति होती है।

अज्ञात---बहुभूषणसमृद्धः। जायाद्वयम्। सेवकाः। मातृक्लेशः। पापयुते निश्चयेन। शुभयुते दृष्टे वा न दोषः। चिन्तादु:खं प्रवासश्च प्रवादः स्वजनैः सह। चतुष्पदः क्षयं यान्ति राहुस्तुर्यगतो यदि। इस के पास बहुत अलंकार होते है। दो स्त्रियां होती है। नौकरी करता है। माता को कष्ट होता हैं। शुभग्रह राहु के साथ हो अथवा उनकी दृष्टि हो तो ये दूषित फल नही मिलते है। पाप ग्रह साथ हो तो अवश्य मिलते है। यह चिन्तित रहता है, बहुत घुमता है, अपने लोगों से झगडता है। इस के यहां के पशु नष्ट होते है।

श्री. चित्रे---यह राहु दो विवाह तथा सौतेली मां का योग करता है। यह मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क वा कन्या में हो तो उत्तम राजयोग होता है। प्रवास बहुत होता है, विविध चमत्कार देखने को मिलते है। साहसी होता है। यह राहु रवि के योग में हो तो कष्ट देता है। राजयोग में ३६ से ५६ वे वर्ष तक बहुत भाग्योदय होता है।

हमारे विचार---प्राय: सभी लेखकों ने इस स्थान में अशुभ फल बतलाये है। मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क व कन्या में शुभ फल दिये हैं। हमारे अनुभव में मेष व मिथुन में अशुभ फल ही मिले है। वृषभ, कर्क व कन्या में साधारण शुभ फल मिलते है। द्विभार्या व द्विमाता योग गोपाल रत्नाकर व चित्रे ने बतलाया है। यह पुरुष राशि का योग है।

स्त्रीराशि में यह योग क्वचित मिलता है। सावत्र माता की ही स्थिति इस की स्त्रियों की भी होती है। बृहद्‌यवनजातक में बन्धुनाश का फल कहा है। हमारे अनुभव मे बन्धुओं का नाश तो नही मिला किन्तु बन्धुओं को परस्पर कुछ लाभ नही हुआ ऐसा देखा है। दत्तक योग से बन्धुओं से अलग होना संभव है। माता-पिता को कष्ट होना, दारिद्रय आदि फल साधारणतः ठीक है। अवैध सन्तति का जो फल पश्चिमी मत में कहा है उस का अनुभव हमे नही मिला।

हमारा अनुभव—इस स्थान में घोलप ने कुल के दोष से कष्ट होना यह जो फल कहा है उस का अनुभव हमें अच्छी तरह मिला है। अतः हम ने इस स्थान को शापस्थान माना है। इस में कुल में तीनचार पीढी पहले खून, विषप्रयोग, आत्महत्या, किसी स्त्री को घर छुडा कर तकलीफ देना आदि कुछ पापकृत्य हुआ होता है। उसके शाप स्वरूप कुल की स्थिति बिगडते जाती है। स्त्री को कष्ट देने से सातपीढी तक, अन्य पापों से चार पीढी तक कष्ट होता है। वंशपरम्परा से दारिद्रय, कोढ, रक्त-पित्त, पागलपन, किसी व्यक्ति द्वारा गृहत्याग, गूंगापन, क्षयरोग, अकाल-मृत्यु, सन्यास लेना आदि अशुभ फल मिलते है। इन फलों के कारक योग इस प्रकार है—राहु के समीप या केन्द्र में शनि व मंगल के युति–प्रति-योग से खून होते है। राहु के समीप या युति में मंगल हो कर शनि-चन्द्र का अशुभ योग हो तो विषप्रयोग, आत्महत्या का योग होता है। राहु के २।४।६।७।८।१२ इन स्थानों में यह योग होता है। वृषभ, सिंह, कुम्भ लग्न मे यह योग संभव है। राहु १।४।६।८।१२ में हो, शनि से चन्द्र, रवि, मंगल दूषित हो तो क्षय, कोढ, रक्तपित्त से कष्ट होता है। लग्न राशि से चतुर्थ राहु रवि-चन्द्र, अथवा मंगल से दूषित हो अथवा चतुर्थेश के साथ राहु हो या केन्द्र मे शनि-राहु की युति हो तो दारिद्रय योग होता हैं। यही योग धनस्थान मे भी हो सकता है। ये सब योग पुरुषराशि मे विशेष रूप से होते है। स्त्री राशि मे सन्तति बहुत हो कर दारिद्रय अथवा सम्पत्ति व कीर्ति मिलने पर सन्ततिहीन होने का फल मिलता है। इस स्थान मे राहु से चन्द्र या मंगल की युति, चतुर्थेश की युति हो (इसी

प्रकार धनस्थान मे राहु से धनेश की युति हो व चन्द्र से राहु चतुर्थ हो) तो घर या खेती खरीदते समय वह घर आदि पिशाचपीडित नही है यह देख लेना चाहिए। एलन लिओ ने चतुर्थ मे नेपच्यून के फलस्वरूप पिशाच-पीडित घर आदि मिलने का अनुभव कहा है वही हम ने उपर्युक्त योगों में देखा है। चतुर्थ के शनि से भी इस योग की आशंका हैं। इस स्थान में पुरुष राशि में राहु जन्म समय से पिता को आर्थिक कष्ट, दीवाला निकलना, नौकरी छूटना, सस्पेण्ड होना, माता को व स्वयं को शारीरिक कष्ट, शिक्षा मे रुकावटे, छोटे भाई न होना अथवा होकर मृत होना, विवाह जल्दी होना, दो विवाह होना, पत्नी अच्छी मिलना ये फल देता है। यह राहु विशेष उन्नति नही देता—नौकरी में दिन सुखपूर्वक कटते है। मिथुन, सिह, कुम्भ में सम्पत्ति मिलती है किन्तु सन्तति नही होती, उस के लिए दूसरा विवाह करता है। शिक्षा पूरी नही होती किन्तु बुद्धिमत्ता होती है। यह पापकार्यो से धन कमाता हैं। शुरू में यह बात छिप जाती है किन्तु मृत्युसमय तक लोक जान जाते है। माता-पिता में एक का मृत्यु बचपन में होता है। इन मे एक का मृत्यु अकस्मात होता है। स्त्री राशि में अत्यन्त सदाचरण के कारण व्यवसाय मे असफल होते है। शील के विपरीत बरताव से ही धन मिलता है। इन के व्यावहारिक बुद्धि से दूसरों का फायदा होता है किन्तु खुद का फायदा नही होता। ये अपनी बुद्धि के बारे में घमंडी होते है। लोगों को ये मूर्ख किन्तु इन के शिष्य विद्वान प्रतीत होते है। असफलता और बेइज्जती के बावजूद ये व्यवसाय से ही धनवान होने की कोशिश नही छोडते। इन्हें हमेशा अस्थिरता रहती है। संकट, दारिद्र्य, मानहानि बनी रहती है, वृद्ध वय में विशेष रूप से कष्ट होता है। स्त्री पुत्र भी विरोधी होते है। साझीदारी या नौकरी मे ये सफल हो सकते है। इन्हें ज्योतिषी शुभ फल बतायें तो उसका अनुभव कभी मिल नही सकता। यह योग दत्तक लिए जाने का हो सकता है। स्त्रीराशि मे राहु एक विवाह तथा तीन-चार तक सन्तति देता है। पत्नी शीलवान, स्नेहपूर्ण, संकट में धीरज देनेवाली, योग्य सलाह देनेवाली होती है। इन लोगों को यही बात अच्छी होती है। पत्नी की मृत्यु पति के पहले होती है। यह राहु अशुभ है किन्तु शनि या गुरु के शुभ युति में व अन्य

ग्रहों के शुभ सम्बन्ध में हो तो ३६ से ५६ वे वर्ष तक अच्छा भाग्योदय होता है ।

पाचवें स्थान के फल

वैद्यनाथ—भीरूर्दयालुरधनः सुतगे फणीशे । केतौ शठ सलिलभीरुरतीव रोगी ॥ यह डरपोक, दयालु, धनहीन होता है । केतु हो तो दुष्ट, रोगी, पानी से डरनेवाला होता है ।

गर्ग—तनयं दीनमलिनं सुतर्क्षे रचयेत् तमः । यदि चन्द्रगृहं तत् स्यात् तदानीं सन्ततिर्भवेत् ।। सिंहे कुलीरसंस्थे राहुः पुत्रेऽथ पुत्रिण कुरुते । अन्यस्मिन्नपि राशौ पुत्रविहीनो भवेन्मनुजः ॥ इस का पुत्र दीन व मलिन होता है । राहु कर्क या सिंह में हो तो पुत्रसन्तति होती है, अन्य राशियों में नही होती । पुत्रे केतौ प्रजाहानिर्विद्याज्ञानविवर्जितः । भयत्रासी सदा दुःखी विदेशगमने रतः ।। इस स्थान में केतु से सन्तति नही होती, विद्याज्ञान नही होता । डरपोक, दुखी, विदेश में जाने का इच्छुक होता है ।

बृहद्यवनजातक—सुते सद्मनि स्याद् सदा सैंहिकेयः सुतार्तिः चिरं चित्तसन्तापनीया । भवेत् कुक्षिपीडां मृतिः क्षुत्प्रबोधाद् यदि स्यादयं स्वीयवर्गेण दृष्टः ।। पुत्र न होने से चिरकाल चिन्ता रहती है । कोख मे पीडा होती है । यदि इस राहु पर अपने वर्ग की दृष्टि हो तो भूख से मृत्यु होता है । यदा पंचमे जन्मतो यस्य केतुः स्वकीयोदरे वातघातादिकष्टम् । स्वबुद्धिव्यथा सन्ततिः स्वल्पपुत्रः सदा धेनुलाभादियुक्तो भवेच्च ॥ इस के पेट मे वातरोग होते है । बुद्धि दूषित होती है । थोडे पुत्र होते है । गाय आदि पशुओं का लाभ होता है ।

नारायणभट्ट—सुते तत्सुतोत्पत्तिकृत् सिंहिकायाः सुतौ भामिनीचिन्तया चित्ततापः सति क्रोडरोगे किमाहारहेतुः प्रपंचेन किं प्रापकादृष्टवर्ज्यम् ।। इसे पुत्र होते है । स्त्री की चिन्ता रहती है । भोजन के कारण पेट के रोग होते है । व्यवसाय में लाभ नही होता । भाग्यपर अवलम्बित रहता है ।

केतु के फल यवनजातक जैसे है। अन्तर इतना है—इसके भाई को वातरोग या शस्त्र से कष्ट होता है, यह पराक्रमी होकर भी नौकरी करता है—ददात सोदरे घातवातादिकष्टम्। स दासो भवेद् वीर्ययुक्तो नरोऽपि ॥

मन्त्रेश्वर—नासोद्यद्वचनोऽसुतः कठिनहृद् राहौ सुते कुक्षिरुक् ॥ यह नाक से बोलता है। निष्ठुर व पुत्ररहित होता है। कोख में पीडा होती है। पुत्रक्षयं जठररोगपिशाचपीडां दुर्बुद्धिमात्मनि खलत्र प्रकृति च पापः ॥ इस स्थान में केतु से पुत्र नष्ट होते है, पेट मे रोग तथा पिशाच से पीडा होती है। यह अपने बारे मे भी दुष्ट बुद्धि का प्रयोग करता है।

ढुंढिराज—सुखगतो न हि मित्रविवर्धनं उदरशूलविलासविपीडनम्। खलु तदा लभते मनुजो भ्रमं सुतगते रविचन्द्रविमर्दने ॥ यह सुखरहित, मित्ररहित, पेट मे रोग से युक्त, भ्रमयुक्त होता है। इस के विलास में नित्य बाधा होती है। केतु का फल नारायणभट्ट जैसा है। सिर्फ बन्धुको प्रिय होना इतना अधिक कहा है।

आर्यग्रन्थ—राहुः सुतस्थः शशि नानुगो हि पुत्रस्य हर्ता कुपितः सदैव। गेहान्तरे सोपि सुतैकमात्रं दत्ते प्रमाण मलिनं कुचैलम् ॥ यह राहु चन्द्र के आगे हो तो पुत्र का नाश होता है। घर बदलने पर एक पुत्र होता है तथा वह भी गन्दा व गन्दे वस्त्र पहननेवाला होता है। केतु का फल नारायणभट्ट जैसा है।

जागेश्वर—सुते सैंहिकेयः सुतोत्पत्तिकृत स्यात् परं जाठराग्नि : स रोगान्न दीप्तः। परं विद्यया वैयारभावं प्रयातः प्रयासेपि नो लभ्यते काकिणी वा ॥ यह पुत्रसहित होता है। रोग के कारण भूख मन्द होती है। विद्या से शत्रुता होती है। बहुत प्रयत्न से भी इसे धन नही मिलता। तथा सैंहिकेयो मृतापत्यकारी पर कन्यकानां जनुः केतुना वा। इस स्थान मे राहु से सन्तति मृत होती है। केतु से कन्याएं होती है। यदा पंचमे यस्य पुच्छा भिधानस्तदा पुत्रकष्टं स्वयं क्रोडदुःखी। परं मन्त्रशास्त्रादिवादे रतश्च स्वयं धर्मकल्पद्रुमे वै कुठारः ॥ इस स्थान में केतु से पुत्र का कष्ट रहता है, पेट मे दुःख होता है। यह मन्त्रशास्त्र आदि के बारे मे बहुत बोलता है किन्तु स्वयं धर्मविरुद्ध आचरण करता है।

हरिवंश—पुत्रभावगते सिंहिकात्रपुत्रे पुत्रसौख्येन हीनो मलिनो भवेत् नीचसंगी कुरंगी दशामानहा मन्दविमन्दबुद्धिः मनुष्यो भवेत् ॥ इसे पुत्र-सुख नही मिलता, नीचों की संगति मे रहता है। गन्दा रहता है। बुद्धि अति मन्द होती है। शरीर का वर्ण अच्छा नही होता। इस की दशा मे मानहानि होतीं है।

पुंजराज—तीक्ष्णाप्यहौ। बुद्धि तीक्ष्ण होती है। अगुः कृमिणानिलेन वृषदा काष्ठेन नीरेण वा शैलेयेन। राहौ केतौ स्यात् कुपुत्रो नरस्तु ॥ इस के सन्तति की मृत्यु कृमि, वायु, पत्थर, लकडी, पानी या पर्वतीय सम्बन्ध की किसी वस्तु से होती है। इस स्थान मे राहु या केतु से अयोग्य पुत्र मिलते है।

गणेश दैवज्ञ—पंचस्थे केतुराहौ क्रियवृषभवने कर्कटे नो विलम्बः। पंचम मे मेष, वृषभ, या कर्क मे राहु या केतु हो तो शीघ्र ही सन्तति होती है।

वसिष्ठ—पुत्रभ्रंशः। पुत्र नष्ट होते है।

घोलप—यह धर्म, अर्थ, काम से युक्त, सर्वत्र पूज्य, प्रामाणिक, सुशोभित, पुत्रयुक्त, शत्रुरहित, होता है। इसे मित्र व सुख की प्राप्ति कम होती है। पेट में शूल व बुद्धि मे भ्रम होता है। इस स्थान मे केतु हो तो दया, बुद्धि, धन या वीरता नही होंती। पुत्रहीन, दुर्बुद्धि, पेट मे रोग से युक्त, घात पातसे पीडित, स्वकीयों से अलग रहनेवाला, बलवान व कल्याण का इच्छुक होता है।

गोपाल रत्नाकर—पुत्रप्राप्ति में विघ्न होता है। पूर्वजन्म के सर्पशाप से कष्ट होता है। (नाग या विष्णु) उपासना से पुत्र प्राप्त हो सकता है। यह गांव का अधिकारी, दुष्ट, राजा के क्रोध से पीडित, वमन रोग से त्रस्त होता है।

लखनऊ के नबाब—पिसरखाने स्थितो रासः पुत्रसौख्यविवर्जितम्। बेहोशं दर्दशिकमं नादानं कुरुते नरम् ॥ यह पुत्रसुख से रहित, रोगी, नादान, असावधान होता है।

पाश्चात्य मत—कम्पनी के व्यवसाय में सफल होता है। कोख मे रोग होता है। यह अनुदित गोलार्ध का स्थान है अतः इस मत में राहु के फल का वर्णन नही किया है।

श्री. चित्रे—यह पुत्रहीन, रोगी, बुरे विचारों का, क्रोधी, विकल मन का, राजा से भययुक्त, डरपोक, दयालु, व्यभिचारी होता है। शुभयोग मे हो तो राजा से सन्मानित, शत्रुहीन, पुत्रवान, विवेकी, विद्वान होता है, अनेक लाभ होते है।

अज्ञात—पुत्रसौख्यं सुतप्राप्तिर्दुर्मतिर्वैरिविग्रहः। नियतं जठरे पीडां सैंहिकेयस्तु पंचमः। इसे पुत्र होते है। पेट में कष्ट रहता है। बुद्धि अशुभ होती है। शत्रु से झगडा करता है। शेष फल गोपाल रत्नाकर जैसे है।

हमारे विचार—इस स्थान में कुछ लेखकों ने पुत्र नही होते यह फल कहा है। कुछ लेखक पुत्र रोगी होते है यह कहते है। इन मे अशुभ फल पुरुष राशि के तथा शुभ फल स्त्रीराशि के है। प्रयत्न से भी कुछ धन प्राप्त नही होना यह जागेश्वर का वर्णन अनुभवसिद्ध है।

हमारा अनुभव—इस स्थान मे पुरुष राशि मे राहु से अभिमानी, बुद्धिमान, कीर्तिमान होते है। आर्थिक या शारीरिक कष्ट से शिक्षा मे रुकावटे आती है। शिक्षा गलत प्रकार की मिलती है—वकील होने की योग्यता हो तो डाक्टरी पढते है, डाक्टर होने की योग्यता हो तो इंजीनियरी पढते है। इस से व्यवसाय में सफलता नही मिलती। बुद्धिमत्ता, कल्पनाशक्ति, संशोधक वृत्ति व्यर्थ होती है। यह राहु स्त्रीपुत्रों के सुख को नष्ट करता है। स्त्री को ऋतु सम्बन्धी रोग होते है। अथवा स्वयं पुत्रोत्पत्ति में अक्षम होते है। सन्तति के लिये दूसरा विवाह होता है। यह सुधारवादी, मन का दयालु, कोमल होता है। राहु अधिक अशुभ योग मे हो तो विवाह न होना, अवैध स्त्री सम्बन्ध, विपरीत रति के फल मिलते है। बुद्धि, ज्ञान, उद्योग का उपयोग न होने से निराशावादी होते है। ये सरल बरताव करते है। चमत्कारिक प्रतीत होते है। किन्तु लोगों

को स्त्री के बारे मे सन्देह होता है। खुद को सर्वज्ञ समझते है। सांसारिक बातों मे इन्हें योग्य अयोग्य की समझ नही होती तथा दूसरों की सलाह नही मानते अतः नुकसान सहना पडता है। इन्हें स्त्रीपुत्रसुख नही मिलता— लेखन, संशोधन मे मग्न होना पडता है, ग्रन्थ ही इनकी सन्तति समझनी चाहिए। इन के उत्तम संशोधन, लेखन अथवा कविता का मूल्य इन की मृत्यु के बाद ही लोग समझ पाते है। जीवनकाल मे इन का उपहास ही होता है। यह राहु स्त्रीराशि मे हो तो स्वभाव शान्त विचारी, समाधानी, विरक्त होता है। शिक्षा पूरी होती है किन्तु जीविका में शिक्षा का उपयोग नही होता। इन के लेखन, कविता, संशोधन की ख्याति फैलती है। इन की यह कीर्ति तात्कालिक होती है—थोडे ही समय मे लोग भूल जाते है। इनके दो विवाह होते है। पुत्र होते है, वे पिता के नाम को कलंकित करते है। इन के जीवनकाल मे ठीक तरह समय बीतता है। पंचम के राहु या केतु से पहली सन्तति बहुधा कन्या होती है। इन लोगों को सन्तति का कष्ट हो तो बहुधा सर्प सम्बन्धी स्वप्न आते हैं। यह पूर्व-जन्म के सर्पसम्बन्धी शाप का परिणाम होता है।

पंचमस्थ राहु का एक उदाहरण—विख्यात मराठी कवि गोविन्द—जन्म शक १७५५ माघ व. ७ सोमवार ता. ९–१–१८७४ सूर्योदय के पहले, स्थानिक समय ८–२६ स्थान नासिक।
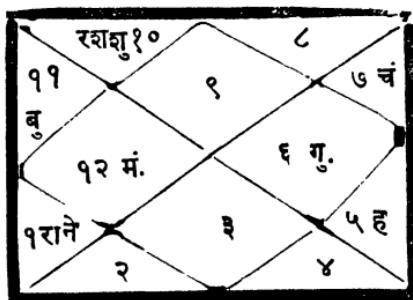
धनु लग्न के व्यक्ति जन्मजात प्रतिभा से सम्पन्न कवि, उपन्यासकार, नाटककार, वकील, ज्योतिषी, योगी आदि होते है। धनस्थान मे शुक्र

तथा साथ मे रवि, शनि है अतः वाणी और लेखन मे सफलता, कविता मे अर्थवाही शब्दरचना हुई। पंचम में मेष का राहु व नेपच्यून तथा इन के सन्मुख लाभ मे चन्द्र इस योग से कल्पनाविलास श्रेष्ठ हुआ। नेपच्यून पर चन्द्र की दृष्टि के बारे मे एलन लिओ लिखते है—चन्द्र की दृष्टि से नेपच्यून जैसे सुदूरवर्ती ग्रह के किरण प्रभावी होते है, इस से भावनाओं व कल्पनाओं को शब्दों मे उतारने की क्षमता, सहानुभूति अधिक होना, स्नेहशील कलात्मक स्वभाव तथा प्रतिभायुक्त कवित्व की प्राप्ति होती है। हमारे मत से राहु पर चन्द्र की दृष्टि के भी ये ही फल है। किन्तु इस पंचमस्थ राहु ने ही कवि गोविन्द को सांसारिक सुख से वंचित किया। कीर्ति बहुत किन्तु धन शून्य मिला।

छठवें स्थान के फल

वैद्यनाथ—राहौ रिपुस्थानगते जितारिश्चिरायुरत्यन्तसुखी कुलीनः। बन्धुप्रियोदारगुणप्रसिद्धः विद्यायशस्वी रिपुगे च केतौ।। यह शत्रु को जीतनेवाला, दीर्घायु, बहुत सुखी, कुलीन होता हैं। इस स्थान मे केतु से बन्धु को प्रिय, उदार, गुणवान, प्रसिद्ध तथा विद्या के कारण यशस्वी होता हैं।

गर्ग—शूरः सुभगः प्राज्ञो नृपतुल्यो जायते मनुजः। रिपुभवनस्थो राहुर्जन्मनि मान्योऽतिविख्यातः॥ यह शूर, सुन्दर, बुद्धिमान, राजा जैसा, सन्मानित, विख्यात होता है। राहुः शत्रुगृहे कुर्याच्छत्रुं संग्राममूर्धनि। हन्ति सर्वाण्यरिष्टानि सर्वग्रहनिरीक्षितः॥ यह राहु युद्ध मे शत्रु का घात करता है। यदि अन्य सब ग्रहों की दृष्टि हो तो सब अरिष्ट दूर करता है। बलिष्ठे च तथा राहौ शनौ केतौ तथैव च। महिषाणां धनं तस्य बहुलं जायते गृहे॥ सैंहिकेयः शनिश्चैव मातुले भवने स्थितौ। प्रजाहीनो मातुलः स्यात् कन्यापत्योऽथवा तदा॥ तस्य वंशोद्भवः कोपि गतो देशान्तरं मृतः। मातष्वसा मृतापत्या रण्डा देशान्तरं गता॥ दानवः अधरदन्तरुजाय शिखी रिपौ॥ इस स्थान में राहु, शनि या केतु बलवान हो

तो घर मे बहुत भैंसे होती है। षष्ठ मे राहु व शनि हो तो मामा को सन्तति नही होती अथवा सिर्फ कन्याएं होती है। मामा के वंश का कोई व्यक्ति विदेश मे मरता है। मौसी की सन्तति की मृत्यु होती है, वह विदेश मे जाती है, विधवा होती है। इस स्थान मे केतु दांत व होठ के रोग उत्पन्न करता है।

गणेश दैवज्ञ—दन्ते दन्तच्छदे वा कुमुदपतिरिपुः संस्थितः षष्ठभावे केतुर्वा। दांत या होठ के रोग होते है।

आर्यग्रन्थ–षष्ठे स्थितः शत्रुविनाशकारी ददाति पुत्रं धनवित्तभोगान्। स्वर्भानुरुच्चैरखिलाननर्थान् हन्त्यन्ययोषिद्गमनं करोति॥ यह शत्रु का नाश करता है। पुत्र, धन देता है। सब संकट नष्ट होते है। यह परस्त्री से सम्बन्ध रखता है। तमः पृष्ठभागे गते षष्ठभावे भवेन्मातुलान्मानभंगो रिपूणाम्। विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं शरीरे सहानामयं व्याधिनाशः॥ इस स्थान में केतु मामा द्वारा शत्रु का मानभंग करता है। चौपाये प्राणी अच्छे मिलते है। नीरोग होता है। विचार तुच्छ होते है।

ढुंढिराज—शत्रुक्षयं द्रव्यसमागमं च पशुप्रपीडां कटिपीडनं च। समागमं म्लेच्छजनैर्महाबलं प्राप्नोति जन्तुर्यदि षष्ठगस्तमः॥ इस के शत्रु नष्ट होते है, धन मिलता है, पशुओं को कष्ट होता है, कमर में रोग होते है, विदेशियों से सम्बन्ध आता है। केतु का फल आर्यग्रन्थ जैसा है, सिर्फ धनलाभ यह अधिक फल कहा है—द्रव्यलाभो नितान्तम्॥

मन्त्रेश्वर—स्यात्क्रूरग्रहपीडितः स गुदरुक् श्रीमांश्चिरायुः क्षते॥ यह क्रूर ग्रह से पीडित हो तो गुदरोगी, श्रीमान व दीर्घायु होता है। औदार्यमुत्तमगुणं दृढतां प्रसिद्धि षष्ठे प्रभुत्वमरिमर्दनमिष्टसिद्धिम्॥ इस स्थान में केतु से उदारता, उत्तमगुण, दृढता, कीर्ति, प्रभुता, शत्रुका नाश व इष्ट की सिद्धि प्राप्त होती है।

बृहद्यवनजातक—बलाद् बुद्धिहानिर्धनं तद्वशे च स्थितो वैरभावेऽपि येषां तनूनाम्। रिपूनामरण्यं दहेदेकराहुः स्थिरं मातुलं मानसं नो पितृभ्यः॥ यह बलहीन, बुद्धिहीन, शत्रुरहित, धनवान होता है। इस के पिता व

मामा का चित्त चंचल होता है। केतु का फल आर्यग्रन्थ जैसा है, सिर्फ आंख मे रोग होना व भाइयों का नाश होना ये फल अधिक कहे है—लोचने रोगयुक्तः भ्रातृनाशकरः ।

नारायणभट्ट—बलं बुद्धिवीर्यं धनं तद्वशेन स्थितो वैरिभावेपि येषां जनानाम् । रिपूनामरण्यं दहेदेव राहुः स्थिरं मानसं तत्तुला नो पृथिव्याम् ।। यह बल, बुद्धि, वीरता, धन से सम्पन्न, शत्रु का नाश करनेवाला, स्थिरचित्त और अनुपम होता है।

पुंजराज—स्वर्भानौ वा सूर्यजे शत्रुसंस्थे तत्कट्यां स्याच्छ्यामलं लांछनं च । शनिस्तमो वाऽरिगृहस्थितश्चेत् स्यादप्रजत्वं खलु मातुलस्य । काष्ठाश्मघातेन चतुष्पदा वा तरुप्रपातेन जलेनमृत्युः ।। षष्ठ में शनि अथवा राहु हो तो कमर में काला दाग होता है। मामा को सन्तति नही होती। लकडी, पत्थर के आघात से, चौपाये पशु द्वारा, पेड पर से गिरने से अथवा पानी में डूबकर मृत्यु होती है।

वसिष्ठ—रिपुभवनगतो शत्रुसन्तापहानिम् । शत्रु का कष्ट दूर करता है।

जागेश्वर—यदा सैंहिकेयोऽरिगेहे नराणाम् तदा मातुलानां तथा पितृभ्रातुः । सुखं किं धनं माहिषं तस्य गेहे तथा वीर्यवान् वीर्यशाली नरःस्यात् ।। यदा केंतवः शत्रुगेहे नराणां तदा शत्रवः संप्रयान्ति विदूरम् । परं मातुलास्तूलवद्भोगताः स्युः पशूनां सुखं संवदेत् साधुभावैः ।। इसे मामा, चाचा का सुख नही मिलता। यह भैंस आदि से समृद्ध तथा पराक्रमी होता है। इस स्थान में केतु हो तो शत्रु दूर जाते है, मामा को सुख कम मिलता है, पशुधन विपुल होता है।

हरिवंश—नृप्रसूतौ तनोत्युग्रतामन्वये वाहनं भूषणं भाग्य मर्थाधिकं । सौख्यमारोगतां शत्रुहानिं तथा शत्रुगेहं, गतो मित्र शत्रुग्रहः ।। यह उग्र कुल में उत्पन्न, वाहन, अलंकार, भाग्य तथा धन से समृद्ध, सुखी, नीरोग, शत्रुरहित होता है।

घोलप—यह बेफिक्र व कलाओं का ज्ञाता होता है। इस स्थान में केतु से राजा द्वारा सन्मानित, सत्संगति मे रहनेवाला, क्वचित राजपद

का अधिकारी, अच्छे कामों में खर्च करनेवाला, धनवान होता हैं। अन्य वर्णन अब तक के वर्णनों जैसा है।

गोपाल रत्नाकर--यह शत्रु का नाश करनेवाला, बहुत धनवान, अतिशय सुखी होता है। इस की स्त्री नष्ट होती है।

लखनऊ के नबाब---म्लेच्छावनीशाद् द्रव्याप्तिर्दिलं च साहुबं नरम्। बदखाने स्थितो रासः करोति रिपुसंक्षयम् ॥ यह विदेशी राजा से धन प्राप्त करता है। उदार, अधिकारी तथा शत्रुका नाश करनेवाला होता है।

पाश्चात्य मत---यह नीचों के व्यवसाय करते है। सेना या जहाजों की नौकरी में खतरा रहता है।

अज्ञात---धारिष्टवान्। अतिसुखी। इन्दुयुते राजस्त्रीभोगी। निर्धनः। चोरः। शुभयुते धनसौख्यम्। नृपप्रसादमारोग्यं धनलाभो रिपुक्षयः। कलत्रपुत्रजं सौख्यं लग्ने षष्ठे विधुन्तुदे ॥ यह धैर्यवान्, बहुतसुखी होता है। इस राहु के साथ चन्द्र हो तो राजस्त्री से सम्बन्ध होता है। शुभग्रह साथ हो तो धन मिलता है। राजा की कृपा, नीरोगता, धन, स्त्रीपुत्रों का सुख तथा शत्रुओं का नाश ये इस राहु के फल है।

श्री. चित्रे---राहुरुदरभागे व्रणम्। पेट मे व्रण होता है। यह धनवान स्थिरचित्त, बुद्धिमान होता है। म्लेच्छों के साथ रहता है। शत्रु नष्ट होते है। इस की कमर मे कष्ट होता है। यह मातापिता का विरोधी होता है। पुत्र नष्ट होते है। पशुओं को कष्ट होता है। यह राहु उच्च या स्वगृह मे हो तो धन नष्ट होता है। यह उदारहृदय होता है। व्यभिचारी, दीर्घायु, सुखी होता है। इस की स्त्री नष्ट होती है।

हमारे अनुभव---इस स्थान मे राहु के जो शुभ फल शास्त्रकारों ने बताये है वे स्त्रीराशि के एवं अशुभ फल पुरुषराशिके है। पुरुषराशि मे यह राहु हो तो क्रिकेट, पोलो, हाकी, कबड्डी, कुश्ती आदि खेलों मे अपघात से कष्ट होता है। बचपन मे नजर लगना, पिशाचपीडा, नख का विष फैलना, तालु सूखना, मस्तिष्क के रोग आदि से कष्ट होता है। क्वचित मिरगी, कोढ, रक्तपित्त का उपद्रव होता है। लग्नस्थ राहु मंगल

से दूषित होने पर भी यही फल मिलते है। पेट मे रोग अथवा हाथ-पांव के सन्धिवात से असमय मे पेन्शन लेना पडता है। स्त्री राशि में यह राहु हो तो खेलो मे विजय मिलता है। अच्छा पहलवान बन सकता है। शरीर नीरोग व चपल होता है। स्त्री अच्छी मिलती है किन्तु पिशाच-पीडित हो कर उसकी मृत्यु होती है। नौकरी मे प्रगति मुश्किल से होती है किन्तु पेन्शन मे आराम रहता है। यह राहु घर में पिशाचबाधा निर्माण करता है। शुभ योग मे हो तो २३ वे वर्ष से जीविका शुरू होती है। ७ वे व १० वे वर्ष बडे संकट आते है। ३० वे वर्ष से भाग्योदय होता है।

सातवें स्थान के फल

वैद्यनाथ---गर्वी जारशिखामणिः फणिपतौ कामस्थिते योगवान्। अनंगभावोपगतें तु केतौ कुदारको वा विकलत्रभोगः॥ निद्री विशीलः परिदीनवाक्यः सदाटनो मूर्खजनाग्रगण्यः॥ यह गर्विष्ठ, बहुत व्यभिचारी, रोगी होता है। इस स्थान मे केतु हो तो स्त्रीसुख नही मिलता अथवा स्त्री बुरी मिलती है। यह शीलहीन, बहुत नींद लेनेवाला, दीन बोलने-वाला, हमेशा प्रवासी तथा बहुत मूर्ख होता है।

आर्यग्रन्थ---जायास्थराहुर्धनहानिजायां ददाति नार्यो विविधांश्च भोगान्। पापानुरक्तां कुटिलां कुशीलां ददाति शेषैर्बहुभिर्युतश्च॥ यह धनहीन होता है। स्त्री तथा विविध भोग मिलते है। यह पापग्रह के साथ हो तो स्त्री पाप मे आसक्त, कुटिल, शीलहीन होती है। शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिन्ता निवृत्तः स्वनाशोऽथवा वारिभीतः। भवेत् कीटगः सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रताच॥ इसस्थान मे केतु से प्रवास मे चिन्ता, धन का नाश, पानी से डर, स्त्री को कष्ट, अति खर्च तथा मन मे व्यग्रता ये फल मिलते है। सिर्फ वृश्चिक राशि मे यह राहु सर्वदा लाभ करता है।

गर्ग---आर्यग्रन्थ के समान वर्णन है। सिर्फ स्त्री कामेच्छारहित होना यह अधिक कहा है---क्लीबा राहौ।

ढुंढिराज—जायाविरोधं खलु वा प्रणाशं प्रचण्डरूपामथ कोपयुक्ताम्। विवादशीलामथ रोगयुक्ताम् प्राप्नोति जन्तुर्भवने तमे च ॥ इस की स्त्री नष्ट होती है। अथवा स्त्री विरोधी, गुस्सैल, उग्र स्वभाव की, झगडालू, रोगी होती है। केतु का फल आर्यग्रन्थ के समान बताया है।

बृहद्यवनजातक—विनाशं चरेत् सप्तमे सैंहिकेयः कलत्रादिनाशं करोत्येव नित्यम्। कटाहो यथा लोहजो वन्हितप्तस्तथा सोऽतिवादान्न शान्ति प्रयाति ॥ यह राहू स्त्री आदि नष्ट करता है। तपी हुई लोहे की कढाही जैसा उग्र स्वभाव होता है अतः वादविवाद मे यह कभी शान्त नही रह सकता। शिखी सप्तमे चाध्वनि क्लेशकारी कलत्रादिवर्गे सदा व्यग्रता च। निवृत्तिश्च सौख्यस्य वै चौरभीतिर्यदा कीटगः सर्वदा लाभकारी ॥ इस स्थान में केतु हों तो प्रवास में कष्ट, स्त्री आदि की चिन्ता, सुख न होना, चोरीका डर ये फल होते हैं। वृश्चिक राशि में यह लाभदायी होता है।

नारायण—काम्ये कलत्रे रिपुलग्नछिद्रे केन्द्रत्रिकोणे व्ययगे च राहुः। मन्त्री च शूरो बलवान प्रतापी गजाश्वनाथो बहुपुत्रयुक्तः ॥ ११।६।७।८।१२ इन स्थानों में केन्द्र में व त्रिकोण में राहू हो तो वह पुरुष शूर, बलवान, प्रतापी, अधिकारी, हाथी घोडे आदि सम्पत्ति का स्वामी व बहुत पुत्रों से युक्त होता है। (इस श्लोक में काम्य शब्द का अर्थ श्री. नवाथे ने नही दिया है। काम्य का अर्थ हम लाभस्थान समझते है क्यों कि जिस उद्देश से यज्ञ दान, तप आदि प्रयास किये जाते है वही काम्य है—यत् किंचित् फलमुद्दिश्य यज्ञदानतपःक्रियाः। क्रियन्ते बहुसायासं तत्काम्यं परिकीर्तितम् ॥)

नारायणभट्ट—विनाशं लभेयुर्द्युने तद्युवत्यो रुजा धातुपाकादिना चन्द्रमर्दी। कटाहम् यथा लोठयेत् जातवेदा वियोगापवादाः शमं न प्रयान्ति ॥ इस की स्त्री का मृत्यु होता है, धातुरोग होते है, प्रिय व्यक्तियों का वियोग होता है तथा लोग निन्दा करते है। केतु का फल ढुंढिराज जैसा कहा है।

मन्त्रेश्वर—स्त्रीसंगादधनो मदेऽथ विधुरोऽवीर्यः स्वतन्त्रोऽल्पधीः। द्यूनेऽवमानमसतीरतिमान्त्ररोगं पापः स्वदारवियुतिं मदधातुहानिम् ॥ वह

स्त्रीसंग के कारण निर्धन होता है। विधुर होता है। वीर्य विकल होता है। स्वतन्त्र, अल्पबुद्धि होता है। इस स्थान में केतु हो तो अपमान, व्यभिचारिणी स्त्री से सम्बन्ध, अंतडियों में रोग, पत्नी का मृत्यु तथा धातुहानि होना ये फल होते है।

श्री चिन्ने—यह राहु स्त्री का नाश करता है, अनेक विवाह होते है। स्त्री को प्रदर होता है। इसे मधुमेह होता है। विधवा से सम्बन्ध रखता है। बन्धुओं से विरोध करता है। क्रोधी, दूसरों का नुकसान करनेवाला, व्यभिचारिणी से सम्बन्ध रखनेवाला, कनिष्ठ, असन्तुष्ट होता है। यह राहु उच्च या स्वगृह में अथवा शुक्र की राशि मे हो तो प्रवास अच्छे हो कर लाभ होता है। यह राहु पापकार्यो से भाग्योदय करता है। जुआ सट्टा, लाटरी, रेस मे प्रवीण होता है। स्त्रीसुख नही मिलता। अनेक विवाह होते है।

जागेश्वर—सुखं नो वधूनां भवेद् देहपीडा परं शत्रवो वृद्धिमन्तो भवेयु:। क्रये विक्रये वा न वार्तापि किं वा यदा सप्तमे स्याद् गृहे राहुखेट:॥ स्त्री सुख नही मिलता, शरीर में कष्ट रहता है, शत्रु बढते है। खरीद–बिक्री मे लाभ नही होता। भवेन्मार्गकष्टं वधूनां विशेषात् तथा देह कष्टं यदा कर्कटे नो। परं मस्तके मध्यभागे स मन्दो यदायं शिखी मत्स्यकेतौ गत: स्यात्॥ इस स्थान मे केतु हो तो प्रवास मे कष्ट, स्त्री को पीडा होती है। कर्क मे केतु हो तो यह दोष नही होता। मस्तक व मध्यभाग मे यह मन्द होता है।

हरिवंश–मानवानां प्रकुर्याद् भयं सर्वतो धर्महानिं दयाहीनतां तीक्ष्णताम्। कायकां कामिनीसौख्यहानिर्भवेत् भामिनीभावगो यामिनीशन्तुद:॥ सब ओर से भय, धर्महीन, निर्दय होना, तीक्ष्णता तथा स्त्रीसुख नष्ट होना ये फल है।

लोलप—दुष्टों के सहवास से यह सज्जनों को कष्ट देता है। स्त्री, पुत्र, धन, मित्र का सुख नही मिलता। स्त्री की मृत्यु होती है। इस की स्त्री अति क्रोधी, रोगी अथवा वादविवाद करनेवाली होती है।

गोपाल रत्नाकर—इस के दो विवाह होते है। पहली स्त्री को ऋतु-सम्बन्धी रोग होते है तथा दूसरी को गुल्मरोग (गांठ होना) होते है। बुरी स्त्रीयों के संपर्क से यह रोगी होता है :

लखनऊके नबाब–हिर्जंगदंश्च वेतालो गुस्वरो बदजनो भवेत्। हुप्तम-खाने यदा रासः कलही मनुजस्तदा ॥ पागल जैसा भटकनेवाला, क्रोधी, झगडालू, बदचलन होता है।

वसिष्ठ—जायास्थे स्त्रीविनाशः। स्त्री का नाश होता है।

पाश्चात्य मत—इस का कद बहुत नाटा होता है।

अज्ञात—दारद्वयं तन्मध्ये प्रथमस्त्रीनाशः द्वितीयकलत्रे गुल्मव्याधिः। पापयुते गण्डोत्पत्तिः। शुभयुते गण्डनिवृत्तिः नियमेन दारद्वयम्। शुभयुते एकमेव। प्रवासात् पीडनं चैव स्त्रीकष्टं पवनोत्थरुक्। कटिबस्तिश्च जानुभ्यां सैंहिकेये च सप्तमे ॥ इस के दो विवाह होते है, पहली स्त्री की मृत्यु होती है, दूसरी को गुल्मरोग होता है। यह राहु पापग्रह के साथ हो तों गण्डरोग होता है। शुभग्रह के साथ हो तो विवाह एक ही होता है। प्रवास मे कष्ट, स्त्री को कष्ट, कमर, वस्ति, घुटनों मे वातरोग ये इस राहु के फल है।

हमारा अनुभव—इस स्थान में राहु के फल सभी लेखकों ने अशुभ बतलाये है। ये मुख्यतः पुरुष राशियों के है। पुरुष राशि मे यह राहु पूर्व-जन्म के शाप के समान होता है। यह स्त्री को बहुत कष्ट देता है। घर में सतत असन्तोष बना रहता है। व्यवसाय, नौकरी में हानि हो कर धन की कमी रहती है। स्थिति हमेशा अस्थिर रहती है। पहली पत्नी का अपघात मे मृत्यु होता है। दूसरी पत्नी से भी ठीक सम्बन्ध नही रहते। मिथुन, कन्या, तुला, धनु में विवाह ही न होने का अनुभव है। अन्य राशियों में विवाह तो होते है किन्तु मनःपूर्वक प्रेम कभी नही होता, अकारण विभक्त होते है। केवल शारीरिक सम्बन्ध ही इन के विवाह का उद्देश होता है। दूसरी कुलीन स्त्रियों को व्यभिचारमार्ग पर ले आते है। विधवा स्त्रियों से सम्बन्ध रख कर अवसर पर गर्भपात, बालहत्या करवाते

है । इन्हें अपनी स्त्री से सुख नही मिलता अतः अन्य स्त्रियों पर पैसा खर्च करते है । व्यवसाय ठीक नही होता, नौकरी मे आक्षेप आते है । सस्पेण्ड होना, डिग्रेड होना आदि प्रकारों से कष्ट होता है । ये दूसरों के घर रहते है । इन की स्त्री सुस्वभावी, शीलवान होती है । सन्तति अति अल्प होती है । यह राहु स्त्रीराशि में हो तो विवाह जल्दी होता है, स्त्री सुस्वभावी होती है व दोनों में अच्छा प्रेम रहता है । नौकरी अच्छी चलती है किन्तु ये स्वतन्त्र व्यवसाय के लिए बहुत कोशिश करते है । यदि अन्य ग्रहों से शुभ सम्बन्ध हो तो व्यवसायमें यशस्वी होते है । दो विवाह होते है । यह राहु कुम्भ मे हो तो विवाह एक ही होता है । सन्तति अधिक होती है सन्मानित होतें है । स्त्रीधन मिलता है । स्वभाव साधारणतः अच्छा होता है । इन्हें बीमा कंपनी, नगरपालिका, जिलापरिषद, रेलवे आदि की नौकरी में सफलता मिलती है क्यों कि ये विषय राहु के कारकत्व के है । इस स्थान में राहु के फलस्वरूप विवाह में अनियमितता प्रायः पाई जाती है । विवाह बहुत देर से होना, आन्तरजातीय विवाह होना, विधवा से विवाह, उम्र से बडी स्त्री से विवाह, अवैध स्त्रीसम्बन्ध, विवाह न होना आदि फल देखे जाते है । पूर्वजन्म मे किसी स्त्री को कष्ट देने से ये बाते शाप-स्वरूप भोगनी पडती है । विवाह होने पर प्रेम न होना, विवाहविच्छेद होना, अधिक विवाह करने पर भी स्त्री अच्छी न मिलना ये इसी के फल है ।

राहु से मृत्युविषयक फलों का वर्णन कुछ आचार्यो ने किया है । उदाहरणार्थ—सप्तमे नवमे राहुः शत्रुक्षेत्रो यदा भवेत् प्राप्ते च षोडशे वर्षे तस्य मृत्युर्न संशयः ।। नवमे दशमे राहुर्जन्मकाले यदा स्थितः । षोडशाब्दे भवेन्मृत्युर्यदि शक्रोऽपि रक्षति ।। सप्तम या नवम में शत्रुग्रह की राशि में राहु हो तो १६ वे वर्ष में मृत्यु होता है । नवम या दशम मे राहु हो तो १६ वे वर्ष मृत्यु होता है—उसे इन्द्र भी टाल नही सकता । किन्तु सप्तम, नवम, दशम ये तीनों स्थान मृत्युकारक नही है तथा राहु ग्रह भी मृत्युकारक नही है अतः यह योगफल ठीक प्रतीत नही होता । अन्य स्थानों में भी राहु स्वयं उस व्यक्ति के लिए मारक नही होता—उस स्थान से सम्बन्धित व्यक्ति के लिये मारक होता है । लग्न मे—माता,

पिता को, धनस्थान में घर के किसी बडे व्यक्ति को, तृतीय मे भाई-बहिनों को, चतुर्थ मे माता पिताको, पंचम मे पुत्रको, अष्टम मे बहिन को; नवम मे भाईबहनों को, दशम मे माता-पिता को, लाभ मे बडे भाई या पुत्र को तथा व्यय मे पत्नी या चाचा को यह राहु मारक हो सकता है।

आठवे स्थान के फल

वैद्यनाथ—राहौ क्लेशापवादी परिभवगृहगे दीर्घसूत्री च रोगी। केतौ यदा रन्ध्रगृहोपयाते जातः परद्रव्यवधूरतेच्छुः। रोगी दुराचाररतोऽतिलुब्धः सौम्येक्षितेऽतीव धनी चिरायुः॥ यह क्लेशयुक्त, निन्दित, दीर्घसूत्री, रोगी होता है। केतु हो तों दूसरे के धन तथा परस्त्री में आसक्त, रोगी, दुराचारी, अतिलोभी होता है। सौम्य ग्रह की दृष्टि हो तो दीर्घायु व धनी होता है।

गर्ग—दुष्टचौर्यापवादेन निधनं कुरुते तमः। बहुकिल्मिषमाधत्ते धत्ते कष्टात् स यातनाम्॥ दुष्ट, चोरी के अपवाद से मृत्यु होता है। बहुत पाप और कष्ट, यातना होती है।

बृहद्यवनजातक—नृपैः पण्डितैर्वन्दितोऽनिन्दितश्च सकृद्भाग्यलाभः सकृद्भ्रंश एव। धनं जातकं तज्जनाश्च त्यजन्ति श्रमग्रन्थिरुग् रन्ध्रगश्चेद् हि राहुः॥ गुदं पीडयते वा जनैर्द्रव्यरोधो यदा कीटके कन्यके युग्मके वा॥ भवेच्चाष्टमे राहुछायात्मजेऽपि वृषं चाभियातें सुतार्थस्य लाभः॥ यह राजा व पण्डितों द्वारा प्रशंसित होता है। कभी भाग्योदय तो कभीं हानि होती है। पूर्वार्जित धन नष्ट होता है। पहले के सम्बन्धी भी इसे छोड देते है। श्रम से या ग्रन्थिरोग से पीडा होती है। इस स्थान मे केतु हो तों गुदरोग होता है। यह वृश्चिक, कन्या या मिथुन मे हो तो धनलाभ रुकता है, वृषभ मे हो तो पुत्र व धन प्राप्त होते है।

ढुंढिराज—अनिष्टनाशं खलु गुह्यपीडां प्रमेहरोगं वृषणस्य वृद्धिम्। प्राप्नोति जन्तुर्विकलारिलाभं सिंहीसुते वा खलु मृत्युगेहे॥ गुदे पीडनं बाहुनैर्द्रव्यलाभो यदा कीटगे कन्यके युग्मगें वा। भवेत् छिद्रगे राहुछाया

यदा स्याद्जे मोऽलिमे जायते चातिलाभः ।। अनिष्ट दूर होते है । इसे गुह्य रोग, प्रमेह, अण्डवृद्धि से कष्ट होता है । शरीर दुर्बल होता है । इस स्थान मे केतु हो तो गुदरोग होता है । कर्क, कन्या या मिथुन मे यह केतु हो तो वाहनों से धन मिलता है । मेष, वृषभ या वृश्चिक में हो तो अति लाभ होता है ।

आर्यग्रन्थ--राहुः सदा चाष्टममन्दिरस्थो रोगान्वितं पापरतं प्रगल्भं । चौरं कृशं कापुरुषं धनाढ्यं मायामतीतं पुरुष करोति । गुदं पीडयतेंशादि रोगैरवश्यं भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः । भवेदष्ट मे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीटकन्या, जगोयुग्मकेतुः ।। यह सदा रोगी, पापी, ढीठ, चोर, दुबला, डरपोक, धनी, मायारहित होता है । इस स्थान मे केतु हो तो बवासीर आदि से गुद मे कष्ट होता है, वाहन से भय होता है, अपने ही धन की प्राप्ति मे बाधा आती है । मिथुन, मेष, वृश्चिक, वृषभ, कन्या मे हो तो धन लाभ होता है ।

नारायणभट्ट--इस ने राहु का फल बृहद्यवनजातक जैसा व केतु का फल आर्यग्रन्थ जैसा दिया है ।

मन्त्रेश्वर--रन्ध्रेल्पायुरशुद्धिकृच्च विकलो वातामयोऽल्पात्मजः । यह अल्पायु, अपवित्र काम करनेवाला, वातरोगी, विकल होता है । इसे पुत्र कम होते है । स्वल्पायुरिष्टविरहं कलहं च रन्ध्रे शस्त्रक्षतं सकलकार्य-विरोधमेव ।। यह अल्पायु होता है । इष्ट लोगों से वियोग, झगडे, शस्त्र से जखम होना और सब कामों मे विरोध ये इस स्थान मे केतु के फल है ।

जागेश्वर--यदा श्रेष्ठकर्मामयैर्दूरत्यक्तो भवेद्गोधनं वार्धके वै सुभाग्यम् । कदाचित् गुदे क्रूररोगा भवेयुः स्थितो राहुनामा नराणां विनाशे ।। यह श्रेष्ठ काम करनेवाला, नीरोग, गाय आदि पशुओं से समृद्ध, वृद्ध वय मे सुखी होता है । कदाचित इसे गुप्त रोग होते हैं । यदा गुह्यदेशे कुतन्तुः कुधातुस्तथा वक्ररोगी तथा दन्तघाती । परं स प्रतापी यतेत् सर्वकालं यदा केतुनामा गृहे मृत्युसंज्ञे ।। केतु इस स्थान मे हो तो गुह्यरोग, वीर्य के दोष, मुखरोग व दन्तरोग हंहोते । किन्तु यह परामीक्र व सतत गीउद्यो होता हैं ।

हरिवंश—नैधने सिंहिकाजे नरो निर्धनो भीरुरालस्यधीरोऽतिधूर्तो भवेत्। दुर्बलो देहवानश्च दुःखान्वितो निर्दयो दद्रुयुक्तो दरिद्रोदयः ॥ यह धनहीन, डरपोक, आलसी, उतावला, बहुत धूर्त, दुबला, दुखी, निर्दय, भाग्यहीन, खुजली से पीडित होता है।

वसिष्ठ—निधनगते स्वेच्छया भूपपूज्यः। राजा द्वारा सन्मानित होता है।

घोलप—स्त्री-पुत्र सुख नही मिलता। मानहीन, विद्याहीन, गुदरोग, प्रमेह, अन्तर्गल व शत्रु से पीडित होता है। यह राहु मिथुन मे हो तो विशेष फल देता है—वह महापराक्रमी व कीर्तिमान होता है।

गोपाल रत्नाकर–यह झगडालू होता है। ३२ वे वर्ष मे संकट आता है। शुभग्रह के साथ हो तो ५० वे वर्ष में संकट आता है।

लखनऊ के नबाब—हुस्तमखाने यदा रासः शरीरी स्यान्मुसाफिरः। बेदीनः खिश्मनाकः स्यादबकारश्च मुफ्लिसः ॥ यह पुष्ट शरीर का, प्रवासी, धर्महीन, क्रोधी, दुराचारी व दरिद्री होता है।

पाश्चात्य मत—इस राहु से स्त्रीधन, किसी सम्बन्धी के वसीयत का धन प्राप्त होता है। किन्तु इस धन की प्राप्ति में कुछ उलझने भी होती है। फायदा तात्कालिक होता है। यह स्थान वैसे गोण और दुर्बल है। किन्तु यहां उच्चमें राहु हो तो विशेष फल दे सकता है।

अज्ञात—अतिरोगी। द्वात्रिंशद्वर्षायुष्मान्। शुभयुते पंचचत्वारिंशद्वर्षाणि। भावाधिपे बलयुते स्वोच्चे षष्ठिवर्षाणि जीवितम्। धनव्ययस्त्वनारोग्यं विवादो बन्धुभिः सह। स्त्रीकष्टं च प्रवासश्च राहुरष्टमगो यदि ॥ यह बहुत रोगी हो कर ३२ वे वर्ष में मरता है। शुभग्रह साथ हो तो ४५ वे वर्ष तक जीवन होता है। अष्टमेश बलवान हो या उच्च में हो तो ६० वर्ष तक जीवन होता है। यह खर्चीला, रोगी, भाइयों से झगडनेवाला, प्रवासी, स्त्रीसुख से रहित होता है।

चित्रे—यह ३२ वे वर्ष में शारीरिक कष्ट से पीडित होता है। धनवान, विद्वान, राजा द्वारा पूजित होता है। यह राहु उच्च या स्वगृह में हो तो पराक्रमी, कीर्तिमान होता है। यह रोगी, अभिमानी होता है।

हमारा अनुभव—यह स्थान दुर्बल है अतः सब लेखकोंने प्रायः अशुभ फल दिये है। किन्तु हमारे विचार से शुभ फलों का भी अनुभव मिलता है। यह राहु पुरुष राशि मे हो तो स्त्री झगडालू होती है, घर की बाते बाहर बतलाती है, अभागी होती है। इस से ४२ वे वर्ष तक स्थिरता नही मिल सकती। अकस्मात धन प्राप्त करने की इच्छा से रेस, सट्टा, लॉटरी, जुआ आदि में मग्न होते है। इसे धनप्राप्ति ठीक नही होती, रिश्वत ले तो पकडा जाता है। पत्नी के पहले मृत्यु होता है। मृत्यु के समय भ्रम, फिट, मज्जाविकार हो कर बेहोशी मे मृत्यु होता है। मिथुन मे यह राहु हो तो स्त्री झगडालू होती है। विवाह से भाग्योदय बन्द होता है। स्वतन्त्र व्यवसाय छोडकर नौकरी करनी पडती है। स्त्री निर्धन घर की होती है। शीलवान होती है। स्त्रीराशि में यह राहु स्त्री अच्छी देता है। स्वभावसे शान्त, संकट मे धीरज रखनेवाली, धनसंचय करनेवाली, कम बोलनेवाली, घर की बाते बाहर न बतलानेवाली होती है। पति के पहले पत्नी की मृत्यु होती है। मृत्यु के समय सावधान स्थिति रहती है। कुछ समय पहले मृत्यु का आभास मिल जाता है। ये अधिकारी हो कर रिश्वत ले तो पकडे नही जाते। २६ से ३६ वें वर्ष तक भाग्योदय होता है। साधारणतः आयु के पूर्वार्ध में यह राहु कष्ट देता है। दूषित हो तो वृद्ध अवस्था में भी कष्ट होता हैं। ८ वें वर्ष मे संकट, ३० वें वर्ष मे बन्धनयोग, ३२ वें वर्ष मे स्त्री को कष्ट अथवा मृत्यु एवं ४२ वें वर्ष मे लाभ का योग होता है।

नौवें स्थान के फल

वैद्यनाथ--भाग्यस्थे दितिजे तु धर्मजनकद्वेषी यशोवित्तवान् ।। केतौ गुरुस्थानगते तु कोपी वाग्मीं विधर्मा परनिन्दकः स्यात् । शूरः पितृद्वेषकरोऽतिदम्भाचारी निरुत्साहरतोऽभिमानी ।। यह अपने धर्म व पिता का द्वेष करनेवाला, कीर्तिमान व धनी होता है। इस स्थान में केतु हो तो क्रोधी, वक्ता, धर्मपरिवर्तन करनेवाला, दूसरों की निन्दा करनेवाला, शूर, पिता का द्वेष करनेवाला, बहुत ढोंगी, निरुत्साही, अभिमानी होता है।

गर्ग—नीचधर्मानुरक्तः स्यात् सत्यशौचविवर्जितः । भाग्यहीनश्च मन्दश्च धर्मगेसिंहिकासुते ।। नवमस्थानगः केतुर्बाल्ये पितृकष्टकृत् । भाग्यहीनो विधर्मश्च म्लेच्छाद् भाग्योदयो भवेत् ।। यह नीचों के धर्म में आसक्त, सत्यहीन, अपवित्र, अभागा व मन्द होता है । यहां केतु हो तो बचपन में पिता को कष्ट, भाग्योदय न होना, धर्मान्तर करना, विदेशियों से लाभ होना ये फल मिलते है ।

वसिष्ठ—धर्मस्थेधर्मनाशम् ।। धर्म नष्ट होता है ।

बृहद्यवनजातक—तमोऽङ्गीकृतं न त्यजेद् वा व्रतानि त्यजेत् सोदरान् नैव चातिप्रियत्वात् । रतिःकौतुके यस्य तस्यास्ति भोग्यं शयानं सुखं बन्दिनो बोधयन्ति ।। यह लिये हुए काम को अधूरा नही छोडता । बन्धुओं पर स्नेह होने से उन्हें अलग नही करता । कामक्रीडा में उत्साही, सेवकों से सम्पन्न होता है (सुबह नौकर सुखपूर्वक उसे जगाते है ।)

यदा धर्मगः केतवो धर्मनाशं सुतीर्थेऽमतिं म्लेच्छतो लाभवृद्धिम् । शरीरे व्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो ह्रासवृद्धि करोति ।। इस स्थान में केतु हो तो धर्म नष्ट होता है, तीर्थयात्रा की इच्छा नही होती, विधर्मी से लाभ होता है । शरीर में रोग, बाहु मे रोग होते हैं । तप, दान से हानि, वृद्धि होती है ।

ढुंढिराज—धर्मार्थनाशः किल धर्मगे तमे सुखाल्पता वै भ्रमणं नरस्य । दरिद्रता बन्धुसुखाल्पता च भवेच्च लोके किल देहपीडा ।। धर्म व धन का नाश होता है । सुख कम मिलता हैं, बन्धु कम होते है, शरीर में पीडा होती है, दरिद्रता होती है । केतु के फल यवनजातक जैसे दिये हैं ।

आर्यग्रन्थ—धर्मस्थिते चन्द्ररिपौ मनुष्यश्चण्डालकर्मा पिशुनः कुचैलः । ज्ञातिप्रमोदेऽनिरतश्च दीनः शत्रोः कुलाद् भीतिमुपैति नित्यम् ।। यह चण्डाल जैसे काम करनेवाला, दुष्ट, गन्दे वस्त्र पहननेवाला, दीन, शत्रु से डरा हुआ, जाति के आनन्द में उत्साह न रखनेवाला होता है । शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन् म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः । सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिः तदानीम् ।। इस स्थान में केतु हो

तो क्लेश दूर होते है । पुत्र की इच्छा रहती है, विदेशियों से लाभ होता है, भाई को कष्ट होता है । बाहु मे रोग होता है । यह तप या दान करे तो लोगो मे हंसी होती है ।

नारायणभट्ट—मनीषी कृतं न त्यजेद् बन्धुवर्गं तदा पालयेत् पूजितः स्यात् गुणैः स्वैः । सभाद्योतको यस्य चेत् त्रित्रिकोणे तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ॥ यह अपने काम को तथा अपने लोगों को नही छोडता । गुणों के कारण सन्मानित होता है । सभा मे विजयी, देव व तीर्थ के विषय मे उत्साही तथा दयालु होता है ।

जागेश्वर–यदा धर्मभा भवेद् राहुनामा भवेद् धर्महीनस्तथा पापकारी । स्वयं दुष्टसंगं करोत्येव नूनं परं विक्रमात् पाद देशे सघातः ॥ भवेद् विक्रमी शस्त्रपाणिश्च मित्रधनैर्धर्मशीलैः सदा वर्जितः स्यात् । तथा भ्रातृ-पुत्रादिचिन्तायुतः स्यात् यदा पातछाया गता पुण्यभावे ॥ यह धर्महीन, पापी, दुष्टों की संगति मे रहनेवाला होता है । युद्ध मे इस का पैर जखमी होता है । इस स्थान मे केतु हो तो पराक्रमी, सदा शस्त्र धारण करनेवाला होता है । मित्र, धन, धर्म व शील से रहित और बन्धु तथा पुत्र के विषय मे चिन्तित होता है ।

चित्रे—सेवक बहुत होते है । धनी, सुखी, दैववान होता है । धर्म पर श्रद्धा कम होती है । शरीर कष्टी रहता है । सभा मे विजयी होता है । स्त्री की इच्छा पालन करता है । बन्धुओं से स्नेह करता है । यह सन्ततिहीन, जाति का अभिमानी, झूठ बोलनेवाला, धर्म की निन्दा करनेवाला, कर्तव्यरहित होता है । यह राहु वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या व मेष मे हो तो उत्तम यश देता है । राहु दूषित हो तो अनिष्ट फल देता है । यह बहुत प्रवास करता है ।

मन्त्रेश्वर—धर्मस्थे प्रतिकूलवाग् गणपुरग्रामाधिपोऽपुण्यवान् ॥ पाप-प्रवृत्तिमशुभं पितृभाग्यहीनं दारिद्रयमार्यजनदूषणमाह धर्मे ॥ यह प्रतिकूल बोलनेवाला, लोगों का, गांव या नगर का प्रमुख व पापी होता है । केतु हो तो पापी, पिता के सुख से रहित, दरिद्री व अच्छे लोगों द्वारा निन्दित होता है ।

हरिवंश—धर्महीनः कर्महीनो निर्धनोऽतिधूर्तो धूर्तप्रियः सर्वं सौख्येन हीनो भवेत् संभवे हीनभाग्यो नरो भाग्यगे भास्वरौ ॥ यह धर्महीन, कर्महीन, निर्धन, बहुत धूर्त, धूर्तों को प्रिय, सभी सुखों से रहित, अभागी होता है।

घोलप—यह धर्महीन, प्रवासी, दरिद्री, कम सुख से युक्त, शरीरकष्ट से पीडित होता है। बन्धु का सुख कम होता है। यह राहु २।३।४।१।६ इन राशियों मे सदा अच्छा फल देता है।

गोपाल रत्नाकर—यह स्त्री के वश होता है। धर्महीन, नौकरी करनेवाला, शूद्र सम्प्रदाय का, पुत्रहीन होता है।

पाश्चात्य मत—यह धन की इच्छा से विदेश से व्यापार करे तो नुकसान होता है। विदेशी बैंकों मे धन डूबता है। स्वदेशी उद्योग मे लाभ होता है। इस स्थान मे केतु हो तो लोकमत के प्रतिकूल बोलते है। प्राचीन मत का प्रतिपादन करे तो ये जलदीं प्रगति कर सकते है। ९।१०। ११ स्थानों मे केतु लोगों मे अप्रीति निर्माण करता है। सुधारवादी विचार, उन्नत आत्मशक्ति, जगत के कल्याण के प्रयत्न ये इस केतु के लक्षण है। किन्तु इस सब के फलस्वरूप इन्हें लोकनिन्दा व कष्ट ही प्राप्त होता है। कारण यह है कि इस स्थिति मे राहु अनुदित भाग मे होता है।

लखनऊ के नबाब—वख्तखाने यदा रासः प्रभवेन् मनुजस्तदा। जवाहिर्जर्कशीयुक्तः साहबः सौख्यवान् सरः ॥ यह अधिकारी, अच्छे वस्त्र-भूषणों से सम्पन्न, श्रीमान, सुखी होता है।

हमारा अनुभव—यहां राहु के अशुभ फल पुरुष राशि के व शुभ फल स्त्री राशि के है। पुरुष राशि मे—यह पिता का इकलौता पुत्र होता है अथवा सब से बडा या छोटा होता है। इस से बडी या छोटी बहिने होती है। बहिने न हो तो भाई को मारक होता है। भाई का संसार ठीक नही होता—बहिनों की हालत ठीक रहती है। नास्तिक वृत्ति होती है। स्त्री सम्बन्ध मे जाति या वर्ण का ख्याल नही रखते। विजातीय विवाह करते है। उम्र में बडी स्त्री अथवा विधवा से विवाह होता है। इनका

प्रेम अस्थिर होता है। ये फल मिथुन, तुला, कुम्भ के है। मेष, सिंह, धनु में स्थिरता रहती है, स्त्री के साथ आदरपूर्वक रहते है। मिथुन, तुला, कुम्भ मे स्त्री पर स्वामित्वकी भावना, पौरुष के अधिकार की वृत्ति होती हैं। पुत्रसन्तति नही होती या होकर मृत होती है। सन्तति के लिए दूसरा विवाह करते है। क्वचित विदेश में प्रवास तथा विदेशी स्त्री से विवाह का योग होता है। ३३ वे वर्ष से भाग्योदय होता है। ५ वे वर्ष मे भाई की मृत्यु होती है। स्त्रीराशि मे हो तो सन्तति होकर कुछ की मृत्यु होती है। पहले कन्याएं व वृद्ध वय मे पुत्र होता है। बन्धु रहते है। यह भी पिता का इकलौता या सब से बडा, या छोटा पुत्र होता है। यह बहनों के लिए मारक होता है। भाइयों के निर्वाह की जिम्मेदारी उठानी पडती है। ये लोग शिक्षक, समाज के उपयुक्त ज्ञान देनेवाले, विद्वान, संशोधक, शीलवान होते है। इन्हें विचित्र स्वप्न विशेषतः पक्षी के समान उडने के स्वप्न आते है। स्त्रीराशि मे राहु हनूमान की उपासना करता है। यह राहु भाइयों की एकत्र प्रगति मे बाधक है। बंटवारा होने पर दोनों की प्रगति होती है। १६ वे वर्ष से भाग्योदय, ९ वे वर्ष में बन्धु को कष्ट, बहन का मृत्यु, २२ वे वर्ष मे बडे भाई का मृत्यु ये योग होते है।

दसवें स्थान के फल

वैद्यनाथ—चौरक्रियानिपुणबुद्धिरतो विशीलो मानं गते फणिपतौ तु रणोत्सुकः स्यात् ॥ सुधी बली शिल्पविदात्मबोधी जनानुरागी च विरोधवृत्तिः। कफात्मकः शूरजनाग्रणीः स्यात् सदाटनः कर्मगते च केतौ ॥ यह चोरी मे निपुण, शीलरहित, झगडालू होता है। केतु हो तो बुद्धिमान, बलवान, शिल्पकार, आत्मज्ञानी, मिलनसार, विरोधी वृत्तिका, कफ प्रकृति, शूरों मे मुख्य, प्रवासी होता है।

गर्ग—भवेद् वृन्दपुरग्रामपतिर्वा दण्डनायकः। कर्मस्थिते तमे प्राज्ञः शूरो मन्त्री धनान्वितः ॥ गुदामयः श्लेष्मवृत्तिः म्लेच्छकर्मा च मानवः। परदाररतो नित्यं केतौ दशमगे गृहे ॥ यह लोकसमूह, गांव या नगर का

अधिकारी, मन्त्री या सेनापति, शूर व बुद्धिमान होता है। केतु हों तो गुदरोगी, कफप्रकृति, विदेशीय काम करनेवाला, परस्त्री मे आसक्त होता है।

बृहद्यवनजातक—धनाद् न्यूनता न्यूनता च प्रतापे जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नातिशेते। सुहृद्दुःखदग्धो जलाच्छीतलत्वं पुनः खे तमो यस्य स क्रूरकर्मा ॥ पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगो मातृनाशं करोति। तथा वाहनैः पीडितोरुर्भवेत् स यदा वैणिकः कन्यकास्थोऽसितेष्टः ॥ यह धन व पराक्रम से हीन, लोगों द्वारा पीडित, सुख की नींद से रहित, मित्रों के दुख से कष्टी, क्रूर काम करनेवाला होता है। केतु हो तो पिता-माता का सुख नही मिलता, कुरूप होता है। कन्या मे हो तो वाहन से जांघ से पीडा होती है, वीणावादन करता है। काले पदार्थोंकी रुचि होती है।

वसिष्ठ—दशमभवनगे पापबुद्धि ददाति। पापी विचार होते है।

नारायणभट्ट—सदा म्लेच्छसंसर्गतोऽतीनगर्वः लभेत् मानिनीकामिनीभोगमुच्चैः। जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नाधिशेते मदार्थव्ययी क्रूरकर्मा खगेऽही ॥ विदेशियों के सम्बन्ध से गर्विष्ठ होता हैं। अभिमानी स्त्रियों का भोग करता है। लोगों से कष्ट होता है। सुख से बैठ नही सकता। नशाबाजी मे धन खर्च करता है। क्रूर काम करता है। केतु का फल यवनजातक जैसा है, सिर्फ वृषभ, मेष, वृश्चिक, कन्या, मे हो तो शत्रु का नाश होता है इतना अधिक कहा है—वृषाजालिकन्यासु चेत् शत्रुनाशम् ॥

आर्यग्रन्थ—कामातुरः कर्मगते च राहौ पदार्थलोभी मुखरश्च दीनः। म्लानो विरक्तः सुखवर्जितश्च विहारशीलश्चपलोऽतिदुष्टः ॥ यह कामुक, दूसरे का धन चाहनेवाला, वाचाल, दीन, निरुत्साही, विरक्त, सुखरहित, प्रवासी, चपल, अति दुष्ट होता है। केतु का फल नारायणभट्ट जैसा बतलाया है।

ढुंढिराज—पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य राहुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति। रुजो वाहने वातपीडां च सन्तोर्यदा सौख्यगो मीनगः कष्टभाजम् ॥ पिता का सुख नही मिलता, शत्रु नष्ट होते हैं। वाहनों से कष्ट, वातरोग होते है। दुर्भागी होता है। यह राहु वृषभ मे सुखदायक व मीन मे कष्टदायक होता है। केतु का फल नारायणभट्ट जैसा है।

मन्त्रेश्वर--श्यात: खेऽल्पसुतोऽन्यकार्यनिरत: सत्कर्महीनोऽ भय: ॥ सत्कर्मविघ्नमशुचित्वमवद्यकृत्यं तेजस्विनो नभसि शौर्यमतिप्रसिद्धम् ॥ यह दूसरों का काम करनेवाला, अच्छे काम न करनेवाला, निडर, कम पुत्रों से युक्त होता है। केतु हो तो अच्छे काम मे विघ्न करता है, पापकृत्य करता है, अपवित्र होता है। तेजस्वी, प्रसिद्ध शूर होता है।

जागेश्वर--भवेद् गर्वभंगो गरिष्ठो विशेषात् तथा मातृकष्टं कुले चातपात:। पितुर्वाथवा भ्रातृदु:खकर: स्याद् यदा पातनामा भवेत् कर्मगोऽयम् ॥ कथं वै सुखं पैतृकं वै जनानां तथा कर्मलाभ: कथं हृत्सुखं स्यात्। परं पाददेशे भवेत् चोरपीडा यदा केतुनामा गत: कर्मभावे ॥ इस का गर्व दूर होता है। माता को कष्ट तथा कुल मे अपघात से मृत्यु होता है। पिता या भ्राता को दु:ख होता है। यह बडा व्यक्ति होता है। यहां केतु हो तो पिता का सुख नही मिलता। काम से कुछ लाभ नही होता, मन मे सुख नही होता। पांव मे रोग तथा चोरों से कष्ट होता है।

हरिवंश--युग्मसंस्थोऽथवा कन्यकासंस्थित: कर्मभावे यदा सैंहिकेयो भवेत्। राजमान्यो प्रकुर्यात् स तापाधिकं शेषसंस्थो नरं वैपरीत्यं सदा ॥ यह मिथुन या कन्या मे हो तो राजमान्य होता है, अधिक कष्ट देता है। अन्य राशियों मे सदा विरुद्ध फल मिलते है।

घोलप--राजा का द्वेष करने से दरिद्री होता है। पापी, झगडालू, दुर्भागी, पिता के सुख से रहित, शत्रु का नाश करनेवाला, वातरोगी, घर-बार से रहित होता है। यह शूर हुआ तो बहुत लडाइयां लडता है, इच्छाएं पूरी नही होती। यहां राहु मीन मे हो तो घर आदि का सुख प्राप्त होता है।

गोपाल रत्नाकर--यह काव्य, नाटक, साहित्यशास्त्र की रुचि रखनेवाला, श्रीमान, विद्वान, प्रवासी, वातरोगी होता है। विधवा स्त्री से सम्बन्ध रखता है। अच्छे कामों मे विघ्न करता है।

लखनऊ के नबाब--रासो बादशाहखाने भवेज्जोरावरो गनी। विपक्षपक्षरहितो मुईश: पूर्वरुद्दत: ॥ यह बलवान, मित्रों से युक्त, शत्रुरहित, श्रेष्ठ व्यक्ति होता है। इसे चिन्ता बहुत रहती है।

श्री. चित्रे—यह बलवान लोगों का साहाय्य प्राप्त करता है। पिता का सुख नही मिलता, वातरोग होते हैं। चतुर किन्तु चिन्तित होता है। यह राहु मीन मे हो तो प्राप्त स्थावर सम्पत्ति का उपभोग कर सकता है। अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। खर्चीला, राजवैभव से युक्त, शत्रु का नाश करनेवाला, अस्थिरचित्त का होता है। इसे कविता, नाटक आदि मे रुचि रहती है। युद्ध प्रिय होता है। यह प्रवासी, व्यापार मे निपुण होता है। यह राहु उच्च हो तो राजा का पद प्राप्त होता है।

वेंकटेशशर्मा—राहौ च माने भागीरथीस्नानमुशन्ति तज्ज्ञाः विवर्जितः स्यात् शिखिराहुपापैर्यज्ञस्य कर्ता स भवेत् तदानीम् ॥ यहां राहु हो तो गंगास्नान का लाभ मिलता है। यदि यहां राहु या केतु पापग्रह के साथ न हो तो वह यज्ञ करता है।

पाश्चात्य मत—यह राहु बहुत उत्तम फल देता है। पूरे जीवन मे सफलता, सन्मान, कीर्ति व अमर्याद श्रेष्ठता मिलती है। उदाहरण के रूप मे महात्मा गांधी की कुण्डली दी है।

अज्ञात—वितन्तुसंगमः दुर्ग्रामवासः शुभयुते न दोषः। काव्यव्यसनः। दासीसम्प्रदायी ॥ भूमिनाशो भयाश्रित्य देहपीडा धनक्षयः। इष्टस्वजन-विद्वेषं राहौ वै दशमे स्थिते ॥ यह विधवा से सम्बन्ध रखता है। बुरे गांव मे रहता है। राहु के साथ शुभ ग्रह हो तो ये दोष नही होते। काव्य की रुचि रहती है। दासियां रखता है। भूमि का नाश, डर, शरीर को कष्ट, धन की हानि, अपने लोगों से द्वेष ये इस राहु के फल होते है।

हमारे विचार—इस स्थान में गर्ग, हरिवंश तथा पाश्चात्य मत मे शुभ फल बताये हैं। अन्य लेखक अशुभ फल बतलाते है। शुभ फल स्त्री राशि के व अशुभ फल पुरुष राशि के है। दशमस्थान का पुत्र से सम्बन्ध नही किन्तु इस स्थान मे दूषित रवि, मंगल, गुरु, शनि, या राहु हो तो माता, पिता भाई व पुत्र के सम्बन्ध मे शोक होता हैं। यह स्थान पिता का कारक है, मातृस्थान (चतुर्थ) से सप्तम एवं बन्धुस्थान (तृतीय) से अष्टम स्थान होता है। अतः इस स्थान मे अशुभ योग से माता, पिता व बन्धु के सुख की हानि की उपपत्ति मिलती है। पुत्र के सुख की हानि का कारण

शायद यह है कि यह स्थान लाभस्थान से बारहवां (वंश व व्यय) एवं भाग्यस्थान से दूसरा (धन व मारक) स्थान होता है। अतः अपने वंश के सातत्य को मारक योग बाहम स्थान से हो सकते है—पुत्र न होना, हो कर मरना, कन्याएं ही होना ऐसी प्रवृत्ति मिलती है। अज्ञात व गोपाळ रत्नाकर ने विधवा का सम्बन्ध होना यह फल कहा है। यह पुरुष राशि का है। स्त्रीराशि मे इस का अनुभव नही मिलता।

हमारा अनुभव—यह राहु पुरुष राशि मे हों तो वह विक्षिप्त, दुर-भिमानी, वाचाल, लोगों से अलग रहनेवाला होता है। पुलिस, रेलवे, बीमा कम्पनी, बैंक, आदि मे नौकरी करते है। आर्थिक स्थिति अस्थिर होती है, लोगों का विश्वास नही रहता। इन के जन्म से माता-पिता को शारीरिक व आर्थिक कष्ट रहता है। पिता को पंगु होकर पेन्शन लेनी पडती है। माता या पिता का बचपन मे मृत्यु होता है। ये लोग अधिकार हो तो ही काम करते है, व्यर्थ काम नही करते। सुखासक्त होते है। स्त्री-राशि मे यह राहु हो तो पूर्वार्जित इस्टेट नही मिलती, मिली तो अपने हाथ से नष्ट होती है। पूर्व वय में बहुत कष्ट सहकर प्रगति करता है। प्रौढ अवस्था मे सन्तति, धन, कीर्ति, सन्मान आदि सभी प्राप्त होते है। पुत्र बहुत होते है। अदालत के कामों मे हमेशा जय मिलता है। लेखन वृत्तपत्र या मासिक पत्रों का सम्पादन, कानून का ज्ञान आदि मे कुशल होते है। मिलनसार, निश्चयी, तपस्वी, स्नेहशील, नियमित, परोपकारी स्वभाव होता है। स्वतन्त्र व्यवसाय, बिना पूंजी के व्यवसाय मे लाभ होता है। सच बोलनेवाला, प्रामाणिक, प्रभावशाली, निडर, अपने काम मे अडंगे को बरदाश्त करनेवाला, संस्थाओं का स्थापक होता है। आयु के ३ रे वर्ष माता को, ७ वे वर्ष पिता को, ८ वे वर्ष पैतृक सम्पत्ति को, गंभीर खतरा होता है। २१ वे वर्ष भाग्योदय को आरम्भ, ३६ वे वर्ष पूर्ण उन्नति, ४२ वे वर्ष सार्वजनिक सन्मान का योग होता है।

ग्यारहवे स्थान के फल

वैद्यनाथ---राहौ श्रोत्रविनाशको रणतलश्लाघी धनी पण्डित: उपान्त्ययाते शिखिनि प्रतापी परप्रियश्चान्यजनाभिवन्द्य: । सन्तुष्टचित्त: प्रभुरल्पभोगी शुभक्रियाचाररत: प्रजात: ।। यह युद्ध मे प्रशंसित, धनी, विद्वान, बहरा होता है । केतु हो तो पराक्रमी, लोकप्रिय, दूसरों द्वारा प्रशंसित, सन्तुष्ट, अधिकारी, अल्प भोग करनेवाला, अच्छे कामों में लगा हुआ होता है ।

गर्ग---यस्य लाभगतो राहुर्लाभो भवति निश्चयात् । म्लेंच्छादिपतितैर्नून गजवाजिरथादिकम् ।। यह राहु लाभदायी होता है । विदेशियों और बुरे लोगों से हाथी, घोडे, रथ आदि की प्राप्ति होती है ।

वसिष्ठ--लाभस्थाने विलासो भवति सुकविता वा सुलक्ष्म्यादिभोगम् । यह विलासी, कविताप्रिय, धनवान होता है ।

बृहद्यवनजातक---लभेद्वाक्यतोऽर्थं चरेत् किंकरेण व्रजेत् किं च देशं लभेत् प्रतिष्ठाम् । द्वयो: पक्षोयोर्विश्रुत: सत्प्रजावान्नता: शत्रव: स्युस्तमो लाभगश्चेत् ।। यह वक्ता होकर धन प्राप्त करता है, सेवकों के साथ विदेश मे घूमता है । कीर्तिमान, दोनो पक्षों को मान्य, अच्छे पुत्रों से युक्त होता है । इस के शत्रु भी नम्र हो जाते है । सुभाषी सुविद्याधिका दर्शनीय: सुभोग: सुतेजा: सुवस्त्रोऽपि यस्य । भवेदौदरार्ति: सुता दुर्भगाश्च शिखी लाभग. सर्वलाभं करोति ।। इस का बोलना, शिक्षा, रूप, भोग, तेज, वस्त्र ये सब अच्छे होते है । पेट में रोग होता है, पुत्र भाग्यहीन होते है । सदा लाभ होता है ।

नारायणभट्ट---सदा म्लेच्छतोऽर्थं लभेत् साभिमानश्चरेत् किंकरेण व्रजेत् किं विदेशम् । परार्थाननर्थी हरेत् धूर्तबन्धु: सुतोत्पत्तिसौख्य तमो लाभगश्चेत् ।। यह विदेशियों से धन प्राप्त करता है । सेवकों के साथ अभिमानपूर्वक विदेश मे घुमता है । धूर्तों से मित्रता कर दूसरों का धन हरण करता है । पुत्रसन्तति होती है । केतु का फल यवनजातक जैसा है ।

आर्यग्रन्थ–आयस्थिते सोमरिपौ मनुष्यो दान्तो भवेन्नीलवपुः सुमूर्तिः। वाचाल्पयुक्तः परदेशवासी शास्त्रज्ञवेत्ता चपलो विलज्जः ॥ यह संयमी सांवले रंग का, सुन्दर, कम बोलनेवाला विदेश मे रहनेवाला, शास्त्रों का ज्ञाता, चंचल और निर्लज्ज होता है। केतुका फल यवनजातक जैसा दिया है।

ढुंढिराज—लाभे गते यदि तमे सकलार्थलाभं सौख्याधिकं नृपगणाद् विविधं च मानम्। वस्त्रादिकांचनचतुष्पदसौख्यभावं प्राप्नोति सौख्यविजयौ च मनोरथं च ॥ यह सब प्रकार का लाभ, अधिक सुख, राजा द्वारा विविध सन्मान, वस्त्र भूषण व पशु आदि की समृद्धि, सुख तथा विजय प्राप्त करता है। मन की इच्छाएं पूरी होती है। केतु का फल यवनजातक जैसा है, सिर्फ 'गुदे पीडयते', गुदरोग होना यह अधिक कहा है।

मन्त्रेश्वर—श्रीमान्नातिसुतश्चिरायुरसुरे लाभे सकर्णामयः ॥ लाभेऽर्थ-संचयमनेक गुणं सुभोगं सद्रव्यसोपकरणम् सकलार्थसिद्धिम् ॥ यह धनी, कम पुत्रों से युक्त, दीर्घायु, कान के रोग से युक्त होता है। केतु हो तो धन का संचय, अनेक गुण, अच्छे भोग, सब अर्थो की सिद्धि व द्रव्य तथा उपकरणों की प्राप्ति होती है।

जागेश्वर–भवेन्मानवो मानयुक्तः सदैव प्रतापानलैस्तापयेच्छत्रुवर्गम्। सुतैः कष्टभाग् गोत्रचिन्तासुयुक्तः सदा सैंहिकेयो नराणां च लाभे ॥ भवेत् पुत्रचिन्ता धनं तस्य गेहे कथं स्यात् सुतानां च चिन्ता विशेषात्। भवेज्जाठरे तस्यं वातप्रकोपो यदा केतवो लाभगाः स्युर्नराणाम् ॥ यह सन्मानित, प्रभाव से शत्रु को सन्तप्त करनेवाला होता है। इसे पुत्र तथा कुटुम्ब की चिन्ता से कष्ट होता है। केतु हो तो पुत्र तथा धन की चिन्ता रहती है। पेट मे वातरोग होते है।

हरिवंश–आयभावस्थितः कायहीनग्रहः सर्वदायं तनोत्यंगपुष्टिं नृणाम्। भूपतो गौरवं शत्रुहानिं बलम् वाहनं भूषणं भाग्यमर्थागमम् ॥ इस का शरीर पुष्ट होता है, राजा से सन्मान प्राप्त होता है, शत्रु नष्ट होते है। बल, वाहन, आभूषण, धन तथा भाग्योदय प्राप्त होता है।

घोलप—यह कीर्तिमान, निरोगी, राजमान्य, धनी, उत्तम गुणों से युक्त, सुवर्णाभूषणों से सम्पन्न होता हैं। पशुओं से समृद्ध होता है। इच्छाएं पूरी होती है। राहु ३।६।११ इन स्थानों मे अरिष्ट दूर करता है। केतु हो तो पूज्य, कार्यकर्ता, घोडे और वाहन आदि से समृद्ध, मीठा बोलनेवाला; विद्वान, उत्तम भोगों से सम्पन्न, गुदरोग से पीडित होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह धनधान्य से समृद्ध, पुत्रयुक्त, विदेशियों द्वारा सन्मानित होता है।

पाश्चात्य मत—यह व्यक्ति श्रेष्ठ होता है। जिस का व्यवसाय किसी दूसरे पर अवलम्बित हो उसे यह लाभदायक है। रेस, सट्टा, जुआ, लाटरी मे इसे लाभ नही होता। अन्य बातों मे भाग्यशाली होता है। इस स्थान में केतु हो तो मित्र अच्छे नही होते, मित्रों से नुकसान होता हैं। राजनीतिक नेताओं के लिए यह केतु हानिकारक है क्यों कि जब दशम से केतु जाता है तब इन्हें मित्रों से विश्वासघात, संकट का सामना करना पडता है। अत: वे हमेशा दूसरे दर्जे के पद पर ही रहते है।

अज्ञात—शरीरारोग्यमैश्वर्यं स्त्रीसुखं विभवागमः। संकीर्णवर्णतो लाभो राहुर्लाभगतो यदि ॥ इसे आरोग्य, ऐश्वर्य, स्त्रीसुख, धनलाभ व नीच जाति के लोगों से लाभ की प्राप्ति होती है।

चित्रे—इस का व्यवसाय ठीक नही चलता, कर्ज रहता है। यह राहु उच्च या स्वगृह का हो तो राजाद्वारा सन्मानित, सुखी, धनो होता है। विदेशियों से धन व कीर्ति मिलती है। यह विद्वान, विनोदी, लज्जाशील, शास्त्रज्ञ, युद्ध में विजयी, बहरा होता है। सन्तति कम होती है।

हमारा अनुभव—इस स्थान में प्राय: शुभ फल बतलाये है वे स्त्री-राशि के है। अशुभ फल पुरुष राशि के है। यह राहु पुरुष राशि मे हो तो पूर्वजन्म के शाप के कारण पुत्रसन्तति में बाधा रहती है। पुत्र मरना; गर्भपात होना, स्त्री को सन्ततिप्रतिबन्धक रोग होना आदि प्रकार होते हैं। इन्हें एकदम श्रीमान होने की इच्छा रहती है। इसलिए रेस, लाटरी, सट्टा, जुआ आदि में धन खर्च करतें है। अधिकार मिले तो अन्धाधुन्ध

रिश्वत लेते है किन्तु पकडे भी जाते है। लोभी, परद्रव्य के इच्छुक, बरताव मे अनियमित होते है। इन्हें इष्टमित्र कम होते है, मित्रों से नुकसान होता है, किसी से मदद नही मिलती। भाग्योदय मे हमेशा रुकावट आती है। ये कल्पक, संशोधक, प्राचीनवस्तुवेत्ता होते है। नौकरी मे ही इन की योग्यता का उपयोग होता है। यह राहु स्त्रीराशि मे हो तो पहले कन्या होती है, फिर बहुत काल बाद पुत्र होता है। सन्तति बहुत होती है। कन्याएं अधिक होती है। मित्र अच्छे होते है, उन की मदद से जीवन कों अच्छी दिशा मिलती है। व्यसन नही होता, सरल मार्ग से जीविका प्राप्त करने की इच्छा रहती है। इन के मित्र ज्योतिष, मंत्रशास्त्र के जानकार होते है। इच्छा-आकांक्षाएं अच्छी होती है। सन्तति होती है। अधिकारी होने पर रिश्वत लेने मे पकडे नही जाते। व्यवसाय या नौकरी स्थिर रहती है। बडे भाई की मृत्यु होती है, अथवा वह बेकार या पुत्रहीन होता है, उस के कुटुम्ब का भार वहन करना पडता है। ४२ वे वर्ष एकदम धनलाभ होता है, कीर्ति नही मिलती। विधानसभा के सदस्य हो सकते है। इन्हें स्वतन्त्र व्यवसाय अधिक अनुकूल होता है। ६ वे वर्ष शरीरकष्ट, ९ वे वर्ष शिक्षा का आरम्भ, १२ वे वर्ष बडे भाई को गम्भीर शारीरिक कष्ट, २७ वे वर्ष विवाह, २८ वे वर्ष जीविका के आरम्भ का योग होता है।

बारहवें स्थान के फल

वैद्यनाथ–विधुन्तुदे रि:फगते विशील: सम्पत्तिशाली विकलश्च साधु:। पुराणवित्तस्थितिनाशक: स्यात् चलो विशील: शिखिनि व्ययस्थे ॥ यह शीलरहित, धनवान, व्यंग से युक्त, परोपकारी होता है। केतु हो तो पुरानी सम्पत्ति को नष्ट करनेवाला, चंचल, शीलरहित होता है।

गर्ग—व्ययस्थानगते राहौ नीचकर्मरत: सदा। असद्व्ययी पापबुद्धि: कपटी कुलदूषक: ॥ यह नीच काम करनेवाला, बुरे कामों में धन खर्च करनेवाला, पापी विचारों का, कपटी, कुल को दूषण जैसा होता है।

बृहद्यवनजातक—तमे द्वादशे विग्रहे संग्रहेपि प्रपातात् प्रयातोऽथ संजायते हि। नरो भ्राम्यतीतस्ततो नार्थसिद्धिर्विरामे मनोवांछितस्य

प्रवृद्धिः ।। यह घर में झगडे करता है । गिर पडता है, इधर उधर भटकता है, धन नही मिलता, एक जगह स्थिर होने पर इच्छाएं पूरी होती है। शिखी रिःफगश्चारुनेत्रः सुशिक्षः स्वयं राजतुल्यो व्ययं सत्करोति । रिपोर्नाशनं मातुलान्नैव शर्म रुजा पीडयते अस्तिगुह्यं सदैव ।। यहां केतु हो तो आंखें सुन्दर होती है, शिक्षा अच्छी होती है । यह अच्छें कामों मे राजा जैसा खर्च करता है, शत्रु का नाश करता है । इस को मामा का सुख नही मिलता, गुद व गुह्य भाग मे रोग होते है ।

आर्यग्रन्थ--व्ययस्थिते सोमरिपौ नराणां धर्मार्थहीनो बहुदुःखतप्तः । कान्तावियुक्तश्च विदेशवासी सुखैश्च हीनः कुनखी कुवेषः ।। यह धर्महीन, निर्धन, बहुत दुःखी, पत्नी से दूर रहनेवाला, विदेश मे जानेवाला, सुखरहित होता है । इस के नख और वेष अच्छे नही होते । केतु का फल यवनजातक जैसा है ।

ढुंढिराज--नेत्रे च रोगं किल पादघातं प्रपंचभावं किल वत्सलत्वम् । दुष्टे रतिं मध्यमसेवनं च करोति जातं व्ययगे तमे वा ।। आंख में रोग व पांव पर आघात होते है । प्रपंच में आसक्त, स्नेहशील होता है । दुष्टों की संगति में व मध्यम लोगों की सेवा में रहता है । केतु का फल यवनजातक जैसा है ।

नारायणभट्ट--तमो द्वादशे दीनतां पार्श्वशूलं प्रयत्ने कृतेऽनर्थतामातनोति । खलैर्मित्रतां साधुलोके रिपुत्वं विरामे मनोवांछितार्थस्य सिद्धिम् ।। यह दीन, दुष्टों का मित्र, सज्जनों का शत्रु होता है । इस के व्यवसाय मे नुकसान होता है । पीठ मे रोग होता है । अन्त समय मे इच्छाएं पूरी होती है । केतु का फल यवनजातक जैसा है ।

मन्त्रेश्वर--प्रच्छन्नाघरतो बहुव्ययकरो रिःफेऽम्बुरुक्पीडितः ।। प्रच्छन्नपापमधमं व्ययमर्थनाशं रिःफे विरुद्धगतिं मक्षिरुजं च पातः ।। यह गुप्त रूप से पाप करता है, बहुत खर्च करता है, जलोदर से पीडित होता है । केतु हो तो--गुप्त पाप करनेवाला, अधम, खर्चीला, निर्धन, उलटे मार्ग से चलनेवाला, आंख के रोग से पीडित होता है ।

जागेश्वर—तथा राहुणा बुद्बुदं नेत्रयुग्मम् । यदा सैंहिकेयस्तथा घातनामा व्यये चेन्नराणां तदा म्लेंच्छभिल्लैः । धनं भुज्यतें मातुले वै कुठारः स्वयं तप्यते क्रोधयुक्तो जनेषु ॥ यदा राहुणा केतुना वापि युक्तं व्ययं वै नराणां तदा मानसे किम् । भवेत् सौख्यकं किंकरोऽयं विघाती सुघाती भवेन्मातुले मानवृद्धः ॥ आंख मे दोष होता है । इस का धन विदेशी या भील लूटते है । मामा की मृत्यु होती है । लोगों पर क्रोध कर स्वयं त्रस्त होता है । मन मे सुख नही होता । नौकर घात करते है । मामा के विषय मे इन्हें बहुत सम्मान होता है । ये फल राहु केतु दोनों के है ।

हरिवंश—बुद्धिमन्दः कृशांगाभिभूतस्तथा बन्धुवैरी विरोधी शठो दुर्बलः । कुव्ययेनान्वितो मानवः सम्भवेत् भानुभावस्थितो भानुशत्रुर्भवेत् ॥ यह मन्द बुद्धि का, दुबला, अपने लोगों का वैरी, विरोधी, दुष्ट, दुर्बल, बुरे काम मे खर्च करनेवाला होता है ।

घोलप—सज्जनों के आश्रय से शत्रु का नाश करता है । उत्तम प्रदेश में जीवनयापन करता है । आंख व पांव में पीडा होती है । हाथ बडा होता है । यह स्नेहशील होता है । [इस स्थान में केतु हो तो जगत में पूज्य, कीर्तिमान, ऐश्वर्यवान, कपडे के व्यापार में सम्पन्न होनेवाला, न्यायी, राजा के समान खर्च करनेवाला, शत्रुहीन, सुखरहित होता है । आंख, पांव, बस्ति, गुद में रोग से पीडा होती है ।]

इस स्थान में मिथुन, धन या मीन में राहु मुक्तिदायक होता है ऐसा कुछ आचार्यो का मत है ।

गोपाल रत्नाकर—कंजूस, कम पुत्रों से युक्त, नेत्ररोगी होता है । खर्च बहुत होता है ।

लखनऊ के नबाब—रासः स्थितो यदा चैव खर्चखाने भवेत् तदा । कलहप्रियो बेकारः कर्जमन्दश्च मुफिलसः ॥ यह झगडालू, बेकार, ऋणग्रस्त व दुःखी होता है ।

पाश्चात्य मत—सार्वजनिक संस्थाओं से लाभ होता है । अध्यात्मज्ञान के लिए यह शुभ है । यह राहु अवैध सम्बन्ध से जन्म सूचित करता है ।

ऐसे तीन बालकों की कुण्डली में व्यय में राहु था। उन का बाद में कैसे पालनपोषण हुआ इस का पता नही चला। एक माताने-जिसके व्यय में राहु था--अपना बच्चा अनाथालय को सौंपा था, वह लडका बहुत अच्छा था और उस के चतुर्थ में राहु था। इस माता ने अपने दो और बच्चे इसी तरह अनाथालय को सौपे थे। यदि केतु यहां हो तो अध्यात्म की रुचि से हानि होती है।

वसिष्ठ--रूपत्वं द्वादशस्थः सुखमतिनितरां चक्षुरोगं प्रसूतौ। यह सुन्दर, बहुत सुखी, नेत्ररोगी होता है।

अज्ञात--अल्पपुत्रः। नेत्ररोगी। पापगतिः। धनव्ययं च कष्टं च राजपीडा रिपु क्षयम्। जायापीडा भवेन्नित्यं स्वर्भानुर्द्वादशे यदि॥ इसे पुत्र कम होते है, आंख में रोग होता है। पापी आचरण होता है। धन का खर्च, कष्ट, राजा से तकलीफ, शत्रु का नाश, स्त्री को कष्ट ये इस राहु के फल है।

चित्रे--यह झगडालू, नेत्ररोगी, दुर्जनों की संगति मे रहनेवाला, मध्यम लोगों की सेवा करनेवाला, स्त्री से वियुक्त, विदेशवासी, दरिद्री, बुरा वेष पहननेवाला, धर्मभ्रष्ट होता है। पांव मे रोग होता है। क्वचित् शरीर मे व्यंग से युक्त, धनवान, परोपकारी होता है। यह राहु उच्च या स्वगृह मे हो तो शुभ फल देता है।

हमारे विचार--इस स्थान मे वसिष्ठ व घोलप को छोड कर बाकी सब ने अशुभ फल बताये है। वैद्यनाथ ने धनप्राप्ति तो बाकी सब ने दारिद्रय ऐसा फल कहा हैं। नेत्ररोग का उल्लेख सब ने किया है। धन व व्यय ये नेत्रकारक स्थान है तथा राहु पापग्रह है अतः यह फल कहा है। पुत्र कम होना यह फल अनुभव से ठीक प्रतीत होता है यद्यपि इस स्थान से पुत्रों का सम्बन्ध नही है। पाश्चात्य मत से अवैध सम्बन्ध से जन्म का जो फल कहा है वह हमे ठीक नही प्रतीत होता।

हमारा अनुभव--यह राहु पुरुष राशि मे हो तो नेत्ररोग हो सकते है। बडप्पन दिखाने के लिये बहुत खर्च करते है। पुत्रसन्तति कम होती है--एक या दो ही सन्तति होती है। दो विवाह होते हैं। यह विवाहित

स्त्री से असन्तुष्ट रहता हैं अत: व्यभिचारी प्रवृत्ति होती है। स्त्री हमेशा बीमार रहती है अथवा ज्यादा दिन मायके रहती है। पूर्व वय मे स्थिरता नही मिलती। स्त्री राशि मे यह राहु स्त्रीसुख साधारणत: अच्छा देता है किन्तु दो विवाह होते है। खर्च व्यवस्थित रूप से करते है। इन्हें नेत्ररोग बिलकुल नही होते---आखिर तक दृष्टि अच्छी रहती है। सन्तति अधिक होती है। स्वभाव शान्त व अत्यन्त विरक्त होता है। पूर्ववय मे स्थिरता नही होती। जीविका के लिए कुटुम्ब छोड कर उत्तर की ओर जाना पडता है। ईशान्य प्रदेश मे भाग्योदय होता है। यह राहु जन्मभूमि मे लाभ नही देता। विदेश मे रहने और पढने पर भी अपनी संस्कृति को ही श्रेष्ठ समझता है। प्रसिद्ध, पराक्रमी होता है। कीर्ति मिलने के साथ साथ इन के प्रपचसुख मे कमी होती है। ये उपभोग मे रुचि रखते है, बहुत कमाते है और खर्च भी करते है। दयालु, आप्तमित्रो को मदद करनेवाले, शत्रुरहित, महत्त्वाकांक्षी, उच्च ध्येय से प्रेरित, उदार, वाङ्मयप्रेमी, मिलनसार होते है। वेदान्त की ओर प्रवृत्ति हो तो साधु-सत्पुरुष हो सकते है। इस राहु से १२ वे वर्ष मे माता या पिता का मृत्यु, २१ या २३ वे वर्ष मे जोविका का आरम्भ, १६ वे वर्ष पैतृक धन का लाभ, ३५ वें वर्ष भाग्योदय का योग होता है। बचपन मे विवाह हो तो २१ वें वर्ष दूसरा विवाह होता है। अथवा ३२ से ३६ वे वर्ष तक दूसरे विवाह की सम्भावना होती है।

⁂ ⁂

प्रकरण ७

केतु के द्वादश भाव फल

पहले स्थान के फल

अज्ञात–यदा केतनो लग्नगो भग्नता च तदा रोगवृद्धिर्भवेद् घातपात: । शरीर का अवयव टूटना, रोग बढना, अपघात ये फल है।

ढुंढिराज–यदा लग्नगे चेत् शिखी सूत्रकर्ता सरोगादिभोगं भयं व्यग्रता च। कलत्रादिचिन्ता महोद्वेगता च शरीरे प्रबाधा व्यथा मारुतस्य ।। रोगी,

डरपोक, चिन्तातुर, स्त्री आदि की चिन्ता से युक्त, शरीर मे कष्ट से पीडित, वातरोगी, उद्विग्न होता है।

चित्रे--इस के हाथ को बहुत पसीना आता है। कृश, दुबला, उदास, भ्रमिष्ट, लोभी, कंजूस, अपने लोगों से झगडनेवाला अशुद्ध चित्त का होता है। कमर मे कष्ट व विषबाधा से पीडा होती है। मित्र अच्छे नही होते, विवाह करता है व बहुत दीन होता है-विभानु कुमित्रे विदादेऽतिहीनः॥

सारावली--केतुर्यस्मिन् ऋक्षेऽस्त्युदितः तस्मिन् प्रसूयते सो हि। मासद्वयेन मरणं विनिर्दिशेत् तस्य जातस्य॥ जन्मलग्न के साथ केतु का उदय हो तो दो मास मे वह बालक मरता है।

धनस्थान के फल

अज्ञात--धनस्थोऽत्र केतुर्मतिभ्रंशहेतुः स्त्रियः सौख्यहारी तथा विघ्नकारी। मनस्तापकारी नृपाद् भीतिकष्टं सदा दुःखभागी द्विपतसन्निभाषी॥ यह बुद्धिभ्रम से युक्त, स्त्री सुख मे रहित, विघ्नयुक्त होता है। मन को ताप होता है, राजा से भय व कष्ट होता है, सदा दुःख होता है। यह शत्रु जैसा बोलता है।

ढुंढिराज--धने केतुना व्यग्रता किं नरेशात् धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च। कुटुम्बाद् विरोधी वचः सत्कृतं वा। राजा का भय रहता हैं, धनधान्य नष्ट होता है, मुखरोग होता है, कुटुम्ब मे विरोध करता है, असत्य बोलता है।

चित्रे--यह धर्म नाश करता है। बोलना बहुत, तीखा होता है। यह केतु स्वगृह या शुभग्रह की राशि मे हो तो बहुत सुख देता है। मित्र ग्रह की राशि मे हो तो शुभ फल देता है। मेष, मिथुन या कन्या मे हो तो वह रूपवान व सुखी होता है।

तृतीय स्थान के फल

अज्ञात--तृतियस्थितो यस्य मर्त्यस्य केतुः सदा धीरतां शत्रुनाशं करोति। धनस्यागमं वीर्यवृद्धि सदैव तथा दानशीलादिमध्ये विलासी॥ यह धैर्यवान,

शत्रु का नाश करनेवाला, धनवान, बलवान तथा उदार पुरुषों के साथ रहनेवाला होता है।

ढुंढिराज–सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडा भयोद्वेगचिन्ताकुलात्वं विधत्ते। यह मित्रों का नाश करता है। भय, उद्वेग व चिन्ता से व्याकुल करता है। बाहु मे पीडा रहती है।

चित्रे––यह लोकप्रिय, बलवान, बान्धवों से युक्त, शत्रु का नाश करनेवाला, पराक्रमी होता है। यह छोटे भाई को कष्ट देता है। कन्धे व कान मे रोग होते हैं। वृत्ति गम्भीर होतो है। साक्षीदारी मे हमेशा लाभ होता है। प्रवास, भाग्यवृद्धि व स्त्रीसुख पर इस केतु का प्रभाव पडता है––यह केतु शुभ राशि मे, स्वगृह मे या उच्च हो तो ये सुख मिलते है–नीच राशि मे हो तो ये सुख नही मिलते। यह बहुत प्रवास और बहुत खर्च करता है। सिंह या धनु मे हो तो हृदयरोग, बहरापन, कंधे पर आघात से कष्ट होता है; यह वाचन व शास्त्राध्ययन मे रुचि रखता है। मीन में हो तो अध्यात्मविद्या में कुशल होता है।

चतुर्थस्थान के फल

अज्ञात–मातृदु:खी नर: शूर: सत्यवादी प्रियंवद:। धनधान्यसमृद्धिश्च यस्य केतुश्चतुर्थग:॥ माता का मृत्यु होता है। यह शूर, सच और मीठा बोलनेवाला, तथा धनधान्य से समृद्ध होता है।

ढुंढिराज––चतुर्थे च मातु: सुखं नो कदाचित् सुहृद्वर्गत: पित्ततो नाशमेति। शिखी बन्धुहीन: सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नैति सर्वै: सदा व्यग्रता च॥ माता तथा मित्रों का सुख नही मिलता। पित्त से कष्ट होता है, बन्धु नही होते। हमेशा चिन्ता रहती है। यह स्वगृह या उच्च में हो तो सदा सुख देता है।

चित्रे––यह केतु वृश्चिक या सिंह में हो तो मातापिता व मित्रों का सुख अच्छा मिलता है। नीच राशि में हो तो धनहानि, देशान्तर का योग

होता है। माता रोगी रहती है, सौतेली मां से कष्ट होता है। उच्च राशि में हो तो वाहन सुख मिलता है, यह राजयोग होता है। स्वभाव अस्थिर होता है। धनु या मीन मे हो तो अकस्मात उत्तम सुख मिलता है। स्थावर सम्पत्ति के बारे मे उदासीनता होती है। दूसरों की आलोचना बहुत करता है। अतः लोग इसे कुत्सित वृत्ति का समझते है। विषबाधा का भय रहता है। दुर्बल, पित्तप्रकृति, वितण्डवादी होता है।

पांचवें स्थान के फल

अज्ञात—केतौ शठः सलिलभीरुरती व रोगी यह दुष्ट, बहुत रोगी; पानीसे डरनेवाला होता है।

ढुंढिराज—सुतस्य नाशो यदि पंचमस्थः शिखी सदा भूपभयं करोति। मानक्षयं धर्मकर्मप्रणाशं सदा शत्रुभिर्वादनिन्दा नराणाम्॥ पुत्र का नाश होता है। हमेशा राजा से डर रहता है। सन्मान, धर्म, कर्म का नाश होता है। शत्रुओं से वाद और निन्दा होती है।

चित्रे—यह कपटी, मत्सरी, दुर्बल, डरपोक, धैर्यहीन होता है। इसे पुत्र कम व कन्याएं अधिक होती हैं। बन्धु सुखी होते है। पेट में रोग होते हैं। कपट से लाभ होता है। मन्त्रतन्त्र से यह भाइयों का घात करता है। सिंह, धनु, मीन या वृश्चिक में यह केतु अच्छा सुख व ऐश्वर्य देता है। उच्च स्वगृह में स्वतन्त्र, बलवान हो तो राजयोग, मठाधीश होने का योग होता है। उपदेश प्रभावी होता है। तीर्थयात्रा, विदेश मे रहने की प्रवृत्ति होती है।

छठवें स्थान के फल

अज्ञात—पुरेशाधिकारी गृहे रम्यवासी गले पुष्पमाला कुले श्रीविशाला। मतिर्मंदने विद्विषां तस्य मानं भवेद् यस्य षष्ठे गृहे केतुनामा। यह नगर का प्रमुख अधिकारी, अच्छे घर मे विलास के साथ रहनेवाला, शत्रु का नाश करनेवाला, सन्मानित, सम्पन्न कुल मे उत्पन्न होता है।

ढुंढिराज--शिखी यस्य षष्ठे स्थितो वैरिनाशो भवेन्मातुलानां च नो मानभंगः। चतुष्पात्सुखं द्रव्यलाभो नितान्तं न रोगोऽस्य देहे सदा व्याधि-नाशः॥ शत्रु नष्ट होते है, मामा का अपमान होता है। चौपाये प्राणी बहुत होते है, धन मिलता है, रोग नही होतें। तमःपृष्ठभावे भवे-न्मातुलान्मानभंगो रिपूणाम्। विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छवित्तं शरीरे सदाऽनामयं व्याधिनाशः। मामा का मानभंग, शत्रु का नाश होता है। चौपाये प्राणी मिलते है। धन कम होता हैं। शरीर नीरोग रहता है।

चित्रे--यह शत्रु का नाश कर विजयी होता है। मामा से मानभंग व वैर होता है। चौपाये प्राणियों से लाभ व धनप्राप्ति होती है। स्त्री से सुखं कम मिलता है, कष्ट रहना है। लोगों को तुच्छ समझ कर बेपरवाह रहता है। अपने आप को सर्वज्ञ समझता है। यह उच्च या स्वगृह मे हो तो सब प्रकार का सुख देता है। विद्वान, कीर्तिमान होता है। नीच राशि मे हो तो अनिष्ट फल मिलता है। खर्च अच्छे कामों मे करता हैं। सत्संग मे रहता है। राजा द्वारा सन्मानित होता है। प्रपंच मे कष्ट हुआ तो विरक्त होकर प्रवास करता है। भक्तों मे समाविष्ट, चमत्कारिक योग प्रयोग करता है। यह चर्चा मे उग्र हो जाता है। भूख तेज रहती है। उच्च मे हो तो रूपवान, आनन्ददायक व सन्तुष्टचित्त होता है।

सातवें स्थान के फल

अज्ञात--द्यूने च केतौ सुखं नो रमण्या न मानलाभो वातार्तिरोगः। न मानं प्रभूणां कृपा विकृता च भयं वैरिवर्गाद् भवेत् मानवानाम्॥ स्त्री-सुख नही मिलता। वातरोग, अपमान, राजा की अवकृपा तथा शत्रुओ से भय होता है।

चित्रे--यह स्त्रीरहित होता है। व्यभिचारी, अस्थिर, प्रवासी, निवासस्थान बारबार बदलनेवाला, व्यसनी, राजा से भयभीत होता है। विधवा, नीच जाति की स्त्री से अवैध सम्बन्ध रखता हैं। अतिकामुक, अनैतिक कामों मे आसक्त होता है।

आठवें स्थान कें फल

अज्ञात—सहोदारकर्मा सहोदारशर्मा सदा भाति केतुर्यदा मृत्युभावे। सहोदारलील: सहोदारशील: सहोदारभूषामणिर्मानवानाम् ॥ इस के काम सुख, खेल, शील, आभूषण के समान श्रेष्ठ होते है।

चित्रे—इस के पापकृत्य तत्काल प्रकट होते है। यह परस्त्री मे आसक्त, नेत्ररोगी, दुराचारी, दीर्घायु होता है। यह मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या, वा धनु मे हो तो उत्तम लाभ होते है।

नवम स्थान के फल

अज्ञात—गृहे केतुनाम्नि स्थिते धर्मभागे श्रियो राजराजाधिपो देवं-मन्त्री। नर: कान्तिकीर्त्यादिवुद्धयादिदानै: कृपावान् नरो धर्मकर्मप्रवृद्धः ॥ यह राजा अथवा राजा का मन्त्री होता है। कान्ति, कीर्ति, बुद्धि, उदारता से सम्पन्न, दयालु, धार्मिक होता है।

चित्रे—यह धर्म विरोधी, दुराचारी, झूठ बोलनेवाला, विचित्र मत का अनुयायी, क्रोधी, वक्ता, दूसरों की निन्दा करनेवाला, भाई से झगडनेवाला, शूर, बलवान, अभिमानी होता है।

दसवें स्थान के फल

अज्ञात—नभस्थो भवेद् यस्य मर्त्यस्य केतुर्न तत्सोपमेय: प्रभावो भुवि स्यात्। गडुं डिंडिमाडंबरे शत्रवोऽपि रणप्रांगणे तस्य गायन्ति कीर्तिम् ॥ इस का प्रभाव अतुलनीय होता है। युद्ध मे शत्रु भी इस की कीर्ति गाते है।

ढुंढिराज—पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतु: स्वयं दुर्भग: शत्रुनाशं करोति। रुजो वाहनै: वातपीडा च जन्तोर्यदा कन्यकास्थ: सुखी कष्टभाक् च ॥ पिता का सुख नही मिलता। यह दुर्भागी, वाहनों से पीडित तथा बातरोगी होता है। शत्रु का नाश करता है। यदि केतु कन्या मे हो तो उसे सुख और कष्ट दोनों मिलते है।

चित्रे—यह मीन या धनु मे हो तो उत्तम यश व वैभव मिलता है। मिथुन मे वैभव-पद से हटना पडता है। बुद्धिमान, शास्त्रज्ञ, प्रवासी, विजयी होता है। यह जलाश्रय राशि (कुम्भ, कन्या, मिथुन, वृषभ) मे हो तो कुछ सौम्य होता है और साधारण फल देता है। व्यापार के लिए यह शुभ नही है। चर राशि मे हो तो प्रवास से भाग्योदय होता है।

लाभ स्थान के फल

अज्ञात—यदैकादशे केतुरतिप्रतिष्ठां नरं सुन्दरं मन्दिरं भूरिभोगान्। सदोदारशृंगारशास्त्रप्रवीणः सुधुर्यो धनुर्धारिणां मानकीर्त्या॥ यह प्रतिष्ठित, सुन्दर, घरबार तथा उपभोग से समृद्ध, उदार, शृंगार मे निपुण, धनुर्धरों मे सन्मानित व कीर्तिमान होता है।

चित्रे—यह मीठा बोलता है। विनोदी, विद्वान, ऐश्वर्यसम्पन्न, तेजस्वी, वस्त्रोभूषणों से युक्त, लाभयुक्त होता है। गुदरोग होते है। मन मे सदा चिन्ता रहती है। परोपकारी, दयालु, लोकप्रिय, शास्त्रों का रसिक, सन्तोषी, राजाद्वारा सत्कृत होता है। यह मेष, वृषभ, कन्या धनु या मीन मे हो अथवा गुरु या शुक्र की दृष्टि हो तो शुभफल विशेष मिलते है। बुध का योग हो तो व्यापार मे अच्छा यश मिलता है। कवि, लेखक, राजमान्य पशुओ से समृद्ध, मन की इच्छा पूरी करनेवाला होता है। धन अच्छे काम मे खर्च करता है। उस से लाभ भी शीघ्र होता है। आलस कम होता है। हाथ मे लिया हुआ काम अधूरा नही छोडता।

व्ययस्थान के फल

अज्ञात—यदा याति केतुर्व्यये मानवोऽसत्प्रयोगात् विधत्ते व्ययं द्रव्यराशेः। नृपाणां वरं संगरे कातरः स्यात् शुभाचारहीनोऽतिदीनो न दाता॥ यह बुरे काम मे खर्च करता है। लडाई मे डरपोक, शुभ काम से रहित, दीन, कंजूस होता है।

चित्रे—यह बहुत प्रवास करता है। चंचल, उदार, खर्चीला, ऋण-ग्रस्त होता है। बुध से युक्त हो तो व्यापार मे सफल होता है। कवि, शास्त्रज्ञ, राजा जैसा सम्पन्न होता है। उच्च या स्वगृह मे हो अथवा गुरु के साथ हो तो अतिशय योग्य, साधु जितेन्द्रिय वृत्ति का होता है। शुक्र के साथ बलवान हो तो शक्तिमार्ग का साधक होता है। शुक्र व चन्द्र साथ हो तो व्यभिचारी व पापी होता है।

केतु के इन फलों से स्पष्ट होता है कि ये फल प्रायः राहु के फलों से मिलते जुलते है। इसीलिए हमने पहले केतु के फलों का स्वतन्त्र विचार नही किया है।

प्रकरण ८ वाँ

राहु के अन्य ग्रहों से योग

ग्रहणविचार में रवि, चन्द्र व राहु के युति योग के फल दिये है। ग्रहण के समय फल तीव्र मिलते है। किन्तु प्रतिमास एक बार चन्द्र-राहु की व प्रतिवर्ष एक बार रवि-राहु की युति होती है। इन के फल साधारण मिलते है। कोई भी ग्रह चन्द्रकक्षा के पात मे हो तो उस के शुभफल अधिक अच्छे मिलते है।

राहु और रवि

ये दोनों शुभ राशि मे अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो तथा १।३। ५।१०।१२ इन स्थानों में हो तो—हमेशा मानसन्मान मिलता है। बडा अधिकारपद मिलता है, सत्ताधीश होता है। स्वास्थ्य अच्छा होता है। एक विवाह होता है—स्त्री के साथ प्रेमपूर्वक रहते है। सन्तति कम होती है। धन मिलता है किन्तु पूर्वार्जित सम्पत्ति नही रहती, अपने कष्ट से धनार्जन होता है। बुद्धिमान, सावधान, नियमित, व्यवस्थित, शान्त,

समाधानी वृत्ति का होता है। हाथ में लिये कार्य को पूरा करता है। यथाशक्ति राजनीतिक वा सामाजिक कार्य कर के प्रसिद्ध होता है। न्याय-अन्याय समझकर सत्य के लिये झगडता है। ईश्वर के सिवाय अन्य किसी से हार नही मानता। बरताव दयालु, प्रेमपूर्ण, महत्त्वाकांक्षा से परिपूर्ण होता है। लोगों पर प्रभाव होता है किन्तु प्रेमपूर्वक, मन अनुकूल कर के कार्य करता है। यह युति २।४।६।७।८।९।११ इन स्थानों मे हो तो फल साधारण मिलते है। २।४।७ इन स्थानों में—पूर्वार्जित धन नष्ट होता है। दो विवाह होते है। उद्योग में अस्थिरता रहती है। कुटुम्ब बहुत बडा होता है। यह युति अशुभ राशि में अशुभ ग्रहके योग में हो तो—वह दुरभिमानी, कुल का झूठा अभिमान करनेवाला, हठी, तामसी, दुराग्रही, आलसी, निरुद्योगी, स्वार्थी, नीच, झगडे, लगानेवाला, मुफ्त खानेवाला, स्वैराचारी, अपवित्र, दुष्ट बुद्धि का, लापरवाह, धूर्त, कनिष्ठों को कष्ट देनेवाला, सच झूठ में फरक न करनेवाला, अच्छे काम बिगाडने में मजा लेनेवाला, अकारण विरोध व शत्रुता करनेवाला होता है। दूसरों की प्रगति इसे सहन नही होती। बोलना बहुत कठोर व तीखा होता है। क्रोधी, चंचल, व्यसनी, पापपुण्य से उदासीन, परस्त्री में आसक्त, कामुक होता है।

राहु और चन्द्र

ये ग्रह शुभ राशि में अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो विचार उच्च, परिपक्व होते है। संकट बहुत आते है, उन का धैर्यपूर्वक मुकाबला करता है। प्रपंच का ध्यान छोड कर यह समाजहित के कार्य करता है अतः लोकप्रिय होता हैं। इन्हें स्वतन्त्र व्यवसाय में सफलता नही मिलती। व्यवसाय के विपरीत मनोवृत्ति होती है अतः संकट में कोई उपाय नही कर पाते। नौकरी करने की सलाह इन्हें अच्छी नही लगती। नीतिमान होते है। शान्त, समाधानी, एकतापूर्ण वातावरण चाहते है। इस मे विघ्न हो तों बहुत यत्न कर के दूर करते है। बहुत निग्रही, निश्चयी, नियमित होते है। अन्याय के प्रतिकार के लिए राजनीतिक, सामाजिक या आध्या-

त्मिक दृष्टि से झगडा चालू रखते है। स्त्री अनुकूल होती हैं। पुत्र एक दो होते है, वे अच्छे और पिता के लिए गौरवास्पद होते है। यह युति १।३।९ इस स्थानों मे अशुभ होती है। हमेशा असफलता, दारिद्रय, ऋणग्रस्त होने से कष्ट होता है। मृत्यु आकस्मिक रीति से होता है।

राहु व मंगल

इन की युति शुभ राशि मे अन्य ग्रहों के शुभ योग मे हो तो—१।३।६।१० इन स्थानों मे—यह बहुत पराक्रमी, कर्तृत्ववान, अदालती व्यवहार मे सफल, साहसी, निन्दा की परवाह न करनेवाला, सुधारवादी, कार्य पूर्ण करनेवाला, संसार मे व्यवहारकुशल होता है। यह दत्तक जाने का योग है। बडे भाई नही होते। भाईबहिनों का पोषण करना पडता है। बहु-विवाहयोग होता है। यह युति अशुभ सम्बन्ध में हो तो विवाहित स्त्री से असन्तुष्ट, व्यभिचारी होते है। अदालती व्यवहार में असफल होते है। पूर्वार्जित सम्पत्ति नष्ट होती है। धनस्थान में यह युति शुभसम्बन्ध में हो तो सूद के रूप में धनलाभ होता है। उदार स्वभाव के कारण खर्च भी बहुत होता है। स्थावर सम्पत्ति खरीदने के लिए अनुकूलता रहती है—ये जिसे लेना चाहे वह घर-जमीन आदि दूसरे नही खरीद पाते। इन के धन से दूसरों का कल्याण नही होता। चतुर्थ में यह युति हो तो पूर्वार्जित व स्वकष्टार्जित सम्पत्ति भी नष्ट होती है। चतुर्थ में राहु व दशम में मंगल हो तो निवासस्थान दोषपूर्ण होता है। उस घर में पिशाचबाधा अथवा निरन्तर द्रव्यहानि अथवा सन्तति का घात, स्त्री का घात आदि से कष्ट होता है। पंचम स्थान में इस युति से सन्तति सम्बन्धी दोष—स्त्री को ऋतुसम्बन्धी रोग होते है अथवा सन्तति नष्ट होती है। ऐहिक सौख्य कम मिलता है। सप्तम में—विवाह बहुत देर से होता है। पहली स्त्री से सम्बन्ध ठीक न रहने से दूसरा विवाह होता है। व्यवसाय-नौकरी में स्थिरता नही रहती। अष्टम में—स्वास्थ्य ठीक नही रहता, जादू-रसायन के पीछे सम्पत्ति को नष्ट करते है, आयु मध्यम होती है। नवम में—

भाईबहन नही होते-एकाद बडा भाई या बहन होती है, छोटे नही होते। व्ययस्थान में—स्त्रीसुख नही मिलता, रक्तपित्त, कोढ, विषबाधा की सम्भावना होती है। राहु सर्प के समान व मंगल न्योले के समान हैं अतः मंगल के प्रभाव से विष घातक नही हो पाता। डाक्टर की मदद से या वमन हो कर विष से छुटकारा मिलता है।

राहू व बुध

इन की युति शुभ राशि में शुभ सम्बन्ध में हो व १।३।५।९।१०।११ इन स्थानोंमें हो तो बुद्धिमत्ता अच्छी होती है। किसी भी विषय को सूक्ष्मता से समझना, संशोधन, गहन विचार, विस्तृत ग्रहणशक्ति, दूरदृष्टि से सम्पन्न होते है। इन्हें शिक्षा की अवधि मे पहली श्रेणी नही मिलतीं। यह युति अशुभ सम्बन्ध में हो तो शिक्षा अधूरी रहती है। बुद्धि चंचल, बरताव विक्षिप्त व अस्थिर, स्वभाव घमंडी होता है। खुद को होशियार व दूसरों को मूर्ख समझते है। इस का क्रोध क्षणिक होता है। अन्य स्थानों में यह योग हो तो बुद्धि शान्त, समाधानी होती है। शिक्षा नही होती, व्यवसाय मे स्थिरता नही होती। दो विवाह होते है। ये क्रोध मे बहकते नही, मित्र काफी होते है। इन स्थानों मे अशुभ सम्बन्ध मे यह योग हो तो मस्तिष्क के विकार होते है—फिट आना, भ्रम, पागलपन, निद्रानाश, बालग्रह, सूखा, स्मरणशक्ति नष्ट होना, हिस्टेरिया आदि की सम्भावना होती है।

राहु व गुरु

इन की युति शुभ सम्बन्ध मे हो तो सन्मान बहुत मिलता है। अधिकार की इच्छा न होते हुए भी अधिकार मिलता है। लोकप्रिय हो कर विधानसभा आदि का सदस्य चुना जाता है। बुद्धिमान, व्यासंगी, होशियार होता है। यह युति १।५।९।१० स्थानों में बहुत अच्छा फल देती है। २।४।७।११ मे कुछ कम फल मिलता है। सम्पत्ति अच्छी मिलती है, शिक्षा कम होती है। ३।६।८।१२ इन स्थानों मे सम्पत्ति कम, शिक्षा

अधिक होती है । पराशर के मतानुसार राहु व गुरु धनु या मीन मे हो और गुरु षष्ठ या अष्टम का स्वामी हो तो अल्पायु योग होता है । इस के टीकाकार ने यह अर्थ किया है कि राहु व गुरु लग्न मे धनु या मीन मे हो तो अरिष्ट योग होता है—द्वयं राहुयुक्तगुरुरिति यस्य जन्मलग्ने धनुः मीनराहुरस्ति तत्र राशिगते गुरौ रिष्टसम्भवो वाच्यः । तत्त्रिकोणे वा अथवा यत्रकुत्र राशौ राहुयुक्तो गुरुरस्ति तत्र राशिगते शनौ अरिष्टसम्भवो वाच्यः ॥ त्रिकोण मे अथवा अन्यत्र राहु के साथ गुरु हो व शनि भी हों तो अरिष्ट का योग होता है । अष्टमस्थान मे धनु या मीन मे राहुगुरुयुति हो तो अल्पायु होना सम्भव है । साधारणतः गुरु ब्राह्मण वर्ण का और राहु चाण्डाल जाति का माना जाता है अतः इन की युति गुरुचाण्डाल योग के रूप मे अशुभ मानी जाती है । किन्तु अनुभव में यह शुभ फल देनेवाली सिद्ध हुई है । इन ग्रहों के युति या प्रतियोग के फलस्वरूप कोई व्यक्ति बहुत धनी या कीर्तिमान हो तो उस के वंशजों की स्थिति प्रायः बिगडते जाती है । इस पुरुष को कीर्ति मिली हो व द्रव्य न मिला हो तो अगली पीढी के लोग शिक्षा पूरी कर अच्छा धनार्जन करते है यद्यपि उन्हें कीर्ति नही मिलती ।

राहु व शुक्र

इन की युति शुभ सम्बन्ध मे हो तो विवाह आकस्मिक होता है । स्त्री निर्धन तथा सम्बन्धीरहित घर की होती है । स्त्रीसुख अच्छा मिलता है । पति के पहले पत्नी का मृत्यु होता है । यह परस्त्री से पराङ्मुख होता है । यह युति ३।६।७।८।१२ इन स्थानों मे अशुभ होती है । एक स्त्री से चिरकाल सुख नही मिलता । व्यवसाय मे कठिनाइयां आती है । विवाह के बाद आर्थिक कष्ट होता है ।

राहु व शनि

इन की युति शुभ सम्बन्ध मे हो तो बुद्धि गहरी, परिपक्व, गूढ, अगाध होती है । बरताव लोकविलक्षण होता है । व्यवसाय में चतुराई से

बहुत धन मिलता है। बैन्क, कारखाने, कम्पनियां, शेअर-बाजार, सट्टा, विदेश-व्यापार आदि से कीर्ति व धन मिलता है। दयालु, शान्त, जन्म-जात श्रेष्ठता से विभूषित होता है। खास शिक्षा के बिना ही विद्वान के रूप मे प्रसिद्ध होता है। व्यवहारकुशल, न्याय को समझनेवाला, लोगों की सुनकर अपने मन की करनेवाला होता है। थोडा किन्तु मार्मिक बोलता है, काम अधिक करता है। परोपकारी, आत्मविश्वासी कर्तृत्ववादी, दैव-वाद का विरोधक, महत्त्वाकांक्षी, प्रभावशाली होता है। हजारों लोगों के रोजगार का प्रबन्ध करता है। सामाजिक व शिक्षाविषयक क्षेत्र मे दान द्वारा कीर्ति मिलती है। क्रान्ति के इच्छुक, अध्यात्मप्रेमी, संस्थाओं के स्थापक होते है। यह युति मध्यम रूप मे हो तो वे लोग अपने काम मे मग्न, लोगों से अलग रहते है। शान्त रीति से नौकरी या साधारण व्यव-साय करते है। स्त्री-पुत्रों का सुख अच्छा मिलता है। सूद, रेसमे एजन्ट (बुकी), इंजिनियरिंग, वॉटरवर्क्स, प्लम्बिग द्वारा धनार्जन होता है। यह युति अशुभ हो तो व्यवसाय में या नौकरी में हमेशा हानि, दीनता, सदा कर्ज रहना, एक के पीछे एक आपत्ति, दूसरों की हानि करनेकी इच्छा ये फल होते है। ये लोग अपने ही घर का नुकसान करते है। भ्रमिष्ट, पैशाचिक वृत्ति के धर्म छोडनेवाले, भाषण में क्रूर व अश्लील होते है। दूसरों को ताने देकर कष्ट देते है। खुद को होशियार, दूसरों को मूर्ख समझते है। दूसरों पर आश्रित रहते है, समाज के अच्छे काम में विघ्न लाते है। निन्दा में निपुण, लोभी, परद्रव्य के इच्छुक, मत्सरी, क्रोधी, अकारण अपकार करनेवाले, व्यभिचारी, अविचारी होते है। इन के घर मे किसी को भूत प्रेत की बाधा होती है। (राहुकेतुसमायुक्ते बाधा पैशा-चिकी स्मृता-सर्वार्थ-चिन्तामणि)।

यह युति लग्न में मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक या मीन मे हो तो दीर्घायु होता है। बचपन मे माता या पिता का मृत्यु होता है। बचपन दुःखमय होता है। उपजीविका मे विघ्न होते है। दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय शुरू होता है। पुत्रसन्तति मे विघ्न होते है। प्रगति करते है। अन्य राशियों मे अशुभ फल होते है। धनस्थान मे शुभ राशि मे अन्य

ग्रहों से शुभ सम्बन्ध मे हो तो एक विवाह, सन्तति बहुत, पूर्वार्जित धन की वृद्धि होती है। यह व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी अधिक करता है। अन्य ग्रहों से अशुभ योग हो तो पूर्वार्जित सम्पत्ति नही मिलती। बचपन मामा या मौसी के घर बीतता है। बहुभार्यायोग होता है। वरिष्ट अधिकारी की कृपा से नौकरी मे तरक्की होती है। सन्तति बहुत होती है। दुसरे विवाह के बाद भाग्योदय हो कर पेन्शन के बाद सुखपूर्वक रहते है। घर, स्थावर सम्पत्ति अर्जित करते है। तृतीय स्थान में शुभ सम्बन्ध मे हो तो २६ वे वर्ष तक बहुत कष्ट रहता है। बचपन मे माता की व थोडे ही दीन बाद पिता की मृत्यु होती है। भाई के साथ बटवारा होता है। बटवारा नही हुआ तो एककी प्रगति रुकती है। धीरेधीरे भाग्योदय होकर अन्त तक कायम रहता है। स्वभाव शान्त होता है। विवाह एक, नौकरी या व्यवसाय मे स्थिरता ये फल मिलते है। चतुर्थ स्थान मे शुभ सम्बन्ध मे हो तो धन या पुत्रसन्तति मे एक की प्राप्ति होती है। पिता अल्पायु, माता दीर्घायु होतीं है। बडे व्यवसाय मे लाभ, दान से कीर्ति प्राप्त होती है। धन व कीर्ति के साथ पुत्रलाभ नही होता अतः दूसरा विवाह करते है। दत्तक लेने का सम्भव होता है। बडी संस्थाओं को विपुल दान देते है। उदार होते है किन्तु आलसी लोगों या अविश्वसनीय संस्थाओं को बिलकुल मदद नही करते। बुद्धिमान, व्यवहार कुशल, प्रसंगावधानी, बहुश्रुत, व्यासंगी होते हैं। खाने, इजिनीयरिंग, खेती, बिल्डिंग, लोहा-चुना पत्थर, मिट्टी, बालू, बिदेशी यन्त्र, स्थावर सम्पत्ति के दलाल आदि के व्यवसाय मे विपुल धन मिलता है। इन्हें अपनी मृत्यु का पहले आभास मिलता है। पंचम स्थान मे यह युति हो तो बिवाह मे विलम्ब, दो विवाह, बहुत सन्तति होकर दो तीनही जीवित रहना, अच्छा ऐहिक सुख, कीर्ति, विक्षिप्त स्वभाव, कथनी-करनी मे अन्तर, पहले स्वार्थ-फिर परमार्थ, अविश्वासी स्वभाव, जगत को विरोधी समझना, वृद्ध वय मे पत्नी-पुत्रों का विरोध ये फल मिलते है। षष्ट स्थान में-विरोध बहुत होता है, अन्त मे शत्रु नष्ट होते है। विचित्र रोग, सर्दी, सन्धिवात आदि होते है। तरुणायू मे ही स्त्री की मृत्यु होती है। अधिकार, धन, सन्मान मिलता है। वृद्धावस्थामे शारिरीक कष्ट बहुत होता है। कोई आनुवंशिक रोग रहता

है । सप्तम स्थान मे-दो विवाह की प्रवृत्ति होती है । दूसरे विवाह के बाद व्यवसाय मे बहुत लाभ होता है । एक ही विवाह होंकर सन्तति हुई तो धनलाभ नही होता । बडे व्यवसाय में बहुत लाभ होता है । किन्तु फिर हानि भी होती है । पतिपत्नी में कलह नही होता, वृद्धायू मे पत्नी का प्रभुत्व होता है । पुत्रों का विरोध होता है । पूर्व आयु में सुख व उत्तर आयु मे दारिद्रय का योग होता है । यह बात ४-५ पीढी तक चलती है जो कुल के किसी स्त्री के शाप का परिणाम होता है । अष्टम स्थान में–स्त्री दरिद्र कुटुम्ब की होती है । अपने कष्ट से प्रगति करनी पडती है । धन काफी मिलता है व खर्च भी होता है । उत्तर आयु मे दारिद्रय आता है । दीर्घायु होते है । मृत्यु का आभास पहले मिल जाता है । यहां कर्क व सिंह राशि में शुभ फल मिलते है, अन्य राशियों मे साधारण फल मिलते है । नवमस्थान में–यह पिता का सब से बडा या छोटा पुत्र होता है । शिक्षा पूरी होती है । विवाह से इच्छापूर्ति नही होती, विजातीय या बडी स्त्री से प्रेम करते है । मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक, मीन व मिथुन मे–शिक्षा के लिए विदेश प्रवास होता है । भाग्योदय ३२ वे वर्ष से शुरू हो कर ४८ वे वर्ष बहुत उन्नति होती है । दशमस्थान मे–पूर्व वय में कष्ट रहता है । बाद में अच्छी प्रगति होती है । ३६ वे वर्ष से भाग्योदय होता है । विवाह अधिक होते हैं या सन्तति कम होती है, क्वचित सन्तति नही होती । कीर्ति बहुत मिलती है । लाभस्थान मे–धन अच्छा मिलता है । लोभी होता है । सन्तति मे बाधा होती है । लोगों मे निन्दा होती है । व्ययस्थान मे–जन्म समय की स्थिति से काफी तरक्की करते है । अधिकार व सम्पत्ति के लिये बूरे मार्गों का उपयोग करता है, खून, विषप्रयोग से भी नही डरता है । बाद मे ये सब बातें छुपाने के लिए बहुत दानधर्म करता है । पुत्र कम-एक या दो होते है । एक पुत्र की पिता के पहले मृत्यु होती है । स्त्री से हमेशा झगडा होता है । बडे व्यवसाय मे कीर्ति मिलती है, विदेश प्रवास होता है ।

इस प्रकरण मे राहु की अन्य ग्रहों के साथ युति के फल दिये है । केन्द्र व प्रतियोग मे भी ये फल मिलते है । धन, षष्ठ, अष्टम और व्यय मे

प्रतियोग के तथा तृतीय, पंचम, षष्ठ, अष्ठम, नवम व व्यय में केन्द्रयोग के फल विशेष तीव्र मिलते है।

प्रकरण ९ वा

राहु का द्वादशभावगत भ्रमण

राहु राशिचक्र मे उलटी परिक्रमा करता है—लग्न—व्यय—लाभ—दशम इस क्रम से भ्रमण करता है। भ्रमण के फल देखते समय मूल कुण्डली मे रवि व चन्द्र के साथ राहु के सम्बन्ध शुभ है या अशुभ यह देखना चाहिए। मूल सम्बन्ध शुभ हो तो भ्रमण के फल शुभ मिलते है, अशुभ हो तो अशुभ मिलते है।

लग्नस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर या मीन लग्न मे राहु का भ्रमण मन को शान्ति देता है, वृत्ति गम्भीर होती है, बडे व्यवसाय की योजना बनती है, यश मिलता है। अच्छे कामों से लोगों पर प्रभाव रहता है। धनी स्त्री से सम्बन्ध आता है। लोग मदद करते है। व्यवसाय ठीक चलता है। लोगों के विवाह, उपनयन आदि मे मदद होती है। मेष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, कुम्भ लग्नमे से राहु का भ्रमण हो तो स्त्री-पुत्र बीमार होतें है। व्यवसाय में व छोटे कामों मे भी असफल होता है। मन अशान्त, विक्षिप्त होता है। स्मरणशक्ति दुर्बल होती है। अपने नुकसान के काम करता है, लोग गलती बतायें तो मानता नही। थोडे से संकट से घबराता है। मन दुर्बल, मस्तिष्क भ्रमिष्ट होता है। पेट में दर्द, पित्त-विकार होता है।

व्ययस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर व मीन में इस स्थानो मे से राहु का भ्रमण हो तो, कर्ज दूर होता है। प्रवास बहुत होता है, नयें परिचयों से लाभ होता है, स्त्री को साधारण शरीरकष्ट होता रहता है, अच्छे काम होते है। व्यवसाय ठीक चलता है, नौकरी में तरक्की होती है, कीर्ति मिलती है। अन्य राशियों में—व्यवसाय में दिवाला निकलता है।

मूल कुण्डली में द्विभार्या योग हो तो इस समय पत्नी की मृत्यु होती है। हमेशा कर्ज लेने से अपमान होता है। लोगों का विश्वास नही रहता। घर में किसी स्त्री को पिशाचबाधा होती है। स्त्री के साथ झगडे होते है। अपने लोगों से विरोध बढता है। खर्च बहुत होता है। लोगों का कर्ज चुकाना पडता है किन्तु इन की बाकी वसूल नही होती। घडी, फाउन्टन पेन, पाकिट, जूते, छाते, कपडे आदि चुराये जाते है।

लाभस्थान—वृषभ, कन्या, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर व मीन मे भ्रमण हो तो व्यवसाय अच्छा चलकर लाभ होता है। कन्या होती है। अनपेक्षित मदद मिलती है। चुनाव मे जीतते है। अपने काम छोडकर परोपकार मे समय बिताते है। किसी लावारिस का धन मिलता है। काम पूरे होकर कीर्ति मिलती है। अन्य राशियों में भ्रमण से व्यवसाय में नुकसान होता है। लेनदेन में झगडों से हानि होती है। सन्तति को कष्ट, चुनाव में हार, कामों में असफलता, विघ्न आदि से कष्ट होता है।

दशमस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, मकर, वृश्चिक व मीन में भ्रमण हो तो लोगों की सहानुभूति से चुनाव में जीत, उद्योग में सफलता, लाभ मे वृद्धि, नौकरी में तरक्की, अकस्मात पदवृद्धि, बडों की मदद, इस्टेट में वृद्धि, बडे कामों में सफलता, कीर्ति, अदालती मामलों में जीत, अधिकारियों की अनुकूलता आदि फल मिलते है। अन्य राशियों में भ्रमण हो तो नौकरी में हानि, सरकारी धन का अपव्यय, अधिकारी की प्रतिकूलता, कनिष्ठों का असन्तोष, मानहानि, व्यवसाय में दिवाला, पुत्र का मृत्यु आदि से कष्ट होता है।

नवमस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन में भ्रमण हो तो प्रवास, विवाह की सम्भावना, विदेशयात्रा, तीर्थयात्रा, पत्नी की अनुकूलता, भाईबहिनोंका विवाह, अध्ययन से कीर्ति होती है। अन्य राशियों में–भाई या बहन का मृत्यु या वैधव्य, भाईबहन को कष्ट, बेकारी, नीच स्त्री के सम्बन्ध से बेइज्जती, भाइयों में झगडा होकर बटवारा आदि फल मिलते है।

अष्टमस्थान–वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीनमें से भ्रमण हो व मूल कुण्डली में आकस्मिक लाभ का योग हो तो इस समय रेस, सट्टा, जुआ, लाटरी, शेअर आदि में या स्त्री सम्बन्ध से आकस्मिक लाभ होता है। पुत्र होता है। किन्तु अल्पायु होता है। लावारिस का धन मिलता है। अन्य राशियों मे–शारीरिक कष्ट, आर्थिक अडचने, मानसिक अशान्ति, ऐहिक सुख में विघ्न, धनहानि आदि से कष्ट होता है।

सप्तमस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन में से भ्रमण हो तो व्यवसाय में आकस्मिक वृद्धि, लोगों से मदद मिलना भाई से सहायता, स्त्रीसुख की प्राप्ति ये फल मिलते है। कन्या होती है। अन्य राशियों में–स्त्रीपुत्रों की बीमारी, व्यवसाय बन्द होना, कर्ज होना, लोगों का विश्वास न रहना, कर्ज के लिए अदालत के मामले होना, बंटवारा, नौकरी में नुकसान, स्थानान्तर स्त्री सम्बन्धी अपवाद आदि से कष्ट हो कर लाभ में विघ्न आते है।

षष्ठस्थान–वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन में से भ्रमण हो तो अदालती मामलों मे यश, शत्रु का नाश, चिन्ता दूर होना, व्यापार में वृद्धि, कर्ज दूर होना, स्त्रीसुख की प्राप्ति, पुराने मित्रोंसे व स्त्री सम्बन्धो से लाभ, खेलों में सफलता आदि फल मिलते है। अन्य राशियों में–अपने लोगों का विरोध, विश्वासघात, गुप्त शत्रुओं मे वृद्धि, व्यवसाय में हानि, कर्ज होना, अचानक नुकसान, स्त्री को शारीरिक कष्ट, स्त्री के मृत्यु की सम्भावना, पुराने साहूकारों का तकाजा, कोढ आदि रोग, अदालती मामलों में हार, खेलों मे हार आदि फल मिलते है।

पंचमस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन में भ्रमण हो तो सन्तति होना, कीर्तिदायक काम होना, शिक्षा पूरी होकर डिग्री मिलना, विवाह की सम्भावना, जीविका का आरम्भ आदि फल मिलते है। अन्य राशियों में सन्तति की मृत्यु, गर्भपात, भ्रम, पागलपन, सन्तति व स्त्री को शारीरिक कष्ट, स्त्रीसुख न मिलना, भाग्योदय शुरू होते ही विघ्न, पतिपत्नी में झगडे, पत्नी के बारे में सन्देह, अपवाद, अप-

कीर्ति, आर्थिक कष्ट, व्यवसाय में अरुचि, मित्रों का विरोध आदि फल मिलते हैं।

चतुर्थस्थान–इस स्थान मे सभी राशियोंमें से राहु का भ्रमण अनिष्ट हैं। आपत्ति, अस्थिरता, विरक्त भाव, घर में झगडे, शारीरिक कष्ट, पेट में दर्द, नौकरी में विघ्न, व्यवसाय बन्द होना, माता को शारीरिक कष्ट, स्थावर सम्पत्ति की हानि, आदि फल मिलते हैं।

तृतीयस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन में भ्रमण हो तो चित्त में समाधान, विघ्न दूर होकर काम पूरे होना, आत्म-विश्वास, बडे कामों की पूर्ति, इच्छाओं की पूर्ति, समाज व व्यवसाय में मान्यता, सन्मान, योग्यता में वृद्धि ये फल मिलते हैं। अन्य राशियों में भाइयों में झगडा, बटवारा बहनों का वैधव्य अथवा भाईबहनों को शारीरिक या आर्थिक कष्ट, प्रवास में कष्ट, पडोसियों से तकलीफ, बयानों या गवाहियों में झूठेपन का आरोप, आदि अशुभ फल मिलते हैं।

द्वितीयस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में भ्रमण हो तो धनलाभ, बडे व्यवसाय, स्थावर सम्पत्ति गिरवी रखी हो तो मुक्त होना, आदि शुभ फल मिलते हैं। अन्य राशियों में–अदालती मामलों में नुकसान, सबूत मिलने में देरी, व्यवसाय के लिए कर्ज, स्थावर सम्पत्ति गिरवी रखना, अन्त में स्थावर सम्पत्ति बेच देना, घर में स्त्रियों का व गांव के लोगों का विरोध आदि फल मिलते हैं।

भ्रमण में अन्य ग्रहों की युति के फल

जन्मस्थ राहू से गोचर राहु की युति हो तो आकस्मिक संकट, अकारण लोगों का विरोध, व्यवसाय या नौकरीमें हानि दांत और पेट के रोग, घर में बीमारी, प्रवास, स्थानान्तर आदि से कष्ट होता है। रवि से राहु का भ्रमण हो तो वरिष्ठ लोगों का रोष, अपमान, मन में उद्विग्नता, शारीरिक कष्ट, व्यवसाय में अडचनें आदि फल मिलते हैं। ये फल २।४।५।८।१२

इन स्थानों में तीव्र होते हैं, तथा आगे पीछे तीन महीनों तक मिलते हैं। चन्द्र से राहु का भ्रमण हो तो मन में विरक्ति, असमाधान व्यवसाय में नुकसान होने से नौकरी की जरूरत होना, बेइज्जती आदि फल मिलते हैं। ३।६।७।८।१०।१२ इन स्थानों में तीव्र फल मिलते है, तथा आगे पीछे पांच महीनों तक मिलते है। चन्द्र राहु पर से भ्रमण करता हो वे २१ दिन भी असमाधान, आर्थिक कष्ट, साहूकार का तकाजा आदि से तकलीफ होती है। किन्तु चन्द्र अगली राशि मे जाने पर अच्छा फल देता है। मंगल से राहु का भ्रमण हो तो खर्च बढना, व्यसनों से इस्टेट की हानि अदालती मामलों मे नुकसान, बुरे कामों मे रुचि, गुप्त रोग, कमर, पीठ मे रोग ये फल मिलते है। २।४।७।८।१२ इन स्थानों मे तीव्र फल मिलते है। मंगल राहु पर से ४५ दिन मे भ्रमण करता है। इन मे २० दिन बहुत कष्ट के होते है। बुध परसे राहु का भ्रमण हो तो बुद्धि मे विकृति, बयान व गवाही झूठी सिद्ध होना, स्मरणशक्ति नष्ट होना आदि फल मिलते है। २।३।५।६।८।१२ स्थानों मे पुरुष राशि मे बुध हो तो विशेष कष्ट होता है। स्त्री राशि मे अकेला बुध हो तो लेखक, कवि, उपन्यासकार, नाटककार, ज्योतिषी, विद्यार्थी आदि को यह समय अच्छा रहता है। गुरु से राहु का भ्रमण हो तो आकस्मिक विवाह, स्त्री से अच्छे सम्बन्ध, नौकरी मे तरक्की, व्यवसाय मे लाभ, कीर्ति, चुनाव मे जीत, विवाह हुआ हो तो पुत्रसन्तति, बडों के परिचय से लाभ, परीक्षा मे सफलता, लेखन मे यश व कीर्ति ये फल मिलते है। शुक्र से राहु का भ्रमण हो तो स्त्रीपुत्रों की बीमारी, धनहानि, घर मे स्त्रियों को भूतबाधा, शारीरिक कष्ट, गुप्त रोग ये फल मिलते है। २।४;६।८ इन स्थानों मे फल तीव्र होते है। शनिपर से राहु का भ्रमण हो और शनि या राहु केन्द्र या त्रिकोण मे हो तो व्यवसाय बन्द होना, दिवाला निकलना, कर्ज, बेइज्जती, नौकरी मे हानि, वरिष्ठों की अवकृपा, स्त्री पर संकट, पुत्र का मृत्यु आदि फल मिलते है। अन्य स्थानों मे अशुभ फल कम होते है। केन्द्र या त्रिकोण मे पुरुष राशि मे शनि या राहु हो तो तीव्र फल मिलते है ।

भावाधिपति के राहु से युति के योग

लग्नेश से युति १।५।९।११ स्थानों मे हो तों सन्तति जीवित न रहना, गर्भपात, शिक्षा में रुकावट, विक्षिप्त स्वभाव तीव्र बुद्धि, अच्छी स्मरणशक्ति ये फल होते है। लग्नेश रवि चन्द्र, मंगल या गुरु हो तो शुभ फल और शनि, बुध या शुक्र हो तो अशुभ फल मिलते है।

धनेश से युति हो तो दत्तक योग, स्त्री बीमार रहना, कुटुम्ब में अस्वस्थता, बडों के मृत्युयोग, व्यसन, पैतृक संपत्ति का नाश, व्यवसाय में आकस्मिक संकट, यश के लिए दीर्घ काल कष्ट, मानसिक कष्ट, व्यवसाय में उलझने, कर्ज ये फल मिलते है।

तृतीयेश से युति हो तो प्रयत्न से प्रगति, उस के पहले मातापिता का मृत्यु, भाई दत्तक जाना, भाई या बहन का अकस्मात मृत्यु, तृतीयेश ग्रह के उदय वर्ष से भाग्योदय ये फल होते है। चतुर्थेश से युति हो तों माता व पुत्रों को कष्ट, एक भाई की मृत्यु, सदा असफलता, साझीदारी मे विश्वासघात होना ये फल मिलते है।

पंचमेश से युति हो तो पुत्र जीवित न रहना, शिक्षा में रुकावट, तीव्र किन्तु विक्षिप्त बुद्धि, अस्थिरता, स्त्रीसुख कम होना, स्त्री सुन्दर किन्तु झगडालू मिलना, दो विवाह, खुद को कष्ट, सन्तति का भाग्योदय ये फल मिलतें है।

षष्ठेश से युति हो तो हमेशा अदालती मामलों में उलझने जीवनभर कष्ट, विविध रोग, संसार में कठिनाई ये फल मिलते है।

सप्तमेश से युति हो तो स्त्री से कष्ट, झगडे, अवैध स्त्री सम्बन्ध से सुख व धनलाभ, जीविका में रुकावटे, व्यसन, अदालती मामलों में उलझन, बहुत प्रवास ये फल हैं।

अष्टमेश से युति हो तो दीर्घकालीन रोग, अकस्मात मृत्यु होता है। अष्टमेश गुरु से २।४।८ स्थानों में से युति हो तो स्त्री सुख कम मिलना, पुत्रों का मृत्यु, बडे भाई का मृत्यु, अकस्मात धनलाभ, दत्तक जाना श्रीमान बनना ये फल मिलते है।

नवमेश से युति हो तो धर्म श्रद्धा नष्ट होना, सुधारवादी विचार, पुर्नविवाह, बहुत प्रवास, शिक्षा थोडी व जीविका में शिक्षा का उपयोग न होना ये फल है।

दशमेश से युति हो तो पुत्र न होना या बहुत देर से होना धीरेधीरे प्रगति, कीर्ति, उद्योग में स्थिरता, प्रयत्नवादी किन्तु प्रसंगवश दैववादी व निरुद्योगी होना, और दो विवाह ये फल मिलते है।

लाभेश से युति हो तो बारबार लाभ, लोगों में गलतफहमी, लोगों मे प्रमुख स्थान, पितापुत्र मे अनबन, प्रसंग के विपरीत बुद्धि ये फल है।

व्ययेश से युति हो तो अचानक खर्च, जमानत डूबना, विवाहित स्त्री से अच्छे सम्बन्ध, अवैध स्त्री सम्बन्ध से नुकसान, उद्योग के लिए विदेशगमन, भाईबहन और कुछ पुत्रों का और मातापिता का मृत्यु ये फल है।

प्रकरण १० वाँ

वंशानुगत फल विचार

मनुष्य की शुभाशुभ परिस्थिति मे उस के वंश की स्थिति का भी बडा परिणाम होता है, इस वंशानुगत फल का विचार राहु की स्थिति से करना चाहिए। विख्यात ब्रिटिश ज्योतिषी ई. एच्. बेलीने लन्दन के ब्रिटिश जर्नल ऑफ एस्ट्रालॉजी (मार्च एप्रिल १९३५) मे यही विचार व्यक्त किया है। इस पद्धति का एक उदाहरण देते है। एक क्ष व्यक्ति– जन्म शक १८४३ श्रावण शु० ६ की सुबह, मंगलवार ता. ९–८–१९२१ स्थान अक्षांश १५–५२ रेखांश ७४–३४ इष्ट घटी ५९–३०। इस व्यक्ति के दादा के १२ वे वर्ष में उनके पिता का मृत्यु हुआ। पिता थे तब तक बहुत वैभव था। उस के तुरन्त बाद एकदम दारिद्रय हुआ और वह तीन पीढी तक कायम रहा। प्रत्येक पीढी में पूर्ववय में थोडा सुख किन्तु मृत्यु के समय भयंकर दारिद्रय रहा बहुत प्रयत्नों के बावजूद असफल जीवन रहा। जैसे तैसे उदरनिर्वाह चला पर दादा के समय का बडा व्यवसाय
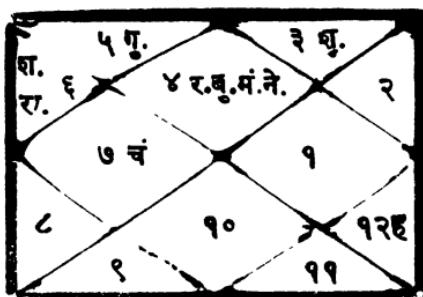
नष्ट होकर नौकरी करनी पडी तथा उस में भी कर्ज होकर भयानक दारिद्र्य हुआ। इस के स्पष्टीकरण के लिए हम इस व्यक्ति की कुण्डली में राहु के स्थान को उसके दादा का लग्नस्थान मानकर विचार करते है। यह कुण्डली इस प्रकार होगी—
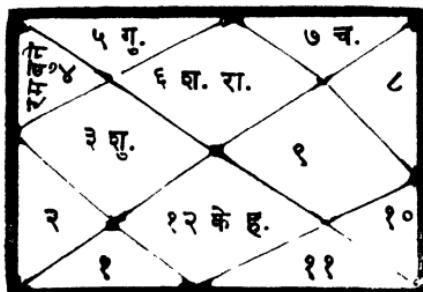
राहु के भ्रमण के अनुसार इस कुण्डली में भी राशियों का क्रम उलटा रखा है। अब इस कुण्डली से इस व्यक्ति के दादा का फलवर्णन कर सकते है। लग्न मे कन्या है, लग्नेश बुध तृतीय मे रवि, मंगल, नेपच्यून, से युक्त है—लग्नेशे तृतीये षष्ठे सिंहतुल्यपराक्रमी, सर्व-सम्पद्युतो मानी, द्विभार्यो मतिमान् सुखी ।। पराक्रमी, धनवान, मानी, बुद्धिमान, सुखी होकर दो विवाह होते है—इस फल का अनुभव ६० वें वर्ष तक पूर्ण रूप से मिला। किन्तु बाद में मृत्यु तक पूर्ण दारिद्र्य हुआ, अन्त्य-संस्कार भी दूसरों को करना पडा। लग्न मे शनि-राहु है अतः वर्ण सांवला, कद ऊंचा, छरहरा बदन, स्वभाव हठी, प्रभावी, बुद्धि गहन, दूर-दृष्टि, बरताव सरल, व्यवस्थित, उदार, परोपकारी हुए। कन्या लग्न

व्यापार के अनुकूल रहा। मुत्सद्दी, न्याय को समझनेवाले, चतुर, अतः कई साल तक ज्यूरर और असेसर रहे। माता का मृत्यु दूसरे वर्ष व पिता का बारहवें वर्ष हुआ। धनेश रवि तृतीय मे मंगल, बुध, नेपच्यून के साथ है तथा धनस्थान मे गुरु है—धनस्थाने गुरुर्यस्य अतिकष्टात् धनागमः— धनप्राप्ति कष्ट से होना इस का भी अनुभव मिला, जन्म समय अच्छी स्थिति थी वह नष्ट होकर स्वकष्ट से धनार्जन हुआ, और वह धन भी वृद्धायू में कायम नही रहा, बचपन मे चाचा ने सब इस्टेट हडप ली (उन्हें भी अन्त मे दारिद्र्य ही मिला), गुरु के कारण सरल मार्ग से धनार्जन किया, बुरे मार्ग से दूर रहे, परोपकार किया किन्तु उस धन का संग्रह नही हो सका। तृतीय मे धनेश रवि मंगल से युक्त है—धनेशे तृतीये तुर्ये विक्रमी मतिमान् गुणी। परदाराभिगामी च निश्चलो देवभक्तियुत्॥ पराक्रमी, बुद्धिमान, गुणवान, परस्त्री मे आसक्त, देवताओं मे भक्तिमान होना—इस फल का अनुभव पूरा मिला। तृतीयेश चन्द्र व्ययमें है–तृतीयेशे व्यये भाग्ये स्त्रीभिर्भाग्योदयो भवेत्। पिता तस्य महाचौरो सुसेवी दुःखदा सती। स्त्रियों से भाग्यवृद्धि होना, पिता चोर होना, स्त्री को कष्ट होना–ये फल भी ठीक मिले। तृतीय मे रवि, मंगल, नेपच्यून, बुध है अतः प्रसंगावधान, स्फूर्ति रही, सौतेली मां आई, व्यापार के लिए प्रवास बहुत हुआ, भाई नही थे, एक बडी व एक सौतेली बहन थी, बडी बहिन को एक कन्या होने पर वैधव्य हुआ, लंगडी हुई अतः भाई को पोषण करना पडा। अपने पराक्रम से प्रगति हुई। चतुर्थेश बुध तृतीय मे है—सुखेशे तृतीये लाभे नित्यरोगी धनी भवेत्। उदारो गुणवान दाता स्वभुजार्जित वित्तवान्॥ यह धनवान, उदार, गुणवान, अपने कष्ट से धनार्जन करनेवाला होता है—यह फल अनुभव से ठीक रहा, सिर्फ रोगी होना इस का अनुभव नही मिला। चतुर्थ मे मिथुन राशि मे शुक्र है अतः व्यापार में प्रवृत्ति हुई, शुक्र दूषित है अतः पैतृक संपत्ति नही मिली। चन्द्र के चतुर्थ और धन में पापग्रह है, अतः सौतेली मां से कष्ट हुआ। स्थावर सम्पत्ति का अभाव रहा, जन्मभूमि छोडकर उत्तर की ओर जाने पर भाग्योदय हुआ, ३६ वे वर्ष से ५६ वे वर्ष तक भाग्योदय होते रहा, फिर वृद्धावस्था में हानि, दुःख, दारिद्र्य, बेइज्जती आदि अशुभ फल मिले, अन्य

सहायता के बिना स्वकष्ट से प्रगति की। पंचमेश शुक्र चतुर्थ मे है अतः —सचिवश्चागुरुस्तथौ—मलाह देने मे निपुण ज्यूरर, असेसर रहे। पंचमेश पंचम से बारहवा है अतः पुत्र बुद्धिमान किन्तु भाग्यहीन हुए—पांच पुत्र हुए किन्तु दो जीवित रहे, शिक्षा के बिना ही कई भाषाएं सीखी, पुत्रों से सुख नही मिला। षष्ठेश मंगल तृतीय मे हैं—भाई नही थे, सत्कार्य के लिए समाज से झगडा किया, अदालत मे सफल रहे, दूसरों को अदालती मामलों मे नही फसाया, लोगों पर प्रभाव रहा। सप्तमेश गुरु धनस्थान मे है—द्यूनेशे नवमे वित्ते नानास्त्रीभिः समागमः। आरम्भी दीर्घसूत्री च स्त्रीषु चित्तं हि केवलम्। कई स्त्रियों से सम्बन्ध, कई कार्य करना, दीर्घ विचार करना इस का अनुभव मिला। इन के कुल में चार पीढी तक दो दो विवाह हुए। इसी स्थान मे हर्षल है अतः ३६ वें वर्ष तक अस्थिरता, अपने व्यवसाय में असफलता, साझीदारी मे यश यह फल मिला। इस हर्षल से स्त्री हठी, दुराग्रही, विक्षिप्त होती है ऐसा पश्चिमी ज्योतिषी कहते है। इस उदाहरण में इन का पहले एक कन्या से विवाह तय हुआ किन्तु वधूपक्ष के मतभेद से वह सम्बन्ध टूट कर दूसरी कन्या से विवाह हुआ, यह पत्नी मरने पर पुनः उसी पहली कन्या से विवाह हुआ। ये व्यापार के लिए बहुत प्रवास करते थे अतः साल मे दस महीने स्त्री से दूर रहना पडा। पश्चिमी ज्योतिषी का स्त्रीस्वभाव वर्णन यहां गलत सिद्ध हुआ—इनकी पत्नी उदार, दयालु, शान्त, स्नेहशील, शीलवान, सत्य-प्रिय, परोपकारी थी किन्तु उसे जीवन मे बहुत कम सुख मिला। इन का पहिला विवाह छोटे उम्र मे और दूसरा २० वे वर्ष हुआ। अष्टमेश शनि लग्न मे राहु के साथ है—अष्टमेशे तनौ कामे भार्याद्वयं समादिशेत्। विष्णुद्रोहरतो नित्यं व्रणे रोगः प्रजायते। दो विवाह होना यह फल ठीक सिद्ध हुआ, देवता विरोध और व्रणरोग का फल नही मिला। मृत्यु के पहले जलवात से सब शरीर फूला, एक दिन पहले मृत्यु का आभास मिला। धनस्थान मे गुरु है अतः स्त्री के पहले मृत्यु हुआ। एक साल बाद स्त्री का मृत्यु हुआ। पतिपत्नी दोनों का मृत्यु दारिद्र्य मे किन्तु वासनारहित शान्त मन से हुआ। नवमेश शनि लग्न मे राहुयुक्त है अतः हमेशा प्रवास, स्थानान्तर, स्थावर सम्पत्ति न होना, पिता से अनबन, ३६ वें वर्ष तक

अस्थिरता, एक दो सन्तानों की मृत्यु यह फल मिला। विवाह के बाद पत्नी के साथ विदेश यात्रा की कोशिश की किन्तु उस जमाने में सामाजिक रूढि का बन्धन था अतः जा नही सके, बंगाल में जाकर भाग्योदय हुआ, स्वभाव साहसी था। दशमेश गुरु धनस्थान में है-मनस्वी गुणवान् वाग्मी सत्यधर्मसमन्वितः। तेजस्वी, गुणवान, बोलने में चतुर, सत्य बोलनेवाले, धार्मिक होते है—इस का अनुभव ठीक मिला, व्यापार में सफल सन्मान व कीर्ति से युक्त हुए। लाभेश मंगल तृतीय में है। अतः अति प्रयत्न से लाभ होकर धन टिक नही सका, इच्छाएं अच्छी रही। व्ययेश शुक्र चतुर्थ में है तथा व्यय में चन्द्र है। दो विवाह हुए। अपने सुखोपभोग में तथा परोपकार में बहुत धन खर्च किया। इस कुण्डली में व्यय से चतुर्थ तक पांच ही स्थानों मे सब ग्रह है अतः पूर्व वय में कष्ट, मध्य वय में भाग्योदय मृत्युसमय दारिद्र्य, बडे व्यवसाय, परोपकार आदि फल मिला। इस कुण्डली में दारिद्र्य योग चार प्रकार के है। (१) चन्द्र के धनस्थान में शनिराहु की युति (२) शुक्र के दशम में शनिराहु (३) चन्द्र के तृतीयमें तथा लग्न से द्वितीय में गुरु (४) लग्न में शनिराहु-चन्द्र को राहु ग्रास कर रहा है तथा शुक्र, रवि, मंगल, बुध, गुरु, नेपच्यून इन सब के पीछे शनि है। इस कुण्डली में दारिद्र्ययोग तो है किन्तु दूसरों को कष्ट दे कर धन प्राप्त करने के योग नही है, यद्यपि लग्नस्थ शनिराहु ऐसे पापमूलक धन के कारक है। इन के पिता के द्वारा पापकृत्यों से अर्जित धन इन्हें मिला। इस का स्पष्टीकरण इन के कुण्डली के पितृस्थान को लग्न मान कर इन के पिता की कुण्डली बनाने से मिलेगा। यह कुण्डली इस प्रकार होगी—
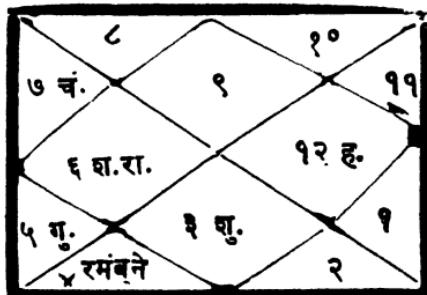
इन के मातापिता का मृत्यु बचपन मे हुआ, स्वकष्ट से धनार्जन किया, सप्तम मे शुक्र है अतः व्यापार मे सफल रहे। लग्न के चतुर्थ मे तथा चन्द्र के द्वितीय मे शनिराहु है। चतुर्थ में मिथुन, कन्या, धनु, कुम्भ में राहु पापमूलक धन का कारक है। सन १८५७ के विद्रोह में लोगों ने गांव छोडते समय इन के पास अपने धन, आभूषण आदि धरोहर रखे, बाद में इन्होंने वह सब धन किसी को लौटाया नही, तीनचार लाख रुपये इस तरह हडप लिये। इस पाप का फल इन के जीवन में तो नही मिला किन्तु अगली पीढियों को भयानक दारिद्रय के रूप में मिला। शुक्र के केन्द्र में शनिराहु है अतः दो विवाह हुए। कन्यालग्न के लिए ऐश्वर्यकारक शनि व शुक्र यहां अनिष्ट सम्बध में है अतः ऐश्वर्य कायम नही रहा। रवि मंगल के लाभस्थान में शनिराहु है अतः इस कुल में पांच पीढी तक यह हाल रहा कि पिता के जीवित रहने तक पुत्र का भाग्योदय नही हो सका, पुत्र का पिता को कोई लाभ नही हुआ।

सन १८५७ के विद्रोह में इसी तरह पापकृत्यों से धन प्राप्त करने-वाले एक व्यक्ति का उदाहरण हमने मध्यहिन्दुस्थान में देखा। इस व्यक्ति के मरते ही हानि शुरू होकर दारिद्रययोग हुआ। उस के बाद तीन पीढी तक घर में कोई भाग जाना, स्त्रीसुख का अभाव, तीनचार विवाह होकर भी एक ही सन्तान, शील का अभाव, सुख से भोजन न कर सकना यह हाल रहा। इस व्यक्ति को बचपन में सौतेली मां ने कष्ट दिया तथा धन का अपहार किया, इस के प्रतिशोध में इस ने बुढापे में उस मां को बहुत कष्ट दिया, बारबार दिन भूखी रखा, उस वृद्ध स्त्री के शाप का भी परिणाम इन्हें तीन पीढी तक भोगना पडा। इस उदाहरण में दादा की कुण्डली इस प्रकार थी--जन्म शक १७७९ श्रावण कृ० १३ रात्रि ११ (मद्रास टाइम) स्थान अक्षांश १६-१२ रेखांश ७५-४५ ता. १७-८-५७।
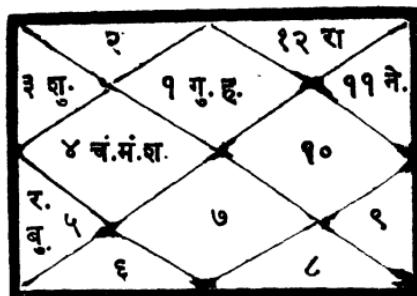
वंशपरम्परागत दोष के कारक ग्रहयोग और उन के फल इस प्रकार है--धन, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम या व्यय में राहु से निम्नलिखित ग्रहों की युति या प्रतियोग के तीव्र परिणाम होते है, अन्य स्थानों में कम होते है--

रवि व गुरु--कुल में किसी व्यक्ति की सम्पत्ति का अपहार करने से उसे दारिद्र्य आया, सम्पत्ति के लिए हत्या, विधवा स्त्री की धरोहर का अपहार आदि कृत्यों से उस पीडित व्यक्ति का शाप पांच पीढी तक कष्ट देता है-हर पीढी में दारिद्र्य, पागलपन, घर का कोई व्यक्ति लापता होना यह फल मिलता है। हत्या हुई हो वह व्यक्ति पिशाच के रूप में पीडा देता है।

चन्द्र व शुक्र--निर्दोष स्त्री को व्यभिचार का आरोप लगा कर कष्ट देना, स्त्रीधन अपहार आदि कृत्यों से स्त्री का शाप सात पीढी तक कष्ट देता है। हर पीढी मे पुरुष अविवाहित रहना, संन्यासी होना, स्त्रियों की अकाल मृत्यु, स्त्री को पिशाचबाधा, व्यवसाय में हानि, दारिद्र्य वगैरा फल मिलते है।

मंगल--व्यभिचार की आशंका से या सम्पत्ति के लोभ से हत्या या विषप्रयोग करना-इस के परिणाम तीन पीढी तक मिलते है--महारोग, कोढ, क्षय, गण्डमाला, गूंगापन, सांप या शेर द्वारा मृत्यु, स्त्री सुख का अभाव, स्त्रियों की मृत्यु ये फल मिलते है।

बुध—उपनयन अधूरा रह कर किसी बच्चे की मृत्यु होना, सौतिया डाह से बच्चे की हत्या करना इस का परिणाम—उस बच्चे के प्रेतात्मा द्वारा कष्ट होता है। वंश खण्डित होता है, दत्तक भी टिकते नही, अन्धापन, पागलपन, निर्वासन, दारिद्रय, निवास स्थान दूषित होना, रोग का निदान न हो कर धन बहुत खर्च होना आदि फल मिलते है।

शनि—आत्महत्या, पीडा से त्रुकता कर दिया हुआ शाप—इस का परिणाम सात पीढी तक चलता है। अगली पीढी के लोग शीलवान होने पर भी बहुत विपत्तियां आती है, पूर्ववय साधारण और उत्तरार्ध दारिद्रयपूर्ण रहता है। दो विवाह, सन्तति कम, कन्याएं तरुण वय में विधवा या परित्यक्ता होना यह फल मिलता है।

जन्मस्थ राहु की स्थिति से उस बालक के पूर्वजन्म के सम्बन्ध की भी कुछ कल्पना हो सकती है। लग्न में राहु हो तो दादा या नाना की आत्मा इस बालक की हो सकती है अथवा वह छोटे भाई का लडका हो सकता है। ऐसे उदाहरण में इस बालक का और दादा का जन्मलग्न एक ही पाया जाता है। धनस्थान में राहु अथवा धनेश के साथ राहु हो तो वह बालक माता का बडा भाई, जामात का पिता या अन्य कुटुम्बीय व्यक्ति का पुनर्जात रूप हो सकता है। तृतीय में अथवा तृतीयेश के साथ राहु हो तो भाई, बडे भाई के लडके, माता के चाचा आदि हो सकते है। चतुर्थ में अथवा चतुर्थेश के साथ राहु हो तो माता, परदादा, ससुर, मित्र आदि हो सकते है। पंचम में अथवा पंचमेश के साथ हो तो पुत्र, दादा का बडा भाई आदि हो सकता है। षष्ठ में अथवा षष्ठेश के साथ हो तो मामा, मौसी, दादा के चाचा या शत्रु पक्ष का कोई व्यक्ति हो सकता है। सप्तम में या सप्तमेश के साथ हो तो पत्नी, पत्नी के घर के लोग, दादा हो सकते है। अष्टम में या अष्टमेश के साथ हो तों पिता के बडे भाई, ससुर के घर के लोग हो सकतें है। नवम में या नवमेश के साथ हो तो छोटे भाई, बहने, पिता के चाचा, साले आदि हो सकतें है। दशम में या दशमेश के साथ हो तो पिता, मामा या मौसी की सन्तान हो सकती है। लाभस्थान में या लाभेश के साथ हो तों बडे भाई या अन्य पुत्र आदि हो

सकते है। व्यय में या व्ययेश के साथ हो तो चाचा, पिता की बहने; पत्नी के मामा, पुत्र, भाई हो सकते है। ऐसा देखा जाता है कि पूर्वजन्म में कुल के प्रति सद्भावना रखनेवाला व्यक्ति इस जन्म में भी कुल को बढाता है। तथा पूर्वजन्म में शत्रुपक्ष का रहा हुआ व्यक्ति इस जन्म में कुल की हानि करता है। इस प्रकार राहु से वंशपरम्परा व जन्मान्तर विषयक विचार का स्पष्टीकरण हुआ।

फलज्योतिष पर दो मुख्य आक्षेप लिये जाते है। एक यह कि एक ही पिता के छह पुत्रों की कुण्डलियां भिन्न भिन्न है तो उन पुत्रों के पिता को एक ही फल कैसे मिल सकता है। इस का उत्तर यह है की एक विशिष्ट फल एक ही ग्रहयोग से मिले यह जरूरी नही है। भिन्नभिन्न ग्रहयोगों से भी समान फल मिलता है अतः छह पुत्रों की कुण्डलियों के पितृस्थान के योग भिन्न होने पर भी फल समान हो सकते है। अतः ऐसे उदाहरणों में भिन्न भिन्न ग्रहयोगों का पूरा विचार करना चाहिए। दूसरा आक्षेप यह है कि मनुष्य की सब शुभाशुभ परिस्थिति पूर्वजन्म के कर्म पर आधारित है, उस में दूसरा कोई कुछ परिवर्तन नही कर सकता। किन्तु यह मत भारतीय परम्परा के प्रतिकूल है। गीता में किसी भी कार्य के पांच कारण बताये है—आधार, कर्ता, कारण, कार्य और दैव–इन पांचों को मिल कर कोई कार्य होता है–अधिष्ठानं तथा कर्ता कारणं च पृथग्विधम्। विविधाश्च पृथक् चेष्टाःदैवं चैवात्र पंचमम्॥ इसी तरह महाभारत में भीष्म ने धर्मराज से कहा है—यदि किसी को उस के पाप का फल उस के जीवन मे न मिले तो वह उस के पुत्रपौत्रो को अवश्य मिलता है—पापं कर्मकृतं किंचित् यदि तस्मिन् न दृश्यते। नृपते तस्य पुत्रेषु पौत्रेष्वपिच नप्तृषु॥ अतः किसी व्यक्ति की शुभाशुभ परिस्थिति में उस के सम्बन्धी अन्य व्यक्तियों के परिणाम का भी अवश्य विचार करना चाहिए।

प्रकरण ११ वाँ

महादशा विचार

राहु की महादशा १८ वर्ष होती है। आर्द्रा, स्वाति तथा शततारका जन्मनक्षत्र हों तो जन्म से १८ वें वर्ष तक, मृग, चित्रा, धनिष्ठा जन्म-नक्षत्र हो तो ८ वें वर्ष से २६ वें वर्ष तक; रोहिणी हस्त, श्रवण नक्षत्र हो तो १८ से ३६ वे वर्ष तक, कृत्तिका, उत्तराषाढा, उत्तरा नक्षत्र हो तो २३ वे वर्ष से ४१ वे वर्ष तक, भरणी, पूर्वा, पूर्वाषाढा नक्षत्र को ४३ से ६१ वे वर्ष तक यह दशा होती है।

महादशा के फल देखते समय मूल कुण्डली में राहु और अन्य ग्रहों के सम्बन्ध का विचार अवश्य करना चाहिए। राहु अन्य ग्रहों से शुभ सम्बन्ध में हो और अकेले चन्द्र से अशुभ सम्बन्ध में हो तो भी उस के फल अशुभ मिलते है। दशम में कर्क या सिंह में राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो अतिशय उन्नति कारक होता है किन्तु वही चन्द्र के साथ हो तो सब शुभ फल नष्ट होते है। ग्रन्थकारों ने जन्मस्थ राहु उच्च हो तो दशाफल में सुख, मित्रप्राप्ति, राज्यवैभव, धनधान्यसमृद्धि यह वर्णन दिया है तथा नीच राशि में राहु की दशा हो तो चोर, अग्नि, राजदण्ड, कैद, फांसी, विषबाधा आदि के भय का फल बताया है। किन्तु हमारे अनुभव में उच्च राहु के फल अशुभ और नीच के शुभ होते है। अब हम कुण्डली में राहु की स्थिति के अनुसार दशाफल का वर्णन करते है।

लग्नस्थान---वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन मे राहु हो तो–यह दशा बचपन मे हो तो स्वास्थ्य अच्छा रहता है। शिक्षा अच्छी होती है। माता-पिता की स्थिति अच्छी रहती है। तरुण आयूं में दशा हो तो बडे व्यवसायों की इच्छा होती है। अदालतों में जय मिलता है, विवाह हो कर पहली पुत्रसन्तती होती है, शिक्षा पूरी हो कर डिग्री मिलती हैं, नौकरी में जलदी तरक्की होती है, बडे लोगों के परिचय से लाभ होता है। मेष, मिथुन, तुला, धनु, कुम्भ में---बचपन की दशा में

सूखा, नजर लगना, चेचक, अतिसार, दांत आते वक्त तकलीफ, बोलना सीखना देर से, शिक्षा में रुकावटें मैट्रिक या बी. ए. में फेल होना, आदि से कष्ट होता है। तरुण आयुमें दशा हो तो दो विवाह होना, पहली कन्या सन्तति होना, सन्तति मृत होंना, अपने लोगों से विरोध होना, नौकरी या व्यवसाय में हानि, व्यसन, अपमान, दूसरों की गुप्त बातें खोजकर अफवाहे फैलाना आदि अशुभ फल मिलते है।

धनस्थान—वृषभ, कर्क, सिह, कन्या, वृश्चिक, मकर में राहु हो तो—बडे व्यवसाय, नौकरी छोड कर स्वतन्त्र व्यवसाय करना, काम में सफलता, पूर्वाजित इस्टेट न होते हुए अपनी मेहनत से कमाई, दूरदृष्टि, अदालतों में जय, शिक्षा का अच्छा उपयोग होना, शिक्षा कम मिलना, अच्छा भोजन मिलना, लावारिस का धन मिलना आदि फल मिलते है। अन्य राशियों में—व्यवसाय मे दिवाला निकलना, कर्ज, बेइज्जती, अपने लोगों का व स्त्री का विरोध, भाइयों से झगडे, अदालत में असफलता, स्त्री का मृत्यु, कन्या सन्तति होना, अन्न अच्छा न मिलना, मेहमान ज्यादा होने से कष्ट, काम की दिशा गलत होना, वृद्ध वय में पुत्रलाभ, कुटुम्ब-सौख्य में कमी ये फल मिलते है।

तृतीयस्थान—वृषभ, कर्क, सिह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में अन्य ग्रहों से शुभ सम्बन्धित राहु की दशा हो तो स्वकष्ट से प्रगति होती है। शिक्षा में रुकावटें आती है। किन्तु शिक्षा अच्छी मिलती हैं। व्यवसाय में धन मिलता है। नौकरी हो तो बडे अधिकारी प्रसन्न रहते हैं, तरक्की होती है। दूर के प्रवास, विदेश यात्रा होती है। स्त्री अच्छी मिलती है। पुत्रलाभ होता हैं। यह दशा भाइयों की एकत्रित प्रगति के लिए ठीक नही होती, अतः बंटवारा अच्छा रहता है। अन्य राशियों में अशुभ योग में राहु हो तो—वाममार्ग से प्रगति करता है। लोगों में निन्दा होती है, निर्दय होता है। भाइयों को मारक योग होता है। उन का कुटुम्ब देखना पडता है। कन्याएं विधवा होती है। उद्योग या नौकरी में अस्थिरता रहती है। प्रवास जरूरी होने पर भी कर नही पाते। स्त्री-पुत्रों का वियोग होता है। मित्र कम होते है।

चतुर्थस्थान—चतुर्थराशिस्थितराहुदाये मातुर्विनाशं त्वथवा तदीयम्। क्षेत्रार्थनाशं नृपते. प्रकोपं भार्यादिपातित्यमनेकदु:खम् ।। राहु चतुर्थ में हों तो उसकी दशा मे माता की मृत्यु धन और जमीन की हानि, राजा का क्रोध, स्त्री पतित होना आदि से कष्ट होता है। चौराग्निबन्धार्तिमनो-विकारं दारात्मजानामपि रोगपीडाम्। चतुर्थराशिस्थितराहुदाये प्रभग्न-संसारकलत्रपुत्रम् ।। इसे चोर, आग, कैद, मानसिक विकार, स्त्री-पुत्रों को रोग होना, संसार व स्त्री-पुत्रों का नाश होना आदि कष्ट होते है।

हमारे अनुभव में यह राहू वृषभ, कर्क, सिह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन मे अन्य ग्रहों से शुभ योग मे हो तो इस की दशा मे माता को अति शरीर कष्ट से व्यंगता आती है। पत्नी रोगी होती है। व्यवसाय मे नुकसान होता है, नौकरी ठीक रहती है। एक भाई की मृत्यु होती है। उदरनिर्वाह से अधिक धन नही मिलता। मिथुन, कन्या, धनु, कुम्भ मे यह राहु हो तो पूर्वाजित इस्टेट में वृद्धि होती है, गोद लिए जाने से बडी सम्पत्ति मिलती है अथवा किसी लावारिस का धन मिलता है। दो विवाह होते है। पुत्र होते है किन्तु उन से सुख नही मिलता। माता पिता का सुख नष्ट होता है। अन्य राशियों मे आर्थिक व मानसिक कष्ट रहता है, व्यवसाय या नौकरी मे तकलीफ होती है। मृत्यु किराये के घर में, बुरी हालत मे होती है।

पंचमस्थान—बुद्धिभ्रमं भोजनसौख्यनाशं विद्याविवादं कलहं च दु:खम्। कोपं नरेन्द्रस्य सुतस्य नाशं राहो: सुतस्थस्य दशाविपाके ।। इस राहु की दशा मे बुद्धि मे भ्रम, भोजन नष्ट होना, विवाद, झगडे, दु:ख, राजा का क्रोध तथा पुत्रनाश ये फल मिलते है। यह वर्णन अनुभव से मिलता है। राहु, वृषभ, कर्क, सिह, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन मे हों तथा अन्य ग्रहों से शुभ योग मे होकर दशा बचपन मे हो तो बुद्धि अच्छी होती है, शाला मे कीर्ति होती है, किसी विषय मे प्रावीण्य मिलता है। कॉलेज मे भी अच्छी कीर्ति मिलती है। प्रयत्न हुआ तो डाक्टरेट मिल सकती है। सिनेमा मे धन व कीर्ति मिल सकती है। विवाह जल्दी होकर पुत्र सन्तति होती है। इन की कीर्ति जीवनतक होती है, मृत्यु के बाद लोग भूल

जाते है । राहू अन्य राशि मे तथा अन्य ग्रहों से अशुभ योग मे हो तो बुद्धि अच्छी होती है किन्तु प्रयत्न करने पर भी धन नही मिलता अतः लोग इसे भ्रमिष्ट, मूर्ख समझते है । सुख नष्ट होता है । स्त्री-पुत्र नही होते । किसी विषय मे अति परिश्रम के साथ संशोधन करते है—उस से जीवन भर उपहास, निन्दा, कष्ट, दारिद्र्य मे रहते है–मृत्यु के बाद कीर्ति होती है । बडे व्यक्तियों का परिचय, दैवी दृष्टान्त, स्वप्न, सत्पुरुषों का दर्शन, परमार्थ की ओर प्रवृत्ति इस दशा मे होती है । इसे भोजन कभी अच्छा नही मिलता, बासे पदार्थ खाने पडते है—उस मे भी कंकड आदि रहते है । लोगों से अकारण शत्रुता होती है । सर्वत्र अपमान होता है । यह अनुभव मेष, सिंह, धनु मे विशेष मिलता है । स्त्री से बनती नही । दो विवाह होते है । स्त्री पति को छोड कर अलग रहती है । अथवा हमेशा बीमार रहती है । अपवाद फैलता है । धन नष्ट होकर भ्रमिष्ट स्थिति होती है । व्यभिचारी, कुसंगति मे रहनेवाला होता है । इस का परिणाम जीवन भर भोगना पडता है ।

षष्ठस्थान—यहां वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा मीन मे राहु अन्य ग्रहों के शुभ योग में हो तो उसकी दशा में लोगों के साथ अकारण झगडे होते है । किन्तु अन्त में कष्ट से यश मिलता है । स्वास्थ्य अच्छा रहता है । बडे कार्य होते है । परिश्रमपूर्वक प्रगति होती है । बडे अधिकारी वश होकर काम कर देते है । अन्य राशियों में अन्य ग्रहों से अशुभ योग में राहु हो तो अपने लोगों द्वारा विरोध बहुत होता है । शत्रु विजयी होता है । निन्दा सहन करना पडती है । चमत्कारिक रोग होते है । मामा, मौसी व एक भाई को मारक योग होता है । मन संसार से विरक्त होकर मोक्ष की ओर झुकता है ।

सप्तमस्थान—यहां वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में अन्य ग्रहों के साथ शुभ योग में राहु हो तो इस की दशा में शिक्षा पूरी होती है किन्तु शिक्षा का व्यवसाय में कोई उपयोग नही होता । पत्नी एक हो कर सन्तति हुई तो व्यवसाय मे हमेशा परिवर्तन होता है । दो विवाह हुए तो व्यवसाय में स्थिरता रहती है, पतिपत्नी प्रेमपूर्वक रहते है ।

पत्नी हमेशा बीमार रहती हैं। नौकरी में स्थिरता रहती है, तरक्की जल्दी होती है। सन्तति बहुत होती है--उस में पुत्र अधिक होते है। राहु अन्य राशियों में अशुभ योग में हो तो--स्त्री का मृत्यु होता है। विवाह देर से होता है। पत्नी इच्छानुसार नही मिलती। झगडे होते है। कदाचित विभक्त रहती है। व्यवसाय में दिवाला निकलना, विदेश में भटकना' व्यवसाय बारबार बदलना, व्यभिचार में धनहानि, अस्वास्थ्य, पुत्रों की मृत्यु, गर्भपात, दीनता, कर्ज बहुत बढना, कारावास का भय, शिक्षा न होना, हमेशा फेल होंना, कुसंगति आदि अशुभ फल मिलते है।

अष्टमस्थान---यहां वृषभ, कर्क, सिह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में अन्य ग्रहों से शुभ योग में राहु हो तो इस की दशा में अयोग्य मार्ग से धन मिलता है। विक्षिप्त बरताव के कारण लोग इससे डरते है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है। दीर्घायु होता है। दशा के अन्त में भाग्योदय होता है। पुत्रसन्तति बहुत होती है। राहु अन्य राशियों में अशुभ योग मे हो तो दीर्घकाल के रोग होते है। फौजदारी मामले मे कारावास होता है। सट्टा, लॉटरी, रेस, फीचर आदि की धुन में रहते है। उस में लाभ होता है। मेहनत बहुत करते है किन्तु अन्त में सब धन नष्ट होता है। अपने लोगों का विरोध बहुत होता है। एक कन्या की मृत्यु होती है।

नवमस्थान---यहां वृषभ, कर्क, सिह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो इस की दशा में शिक्षा अच्छी होती है किन्तु उस का प्रभाव नही पडता। व्यवसाय या नौकरी मे प्रगति होती है। सरकार से सन्मान, प्रवास बहुत होना, भोगविलास प्राप्त होना, कन्याएं होना ये फल मिलतें है। एक बहन का भार वहन करना पडता है। हनुमान की उपासना करते है। अन्य राशियों में अशुभ योग में राहु हो तो नीच स्त्रियों से सम्बन्ध आता है। भाईयों की मृत्यु होती है। शिक्षा में रुकावटे आती हैं। विदेश में शिक्षा ठीक होती है। डॉक्टरेट तक मिल सकती है। विद्वान के रूप में प्रसिद्ध होते है। सन्तति नही होती अथवा होकर जीवित नही रहती। मातापिता का मृत्यु होता है।

दशमस्थान—यहां वृषभ, कन्या, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर व मीन में राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो सम्पत्ति क्रमशः बढती है। बडे कार्य होते है। अधिकारियों पर प्रभाव रहता है। अदालती मामलों में हर तरह से जीतता है। सामाजिक व राजनीतिक कार्यं से प्रसिद्धि मिलती है। यह बडा अधिकारी या संन्यासी होता है। मातापिता व कुछ पुत्रों का मृत्यु होता है। अन्य राशियों में अन्य ग्रहों से अशुभ योग हो तो पूर्वार्जित सम्पत्ति नष्ट होती है। बहुत कष्ट, व्यवसाय में हानि, बारबार परिवर्तन, पुत्रों का विरोध, एक पुत्र व्यंगसहित होना ये फल मिलते है।

लाभस्थान—यहां स्त्री राशि में राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो विधानसभा के सदस्य हो सकते है, युनिव्हर्सिटी में चुन कर आते है। अकस्मात लाभ, नष्ट धन पुनः प्राप्त होना, कीर्तिदायक काम पुरे होना, पुत्र देर से होना ये फल मिलते है। अन्य राशियो में अन्य ग्रहों से अशुभ योग मे हो तो पुत्रों का मृत्यु, धनहानि, रेस, लॉटरी, सट्टा, जुआ आदि मे धननाश, लाभ मे विघ्न, अयोग्य मित्र मिलना, स्त्री अस्वस्थ रहना ये फल मिलते है।

व्ययस्थान–यहां वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, मकर व मीन मे राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग मे हो तो व्यवसाय के लिए विदेश में घूमना पडता है, व्यवसाय में कीर्ति होती है। पुत्र कम होते है। कई लोगों को मदद करनी पडती है। ऐश्वर्य का उपभोग करते है। अन्य राशियों मे व अशुभ योग में हो तो सभीं कामों में असफल होता है। भ्रमिष्ट जैसा होकर अकारण ही स्त्रीपुत्रों से दूर भटकता है। व्यर्थ खर्च करता है। अपवाद फैलते है। कुछ व्याभिचारी होता है। कई जगह नौकरी करता है। व्यवसाय बदलता है। स्थिरता नही होती।

दशाफल के बारे में साधारण विचार—पराशर ने राहु की १८ वर्ष की महादशा के तीन भाग कर फलों का वर्णन इस प्रकार किया है—दशादौ दुःखमाप्नोति दशामध्ये सुखं यशः। दशान्ते स्थाननाशं च गुरुपुत्रादिनाशनम्॥ विनश्येद् दारपुत्राणां कुत्सितान्नं च भोजनम्। दशादौ देहपीडा च धनधान्यविनाशकृत्। दशान्ते कष्टमाप्नोति स्थानभ्रंशो मनो-

व्यथा ॥ इस दशा के प्रारम्भ में दुःख, मध्य में सुख व कीर्ति तथा अन्त में स्थान नष्ट होना, बडे लोग व पुत्र आदि का मृत्यु ये फल मिलते है। दशा के प्रथम भाग में स्त्री पुत्रों का मृत्यु, भोजन अच्छा न मिलना, शारीरिक कष्ट, तथा धनधान्य का नाश ये फल मिलते है। दशा के मध्य में सुख व अपने प्रदेश में धनलाभ होता है। अन्त में कष्ट, स्थान से दूर होना, व मानसिक पीडा होती है। हमारे अनुभव दोनों प्रकार के है—कही कही प्रारम्भ में सुख व अन्त में नाश यह फल भी देखा है। कुण्डली में राहु अनिष्ट हो किन्तु जीवन में राहु की महादशा न हो तो इस के फल कब मिलेंगे यह एक प्रश्न उपस्थित किया जाता है। इस के दो उत्तर है—एक तो अन्य ग्रहों की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तब ये फल मिलते है। दूसरे–आयु के ४२ से ५६ वे वर्ष तक राहु का पाक काल होता है तब ये फल मिलते है। अब राहु-चन्द्र योग में राहुदशा के फल के उदाहरणस्वरूप एक कुण्डली देखिए—यह कुण्डली इस प्रकार है—
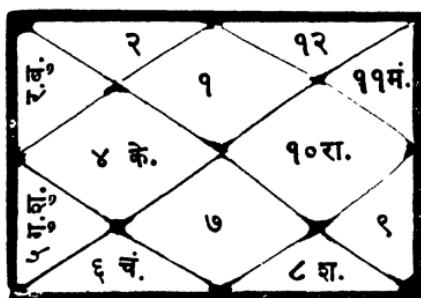
इस में चन्द्र के पंचम में अंशतुल्य राहु है। इस राहु की दशा के प्रारम्भ में ही व्यवसाय नष्ट हुआ। पिता का मृत्यु, दारिद्र्य, एक वर्ष में तीन पुत्रों का मृत्यु, पत्नी बहुत अस्वस्थ होना, बहुत जगह नौकरी करना, अस्थिरता ये फल मिले। साथ ही बडे कार्य, बडे लोगों की मित्रता आदि से लाभ भी हुआ। मेरी समझ में यहां राहु का चन्द्र से नवपंचम योग अशुभ है अत: इतने तीव्र फल मिले।

गौरीजातक के अनुसार राहुदशाके फल—सौख्यादिवित्तस्थितिनाशनं च कलत्रपुत्रादिवियोगदुःखम् । अतीवरोगं परदेशवासं विवादबुद्धिं कुरुते फणीशः ।। दीनों नरो भवति बुद्धिविहीनचिन्तासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिता च । पापानि बन्धबहुकष्टदरिद्रयुक्तराहोर्दशा जननकालदशा भवन्ति ।। इस कीं दशा मे सुख, धन, स्त्री, पुत्र इन सब का नाश होता है । बहुत रोग, विदेश में घूमना, विवाद, दींनता, बुद्धिहीनता, चिन्ता, भय, कष्ट, दारिद्रय आदि से कष्ट होता है ।

अन्तर्दशा–फल

१ राहु महादशा में राहु की अन्तर्दशा–राहोर्दशायां भार्याया वियोगो बन्धनक्षयः । अर्थनाशोऽन्यदेशेषु गमनं गौरवाल्पता ।। स्त्री का वियोग,धन की हानि, बन्धन दूर होना, विदेश में घूमना, मान कम होना ये फल है ।

२ राहु महादशा में गुरु की अन्तर्दशा—व्याधिशत्रुविनाशं च राजप्रीतिधनागमम् । पुत्रलाभं महोत्साहं गुरौ राहुदशान्तरे ।। रोग व शत्रु नष्ट होते है । राजा की कृपा व धन प्राप्त होते है । पुत्र होता है । बहुत उत्साह रहता है ।

३ राहु महादशा में शनि की अन्तर्दशा—वातपित्तकृता पीडा कलहोऽन्यजनैःसह । देशभृत्यमतिभ्रंशः शनौ राहुदशागते ।। वात और पित्त के रोग होते हैं, दूसरों से झगडे होते है । विदेश मे जाना पडता हैं, बुद्धि मे भ्रम होता है ।

४ राहु महादशा में बुध की अन्तर्दशा—अकस्मात् कलहश्चैव गुरुपुत्रादिनाशनम् । अर्थव्ययो राजकोपो दारपुत्रादिपीडनम् ।। अकस्मात झगडा, गुरु (पिता या माता) व पुत्र का मृत्यु, खर्च अधिक होना, राजा का क्रोध, स्त्री पुत्रों को कष्ट ये फल है ।

५ राहु महादशा में केतु की अन्तर्दशा—चौर्यं स्वमानहानिं च पुत्रनाशं पशुक्षयम् । सर्वोपद्रवमाप्नोति केतौ राहुदशान्तरे ।। चोरी, मानहानि, पुत्रों का मृत्यु, पशुओं का नाश और सभी तरह के उपद्रव होते है ।

६ राहु महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा—विदेशाद्धनप्राप्तिः छत्रचामरसम्पदः। रोगारिबन्धभीतिः स्यात् शुक्रे राहुदशान्तरे ।। विदेश मे वाहन, धन व छत्रचामर (राजा जैसा वैभव) प्राप्त होता है। रोग, शत्रु, व स्वजनों से भय होता है।

७ राहु की महादशा मे रवि की अन्तर्दशा—मनोऽभीष्टप्रदानंच पुत्रकल्याणसम्भवम्। धनधान्यसमृद्धिश्च अल्पसौख्यं सुखावहम् ।। मन की इच्छा पूरी होती है, पुत्र का कल्याण होता है, धनधान्य की समृद्धि होती है। सुख मिलता है।

८ राहु महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा—भोगसम्पद् भवेन्नित्यं सस्यवृद्धिर्धनागमः। स्वबन्धुजनविवादश्च चन्द्रे राहुदशान्तरे ।। उपभोग, धन, धान्य की वृद्धि होती है। अपने लोगों से विवाद होता है।

९ राहु महादशा में मंगल की अन्तर्दशा—नष्टराज्यधनप्राप्तिर्गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्। इष्टदेवप्रसादेन सन्तानसुखभोजनम् ।। नष्ट हुआ राज्य प्राप्त होता है। धन, घर, खेती प्राप्त होती है। इष्ट देवता की कृपा से सन्तति प्राप्त होती है। भोजन अच्छा मिलता है।

केतु महादशा के अन्तर्दशा फल

१ केतु महादशा में केतु की अन्तर्दशा—केतोर्दशायां हानिः स्यात् व्रणनाशोऽरिविग्रहः। भयं राजकुलोद्भूतं मित्रैःसह कलिर्भवेत् ।। हानि, व्रण दूर होना, शत्रु से झगडा, राजा का भय, मित्रों से झगडा ये फल हैं।

२ केतु महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा—अग्निदाहो ज्वरस्तीव्रः कलहो ब्राह्मणैः सह। स्त्रीत्यागः कन्यकाजन्म शुक्रे केतुदशाश्रिते ।। आग से जलना, तेज बुखार, ब्राह्मणों से झगडा, स्त्री को छोडना, कन्या का जन्म ये इस दशा के फल है।

३ केतु महादशा में रवि की अन्तर्दशा—भवेत् व्याधिर्ग्रहा घोरा नृपस्त्रीभिश्च विग्रहः। बन्धुनाशोऽर्थनाशश्च सूर्ये केतुदशाश्रिते ।। रोग, घोर ग्रह, रानियों से झगडा, बन्धु व धन का नाश ये फल है।

४ केतु महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा—सुखदु:खे स्त्रिया लाभो धनलाभो धनक्षय:। स्यातां पुन: पुन: पुंसाम् इन्दो केतुदशागते ।। इस दशा मे बारी बारी से सुख व दु:ख, धनलाभ व धनहानि होती है। स्त्री की प्राप्ति होती है।

५ केतु महादशा में मंगल की अन्तर्दशा—चौराग्निभ्यां महभीति: विग्रहं गोत्रभि: सह। देहपीडां च माहेय: कुर्यात् केतुदशाश्रित: ।। चोर व अग्नि से बहुत भय, कुटुम्बीयों से झगडा और शारीरिक कष्ट होता है।

६ केतु महादशा में राहु की अन्तर्दशा—सुवृत्तै:शत्रुभिर्घोरै: विग्रहो विग्रहो यथा। तदा स्याद् देहिनां पीडा पात: केतुदशाश्रित: ।। चारों ओर से शत्रुओं से भयंकर कष्ट होता है।

७ केतु महादशा में गुरु की अन्तर्दशा—द्विजेन्द्रै: राजपुत्रस्य संयोग: सुतसम्भव:। सुलाभं कुरुते पुंसां गुरु: केतुदशागत: ।। ब्राह्मणों व राजपुत्रों से मित्रता होती है। पुत्र होता है। अच्छा लाभ होता है।

८ केतु महादशा में बुध की अन्तर्दशा—सुहृद्बन्धुसमायोगो भूमि-तन्तुकलिर्भवेत्। ज्वरोऽस्य देहपीडा च बुधे केतुदशागते ।। मित्र व स्वजनों से संयोग होता है। जमीन के बारे में झगडा होता है। बुखार से शारी-रिक कष्ट होता है।

९ केतु महादशा में शनि की अन्तर्दशा—वातपित्तोद्भवा पीडा अधमै:सह विग्रह:। विदेशगमनं कुर्यादार्कि: केतुदशाश्रित: ।। वात और पित्त से कष्ट, नीच लोगों से झगडा और विदेश में प्रवास होता है।

प्रकरण १२ वाँ

राहु योगों के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

लग्नस्थान—(१) स्व. श्री. तात्यासाहब सांगलीकर—सांगली रियासत के अधिपति—कुम्भ लग्न में राहु व चन्द्र–कई विवाह करने पर भी इन्हें सन्तति नही हुई, शरीर यष्टि भव्य, सुन्दर, स्वभाव अभिमानी व बरताव अत्यन्त नियमित था। (२) स्व, डॉ. नाडगीर–इनकी कुण्डली मंगल विचार में दी है। लग्न मे राहु व शुक्र है। रंग काला, कद नाटा, बोलना बहुत धीरे, आंखें बडी, यह इन का स्वरूप था। स्वकष्ट से प्रगति की। (३) श्री. एन. सी. गुप्ता, ए. सी.–जन्म ता. २४–१–१९०४ कन्या लग्न मे राहु–चेहरा गोल, रंग सांवला-गोरा, बोलते समय हंसमुख, स्वभाव मधुर, खुले दिल से बरताव, न्यायी प्रवृत्ति, कद मध्यम, जलदी अधिकारपद मिला, सुखी रहे। (४) श्री. समीरमल जैनी. एम. ए. एल. एल. बी. जन्म ता. २०–९–१९०७, लग्न मे राहु व नेपच्यून, वर्ण सांवला, चेहरेपर चेचक के दाग, आंखें मदनयुक्त, कद मध्यम, चेहरा गोल, स्वभाव मिलनसार, खुले दिल का बरताव, व्यवस्थित, धनार्जन अच्छा, सुखी रहे। (५) डॉक्टर हरिहर सीताराम राजन्देकर, होमिओपैथिक डॉक्टर, ज्योतिषी, पंचांगकर्ता—

रंग काला; बदन छरहरा, चेहरा लम्बा, आंखें कमजोर, ऊंचाई साधारण, स्वभाव सहल किन्तु गूढ, बोलना कम, दूसरों के कामें मे दखल न देना, अपने काम मे मग्न–यह इन का वर्णन है।

धनस्थान--(१! वेदान्त के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी रामतीर्थ (२) सेनापति पांडुरंग महादेव बापट--महाराष्ट्र के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी व राजकीय नेता (३) सुप्रसिद्ध योगी व क्रान्तिकारी नेता महर्षि अरविन्द घोष (४) स्व. मल्लप्पा अण्णावारद--शोलापुर की नरसिंग गिरजी मिल के संस्थापक--जन्म ता. १७-६-१८५१ सुबह ५।
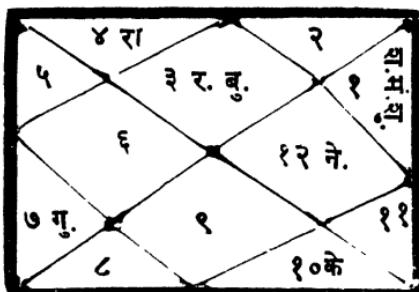
जन्म साधारण स्थिति में हुआ, अपने कर्तृत्व से बडे व्यवसायमे सफल हुए, हायस्कूल स्थापित किया, अच्छी इस्टेट प्राप्त की, दान बहुत दिया, तीन विवाह हुए किन्तु पुत्र एक ही हुआ। यह राहु स्त्री राशि मे है।

(५) एक क्ष--
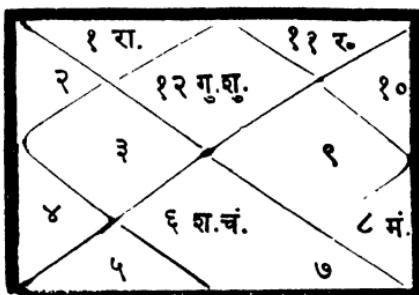
यहां राहु पुरुषराशि मे है। इन्हों ने सन १९३२ तक व्यवसाय में बहुत अधिक धन कमाया, किन्तु बाद मे स्वतन्त्र बडे व्यवसाय को चलाते समय उलझने पैदा हो कर सब सम्पत्ति गंवाने की नौबत आई। वृत्ति स्वतन्त्र, बरताव अति व्यवस्थित था।

(६) स्व. नामदेवबुवा---गायक-अमरावती-जन्म फाल्गुन व ४, शनिवार, शक १७८२ रात्रि १० ।

कुंडली---वृश्चिक लग्न लग्नमे चंद्र, द्वितीय स्थान मे राहु, चतुर्थ मे बुध, पंचम मे र शु. ने., सप्तम मे मं. हृ., भाग्य मे गुरु, और दशमस्थानमे शनि ।

ये उत्कृष्ट गायक थे । गाते समय सुधबुध भूल जाते थे । धनलाभ अच्छा हुआ । आजन्म अविवाहित रहे ।

(७) स्व. कृष्णाजीपन्त खाडिलकर---जन्म ता. २५-११-१८७२ कार्तिक व. १० सोमवार शक १७९४ दोपहर ४॥ स्थान सांगली ।

कुंडली-मेष लग्न, द्वितीय स्थानमे राहु, पंचममे गुरु, षष्ट मे चं. मं. अष्टममे र. केतु, भाग्य मे श. शु. बु. ।

पूर्ववय में स्थिरता नही थी । बम्बई में 'नवाकाळ' वृत्तपत्र की स्थापना की तब से स्थिति अच्छी हुई । पूर्वार्जित सम्पत्ति नही थी । स्वकष्ट से प्रगति की । धनलाभ अच्छा हुआ, स्थावर इस्टेट हुई । ये प्रसिद्ध मराठी नाटककार तथा राजकीय नेता थे ।

तृतीयस्थान--(१) रावसाहब विनायक त्र्यम्बक आगाशे एम्. ए. एल्. सी. ई.---इंजिनीअर, इन्हें एक भाई था, एक बहन को आश्रय देना पडा, स्वकष्ट से प्रगति की । (२) डॉक्टर ई. राघवेन्द्रराव-मध्य-प्रदेश के भूतपूर्व गवर्नर-तृतीय में राहु-स्वकष्ट से प्रगति की । (३) स्व. दाजी आबाजी खरे (४) श्री. दाजी गणेश आपटे (५) श्री. भाऊराव कोल्हटकर-ये किर्लोस्कर संगीत नाटक मडली मे प्रसिद्ध नट थे । (६) फ्रान्स का बादशाह नेपोलिअन बोनापार्ट (७) महाराष्ट्र के भक्त-लेखक लक्ष्मण रामचन्द्र पांगारकर ।

चतुर्थस्थान---एक क्ष-जन्म मार्गशिर शु. १३ शक १८०४ रात्रि ८ बम्बई ।

कुंडली-लग्न-कर्क, तृतियस्थान मे हृ., चतुर्थ मे राहु, पंचम मे शुक्र, षष्ट मे र. मं. बु., दशममे श., लाभमे चंद्र, और व्ययस्थानमे गुरु ।

इन्हें पूर्वार्जित सम्पत्ति बहुत मिली किन्तु निरुद्योगी, अविवाहित रहे। इन के कुटुम्ब मे कई पीढियों से कोई व्यक्ति अविवाहित रहता आया है।

(२) श्रीमन्त प्रतापसेठ, अमलनेर–जन्म ता. ११–१२–१८७९ कार्तिक व १३ शक १८०१ गुरुवार रात्रि २.१३ अक्षांश २६-२५ रेखांश ७४-५० ।

कुंडली–कन्या लग्न, धनस्थानमे चं. शु., तृतियमे र. बु., चतुर्थमे राहु, षष्टमे गु., सप्तममे शनि और अष्टमस्थानमे मं. ।

इन्हें गोद लिए जाने से ऐश्वर्य मिला । बहुतसी सस्थाएं स्थापन की, दान दिया, बडे व्यवसायों मे यश मिला ।

(३) एक क्ष––जन्म शक १८३१ कार्तिक व. ७ दोपहर १२-१० ।

कुंडली–मकर लग्न, धनस्थान मे श. मं., चतुर्थ मे राहु, सप्तममे चं. अष्टममे गुरु, भाग्य मे बुध, दशम मे र. के., और व्ययस्थानमे शुक्र है ।

इन के कुल मे चार पीढियों से आत्महत्या, घर छोड कर जाना, अविवाहित रहना आदि प्रकारों से कष्ट रहा है ।

पंचमस्थान––(१) सर चन्द्रशेखर वेंकटरामन–प्रख्यात वैज्ञानिक व नोबेलपुरस्कार विजेता (२) बंगाल के प्रसिद्ध कथालेखक प्रभातकुमार मुकर्जी (३) बम्बई के प्रसिद्ध राजकीय नेता सर फेरोजशाह मेहता (४) श्री. पं. रा. पा. मोघे ज्योतिषशास्त्री, पंचांगकर्ता (५) स्व. विष्णुबुवा ब्रह्मचारी––महाराष्ट्र के प्रसिद्ध पण्डित व समाजसुधारक विद्वान लेखक (६) स्व. पं. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर––बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान व समाजसुधारक (७) बाबू सुरेन्द्रनाथ बानर्जी––बंगाल के प्रसिद्ध वक्ता व नेता (८) बॅरिस्टर जयकर––बम्बई के भूतपूर्व न्यायाधीश व राजकीय नेता ।

षष्ठस्थान––(१) स्व. न्यायमूर्ति रानडे––महाराष्ट्र के राजकीय नेता व बम्बई के न्यायाधीश (२) स्व. श्री. दादासाहब खापर्डे––विदर्भ के नेता व जमींदार (३) श्रीमती सरोजिनी नायडू–कवि व राजकीय नेत्री

लाभस्थान—(१) बॅरिस्टर रामराव देशमुख अमरावती–विदर्भ के प्रसिद्ध जमींदार व नेता (२) स्व. बलवंतराव किर्लोस्कर–मराठी के प्रसिद्ध नाटककार (३) ज्योतिषी बी. सूर्यनारायणराव, मद्रास।

व्ययस्थान—(१) लार्ड सिंह (२) स्व. गोपाल कृष्ण गोखले (३) स्व. नरसिंह चिन्तामणि केलकर (४) बॅरिस्टर विनायक दामोदर सावरकर (५) स्व. हरि नारायण आपटे (६) सरदार माधवराव किबे (७) भूतपूर्व राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद (कन्या मे राहु)।

(८) श्रीमती जमनाबाई गायकवाड–बडौदा की महारानी जन्म शक १७७५ श्रावण व. ९ रविवार रात्रि २-३० मद्रास टाइम स्थान–रहिमतपुर (सातारा)।

कुंडली–लग्न मिथुन, लग्नमे चंद्र, मंगल, धनस्थानमे बुध, तृतियमे रवि, चतुर्थमे शनि, षष्टमे गुरु, और व्ययस्थानमे रा. श, ४

इन का जन्म साधारण स्थिति मे हुआ। बडौदा के महाराजा खण्डेराव गायकवाड से विवाह होने पर एकदम ऐश्वर्य मिला। एक कन्या हुई, पति का मृत्यु हुआ। बाद मे ३० वर्ष तक बडौदा रियासत का काम योग्यता-पूर्वक सम्हाला।

समारोप

कुछ ज्योतिषियों का कथन है कि राहु व केतु ये ग्रह घनद्रव्य के नही है—चन्द्रकक्षा के दो बिन्दु मात्र है, अतः इन का शुभाशुभ फलविचार नही करना चाहिए। हम ने भी राहु-केतु घनयुक्त ग्रह है ऐसा कभी नही माना। किन्तु फलविचार मे इन का समावेश अवश्य किया है। प्राचीन समय से सभी ज्योतिर्विद आचार्यों ने इन के फलो का वर्णन किया है तथा अनुभव से भी इन के फल महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते है। आचार्य वराहमिहिर ने राहुचार नामक एक प्रकरण अपनी संहिता में दिया है इस से राहु का महत्त्व अच्छी तरह स्पष्ट होता है। कुछ ज्योतिषी राहु-केतु को सिर्फ अन्य सम्बन्ध से फलदायी मानते है—यथा यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेशसंयुतौ। तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ॥ यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ। नाथस्यान्यतरस्यैव सम्बन्धाद् योगकारकौ॥ तमोग्रहौ शुभारूढौ असम्बन्धाच्च केनचित्। अन्तर्दशानुरूपेण भवेतां योगकारकौ॥ अर्थात्—प्रबल राहु केतु जिस भाव मे हो अथवा जिस भावाधिपति के साथ हों उस के अनुसार फल देते है। वे शुभ स्थान मे हो और अन्य ग्रह से सम्बन्धित न भी हो तो उनके योगों के फल अन्तर्दशा के अनुसार मिलते है। वे केन्द्र और त्रिकोण मे हो तथा अन्य स्थानाधिपति से सम्बन्धित हों तो योगकारक होते हैं। किन्तु राहु-केतु के फल पर इस प्रकार दूसरे ग्रहों के सम्बन्ध की मर्यादा बतलाना उचित नही है। इसी ग्रन्थ मे पंचम के दृष्टि रहित निर्बल केतु को विद्या व सन्तति मे विघ्नकारक माना है। इस से भी राहु केतु की स्वतन्त्र फल देने की शक्ति सिद्ध होती है।

पहले वंशानुगत फलविचार मे राहुयोग से वंशपरंपरा से चलनेवाले कुछ दोषों का विचार किया है। ये दोष दूर करने के लिए उन के मूल

कारणीभूत पापकृत्यों का परिहार करना जरूरी होता है। लावारिस के धन का दोष हो तो वह धन समाजहित के कार्य मे दान देना चाहिए; किसी का संसार उजडने का दोष हो तो गरीब, अनाथों के संसार बसाना चाहिए; किसी व्यक्ति कों बहुत कष्ट देनेका या उसकी हत्या का दोष हो तो उस व्यक्ति की आत्मा की शान्ति के लिए नागबलि अथवा नारायण-बलि विधि करना चाहिए; सूर्य की उपासना व धर्मग्रन्थों का पारायण करना चाहिए। इस प्रकार धर्माचरण से पापकृत्य का दोष दूर होकर अगली पीढियां सुखी होती है